

॥ श्री १०८ जीवणजी महागजनी कृपाथी ॥

॥ उदाधर्मपञ्चरत्नमाला ॥

॥ अथ श्री अद्यारुजीनां कीरतन ॥

॥ अथ श्री गरुदा गणपतिनो रास ॥ १ ॥

गरुदा गणपति देव महोदर । विघ्न निवारण स्वामी सहोदर ॥

चरण प्रणाम करे सो ॥ हरि हरि ॥ १ ॥

बीणा पुम्नक कर आरोपे । हंम चढ़ी कवि निकर निरोपे ॥

लोपे जडमनि कंदो ॥ हरि हरि ॥ २ ॥

सरस्वनी देवी चरण शिर नामी । जेह प्रसाद कवितगुण पामी ॥

स्वामी गाईसुं गुण गोविंदो ॥ हरि हरि ॥ ३ ॥

जेणे सचराचर जीव निपाया । जल थल महि भुवन समाया ॥

लायो मोह जुवालो ॥ हरि हरि ॥ ४ ॥

पंड रहो जे जीव निहालो । उट जातो तेहने वालो ॥

याले सेवुं संसारे ॥ हरि हरि ॥ ५ ॥

क्षणु वहु ब्रह्माण्ड घडे ने विनाशे । आप विभु ते त्रिभुवन वासे ॥
 हास करे विनोदो ॥ हरि हरि ॥ ६ ॥
 कनल छे पण जीव न चाहे । कर्म तणे मद तेह न आगहे ॥
 चाहे अंतम कालो ॥ हरि हरि ॥ ७ ॥
 अभगता जनपे कर्म करावे । कर्म भोगवता देह धगवे ॥
 सेवक कर्म कमानो ? हरि हरि ॥ ८ ॥
 गैम रोम ब्रह्माण्ड समाया । ब्रह्मादिक भनकादिक गाया ॥
 पार न पामे ते हो ॥ हरि हरि ॥ ९ ॥
 ते स्वामी पिण्ड ब्रह्माण्ड समाणो । ऋषि सुर दानव नर न कलाणो ॥
 जाणे आपे आपो ॥ हरि हरि ॥ १० ॥
 हरि सेवे सुख निश्चल जाणो । वणमतु एह कसु मन (न) आणो ॥
 आले अमृत मा ढोलो ॥ हरि हरि ॥ ११ ॥
 ईन्द्रि गमतु चंन निवारो । हृदे वचन कर्म विष्णु विचारो ॥
 पार होय दुःख जालो ॥ हरि हरि ॥ १२ ॥
 मच्छ रूपे शंखासुर मार्यो । सदपणे भवमागर तार्यो ॥
 वारु भुवन अधर्मो ॥ हरि हरि ॥ १३ ॥
 कौरम रूपे मंदगिरि माहू । पमरु सुर दानव अवगाहू ॥
 गाउ क्षीर ममुद्रा ॥ हरि हरि ॥ १४ ॥
 प्रलय ममय जल भूमि अवगाही । आद वगह दादाश्रे माही ॥
 चाही भुवन विनाशो ॥ हरि हरि ॥ १५ ॥
 हरणाकेम त्रह भुवनविदितो । जेणे ममर्था गण मुख्यनि जित्यो ॥
 वित्यो ते मुनि श्रापो ॥ हरि हरि ॥ १६ ॥

पुत्र हेत मनोरथ सागे । नरमिह रूपे नेहर विदागे ॥
मार्यो दानव रथो ॥ हरि हरि ॥१७॥

इन्द्र काज वर जाग विनासु । वामन बलि पाताल निवासु ॥
वामो निर्भे लोको ॥ हरि हरि ॥१८॥

परशुरामे क्षत्रिपत मोडयो । ऋषिवरनो अपगाध वछोडयो ॥
जोडयो वाडव लोको ॥ हरि हरि ॥१९॥

स्थुनृपकुल अवनार ज लीधो । सुरपति मन मनोरथ मीधो ॥
कीधो देव पमाधो ॥ हरि हरि ॥२०॥

दशरथ परमानंद विचारे । अपुत्रीयुं दुःख शोक निवारे ॥
चार तेहने कुल दीपो ॥ हरि हरि ॥२१॥

जेह नामे शुनिपाठ निगेपे । स्मरण मात्र अघनाशन दोले ॥
बोले वेद पुराणो ॥ हरि हरि ॥२२॥

गमचन्द्र तहां दिन दिन वधे । हेला देव कार्ज सर्व साधे ॥
आगधे निज धर्मो ॥ हरि हरि ॥२३॥

लीला मुनिवर जाग निहालो । दानव तणो हरिए ऊपद्रव शोलो ॥
वालो अहल्या देहो ॥ हरि हरि ॥२४॥

लीला त्रिपुराधनुष जीणे भाग्युं घोष त्रिभुवन कंपवा लाग्युं ॥
भाग्युं हेला विनोदो ॥ हरि हरि ॥२५॥

त्रिभुवन ओच्छव होय निरंतर । सीतावर अनि त्रिभुवन सुंदर ॥
सुर नर मन आनंदो ॥ हरि हरि ॥२६॥

चार सहोदर परणी चाल्या । परशुराम हईडे अनि माल्या ॥
हाल्या पर्वत शैलो ॥ हरि हरि ॥२७॥

परशुरामे परमेश्वर जाएया । धनुष चढ़ावी निश्चय आएया ॥
 जाएया ए सुरमारो ॥ हरि हरि ॥२८॥

लीला देव अयोध्या आव्या । वर सुंदर मोतीडे वधाव्या ॥
 भाव्या जम शशीरूपो ॥ हरि हरि ॥२९॥

जनेता वचन नृप बांध्यो देखी । अयोध्या तणुं राज उवेखी ॥
 वेष लियो बनवासो ॥ हरि हरि ॥३०॥

लक्ष्मण सीना सहित मनानन । चाल्या प्रभु चित्रकूट गिरि पावन ॥
 जनक गया सुरलोको ॥ हरि हरि ॥३१॥

मानुल वंशथी भरत अणाव्या । पद्म अभिषेक तेहने संभाव्या
 आव्या जहाँ श्रीरामो ॥ हरि हरि ॥३२॥

कृष्ण करी प्रभु नगर पधागे । स्वामीजी ताननुं गज मिथागे ॥
 भरत विनय पर बोले ॥ हरि हरि ॥३३॥

रामचन्द्र शिखामण आपी । भरत पादुका आसन थापी ॥
 आपी अभुक्त कामो ॥ हरि हरि ॥३४॥

चित्रकूथी चाल्या स्वामी । लीलापनि दक्षिणदेश पामी ॥
 पाम्या वहु क्रष्णिमानो ॥ हरि हरि ॥३५॥

शामन दीधुं कुंभजमुन । रामचन्द्र गया पंचवटी बन ॥
 मन आनंद धरे जो ॥ हरि हरि ॥३६॥

कामाकुली निशाचरी आवी । शूर्पनखा लक्ष्मणे संभावी ॥
 श्रवण नामिका छेद्यां ॥ हरि हरि ॥३७॥

चौद सहस्र राक्षस रण सोधी । लंकापुरीनिणे दुःखे विरोधी ॥
 कीधी करनम रीछो ॥ हरि हरि ॥३८॥

वानरपतिनी कंधा कापी । निषे गम सुकंधर थापी
 आपी अविचल रजो ॥ हरि हरि ॥३९॥
 माल्यवान गिरि भग्न सुकंधर । लंकापुरे दही आव्यो कपिवानर ॥
 वानरसेन मले जो ॥ हरि हरि ॥४०॥
 रामचन्द्रदल पहोता मागर । बांध्यो मेतु तहाँ नलवानर ॥
 पार गया क्षण मांहे ॥ हरि हरि ॥४१॥
 रजनीचर पद्युं समर्गंगण । पश्चिमासुं हणियो रावण ॥
 बाण दशे शिष छेद्याँ ॥ हरि हरि ॥४२॥
 सकल भुवन आनंद न माय । रामचन्द्र सीता लेई जाय ॥
 नगर अयोध्या मांहे ॥ हरि हरि ॥४३॥
 कृष्णरूपे गोकुल अवनस्थि । गोवरधन पर्वत कर धस्थि ॥
 वरिया गोपी गोविंदो ॥ हरि हरि ॥४४॥
 मोरपिञ्च मुकुट शिर सोहे । निज माया देवकी भुवन मोहे ॥
 सोहे गुजाफल हारो ॥ हरि हरि ॥४५॥
 हाथ बांगली शिंगुवा वाये । गोवाले पश्चिया जाये ॥
 लाए परब्रह्म वेदो ॥ हरि हरि ॥४६॥
 सर्व रूपे त्रिभुवन रचे । बृन्दावन गोपी वचे नाचे ॥
 साचो सो ए ब्रह्मचारी ॥ हरि हरि ॥४७॥
 अलक असंभव एमो दीयो । बालकेलि गोकुलमां पेठो ॥
 बेठो ध्रुव शुक चंतो ॥ हरि हरि ॥४८॥
 अनंत चालो अगीआर वरीसो । तेणे तेडे अकूर सरीमो ॥
 छवीसमो गोविंदो ॥ हरि हरि ॥४९॥

श्यामल परब्रह्म देह वहोणु । महीकारण रढ़ माँडे सलुणु ॥
 उणु नहीं कदापो ॥ हरि हरि ॥ ५० ॥

बुद्ध रूपे हरि ध्यान विचारे । कलंकी रूपे यवन मंघारे ॥
 मार करे निज लोके ॥ हरि हरि ॥ ५१ ॥

श्यामलवरण हरि हृदिया मेहेलु । त्रिभुवनपति हरि नामे खेलु ॥
 झीलो पमानंदो ॥ हरि हरि ॥ ५२ ॥

विष्णु भक्त मुक्ति फल काजे । राम कयों पंडे धनराजे ॥
 काज करो हरि नामे ॥ हरि हरि ॥ ५३ ॥

॥ इनि श्री गङ्गा गणपतिनो राम संपूर्ण ॥ १ ॥

* ॥ अथ श्री विनती ॥ २ ॥ *

आदि अनादि एक तुं । स्वामी माहाग ॥ आदि ॥
 निरंजन निगकार । हरिहर ब्रह्मा ते हवा ॥

स्वामी तुं छे अपार । पाये लगी करुं विनति ॥ १ ॥
 नहारे पार कोइ नव लहे ॥ स्वामी ॥ परब्रह्म अविधार ॥

तुं सरस्वो कर ताहेरो । माया गहिन संसार ॥ पाये ॥ २ ॥
 आपण पोने गोपवुं ॥ स्वामी ॥ वाह्यो सियल संमार ॥

जाग दान अध्यात्म । नथी गर्भनो पार ॥ पाये ॥ ३ ॥
 भुवन ग्लो ए आतमा ॥ स्वामी ॥ तुं न जाणे सार ॥

धणी वहुणु मारियो । चहु खाण मोझार ॥ पाये ॥ ४ ॥
 ब्रह्मादिक शिव आतमा ॥ स्वामी ॥ जे धरे रे शरीर ॥

कई मोटो कई नाघडो । स्वामी अकल तुं बीर ॥ पाये ॥ ५ ॥

वगतो कीधो ए आनमा ॥ स्वामी ॥ गुणे हवो खण्ड ॥
 चोगमी लक्ष जीव थया । तेणे भर्या रे ब्रह्माण्ड ॥ पाये ॥ ६ ॥
 ब्रह्माण्ड मुक्त्युं आपधु ॥ स्वामी ॥ पञ्चो मोह मंमार ॥
 हुं मारुं करे आधलुं । अंघ एह गमार ॥ पाये ॥ ७ ॥
 स्वामी दयाल तुं ओलंगे ॥ स्वामी ॥ ममथ शुं रे विचार ?
 तुं आगल शुं माद्यरुं । हुं नथी एक वार ॥ पाये ॥ ८ ॥
 आपण पे थाय अणछनो ॥ स्वामी ॥ मांहे मेहेले तूङ्ग ॥
 हवे गमतु कर नाह्यरु । ओधर एह अबूङ्ग ॥ पाये ॥ ९ ॥
 क्षुक्षा नृषादिक आकलो ॥ स्वामी ॥ करे मुख तणी आश ।
 तेणे वली वली भोगवे । अधोमुख दश मास ॥ पाये ॥ १० ॥
 क्षणु क्षणु जन्मे ने क्षणु मरे ॥ स्वामी ॥ चढे कालने हाथ ॥
 डाम डाम करे माहेरु । ते नही आवे साथ ॥ पाये ॥ ११ ॥
 घर ए जीव वर्गमियुं ॥ स्वामी ॥ हवुं आपणी गयु ॥
 भक्ति विहोणु नाहेगी । जमे दीधु घायु ॥ पाये ॥ १२ ॥
 स्वामी कृपा करे अनि घणी ॥ स्वामी ॥ भाजो अनेक विचार ॥
 अचल भक्ति दे नाह्यरी । जे छे मुक्ति भंडार ॥ पाये ॥ १३ ॥
 वैकुंठ ब्रह्मादिक जुवे ॥ स्वामी ॥ पेखे विष्णु अनंत ॥
 गजा अखेपद तणो । तहां मेवे संत ॥ पाये ॥ १४ ॥
 ताहारा स्वरूपनो पार नही ॥ स्वामी ॥ बहु लीला ब्रह्माण्ड ॥
 भक्त ज्यां जेवुं मन धरे । तहां तेवे पिण्ड ॥ पाये ॥ १५ ॥
 आपण पूजे देखवे ॥ स्वामी ॥ तेहने ते सो पमातु ॥
 ताहारां स्वरूपज तुं लहे । तुं छे गर्वो गवु ॥ पाये ॥ १६ ॥

दुष्ट माधुने दुभवे ॥ स्वामी ॥ धाय तुहज बाहार ॥
 ते जोगे तेहेवां रूप धरी । दुख फेडे ते वार ॥ पाये ॥१७॥
 मच्छ कूम बगह तुं ॥ स्वामी ॥ नगसिंह एक वार ॥
 बामन त्रिकम पशुराम । रघुकुल अवनार ॥ पाये ॥१८॥
 नर नागयण कृष्ण तुं ॥ स्वामी ॥ बुद्ध कलंकी रूप ॥
 तुं मले देखे ताह्यरू । परिव्राम स्वरूप ॥ पाये ॥१९॥
 गरुड बाहन छे ताह्यरे ॥ स्वामी ॥ कौस्तुभ मणि हार ॥
 श्रीवत्स लांछन जलहले । एहवां रूप कई वार ॥ पाये ॥२०॥
 ब्रह्मादिकने प्रत्यक्ष हवा ॥ स्वामी ॥ सुख पोब्बा शेष ॥
 लक्ष्मी चरण सेवा करे । एवा ताग वेष ॥ पाये ॥२१॥
 ताहार आधारे जीव छे ॥ स्वामी ॥ पञ्चविशमो जेह ॥
 प्रकृति छांडोने जो जपे । देखे परिव्राम तेह ॥ पाये ॥२२॥
 प्रकृति उपर जेने प्रेम छे ॥ स्वामी ॥ करशे बहु धर्म ॥
 तेणे बली धट पामशे । भोगवशे कर्म ॥ पाये ॥२३॥
 प्रकृति कागगृह लेखवे ॥ स्वामी ॥ झुरे तुह निवाम ॥ मास
 अंत लगी जो एम रहे । मन भुवन निवाम ॥ पाये ॥२४॥
 प्रकृति परिजा पापनी ॥ स्वामी ॥ हजु न मूके काई ॥ शब्द
 धर्णीनो रोलवे । वंछे तेह घर जाय ॥ पाये ॥२५॥
 प्रकृति कहे सुणो आतमा ॥ स्वामी ॥ मुझ कहो दोष ॥
 वंछी ते हुं अनेक वार । हवे कां करे रोस ॥ पाये ॥२६॥
 प्रकृति पुरुष एम बोलतां ॥ स्वामी ॥ छुब्बो पूर्व स्नेह ॥
 आतमा परब्रह्म जई मल्यो । पंच भागे थयो देह ॥ पाये ॥२७॥

जम छे बोल्यु नव्यारु ॥ स्वामी ॥ जुग एहज धर्म ॥
 तुज विन जप तप दान दया । ते सघबां कर्म ॥ पाये ॥२८॥
 जुग जुग दर्शन जृजबां ॥ स्वामी ॥ वणसे जुग अंत ॥
 वेद न वणसे वणमनां । बहु जुग कल्यान ॥ पाये ॥२९॥
 क्रिष्णनु बोल्यु वेद छे ॥ स्वामी ॥ जेह न लाभे पार ॥ मा-
 जेने आधारे ब्रह्माण्ड रह्यां । साचो तेह आधार ॥ पाये ॥३०॥
 तुज कृपायकी रहित छे ॥ स्वामी ॥ ल्योपे रज आदेश ॥ ५ स्त्र
 धर्म आप धूमाढीने । माने बोध ज नैम ॥ पाये ॥३१॥
 अणछो आनमा विनवे ॥ स्वामी ॥ ओधारजो तान ॥
 तुं समरथ हवे पामीओ । आदर एहज बान ॥ पाये ॥३२॥

॥३३॥ ॥ इनि श्री विनती संपूर्ण ॥ २ ॥ स्त्र
 ॥३४ ॥ * ॥ अथ श्री ब्रह्मास्त्रली ॥ ३ ॥ *
 गर्जिए प्रब्रह्म गाईये ॥ नुरे ब्रह्मास्त्रली ॥ देव अनोगम एक ॥ ४ ॥
 हरि हरि ब्रह्मा जे जपे ॥ नुरे ब्रह्मास्त्रली ॥ पार नहीं गुण जेह ॥ २ ॥
 जम नव बुझे कंथुओ ॥ नुरे ब्रह्मास्त्रली ॥ मुरज बिंब परमाण ॥ ३ ॥
 सुर दानव एम नव बुझे ॥ तुरे ॥ तुहज एक सुजाण ॥ ४ ॥
 पिण्ड ब्रह्माण्ड भरी रहो ॥ तुरे ॥ जेह थकी बहु जीव ॥ ५ ॥
 पुनर्गणि जेणे उपजे ॥ तुरे ॥ क्षय पामे जुग अंत ॥ ६ ॥
 पुनर्गणि कर्ममें ताणियो ॥ तुरे ॥ पडियो मोह जुशाल ॥ ७ ॥
 बोगमो लक्ष भोगवे ॥ तुरे ॥ गर्भ तणो नहीं पार ॥ ८ ॥
 तृण कर्मन कण नीपाय ॥ तुरे ॥ जलधर भोम संजोग ॥ ९ ॥
 जलधर जेह न जाणीओ ॥ तुरे ॥ करसन छेरे अचेन ॥१०॥

एणे निदरमन उपन्यु ॥ तुरे ॥ ते केम जाणेरे जीव ॥१६॥
 नाम शरण पामी रहो ॥ तुरे ॥ आप जणावे जेह ॥१७॥
 जलचर जीव जीवे धणुं ॥ तुरे ॥ जीव न जाणे भेद ॥१८॥
 जेह बोले जुग संचरे ॥ तुरे ॥ प्रमरे एणे संमार ॥१९॥
 पान पान गम मोकले ॥ तुरे ॥ मूल तणु जल पेख ॥२०॥
 विविधि कुमुम फल नीपाया ॥ तुरे ॥ काष्ट कठणमाहि पेख ॥२१॥
 पय दधि धृत दे तृणचरे ॥ तुरे ॥ निमित्त चढावे धेन ॥२२॥
 बुंद वडे घट निपजे ॥ तुरे ॥ ग्मे ग्मे नस्नार ॥२३॥
 लोक लाज पंच महाभूत ॥ तुरे ॥ पाले तुहज अखंड ॥२४॥
 अनेक जुग एम नीपाया ॥ तुरे ॥ सबलो नाहारो बोल ॥२५॥
 तुं निर्झुण एम जाणीए ॥ तुरे ॥ तुं आगल नही कोई ॥२६॥
 निमित्त अचेनने देईनै ॥ तुरे ॥ काज सर्वे होये अंत्य ॥२७॥
 सुरज तेजे पेखीए ॥ तुरे ॥ हुं देखु कहेरे अजाण ॥२८॥
 आंख छने थयो आंधलो ॥ तुरे ॥ रवि विन थयो अंधकार ॥२९॥
 एणे माचे महु ते होय ॥ तुरे ॥ गुण विन सन स्वरूप ॥२३॥
 कोटि ब्रह्माण्ड भाजे घडे ॥ तुरे ॥ गुण दे हरि हर ब्रह्म ॥२६॥
 मन चंते एम निपजे ॥ तुरे ॥ अणछनां ब्रह्माण्ड विस्नार ॥२७॥
 गरुदा नाहारो नाहारानो ॥ तुरे ॥ जाणे तुहज विचार ॥२८॥
 अकल असंभव जाणीए ॥ तुरे ॥ नाम शरण छे जीव ॥२९॥
 दुभव्यो तुह अजाणवे ॥ तुरे ॥ कृपा करी द्यो विश्राम ॥३०॥
 ताग मने तुं ओधरे ॥ तुरे ॥ लीलाए तुज नाम ॥३१॥
 भोली भगते भेठियो ॥ तुरे ॥ प्रत्यक्ष परब्रह्म अनाद ॥३२॥

ताग मन वण नव देखे ॥ तुरे ॥ स्वप्ने सनकादिक जोगी ॥ ३३ ॥
 ज्ञान तेज पमानंद ॥ तुरे ॥ मेवीए निज पश्चिम ॥ ३४ ॥
 वायु गंध मांहे संचरे ॥ तुरे ॥ गंध मुके निज रूप ॥ ३५ ॥
 तेम हरि गुणमां संचरे ॥ तुरे ॥ निगुण जपे तुज ॥ ३६ ॥
 ॥ इनि श्री ब्रह्मारुली संपूर्ण ॥ ३ ॥

* ॥ अथ श्री हेली ॥ ४ ॥ *

हेलीरे पश्चिम अविगत जेह । तेह पहेलो परमात्मा ए ॥ १ ॥
 हेलीरे जेना ब्रणे अंश । मरजे पालेने संघारे ए ॥ २ ॥
 हेलीरे ब्रह्मादिक छे जीव । तेह तणे गोचर नही ए ॥ ३ ॥
 हेलीरे आदि एकलमल । बाप मांडे बहु अनि घणां ए ॥ ४ ॥
 हेलीरे निश्चल छे अविनाश । हास छतु अछतु करे ए ॥ ५ ॥
 हेलीरे मेवे सुर नर नाग । महु ताहारे आईमे रहु ए ॥ ६ ॥
 हेलीरे सनकादिक मुनि जोगी । जोतां पर पामे नही ए ॥ ७ ॥
 हेलीरे जेथी वगतु थाय । तेणे बली महु आथमे ए ॥ ८ ॥
 हेलीरे अकल अलख अभेद । वेद निरंतर स्तुति करे ए ॥ ९ ॥
 हेलीरे तृप तो छे वण आहार । सुख सघलां सेवा करे ए ॥ १० ॥
 हेलीरे जन्म मरण नही जेह । तेणे ए बेहु सरजियां ए ॥ ११ ॥
 हेलीरे कीरन कीजे जेह । बल गुण स्लवीए हरि तणा ए ॥ १२ ॥
 हेलीरे मर्व तणो जे बाप । मात पिता नही जेह तणे ए ॥ १३ ॥
 हेलीरे मर्व तणो जेह स्वामी । स्वामी तेह तणो को नथी ए ॥ १४ ॥
 हेलीरे सर्व उफरो जेह । तेह उफरो सरज्यो नथी ए ॥ १५ ॥
 हेलीरे जेह यमल नही कोय । तेनी उपमा की कहूँ ए ॥ १६ ॥

हेलीरे तेणे वाह्यो विश्व । मोह जुवाल विडम्बीओ ए ॥१७॥
 हेलीरे रूप अरूप अनन्त । कटनां केहेवुं केहेवाय नहीं ए ॥१८॥
 हेलीरे जेह न प्रिछे वेद । जोगेश्वर मन दुर्लभु ए ॥१९॥
 हेलीरे एसु भणी निन सेव । तुह मदाय छेहु नहीं ए ॥२०॥
 हेलीरे एणी पेर फेडने आप । बाप सेवु संभासी ए ॥२१॥
 हेलीरे अहर्निश प्रण मन जेह । अहर्निश परब्रह्म जप कगे ए ॥२२॥
 हेलीरे अंत ममे छे जीव । कर्मनो नाष्टो जुग भम्यो ए ॥२३॥
 हेलीरे भर्में भाग्यो जीव । काम क्रोध मद परहर्या ए ॥२४॥
 हेलीरे निर्भय तुहज एक । कीजनां कर्म लागे नहीं ए ॥२५॥
 हेलीरे समरथ सरजनहार । कर्म महेवु शिर सरजियां ए ॥२६॥
 हेलीरे धर्म नणी म्थिनि हेह । एके अंशी अवनर्थो ए ॥२७॥
 हेलीरे परउपकारे काज । चस्त्रि अनोपम नाहेग ए ॥२८॥
 हेलीरे नाहेरे नथी कसु काज । गग द्वेष मद तुज नहीं ए ॥२९॥
 हेलीरे तुझ नहीं अपगाध । गजा चिनवे ते करे ए ॥३०॥
 ॥ इनि श्री हेली संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री माहेली ॥ ६ ॥ *

गाईये ते परमानमा । माहेलडीरे । गरुओ ते गुणनो भंडार ॥ १ ॥
 नामे सुमरण जेह तणे । माहेलडीरे । आनमा छूटे संसार ॥ २ ॥
 आपणपु जेणी जुगत छे । माहेलडीरे । तेम तेणे गम्या छे प्राण ॥ ३ ॥
 जे कारण ते मांडियुं । माहेलडीरे । महु जाणे तुहज सुजाण ॥ ४ ॥
 हेल्या विधि हर मरजिया । माहेलडीरे । मुरनर कहीए मात्र ॥ ५ ॥
 महु आधार छे जेह तणे । माहेलडीरे । ते क्यम मुकीए बाप ॥ ६ ॥

दुहवो बोले आतमा । साहेलडीरे । सुणो पग्मानमा तान ॥७॥
 तुज समीप छोडावियुं । साहेलडीरे । माहेगे सो अपगध ॥८॥
 घर सुख कांये विमास्त्रियुं । साहेलडीरे । भुलायो कां ए वनमांही ॥९॥
 केटला काल विडम्बीओ । साहेलडीरे । शत्रु कामादिक हाथ ॥१०॥
 एणे वन लोभवी दव बले । साहेलडीरे । विलसे प्रपाखी काल ॥११॥
 माया मुकी हरणली । साहेलडीरे । मांडियु कर्मनुं जाल ॥१२॥
 जाल पढयो हवो आकलो । साहेलडीरे । मोहो जीव अचेत ॥१३॥
 आगली पाछली सुध नही । साहेलडीरे । नही एहने आपणु चेत ॥१४॥
 सुरनर जालथी तस्फडे । साहेलडीरे । देह धगवोआ जेह ॥१५॥
 कल्पना कर्नी छेदीए । साहेलडीरे । गर्भ मणिन होय देह ॥१६॥
 देह धरी सुख प्रापनते । साहेलडीरे । नातीअ तेल कदाय ॥१७॥
 आपण दोष न दाखवे । साहेलडीरे । वीचे जे आपण मांहे ॥१८॥
 काल खाय नित तलीतली । साहेलडीरे । हजु अनचेते रे आप ॥१९॥
 एवडे दुःखे काँई पाडियुं । साहेलडीरे । साम्कारने हवे बाप ॥२०॥
 नामे भांजनी देहडी । साहेलडीरे । स्मरणे टाल विकार ॥२१॥
 तुमरखु कर ताहेरु । साहेलडीरे । ले हवेला ए समवार ॥२२॥

॥ इनि श्री माहेली संपूर्ण ॥ ५ ॥

* ॥ अथ श्री घोडली ॥ ६ ॥ *

घोडली पश्चव लागेलुं व्यान । मान मत्सर मद परहर्यी ॥

घोडली पामियुं हरि शरण ॥ १ ॥

घोडली सुन कीधो संसार । व्यान निरंतर उपन्यु ॥घोडली॥ २ ॥

घोडली भेटीयो त्रिगुणानिन । गुणे रे संघान विछेहिया ॥घोडली॥ ३ ॥

घोड़ली उगियो ज्ञान आदित । विनी रे माया गनडी ॥घोड़ली॥ ४ ॥
 घोड़ली निगमल थयुं मनचंद्र । उतर्युं मोहनु आभलु ॥घोड़ली॥ ५ ॥
 घोड़ली मोह वित्यो हेमावंत । विष्णु मगन मधु अवतयो ॥घोड़ली॥ ६ ॥
 घोड़ली शरण मत्यु रे ममीप । मन रवि उत्तर चालियुं ॥घोड़ली॥ ७ ॥
 घोड़ली मोरिया गुण रे माहकार । वामी रे कोयल वामना ॥घोड़ली॥ ८ ॥
 घोड़ली उलख्यो परमआनंद । होली रे कामादिक ममी ॥घोड़ली॥ ९ ॥
 घोड़ली धर्म मनोष विचार । नतक्षण वर्ष शोभा लहे ॥घोड़ली॥ १० ॥
 घोड़ली भाजीआ अवर विचार । परब्रह्म चेनन मन मत्यु ॥घो० ॥ ११ ॥
 घोड़ली जेह न प्रिछे रे कोय । अप्रिलणा भणी ओलग्यो ॥घो० ॥ १२ ॥
 घोड़ली केम होय मुक्ति नित्य । मुक्ति नायक ममर्या विना ॥घो० ॥ १३ ॥
 घोड़ली नरक भाग्यो गर्भवाम । आवागवन निवारियां ॥घो० ॥ १४ ॥
 घोड़ली काले रे मुकी आश । जम छांडी अलगा रह्या ॥घो० ॥ १५ ॥
 घोड़ली देवता दे अनिमान । लेखु रे वात्यु जम नणु ॥घो० ॥ १६ ॥
 घोड़ली बापे कीधी रे मार । वगत यालि कने गम्बियो ॥घो० ॥ १७ ॥
 घोड़ली मुगन तणीं पेर जाण । निश्चल सुख छे अनिघणु ॥घो० ॥ १८ ॥
 घोड़ली करविना मांडे रे विश । पग विना मचगचर फिरे ॥घो० ॥ १९ ॥
 घोड़ली मुख विना चोले सार । लोचन विना देखे महु ॥घो० ॥ २० ॥
 घोड़ली उदर पाखे करे आहार । ईन्द्रिविना सुख भोगवे ॥घो० ॥ २१ ॥
 घोड़ली रूप पाखे करे गज । सोहे शणगार पहेर्या विना ॥घो० ॥ २२ ॥
 घोड़ली इच्छा बन करे भाव । निन आनंद सोए रमे ॥घो० ॥ २३ ॥
 घोड़ली मन विना जाणे सर्व । श्रवण पाखे सहु सांभले ॥घो० ॥ २४ ॥
 घोड़ली आतमा नव धरे देह । जोरे पामे परमातमा ॥घो० ॥ २५ ॥

घोड़ली सुमरण दीपक गम्ब । मायालोभ कोरण घणा ॥८०॥२६॥
 घोड़ली दीप कीयोधर मांही । काज मीधुत्यारे जीवनुं ॥८०॥२७॥
 घोड़ली महेल संमास्ना काम । सुख होय वणसे बली ॥८०॥२८॥
 घोड़ली छाँडी अनित्य मंसार । सार जाणुं परमानमा ॥८०॥२९॥
 घोड़ली जन्म मरण नहीं दुःख । हस्खे परब्रह्म सेवीए ॥८०॥३०॥
 घोड़ली सुमरण अंनर गम्ब । जेणे अवनीश्वर पामीए ॥८०॥३१॥
 घोड़ली अणछतु कीधुं आप । वाप नगेमने मनमल्युं ॥८०॥३२॥
 घोड़ली अंत लगी रहे ध्यान । पद पामे परब्रह्म नणुं ॥८०॥३३॥
 घोड़ली भगन पागे इहां एङ । वगन कीटी महु एक होय ॥८०॥३४॥
 घोड़ली निश्चय सांभले जेह । दुर्लभ मुक्ति पामे सुखे ॥८०॥३५॥
 ॥ इनि श्री घोड़ली संपूर्ण ॥ ६ ॥

४ ॥ अथ श्री वाणी* ॥ ७ ॥ ५

परब्रह्म वाणी रे परणी ए । ब्रशाण्ड जय जयकार रे ॥
 चार खण्ण हवी निर्मली । भाग्यो मोह मंसार रे ॥ १ ॥

* उदा भक्तमां कठो दीक्षा तथा धीरुं अने स्वशानवात्रा थलने गवानु कीरतन
 कबीर की कथान पढ़ी है चौगाल, सुरा हाथ न्होखचले नहीं कायरका काम ।

ते रीत जीवणजीरु तिजमंत्र देवानी प्रगालीकानो यंत्र जनहिंगाथे खुज्जो मुक्त्यो छे जेम जनकना
 धनुष्य यशमो यावण जेवने निरशाज प्राप थर्ली, तेम अनधिकरीआने तवुज छे, कंठी वांधतां
 वांधनारे नीचेनी लाल्हे मगामस बोल्ही,
 कंठी वंक्षी छोड़की लीजे शरण तुम्हार । दास निभित कलु भयो तुम जानो किरतान ॥
 कंठी निलक धार के, प्रहो रामकवीर आधार । दासगरीबी गही रहो, उतरो भवत्तल पार ॥
 यह बानो राधा कृष्णको, गुरु कृष्णते देड धीरजसे धारे रहो, कृष्ण करे गुरुदेव ॥

जेम कन्धा (वाणी) ना पिनाने कन्धादाननो अधिकार छे, तेम परथारवालाने कठो बाल्वा
 पुरतो अधिकार छे, पण परथारवालाए वर्ष्म एक बखत अर्थात् जेनावती कठो बाल्वे छे, ते गुरु
 गृहे जई आबद्ध, रामनवमी के गोकुल अष्टमी जवानी जर छे, कंठी दीक्षा देनारे सूखम आहार,
 अने सत्य तेमज ब्रह्मचर्य पराल्लवु आबद्धक छे, कमयां कम ते दिवसे तो जर.

लेखां ते वात्यां रे जम तणा । उठोया नरक वेहेपार रे ॥
 बंधन छट्यां रे जीवना । महु मुगतु होए आवार रे ॥ २ ॥
 मुक्ता सौ स्थावर जंगम । मुक्ता सुर नर नाग रे ॥
 मुक्ता सप्त क्रषि नवग्रहे । मुक्ता मुनिवर जाग रे ॥ ३ ॥
 हरि हर ब्रह्मा आनंदिया । वेर वेर ओच्छव होय रे ॥
 उलट होय रे अनि घणो । गाईसु वाणीनो नाहो रें ॥ ४ ॥
 घेर घेर घोडीओ उछले । नमियानोरण बार रे ॥
 ब्रह्माण्ड फूल फगर भर्या । छण मन हर्ष धरे जो रे ॥ ५ ॥
 देवचंदन होय छांटणा । हस्तीआ बारेजा मेघ रे ॥
 शंख पंचायण पूरीओ । भुवन गाज्यो निर निधोय रे ॥ ६ ॥
 लक्ष्मीनाथ नागयण । अनि हस्त्या मन मन मांहे रे ॥
 शंकर नाण्डव नाचीआ । व्यापियो भुवन विस्तार रे ॥ ७ ॥
 मुकुट बछूटी रे गंगा । मलकीओ वासुकि नाग रे ॥
 सहस्र अगमो रे सस्मा । ब्रह्मा वेद भणे जो रे ॥ ८ ॥
 जहां लगी हतो कुंवारडो । परब्रह्म वाणीनो भग्नार रे ॥
 तहां लगी संकुट बंधन । सुख नहिं एक एक वार रे ॥ ९ ॥
 मुखीआं ते मीअल ब्रह्माण्ड हवां । हवे परणा जोग जगनाथ रे ॥
 आनंद परमानंद हवो । भाग्यां मंकुट महा दुःख रे ॥ १० ॥
 दुःख ते भाग्यां रे दोहेलां । आनमा निरमल हवो रे ॥
 रूप ते लख चोगमी ना । ओडवलां मर्वे मर्वे भाग्यां रे ॥ ११ ॥
 भागी त्रिभुवन कल्पना । एकज हवो आनंद रे ॥
 जय परमानमा परब्रह्म । जय जय जगदाधार रे ॥ १२ ॥

ब्रह्मण्ड कोड छे घोड़ली । थेर थेर मंगल चार रे ॥
 नहीं दिन गत न बेला । नहीं पल जुग कल कल्यान रे ॥ १३ ॥
 क्षुधा तृष्णा नहीं निंद्रा । चिंता नहीं घर घर धंधो रे ॥
 मचरवर महु तृपतु । मुख परमानंद हर्षा रे ॥ १४ ॥
 अवर कई नव जोईए । गोनां महु कोनां भास्यां रे ॥
 रजाजी बेठ छे परब्रह्म । आगल संतो मानीना रे ॥ १५ ॥
 अवर मर्व गुणे जप करो । चत्रुभुज रूप धरे जो रे ॥
 अवर मुखे नहीं बोलबुं । केवल गम जपजो रे ॥ १६ ॥
 जन्म जग मृत मय नहीं । अवर नहीं कसुं कसुं काज रे ॥
 एकज तु अवनीश्वर । आनंदिया मर्वे सर्वे संतो रे ॥ १७ ॥

॥ इनि श्री वाणी संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ पचाह यागयण पहलो चित्राम ॥

* ॥ अथ श्री आरति ॥ ८ ॥ *

परब्रह्म पद्मनाम पुरुषोत्तम पेढे नहीं ए । हरि अविगति गोविंद चंत ॥
 सार करो श्रीपति धर्णी ए ॥ १ ॥

हरि चत्रुभुज श्यामलवरण । शारंगधर मोहामण ए ॥
 हरि रुअड्लु वैकुण्ठगय । दुष्कृत हरण दामोदरो ए ॥ २ ॥
 हरि निरंजन निगकार । निःकंलपुरुष आहाराई ए ॥
 हरि गाइये द्वारकां रायु । श्यामलवरण मोहामणो ए ॥ ३ ॥
 हरि सेवो ममथ सार । पार जेहनु कोइ नव लहे ए ॥
 हरि सोइ ए छे अविनाश । वास आपे वैकुण्ठ धर्णी ए ॥ ४ ॥

हरि माधव मुकुंद मोरार । महाव देव मोहामणो ए ॥
 हरि भगत मुगन दातार । नागयण छे निरमलो ए ॥५॥
 सदा शारंगधर सुविचार । पारलो कहानैया आत्मा ए ॥
 औ आ बेग मलाये समवार । नारने त्रिमुखन टलबले ए ॥६॥
 जीवडो मोह्यो छे कलि मांहे । कलिकाले जीव झांपियो ए ॥
 हरि विनाना लहे कम रे उमाम । मामदो स्वामी शारंगधर ए ॥७॥
 सदा वैष्णव मन रे उछाह । आनंद अंगे उलट ए ॥
 भले आविया परब्रह्मगय । वहालु वैष्णवजनमां पस्वयुं ए ॥८॥
 हरिनो वरत्यो जय जय कार । सार बोल हवे सुमधुरु ए ॥
 हरिनो आव्यो रे मन विश्वाम । पाश छुट्या चोहो स्वाणना ए ॥९॥
 शाप धेर धेर वैकुण्ठवास । दास तमारा विनवे ए ॥
 भले आविया परब्रह्मगय । समस्थ धणीने मने सेवीआ ए ॥१०॥

॥ इनि श्री आरनि संपूर्ण ॥८॥

* ॥ अथ श्रौ बीडु ॥ ९ ॥ *

परब्रह्मगयु खाणीए रे । रुदिया कमल गोपाल ॥
 क्षणु एक नामना महेलिए रे । एम वंचु रे एणी पेर काल ॥१॥
 मन संगत गंगा सेविए । सहस्र नाम गोपीचंदन तुलसी ॥
 त्रिवेणी संगम निन झीलिये । संत मंगत गंगा सेवीए ॥२॥
 हुं मारुं नहीं मुगनपुरी रे । साची एहज काशी ॥
 एणे अध्यात्मे जे रहा । दुःख छुट्या रे ते गर्भवाम ॥संत०॥३॥
 गत कल्यना दोहेली रे । माया निंदा ये जुगधार ॥
 हर्ष शोक बेहु स्वपनडां । एम जाग्यो रे ज्ञान विचार ॥संत०॥४॥

श्री पद्मनामे जे जगाविया रे । तेनी रहेणी विहाणी ॥
 निंद्रा स्वप्न बेहु छांडीआं । एम उद्यो रे परब्रह्म माण ॥संत०॥५॥
 परब्रह्म दिनकर मदा तपे । तहां रहेणी नहीं एकवार ॥
 अहर्निश सुमरण ताहेरु । एम वित्यो रे मोह अंधकार ॥संत०॥६॥
 ब्रह्मादिक शिव मुलगा रे । इन्द्रादिक रवि चंद्र ॥
 मरण भये ते सदा बीहे । एक निर्भय रे ताहेरा संत ॥संत०॥७॥
 श्रीपद्मनाम एम औचर्या रे । एहज ज्ञान विचार ॥
 सहस्र नाम उपदेशियुं । हरि मंत्र रे सहुमें सार ॥संत०॥८॥
 ॥ इनि श्री बिंदु संपूर्ण ॥ ९ ॥

* ॥ अथ श्री कडवाँ* ॥ ९ ॥ १० ॥ *

हरि हरि परब्रह्म भक्ति सोहामणी ए । वंछे यनिमुनि देव ॥
 तेह प्रापत विना केम लहेए ॥१॥
 हरि हरि जीव कोडे भव अवतर्यो ए । हरि द्वना नवलहे पर ॥
 संत मंगत हरजी पामीए ए ॥२॥
 हरि हरि समरथ परब्रह्म अनुसरो ए । भाग्यो अनि संदेह ॥
 भय सघला हवे निरदला ए ॥३॥
 हरि हरि परवश जीव - विडंवियो ए । सेव्या हरि परिह्न ॥
 ब्रह्म हरादिक वश हवए ॥४॥

* स्मशानमां थगिसंस्कार बखने मुखमां तु असीदल मुकी गवातुं कीर्तन, कडवा सह अध्याइजीनों
 २८ कीर्तन त्रितापोनों लांचा समरथी सकाम भक्तो उपयोगमां लेता आव्या छे.
 (१) आध्यात्मिक ताप (आत्मा संबंधी, आत्मसत्त्व विषयक) (२) आधिमौतिक
 ताप (प्राणीओने लगतो पंचमहाभूतो संबंधी शारीरिक) (३) आधिदैविक ताप
 (ईद्रियोना दबोने लगतो, ईद्रियोथकी थपला, भूत प्रेतादियो उपजेलु दैषकृत दुःख).
 त्रिताप दूर करवा उत्तरोक्त औपर अद्वाना अनुपान साथे रक्ख नीवडधु छे.

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

हरि ते हरिहर ब्रह्म आगोचहु ए। चरचर गुरु ए ॥
गरुओ ते प्रभु निगकार ॥ १ ॥
हरि ते सनक प्रमुख मुनिवलभु ए। अनिदुर्लभु ए ॥
कोटि ब्रह्माण्ड आधार ॥ २ ॥
हरि ते नम जलधर जेसुं शामलु ए। अति निर्मलु ए ॥
जदुकुल नंदनु बाल ॥ ३ ॥
हरि ते रुअडलु कहान सोहामणु ए। गलियामणु ए ॥
खेले जो रंग गोपाल ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ २ ॥ *

खेले खेले जो रंग गोपाल। निरंजन अंजनबान शरीरो ॥ ५ ॥
हरि ते जगन जीवन। अकलअसंभव। भवरिपु जादवबीरो ॥ ६ ॥
हरि ते जादव बीर। भव जल निधिनारे॥ ते चारे गाय पीँडारो ॥ ७ ॥
हरिनु वेण मधुरु। मधुरे स्वरे त्रिभुवन मोहे ॥
न लहे ब्रह्मादिक पारो ॥ ८ ॥

* ॥ आद ॥ ३ ॥ *

परब्रह्म परमानंद। स्वामी गुणनिधि गोपी गोविंद ॥
जादवनंदनु ए। हरि ते त्रिभुवन वंदनु ए ॥ १ ॥
समरथ अति बलवंत। स्वामी अविगत एक अनंत ॥
त्रिदश अगोचरहए। हरि ते हरि हर अपरंपरु ए ॥ २ ॥
प्रह्लाद प्रह्लाद ब्रह्माण्ड अनेक। स्वामी व्यापक तुं हरि एक ॥
रमिने अलग थयो ए। हरिते कोणे न दीठ्डो ए ॥ ३ ॥

आदे छे अविगतरूप । स्वामी हरि हरि ब्रह्म स्वरूप ॥
आपण पु विखरे ए । हरि ते त्रिभुवन विस्तरेए ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ४ ॥ *

परमपुरुष	परमात्मा । आत्मा केगे नाथ ॥
वासुदेव हरि	परिब्रह्म । ब्रह्म महेश्वर नाथ ॥ १ ॥
आपणपे छोरे	अविगत । विगता कीधा अवतार ॥
ब्रह्मादिक सुर	मानव । दानव नव लहे पार ॥ २ ॥
शुक मनकादिक	मेवेरे । देव अनोपम एक ॥
स्वप घणां छे	जेहतणां । तेहतणां नाम अनेक ॥ ३ ॥
सच्चगच्चर जेणे	भोलव्यु । भोलव्यु विविधि विचार ॥
प्रकृति नणे गुणे	वाहियो । मोहियो भमेरे संसार ॥ ४ ॥
स्थावर जंगम	व्यापीने । आपियुं काल ने हाथ ॥
गर्भ संकुष्ट	दुःख । दुष्कृत मुकृत कीधां माथ ॥ ५ ॥
जन्म मरण वश	आत्मा । आत्म ज्ञान अज्ञान ॥
सार वचन जेने	आपीने । स्थापीआं वेद पुण्य ॥ ६ ॥
एक अध्यात्म	वाहीओरे । वण स्वामी परज्ञान ॥
मिथ्यल अवनीथर	छांडीने । मांडीउ निश्चल ध्यान ॥ ७ ॥
स्वामीजी नमो छो	अवर नथी । नथी को शीअल मंसार ॥
वगत परि करो	कारमी । वारोजी गर्भ अवतार ॥ ८ ॥

* ॥ आद ॥ ५ ॥ *

सुरमुनि अंतरिक्ष स्तवेरे गोकुल । हरि ते अनि रे अकल ॥
हरि हरि रमे रे गोविंद आनंद भर्यो ए ॥ १ ॥

आपण पे रमतो पीडारां रमाडे । हरि ते रमे ने रमाडे ॥
हरि ते जमे ने जमाडे । हरिनो गगन ब्रह्मादिक विचार करे ए ॥ २ ॥
अकल स्मन मांडी गोकुल मांहि । स्मन ब्रह्मादिक चाहे ॥
हरि आपण पे अडे न आभडे ए ॥ ३ ॥
ब्रह्मावत्स हरंतो महेलो । बडेरो पीडार हरि ते सरजनहार ॥
हरि हरि हेलाये कोटि ब्रह्माण्ड घडे ए ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ६ ॥ *

रंग लाग्यो रे रंग लाग्या रे । स्वामी परब्रह्म ध्यान ॥
कर्ममार्ग जोई मुकीआ ॥ १ ॥
तहां नथी अरे तहां नथी अरे । लहयो काई सार ॥
पार न दीसे रे भव तणो ॥ २ ॥
मन गतु रे मन गतु रे । आगे अनेक बार ॥
पुत्र कलत्र धन जोबने ॥ ३ ॥
ते वणसंतु रे ते वणसंतु रे । मुख महु ए आल ॥
एम जोई रंग उतर्यो ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ७ ॥ *

परमानमा रे परमानमा रे । स्वामी तुं परब्रह्म ॥
ब्रह्मामहेश्वर सरजीआ ॥ १ ॥
तुं ताहेरु रे तुं ताहेरु रे । स्वामीछे सहु ए बार ॥
सारकरो हवे आपणी ॥ २ ॥
ते मधली रे ते सधली अरे । पेरे विस्क आप ॥
आप आपणे अविगत हवो ॥ ३ ॥

तुं गरुवो रे तुं गरुवो रे । जेहवा जुगदावार ॥
दुःख सहेतो लाजे नही ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ८ ॥ *

॥ इनि श्री कडबुं संपूर्ण ॥ १ ॥

* ॥ अथ श्री कडबुं ॥ २ ॥ *

हरि हरि कोट ब्रह्माण्डपति कहानुओ ए । गरुओ जादव राय ॥
वेद उपनिषदे गाइए ए ॥ १ ॥

हरि हरि क्रुषि उपहार करी जे जजे ए । कीधाँ जाण अजाण ॥
मागंतो परतक्ष ओलख्यो ए ॥ २ ॥

हरि हरि जगन पुरुषते अलबाए ओलख्या ए । कीधाँ अजाणे जाण ॥
तेहने परमपद आपीउ ए ॥ ३ ॥

हरि हरि गोर संदीप वासंमिया ए । जे प्रभु अद्वद दानार ॥
तेहकसुं भृतक सुन मागियो ए ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

हरि ए गोवरधनगिरि कर धर्यो ए । जुग ओधरे ए ॥
समरण देव अनंत ॥ १ ॥

हरि ते कामिनी जन मन क्षोभतु ए । अनि शोभतु ए ॥
धुव शुक नारद चंत ॥ २ ॥

हरि द्वार चैकुण्ठने सुर रहो ए । जोता नव लहो ए ॥
मुनिवर मांहि प्रवेश ॥ ३ ॥

हरिना मंत आनंद भर्या सुसे रमे ए । अनि अनुगमे ए ॥
निरमे राज आदेश ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ २ ॥ *

हरि हरि संत संगत । संगत अहरनिश कीजे ॥ पीजे परमानंदो ॥ १ ॥
 जाये जाय जनम मरण । पुनरगम भय नहीं ॥
 नहीं गम सुर मुनि इँद्रो ॥ २ ॥
 हरिनी शश्णागन । विजे पींजर दयानिधि । रिद्धि अक्षयपद दानारो ॥ ३ ॥
 हरि हरि ध्रुवने प्रह्लाद । विभीषण निश्चल ॥
 अचल भगत उपकारो ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ३ ॥ *

जेमछे पावक एक । स्वामी तेह थकी दीपक अनेक ॥
 पावक अनिवलु ए । हरि ने दीपक नहीं बलु ए ॥ १ ॥
 पावकते परिब्रह्म । स्वामी दीपक हरि हर ब्रह्म ॥
 सुर नर मुजंगमुए । महुए स्थावर जंगमुए ॥ २ ॥
 गरुओ जुगदाधार । स्वामी जेहनुं न लाभे पार ॥
 मोलसहस्र वरु ए । हरि ते ब्रह्म शंकर गरु ए ॥ ३ ॥
 आत्मा रहे हरि ध्यान । स्वामी आपणपे प्रगत न मान ॥
 परब्रह्म अविगतुं ए । हरिने सेवे सख गतुए ॥ ४ ॥
 आत्मा छे तहारे हाथ । स्वामी नथी रे प्रकृतिने माथ ॥
 हरि विना कोट जनम फरु ए । हर्वे हरि शरणे अनुमर्यु ए ॥ ५ ॥

* ॥ आद ॥ ४ ॥ *

अवनरि मुख केसे मागे रे । आगे तु वेसिने हाथ ॥
 विषया न मुके रे अद क्षणु । मरण पले नित साथ ॥ १ ॥
 वणमता मुख मध्ये अंधुरे । बांधु पड्ढले विलाण ॥
 मूढ पणे नथी चेत तुं । दुःख महमी निखाण ॥ २ ॥

मुष्टिज पहेलो रे तुहज । तुं हरि सरजन हार ॥
 गरुओ ने ममम्थ तुहज । तुं हरि दयानो भंडार ॥ ३ ॥
 मेवक जनने दयाल तुं । काल तुं भगत विहीन ॥
 कर्म इन्द्री वश दुहवु । तुं हवे छोडव दीन ॥ ४ ॥
 कुण्ण गोविंद मुगरि तुं । पास ले आत्मा एह ॥
 हरि पुरुषोन्म परब्रह्म । विष्णु नागयण जेह ॥ ५ ॥
 जलधरस्याम पीताम्बर । सुंदर मूरत अनंत ॥
 कमलनयन कमलानन । धनपति कमल कंत ॥ ६ ॥
 बोग भावे जे अवतर्या । माग्या तेह तणां काम ॥
 भक्ति भावे जे अनुमर्या । ले हवे निश्चल ठाम ॥ ७ ॥
 चिरमल अकल अनोपम । उपमा कही नव जाय ॥
 जगतपति परमेश्वर । ईश्वर अहर्निश धाय ॥ ८ ॥

॥ ॥ आद ॥ ५ ॥ ॥

भक्त परायण धर्म पालक । हरि ते नंदनु बालक ॥
 -१- हरि संत तणा गिषु नीमदला ए ॥ १ ॥
 नवण प्रमुख हरादिके थायो । हरि ये तेहने उथायो ॥
 -२- हरि थापीओ पद बली आपणे ए ॥ २ ॥
 -३- नमां गोरी मरसुं विलसे जुगदावार । हरि ते भगत माधार ॥
 -४- हरि आपण पे माचुलु ब्रह्मचारि ए ॥ ३ ॥
 -५- रेलंतु गोकुल गरख्यु । त्रिभुवननो नायक ॥
 हरि ते मुक्ति दायक । हरि हरि लीलाये जलधर नीमदलो ए ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ६ ॥ *

रंगलाल्यो रे रंग लाल्यो रे । स्वामी चोल मजीठ । पतंगनो रंग उनर्या १
विष जाण्युरे विष जाण्युरे । लईयो कामविलास । भोग सर्वे पावकममा २
हवे छांडो रे हवे छांडो रे । लईयो शोकसंमार । वैराग बंधव भेटीओ ३
तेणे थल्युरे तेणे थल्युरे । लईयो तेख संघान ॥
काम क्राध मद परहर्या ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ७ ॥ *

हरि गोविंदा रे हरि गोविंदा रे । स्वामी तुं परब्रह्म ॥
पमाय मागी कह विननी ॥ १ ॥
ए समनढी रे ए समनढी रे । हवे परिमहेल ॥
अणा तणे वश दुख मद्वा ॥ २ ॥
ए आपणे रे ए आपणे रे । स्वामी आनम स्वरूप ॥
जुजवां करी कां रोलवे ॥ ३ ॥
तुं वरंसीओ रे तुं वरंसीओ रे । अनि चतुर मुजाण ॥
खाण चार रख्यो एकलो ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ८ ॥ *

॥ इनि श्री कडबुं संपूर्ण ॥ २ ॥

* ॥ अथ श्री कडबुं ॥ ३ ॥ *

हरि हरि जदुकुलनिलक प्रशंसीए । शोषी पूनना जेह ॥
यमला अर्जुन मोङ्गा रेकंता ए ॥ १ ॥
हरि हरि मकटतरणावंत मर्व हण्या ए । समनलाल्यो गोकुलमांही ॥
धनुक वच्छक मास्यो ए ॥ २ ॥

हरि हरि गोकुल ओच्छव अनिभला ए। नाथ्योरे कालीनाग ॥
 नागचढ़ी प्रभु महारो नाचीओ ए ॥ ३ ॥
 हरि हरि अकुरे परब्रह्म ओलख्या ए। आणा मल मोझार ॥
 कंमतणु कुल मर्व हणु ए ॥ ४ ॥
 हरि हरि इंद्रप्रमुख मन हरखीआ ए। पूर्या भगत मन कोड ॥
 स्वामीने काज कमु नही ए ॥ ५ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

हरि हरि शरदपुनम जेसी शशीकला ए। तेसी मुखकला ए ॥
 लोचन कमल समान ॥ १ ॥
 हरिना अधगबिंव फल अवगणे ए। कमु नव गणे ए ॥
 दंत माणेक अभिगम ॥ २ ॥
 हरिना रूप तणे स्म निखनी ए। अनि हरखनी ए ॥
 नार ना पामे पार ॥ ३ ॥
 हरि मरकडले हसंतो रिपु हण्यो ए। नही जेह तणे ए ॥
 कोष मत्सर अहंकार ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ २ ॥ *

हरि हरि काल यवन अनिवलीओ रे दानव। मानव लोक वदीतो ॥ १ ॥
 हरि हरि त्रैबीम क्षौणी केगे अधिपति। अधिपति गुण जेणे जीत्यो ॥ २ ॥
 हरि हरि श्रीकृष्णे ममुद्रतणी भोम लीधी। कीधी तहाँ गजधानी ॥ ३ ॥
 हरि हरि एकगतमांही कोणे न जाणी। आणी मथुरां तोय ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ३ ॥ *

आणी आणी मथुरां तोय। हरिनी विगत न जाणे कोय ॥
 गढ मंदिर गरु ए। हरि ते जेम ते तेम ए ॥ ३ ॥

मुनले पुर हरि एक । तहां आव्यां आवां कटक अनेक ॥
 बींठी नगरी ए । तहां दीव एक हरि ए ॥ २ ॥
 दानव बोलोरे पहाण । तेहने हसिल तणुंरे अजाण ॥
 संग्राम मागियु ए । हरि ए खिवध्यो आगे ए ॥ ३ ॥
 हरि ए खिपु दीठो अबूझ । हावे एह उपर कोण झुझ ॥
 चाल्यो भुवन धणी ए । खिपु पलोरे मरण भणी ए ॥ ४ ॥
 जहां पोद्या छे मुचकंद । तेणे गहरे गया रे गोविंद ॥
 जाग्यो भूपति ए । तत्क्षण पड्यो दानव पतिए ॥ ५ ॥

॥ ॥ आद ॥ ४ ॥ ५ ॥

सकल भुवनपति एकलु । रायु स्मेरे अशरीर ॥
 ते हरि परब्रह्म धाइए । अकल असंभव बीर ॥ १ ॥
 परब्रह्म तु निरदय नथी । विनतडी अविधार ॥
 गर्भ पडंतो रे आतमा । अति दुःख सहेतो निवार ॥ २ ॥
 आतमा एकज ताहेरो । कांय करे जुजवा करम ॥
 एक करावो चराचर । विष्णु भगत निज धरम ॥ ३ ॥
 वण हरि भक्ति अजाणवे । न लहे कोइ तहारो मरम ॥
 कृत कर्म भोगवे एक गमे । बीजुं गमे साचे करम ॥ ४ ॥
 एवडे संकुष्ट सांकलु । कांये उवेष्यु तात ॥
 करम तणे शिर सौंपीने । शास्त्रे मुकी वात ॥ ५ ॥
 जुनां भोगवी निरगमे । नवातणो करे परिहार ॥
 एणीपेरे निश्कर्म जो होय । तो हवडां होय पार ॥ ६ ॥
 जहां लगी एक करम होय । तहां न छुटे अवतार ॥
 भोगवा देही धरावे । सहे जमना बहुमार ॥ ७ ॥

देह धरे निष्कर्म पणुं नथी । पण ना महेलु हरि नाम ॥
पामेस नाम शरणे वडे । निष्कर्म पणु निर्वाण ॥ ८ ॥

* ॥ आद ॥ ५ ॥ *

मुग्नर पत्रम सरजे ने संवारे । हरि ते अधर्म निवारे ॥
हरि हरि धर्म आपोपे त्रिभुवन धर्णी ए ॥ १ ॥
नाटक जेह तणु कोई न प्रीछे । हरि ते आपणपे प्रीछे रे ॥
अप्रीछण पेरे छे जेह तणी ए ॥ २ ॥
अनेक नाटक रचे आदे अरूप । हरि ते कहाढे बहुरूप ॥
आपणपे जुवे जुवे एकलो ए ॥ ३ ॥
सुर असुगं भेडवी अल्पां थयोने मांहे । हरि ते त्रिभुवनने वाहे ॥
हरिनो दोरी संचागे । कोई नव लहे ए ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ६ ॥ *

हरिनुं सुमरण रे हरिनुं सुमरण रे । स्वामी अक्षय रे भंडार ॥
कनलथकी हवो दालोदरीओ ॥ १ ॥
मीदाणुं रे मीदाणुं रे । लईयो चहुं खाण मंजार ॥
भंडार नणे अजाण वे ॥ २ ॥
देखाडयो रे देखोडयो रे । श्री गुरुये भंडार ॥
परब्रह्म समरण रुपीओ ॥ ३ ॥
तेणे भागी रे तेणे भागी रे । भवो भवनी अणाथ ॥
गर्भवाम दुःख रुपणी ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ७ ॥ *

परमातमा रे परमातमा रे । स्वामी देव अनंत ॥
अंगुष्ठ मात्र जोत तुं हवु ॥ १ ॥

३० ॥ कामधेन पारसमणिकी पोळ, कलप वृछकी शाढ ॥ ॥ अध्यारुद्धीना-

अतिबलीउ रे अतिबलीउ रे । स्वामी सरजणहार ॥
अबला प्रकृति काँई अनुसरु ए ॥ २ ॥
ए आतमा रे ए आतमा रे । स्वामी उपनो तुज ॥
तुजने ए अंतर नहीं ॥ ३ ॥
ए आतमा रे ए आतमा रे । स्वामी वगतु फेड ॥
तुज आगल बीजो नहीं ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ८ ॥ *

॥ इति श्री कट्टवुं संपूर्ण ॥ ३ ॥

* ॥ अथ श्री कट्टवुं ॥ ४ ॥ *

हरि हरि कहान श्यामलवरण गाइए ए । मृगमद तिलक विशाल ॥
बाल सुंदर अति रलियामणुं ए ॥ १ ॥
हरिजीने कनक मुकुटमे सोहामणो ए । बेगांरे माणेक कोड ॥
झबकले हीरा रवि जेसा ए ॥ २ ॥
हरिजीने काने कुंडल कोटे कांटलो ए । उर मुक्ताफलहार ॥
हार कौस्तुभ मणि झलहले ए ॥ ३ ॥
हरिजीने मोतीडुं लहेकेले नाशिका ए । मणिमय कंकण हाथ ॥
रतनजहित भुज बेहरखां ए ॥ ४ ॥
हरिजीने पहरण पीतपटोलडी ए । उरचंदनका लेप ॥
दोडर खूप कुसुम धर्णा ए ॥ ५ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

हरि ये अमरीप नरपति छेतर्यों ए । जोग अवतर्यों ए ॥
स्वामी दशअवतार ॥ १ ॥

हरि वलिनणे द्वार उभो स्थो ए। जोनां नवलहो ए ॥
 जेह जोगेश्वर पार ॥ २ ॥
 हरि तेह सुदामा रिद्धि पुरंतो ए। अनिज्जुरंतो ए ॥
 ओलख्यो मुगन भंडार ॥ ३ ॥
 हरि वणसंनी रिद्धि नव आदरी ए। सो निश्चल करी ए ॥
 लीधी मप्रित माव ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ २ ॥ *

हरि हरि कृष्ण कृष्ण भणे। अहरनिश रक्षपणी ॥
 गुण गती रे गोगाल ॥ १ ॥
 हरि हरि तेह तणा। मननो मनोस्थ पुर्थो ॥
 चूर्यो गथ शिशुपालो ॥ २ ॥
 हरि हरि सोलमहस कन्या कारगृहे। ग्रही नस्कासु प्राणो ॥ ३ ॥
 हरिजीए दैत्य हण्यो कन्या कीधी मुक्ति। भक्तवत्सल चक्रगणो ॥ ४ ॥

* आद ॥ ३ ॥ *

केवल परम ज्ञान। स्वामी गुण कला निधान ॥
 तीर्थ पावनु ए। हरिनु पवित्र कीर्तनु ए ॥ १ ॥
 केउ गवि परकास। स्वामी गबो क्षिनि आकाश ॥
 जयो जयो विश्वंभरुए। हरि ते दैत्य भयंकरु ए ॥ २ ॥
 हरि परमात्मा गम। मदा जेहनुं निरमल नाम ॥
 त्रिभवन तारणुं ए। हरि ते नगक निधारणुं ए ॥ ३ ॥
 वृन्दान्दो महाकाल। स्वामी पाप दहन गोपाल ॥
 नन्मी वक्खभुं ए। हरि ते सुमर दुम्लभु ए ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ४ ॥ *

स्वामी तान तुं समरथ । अनरथ एह निवार ॥
जीवडो बगोयो रे कल्पना । पहेला तुं एहज निवार ॥ १ ॥
कर्म तणे शिर दुष्पण । वात छे नाहेरे हाथ ॥
अहरनिश ममरण नाहेरु । भाजे कर्म मंघान ॥ २ ॥
कर्म प्रेगे भमी भाग्यो रे । निन नवा वहु गर्भवास ॥
सुखीओ दुःखीओ उत्तम । मध्यम ठाकुरदाम ॥ ३ ॥
नवां रे सांचे जुना भोगवे । एम नथी कर्म निस्तार ॥
जोहवे तमे किञ्चा कगे । तो हवडा होये पार ॥ ४ ॥
ठाकोर तुहज बापतु । बंधव दया निधान ॥
नाहरि भक्ति गहिन अपगाधीओ । खसु स्वामी गोविंद कहान ॥ ५ ॥
आगेरे जे तमे ओथग । तेह तणा वहु अपगथ ॥
ते सर्वे परम आनंद गमे । चृडो तुं समरथ गय ॥ ६ ॥
प्रकृति नणु हवे भय नथी । ओलख्यो गोकुल कहान ॥
ध्यान चईतन मन लीनुं । कर्म दह्यां हरि नाम ॥ ७ ॥
आनमा मननोरे तुं धणी । हुं धगी नही एकवार ॥
नाहरि वस्तु ले तुं कने । हुं कने वण्मे अपार ॥ ८ ॥

* ॥ आद ॥ ५ ॥ *

ब्रह्मा बोल्या जमगय प्रत्ये । मोटा सुं माखोलु दे ॥
अधर्म ना बोलु दे । वैष्णव पूजे छे हरि तणा ए ॥ १ ॥
जेहने मुख हरि नाम अमृत । कंठे तुलसी लेलाट गोपीचंदन दे ॥
ते सुर नर वंदन दे । तीर्थनुं तीर्थ क्रमा वदे ए ॥ २ ॥

शंकर प्रमुख उपासना करता ये । तनक्षण नांहांथी छांडे दे ॥
 ते सुरत आवीने मांडे दे । वैष्णव जन जहाँब्रह्म वदे ए ॥ ३ ॥
 भगत परायण परउपकारी । एहेबु समरथ सेबुं दे ॥
 ते एक निरंजन देबु दे । मेबुं गर्भ मंकुष्ट हणे ए ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ ५ ॥ *

हरि स्वामी अरे हरि स्वामी अरे । बाप करने संभाल ॥
 जन्म मरण वश आनंदा ए ॥ १ ॥
 विमांतु रे विमांतु रे । हरि परब्रह्म नाम ॥
 अचेत बुधे थयो आंधनो ॥ २ ॥
 हरि स्वामी अरे माहाग स्वामी अरे । तुं छे दीन दयाल ॥
 एमना विमारेम बापडु ॥ ३ ॥
 बहु कीधां रे बहु कीधां रे । स्वास्थ कर्म ॥
 नरकने जम छे बिहामणां ॥ ४ ॥
 अनि दोहेलां रे अनि दोहेलां रे । आगे महा कष्ट ॥
 पूर्व जनमांतरे भोगवां ॥ ५ ॥
 तेणे बिहंतो रे तेणे बिहंतो रे । स्वामी आनंदा एह ॥
 तुम शरणांगत आवियो ॥ ६ ॥
 हावे गबो रे हावे गबो रे । स्वामी आपण मांहि ॥
 आपणे बोल संभालजो ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ७ ॥ *

हरि परब्रह्म रे हरि परब्रह्मरे । स्वामी तुं परब्रह्म ॥
 भाग्य जोगे जप पामीओ ॥ १ ॥

हरि एकजरे हरि एकजरे । स्वामी पुरोने कोड ॥
 भक्ति चराचर उपजे ॥ २ ॥
 आहवु मांडोरे आहवु मांडोरे । स्वामी जुग वैकुंठ ॥
 घर घर अवतरता नहीं ॥ ३ ॥
 अवतरिया छेरे अवतरिया छेरे । गोकुलना कहान ॥
 श्री पद्मनाभ पुरुषोत्तम ॥ ४ ॥
 जे गासेरे जे सांभलसे रे । परब्रह्म पदबंध ॥
 बंधन छूटारे भवतणा ॥ ५ ॥

* ॥ आद ॥ ८ ॥ *

॥ इति श्री कडवां संपूर्ण ॥ ४ ॥ १० ॥
 ॥ पंचाङ्गपारायण बीजो विश्राम ॥

* ॥ अथ श्री वडीकारज ॥ ११ ॥ *

जहीए छतु अछतु नहीं । नहीं निराकारने आकार ए ॥
 जहीए पवन अंबर नहीं । नहीं जग तेजने अंधकार ए ॥ १ ॥
 काले खाधाये मानव । दानव सुर मुनि महासिद्ध रे ॥
 खाधी चोसट जोगणी । शक्ति सीकोतर माहाकोड रे ॥ २ ॥
 खाधी चोरसी चेयक । बलवंत बावन वीर रे ॥
 आदे गरुओए समरथ । अविगति परब्रह्म रायो रे ॥ ३ ॥
 जेणे सरजिया महाकाल । काल मरे तेहने नाम रे ॥
 ब्रह्म हरादिक स्थापिया । ब्रह्माण्ड तणो नहीं पार रे ॥ ४ ॥
 लीला छतु अछतु करे । सुरनर अनेक वार रे ॥ ५ ॥

* दरेक कडवांनी छेक्की बे आद्रो होरीना रागामां “ केम भरिये रे केम भरिये ” कांभी मृदंग साथे गवाय छे.

* ॥ वलण ॥ *

मुरनग अनेक बार मरजे । ब्रह्म हगदिक स्थापे ॥
ममरथ लीलाये जग निपाये । दानव दुर्जन कापे ॥ ६ ॥
स्वर्ग मृत पाताल त्रिभुवन । धरनी अंबर मांडे ॥
अनेक रूप धरी धर्म पाले । प्रकृति तणा गुण छांडे ॥ ७ ॥
ते हरि पग्ब्रह्म जे पग्ब्रह्म । स्वामी पद्मनाभजी नमशरण ॥ ८ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

आदे नागयण ममगे रे । गरुओ मुक्ति दानार रे ॥
गरुओ गवन लक्ष्मीपनि ये । चतुभुज त्रिभुवनपनि गय रे ॥ १ ॥
क्षीरपयोनिधि पोटीआ । छेदवा दानव वंश रे ॥
स्थापे रे ब्रह्माण्डनी कांड रे । मुनि जन मानव हंस रे ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

मुनि जन मानव हंस स्वामी । शुक मनकादिक तहाँ गमे ॥
गुरु समा महेश्वर इन्द्रादिक । तेह पार को नव लहे ॥ ३ ॥
ब्रह्माण्ड ब्रह्माण्ड ब्रह्महगदिक । अनेक जुजवां स्थापे ॥
ब्रह्माण्ड केरो पारन लाभे । तेह पार कोण कोण आपे रे ॥ ४ ॥
ते हरि पग्ब्रह्म जे पर ब्रह्म । स्वामी पद्मनाभजी नमशरण ॥ ५ ॥

* ॥ आद ॥ २ ॥ *

प्रथम संखासुर मंधाखा । अवतर्या ममुद मोद्धार ए ॥
पञ्चरूप धर्युं स्वामी । लीला जलनिधि मोद्धार ए ॥ १ ॥
पृच्छ उलारियुं लीलाये । जलनिधि गयुं छे आकाश रे ॥
तेणे जले बृदो ए मेरु रे । रवि शशि मागर सुर लोक रे ॥ २ ॥

मेन कपोतनी रीत रे । झड़पी हण्यो मंखायुर दैत्य रे ॥
शंख पंचायण पुग्यो । त्रिभुवन ओच्छव होय निशान रे ॥ ३ ॥

* ॥ बलण ॥ *

त्रिभुवन ओच्छव होय निरंतर । त्राम पडे दानव तणे ॥
ब्रह्मा अग्नि लई नहां आप्या । चार वेद चहूं मुख भणे ॥ ४ ॥
दैत्य तणुं नहां कुल उथाप्युं । सुरनर निश्चल स्थाप्या ॥
दानवकुलथी वेदवाली । ब्रह्माने कुल कुल आप्या रे ॥ ५ ॥
ते हरि परब्रह्म जे परब्रह्म । स्वामी पद्मनाभजी तम शरण ॥ ६ ॥

* आद ॥ ३ ॥ *

स्मनला कौम रूपे । मंदर धरियेलो पृष्ठ रे ॥
मंदर फेरवतलां मुख हबुं । कौम उपनी नहां निंद्राए ॥ १ ॥
चौद रत्न नहां काटियां । लक्ष्मी सेवे हरिना पाय रे ॥
सुर असुर नर मुनि स्तवे । गिरिवर अधिक स्वरूपए ॥ २ ॥

* ॥ बलण ॥ *

गिरिवर गरुवा रूप स्वामी । कौम बीजे अवनर्या ॥
शेषनाग धरणीधर धर्थि । पृष्ठ विभागे ओधर्या ॥ ३ ॥
मंदर धरियो सुर अवगाह्यो । चौद रत्न नहां लीधां रे ॥
एणीपेर भक्तवत्मल नारायण । देवकाज मख सीधाए ॥ ४ ॥
ते हरि परब्रह्म जे परब्रह्म । स्वामी पद्मनाभजी तम शरण ॥ ५ ॥

॥ इनि श्री बडीकागज संपूर्ण ॥ ११ ॥

लोटी कारज

उदा भक्त समाजमां संसाम्ना सुखदृश्वना चम्बाथी कपामनी माफ्क
जीवात्मा लोढाय छे, तेमांधी बचवा शरणागतिना मार्गनी सूचनावाल्यु आ पद
छे, माटे आ पदनु नाम लोटी कारज.

* ॥ *अथ श्री लोढीकारज ॥ १२ ॥ *

मायारेसीकोतरी आत्मा वारयो । मलीन मंत्र विष आदिक भायों रे ॥१॥
 पाम्य शरण हरि परब्रह्मराय । गर्भश्वलेवा नथी अनेरो उपाय रे ॥२॥
 परब्रह्म नामे मंडल पुरावो । समरण नरसिंह वीर बोलावो रे ॥३॥
 परब्रह्म नामे महामंत्र साधो । ईन्द्रि सहित निश्चल मन बांधो रे ॥४॥
 शिति जल गगन पवन नहीं तेजा तहीए तु स्वामी महारा परब्रह्म एकरे ॥५
 चराचर प्रगट अभंतर जीव स्थाप्यो । नरक बीड़बंवा जम कर आप्योरे ॥६॥
 आत्मा पे तुं कर्म करावे । कर्म भोगववा देह धरावे रे ॥७॥
 जन्म मरण वश आत्मा वगोयो । छसभरी ताहेरा नाम सुं न रेयोरे ॥८॥
 जहीए रे स्वामी तमो बडपत्र सुता । तहीए आत्मा कहो कहां हुतारे ॥९॥
 अणछतो भगत विनती करजोड़ । तुं मीले हवे संकुष्ट छोड़ रे ॥१०॥

॥ इति श्री लोढीकारज संपूर्ण ॥ १२ ॥

* ॥ अथ श्री हर्षभोवन ॥ १३ ॥ *

श्री पद्मनाभ जोगे अवतर्या । अने प्रगट्युं परब्रह्म नाम ॥
 संकुष्ट छुब्बां आत्मा । लहे ते बैकुंठ ठाम ॥१॥
 एम करो परब्रह्म राय । समरथ तारी लीला ए ॥
 तु सखु होय त्रिभुवन । जयो जयोकार रे ॥२॥

* परात्पर भगवान् श्रीराम तथा श्रीकृष्ण शरणागतिनीं निर्भय मार्ग शारी अने मक्क के अवानी सर्व माटे सुलम छे माटेज ते मार्ग सुच्चयो छे, ईस्लाम मार्ग पण शरणागतिने बहुज आदरनी हषिथी अपनावे छे, तेओं महमदपेंगवरना अन्महयान मक्कानी हजे (यात्राए) जतो दूरथी ते नजरे पडतां ज धणाज आदरथी अरवी भाषाराम 'लब्जेक' एम बोलो छे, एनो अर्थ सेवामां हाजर हु 'जी साहेब' एवो याय छे, आवा मावथीज, रोनी अथवा पंचतत्वनो देह छोडनार, श्रीवात्मा दुन्यबी भान भूलवानी तेवारीमांज उदामक समाजमा स्नेही बर्ग आ पइ बोलो, देह छोडनारने शरणागतिनी याद देवडावे छे, तथा वाणीनु पद पण संभलावे छे.

सुरनर मुनिजन गही गया रे । समस्थ बिष्णु आधार ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश्वर रे । न लहे तारे पार रे ॥ ३ ॥
 मित्र सुदामा समधरा । अने मंदिर अनुपम कीध ॥
 कोटि कोटि इन्द्र तणी रे । गिद्ध अकेके स्थंभ ॥ ४ ॥
 गोकुल गोविंद अवतर्या । अने पीडागंगां देव ॥
 भक्त वत्सल भणी ओलगो । संत करे नाहागी सेव ॥ ५ ॥
 आदे अनादे एक तुरे । अने तुज वण अवर न कोय ॥
 विश्वभर व्यापी स्थो रे । सर्व निरंतर मोय ॥ ६ ॥
 परब्रह्म नरनारी भणे । अने जे परब्रह्म पमाय ॥
 श्रीपद्मनाभ जोगे अवतर्यारे । तुं छे वैकुण्ठ गय ॥ ७ ॥
 गोविंद कृष्ण मोगरि तुं रे । अने नागयणने गम ॥
 भक्त जहां जेबु मन धरे रे । नहां छे नाहरो ठम ॥ ८ ॥
 दश अवनारे अवतर्या रे । अने मत्स्यादिक छे जेह ॥
 दैत्य मर्वे तें ओधार्या रे । श्राप तणा कर्या छेह ॥ ९ ॥
 कृष्ण अवनारे अवतर्या रे । गुण कर्म न लहु पार ॥
 संत दृष्टिये तुने जाणिये रे । नाहाग रूप अपार ॥ १० ॥
 पंच तत्त्व तें स्थापियां । अने मन बुद्धि चिन अहंकार ॥
 माया जोगे व्यापियो रे । प्रगट पुरुषनो ए घर ॥ ११ ॥
 पांचे पांचे रे पमर्यो । अने पट दे तुझ स्वरूप ॥
 अनंत ब्रह्माण्ड भेवा करे रे । तुं छे अविगत भूप ॥ १२ ॥
 रूप नमारं सांभल्यां रे । अने निगम शास्त्र पुराण ॥
 ते कारण तुज विनवुं रे । तुं छे गय सुजाण ॥ १३ ॥

भक्त वन्मल भणी विनवुं । अने भगताजन विश्राम ॥
 एक मने सेवा करे । पामे नाहारु गम ॥१४॥
 रूप अरूपे जाणिये । अने नाम बडे दे पार ॥
 नागयण नाम उचगे । जोई लेजो सार ॥१५॥
 शेष सुखामन पोटणे । अने लक्ष्मी सेवे पाय ॥
 आदि विष्णु तुने जाणिये । अनन्त ब्रह्माण्डनो गय ॥१६॥
 नाभीकमल ब्रह्मा वसे । तेह न जाणे पार ॥
 ध्याने भगते जाणिये । क्षीरपयोनिधि गर ॥१७॥
 पिण्ड ब्रह्माण्ड भगी रहो । अने जेहेवु जलमां कुंभ ॥
 सेवा करे सहु ताहेरे । आदे देइने शंभू ॥१८॥
 दग्धण मुख अवलोकना । अने जेहेवो छे आभास ॥
 जोतां एणी पेर जाणिये । सर्व निरंतर वास ॥१९॥
 अनन्त मुरन तुने जाणिये । अने ब्रह्माण्ड ताहारा रूप ॥
 नागलोक चरणे वसे । तुं छे समग्र भूप ॥२०॥
 कृपा वडी पेर ताहेरी । अने जाणे वैष्णव लोक ॥
 एक मने सेवा करे । याले तेहना शोक ॥२१॥
 पद्मनाभ परब्रह्म तुं । अने तुं छे गरुओ राय ॥
 गरुई पेर छे ताहेरी । मन एकोनर उछाह ॥२२॥
 जग सचगचर मोहयुं ए । अने विष्णु भक्त उछाह ॥
 घर घर वैकुण्ठ मांडिये । तुं छे समग्र गय ॥२३॥
 लीलां लेलाई रहु । भगते हरि परब्रह्म ॥
 जे परब्रह्म एम जप कगे । पामे नाहारं शरण ॥२४॥

लक्ष्मी महिन सेवा करो । अने हरिनाशयग देव ॥
 भक्ति विस्तरे नाहेरी । दाले उधारनी खेब ॥२५॥
 मुखे भक्त भेवा करे । अने भक्त परगयण देव ॥
 नमा विष्णु एम उचरे । एहज नमारी मेव ॥२६॥
 बली माकारे धाईये । अने चहुभुज श्यामल वर्ण ॥
 गोविंद कृष्ण, मोरगरिं । गरुआ तहार नाम ॥२७॥
 बली विशेषे छकडो । अने जोनां आनम ज्ञान ॥
 हृदयकमल वासी रह्यो । ते नहीं कोय सपान ॥२८॥
 एक विशेषे जाणिये । ने दीपवंत आकार ॥
 रम पात्र ब्रत परहरी । अंजन महज निवार ॥२९॥
 तीर्थ ब्रत अवगाहियां । अने जो जपे परब्रह्म नाम ॥
 गोपी चंदन शिर वहे । पूजा, तुलसी संत ॥३०॥
 भक्ति भली छे नाहेरी । अने जे कोई जाणे सुजान ॥
 वेद मारग अनुसरो । मबली नाहेरी आण ॥३१॥
 भक्ति विना नव पामिये । अने भक्तिये भोलो गय ॥
 बली बली मा सोधमो । अवर नथी रे उपाय ॥३२॥
 भक्तजन महु सांभलो । अने अहर्निश करजो मेव ॥
 मन ध्याने अवलंबजो । जहां जुओ नहां देव ॥३३॥
 जोनां जन जन जुजबो । अने जग चगवर सोय ॥
 गवि आपोपे मांडीने । पात्र विलाणे जोय ॥३४॥
 बली विचारी जोवंतां । अने जाणे आपे आप ॥
 आपनणी पेर एक थयो । हुं थाले तुं बाप ॥३५॥

तुं आगळ सु माहरु । अने सघलां तहागं रूप ॥
 चन्द्र सूरज नें थापिया । जग सचराचर भूप ॥३६॥
 संत संगत सुख पामिये । अने जपिये आदि मुकुंद ॥
 आप व्याप मांडी रह्यो । अनंत ब्रह्माण्ड गोविंद ॥३७॥
 जोनां पर पामे नही । सुर ब्रह्मादिक लोक ॥
 निगम नेती एम उचरे । जाण कहावे फोक ॥३८॥
 पामर पेर प्रीछे नही । अने बोले अनि अहंकार ॥
 ढहापण माने नही । देह तणो, नहीं सार ॥३९॥
 ते पेर प्रीछे ताहेरी । जे तजे स्वार्थ काम ॥
 मन चरणे आरोपीने । शरण तमारे राम ॥४०॥
 मोटा वण नब छृटिये । अने समरण श्री गोपाल ॥
 मुनिजन सहु सेवा करे । तुं छे संत प्रतिषाल ॥४१॥
 सुख सेजा प्रभु सेविये । अने राजा श्री अविनाश ॥
 चार पदारथ पामिये । अंत अनुपम वास ॥४२॥
 तुज शरणागत आतमा । अने बैष्णव चरण पसाय ॥
 भोली भक्ति अनुसर्यो । तुं छे समरथ राय ॥४३॥
 अहर्निश संत संगत करो । अने पहोर घडी अनुमेश ॥
 ध्यान धरीने जोइये । दीसे ताहारा वेष ॥४४॥
 नित्य कर्म सघलां मारियां । अने कुल अनुसारे आप ॥
 पूजा विविध पेर पूजिये रे । एणीपेर मलिये बाप ॥४५॥
 इच्छाये गम्यो रे अजाणवे । अने ना करी तहारी सेव ॥
 हेत कृषा करो प्राणीने । तुं छे देवनो देव ॥४६॥

ताहारी संगत आनमा । अने मन प्रकृति ने तेज ॥
 हृदय कमल अवलोकीने । करु परमानमा हैज ॥४७॥
 सकल भोवन स्वामी वसे रे । अने सोई गजा अपवर्ग ॥
 अनंत ब्रह्माण्ड सेवा करे । आदे देइने स्वर्ग ॥४८॥
 ध्याने अवनीश्वर धाईये । अने गय अमूरन जेह ॥
 अहर्निश भक्त सेवा करु । लीलायो बली येह ॥४९॥
 जग सचगचर एम होय । अने जहाँ जोईये नहाँ देव ॥
 भक्ति प्रकृति परहरि करो । कर्म तणु करो छेह ॥५०॥
 भगत कर्मना निगमा । अने ते कम पामे पार ॥
 प्रकृति तणे वश आनमा । ते हवे ताहारी सार ॥५१॥
 भक्ति चराचर उपजी । अने स्वामी करोनी पमाय ॥
 अखिल विश्व मन एक हुईये । धाईये गरुओ गय ॥५२॥
 हरख भोवन हईडे धरु । अने जो जो आनम विचार ॥
 लेजो जप जोई करी । हरि मंत्र महुमां सार ॥५३॥

॥ इनि श्री हर्ष भोवन संपूर्ण ॥ १३ ॥

* अथ श्री शोक भोवन ॥ १४ ॥ *

हरि परब्रह्म तमो तो शियल धणी रे । मधले तुहज एक ॥
 तुं अमर मुख भोगवे रे । पडे अवग घेर शोक ॥ १ ॥
 एम कां स्वामी बप मरुता रे । तें जुग सरजीने दुःख ॥
 दुःख पाढी महु वाहियुं रे । वाहा वाहा मुगनर मुनि जागी ॥ २ ॥
 स्वर्ग भुवनतणा रणा गय रे । कर्म तणे वश काल ॥
 मरण वगोईयो रे प्राण ॥ ३ ॥

हरि हरि ब्रह्मादिक रडे रे । अवर नणी कोण मात्र ॥
 देह धगवी दुहबा रे । हजी अन चेते तु नात ॥
 एम कां स्थामी । ॥४॥

गवि शशि सागर मेदिनी रे । नव ग्रह नक्षत्र माल ॥
 स्थावर जंगम तुं सर्वे रे । ग्रामतो निवारे तुं काल ॥५॥
 आपे आप वगोईयु रे । छाहु आनम ज्ञान ॥
 आपे निश्चिल सुखे रहो रे । ताहेरु सुरे अभिमान ॥६॥
 देहि धंधे वाहियो रे । निंद्राये गई सर्व रान ॥
 एमज करतां मगी गयो रे । चब्बो जमदुनने हाथ ॥७॥
 जे मन हरि समरण नही रे । जे मुख नही हरि नाम ॥
 विष्णु भक्ति अंतर नही रे । तेहनो नरके छे डाम ॥८॥
 पुत्र कलत्र धने वाहियो रे । विसायुं हरि नाम ।
 मरण पछी अनि दुःख पढयुं रे । नरक वगोयो रे प्राण ॥९॥
 जे हरिनाम सदा जपे रे । सेवे तुलसी रे संत ॥
 गोपी चंदन शिर बहे रे । दृष्टि न आवे रे काल ॥१०॥
 काँई वगोयो आनमा रे । छंडावु हरि नाम ॥
 एणे सुखे सहु छेनयो रे । वाहो मोह संसार ॥११॥
 देह धरे एम जहां लगी रे । मरण न आवे चंत ॥
 ओचिन्तो काले ग्रासियो रे । आक्रंद करे रे अत्यंत ॥१२॥
 देह छोडाव्यो आनमा रे । दुःख समो हवे तेणी वार ॥
 देह विना कष्ट चलावियो रे । दोहेल पंथ अपार ॥१३॥
 असिपत्र वन बीहामणुं रे । वरसे खडगा रे तीर ॥
 अग्न वरण बेलु बले रे । तहां चलाव्यो रे जीव ॥१४॥

उपर बारे रवि तपे रे । नाखे भोम वराल ॥
 रुडतो जीव चलावियो रे । देखे तुहज दयाल ॥१५॥
 उपर अतिगढा पडे रे । मारग घोर अंधार ॥
 भोम लोह काटे जड़ी रे । आकंद करे रे अपार ॥१६॥
 आगल वेत्रनी नदी वहे रे । शन जोजन विस्तार ॥
 अर्ध शोणिन परु वहे रे । जीव चलाव्यो ते मांही ॥१७॥
 क्षुधा तुषादिके आकलो रे । वंछे पुत्रनी आश ॥
 अन्न उदक दीधां लहे रे । नहीं तर मेहेले निःश्वास ॥१८॥
 नित नित पथ चलावियो रे । जोजन बसे रे मुडताल ॥
 वर्ष दिवस लगी आनमा रे । पडियो दुःखनी रे जाल ॥१९॥
 पहेलुं कर्म न चिनत्युं रे । हँद्रिये वाहो रे जीव ॥
 पछी महासंकुष्टे पञ्चो रे । आकंद करे रे अनिगर ॥२०॥
 रौख अनि ख घणां रे । नर्क ते कुंभीपाक ॥
 नर्क वेदना भोगवे रे । कोई न करे रे संभाल ॥२१॥
 नर्क भोगवे एकलो रे । नहां पचारे जमदूत ॥
 पाप कर्म तें आदयां रे । ठल्ले काई रे अबूझ ॥२२॥
 कर्म तणे वश आनमा रे । एणी पेर रहे जुग कोड ॥
 चार खाण खडभड सही रे । नर्क अठवीस कुँड ॥२३॥
 कर्म जाल तें बांधियुं रे । एहनो मो अपराध ॥
 हुं माहारु नित नित करे रे । जन्म मरणने रे पाश ॥२४॥
 ते सघले हुं एम कहुं रे । ब्रह्मा कीट पतंग ॥
 एणे बोले सहु छेनरु रे । आपे रहो रे निश्चिन ॥२५॥

अजर अमर अकलंक तुं रे । कर्म नही ज नाम ॥
 ओधर ए हवे आतमा रे । निष्ठुर पणु रे परुं छांड ॥२६॥
 तु जननी ने नान तुं रे । तुज वण अवर न कोय ॥
 दुःख महे ए आतमा रे । एह विचारी मन जोय ॥२७॥
 नाहारु छोरु आतमा रे । जो सुमरे तुज नाम ॥
 वेगे उत्संगे लो आतमा रे । लीला ए तुज नाम ॥२८॥
 भक्तवत्सल भणी विनवुं रे । भ्रधर भक्त आधीन ॥
 शरणागत विजेपंजरु रे । ताहरे शरणे छे दीन ॥२९॥
 तुं छोडवेनो छूटिये रे । अवर नथी रे उपाय ॥
 नही तो काल कर्म नडे रे । जमनो मोटो छे घाय ॥३०॥
 नाहारे नामे जम हणुं रे । कालनु कापु रे शिथ ॥
 कर्म तणा वन दाहवु रे । भाँजु नर्क अठवीस कुंड ॥३१॥
 ॥ इनि श्री शोक भुवन संपूर्ण ॥ १४ ॥

* ॥ अथ श्री वेद पुराण ॥ १५ ॥ *

हरि हरि वेद पुराण स्मृति पठदर्शन । निधंट विचारी स्वामी जोइयु ए ॥१॥
 हरि हरि एकज सार सनानन लाधु ये । चैतन हरि परब्रह्म नणुं ए ॥२॥
 पाछला जन्मतणा दुःख कां विसरो । गर्भने घरेलेई तुं कां थयो ए ॥३॥
 कर्म तजी हरिनुं ध्यान मा छांडेस । अहर्निश अनुमरो क्षणु घडी ए ॥४॥
 धंधे वाहियो कालमां निगमो । काज छे ते रे सिधु नथी ए ॥५॥
 जन्म मरण सुखे दुःखे वाहियो । काज सिधा विना जग भम्यो ए ॥६॥
 काज सिधु नथी काम उपर नथी । काज सिधा विना घरनथी ए ॥७॥
 देह धरे ते आनमा बोलिये । देह विना परमानमा ए ॥८॥

मूर्ख विना परमानमा धाईये । अवर प्रपंच कीजे नहीं ए ॥१॥
 ते परमानमाथी महु ऊपजे । अंते नेणे बली महु आथमे ए ॥२॥
 साथी भूत्यो वन एकलो रुबे ये । साथी दीया विना नव समे ए ॥३॥
 जननी वछोहु जेमबालक रुबे ये । जननी पाम्या विना निवग्न नहीं ए ॥४॥
 जल विना माछली टलबले अनि घणु । उदक पाम्या विना सुख नहीं ए ॥५॥
 एम परमानमा सुं रहे आनमा । एटले काज मिधु मही ए ॥६॥
 ब्रह्मज बोले ब्रह्मज सांभले । ब्रह्म देखेने परब्रह्म जपे ए ॥७॥
 वासुदेव परमानमा परब्रह्म । विष्णुनारग्यण एक तुं ए ॥८॥
 जीव अजान कां धंधे वाहियो । पोते अधिक ओछु नहीं ए ॥९॥
 परब्रह्म आईसे जे जम गम्या ये । ते नम रहोने परब्रह्म जपो ए ॥१०॥
 समग्य मबल सनानन सार ये । पार नहीं जम गुण तणो ए ॥११॥
 परब्रह्म नामनी उपराजन साची ये । ते विना प्राण मीदाय घणुं ए ॥१२॥
 आप कुबुधे नबुं नव कीजिये । परब्रह्म बोल ना लोपी ए ॥१३॥
 बोल लोपे होय धणी ए वहुणो ये । तेहनणी गत हवे कोण हशे ए ॥१४॥
 धणी मुके तेहनुं आईस लोपे ये । अवर मारग तेहेने गत नथी ए ॥१५॥
 धणी ए साचो तेहनुं आईस साचु ये । अकम कुड महु वणमतुं ए ॥१६॥
 अणछनां उपजे छनां वणमे ये । तेह तणो बोले स्वामी नर्कछे ए ॥१७॥
 जेह सहाय छे सरजेने केढे ये । तेह मुकीने कोण सेवीम ए ॥१८॥
 धंधेरे वाहियो वाप विमारियो । तो कोण नर्कथी नने काढसे ए ॥१९॥
 दरशन सेवीस धरम संभालीस । अचल सेवा विना वणससे ए ॥२०॥
 अनेक प्रकार तुं प्राण आगे हवो । हवे कसुं कोड तुने बली ए ॥२१॥
 अमृत पाम्यो प्रमादे कां ढोले ये । अवरस नथी काँई हरिसिमो ए ॥२२॥

कान्च काण मणि हाथथी कां निगमे । थोड़ले सुखे वहु सुखकां नजे ए ॥३१॥
गर्व माकरे मतुं पृथ्वीपति गजिया । संक मा खीजेमतुं दालीद्रिया ए ॥३२॥
हमसद केग परबना पाणीनी पेर । रुधिर माट अहि उदक छे ए ॥३३॥
जागदानादिके राज प्राप्त होय । धर्म खूटेने बली दुःख सहे ए ॥३४॥
पृथ्वीपति नणुं सुख धनपति नणुं सुख । -

सूक्ष्म जीव तणुं सुख ममतूल छे ए ॥३५॥

आप आपणे मन जे सुख माने ये । नर्क संपूर्ण तेहने नहाँ छे ए ॥३६॥
परब्रह्मपदसुख जे जई बैठ ये । इन्द्रपद लगी ते नव आभडे ए ॥३७॥
मनना मनोरथ छांडीने हरि भजो । विगत फीटेने सहु एक होय ॥३८॥
भाषा न जाणुं ने छंद न जाणुं ये । एक जाणुं स्वामी मांडण हार ए ॥३९॥
तमवडे जाणुं ने तमवडे जीवुं ये । तमवडे छोडवुं स्वामी चारखाणए ॥४०॥
आश्रमे दर्शने वर्णे जे भोलव्या । तुं विना महु ए रुदवडा ए ॥४१॥
ताहारे आईमे सबलकर्म छे । लागनां अंध बीहे नही ए ॥४२॥
कर्म भोगवी पछी दुःख सहे आनमा । तुंजन लाजेरे ताहार भणीए ॥४३॥
अणछनो भगत विनती करे स्वामीजी । आनमा फेडीने अलगो मुंकरे ए ॥४४॥

॥ इनि श्री वेदपुगण संपूर्ण ॥ १५ ॥

* ॥ अथ श्री सोरंगी ॥ १६ ॥ *

जीरे सरस्वता स्वामीने विनवुं । अने मागु एक पमायु दे ॥
जीरे भोली भक्तिये गाइसुं । तुं कोटि ब्रह्माण्डनो गयो दे ॥ १ ॥

॥ सोरंगीआ ॥

सोरंगे श्रीहरि धाई ये । आगहिये गोकुल कांहान दे ॥
हरजी हरिपरब्रह्म जे परब्रह्म । गरुआं नमारा नाम दे ॥ २ ॥

॥ सोरंगीआ ॥

जीरे संमारसागर दोहेलो । अनि उंडोने अपार दे ॥
जीरे रामनाम कर बेलडी । उतरिये पेलेपार दे ॥ ३ ॥
॥ सौरंगीआ ॥

जारे कोटि ब्रह्मण्ड भाँजे घडे । ते कंडिये क्यम भाय दे ॥
कोहोने चदाबुं छलपातरी । जेहना चौद भुवन मुख मांहि दे ॥ ४ ॥
जीरे आनमविद्या जाणीने । गुण तारुणीमे रानु दे ॥
कोटि ब्रह्मण्ड व्यापी रह्यो । ते केवल ब्रह्म आवाच दे ॥ ५ ॥
जीरे भक्तवत्सल भणी ओलग्यो । वली एम करसो कांण दे ॥
सेवो गर्भ संकुष्ट दुःख ठाले । ए निश्चय मन आणो दे ॥ ६ ॥
॥ जीरे अम्बरीष गजा छलपाडे । अने समर्था देवमुगारि दे ॥
जीरे मुनिगजा बेहु बोल पालवा । अवनस्था दशवार दे ॥ ७ ॥
जीरे सफरी रूप धर्युं श्यामलवरण । उदधि गाह्यो लीलां दे ॥
ततक्षण पंचायण करग्रहियो । वेद वाला हेलां दे ॥ ८ ॥
जीरे कूरमरूप धर्युं नारायण । मंदर पृष्ठे धरियुं दे ॥
सुर असुर बेहु संग करीने । नाग नेतरू कस्तियुं दे ॥ ९ ॥
योषितरूप धर्युं जनार्दन । अमृत कलश कर धरियो दे ॥
असुर वंची हरिये देवने पायुं । सुरकारज सर्व मस्तियां दे ॥ १० ॥
जीरे वगहरूपे ढाढाये माही । वसुधा कीधी वाम दे ॥
देवतणो हरिये उपद्रव टाल्यो । दैत्यनां भाग्यां हांड दे ॥ ११ ॥
जीरे नरसिंहरूपे नेहर बीडायों । मार्यो दानवगाय दे ॥
स्थंभ फोडी हरि आविया । भक्त कर्यो पमायो दे ॥ १२ ॥
जीरे वामन बलिपाताल निवासो । अने टाल्यो इन्द्रनो राग दे ॥
विश्वरूप तहां कीधु स्वामी । अने पृष्ठे धरियो पाय दे ॥ १३ ॥

जीरे पग्गुगमे क्षत्रिपन मोडो । जोडो वाढवलोक दे ॥
 ऋषिवर्मनो अपगाध बछोडयो । याल्यो पिनानो शोक दे ॥१४॥
 जीरे दशग्नि मुनिवर श्राप मीधारु । सरियां मघलां काम दे ॥
 जगन कर्गे गय पुत्र मागिया । तहां अवतरिया श्रीराम दे ॥१५॥
 जीरे गमचंद्र अवतारज लीधो । अने कीधां बमुधा काज दे ॥
 मीना कारण रावण मायो । आप्यु विभीषण गज दे ॥१६॥
 लक्ष्मण मीना महिन मनानन । अयोध्या केरुं गज दे ॥
 पुष्प विमान बेसी पग्गेश्वर । मरियां मघलां काज दे ॥१७॥
 जीरे गमरूपे व्यापी रह्यो । अने जे जुओ ते जाणो दे ॥
 जुबो गर्भ मंकुष्ट दुःख दाले । मबली जेहनी आण दे ॥१८॥
 जीरे वेद वडे तुने जाणिये । अने वेद न लहेतागे पार दे ॥
 गमरूप व्यापी रह्यो । ते भक्त जन माधार दे ॥१९॥
 जीरे नंद गोप धेर अवतर्या । अने गोकुल कीधुं ताम दे ॥
 वार वन गिरि गौ चारवा । अवतर्या गोविंद राम दे ॥२०॥
 जीरे कांने कुण्डल जलहले । अने उर गुंजाफल हार दे ॥
 मोर्खीच्छ मुकुट शिर धगियो । कहांनड रूप अपार दे ॥२१॥
 जीरे कहानुडो गोवालियो । अने वन गौ चारवा जाय दे ॥
 जमे ने जमाडे जमनो । ब्रह्मादिकने वाहे दे ॥२२॥
 जीरे जमुना जल झंपलावियु । अने चढा कदमने ढाल दे ॥
 फेण उपर हरि नाचिया । नाले नाथियो काली दे ॥२३॥
 जीरे पहरण पीत पटोलडी । अने ओढण नव रंग चीर दे ॥
 नाग पलाणी हरि आविया । ते गरुओ जादव वीर दे ॥२४॥

जीरे गोकुल र्मिंगु वाहियु । बुंदावन वाहो वंश दे ॥
 मान पिनाना बंधन छोड्याँ । कहाने मायों कंस दे ॥२५॥
 जीरे अनंत चाल्यो अगियार वरीमो । करी गमनी वेल दे ॥
 विद्यापाठ करवी पांडे । तेडअबडावो गेल दे ॥२६॥
 जीरे विवाह काण शिशुपाल निवायो । अने परण्या रणी आठ दे ॥
 वली अनेक विविध पेर स्त्री वर्या । ते वेटा साठी लाख दे ॥२७॥
 जीरे मोणितपुर हरि आविया । काँई जुध जीत्यो हास्यामी दे ॥
 बाणासुरना बाहु छेदिया । ओँचा अनिरुद्ध पामी दे ॥२८॥
 जीरे नगनारयण रथ चहि आविया । विश्व रूप तेणी वार दे ॥
 पांडव तणो हस्ये उपद्रव याल्यो । मारी क्षोणी अढार दे ॥२९॥
 बुद्धरूपे हरि ध्यान विचारे । अने जोग मार्ग लाधो दे ॥
 कलंकी रूपे दुष्ट निवारवा । अखे आयुध कर धर्या दे ॥३०॥
 जीरे दशे अवतारे धाई ए । अने भागवत चोवीम दे ॥
 सेवो गर्भ संकुष्ट दुःख थले । परमपुरुष जगदीश दे ॥३१॥
 जीरे ऐसो अवनीश्वर धाईये । अने अकल असंभव जेह दे ॥
 जोगेश्वर मन दुर्लभु । तुं ब्रह्मादिक छे जेह दे ॥३२॥
 जोरे गोविंदना गुण गाईये । वली विविध पेर ध्यान दे ॥
 कृपानाथ कृपा करो । तो जागे आत्म ज्ञान दे ॥३३॥
 जीरे चत्तुभुज प्रांगण पोतांवर । मस्नक मुकुट मोहिये दे ॥
 लक्ष्मी सहित क्रीडा करे । तहां वैष्णवना मन मोहिये दे ॥३४॥
 जीरे अमूरत गजा ध्याईए । अने रूप अरुपे जाणो दे ॥
 वेद मारग अनुसरो । भक्ति भाव मन आणो दे ॥३५॥

जीरे तुलसी केरे पांनडे । पूतनानो रिपु पूजो दे ॥
 मोह मत्मर मद परहरे ने । आनमङ्गाने बुझो दे ॥३६॥
 जीरे लक्ष्मी महित हरिसेविये । अने सेवु लील विलास दे ॥
 जीरे मनवांछित फल पामिये । ते रजा श्री अविनाश दे ॥३७॥

॥ इनि श्री सोरंगी संपूर्ण ॥ १६ ॥

॥ पंचाङ्गपारायण त्रीजो विश्राम ॥

* ॥ अथ श्री पृथ्वी धोल ॥ १७ ॥ * *

(विघ्न हरण)^१

विघ्न हरण गुणनायक । दायक निजमनि सार ए ॥ १ ॥
 पृथ्वी विवाह वस्त्राणी ए । खांण चारे तणो पार ए ॥ २ ॥
 मस्तवास्वामीने विनचुं । कहुं निरंजन वाण ए ॥ ३ ॥

१ नोंध : “ पृथ्वीधोल अथवा विघ्न हरण ” उदा भक्त समाजमो पृथ्वीधोल नामनु पद गवाय छे; तेसां नारदजी ब्रह्मा पासे पट्टीता लग्नी प्रार्थना करे छे. आ पद शमसाने शबने बलाव्याघाद नारीवर्ग वेर आवतां जटलु मुखपाठ होय तेटलु गाय छे. प्रलय वरवते जलमां द्वूतीं पृथ्वीनी प्रार्थना छे. अने आदि वराह भगवाने तेना करेला उद्धरनु वर्णन अध्यारुचीए करेलु छे. ते आदो भक्त समाज लज्जे के ओच्छवना प्रसंगों प्रसाद लेती वसते गाय छे. परंतु वैष्णव समाजे दस्तोजना प्रशाद समये पृथ्वी धोलनी आदो लोलवानी परियाटी पाडकी हितावह छे. अने वैष्णवताने द पात्रनार छे. जानैया प्रसाद लेवा आवतां पगतमा पुरुषवर्ग तथा नारीवर्ग पण गाय छे. लम करावनार उपाध्याये (गोरे) पण संत सोहागा साये आ पदनो केटलोक भाग गाय छे. नारीवर्ग जहा छे. तथा वरकल्याने विश्वासी वस्ते नारीवर्ग पण आ पदनो केटलोक भाग गाय छे.

बा पदमां पृथ्वी शब्दनो अर्थ पृथ्वीनी अविदेवी करवानो छे, अर्थान् अमुक स्थल के वस्तुनो खास देव के देवी, रक्षक देव के देवी करवानो छे.

पद रचनार साथे पदने व्यवहारिक उपयोगमा लेवडावनार जीवणजी अहागज तथा अव्यवहारमा तेनो उपयोग करी समाजमो तेने जोवतं राखनार समाजनो पण महद्, आभार मानवानो रहे छे कारणके ते सियाय ‘ कस्तु कईने समज्या कसु, आंखनु काजल गाले घस्यु ’ तेषु यात,

२ पृथ्वीने परणनार उमेदवारो.

धरतीए कन्याए परणीए । वर प्रब्रह्म चक्रपाण ए ॥ ४ ॥
 बालकुंवारी बेटी हवी । वर दल जोग नही कोय ए ॥ ५ ॥
 जेह उपनो अहंकार ए । तेहने नादे चिरकाले ए ॥ ६ ॥
 कृतज्ञग बेनु भूपनि हवा । तेह नणो अनिरेअहंकार ए ॥ ७ ॥
 ऋषितणे कोपेथी पाडिया । उपनो परशुओ गय ए ॥ ८ ॥
 प्रथुतणे नामेये पृथ्वी । पृथुअते पुन्य निधान ए ॥ ९ ॥
 लाढीअ छेरे बडे गुणे । वर दल जमल^१ नही कोय ए ॥ १० ॥
 मुनि ईश्वाकु मान्याना । सगर ककुस्थ दिलीप ए ॥ ११ ॥
 ते महु वर थई आविया । वन परणे मरी जाय ए ॥ १२ ॥
 नारद ऋषि ब्रह्म लोकगया । विनववा आदर तान ए ॥ १३ ॥
 बाल कुंवारी बेटी हवी । ब्रह्मा मन काँइ नव चंत ए ॥ १४ ॥
 करोने वेहेवा बछेद^२सुं । ब्रह्माण्ड मांडो ने जंग ए ॥ १५ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

॥ सलुणी ॥^३

सलुणी ए ब्रह्मा बोल्या सुणो विप्रगय ॥ सोभाग्य सलुणी ए ॥ १ ॥
 कन्या ए पृथ्वी प्रौढी हवी ॥ सलुणी ए
 वरदल जोग्य नही कोय ॥ सोभाग्य सलुणी ए ॥ २ ॥
 गरुओ ए सुर्नर मुनि मांहि ॥ सलुणी ए
 त्रिभुवन माहरी सृष्टि ॥ सोभाग्य सलुणी ए ॥ ३ ॥
 पृथ्वीथी बडोकर को मरज्यो नथी ॥ सलुणी ए
 लोढेग अवर महु कोय ॥ सोभाग्य सलुणी ए ॥ ४ ॥

^१ पृथ्वीना जेटवा रुग्वाळा कोइ बीजो वर नयी,

^२ विधिपूर्वक — ^३ पिता पुत्रानी वातचीत

बेटीथी बडो वर कोय छे नही ॥ सलुणी ए ॥
 के वर दीजिये धेय ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ ५ ॥
 दोष लागे रे कुंवरी मुता ॥ सलुणी ए ॥
 तेसे बोल्या मुनिगाय ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ ६ ॥
 ब्रह्मा अविधारो ने विनती ॥ मलुणी ए ॥
 पूछो ने बेटीए जोग ॥ सोभाग्य सलुणी ए ॥ ७ ॥
 त्रिभुवन तुज वर कोण गमे ॥ मलुणी ए ॥
 कोण वर गमे रे संमार ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ ८ ॥
 कहोने बच्छ मुनि विचार करी ॥ मलुणी ए ॥
 बेटी बोली मुणो तात ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ ९ ॥
 मुज वर एक त्रिभुवन धणी ॥ मलुणी ए ॥
 जहिये नही गवि चंड ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ १० ॥
 दानव नर नरेन्द्र नही ॥ सलुणी ए ॥
 मुनिवर जोग नही कोय ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ ११ ॥
 जहिये नही रे जुग पवन तेज ॥ मलुणी ए ॥
 गगन मंडल गया नीर ॥ सोभाग्य सलुणी ए ॥ १२ ॥
 अंधकार भयंकार हवो ॥ मलुणी ए ॥
 बढी हुं प्रलय तणे हाथ ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ १३ ॥
 बूढिय हुं तहो जल तेसे ॥ सलुणी ए ॥
 माहेगे शत्रु कल्पांत ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ १४ ॥
 बूढी हुं जम धणी वहुणी ए ॥ सलुणी ए ॥
 त सम समरिया श्याम ॥ सोभाग्य मलुणी ए ॥ १५ ॥

गुरुओं ए प्रभुपरब्रह्म स्वरूप ॥ सलुणी ए ॥
अस्ति भुवनतणो ईश ॥ सोभाग्य सलुणी ए ॥१६॥

* आद ॥ २ ॥ *

हरीं परब्रह्म नमो तो शियलधणी ए। करोदीन उपर दया अनिधणी ए ॥
तमो समरथ नाथ वैकुण्ठराय ए। तमो केडियो दानव तणो गाम ए ॥२॥

नोंध — १पृष्ठवीनी प्रार्थना ; आ आदमां पृथकीए करेली प्रथना हो, अने पृष्ठवीनीथी उत्सव थएला अन्ने भगवन् अर्पण करो, ते प्रार्थनाने याद करवी ते कृतज्ञता बतावी गणासे अथवा गीताजीनी गाएँगां यज्ञत्रिष्णु भोजन गणासे,

जीवणजी महाराजे प्रसाद धर्मवन् अर्पण करवा नीजेनी आरती रची हो, ते दोके भजे तुजसीदल चटावी भनोमन चोली रामकलीर कही प्रसाद लेवो, जाके खानानी घर आगल के भक्त समाजनी परगतमां रामकलीर कहेवडावया बादज प्रसाद लेवानी शरुआत थाय हो, आ भक्त समाजनी जुनी आखकारनीय परिपाटी हो.

मुख पाठ कर्या बाद खाली खाली जवारा तरीके प्रसादनी आरती के साथी योलवी, तुलसीनो सथा भगवाननां अनादर गणासे, अर्थात् भक्त अने भगवननां अपमानधी रात्रिनी भासक कुलनाशनु कारण न बनसो, एवी आ नौंध लख्नारनी प्रथना हो, खास परथारावाला भक्त प्रसादनी सरखी छह आरती मुख्यपाठ करी लेवी हितवह हो, प्रसाद अजीर्णियुक्त कमणीनो लथा अजीठो न होयो जोहर अर्थन् डाढ़ल्हृष न होवो जाइए,

आरती :- तंगे दृढ़ा तरे पियाकु बुलाओ, भाव प्रेत कर भोजन पाशो ॥टेक॥

साक पाक शाश्नके होई, भाव प्रेत हरि लेजो साई ॥१॥

अष्ट पटराणी लीजो बुलाइ, आरती करत जशोदा माइ ॥२॥

सोल सहल लु भोजन कीजे, जुन जीवणदासकु दीजे ॥३॥

साथी :- शाम सत्रा बजनारसु, आरोगो जहुर्पतिराय ।

जुन पवे जीवणा, सतगुरुतणे पसाय ॥४॥

आठ पटराणीना १ रुक्मणी २ जांबुधनी ३ सत्यभामा ४ कालिदी ५ मित्रविदा ६ सत्वा ७ भद्रा ८ लक्षणा ॥

मोर्त्युरा (मधुपुरी) वाला भगव दामोदर पुरशोक्तम पेन्सनर नाशननी प्रेरणाथी मालवाथी दोस्रीगामयी धासीरामे मोक्षलेला ग्रन्थमां आ प्रसादोगु लखाण हो.

वैष्णव जीवणदासजीने पुञ्जु, परसन (प्रश्न) जे महाराज परसाद हो हो ते केम आणीए ॥ तारे वैष्णवजी बोल्या जे ॥ तमुने कहीसु परसन ॥ वैष्णव सरने यालो लाभ्या ॥ सरवे यालो एकठी करी ॥ एक वैष्णवनी शाल बुदी रेवा दीधी ॥ शा माटे ते थाल वारका पैसानी माटे ॥ ते उपर माला चढावी तारे मणको मालानो काळ्यो ॥ तारे सरवे जाण्यु ॥ परमेश्वर हो हो ते नीषानी..... जीवणजी कहे लभास एवु मन थाओ तो तमो जाणो सयलो बात ॥

तमो दैत्य मंघागीने देव स्थाप्या ए। तमो भक्त प्रह्लादना बंव काप्याए॥३॥
हण्यो नम्कदानव हस्ति चक्रधाये ए। छुटी गजकुमारी महुनमोपमाय ए४
हरि तमो पमाये महु देवनारी ए। मुख भोगवे गज दानव निवारी ए॥५॥
तमो ग्राहना कुष्ट मानंग छाज्या ए। ध्रुवजी अपमाननो परिभाव मोड्यो ए६
महाकष्ट जल बूँडनां हरि ओधागे रे। मुज ओधगी परब्रह्म तमो मीधागे रे। उ
हुनो भक्ति भावे सेवुं एक म्यामी ए। जगन्नाथना चाणनुं शशण पामी ए॥८

* ॥ आद ॥ ३ ॥ *

देव^१ दयाल प्रगट हवा पम्ब्रह्म। आदे वगहनुं रूप धर्यु ॥१
जेह श्रवण मांहि लचयुं आकाश ए। नेज लचुरे जेसे नयण मांहि ॥२
पवन लचुरे जेसे शाम मोझार ए। आहारतुं जल जेसे म्बस्ति मांहि ॥३
नभ शशी मंभवा ढाढने अंकुर ए। नहीं ए हुं म्यामाजीए ओधगी ॥४

* ॥ वल्ण ॥ *

ओधरी^२ देवदयाल नाएक। भक्त वत्सल सू करी ॥

ब्रह्मा शंकर नहि जहिये। सृष्टसुं मचगचरी ॥५॥

विश्व करना विश्व हमना। नाथ परमानंद ॥

वामुदेव मुकुन्द गरुआ। कृष्ण हरि गोविंद ॥६॥

* ॥ आद ॥ ४ ॥ *

माहेरे^३ वर नथी अवर एहज विना। ओधरी जेणे हुं तेह वर ॥१॥

अमो मन वमीयुं छे एह वर गोविंद। दो मुज गोविंद एह विचार॥२॥

दैत्य मांकुष्टथी छोडवी जेणे ये। मोल महस्त वर्या तेह वर ॥३॥

ब्रह्मा नारद ऋषि हरखे उन्नतियाए। ब्रह्माए समस्ति नपत ऋषि ॥४॥

१ सगवाननु अर्गद वरहरूपे प्रगट यवु ने पृथ्वीनो रद्दार.

२ मगवान सिवाय अन्यने वरवानी चोखी ना,

३ पृथ्वीनी वर पसदगी अने 'पत' पासे इच्छित वरनी मामणी.

* ॥ चलण ॥ *

मपन^१ ममर्या मुनिवग । मन हबो हरख अपार ॥
 आविया मुनिवर लगन कीधुं । जोयो मेल विचार ॥ ५ ॥
 हरखे ते होय रे हथोलडां । मलिया ते सीयल ब्रह्माण्ड ॥
 इन्द्र चंद्र नरेंद्र मलिया । मली शक्ति चामुङ्ड ॥ ६ ॥

* ॥ आद ॥ ५ ॥ *

जीरे^२ एकादशी मदमुदनी ए । तेणे दिवम विवाह रे होय मेदिनी ए १
 तहां संत महुने होय नोनगं ए । एहेवा विवाहनां निपजे मानंगं ए २
 चढो फूलके होय बहु वाणा ए । ब्रह्माण्ड वांधो तरीया तोणा ए ३
 तहां खेखेर धुडियो उछले ए । तहां मुग्नर धवल दे अनि भला ए ४
 तहां पंच शब्द घन वाजिया ए । भला खुग्नर त्रिभुवन गजिया ए ५
 हरिनी जान आवी ग्लीयामणी ए । अनि हरखे ते मागे वधामणी ए ६
 तहां फूल तंबोल सोहामणां ए । तहां अप्मरा नाचे ओछव होय ए ७ ॥
 जीरे वर पोहोनो रे जानैयावाम ए । गोर वरजीनुं गोत्र प्रकाश ए ८ ॥
 तहां घडियुलगनकुषीएसाधियुं एवरे खुप भरीमख मंतप्रसादे ए ९ ॥
 हवे लाडीने मोकलो मुखडी ए । जम लगन घडी रे होय ढूंकडी ए १० ॥
 वर अमवार होईने मांचगे ए । लक्ष कोटि ब्रह्माण्डमु परवरे ए ११ ॥
 जीरे नोरणे होय छे पोहोकणा ए । वर पर ब्रह्म कीजे आवारणा ए १२ ॥
 जी रे ममेवरते ममेवरते मावधान ए । मधुपर्क होय बहु अखदान ए १३ ॥
 तहां^३ लाडा अंतरपट रही ए । वर लगन ममे कन्या कर ग्रही ए १४ ॥

१ पृथ्वीमा लग्नात्सव चाटे "कांत्रत थयेला देख दंबीओ,

२ लघु वर्चीमां प्रथम संत सोहागो गाया पठे पृथ्वी धोलनी आ बाद गावामां आवे छे.

३ अर्द्धियां वरकन्त्वानो हस्तमेलाप करावबो अने खेसनो अंतरपट करत्रो.

* ॥ आद ॥ ६ ॥ *

जीरे चाँरी केगे चाँरी केगे गङ्गओ विचार ए ॥
 करनम चाँरी करनम चाँरी नहीने आवार ए ॥ १ ॥
 सुत्रधाग सुत्रधाग सुध बुध कगेनी दोरी ए ॥
 खाणचार अंगतणी कगे चाँरी ए ॥ २ ॥
 गनन मंधामण निधंट विश्वाम ए । वस्कन्या वेगमन अनिरे हुलाम ए ॥ ३ ॥
 ब्रह्मा विश्वानर करम होमाय ए । शनलक्ष्मी ब्रह्माण्ड निःकर्म थाय ए ॥ ४ ॥
 काल पचीने कंमार निपायो ए । मंतो पीरमे संतो पीरमे आगेगो वराय ए
 ममरण धृत जप उपर नामु ए । कन्या महिन वर तृपत पाम्या ए ॥ ५ ॥
 मरजिया जेणे ग्रह सुरलोकपाल ए । तेह नणी सेवाकरे दशेदिगमालण ॥ ६ ॥
 ध्रुवजी जेणे स्थापिया तेहमुनि हालो ए । मंजमनीतणो वेहेपास यालो ए ॥ ७ ॥
 दंपती वरनिया मंगल चार ए । शन लक्ष्मी ब्रह्माण्ड लीधेलां पार ए ॥ ८ ॥
 विनवे आतमा शब्दब्रह्म ए । वर आविधारे हरि परब्रह्म ए ॥ ९ ॥
 स्थावर जंगम व्यापकगाय ए । नमो परणी अमने करो पसायो ए ॥ १० ॥
 हुंकर मेहोय एम बगुनो रे ए । खाण चार गर्भकुप माँहे खुनो ए ॥ ११ ॥
 तुं मदाय छे तुंहज होय ए । हुं नथी निश्च एक तुहज होय ए ॥ १२ ॥
 करजोडी स्वामीजी एट्लु मागु ए । नमो परण्या महु निरमुख मागु ए ॥ १३ ॥
 अणुअर शब्द ब्रह्ममु मागु ए । हुं नथी निश्च एक तुहज आगे ए ॥ १४ ॥
 गोरने जोईए वाणी अगाय ए । आपी कीधु महु ग्लीयान ए ॥ १५ ॥
 चोरामीलक्ष्मी भूर दाननी जुगन ए । तेहने आपी दक्षणा मुगन ए ॥ १६ ॥

१ इस्त मेलाप छूटो करवो, अने अंतरपट दूर करवो तथा कंसारनी लगन विध करवो।

२ पचू-पकाचू, राधू, आ चरणनो अर्थ कालने रांधीने कंसार बनायो आम करवो।

३ कंसारनी लग्नविधि पछो सासु तरसी दक्षिणा विधि करवी।

४ मगलफेरा माटे वरवधुनु उन्धान, अने मंगलफेरा केतववा।

हरि हरि ब्रह्मा तेत्रीमकोड ए । पूजे महु ब्रह्माण्डनी कोड ए ॥१८॥
करे ओवारणा सुरनर लोक ए । आज भाग्यो मन मोयो शोक ए ॥१९॥
ओच्छव मंगल हरस अपार ए । ब्रह्माण्ड वरत्यो जै नै कार ए ॥२०॥

* ॥ आद ॥ ७ ॥ *

जीरे' वरकन्या पर्णीने संचर्या ए । परब्रह्म धर्ती ओछंग रे ॥१॥
लेईने सनरे घोडे चढयो । दिव्य ब्रह्म प्रकाश रे ॥२॥
मेलावोते अनिरे मोहामणो । भगत प्रनीत निव्रत रे ॥३॥
क्षमा दया वासना जांदनी । कीर्ति ममरथ मत्य रे ॥४॥
विद्या चौद मेवा करे । मुनिवर जोगीने दुर्लभ ॥५॥
चंद्र सूरज रे सेवा करे । धर्म विचारे परमारथ ॥६॥
पंच शब्द रे ग्लीयामणा । वाजेवाजेविविधमरदंग रे ॥७॥
ऋग यजु साम रे गायन करे । चालिया वर परब्रह्म ॥८॥
ज्ञान वर उपर छत्र धरे । आतमा करे रे कल्याण ॥९॥
संतोष वैगग चमर ढाले । हवे वर चालियो ठाम रे ॥१०॥
परमपद मंदिर आपणे । बोल्यां बोल्यां ब्रह्माण्डनी कोड रे ॥११॥

१ विवाह विवर्द्धमा सात सोहगणाने आमंत्रण करी गारनु कार्य सूर्ण.

धोळ— हांजी तमो सात सोहागण आओ रे,
हांजी तमो खांधे धातलीओ सोवराओ रे ॥ १ ॥
हांजी तमो वरकन्याने वधावो रे,
हांजी तमो अखड आशिष दानी रे ॥ २ ॥
हांजी तमो सात सोपारीओ ल्योनी रे,
हांजी तमो सदा सौभाग्यवंती कहोनी रे ॥ ३ ॥
हांजी तमो वरकन्या परजीने उठावो रे,
हांजी तमो दधि घृत गोरस लूटवां रे ॥ ४ ॥

२ वरवधु यह प्रवेश.

वर चाल्यो वैकुण्ठ उफगे । जे पद शियल अगम्य रे ॥ १२ ॥
पोहोनियो वर पद आपणे । जहां गजाजी हरि परब्रह्म रे ॥ १३ ॥

* ॥ आद ॥ ८ ॥ *

निरंजन पद ते पामियुं । वर आवियो लाडी लई ॥ १ ॥
अनुपम रे मंदिर तेह । अगोचर रे ध्यान ने धेय ॥ २ ॥
जोगेश्वर सुनकादिक जेह । वरे महु तेणे पद आणियुं ॥ ३ ॥

* ॥ आद ॥ ९ ॥ *

निरंजन पद रळीयामणु । जहां नथी अरे रूपने नाम ॥ १ ॥
जहां नथी अरे क्रोधने काम । जहां नथी अरे जन्मने मृत ॥ २ ॥
जहां नथी अरे मोह अमत्य । जहां नथी अरे दिवमने रात ॥ ३ ॥
जहां नथी अरे शोकनी जात । सदोदित केवल तेज छे ॥ ४ ॥

* ॥ आद ॥ १० ॥ *

निरंजन पद सोहामणु । विवर्जित रे त्रणे नाप ॥
विवर्जित पद उर्मीना पाप ॥ १ ॥
निरंतर रे सुख तणो वाम । आहाराईए रे श्रालक्ष्मीनिवास ॥
वरे महु तेणे पदे आणियुं ॥ २ ॥

■ ॥ आद ॥ ११ ॥ ■

वर परणी घेर आवियो । भले आब्यो रे हरि परब्रह्म ॥ १ ॥
सहित छेरे हरिहर ब्रह्म । साहित छेरे सुरमुनि इन्द्र ॥ २ ॥
सहित छेरे नाग नरेन्द्र । सहित छेरे कोटि ब्रह्माण्ड ॥ ३ ॥
सप्त द्विप नवखंडमें । सुखे सहु आवी रहु ॥ ४ ॥

■ ॥ आद ॥ १२ ॥ ■

अनि दुःख लुख्यां रे महु सुखी । सुख लाखु रे गई कलपना ॥ १ ॥
उलटीयो रे अनि परमानंद । देव दीड़ा रे स्वामी अच्युत आनंद ॥ २ ॥
संत नहां महु हरखिया । ॥ ३ ॥

* ॥ आद ॥ १३ ॥ *

जीरे ब्रह्म मनातन शियलु । जहां केवल रे हमर्व अपार ॥ १ ॥
एकोतर रे संत उछाहु । निरंतर रे धाईये धाम ॥ २ ॥
चागचर रे जुग एहज काम । धणी महु एक करी रहो ॥ ३ ॥

* ॥ आद ॥ १४ ॥ *

कविमां आवीने बोलिया । अनोपम रे आनमागम ॥ १ ॥
धणी धणी रे हावे कर्मे काम । ॥ २ ॥
जे गामे रे पृथ्वीनो विवाह । जे सांभलमे रे पृथ्वीनो विवाह ॥ ३ ॥
ते रे झीलमे परब्रह्म प्रवाह । झील्यो झील्यो रे परब्रह्म प्रवाह ॥ ४ ॥

श्री पद्मनाम पमावले ॥

* ॥ आद ॥ १५ ॥ *

॥ इनि श्री पृथ्वी विवाह संपूर्ण ॥ १७ ॥

* ॥ अथ श्री वदु धोल ॥ १८ ॥ *

देव अनोपम एक परमात्मा । आनमा केरो स्वामी तुह धणी ए ॥ १ ॥
विष्णु गोविंद नागयण गमकृष्ण । नाम मर्वे परब्रह्म तणा ए ॥ २ ॥
प्राण तुं आप विचारने भाँजने । गाजने परब्रह्म जप करी ए ॥ ३ ॥
एहज परमारथ एहज ज्ञान ये । ध्यान जे परब्रह्म नामनु ए ॥ ४ ॥

* ॥ वलण ॥ *

परम्प्रव गहओ नाम । मनकर्मनुं निज ग्रम ॥ ५ ॥
मुनि मिद्ध धाये ध्यान । जोगेन्द्र जुवे ज्ञान ॥ ६ ॥
विधि शंभु उपनकार नव लहे ते जम पार ॥ ७ ॥

* ॥ वलण ॥ *

नव लहे ते जमपार स्वामी । पार न लाभे तेह तणो ॥ ८ ॥
परमपुरुष अचंत अविगत । एक तुं निश्चे धणी ॥ ९ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

चाम्बाणे भम्यो अनेकवार ए । साग न लाल्यु स्वामी मुगननाथ ॥ १ ॥
जेह परमाणु छे तेज रह्युं व्यापी । हरिहर ब्रह्मादिक लगी ए ॥ २ ॥
तेह समर्था विना कवहू न छूटिये । आनमा बाँध्यो स्वामी निविडवंधए ३
रूप नही जम जानने भान यें । गन दिवस नही जेहने ए ॥ ४ ॥

* ॥ वलण ॥ *

नही जेहने दिनगत । तुं तेज मंत्र आगथ ॥ ५ ॥
नही जेहने जुग कल्य । तेह तणु बडु ए मल्य ॥ ६ ॥
जेह थकी हबो तुं ग्राण । ते कर वचन वलण ॥ ७ ॥

* ॥ वलण ॥ *

ते कर वचन वलण । समर्थ मवल हरि मेव्या नही ॥ ८ ॥
तान भक्त जेह न होय । पुत्र वंठो ते मही ॥ ९ ॥

* आद ॥ २ ॥ *

चंद्र सूरज तपे जेहने आदेश ए । वेष केमा कहु तेह तणा ए ॥ १ ॥
धर्मनी आकाश छे जेहने आधार ए । पार होय रे केम तेह तणा ए ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

तेह तणो रे केम होय पार । हरि तेहज दशे अवतार ॥ ३ ॥
गवि चंद्र रह्या आदेश । केम कहुं तेहना वेष ॥ ४ ॥
सर्व विखे तज भूख । कां विसर्यो भव दुःख ॥ ५ ॥

ऊ ॥ वलण ॥ ऊ

कां विसर्यो भवदुःख मंकुष्ट । समर एक गोविंद ॥ ६ ॥
ब्रह्म शंकर जेह स्थापे । सज दे ते इन्द्र ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ३ ॥ *

ब्रह्माण्ड कोड रह्यां जेहने बोलये । तोल होयरे केम तेह तणो ए ॥ १ ॥
स्थावर जंगम व्यापियु तेजये । एज करे केवल संतमु ए ॥ २ ॥

ऊ ॥ वलण ॥ ऊ

संतमु रमे अनि हेज । सर्व व्यापक तेज ॥ ३ ॥
ब्रह्माण्ड राख्या बोल । वीजो नथी को ए तोल ॥ ४ ॥
तेह तणा धावोनी चरण । रहो वरण धर्म आचरण ॥ ५ ॥

ऊ ॥ वलण ॥ ऊ

रहो वरण धर्म आचरण । आदर एक विष्णु वचन भणी ॥ ६ ॥
पाप पुन्य मा छुवेम एणी पेर । छुटीम वेदना भवतणी ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ४ ॥ *

शब्द ब्रह्म रे परब्रह्म सुंगतो ए । मातो ए नाहेग नाम सुं ए ॥ १ ॥
अविगत देव अनंत निरंजन । भवभय भंजन श्रीवासुदेव ॥ २ ॥

ऊ ॥ वलण ॥ ऊ

भव नर्क टाले भक्त । परब्रह्म ते अविगत ॥ ३ ॥

जग घडे मांगे जेह । नवलहे कोण पेर तेह ॥ ४ ॥
जेहने नथी कोण भेद । जम वचन चारे वेद ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

जम वचन चारे वेद । मामग मूलगो मा छांड ॥ ६ ॥
करनम दर्शन उवट भूलो । नर्के कां पडे मूढ अजाण ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ५ ॥ *

अविगत चैतन गम जेणे पीधो ए । दीधो एकालने शिश पग ॥ १ ॥
याग दान नप तोख्य ब्रत मंत्र । परब्रह्म नाम सेवा करे ए ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

सेवा करे महु नाम । तेण नणुं फल पाम ॥ ३ ॥
फल सांप ते परब्रह्म । एम आप कर निष्कर्म ॥ ४ ॥
मन धाय मन अनीन । एम फीर भवभय भीन ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

एम फीट भव भय भीन । सेवे प्रनीन होय जो मन नणी ॥ ६ ॥
लोभ मोह अनंग मत्सर । कोप मद वैरी हणी ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ६ ॥ *

अविगत चैतन जेह नव लाधु ए । बांधु ए नाहेरा रूप चंत ॥ १ ॥
ध्रुवशुक नारद ए महुए स्थापिया । आपियु नेहने अविवलठाम ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

आपियु अविचाल ठाम । जेणे जायुं केवल नाम ॥ ३ ॥
हरि कृष्ण केशव राम । एम जेहना छे बहु नाम ॥ ४ ॥
जेहनु निश्चल राज । तेहने नथी कोण काज ॥ ५ ॥

६४ ॥ तुलसी ज्ञान (म्नानाश्रि) तहां धूम है, जहां पाखंड तहां पाप ॥ ॥ अध्यारक्षीनां-

* ॥ वलण ॥ *

तेहने नथी कोण काज । पूरे भक्त मननो गय ॥ ६ ॥
गुण कथा स्म दान काण । अवतरे ए भाव ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ७ ॥ *

कर्म नणो भय तहां लगी हुनो ए । जहां लगी तुज थकी बेगलो ए ॥ १
प्रगटनके जीव मंचारियो । भासियो कर्मनी कोहाण कोड ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

कोटी कर्म भारो चंत । नव ओलख्या बलबंत ॥ ३ ॥
जेहना खग छे न्याय । शुनि शासे कीधा ठाम ॥ ४ ॥
तेणे न्याये ना ख्या जेह । जम हाथ सोंप्या तेह ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

जम हाथ सोंप्या तेह । कर्मे नर्के छे बहु काल ॥ ६ ॥
विविध विविध दुःख महे निरंतर । जीव खेले ते आल ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ८ ॥ *

एणे अज्ञान लोचन तेज आहियु । घर भूत्यो वन कुवे अंध पड्यो ए ॥ १
बमीअर काले तेहज तहां डमियो ए । उलटो बली अधोमुख पड्यो ए ॥ ४ ॥

* ॥ वलण ॥ *

मुख पड्यो पुनरपि मंद । वणमतुं न देखे अंध ॥ ३ ॥
मन महेल अवर विचार । ले जेणे होय भवपार ॥ ४ ॥
मुख थोडलुं मन छांड । परब्रह्ममु रन मांड ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

परब्रह्ममु रन मांड अडर्निश । भक्त ध्यानमे ना चुक ॥ ६ ॥

कीमन १८ ॥ ॥ जहां ओध तहां काल है, जहां क्षमा तहां आप ॥ ६५

अचल सुख विश्राम पामीस । प्रकृति संगत मूक ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ ९ ॥ *

मदविषे धागे ए चैनन हागे ए । तेहने घर कम मांभरे ए ॥ १ ॥
सनगुरु गारुडी वसीअर खील्यो ए । आतमा अंध जगावियो ए ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

अंध जगाव्यो तेणे ताल । जे हतो मोह जुवाल ॥ ३ ॥
धन मेलवदा काँइ लोभ । हवो अनेक आगे क्षोभ ॥ ४ ॥
सुन कलत्र बंधव मोह । हवो अनेकवार विलोह ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

हवो अनेकवार विलोह । आगे मनमां धरे मंमार ॥ ६ ॥
बली बली जे होय ने फीटे । तेमां मो छे सार ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ १० ॥ *

बापनो मोकल्यो गारुडी आवियो । ज्ञान औषध विष निगमुए ॥ १ ॥
संत संगत तणी अंजन शलाका ए । निरमली दृष्टि तनक्षण हवी ए ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

निरमली तनक्षण दृष्टि । संत वचन अमृत दृष्टि ॥ ३ ॥
वर औषध परम्ब्रह्म जोग । जेणे निगमा भवरोग ॥ ४ ॥
उपदेश परम्ब्रह्म ध्यान । परमान उम्यो भाण ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

परमान उम्यो भाण अनोपम । गई मोहमां रान ॥ ६ ॥
आश छांडी शरण पामी । मूक तुमां वान ॥ ७ ॥

६६ ॥ तुलसी आप सीराए (मराह) ता, तीन बातकी धात ॥ ॥ अध्याहजीनां-

* ॥ आद ॥ ११ ॥ *

तमो तो मदाय छो हुंय नथी एकवार । एह पणु मोह पामियो ए ॥ १ ॥
पमडो करीने कूपथी काढियो । वाट देखाडी धेर मोकल्यो ए ॥ २ ॥

* ॥ वलण ॥ *

धेर मोकल्यो मो अजाण । निखलो करीने प्राण ॥ ३ ॥
परमानमा छे गम । नहां आनमानो विश्राम ॥ ४ ॥
एम एक लग्यो रंग । निपनो अंतर भ्रंग ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

निपनो अंतर भ्रंग एणी पेर । हबो तुं पक्क्वा ॥ ६ ॥
हण्यो हुं जेम कीट भमगी । ध्यान रीती तम ॥ ७ ॥

* आद ॥ १२ ॥ *

समरण ध्यान चैतन स्मलीणो ए । आवे ए गौ जेम वाल्लु ए ॥ १ ॥
नामनो बांध्यो हरि आपणपे आवे ए । भक्त न मेहेले स्वामी वणसंतोर

* ॥ वलण ॥ *

वणसंतु छे भवमाथ । नहां भक्त ज मला नाथ ॥ ३ ॥
तुं भक्त वत्सल गम । स्व तारक तारुं नाम ॥ ४ ॥
प्रगट सुमन वेष । एम नित नवा तुज वेष ॥ ५ ॥

* ॥ वलण ॥ *

एम नित नवा तुज वेष । नामे मेव देव मुरार ॥ ६ ॥
भक्त जाणी प्रगटे जे नव वेषे । ते एकलो संसार ॥ ७ ॥

* ॥ आद ॥ १३ ॥ *

माणेक मोती सुवर्ण मंडिन । चंदन कुसुम रोझे नही ए ॥ १ ॥

गीते नादे शुने जेह नव राचेए । नाचे पण भोल्वाय नहीए ॥ २ ॥
डाहापणे भोलापणे जेह नव रीझे ए । नेह केम कीजे वश आपणे ए ॥ ३ ॥

* ॥ वलण ॥ *

तेह केम कीजे वश आप । जेह ब्रह्मा शंकरनो वाप ॥ ४ ॥
तेह नणी सुख छे एम । जहां हुँज तहां मुज नाम ॥ ५ ॥
जहां जहां रे जनले नाम । तहां तहां ते मारो थम ॥ ६ ॥

* ॥ वलण ॥ *

तहां तहां ते मागे थम । कोई न करे विघनने त्राम ॥ ७ ॥
अंत लगी हस्तिनाम सेवे । देऊ अनोपम वाम ॥ ८ ॥

* ॥ आद ॥ १४ ॥ *

॥ टीका ॥

गत दिवम एसो जाणीने अनुसरो । छांडी मंमार ए वणमनो ए ॥ १ ॥
अनवणमनो छे एक नागयण । जन्म मरण जेणे मगजिया ए ॥ २ ॥
मानव जन्मथी जेह नव छृत्याये । जन्म अनेरे केम छूटसे ए ॥ ३ ॥
विषया वलुधोए घर धंधे वाहियो । आल उत्तम भव निगमु ए ॥ ४ ॥
विषया तजीने आप न चिनव्यो । भक्त ए परब्रह्म अनुसरो ए ॥ ५ ॥
चार स्वाणनणा भागने स्वय ये । आद अरूप एक तेज होय ॥ ६ ॥
सुर मुनि मानव स्थावर जंगम । भाजतां कर्म तुजने नथी ए ॥ ७ ॥
पाप धरम जेणे मेहेल्यां मंमार ये । कर्म धरम तेहेने नव छुबे ए ॥ ८ ॥
जेणे विश्वानर उनोए सरजियो । तेह उनम कोण सही सके ए ॥ ९ ॥
हिम हिमाचल जेणे निपाया । शीनल गुण केम उपमाजे ए ॥ १० ॥

आद पवन जेणे मेहेल्यो संसार ये । तेह तणु बल छे अनि धणु ए ॥११॥
ज्ञान दीधुं रे जेणे देव महेश्वर । ज्ञान सेवा करे तेह तणी ए ॥१२॥
धर्म आचार मर्वे मत्य उपर । अधिक बोलु रे परब्रह्मनाम ॥१३॥
वेद पुण्य एम बोले छे बली बली । नाम तोले रे नथी अवर फल ॥१४॥
नाम महीमा फल अंत न लाभे ये । प्रनित माने फल पामी ए ॥१५॥
एणे ए बोले ए निश्चये बांधो ये । ते कांड माधो ए तप क्रिया ए ॥१६॥
तुलमीये नाम तिलक गोपीचंदन । मंत संगत ममु नथी अझफल ॥१७॥
शास्त्रन बोले ए निश्चये आणो ये । ओळु लांडीने अधिक ल्यो ए ॥१८॥
नाम निष्ठं जहां चंत न आवे ये । तो केम पामिये परमपद ॥१९॥
मंत्र अध्यातम मुकीने आपणु । नाम आप्युं निज भक्तने ए ॥२०॥
अवर मर्वे झगडे बलगाडियां । नाम प्रतीत नथी जेहने ये ॥२१॥
जेहने कर्म मंच्यु होय अनि धणु । तेहने प्रतीत न उपजे ए ॥२२॥
कर्म खुद्या विना प्रतीत न उपजे । प्रतीत पावे रे बली अवतरे ए ॥२३॥
जन्मनी कोडे बन मंत्र अध्यातम । छेले जनम प्रतीत छे ए ॥२४॥
मन बलगाड्यु परब्रह्म ध्यान ए । विहित कर्म परब्रह्म हाथ ए ॥२५॥
हुंय माहरु नथी तुय नाहारु ज छे । कृत्यकर्म महुये स्वामी तुज हाथ ए ॥२६॥
एम कसे अडवु न आपन लेखवुं । मोयल नारायण पेखवुं ए ॥२७॥
साचु ए निश्चल तुहज स्वामी ए । वणमनु जुदु सहुए भाँजनु ए ॥२८॥
एह धबल जेह कोई पढीने विचारे ए । तेह फीटी परब्रह्म होए ॥२९॥
अणछतो भक्त विनती करे स्वामी ए । पामिये शरण श्रीगुरु नणु ए ॥३०॥

॥ इनि श्री बड्डोल संपूर्ण ॥ १८ ॥

* ॥ अथ श्री पदम धोल ॥ १९ ॥ *

श्रीय गुरु स्वामीजी नमो पाये लागुए। मागु ये संतो मनि निगमलीए। १
निगमली नगरी द्वारकां पाटण। वैकुण्ठनाथ जहां अवतर्या ए। २

* ॥ वल्ण ॥ *

वैकुण्ठनाथ जहां अवतर्या रे। देवताने सुध ॥
बष्टाते शंकर महु मल्या। धर्म पुछवा हरि बुध ॥ ३ ॥
अंग उल्ट उपन्यो रे। देव शु छे काज ॥
आकाश बाणी उचरी। नमो बलो पाला आज ॥ ४ ॥
आद पुम्प जहां अवतर्या रे। पाटण परजापत ॥
आप आपणे स्थानक जाओ। हींडवा जुगत ॥ ५ ॥
ब्रह्मा ने शंकर इन्द्र सुर। तेत्रीम नर ने नार ॥
हरि मृत लोके अवतर्या। थई मानवी संमार ॥ ६ ॥
शारदाने तीरे जायो। वेग मलायो वार ॥
पाटण मध्ये पदम कहिये। जाणिये कुंभकर ॥ ७ ॥
करण कारण पिता जेहनो। लब्धमणा जेहनी माय ॥
पाताल दे पटगणी। जई लागु हगिने पाय ॥ ८ ॥
करजोड़ी कर बिनतो रे। वेगे ने नामु शिश ॥
काज कहु जई आपणां। जहां अवतर्या जुगदीश ॥ ९ ॥
जनक जोगे अवतर्या रे। शुक नारद भूप ॥
एक थई उदास स्त्री। एक थया भड भूप ॥ १० ॥

* ॥ वल्ण ॥ *

एक थया भड भूप रे स्वामी। स्वरूप कलु नव जाय ॥

आप आपणे स्थानक मल्युं । श्री पद्मनाभ तणे पसाय ॥११॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

स्वामी मेवक मली गुंज प्रकामियुं । अमोमन आनंद अनिघणोए ॥१॥
देव कारण कहा चरण पमायो करी । विपरीत अवतरण कोण काज ॥२॥

* ॥ बलण ॥ *

विपरीत गत हुं अवतयों रे । आगे ते अनेकवार ॥

में शंख तार्यो वेद वालो । मच्छने अवतार ॥ ३ ॥

कृष्ण रूपे मेण मथियो । रत्न चौदे लीध ॥

में मंदर पृष्ठे समुद्र गाहो । काज सुस्नर मीध ॥ ४ ॥

में महि ते डाढाये गम्भी । धर्युं वगह रूप ॥

में विश्व उपर हेन आणी । भूर गम्भ्या भूप ॥ ५ ॥

नगमिंह रूपे अवतरीने । हण्यो में हिरण्यक्ष ॥

प्रह्लाद थारी पद आपी । अमर मघला माक्ष ॥ ६ ॥

वामन रूपे थयो वाढव । जाचियो बलराय ॥

पाताल चांयो नाग कंप्यो । माघ्यो वर पमाय ॥ ७ ॥

परशुरामे अवतरीने । मोडा क्षत्री कोड ॥

विप्रने आपी मेदिनी । नहां ग्हो हुं कर जोड ॥ ८ ॥

गमरूपे हण्यो गवण । सीता वाली भीछ ॥

मानये अवतार आगे । तमो वानर रीछ ॥ ९ ॥

अष्टमे हुं अवतयों रे । बली जादव वंश ॥

कृष्ण हुं गोवाल नहां । वेगे जीतो कंश ॥ १० ॥

* ॥ बलण ॥ *

वेगे जीतो कंमरे स्वामी । आपण गया द्वागमती ॥

बारजोजन नगर वासु । नट निम्नला गोमती ॥११॥

* ॥ आद ॥ २ ॥ *

नवमें हुं अवतर्यो बोलज पालवा । यालवा कारण करमनु ए ॥ १ ॥
मरमन जाणे रे मुनि जन माहेगे । वेद पुराण करे विनती ए ॥ २ ॥

* ॥ वल्ण ॥ *

वेद पुराण करे विनती ये । कोई न जाणे मरम ।
हरि बुध रूपे अवतर्या । जुग पालवा ए धर्म ॥ ३ ॥
कर्म विश्वनुं यालवा । अने गालवा गुण बीज ॥
मंमार पार उनाखा । जाचकने जुगदीश ॥ ४ ॥
भक्त दोहोदश प्रगट थाशे । गोजमे ब्रह्माण्ड ॥
वैष्णव रूपे ओचर्या । छोडवा मर्व संड ॥ ५ ॥
मृढ़ फेडी गुणवंत कीधा । दुष्ट कीधा साध ॥
अमो दीन उपर दया आणी । क्षमा वहु अपगध ॥ ६ ॥
अनेक ते अवतार तार । अमुर रुंधी वाट ॥
श्रीपद्मनाभ पधारिया । मुगताते कीधा घाट ॥ ७ ॥
काष्ठ कलेवर विमला । निम्नला कीधां नीर ॥
अधम एनीपेरे ओधर्या । पछे संत शरीर ॥ ८ ॥
षट् दम्भनने क्षमा आपी । शम दमने मंतोष ॥
संत संगते महु मल्यु । गयो जन्म जीर्ण गेग ॥ ९ ॥
संमार मागर महु पड़यु रे । बूढ़ना नहीं वार ॥
जनकनी पेर जुग मधलो । ओधर्यो आवार ॥ १० ॥

* ॥ वलण ॥ *

ओधयों आवार रे स्थामी । विश्व उपर हेत करी ॥
श्रीपद्मनाभ अवतार लीधो । स्वांग चारे ओधरी ॥११॥

* ॥ आद ॥ ३ ॥ *

द्वास्कां काशी कोट शिरोमणि । ख्यान वाढी तणी कम कहु ए ॥१॥
निरंजन पद थकी अवतर्या परब्रह्म । पाठण प्रजापत श्रीपद्मनाभ ॥२॥

* ॥ वलण ॥ *

श्रीपद्मनाभ जोगे अवतर्या रे । सारं अवनी काज ॥
अमो रंकने कर रन लाधु । अंग उल्ट आज ॥ ३ ॥
निरधनने जेम धन लाधु । मोडो शत्रुकार ॥
लक्ष चोगसी मुगत आपी । कीधा परउपकार ॥ ४ ॥
वाढी ते वैकुंठ पीठ प्रगट । जहां नेज ब्रह्म प्रकाश ॥
परब्रह्म पद नर नार गाय । निरंजन पद वास ॥ ५ ॥
संत महु ममीप तेज्या । सरं पृथ्वी काम ॥
निलक तुलसी संत मंगत । मुख ल्यो हरि नाम ॥ ६ ॥
वसुधा ते उपर अवतरीने । पूज्या ते पावन सार ॥
मेगलनी पेरे मलपतां । थई छोडव्यो मंमार ॥ ७ ॥
संत सहु आनंद बेडां । होय छे देव ज्ञान ॥
वैकुंठ गजा मध्य बेडा । आपे उत्तम दान ॥ ८ ॥
मंमार मघलो शोक भागो । ह्वो हरम अपार ॥
देव दुंदभि वाजियां । ब्रह्माण्ड जय जयकार ॥ ९ ॥

वेकुठ मणी विमान चाल्यां । जम भागी वाट ॥
नगर नगर तोण बुडी । होय देवने गेह वाट ॥१०॥

* ॥ वल्ण ॥ *

देवने गेह वाट होय रे स्वामी । श्रीपद्मनाभ पमायो करी ॥
भणे देवाव पद्मनाभ (मे) । जमना ते जोखम गयांठली ॥११॥
॥ इति श्री पदम धोल संपूर्ण ॥ ११ ॥
॥ पंचाह धारायण चौथो विश्राम ॥

* अथ श्री वाढीना रास ॥ २० ॥ *

प्रथमे द्वारकां पाटण मांहे ये । विपरीतगत हरिअवतर्या ए ॥ १ ॥
आगे ए मच्छ कूरम वराहतुं । नरसिंह वामन पशुराम ॥ २ ॥
राम तुं कृष्ण कृपाल निरंजन । अनन्त मूरत सोहामणो ए ॥ ३ ॥
नवमे बुधरूपे हरि अवतर्या । ध्यान धरी जप मांडियुं ए ॥ ४ ॥

* ॥ वल्ण ॥ *

ध्यान धरी जप मांडियुं रे । जग जय जयकार ॥
श्रीपद्मनाभ पधारिया । तहां विश्वकरवा सार ॥ ५ ॥
संन मांहे परवरे रे । जेमो पूनमचंद ॥
आकाश स्वी जम बिंब सोहिये । अभिनवो ए इन्दु ॥ ६ ॥
श्याम वरण सोहामणो रे । गउ पति गोपाल ॥
हरि धर्म स्थापे कर्म कापे । दिसंतो दयाल ॥ ७ ॥
जेसो जलधर उण्म्यो रे । भगत वरसे मेह ॥
जागरणे तहां निरधोष वाये । गेह गया मुनिदेव ॥ ८ ॥

निलक तुलमी नाम आयुध । ओधर्या श्रीनाथ ॥
 सप्रीति बोले मांभलो । आपिया वैष्णव हाथ ॥ ९ ॥
 बलि विभीषण अप्रीष नामद । द्वुवने प्रह्लाद ॥
 सुख सुदामाने शरण आप्यु । दिघो अजामिल माद ॥ १० ॥
 रूपने प्रगट कींधुं । अकल कल्यो नव जाय ॥
 वैकुण्ठ छांडी आविया । पाण्ण वाडी मांह ॥ ११ ॥
 वाडीने बन ग्लीयामणु रे । दिसंतु कैलास ॥
 ब्रह्ममदन निरंजनपद । नहां भक्तजन पोहोती आश ॥ १२ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

अनेक भक्त करे नाहरी मेवा ये । देव तेत्रीमकोड इन्द्रमहिन ए १
 श्रष्टा ए शंकर सुर मुनि मागे ये । चरण लागे स्वामी नाहेरे ए २
 त्रिलोक केरोये नाथ निरंजन । दानव गंजन श्रीदयाल देव ए ३
 अनि रे सुकोमल अकल अभेद । वेद अनित व्यापी ग्लो ए ४

* ॥ कल्ण ॥ *

ग्लो व्यापी विश्वस्थापी । गोपव्युं ते नाम ॥
 मंभ वंभ बोलविया । बेहुने मोप्या काम ॥ ५ ॥
 भक्त वत्पल बिर्द नाहेरु । तुहज गरुओ राय ॥
 लीला मवली नाहेरी । ते वरणन केही पेरे थाय ॥ ६ ॥
 पृथ्वी आकाश पर्वत । मप्स साहेर तोय ॥
 क्षणु एकमां मर्यादा लोपे । ग्ला ताहेरे बोल ॥ ७ ॥
 गाल देनां गुणकरे रे । एमो ममस्थ राय ॥
 वैग्मावे ओधर्ग । दानव फेड्यां गम ॥ ८ ॥

अवर उपर हेत आणी । हृष पदिया जेह ॥
 गर्भवाम निवासिया । नर नामिया तहां तेह ॥१॥
 मकल पृथ्वी चौद लोके । तु करे ते होय ॥
 नाहरी जमल जोतां नही बीजो । अवर न दीमे कोय ॥२॥
 मान मरदन तुज स्वामी । विश्व केरे पाल ॥
 हुं करु मे निपजे । एहज महुए आल ॥३॥
 तु करे ते निपजे । ए मत्य वाणी वेद ॥
 अवर सहुए वणमनु । मन काँई आणो भेद ॥४॥

* ॥ आद ॥ २ ॥ *

भेद नही जस जेहने सुमग्ने । तेह मदाय नित्य सेवी ए ॥१॥
 परम जीवन हरि गुणचा निधान ये । नीम्थ कोट मेवा करे ए ॥२॥
 एक निघंट विश्वाम मन आणीने । प्राणिया परब्रह्म जप करे ए ॥३॥
 निपजे बोले ए जेह नशी तेहने ये । दर्शने महु चतुभुज होय ॥४॥

* ॥ वलण ॥ *

दर्शन तारे होय रे स्वामी । महु चतुभुज देव ॥
 खाण चारे ओधरी । तोह न लाभे खेव ॥५॥
 काम क्रोधे लोभे वाहो । सुध नही एह वान ॥
 माया ते सांकले सांकलो । केम सांभरे तुं तान ॥६॥
 आशा ते पर्वत अनि घणा ये । मांहे वसमा मार ॥
 तेह तोज ओलंघी ये । जो तुं करे हरि मार ॥७॥
 कर्म बंधन उपन्यु । अवतरुं केहीवार ॥
 अहंकार मांहे परवरुं । प्रकृति केरे माथ ॥८॥

संमार मागर दोह्यल्ये रे । नित्य नही उतार ॥
 मगर मांहे मोह दीमे । तमो विना नही पार ॥१॥
 एक तीरथ भरम लायो । एक माध्ये योग ॥
 एक गमा रंग गता । एक बंडे भोग ॥१०॥
 तत्व ताहारु नाम लाधु । आवियो विश्राम ॥
 अंग उलट उपन्यो । स्वामी हृदे ताहागे वाम ॥११॥
 अनेक आगे ओधर्या । महा कर्म मामगी झोड ॥
 परब्रह्म नामे जे मल्या । भवचा ते बंधन छोड ॥१२॥

* ॥ आद ॥ ३ ॥ *

जेहचे ममणे मंकुष्ट छूटिये । नर्क छूटिये स्वामी गर्भवास ॥१॥
 पामिये निश्चल गम निरंजन । अचल विश्राम ते अनुभवोए ॥२॥
 सदाय आनंद छे ज्यां परमानंद छे । हरख आनंद तहां अनि घणो ॥३॥
 नही अंधकार तहां केवल तेज छे । संत सदाय हरिसु रमे ए ॥४॥

* ॥ वलण ॥ *

सदाय हरिसु संत समनां । नाम एकज वान ॥
 तुं करे ते निपजे । त्रिलोक केरो तान ॥५॥
 मच्छरूपे अवनरीने । वेगे वाल्या वेद ॥
 शखने ते शरण आप्युं । शालियो भव मेद ॥६॥
 कुमरूपे अवनरीने मेण मथियो । सन चौदे लीघ ॥
 अनेक दानव निरदल्या । तहां काज सुरनर मिध ॥७॥
 वराहरूपे विशक्षण । धरी पृथ्वी ढाढ ॥
 वेगे वारी बूढती । धन्य धन्य शूकर ढाढ ॥८॥

नगमिंह रूप हिरण्यकशिपुना । कोट कडका कीध ॥
 प्रहलाद थापी बंधकागी । सज अविचल दीध ॥ १ ॥
 वामनरूपे थयो वाढव । याचिशा बलि दान ॥
 त्रण कदम तुं आप पृथ्यी । मुज गहेवा ठाम ॥ २० ॥
 परशुरामे धरी फसी । कोधां क्षत्री काम ॥
 विप्रने आपा मेदिनी । नहां अवतर्या श्रीगम ॥ २१ ॥
 गम तुहज कृष्ण तुहज । नहीं पगकम पार ॥
 कंम सवण ओधर्या । नहां क्षणु न लागी वार ॥ २२ ॥
 बुधरूपे ध्यान धरियु । प्रथम पग्मानंद ॥
 परब्रह्मना गुण गावतां । मन उपजे आनंद ॥ २३ ॥
 कलंक कलिनुं यत्क्वा । निकलंहठा छेभस्थार ॥
 भणे वैष्णव वार दशमे । अवतर्मे आवार ॥ २४ ॥

* ॥ आद ॥ ४ ॥ *

॥ इनि श्री वाडीना गम संपूर्ण ॥ २० ॥

॥ अथ श्री लघुराम ॥ २१ ॥

श्रीपद्मनाभ परब्रह्म एम मलिया । छूट्यारे मन लक्षकोड ॥
 छूट्यारे जंतु प्राणी अवतरणा ॥ होनगहर
 चास्खाण हवी निमली । नमो बापजी पमायो रे ॥
 महुको जाय मुगतु थई रे ॥ होनगहर ॥ २ ॥
 जीरे इन्द्रादिक आनंदिया । मुनि कोड तेत्रीम रे ॥
 ब्रह्माण्ड एकवीस दुंटुभि वागिया । ॥ होनरहर ॥ ३ ॥

ब्रह्मादिक शिव हरभिया । अमो परब्रह्म पाप्या रे ॥
 कार्इ पाप्या रे । धानां अनन्त ब्रह्मण्ड धणो ए ॥ होनग्हर ॥ ४ ॥
 अष्टकुल पर्वत चतुर्भुज हवा । हवा नवकुल नाम रे ॥
 छूट्या रे महस अदामी तप करणा ॥ होनग्हर ॥ ५ ॥
 हरि सूरज उदे हवो । त्यारे बीनी मोहगत रे ॥
 किरणने प्रगता परब्रह्म महसनाम ॥ होनग्हर ॥ ६ ॥
 वैष्णवजन सहु सांभलो । गजा परब्रह्मजीनु बोल्यु रे ॥
 नोहरे बोल्युं उपमातणु ॥ होनग्हर ॥ ७ ॥

॥ इनि श्री लघुभास मंपूर्ण ॥ २१ ॥

* ॥ अथ श्री चतुर वदननो राम ॥ २२ ॥ *

चतुर वदन समगे जुग आदे । त्रिपुर हण्यो शिवे जेह पग्मादे ॥
 नादे स्नवुं गुण इशो ॥ १ ॥ हरि हरि ॥ १ ॥
 मकल भुवन व्यापी हरि वाणी । मन समगे मदगत चंत आणी ॥
 जाणे दैवत मागे ॥ २ ॥ हरि हरि ॥ २ ॥
 अहर्निश समगे एक निरंजन । जग मरण दुःख भव भय भंजन ॥
 रंजन मुनिजन चंतो ॥ ३ ॥ हरि हरि ॥ ३ ॥
 ब्रह्मादिक गुण पार न पामे । एकवार जप गोविंद नामे ॥
 स्वामी समर्थ गयो ॥ ४ ॥ हरि हरि ॥ ४ ॥
 पनिन अज मिल पुत्र पुकार्यो । नागयण नामे भवतार्यो ॥
 ग्ह्यो परमपद मोयो ॥ ५ ॥ हरि हरि ॥ ५ ॥
 अपमाताये उछंग उनार्यो । ब्रुव नागयण नामे मिथ्यो ॥
 ग्ह्यो अचलपद लेयो ॥ ६ ॥ हरि हरि ॥ ६ ॥

याग दान तप तीर्थ केरुं । ते पे हस्तिल अति अधिकेरुं ॥
 ते रजनी दिन व्यानो ॥ हरि हरि ॥ ७ ॥
 अनेक पुन्यतणां फल गाजे । ते मर्व हरि जप आगे लाजे ॥
 भाजे तेणे अवतारो ॥ हरि हरि ॥ ८ ॥
 हरि नामे पातक कुल नासे । संजपनी पति अनुचर त्रासे ॥
 आश न करे कदापो ॥ हरि हरि ॥ ९ ॥
 जेमतीमरफेडे रविकिरण ओला कर्मनथी तेम हरि जप आगल ॥
 कलजुग प्रत्यक्ष प्रमाणो ॥ हरि हरि ॥ १० ॥
 शङ्ख समान इन्द उवेषो । सच्चराचर नारायण पेषो ॥
 लेखो आप समानो ॥ हरि हरि ॥ ११ ॥
 नाम तणो महिमा जेणे लीधो । निश्चल वास परमपद कीधो ॥
 पीधो परमानंदो ॥ हरि हरि ॥ १२ ॥
 अंबरीष नरपति हरि आराध्यो । प्रतीत सहित जेणे हरिदोन साध्यो ॥
 लाध्यो तेणे पसायो ॥ हरि हरि ॥ १३ ॥
 अंबरीष गर्भग्रास निवार्यो । अंगीकरवा श्राप सीधार्यो ॥
 हायो मुनि छलभेदो ॥ हरि हरि ॥ १४ ॥
 वृषली जनम पेरे हरि प्रसीदो । नाम प्रभावे नारद सीधो ॥
 सद मुक्ति फल लेहो ॥ हरि हरि ॥ १५ ॥
 काले सहु वणसतु विचारो । काम क्रोध मद मरडो मारो ॥
 सार जपो हरिनामो ॥ हरि हरि ॥ १६ ॥
 विष्णु भक्ति रस शंकर जाणे । रामनाम व्याने मन आणे ॥
 शंख न मेले चंतो ॥ हरि हरि ॥ १७ ॥

वरण धर्म सुविचार सुकृत कर । सेवो भाव नारायण अनुपम ॥
 हरिपद पामस अंते ॥ हरि हरि ॥१८॥
 कर्म अनुमारे बुद्धि उपाए । बुद्धि अनुमारे कर्म कराए ॥
 जाये जीवन पारे ॥ हरि हरि ॥१९॥
 कर्मजाल हर्षिनामे तूटे । अहर्निश ममरण बंधन छूटे ॥
 खूटे एम गर्भवासो ॥ हरि हरि ॥२०॥
 जनक विपश्चित केवल भगते । नरके जीव निहात्या जुगते ॥
 मुगत पमाड्या मने ॥ हरि हरि ॥२१॥
 गजादेश होय एम जुगतु । गजादेश वली अणवगतु ॥
 जुगतु करो तुज नामे ॥ हरि हरि ॥२२॥
 प्रह्लादे मन अंतर गम्यो । नरहर प्रगट पिनाने दाम्यो ॥
 साथ हवी कल्यान्तो ॥ हरि हरि ॥२३॥
 जीव अचेत कर्मवश आपी । गजा देश गम्यो जग व्यापी ॥
 स्थापी गुण क्षणभंगो ॥ हरि हरि ॥२४॥
 शुक सुनकादिक निजपत मारे । जप नेमादिक हृदे विचारे ॥
 पार न पामे तेहो ॥ हरि हरि ॥२५॥
 कुमन विचारे कुमारग माँडे । गजादेश वेदगत छाँडे ॥
 ढाठ करे यमलोको ॥ हरि हरि ॥२६॥
 क्षमा दया मनोष नीरेपे । गजा देश वेदगत लोपे ॥
 रोपे दुर्मनि चंतो ॥ हरि हरि ॥२७॥
 क्रतम शास्त्र तणे अनेक विचारे । पडे नर्क मानव भव हारे ॥
 पार न पामे तेहो ॥ हरि हरि ॥२८॥

अविगत परब्रह्मनी वाणी । वेद अनुमारे निश्चल जाणी ॥
 आण मबली छे जेहो । हरि हरि ॥२९॥

क्रतम दर्शन आपवसाणे । कलजुग विष्णु स्वरूप न जाणे ॥
 खाण चहु भय पामे ॥ हरि हरि ॥३०॥

एक मुगनपनि हरिनारायण । ते वण न लहे जोग परायण ॥
 अनुदिन करे रे अभ्यासो ॥ हरि हरि ॥३१॥

जन्म मरण भागी जे बेग । विषय तजी परमारथ पेग ॥
 दीदा अंत मुगरो ॥ हरि हरि ॥३२॥

परम पुरुष अविगत मधुसुदन । अनेक भवभय पाप निकंदन ॥
 दुष्ट निकंदन गमो ॥ हरि हरि ॥३३॥

जे मत्य बोले ते मन राखो । अबर कारमु सर्वे नाखो ॥
 गखो एक विचारो ॥ हरि हरि ॥३४॥

हरि मन राखी निश्चे बांधो । परब्रह्म योग मुगनपद साधो ॥
 आराधो निज धर्मो ॥ हरि हरि ॥३५॥

निश्चल रजा निश्चल वाणी । रहो निघंट प्रतीत मन आणी ॥
 नाम जपे होय थापो ॥ हरि हरि ॥३६॥

गस विनोदे जे लेलाग्या । गर्भ वामना भय तेहना भाग्या ॥
 हरि परब्रह्म पसाये ॥ हरि हरि ॥३७॥

॥ इति श्री चतुर वदननो गस संपूर्ण ॥ २२ ॥

* अथ श्री अहर्निशनो रास ॥ २३ ॥ *

प्राण मन एक अमेद अछेद । जेना स्वरूप न लहे वेद ॥

अजर अमर अकलंक अरूप । जेणे मरज्यां चोगमी लक्षरूप ॥

अहर्निश हरि परब्रह्म जप रे ॥ १ ॥

बीजु अवर मा खपेस गुमार । जेणे मने वहु ब्रह्मण्ड निपाया ॥

तेहज नामे भवपार रे । अहर्निश हरि परब्रह्म जप रे ॥ २ ॥

अनेक भव तु अवतयो रे । कष्ट मह्यां वहु दुःख रे ॥

हवडां अर्थ तणे मद विमर्यो । बली महेम अमंख्य रे ॥

अहर्निश हरि परब्रह्म जपरे ॥ ३ ॥

लागे नही बलगे आभडे । कोट ब्रह्मण्ड क्षणु भागे घडे ॥

दाह्या भोला महु छेतरे । अलगो रह्यो वहु नाटक करे ॥

अहर्निश हरि परब्रह्म जपरे ॥ ४ ॥

ब्रह्मण्ड कोट उपर जे रहे । वैष्णव विना तेहने कोणज लहे ॥

तेहनी एक अपूर्व जुगन । समरो लीला दे हरि मुक्ति ॥ ५ ॥

सांभल जीव कहुं एक गुंज । हुं माहारु मा कर अबूझ ॥

परब्रह्म नामे परु कर आप । एणीपेर धेर तेडे तुझ बाप ॥ ६ ॥

आदे अनादे तुहज एक । स्थावर जंगम नाहारु तेज ॥

तुं गुस्तोने नाहारं नाम । सकल मंन मु नुज परणाम ॥ ७ ॥

हरि गुण अमृत नही उपमान । जमल नही अध्यातम ज्ञान ॥

सुर योगी दृष्टि से कल्पांत । हरि गुण त्रपता अक्षय संत ॥ ८ ॥

अनेक वस्तु भली संमार । हरि गुण विना महु विषनी जार ॥

अहर्निश हरिगुण वहाला ज्यां । काल तणो भय नागो त्यां ॥ ९ ॥

निश्चेज दिसे वणमतु । तेणे कशु बलगे हीसतु ॥

मवली मायाये कीधो अंध । गुरु वचन लोचन अंजन सुध ॥ १० ॥

पहेलां मधुर लाग्यु मुख । पछे पछ्यो मच्छ मोहोटे दुःख ॥

एणे सुखे वह्यो भोलो जीव । जाणे लाग्यो जम करमे दैव ॥ ११ ॥

सेवक इन्द्रीने मन परधान । तेहना प्रेयों प्राणी छाडे ज्ञान ॥
 तहांथी आपणपु करे अलग । परब्रह्म पद पामे जेम सलग ॥१२॥
 सुवर्ण तुला गौ पृथ्वी दान । दीधां अन्न उदक बहु मान ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥१३॥
 वेद पुगण पढ़ी गया पार । कीधा यागने ब्रत आचार ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥१४॥
 कीधां तप यतन बहु काल । घर्नु छाँडु माया जाल ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥१५॥
 साधे एक अध्यात्म योग । छाँडे सुख परम सम भोग ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥१६॥
 मन शौच नित्य आचरे । ध्यान महित सुर पूजा करे ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥१७॥
 भेवे मात पिता गुरु चरण । क्षमा दया ने ब्रत आचरण ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥१८॥
 ब्रत नीर्थ उपवास कर्म । अनिथि अभ्यागन जीवदया धर्म ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥१९॥
 छाँडे परनिंदा उपवाद । आप वस्त्राणे मिथ्या वाद ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥२०॥
 काम क्रोध मत्सर परहरे । परपीडा काहुने नव करे ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥२१॥
 बोलां सकल ईंद्रि नेग्रहे । लांघन झटतप सीनल महे ॥
 तोये स्वर्ग भोगवी संकुष्ट पड्या । अखेपद विना रुद्वड्या ॥२२॥

चार साणनी खडभड भूख । धर्म उपराजन सबल सुख ॥
 परब्रह्म नामे भागी भूख । मल्यो अविचल ठली सर्व हृक ॥२३॥
 तजी संसार पाम्यो गुरु शरण । जीत्यां जन्म जग भे मरण ॥
 भक्त अनुसगे गुरुने शरण । रम् लाम्यो निन गुरुने वेण ॥२४॥
 गत दिवम रस गुण थयो भाव । अवर मेल्यां सर्व भाव कुभाव ॥
 संत संगत हरखे उलटे । परब्रह्म कहे वगतु केम घटे ॥२५॥
 द्वूव गवि शशि हरि समरण रहा । आगे तेणे भव संकृष्ट सह्यां ॥
 यक्ष किन्नर नर निर विष हुवा । नारद त्रिलोक मुक्ता कीया ॥२६॥
 पुरुनामा रुषि रंभा कंत । ममरन ते भव लीधा अंत ॥
 अवनेश्वर जो होय काज । तो भक्ति सेवो परब्रह्म राय ॥२७॥
 पिंड ब्रह्माण्ड विचारी जोय । जेह जमल मांडे नही कोय ॥
 रूप वहोणो मांडे व्याप । आदे ब्रह्म शंकरनो वाप ॥२८॥
 नामे अजामिल ज लह्या । नामे गुनका जन्मज गयो ॥
 एसु नाम जेह ज समस्थ । फोगट क्यां वलगे अनरथ ॥२९॥
 परब्रह्म एक विनती अविधार । मोह्यो जीव रले संसार ॥
 निर्मल करीले आपण मांहे । एक करीले तुं मुं सहाय ॥३०॥
 स्वामी एक विनती अविधार । ताहागे बोल ए संसार ॥
 ताहाग अंश जपे तुज नाम । जग सचराचर एहज काम ॥३१॥
 एक मने जे गाय राम । एक मने जे सांभले रास ॥
 ते छूटे भव बंधन पाश । ब्रह्म महेश्वरने दुर्लभ जेह ॥
 पसायो करो स्वामी परब्रह्म तेह । अहर्निश हरि परब्रह्म जप रे ॥३२॥
 ॥ इति श्री अहर्निशनो रास संपूर्ण ॥ २३ ॥

* ॥ अथ श्री संत मोहागो ॥ २४ ॥ *

गोविंदना गुण अनिरे अनोगम । मन मोहागो अमो गाइसुं ए ॥ १ ॥
 जेह गुण गानांये महासुख पामिये । स्वामीनुं नाम निरंजन ए ॥ २ ॥
 परथमे पृथ्वी कन्या कुंवारी ए । कहोने देवी वर कोण गमे ए ॥ ३ ॥
 गयनिरंजन अहंकारे बोले ए । धर्मती तोले नर नव तपे ए ॥ ४ ॥
 जेह कारण हवी कन्या कुमारिका । द्वास्किंश्य अबलोकवा ए ॥ ५ ॥
 महसु नामे सुधकरी वर ए घरनणी । जगधगी कां ए कुंवार नमो ॥ ६ ॥
 तेडोने ब्रह्मा भणे चारे वेद ए । भेद कहे रे वर घरनणो ए ॥ ७ ॥
 जम नही मान पिता बंधव सुरजन । दुर्जन मुरे दया नव करे ए ॥ ८ ॥
 एसो समर्थ वर निरंजन जोईये । मोय पुरुष केम जाणीये ए ॥ ९ ॥
 लगन लीजे रे केम जेहनी नथी केने गम। जेहने घर जम वनांकरे ॥ १० ॥
 वर समाण करी विश्व सघलु ओधगी। हवी वैकुंठपुरी मृत्यु लोकमांए ॥ ११ ॥
 वर अमवर हवो पूरण पुरुष लहो। अनंत ब्रह्माण्ड पनि परब्रह्म अउओए ॥ १२ ॥
 वर तोरण वरी जग मरण गयां टली । एह वात मरो मचगचरी ए ॥ १३ ॥
 वर कन्या बेहु हवां रे मेलाप । मर्व सुख दायक दयाल देव ॥ १४ ॥
 हाथेहाथ मेली कन्यानुं कारज सरी। आपणें संतोष्या हारि हरख भरी ए ॥ १५ ॥

* ॥ आद ॥ १ ॥ *

जीरे चाँगे अविधागेने चंत नणी ए। जीरे देव दयाकरे अतिघणीए ॥ १ ॥
 जीरे तेडोने गोर विचार करी ए । वैकुंठनाथ हृदे धरी ए ॥ २ ॥
 जीरे वस्कन्या बेहु आवीयां ए । गोरे अनंतब्रह्माण्ड छोडावियां ए ॥ ३ ॥
 जीरे बेहुजन बेठां छे हरग भरी । संमार मागर पोहोच्या तरी ॥ ४ ॥
 जीरे वसुदेव योगे आव्या हरि । हरि नामे पानक गयां छे टली ॥ ५ ॥

जीरे धवलमंगल दीजे धरण जाणी । आगे मवगमंडप सीताआणी ॥६॥
 एहवा मंगल वरनिये मन जाणी । त्यां मुक्तिदान लहे जंतु प्राणी ॥७॥
 जीरे चोकीवट मांडोचत्रुभुजजाणी । नमो गोविंदरामसुओंचरोवाणी ॥८॥
 जीरे करी कंमास्ने कर्म छांडो । नमो महस्त नामे करी थाल मांडो ॥९॥
 जीरे चलुय लीजेचरणेचित्त आणी । नमो गोविंदरामसु ओंचरोवाणी १०
 जीरे पान पूजो मन प्रतीत माचे । हरि ओधार्या तेहजे रह्यावाचे ॥११॥
 जीरे सुरतंत्रीम जोवा मली छे टोली । पग्ब्रह्मजीनेचढी छेसोहेली ॥१२॥
 जीरे मनकादिक जुवे निग्वी हग्वी । हवे एह कन्या हवीवर सग्वी ॥१३॥
 जीरे इन्द्र ईश्वर ब्रह्मा वेद वांचे । निर्गुण नाशयण केमे न राचे ॥१४॥
 प्रजा पालके पाणी ग्रहण कीधुं । पुन्य पाप ते महु वैकुंठलीधुं ॥१५॥
 जीरे कल्किकाळे कृष्ण अनंतस्वप्ने । पृथ्वी पग्या परब्रह्म स्वरूपे ॥१६॥
 जीरे तुलसी एवाणीतेमन आणी । नमो भक्तिकरेरेपरब्रह्मतणीए ॥१७॥
 जीरे अनंतब्रह्माण्ड जयो जयो भणो । पग्ब्रह्म नामे महुआनंदकरे ए ॥१८॥

॥ इति श्री संत मोहागो संपूर्ण ॥ २४ ॥

॥ अथ श्री पसावलो ॥ २५ ॥

अमो मनवारोजी रे आपस्वारथ । नाम परमारथ आपो अनिधण्युए ॥१॥
 अमो मन वारोजी रे कृडने कुबुव । सुबुध आपो रे त्रिमुवन धणीए ॥२॥
 अमो मन वारोजी रे हुंअज अहंकार । तुं निरंजन स्वामी हृदे वमोए ॥३॥
 अमो मन वारोजी रे विषया स्वाद । अखे नाम जपु रे स्वामी ताहारुंए ॥४॥
 अमो मन वारोजी रे परकल्पना । नाम कल्पना आपो अनिधणीए ॥५॥
 अमो मन वारोजी रे परस्तीजात । नामे रात्रुं रे प्रथम ताहारुं ॥६॥
 अमो मन वारोजी रे वेरण निंदा । नाम भंग ना करे ताहारुं ए ॥७॥

अमो मन आपोजी रे भक्तिने भाव। गवकरुंरे परब्रह्म तुजसु ए ॥८॥
 अमो मन आपोजी रे संतनी संगत। विगत फीटे परब्रह्म तुंजसु ए ॥९॥
 अमो मन आपोजी रे वैराग विश्वास। आश पुरोरे मारग मनतणी ए ॥१०॥
 एम विनवे वैष्णव हरजीनो दास। वास मागुंरे संतना चरणनो रो ॥११॥

॥ इति श्री पसावलो संपूर्ण ॥ २५ ॥

* ॥ अथ श्री उमावलो ॥ २६ ॥ *

रुयडलो रुयडलो रे। लैयो वैकुंठनो गथ के ॥
 वग्ने रुद्धो रे रुक्षमणी तणो ये। पातकडानो रे लैयो केढियो ठामके॥
 नाम लौजे रे नारायण तणु ए
 जपी जे श्री पद्मनाभ पीतांबर परब्रह्म ।
 माहारा गोविंदगम तम चरण शरणे ॥ ॥ध्युपद॥
 पढियो पढियो रे लैयो चारे वेदके। कर्म मारग रे भूत्यो भम्यो ए
 न जाणियो रे लैयो भक्तिनो भेद के। हुं अनेक रंतो शिर आणो ए ॥२॥
 देवडियां देवडियां रे लैयो देवाकेरो देव के। वैकुंठकेरो सर्वेधणीए
 करजो करजो रे लैयो तेहतणी सेवाके। जेणे हरणाकेस विडारियो रे
 जपी जे श्री पद्मनाभ पीतांबर परब्रह्म ॥३॥
 पहेयाँ पहेयाँ पितांबर चौर के। हार पेहरो गुंजाफल तणो ए ॥
 एणे पीडारीडे रे लहियो वंश के। काम धाम सर्वे विसयाँ ए ॥
 जपी जे श्री पद्मनाभ पीतांबर परब्रह्म ॥४॥
 मोह्यामोह्या रे लैयो तेत्रीसक्रोडदेव के। गोकुलनीमोही रे गोवालणीए
 एणे पीडारीडेरे एणे गोवालीडे रे। लैयो टाल्या गर्भवास के ॥
 माताना उछंगे उतारिया ए ॥५॥ जपी जे ॥५॥

लक्ष्मी लक्ष्मी रे लैयो लक्ष्मीकेरो कथके। दालिद्र चुरण दामोदरो ए ॥
आनंदिया आनंदिया रे लैयो ताहगमन के। ताहगीहृष्टिअवलोकताए
जपी जे श्री पद्मनाभ पीनाम्बर परब्रह्म ॥ ६ ॥

॥ इनि श्री उमावलो संपूर्ण ॥ २६ ॥

* ॥ अथ श्री खांडणा ॥ २७ ॥ *

गाईने घाईने कंड नव जाणु। गमजी वखाणुरे स्वामी एक चंते ॥१॥
गोविंद गानां लागीरे खांत। भ्रांत भागी भव कोडनणी ये ॥२॥
गोविंद गानां मा करसो रे कांण। हाण होमे गर्भवासनी रे ॥३॥
गर्भवास घर कां विमर्यो रे आंधला। बांधेलोमायाने पाश बंधा ॥४॥
हरि खडग लेईने कापने रे बंध। बली नही आवे संसार पामए ॥५॥
आववा जवानणा खडभड भांग्यां। चरणे लाध्यांये गोविंद गाहाए ॥६॥
गमजी गमजी गमजी रे गम। नामने तमारे स्वामी अलज्जयाए ॥७॥
ज्यां जोउ तहां गमजी देखुं। ते केम उवेखुरे वाहालो गमकृष्ण ॥८॥
ज्यां जोउ तहां ताहरे तेज। हेज करोरे त्रिभुवन धणी ए ॥९॥
गमनुं नाम ते त्रिभुवन तागण। नर्क निवारण स्वामी वासुदेव ॥१०॥
विष्णु भक्ति विना जे कसु जीवे। हाथ दिवडोने अंध कूवे पडे ए ॥११॥
विष्णुजी कृष्णजी अहर्निश ऊपरे । -

- हरि हरि ते केम विस्तरे त्रिलोक माहे ॥१२॥

ब्रह्म खाओ परब्रह्म आराहो। ब्रह्म ब्रह्माण्ड ओधर्यां ए ॥१३॥
आवडां ब्रह्माण्ड जेणे निपाथा। शशि ओर सूरज दिवा कर्या ए ॥१४॥
वासना होय तो वासुदेव ऊपजे। वैष्णव निपजे संतनी संगते ॥१५॥
संतनी संगत एम हजोरे अनि धणी। जेनी संगते रुडा राम मलेए ॥१६॥

रामनामनी गुरुये आपीरे सुखडी। भूखडी भागीरे भव कोडनणीए॥१७॥
 रामजी रामजी गमजी रे रुढ़ा। तमसु कुडो रे आतमा ए॥१८॥
 एक गंगा गया जईने आवे। रामजी मंभारे तेहने अधिक फल॥१९॥
 अक्षर अक्षर गंगा अस्तान। पदने मंभारे तेहने परमपद ए॥२०॥

॥ इति श्री स्वांडणां संपूर्ण ॥ २७ ॥

॥ अथ श्री हिंदोला ॥ २८ ॥

हरि अमृगत ध्याईये। आशहिये ते परब्रह्म॥
 निरंजन पद चाहिये हिंदोला रे। नहीं ज्यां जन्मने मरण॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म सार॥ १॥
 हिंदोला रे वेद न लहे जश पार। हिंदोला रे अहर्निश परब्रह्म ध्यान॥
 हिंदोला रे आत्मानणो विश्राम। हिंदोला रे योग अध्यात्म सार॥ २॥
 वणमतां सुख छाँडिये। वहु स्वर्ग तणा रस भोग॥
 निरंतर सुख सेविये। हिंदोला रे परब्रह्म भक्त संयोग॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म सार॥ ३॥
 कोट जन्म दुःख परहरी। उपन्यो रे परमानंद॥
 मुक्तपद सुखे बलांसिये। हिंदोला रे भैरवीये आद मुकुंद॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म सार॥ ४॥
 सुर मुनीश्वर अलजया। पण ना दे दर्शन देव॥
 वैष्णव महेजे अनुसर्या। हिंदोला रे हुं मारुं नहीं जहां॥
 हिंदोलारे योग अध्यात्म सार॥ ५॥

याग दानने ब्रत तपे । मुज टलना नहीं अवतार ॥
 तुं ममरथ हवे ओलख्यो । हिंदोला रे हवो हवो गर्भ निमार ॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म मार ॥ ६ ॥

कर्म बंधन छेदियां । संज्ञेरी चारे खांण ॥
 अंतक मारण लोपियो । हिंदोला रे परब्रह्म भक्ति परण ॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म मार ॥ ७ ॥

ज्ञान वैराग्य तोण कर्या । अने स्थंभ शंकर ब्रह्म ॥
 निष्कर्म भक्ति हिंदोलडो । हिंदोला रे हाँचे हाँचे हरि परब्रह्म ॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म मार ॥ ८ ॥

पेहेली युमरडिये जग घञ्यो । बीजिये पाले विश्व ॥
 त्रिजीये त्रिभुवन मंवरे । हिंदोलारे चोथीये नहीं हवे सृष्टि ॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म मार ॥ ९ ॥

कवि शब्द ब्रह्म विनवे । परब्रह्म गय अविदार ॥
 तुं आगल को जाण नथी । हिंदोला रे आत्माने ल्यो हवे पार ॥
 हिंदोला रे योग अध्यात्म मार ॥ १० ॥

॥ इनि श्री हिंदोला मंपूर्ण ॥ २८ ॥

॥ पंचाह्न पारायण पांचमो विश्राम ॥

* ॥ इनिश्री अध्यारूपजीनां कीर्तन समाप्त ॥ *

माना कौशल्या देवकी । यशोदा नंदन कहान ॥
 सो मांड हमारे जीवणा । जे काली मरद्यो मान ॥ १ ॥
 अषाढ उनम्यो जीवणा । एमो श्याम स्वरूप ॥
 भीतर चमके दामनो । सो राधाजीको रूप ॥ २ ॥

अथ श्री

वैष्णव जीवणदासजीनी

साखी

आय अंत जाणु नही । नही मध्यसुं काम ॥
 नाम प्रताप पाथाण तरे । सो जीवण ममरो राम ॥ ३ ॥
 म्युपनि जदुपनि जीवणा । ज्यूं उठघनमें चंद ॥
 राधाकर सीतापनि । सो क्यूं न भजे मनि मंद ॥ ४ ॥

(सर्व हक्क स्वाधीन)

॥ अथ श्री वैष्णव जीवणदासजीनी साखी ॥

—८२—

* ॥ अथ श्री गुरुदेवको अंग ॥ १ ॥ *

नाम हमारो जीवणा । कल्बी कुल अवतार ॥
 साँई हमार रामजी । मनगुरु दाम गोपाल ॥ १ ॥
 सतगुरु दाम गोपालजी । जे जनकवंश अवतार ॥
 खुपनि बनायो जीवणा । अखुभान सुना शणगार ॥ २ ॥
 गुरु कीजे विचार के । जेही बनावे राम ॥
 सरजू तीरे जीवणा । नगर अयोध्या गाम ॥ ३ ॥
 साँई हमार गमजी । जाके भग्न शत्रुघ्न भ्रान ॥
 शंकर क्षण मंग जानकी । जीवण ए जगतान ॥ ४ ॥
 सतगुरुए ममझायो जीवणा । नव भयो मन धीर ॥
 पव पीयो देवल फीरो । यों कही दाम कबीर ॥ ५ ॥
 अणदेखी अण सांभली । सतगुरु देई बनाय ॥
 अब निद्रा कैसी जीवणा । नाम निर्मल यथ गाय ॥ ६ ॥
 लोक वेद सब जान दे । जान दे धर्नी आकाश ॥
 सतगुरु शब्दे रहो जीवणा । जहाँ प्रेम भक्ति परकाश ॥ ७ ॥
 एका एकी महा मुखी । दूजा मनगुरु बेल ॥
 त्रीजा खुपनि जीवणा । नामे कर्खी केल ॥ ८ ॥

कुशल पड़ी रे जीवणा । जब मनगुरु पकडे हाथ ॥
 अनेक जनम गमनाम बिन । बावल दीनो बाथ ॥१॥
 बीडो चौमठ, पानको । मनगुरु दीयो बनाय ॥
 यह वर मागुं जीवणा । मंत चरण पमाय ॥२॥
 रामानंदे जे कही । मौ सुनी दास कबीर ॥
 मौ सतगुरु कही जीवणा । भज मीतापनि ग्वुवीर ॥३॥
 तीन लोकमें तत्त्वथा । मौ सतगुरु दीया बनाय ॥
 कुँड अङ्गावीम जीवणा । जे जनके दोया छोडाय ॥४॥
 ओला झोला जीवणा । सतगुरु दीया बनाय ॥
 कर्म धर्ममां ग्वुपनि । जे वेदे धर्या छपाय ॥५॥
 बाजा बाढु नव छांडीये । यशोदा कंठ कहान ॥
 सतगुरु समझायो जीवणा । तो कैसो मान अपमान ॥६॥
 वेद विशेष भयो जीवणा । जब मनगुरु भये महाय ॥
 वेद कहे निरंजन भजो । हम ग्वुकर दुल्हो गाय ॥७॥
 जन्म सफल कर जीवणा । भज मीतापनिको नाम ॥
 जोन स्वरूप वेदे कह्यो । पण मयों न एको काम ॥८॥
 कोई नहि तेग जीवणा । मैं देख्यो देश विदेश ॥
 मीतापनिको आमरो । के सतगुरुको उपदेश ॥९॥
 गुरु विचार कहा करे । जो शिष भया गमार ॥
 खीर कूकरकु जीवणा । पेट न रहे लगार ॥१०॥
 हरि जन तो होंसे थयो । गुरु मिलो गमार ॥
 सखे सखा जीवणा । ज्युं गद्धा लोटे छार ॥११॥

धीरे धीरे जीवणा । ज्युं हालकांचीडा पाय ॥
 अबदेश छोडी विदेश लीया । ते सतगुरु नणे पमाय ॥२०॥
 जम जुठो पछ्यो जीवणा । जब मतगुरु दीनी माथ ॥
 एही तुमारो आनमा । रघुपति लिजे गब ॥२१॥
 मतगुरु शब्द मुली भई । संन भये गवाल ॥
 जाणेना देउ जीवणा । निगधार किरनार ॥२२॥

* ॥ माखी भेटकी ॥ *

मतगुरु हठीलो जवणा । खेले अपनो दाव ॥
 जहाँ जहाँ आग जीवका । तहाँ तहाँ देवे पाव ॥२३॥
 मार लिये मतगुरु खडा । नाम निशान बजाय ॥
 आपा थम्थर कांपिया । सो जहाँ जीवण तहाँ जाय ॥२४॥
 * ॥ माखी श्रीमुखकी ॥ *

गुरु गुरु मब कोय कहे । मीटे नही शरीर ॥
 श्रीमुख कहे मुन जीवणा । मन गुरु दाम कबीर ॥२५॥
 भीडो बालो जोवणा । जो कर आनदेवकी सेव ॥
 मतगुरु मतही तत्व कह्यो । जे माचे रघुपति देव ॥२६॥
 सतगुरुके उपदेशका । अरध नाम परवेश ॥
 भवमागर मेटके जीवणा । हम आवेंगे उनदेश ॥२७॥
 हरि हिंदोले जीवणा । विमार्यो मघलो माथ ॥
 कृपा भई रघुनाथकी । जब मतगुरु पकडे हाथ ॥२८॥
 आधा मना साधका । जहाँ पागब्रह्मकी आम ॥
 पूरा मना तहाँ जीवणा । जहाँ सतगुरु शब्द विश्वाम ॥२९॥

मन गुरु चरणे अरपिये । तनहै कुल पछ मांहि ॥
 ब्रह्मादिक भूले जीवणा । ओ हस्तिन कहावे नाहिं ॥३०॥
 तनमन अरपे समकुँ । तो दे वैकुंठको धाम ॥
 गुरु चरणे अरपे जीवणा । हरिचरण कमल विश्राम ॥३१॥
 माथा बहुणा मानवी कहां देखे जीवणदास ॥
 गुरुचरणे शिश सांपके जगसें रहे उदास ॥३२॥
 अष्ट सिध नव निध जीवणा । जहां सतगुरुशब्द विश्वास ॥
 सोल कलासु शामलो । जहां खुपति के निज दास ॥३३॥
 * ॥ साखी भेष्यकी ॥ *

सतगुरु जीवण उमगे । श्याम घटा घन घोर ॥
 अमर झरे रस पीजिये । सो निरखत जुगल किशोर ॥३४॥
 * ॥ साखी श्रीभुखकी ॥ *

वेदे	रुधी	वाटडी । मुक्ति भक्तिको घाट ॥
गुरु	परसादे	जीवणा । मार उघाडी वाट ॥३५॥
वाट	उघाडी	नीसर्यो । संत समागम मांहि ॥
भवसागर	तरु	जीवणा । सीतापतिकी बांहि ॥३६॥
मुखे	वेदनको	मारके । आंखन दीनी धूल ॥
गुरु	परसादे	जीवणा । जइ पकडो निज मूल ॥३७॥
समरण	सतगुरु	जीवणा । जीण मोहतोड्यो वेदो तणो ॥
सकल	धर्म शिर	ऊपरे । अकल लेख संतो तणो ॥३८॥
लख्या	मीटे	नहीं जीवणा । जे कल्पु लख्या लेख ॥
सतगुरु	लेख	मीटाइया । तब पायो आप अलेख ॥३९॥

अलख ल्खायो जीवणा । मनगुरु मीनाराम ॥
 कर्म धर्म वेदे कह्यो । सो छांड दीयो बे काम ॥४०॥
 मन गर्म मवको कहे । अमनन कहेवे कोई ॥
 गुरु कृपा चिन जीवणा । मनते अमन होई ॥४१॥
 कृष्ण कृपाथी को नर्यो । गुरु कृपाथी चोर ॥
 जुग जुग भट्के जीवणा । ज्युं धर्णी वहुना ढोर ॥४२॥
 भवमागरमां जीवणा । बहुत परी हे भीर ॥
 मनगुरु मंदेमो कह्यो । तुम वेगे आओ खुबीर ॥४३॥
 जे जेकार भयो जीवणा । जब मनगुरु दीया उपदेश ॥
 भवमागरमां बूढना । करगही काढे केश ॥४४॥
 हीरवणजा जीवणा । जब मनगुरु भये दलाल ॥
 परखन परखन परखीया । जे गमनाम तत्वमार ॥४५॥
 हरि हीरकी कोटडी । मनगुरु देई बनाय ॥
 मंत ममागम झील्हो । जे खुबर दुलहो गाय ॥४६॥
 गजम तामस मात्रिक । ए तीन गुणमे मंसार ॥
 चौथा गुणको जीवणा । सो सनगुरुको परिवार ॥४७॥
 मनवालामा देखिये । गुरु शब्दे महमन ॥
 तु मन डर्पे जीवणा । शिर ऊपर कमला कंत ॥४८॥
 शिर माटेका खेल है । खेल मके तो आव ॥
 ल्लोपनो नही जीवणा । मनगुरु बनायो दाव ॥४९॥
 पात्र कृपात्र जीवणा । मनगुरु देय बनाय ॥
 नेक शिश विभीषण नम्यो । खुपनि भये सहाय ॥५०॥

साचा सतगुरु जबमिले । नब आपा देय उथय ॥
 जे मारग-मंत निकसे जीवणा । सो मारग देय बताय ॥५१॥
 साचा सतगुरु जबमिले । नब भयो नाम विश्वाम ॥
 विरह अगनमां जीवणा । भया कर्मका नाश ॥५२॥
 कुटो पढो अब जीवणा । जप तप तीरथ दान ॥
 सार सतगुरुकी बहेगइ । काट कीयो मेदान ॥५३॥
 खेती सूकी जीवणा । सरो न पाको कोय ॥
 उगी यण सींची नही । गुरु सेवा बिन नोय ॥५४॥
 मोह पसार्यो माननी । मब जग गयो गरकाय ॥
 हरिजन उबरे जीवणा । खेले मन गुरुको दाव ॥५५॥
 उदा कूदा जीवणा । दीनी एकज फाल ॥
 संत समागममां मल्यो । ज्यां अयोध्या तणो महिपाल ॥५६॥
 उदा जान हनुमानकी । दीनी एकज फाल ॥
 हरि फल लीनो जीवणा । सो सतगुरुको उपकार ॥५७॥
 उदा उदा सबको कहे । सुनो उदाकी मात्र ॥
 आनदेव बाहे नही जीवणा । ग्युगनि लीना गत्र ॥५८॥
 शेष महस्यमुख जे जपे । सो मल्या लख्यो हनुमान ॥
 सो सतगुरु कह्यो जीवणा । जे गौरी पनिको ध्यान ॥५९॥
 शालिंगगम सेवुं नही । नही म्बरूप मु काम ॥
 सतगुरु ममजायो जीवणा । जे सीतापनिको नाम ॥६०॥
 एमा गुरु कोजे जीवणा । जाके रूप न रेख ॥
 सीतापनि बिना और कहे । तो मुख मखावु मेख ॥६१॥

पोथी पग्बद्ध नामकी । मनगुरुये देई बनाय ॥
 -आद अविनाशी जीवणा । ररे म मे चित लाय ॥६२॥
 भीष्म मागन जीवणा । दाना भये मब संन ॥
 मनगुरु बचने पाईये । केवल कमला कंत ॥६३॥
 मरणको डर हरि नाम विना । दीमे मब मंमार ॥
 हरिजन उबरे जीवणा । मो सतगुरुके उपकार ॥६४॥
 जीवण मब जुग बह गयो । हम हते ता मांहि ॥
 काहा जाणुरे कछु भया । मनगुरुये पकडी बांहि ॥६५॥
 कृपानिधान मब कहत है । ए प्रतीत नही मोहि ॥
 गुरु कृपा बिन जीवणा । पार न पोहोता कोई ॥६६॥
 दक्षिण दिशा रवि तपे । उत्तर शशीको भाव ॥
 चहुदिश हमारे जीवणा । मनगुरुये बनायो दाव ॥६७॥
 मंत ममागम जीवणा । ना जाणे शंकर शेष ॥
 नेनि नेनि निगम कहे । मो मनगुरुये दोयो उपदेश ॥६८॥
 पक्ष छुटी दोहदश गई । ग्यो मंत ममागम मार ॥
 सतगुरु शब्दे जीवणा । उत्तरीये पेली पार ॥६९॥
 वण तृष्णा पाणो पीये । वण क्षुधा खाये खीर ॥
 गुरु मुख छाँडी हरि भजे जीवणा । मो कहीये बे पीर ॥७०॥
 को कहे हरि सुन आकाशमां । को कहे हरि घट घट मांहि ॥
 मनगुरुये बनायो जीवणा । श्री बंसीबटकी छाँहि ॥७१॥
 मजन हमारे जीवणा । मनगुरुये दीया बनाय ॥
 शिर मोर मुगट मुख मोग्ली । वृद्दावन चारे गाय ॥७२॥

* ॥ साखी श्री भेटकी ॥ *

सतगुरु . जीवण शामलो । दास कवीरजी गम ।

अंतर तो एतो पञ्चो । एक रूप दो नाम ॥७३॥

* ॥ साखी श्रीमुखकी ॥ *

दो अक्षरके आंतरे । गमकबींग एक ॥

मो समजत है जीवणा । जाके सतगुरु दीयो विवेक ॥७४॥

मेल मुगन भई जीवणा । जब सतगुरु दीयो उपदेश ॥

सरग नरक वैकुंठलो । ज्युं ढार उपाडे केम ॥७५॥

वार स्कंध शुकजो कह्यो । लह्यो न एके मरम ॥

जनक विदेही गुरु कीये जीवणा । नब पायो आनम धरम ॥७६॥

दीपक दीडो जीवणा । ज्यां सतगुरु शब्द विश्वास ॥

अंधार मब जगत्का । ज्यां कर्म धर्मकी आश ॥७७॥

माँई कहेणा महेल है । कहेणे बहोत विचार ॥

ए सब सहेलो जीवणा । जब सतगुरु होय कृपाल ॥७८॥

अपने अपने पदकुं । गच्छी रहे मब कोय ॥

सतगुरु पदकुं जीवणा । चीह्ये विला कोइ ॥७९॥

दासानन मब मनमने । गुरुमते कोइ नांहि ॥

गुरुमते जे जीवणा । ए हस्तिरण कमलकी छांहि ॥८०॥

प्रगट पसारो जीवणा । सतगुरु दीयो बनाय ॥

संत समागम झीलवो । रघुवर दुलहो गाय ॥८१॥

जग तरबेकु जीवणा । ग मना म निखाण ॥

शंकर मुनायो नारकु । मो सतगुरुये कह्यो प्रमाण ॥८२॥

ठेलो जनम भयो जीवणा । जब मनगुरु दोयो उपदेश ॥
मन ममागममां मल्यो । अयोध्या तणो नरेश ॥८३॥

* ॥ साखी भेटकी ॥ *

गाम हमारे माहापरे । जहाँ सकल मन मुख धाम ॥
मनगुरु हमारे जीवणा । ते सोल कल्यासु शाम ॥८४॥
तकीया तीनु बाहेग । जहाँ मीनापनिके मन ॥
सनगुरु मिळे गोपालकुं । नब पाया नाम अनन्त ॥८५॥
गाइ गवरावे जीवणा । कही ममझावे आप ॥
चिढ़ी चुण ज्युं देतहै । एसे मनगुरु बाप ॥८६॥

* ॥ साखी श्रीमुखकी ॥ *

मोले पाणी न चढे जीवणा । जो कोटिकि मिले लुहार ॥
प्रेम विना भक्ति ना ऊपजे । जो आप मले कस्तार ॥८७॥

* ॥ साखी भेटकी ॥ *

सनगुरु करता जीवणा । मगरे वीहो जाय ॥
भवबंधन कर्म काटके । केवल हरि जम गाय ॥८८॥

* ॥ साखी श्रीमुखकी ॥ *

हरि देन हम लेन हे । नामे नहीं किसीको पाड ॥
जीव केना एक जीवणा । जो मनगुरु पाले लाड ॥८९॥
सबके मनगुरु कबीरजी । ममन करे जन कोई ॥
ओर दुनीयाकुं जीवणा । मनगुरु घरकी जोई ॥९०॥
गुरु पीर नहीं जीवणा । भगति करे सब कोय ॥
नीर बलोवे प्रेमसु । लुणी केसे होय ॥९१॥

अजर जरे नहीं जीवणा । ज्युं कुकर्कुं स्वीर ॥
नाक छांट होइ नीकसे । जाके नहीं गुरुपीर ॥९२॥

* ॥ साखी भेटकी ॥ *

आपा उपर आदरे । ले मदगुरुका बाण ॥
नावट करे जीवणा । छोड़ावे चागे स्वाण ॥९३॥

* ॥ साखी श्रीमुखकी ॥ *

जहाँलग एक करम होय । पूनरपि पाछो ना थाय ॥
आपो उभो जीवणा । नहां मनगुरु ना होय महाय ॥९४॥

आपो मेटे आपदा । मकल गेग मिट जाय ॥
गुरुमुख होयके जीवणा । नाम निरमल जस गाय ॥९५॥

करमे कुकर अवतर्यो । पण अंतर जामी एक ॥
मपने ना जाण्यो जीवणा । मनगुरु तणो विवेक ॥९६॥

नाम चिनामणि जीवणा । मनगुरु दीयो बनाय ॥
तेग गरब्या नब छहे । जो मनगुरु नहीं महाय ॥९७॥

स्वर्ग नरक दोनो तजे । नहीं वैकुंठकी आश ॥
गमनाम भज जीवणा । मनगुरु शब्द विश्वास ॥९८॥

* ॥ साखी भेटकी ॥ *

मनगुरु मंदेमा मोकले । कचावचां मब आव ॥
नाम चिनामणि जीवणा । जे भावे मो पाव ॥९९॥

* ॥ साखी श्रीमुखकी ॥ *

सरस्वनी विचारी कहा करे । जो नहीं गुरु वचन प्रमाण ॥
सीतापनि बिन जीवणा । भटके चारो स्वाण ॥१००॥

वाणी सब व्यभीचारणी । जहां नहीं गुरु वचन प्रमाण ॥
गुरुमुख वाणी जीवणा । सो कल्याणे कल्याण ॥१०१॥

* ॥ माखी भेटकी ॥ *

गडो रहे गोपालीयो । मतगुरु शब्दकी बीच ॥
संत ममागममां मलो । जहां जम किंकर नहीं मीत्र ॥१०२॥
मदन जगायो माननी । सामे वेण बजाय ॥
ऐसे सतगुरु जीवणा । हम सुने लीये जगाय ॥१०३॥

* ॥ माखी श्रीमुखकी ॥ *

दोनु गईरे जीवणा । जोग और आदेश ॥
सब धगम छांडी दीया । न जाएयो गुरु उपदेश ॥१०४॥
मूवा मगदा जीवाये के । अमृत सचि आय ॥
ऐसे हमिण जीवणा । मतगुरु भये महाय ॥१०५॥
घट घट व्यापक जीवणा । पण अंतर्यामी एक ॥
मे बलीहारी ता दामकी । जहां मतगुरु शब्द विवेक ॥१०६॥
सनगुरु ये ममझायो जीवणा । गुप्त प्रगटकी बात ॥
एक रूप घट घट वसे । एक सीतापति रघुनाथ ॥१०७॥
घट घट व्यापक जीवणा । सी ता प नि को रूप ॥
गुरु रूपा ता दामकुं । जा घट नाम स्वरूप ॥१०८॥
प्रेम पोयामी सुंदरी । रहि किनारे लाग ॥
गुरुकृपा विन जीवणा । जलमे देखे आग ॥१०९॥
वण गोवाले जीवणा । दोर गये सब फेल ॥
लाठीले मतगुरु खडा । सो लाये अपने गेल ॥११०॥

करम धर्म सब थक रह्यो । थक रह्यो ब्रह्मज्ञान ॥
 गुरु परमादे जीवणा । जब समगे सीताराम ॥१११॥
 कर्म कोहाडे कापीयो । जगमां जी वण दास ॥
 सनगुरु समझा इयो । जे कही कबीरे दास ॥११२॥
 दुधे बालु जीवणा । सो सनगुरु तणो परनाप ॥
 वेद धर्म सब आस है । मोहि बडो लग्यो थो पाप ॥११३॥
 सगां संबंधि बहि गयां । सनगुरु शब्दमां हार ॥
 नाम चिंतामणि जीवणा । भवजल काढे पार ॥११४॥
 आंकणीये अडतुं रहे । जो सुमरे सीताराम ॥
 गुरु परमादे जीवणा । फीटे ताको ठाम ॥११५॥
 मान मेलावो बीछडो । तान गयो बड भाज ॥
 सी ता पनि को जीवणा । जब मदगुरु कह्यो अवाज ॥११६॥
 मबल संगानी शामलो । मन गुरु के उपदेश ॥
 और संगानी जीवणा । जैसो धोलो केश ॥११७॥
 वर्षा परब्रह्म नामकी । मदा होत अखण्ड ॥
 गुरु कृपाथी जीवणा । बादल भये सब मंत ॥११८॥
 * ॥ साखी भेटकी ॥ *
 चरण पसाये जीवणा । हम गावत गुण गोपाल ॥
 गमनामकी मौज है । सो मनगुरुकी कृपाल ॥११९॥
 * ॥ साखी श्री मुखकी ॥ *
 लक्षणवंत पायो जीवणा । जनक सुताको नाह ॥
 गिद्धि मिद्धि मुक्ति भक्त दे । सो मदगुरु चरण पमाय ॥१२०॥

अंतरगतकी रामजी । सबकु भरी भरी देत ॥
 हमही मागे जीवणा । सतगुरु कह्यो मो हेन ॥१२१॥
 झवक झूठ काहा करे । जो साँईया दीधी ओट ॥
 सतगुरु चरणे जीवणा । कबहूँ न लागे चोट ॥१२२॥
 राम कृष्ण दो जीवणा । सोई हमारे पीर ॥
 सतगुरु बचने पाईये । शश्यु यमुना तीर ॥१२३॥
 अंतरयामी आपणो । सतगुरु दियो बनाय ॥
 लक्ष्मी चरण मेवा करे । सो गोकुल चारे गाय ॥१२४॥
 एक मुख केती कहुँ । शेष न पावे पार ॥
 सतगुरु समझायो जीवणा । जे राम नाम आधार ॥१२५॥
 हस्त मुस्तक आवे नहीं । घट घट व्यापक राम ॥
 सतगुरु समझायो जीवणा । जे समगे सीता राम ॥१२६॥
 भली भई अब जीवणा । सतगुरु दीया बनाय ॥
 अंतरयामी आपणो । रहो प्रेम लौलाय ॥१२७॥
 भली भईरे जीवणा । सतगुरु भये सहाय ॥
 अंतरयामी एक है । भज सीतापति खुराय ॥१२८॥
 हम जान्यो हरि ढुकडो । वैकुंठ पेली पार ॥
 वेभी नेडो जीवणा । जो सतगुरु होय कृपाल ॥१२९॥
 हाती आई जीवणा । पंथ पुगतन सार ॥
 सो सतगुरु सत तत्त्व कह्यो । भज जनकसुता आधार ॥१३०॥
 कलि कीचमां गड रही । जीवण दृबली गाय ॥
 आप बले निकसे नहीं । जो सतगुरु न होय महाय ॥१३१॥

चार खांण भम्यो एकलो । कहाँ न पाम्यो अम ॥
 हरि भजवेकुं जीवणा । मनगुरु दीया ए काम ॥१३२॥
 अम दिया है जीवणा । कीधी मनगुरुए सार ॥
 गम भजनकुं अनुमगे । उनगे पेली पार ॥१३३॥
 पार उनारे जीवणा । मनगुरु पकडे बांहि ॥
 अजामेल गुनिका तरी । पत्थर तारे तांहि ॥१३४॥
 जमुना तीरे जादबो । शम्यू तीरे रुवीर ॥
 मनगुरु समझायो जीवणा । दोनो एक शरीर ॥१३५॥
 आगे मन्यासो गुरु किया । तेणे अध्यातमदिया बनाय ॥
 ता छांडके जीवणा । समगे रुपनि राय ॥१३६॥
 मनगुरु दाम गोपालजी । ए मत्य दिया बनाय ॥
 मन ममागम जीवणा । जे हरि रम पीयो अघाय ॥१३७॥
 जीन पंथ सब जीवणा । तहाँ कर्म धर्मकी आश ॥
 अजामेल गुणीका तरी । ते मनगुरु शब्द विश्वास ॥१३८॥
 सब जग ढुँब्बो जीवणा । मूवा न रोवे कोय ॥
 शिर उपर सतगुर खडा । जे करे सो होय ॥१३९॥
 मनगुरु हमारे जीवणा । जे बोली बांझां नार ॥
 भजवे कुं सीता पनि । जे खेले नंदद्वार ॥१४०॥

* ॥ माखी भेटकी ॥ *

सतगुरु हमारी बीनती । तुम मुनियो जीवणदाम ॥
 परन्त्रिया सुं लालच्छो । कबहुं न मिटे पियास ॥१४१॥

* ॥ माखी श्री मुखकी ॥ *

मरस्वती शोधी शाहपरे । जेसो दाढ़रको नीर ॥
 मतगुरु बचने जीवणा । कोई एक पावे तीर ॥१४२॥
 जे मजनी सुख पोढ़ते । सो जन गये केदार ॥
 युस्त्रब्द बिन जीवणा । मिले न दूजी बार ॥१४३॥
 रघुपति यदुपति जीवणा । दोय हमारे गम ॥
 गुरुकृपाथी पाईये । मंत संगत विश्राम ॥१४४॥

* ॥ साखी भेटकी ॥ *

मतगुरु हमारी विनती । तुम मुनियो मंत कृपाल ॥
 हम गंक चरणकी छाँयहै । जीवण तुम पतिपाल ॥१४५॥
 गुन्हेगार गोपालियो । सतगुरु मेवा नांहि ॥
 गुह्नो बक्षो जीवणा । हम संत चरणकी छाँहि ॥१४६॥

* ॥ माखी श्री मुखकी ॥ *

प्रेमपलीतो जीवणा । जारे मोह अहंकार ॥
 गमनामकी मौज भई । ते सतगुरु के उपकार ॥१४७॥
 मान गयो मिटी आपदा । भवसागर बहु अटपटो ॥
 जनजीवणकी भई स्ववाली । शिर उपर सतगुरु खडो ॥१४८॥
 अखुभान सुता नंदलालपर । में वारु तन मन प्राण ॥
 गुरु कृपाथे जीवणा । पाइये जुग जुग ध्यान ॥१४९॥
 शाम मखा विजनारम्भु । आरोगो जदुपतिगय ॥
 जुठण पावे जीवणा । ते सतगुरु तणे पमाय ॥१५०॥

सतगुरु तस्वर भये जीवणा । पान भये सब शिष ॥
 एक आवत एक जात है । तामे केसो दोष ॥१५१॥
 तुं तुं तुं तुं होत है । हुं नहीं एक वार ॥
 सतगुरु अंतर जीवणा । सौ जपन है रेखकार ॥१५२॥
 सतगुरु दाम गोपालजी । जीणे दीयो अमेपद दान ॥
 वेद वन सब जीवणा । काट कीयो मेदान ॥१५३॥
 ना गुरु मीला ना शिष भया । मन मनाका खेल ॥
 तल कोदर पीमे जीवणा । नहीं घेंम ओर तेल ॥१५४॥
 सबही कालकी ढाठमां । मन माने तब खाय ॥
 हरिजन उगरे जीवणा । जाके गुरु महाय ॥१५५॥
 पोथी बांधी खेंचके । मनमां भयो आनंद ॥
 गुरु मेव्या बिन जीवणा । राहे गलो जेम चंद ॥१५६॥
 माला तिलक बनायके । मनमें हो ख्यो साध ॥
 गुरु मेव्या बिन जीवणा । जेसो ऊँटको पाद ॥१५७॥
 मेरे तेरा जीवणा । प्रकृति ताको नाम ॥
 जब सतगुरु कृपाकरे । तो फीटे ताको थाम ॥१५८॥
 वारी हरिके नामपर । दीयो मानव जन्म अवतार ॥
 सतगुरुपर वारी जीवणा । उतारे भवजल पार ॥१५९॥
 लखते लखते सबलिखा । शास्त्र वेद पुराण ॥
 सतगुरु मेव्या बिना जीवणा । वहु भाँडको ज्ञान ॥१६०॥
 ब्रह्मा शेष महेश लो । सबही हृदमां धाय ॥
 सतगुरु मेव्या बिन जीवणा । ज्युं अंधो आरसी पाय ॥१६१॥

ना गुरुके ना पीम्के । नहीं वेद कुरान ॥
 जुग जुग भट्टकत जीवणा । ज्युं हड्कायो श्वान ॥१६३॥
 जहां मत गुरुका दावा नहीं । तहां जमका दावा होय ॥
 राम भरोमे जीवणा । भरम पढो मत कोय ॥१६४॥
 हरि भजे हरि ना पाइये । सब आप आपकुं धाय ॥
 गुरु समर्या बिन जीवणा । काल जपेटे जाय ॥१६५॥

॥ इति श्री गुरुदेवको अंग ॥

* ॥ अथ श्री संतको अंग ॥ २ ॥ *

साख सलुणी जीवणा । यामे रूप और नाम ॥
 संतममागम झीलवो । सागर सुताको धाम ॥ १ ॥
 मंतमंगनमली जीवणा । गाइये गुण और गीत ॥
 गब रोटी मली पाइये । परमेश्वरकी प्रीत ॥ २ ॥
 मंत मंगन मली जीवणा । पीजे प्रेम नीषुंज ॥
 जेस पीनो गोवालनी । श्री वंद्रवनकी कुंज ॥ ३ ॥
 मुगन फल खुपनि दे । प्रेम रस हरिजन पास ॥
 प्रेम रस तबही पाइये । जो होय भगननको दास ॥ ४ ॥
 संत द्वारे जीवणा । सबको होय मनमान ॥
 खुपनि जजंते जुग जजो । जपनप तीरथ दान ॥ ५ ॥
 संत दरशनकु जीवणा । आशकरे वैकुंठ ॥
 वैकुंठ बपरेकी कहा चली । जो बंछे कमलकंथ ॥ ६ ॥
 त्रिष्णु पादोदक लेयंता । अकाल मृत्यु मिट जाय ॥
 संत चरणमृत ले जीवणा । अखे अमरपद पाय ॥ ७ ॥

गम भक्ति सबको करे । ब्रह्म शंकर शेष ॥
 संत संगत बिन जीवणा । दुर्लभ हरिका देश ॥८॥
 हरि भजे हरि पाइये । ए बाननकी बान ॥
 संत छांडी हरि भजे जीवणा । बोहोन महेगो लान ॥९॥
 गम पिना सबजीवका । हरिजन जाके नाहि ॥
 हरिजन बाहेगे जीवणा । जम घमेटे जाय ॥१०॥
 सोलकला हरि परसीये । अने हरिजन परमे नाहि ॥
 मुगनफल देउगा जीवणा । पण भक्तिफल मोपे नाहि ॥११॥
 संत दशनकु जीवणा । काशी कखनले आप ॥
 मुक्त क्षेत्र वेदे कह्यो । मोहि बडो लगायो पाप ॥१२॥
 कर्म हमारे काटथी । कोइ हरिजन आवे माँहि ॥
 जे करे हमारा बासना । जीवण मो तो हरिजन नाहि ॥१३॥
 निखासिक जे जीवणा । हरिजन ताको नाम ॥
 सगग नरक वैकुंठ नज । जे मपरे सीताराम ॥१४॥
 माँई हमग रामजी । जे दमर्थ सुन खुवीर ॥
 सब संतन मली जीवणा । कीयो हमारे शिर ॥१५॥
 सब संतनमां जीवणा । कारीगर कवीर ॥
 घाट बनायो मोभितो । गौद्ध भये खुवीर ॥१६॥
 निरभय खाट कवीरकी । सब संतन लीनी बाँट ॥
 नाके कछु नहि जीवणा । जाके मनमे आँट ॥१७॥
 जग ऊलाहे जीनीयो । सब संतनको शिर ॥
 नाम बटाई जीवणा । जाकु जेमी धीर ॥१८॥

राम स्वरूपी नाम है । नाम स्वरूपी मंत ॥
 कलि कालमां जीवणा । भजवेकु दो मीन ॥१९॥
 जा ठोग्मे जीव ऊपनो । रलमल तहां ममाय ॥
 नाम रूप बिन जीवणा । जग ठग बाजी खाय ॥२०॥
 जनम सफल कर जीवणा । मंत समागम मांहि ॥
 के मोवे के बैठ रहे । मीतापनिकी छांहि ॥२१॥
 संत समागम जीवणा । आपा देय छोडाय ॥
 ब्रह्मादिकमे भग्मिया । चले वेदकी लार ॥२२॥
 कहा जोगी कहा सेवदा । कहा पंडित कहा जोष ॥
 मंत मंगत बिन जीवणा । गमभक्ति ना होम ॥२३॥
 दो बल हमारे जीवणा । भक्तगज रणधीर ॥
 स्थुवर तो स्था करे । मंत बंधावे धीर ॥२४॥
 जे भाव करी अग्पे जीवणा । मंत सुख होकर पाउ ॥
 कोटि जगन कोई करे । मे सीन न चाखन जाउ ॥२५॥
 कलिके भगतपर जीवणा । वारु तनमन प्राण ॥
 वण देखे मोकुं भजे । कर मंत स्वरूप परमाण ॥२६॥
 कोटि वैकुंठ ऊपरे । श्री वृदावन सुख धाम ॥
 ताथे नीकी जीवणा । संत संगत विश्राम ॥२७॥
 आग जलो वैकुंठमां । जहां मंत समागम नाहि ॥
 ताथे नीकी जीवणा । श्री वृदावनकी छांहि ॥२८॥
 तहां अयोध्या जहां रुपनि । कांहनड तहां गोकुल गाम ॥
 मसपुरी तहां जीवणा । जहां मंतमंगत हस्तिम ॥२९॥

सब संतन मली जीवणा । कीयो एक विचार ॥
 सीतापति विना और कहे । ता ताके मोडे छार ॥३०॥
 अल्यागमी जीवणा । संतदारे जाय ॥
 कबहु मनमुख देखी है । तब कृपाकरे रघुगय ॥३१॥
 प्रह्लाद स्था करे जीवणा । तब अपने विचार ॥
 अबके संतन शिश औ । जे पाणी पहेली पार ॥३२॥
 अब एसी करु जीवणा । संत बचन परमाण ॥
 गोकुल मथुरा द्वास्कां । करु भगतकी आण ॥३३॥
 चिंतामणि और कल्प वृक्ष । दोना एके थाम ॥
 संत संगत जहां जीवणा । नहाँ सीतापतिको नाम ॥३४॥
 संशय मिटगयो मज्जना । जे समरे सीता राम ॥
 प्रेम सम पीवे जीवणा । संत जन ताको नाम ॥३५॥
 काहुकुं सेवा संतकी । काहुकुं गृहको काम ॥
 मसकन एक है जीवणा । पण जुदो सुख विश्राम ॥३६॥
 वाणी हँकी जीवणा । संत समागम मांहि ॥
 मोहि सीतापतिको आमगे । के गिर्धिगारीकी छांहि ॥३७॥
 साँई हमारा रामजी । वाणी ताकी दास ॥
 जहां संत समागम जीवणा । नहाँ सदा करै प्रकाम ॥३८॥
 जे जे कर भयो जीवणा । जब आयो संतन मांहि ॥
 आंन देवकुं त्यागकर । रहो सीतापतिकी छांहि ॥३९॥
 हरि भगतनकुं जीवणा । चार मुगत विश्राम ॥
 संत भगतकी कहा कहुं । चरण कमल विच धाम ॥४०॥

माथी भुल्यो जीवणा । समर्था नहि रघुपति गय ॥
 मन समागम छाँडिके । चल्यो मोय अपने भाय ॥४१॥
 आप स्वारथ जीवणा । नारी कीनो गेष ॥
 मन संगत विमुख पड़ी । कहासुं दीजे दोष ॥४२॥
 जनम जनम ए जीवणा । मागुं एह पसाव ॥
 मनसमागम प्रेम स्म । और न दूजो भाव ॥४३॥
 कहेना था मो कहि लिया । अब कहा कहुं समझाय ॥
 मन मेवा करो जीवणा । जे रघुपति होय महाय ॥४४॥
 दुनिया सब नुगरी भई । करे अंकुरकी आश ॥
 अंकुर संपूर्ण जीवणा । जब आयो मनन पास ॥४५॥
 विरहनी विल्लवन फीरे । समरे सीना राम ॥
 मन संगत बिन जीवणा । जनम गयो बेकाम ॥४६॥
 सुपच कृष्ण बेझ जना । पांडव हिमाले जाय ॥
 मन संगत बिन जीवणा । शामलो कबहुं न अघाय ॥४७॥
 वेद मारग दोहेलो । ए दुःख मह्यौ न जाय ॥
 मन समागम जीवणा । पलमें देन छोडाय ॥४८॥
 हम्मे हाथी जीवणा । मक्कल मन भये महावंत ॥
 प्रेम अंकुश गोपी भई । तोडे निगम के दंत ॥४९॥
 बाट उघाडी नीकमो । मन समागम मांहि ॥
 भव सागर तर जीवणा । सीना पतिकी बांहि ॥५०॥
 ऊन बैठत जोवणा । समरे सीना राम ॥
 मन समागम झील्यो । नहिं सोवेको काम ॥५१॥

शिव मनकादिक जीवणा । छोडे वैकुंठ मांहि ॥
संत संगत मणने नही । तो परम पद कहांसे पाय ॥५२॥

* ॥ मास्त्री भेटकी ॥ *

काम रननी कामनी । नामे करे प्रकाश ॥
मंत समागम मांतरे । जहां बैठे जीवणदाम ॥५३॥

* ॥ मास्त्री श्रीमुखकी ॥ *

मंत समागम जीवणा । जहां मीतापतीको नाम ॥
अस्वे उनमुनी प्रेम रम । जहां वृदावन सुख धाम ॥५४॥
यह ब्रत हमारे जीवणा । मीतापति को नाम ॥
गुरु मेवा जन बदंगी । संत संगत विश्राम ॥५५॥
कुल देवी हमारे जानकी । पितादेव रघुवीर ॥
संत संगत कर जीवणा । पाप न रहे शरीर ॥५६॥
दीपक प्रगत्यो जीवणा । जब दर्शन पायो संत ॥
मानु उग्यो निमिर गयो । कटे करम अनंत ॥५७॥
आधा मना कौने कामका । जे पावे वैकुंठको धाम ॥
ताथे भक्ति भली जीवणा । कबहु मंत संगत विश्राम ॥५८॥
जे अंग पस्या मंतकुं । मो अंग भया सनाथ ॥
और कहत है जीवणा । हमही रहे अनाथ ॥५९॥
छानी छबीले ना वस्यो । मुखसे ना निकस्यो राम ॥
संत संगत बिन जीवणा । जनम गयो बे काम ॥६०॥
महेज मुन मब थे बड़ी । जो छूटे मोह अहंकार ॥
तापर हरिपद जीवणा । बाको बार न पार ॥६१॥

सुन सुन मवको कहै जीवणा । सुन न चीन्हे कोय ॥
 आपो छांडि जे हमिजे । सुन कहावे मोय ॥६२॥
 सुन सुन मवको कहै । सुन न चीन्हे कोय ।
 जशोदा ओल्हंग कहानवो । सुन कहावे मोय ॥६३॥
 ॥ इनि श्री मंतको अंग ॥

* ॥ अथ श्री दामको अंग ॥३॥ *

जहाँ लाया कबीरकी । तहाँ मीतापनिको वास ॥
 पलभर नाम ना विमरे । जीवण सो निज दाम ॥१॥
 दामानन तो दोहेलो । स्वामी मेहेली वान ॥
 गमनाम विना जीवणा । एह वान उनपान ॥२॥
 अहं मिटे नही जीवणा । मनकादिकमे साध ॥
 ब्रह्मादिक रच पच मुये । अहं बड़ी उपाध ॥३॥
 सो माँई हमारे जीवणा । जे दमरथ सुन रघुवीर ॥
 नाकुं छांडी और भजे । सो कहीये बेपीर ॥४॥
 निरंजन निरंजनकु भजे । गधा बलभ कहान ॥
 ए विग्द हमारे जीवणा । जे गमकृष्ण दो नाम ॥५॥
 खरे पडे नही जीवणा । सदा जोन अविनाश ॥
 निज दामनके कारणे । रघुपति विग्द प्रकाश ॥६॥
 नामे कामे रूपे तरे । चरण रेणुमां पानक हरे ॥
 एमे रघुपति जीवणा । नर पापी क्युं पर हरे ॥७॥
 कालीकुं कृपाकरी । चरण धरी जब शिश ॥
 अब एसी करो जीवणा । वली जनक सुता के ईश ॥८॥

निरंजन हमाग गम है । जे वेद न पावे पार ॥
 मागर मुना संग जीवणा । जे राधा कुंज विहार ॥९॥
 खायो खच्च्यो नहीं जीवणा । छते होते कलु दाम ॥
 रघुपति छांडी और भजे । सो जास मुनके काम ॥१०॥
 गम कबीर पक है । जा घट नाम प्रवेश ॥
 शगीर धरे माँ जीवणा । अथर उनोका देश ॥११॥
 मोको माहेव गमजी । जे गोकुलमाँ गोवाल ॥
 अंवरीष गोहारे जीवणा । हरि धरे दश अवनार ॥१२॥
 कलि दशन बहुते मिले । हरिजन मिले न कोइ ॥
 हरिजन मिले जो जीवणा । तो दुःख मेरा कहु गेय ॥१३॥
 वण वरषाये उगही । वण धगनी वण बीज ॥
 भक्ति एमी जीवणा । वण बीजे मो बीज ॥१४॥
 एक नामथे जीवणा । छूटे अठवीम कुण्ड ॥
 ऐसे हो तुम रघुपति । पण मकल हमहीमें खोड ॥१५॥
 मो माँई हमारे गमजी । जे नाथ्यो कालीनाम ॥
 ता चण्णसु जीवणा । मदा रहो लौ लाग ॥१६॥
 मीतापति तो शामलो । धनुष धरे रघुवीर ॥
 मुख बजावे मोरली । जीवण केल करे आहोर ॥१७॥
 तेज पुंज प्रकाशमाँ । पहुंचे दाम कबीर ॥
 मो माँई हमारे जीवणा । जे मीतापति रघुवीर ॥१८॥
 को भजे आकाशकुं । को निगकार निज धाम ॥
 हमारे एह ब्रन जीवणा । जे मीतापतिको नाम ॥१९॥

ब्रह्मा सुर नर सब जपे । निराकार निज धाम ॥
 हमारे एह ब्रत जीवणा । जे मीनापनिको नाम ॥२०॥
 जगत जगेरे जीवणा । जप तप तीरथ दान ॥
 हारिजन जागे नामसु । सो मतगुरु बचन प्रमाण ॥२१॥
 शेष सहस्र मुख दो जीह्वा । जपे सो रेंकार ॥
 शिव शक्ति अमर भये । सो जीवण प्राण आधार ॥२२॥
 जा चम्पे अहल्या नगे । पड़ी शिव शिखार ॥
 सो चरण काली शिर जीवणा । जे कमला करन विहार ॥२३॥
 गुगल जोहो दोउ जीवणा । जनक सुना रघुवीर ॥
 मो मूर्म मेरे हिरदे बमो । शेष मखा रणधीर ॥२४॥
 करण भुशण्ड गेटी लह । तीन लोक बद्यायो हाथ ॥
 सो साँई हमारे जीवणा । जे मीनापनि रघुनाथ ॥२५॥
 छापर कहांनड प्रगत्यो । त्रे हे ना माँ रघुवीर ॥
 कलिकालमाँ जीवणा । प्रगटे दाम कबीर ॥२६॥
 यमुना तीरे यादवो । सञ्जु तीरे रघुवीर ॥
 गंगा तीरे जीवणा । प्रगटे दाम कबीर ॥२७॥
 ज्ञिल मिल ज्ञिल मिल होन है । पर ब्रह्मका नूर ॥
 सागर सुना संग जीवणा । जे मकल ब्रह्म भरपूर ॥२८॥
 आंख ना देखो जीवणा । श्रवणे सुने जे नाम ॥
 सो फुन मुख भर ओचरे । जे मीनापनि रघुनाथ ॥२९॥
 पूर्ण ब्रह्म पुरी रहो । जेमे रवि आकाश ॥
 सो साँई हमारे जीवणा । जे मीनापनि अविनाश ॥३०॥

मैं सबसम कीना जीवणा । अपने जनके काज ॥
 ता पीछे जुठन लीनो । नाम धर्यो ब्रिजगज ॥३१॥
 मैं अविनाशी तो आदिथो । पण भक्तवत्सल नाहि नाम ॥
 भक्तवत्सल तब भयो जीवणा । जब पायो गोकुल गाम ॥३२॥
 दो दो ओर चौपदी । देताना देखा कोइ ॥
 जदुपति दीनी जीवणा । साख सुदामां जोइ ॥३३॥
 मैं सबसम अरपु जीवणा । जहां मेरा निज दास ॥
 दो चौपदीकी कहाचली । जो मोहे भक्तकी आश ॥३४॥
 तीन जुग बेदल गये । राम भक्ति विन वाद ॥
 अब कलि कबीरा प्रगटे । जीवण कीयो भक्तको राज ॥३५॥
 कलि कलंक उतारवा । प्रगटे दाम कबीर ॥
 गुरु पवन कीयो जीवणा । प्रगट कीये रघुवीर ॥३६॥
 कल्युग आयो जीवणा । निग्मुण भक्ति प्रकाश ॥
 सतयुग त्रेता द्वापर । कर्म धर्मकी आश ॥३७॥
 सतयुग त्रेता द्वापर । निज भक्तन के पास ॥
 अब कल्युगमें जीवणा । मैं भोली भक्तको दास ॥३८॥
 सतजुग मांहि शेत थो । त्रेहेनामा हरि पोत ॥
 द्वापरमा हरि शाम वरण । कल्युग रूप विपरीत ॥३९॥
 सतयुग त्रेता जीवणा । वैकुंठ हमारा वास ॥
 द्वापरमा गोकुल वसु । कल्युग जहां निजदास ॥४०॥
 नर वांदरने कालजे । एसे हरिके दास ॥
 भवसागर ढाहाके जीवणा । नाम सरण विश्वास ॥४१॥

शिर साटे माई मिले । यों कही कबीरे दास ॥
 और मब जुग येवणा । जीवण जुग उपहास ॥४२॥
 धरणीधर आकाशधर । अकलगति अविनाश ॥
 सीतापति रघुनाथके । जुग जुग जीवणदास ॥४३॥
 जनम संघानी जीवणा । सीतापति रघु वीर ॥
 सरजे पाले ने मवरे । हगा बंधावे धीर ॥४४॥
 पृथ्वी परलय जानथी । जो एसे ना होने दास ॥
 नाम धुन करी जीवणा । ता आधार आकाश ॥४५॥
 महा परलय जब जीवणा । जुग लीपे माहो मांहि ॥
 हरिजन लागे नामसु । ते चण कमलकी छांहि ॥४६॥
 पवन पाणी आप तेज । सख आप आपमां जाय ॥
 हरिजन रहेगे जीवणा । हरि ही मांहि समाय ॥४७॥
 मेरु शिख चल जायेंगे । जायेंगे धरनी आकाश ॥
 निश्चल रहेगे जीवणा । सीतापतिके दास ॥४८॥
 माना हमारे जानकी । पिना हमारे गम ॥
 जुग जुग मागु जीवणा । संन संगत विसराम ॥४९॥
 माना पिना हमारे जीवणा । माधु सतगुरु गम ॥
 और कछु मागु नही । दो-चणकमल विश्राम ॥५०॥
 पिना हमारे गमजी । माना सतवंती नार ॥
 जुग जुग मागु जीवणा । धर मानव अवनार ॥५१॥
 जगत दुख्वी मब जीवणा । मुख्वी हरके दास ॥
 ओ मायाकु पची मरे । ओ गम चणके दास ॥५२॥

श्री मुख कहे सुन जीवणा । स्थुपति मेरे नाम ॥
 जनकी रक्षा ना कर । तो धनुष धर्यों कोण काम ॥५३॥
 मेरे शंख चक्र धर्यों जीवणा । मो अपने जनके काज ॥
 जनकी रक्षा ना कर । तो नाम नहीं त्रिजगज ॥५४॥
 भक्त मनोमथ जीवणा । में धर्या कोटि अवतार ॥
 एक दशकी कहाचली । जो भक्त मोहे प्राण आधार ॥५५॥
 हुवा न होमी जीवणा । जेमे दाम कबीर ॥
 भगत स्वंभ गोविंद कहे । इगा बंधावे धीर ॥५६॥
 हुवा न होमी जीवणा । जेमा दाम कबीर ॥
 जग नाश्कु अवतारे । वीरनमें महावीर ॥५७॥

* ॥ मात्वी भेटकी ॥ *

बवा बाहेरे जीवणा । ढोले मरे न काज ॥
 चक्रे दाम कबीरजी । के पद्मनाभको गज ॥५८॥

* ॥ मात्वी श्रीमुखकी ॥ *

देवहुनीकुं जीवणा । भये कपिल मुनि अवतार ॥
 दत्तात्रय यदुकु भये । पद्मनाभ धनगज ॥५९॥
 आप आपणा लीया ओल्लवी । पद्मनाभ धनगज ॥
 मामी मेवक मली जीवणा । कीयो भक्तनको काज ॥६०॥
 मैं क्षीर समुद्रमां जीवणा । मन मेरो गोकुल माँहि ॥
 भक्त वियोग दुःखीयो भयो । उहां जनतो आवे नाहि ॥६१॥
 मैं क्षीर समुद्रमां जीवणा । बहुतेक रहु उदास ॥
 वृदावनकी कुंजमां । गधा मंग विलास ॥६२॥

मैं बलिहारी ता नारकी । जे वालायो गोकुल मांहि ॥
 बंसीबटजु जीवणा । ओ बट पत्र तो नांहि ॥६३॥
 वृद्धावनमां जीवणा । पात पात रघुवीर ॥
 वहुतेक दिन भूख्यो रह्यो । आयो कालिंदी तीर ॥६४॥
 मैं अयोध्यामें जीवणा । मन मेरो गोकुल मांहि ॥
 ऋषी पत्नीसु कोल है । वे विगद विमगत नांहि ॥६५॥
 एक अनंत होय विमगत । भगत हेन रघुवीर ॥
 वहुतेक दिन भूख्यो रह्यो । आयो कालिंदी तीर ॥६६॥
 अब ऐसी करुं जीवणा । संत बचन परमाण ॥
 निःकलंक होय के अवनरुं । आधखा चारे खाण ॥६७॥

* ॥ सात्री भेष्टकी ॥ *

शाहापरे संत मेजीये । निगकार नाम आधार ॥
 भगत मनोग्थ जीवणा । रघुपति लिया अवनार ॥६८॥

* ॥ सात्री श्री मुखकी ॥ *

रघुकुल यदुकुल जीवणा । सीता वर राधा कंत ॥
 सो साँई हमारे शिर खड़ा । जाके नाम अनंत ॥६९॥
 सीतापति रघुनाथ तज । और निकाले नाम ॥
 आंन कर्म कहा जीवणा । जा नरक न दिवे ठाम ॥७०॥
 शिस्मदके करुं जीवणा । जहाँ साँई कलाल ॥
 गुन्हा बक्षो जीवणा । पलमे करे निहाल ॥७१॥
 पैदामां पद्मा जीवणा । जहाँ निकमे हस्कि दाम ॥
 मंग रहे के ले चले । पूरे मनकी आश ॥७२॥

नेजो गाहयो जीवणा । साचो रामको नाम ॥
 अजामेल गुनिका तरी । हम रंक केतो एक काम ॥७३॥
 गज ग्राह गुनिका तरी । अजामेल लीनो पार ॥
 चरणे अहिल्या ओधगी । सो जीवन ग्राण आधार ॥७४॥
 माना कौशल्या देवकी । यथोदानन्दन कहान ॥
 सो माँई हमारे जीवणा । जे कालिमदो मान ॥७५॥
 तन मन बाल जीवणा । जहां मीतापतिके दाम ॥
 चरण कमल मन उनमुनी । जगमें रहे उदाम ॥७६॥
 मुतपाप्रश्नी तप कीयो । धर्यो हरिपे ध्यान ॥
 सो माँई हमारे जीवणा । अखंड गम वरदान ॥७७॥
 म्वारथ ताके जीवणा । ताकी पूरे आश ॥
 वण स्वारथे भक्ति करे । रघुपति ताके दास ॥७८॥
 ऐमा कोई न मिले जीवणा । मिलकर कीजिये वान ॥
 आपा दे उभय के । ऊपर लगावे लात ॥७९॥
 भयो भयंकर दानवा । धर्यो नगमिह अवतार ॥
 भगव प्रल्हाद रक्षा करी । जीवण जुग जेजेकार ॥८०॥
 मार कर टुक टूकलुं । ज्यों हरणाकुश नाख्यो फार ॥
 ए विश्व हमारे जीवणा । नहिं तो लागे मोहे गार ॥८१॥
 प्रल्हाद रक्षाकुं जीवणा । तब भई मोहे वार ॥
 अबके मनन शिखयो । जे पाणी पेली पार ॥८२॥
 प्रल्हाद संकुष्ट भयो जीवणा । तब, होती मोहे हील ॥
 अब चितवत पहेले मारहूं । यों कहत है रघुवीर ॥८३॥

धनुष बाण धरे रहे । मव मनके काज ॥
 जीवण मन ललचा भई । कहु श्रवणे मुनी अवाज ॥८४॥
 जन रक्षाकुं जीवणा । ग्युपनि के दो वीर ॥
 अंजनि मुन और लक्षण । प्रभु गढे आप शरीर ॥८५॥
 जन रक्षाकुं जीवणा । हरि धरे दश अवनार ॥
 अब हल मुमल हलधर लियो । गरुड चढे गोपाल ॥८६॥
 रक्षा करे ग्युवीर धीर । अंजनि मुनके ईश ॥
 जन जीवणकी बोनति । तुम मुनियो जगदीश ॥८७॥
 परचा पाया जीवणा । माचा रमका नाम ॥
 अजमिल गुनिका नरी । तो और परचा कोण काम ॥८८॥
 परचा पगब्रह्म नामका । मनगुरु दीया बताय ॥
 और परचा मव जीवणा । काम फूम होय जाय ॥८९॥
 काहुके मन हरि बसे । काहुके शिव हनुमान ॥
 हमारे ए मन जीवणा । दाम कर्वीर निज नाम ॥९०॥
 मानो पायो पैमो । सीता पतिको नाम ॥
 खरचन हि खूटे नहीं । जीवण जुग बे काम ॥९१॥
 धरणी धर अधर रह्यो । बलिद्वारे आधीन ॥
 इन्द्रे कहा दीयो जीवणा । बलि कहा लीयो छीन ॥९२॥
 धरणी धर अधर रह्यो । बलि द्वारे आधीन ॥
 मर्वम अग्पो जीवणा । हरि भये लौ लीन ॥९३॥
 मो गाली शिशुपाल दई । चक्र कव्यो तव शीशा ॥
 नेज ममानो आपमें । मो जन जीवणके ईश ॥९४॥

होती आई जीवणा । मो होमी निरधार ॥
 ध्रुव प्रलहादे जे भज्यो । मो मोको प्राणाधार ॥९५॥
 काली मर्द्यो कहानवे । इन्द्र उतार्यु मान ॥
 गवण दश शीश छेदे जीवणा । मोई हमारे राम ॥९६॥
 कबु रघुपति कबु यदुपति । कबु शेष मुखासन धाम ॥
 एक रूप सब जीवणा । पण जुदे जुदे नाम ॥९७॥
 देख तमासो जीवणा । बले कीयो काम ॥
 वर्धक कहा सुकृत कीयो । वहा बल चल्यो हराम ॥९८॥
 मो माई हमारा गमजी । जे नाथ्यो काली नाम ॥
 ता चरणसुं जीवणा । सदा रहुं मौभाग ॥९९॥
 अजामेल अपगधी एक । गुर्निका घर कियो वाम ॥
 एमी बहुतकी जीवणा । गम चरणकी आश ॥१००॥
 अजामेल गुनिका तरी । मो जीवण हमारे राम ॥
 चरणे अहिल्या ओधरी । जे मागर सुताको धाम ॥१०१॥
 मात्र शब्द तुम देत हो । धीरज नहि मनमाहि ॥
 इतनी विनती जीवणा । तुम सुनियो हिरदे माहि ॥१०२॥
 अंजनि सुतके ईश पर । जन जीवण बलि जाय ॥
 वाट धाट रक्षा करो । ऐसे रघुपति राय ॥१०३॥
 मो माई हमारे जीवणा । रघुकुल यदुकुल वीर ॥
 सरजु तीरे खेलके । आयो कालिंदी तीर ॥१०४॥
 मूले मीठुं महेलवा । कोप्यो भेष अनंत ॥
 तुं जिन डरपे जीवणा । शिरपर कमला कंथ ॥१०५॥

मान गयो जब मले जीवणा । हरि को नाम हृदय धरो ॥
 आपो धरहर कांपीयो । तब रविसुन तो रीतो पड्यो ॥१०६॥
 गरुड छाँडि में जीवणा । धायो गजकी वहार ॥
 अब शंख चक्र बलदेव सुं । गरुड वाह मंत ढार ॥१०७॥
 हरिजन ऊपर जीवणा । मेरो जीव करुं कुर्खांन ॥
 मूरग मन समजे नहीं । गणन वहालकी हांन ॥१०८॥
 समरण सीता गमको । जे कीजे सो लाभ ॥
 बहुरि न पाईये जीवणा । मानव जनम अवतार ॥१०९॥
 मे शंख चक्र धर्यो जीवणा । सो अपने जनके काज ॥
 ए विश्व कैमे छाँड हूं । युं कहत है त्रिजगज ॥११०॥
 जनम जनी के बीण । जीव करुं कुर्खांन ॥
 वेदोंकुं सदका किया । सो जीवण नाम रहेमान ॥१११॥
 जा चरण कमल वरषता । सदा प्रेम प्रकाश ॥
 सीतापतिकं दास पर । बलि बलि जीवणदास ॥११२॥
 लंका बल्यो सतोगणे । बाल न वांको थाय ॥
 अंजनि मुन कहे जीवणा । रघुनि सदा सहाय ॥११३॥
 वगहरूप भूवर धर्यो । वसुधा कीधी ढार ॥
 दैत्य संकृष्टथी छोडवी । सो जीवण प्राण आधार ॥११४॥
 ॥ इनि श्री दासको अंग ॥

* ॥ अथ श्री विश्वहको अंग ॥~~द्वे~~ ॥ *

विश्वा द्वंकी जीवणा । संत समागम मांहि ॥
 ताके हिरदे हम जायिंगे । जहां दास कबीरकी छाँहि ॥ १ ॥

विरह विमाने जीवणा । चढ़ चढ़े मव मंत ॥
 प्रेम पदमां र्द्दि मल्यो । जहाँ शुर्पति नाम अनंत ॥ २ ॥
 विरह अगन र्द्दि जीवणा । मन मेरे पतंग ॥
 मंत संगत काठी र्द्दि । तब जलत न मोड़या अंग ॥ ३ ॥
 विरह अगनमां जीवणा । दीया प्रेमका तेल ॥
 तचा मांस तन जल गया । रहा शुर्पतिका खेल ॥ ४ ॥
 विरहनी विलखन फिरे । समरे मीता राम ॥
 मंत मंगत बिना जीवणा । जनम गयो वे काम ॥ ५ ॥
 जा घट विरह ना मंचरे । ना घट मदा मशान ॥
 ललो पतो करे जीवणा । तो क्यों ढर्पे जमरण ॥ ६ ॥
 विरह नहिं वैगग नहीं । नहीं प्रेम प्रकाश ॥
 सांग पेहरे जीवणा । ज्यों गतगडां धेर वाम ॥ ७ ॥
 स्वपनान्तरमां सुंदरी । अंग आलिंगन देत ॥
 जब जागी तब जीवणा । लाग रही ताके हेत ॥ ८ ॥
 दर्शन कामण दोहेली । विरहा वैकुण्ठ मांहि ॥
 कोई एक हर्जिन मिले जीवणा । हम बैठे ताकी लांहि ॥ ९ ॥
 पीयु बिना क्यों जीवना । तुम सुनो रे माँईयां मीत ॥
 यों विरहा विलखे जीवणा । ओ राम मनेही कंथ ॥ १० ॥
 विरहा विरहा मवको कहै । कल्पु विरहा का मेधांन ॥
 अंतर गन अंगीछडी । सो जीवण जण प्रमाण ॥ ११ ॥
 विरहा विरहा मवको कहै । कल्पु विरहा मेधांन ॥
 राम कबीरा एक करी । जीवण जन प्रमाण ॥ १२ ॥

विरहा बोरी जीवणा । जहाँ हरिजन तहाँ जाय ॥
 मांड्यां घट खोजन फिरे । रहे गम लौ लाय ॥१३॥
 विरहा बोगी जीवणा । ते नर सकल सुजान ॥
 जा घटमाँ विरहा नहीं । तहाँ भूत प्रेत ममान ॥१४॥
 विरहा बागी जीवणा । आनुर हाल शगैर ॥
 गम कबीग जब मिले । तब पावे मन धोर ॥१५॥

॥ इनि श्री विरहको अंग ॥

* ॥ अथ श्री कालको अंग ॥ ५ ॥ *

काल	कबाडे	नीकमा	।	काटी	मब	मंमार	॥
वेद	कुहाडे	जीवणा	।	सुखन	खाये	फार	॥ १ ॥
पीना	कलेजा	फेफड़ा	।	मवा	गजनल	हाड	॥
सीनापनि	विना	जीवणा	।	मावन	जगायो	काल	॥ २ ॥
शोश	माम	सबते बढा	।	खवावे	लाडु	भान	॥
इननी	बुरी	जीवणा	।	जे जम	ना छोडे	माथ	॥ ३ ॥
हैं ढें	दोगम	मांडीयुं	।	खाना	पीना	मस्त	॥
गमनाम	बिना	जीवणा	।	जम	करेगा	कस्त	॥ ४ ॥
काल	कलेजामाँ	बसे	।	मूरम्ब	जानें	दूर	॥
काल	मीनापनि	जीवणा	।	दोये	रहे	भरपूर	॥ ५ ॥
माला	पहेरे	जीवणा	।	नाये	आनदेवकु	शिश	॥
जमपे	लात	मराय हृ	।	यों कहन	है जगदीश	॥ ६ ॥	
हरमन	फरे	गोमांडी	।	हमही	माधे	योग	॥
घर	छोड़यो	जब जीवणा	।	तब	भया	छनीसे रोग	॥ ७ ॥

काल कुतरीये जीवणा । सब जग खायो फाड ॥
 मुनिजन पर हमीरही । ब्रह्म मेहेलो हाट ॥८॥
 काशी करवत जाइ ले । गाले हिमाले हाड ॥
 बाहर हुतो जीवणा । मो भीतर आय्यो काल ॥९॥
 तरकम बांधे त्रिकम विना । नहीं मतगुरु जाके महाय ॥
 जम किंकर आगे जीवणा । ज्युं गीदड भागा जाय ॥१०॥
 और मार सब सहेल है । पंडिन करो विचार ।
 जन जीवण श्रीमुख कहै । मोटी जमकी मार ॥११॥
 दिवस गमायो भटकते । मोवत गई सब गत ॥
 मानव जनम थो जीवणा । पण गयो भूतांकि माथ ॥१२॥
 मानव जनम मोजे दीयो । जाणु होयगो मेरे दाम ॥
 नर अपराधी जीवणा । मो पञ्चो कालके पाम ॥१३॥
 जमद्वारे जीवणा । गडे निर्घोष निशान ॥
 हरिजन होय के बिचरे । ताकु ए मनमान ॥१४॥
 जीव जाणे में जन उम्मा । मंगत दीनी छोड ॥
 नव जाणेगा जीवणा । जब रवि सुन पाडेगो गल ॥१५॥
 माटीपणु मन मांहे । रहेमे तारु वापडा ॥
 ज्यारे जम ग्रहमे केश । त्यारे भाजमे मघला आफरा ॥१६॥
 प्राढ़ी पाढ़ो न बले । जम मरीखो जोर ॥
 रामनाम भज जीवणा । कटे चोरमी कोड ॥१७॥
 महारु तारु आपणु । कीना घरकी नार ॥
 तबको कलजुग जीवणा । बेगो चूलावार ॥१८॥

कलि आयो तब जाणीये । जब द्वारे आयो बंभ ॥
 मीडे हुनो जीवणा । सो भीनर आयो कर्म ॥१९॥
 * ॥ माखी भेटकी ॥ *

माकुन ब्राह्मण भरडीयो । आनदेवको खाय ॥
 मंत सभासे जीवणा । कहो जे उठी जाय ॥२०॥
 * ॥ माखी श्रीमुखकी ॥ *

जुठन खावे जगतकी । मंत सभामां आय ॥
 गविसुन आगे जीवणा । निर्मे चासडां खाय ॥२१॥
 जहां जहां पंडीन पावधरे । तहां तहां जमका वास ॥
 मंत पाव धरे जीवणा । तहां गम अविनाश ॥२२॥
 * ॥ माखी भेटकी ॥ *

भाँड भवाइ धुमडी । नगर नायका गान ॥
 ए नाद सुन गचे जीवणा । ते गविसुनके निज प्राण ॥२३॥
 पंडिन जोषी वेदगी । कविताने अरु सिद्ध ॥
 ते गविसुन आपे जीवणा । धर्म पुरीमां निध ॥२४॥
 * ॥ माखी श्रीमुखकी ॥ *

कली आयो तब जाणीये । वाको ए मेघाण ॥
 नन मन अस्थी जीवणा । पीछे हुने प्राण ॥२५॥
 शगीर पाणीको बुदबुदो । फुटन ना लगे वार ॥
 गम भक्तिकु जीवणा । उधारो केमो गमार ॥२६॥
 हाथ ताली देह जीवणा । गयो तरुणापो चाल ॥
 पाव पलकके पांच दिन । तु वेगे राम संभाल ॥२७॥

बूढ़ापा आयो जीवणा । श्वेत भये शिर केश ॥
 तरुणापो यूं कहत है । हमकु दीयो विदेश ॥२८॥
 बूढ़ापो आयो जीवणा । कंपन लाघ्यो शिश ॥
 अंतरथामी यूं कहत है । हम समरे नहीं जगदीश ॥२९॥
 बूढ़ापो आयो जीवणा । गलने लाघ्यो नाक ॥
 पांच लोकमां पत गइ । पीछे नार देखावे काख ॥३०॥
 बूढ़ा भगतकु जीवणा । मत कोइ पतिआय ॥
 नेन बेन श्रवण थके । अब केसे रघुराय ॥३१॥
 तरुणापे हरि ना भज्या । बूढ़ापे केसी आश ॥
 सरोवर सूको जीवणा । क्यों कीचड मीटे प्यास ॥३२॥
 बाल बूढ़ापो जीवणा । तरुणापो दे बहाय ॥
 अकबक बांचे सदा । छांडी रघुपति राय ॥३३॥
 माला पहरी जीवणा । स्वामी होनेकु तैयार ॥
 नर जाने कर्म छेदहू । पण काल पसारे दाढ ॥३४॥
 स्वामी पणु सलक्या करे । हाँस रही मन मांही ॥
 नाठो न उगरे जीवणा । सुमेरु केरी छांही ॥३५॥
 तेरा कोइ नहीं जीवणा । जब जम पाडेगो रोल ॥
 बेटा बेटी साहेलीयाँ + सब रहेंगे अंखीया चोल ॥३६॥
 गोबर चाटे जगतको । दुनीयाँ देन सरप ॥
 संत निंद्या करी जीवणा । कोण पूखलो पाप ॥३७॥
 जल बल कोयला होयगा । कूटे पीटे रांड ॥
 जनम जनम ए जीवणा । हरि बिना होयगो भांड ॥३८॥

नवधा भक्ति नित नित करे । आतम लगे अखण्ड ॥
 जम द्वारे जीवणा । मार करे स्वण्ड स्वण्ड ॥३९॥
 प्रेम उरे नही जीवणा । जहां लग आतम अखण्ड ॥
 ज्युं पथ माहे कांजी भइ । मार करे स्वण्ड स्वण्ड ॥४०॥
 जम द्वारे जीवणा । सबका चूके न्याय ॥
 हगिजन देखी कम कमे । मौ ममज जनकको दाह ॥४१॥
 गट बागी जब विठ्ठले । दधि खायो सब लूट ॥
 जनम मीठ्यो नब जीवणा । नहां काल ख्यो शिर कूट ॥४२॥
 धरम पुरीमां ब्रह्मपरे । महाजन दीयो चढाय ॥
 पहेलो पंडीन जीवणा । पीछे पोते जाय ॥४३॥
 मात पिना मब जीवणा । मिल कर करे कलोल ॥
 को काहुका ना होयसा । जब जम पाढेगो रोल ॥४४॥
 अपनी अपनी जानमां । सब कोइ भये लौ लीन ॥
 आपो न छूटे जीवणा । ज्यूं पाणी को मीन ॥४५॥
 अपनी अपनी जाणमां । सबहा बेठे मीर ॥
 गमनाम बिन जीवणा । जम द्वारे भइ भीर ॥४६॥
 हगि हीगकु छांडके । काच कोहीको धाय ॥
 अन्ते पछावे जीवणा । जम धसेटे जाय ॥४७॥
 जरा कुती जावन शशा । काल आहेडी लहार ॥
 मीतापति बिना जीवणा । सब जग लीना मार ॥४८॥
 जंत्र बजायो जीवणा । बोले एके रग ॥
 अजामेल गुणका तरी । नहां काल ख्या शिर फोड ॥४९॥

मूले मीठे मेलवा । कोप्यो भेख अनंत ॥
 तु जीन दृप्ये जीवणा । शिरपर कमला कंथ ॥५०॥
 जगत चवेणो कालको । खायो वण मुख दाढ ॥
 हरिजन उबरे जीवणा । ते केवल नाम आधार ॥५१॥
 मब जग लूट्यो जीवणा । भइ पंडितकी धाड ॥
 लाब चोगसीमां ले गये । ना भइ बूम ने वार ॥५२॥
 हमही लूटे जीवणा । वण विवेकी साध ॥
 वाट छोड़ी उवाटे चलो । तब सनगुरुये लीनी दाद ॥५३॥
 पोथी मब परपंचकी । अक्षर लखे बनाय ॥
 प्रेम अक्षर विना जीवणा । जम घमेटे जाय ॥५४॥
 जीत तीतथे मारीयो । जेम धणी वहोणो ढोर ॥
 सीतापनि विना जीवणा । जम पाडेगो रोल ॥५५॥
 पत फाडु खन पण । अवर भोगवी छुटमे ॥
 जन जीवण जाणी कहु । पण आखर जमर लुटमे ॥५६॥
 ॥ इनि श्री कालको अंग ॥

* ॥ अथ श्री सूराको अंग ॥६॥ *

सूरामे सूरे शामलो । गोवाले गोवाल ॥
 लीला सलुणो जीवणा । कालमां महाकाल ॥ १ ॥
 अंध सूरको शामलो । मीरांको मीरलाल ॥
 धनुषधारी केवीस्को । सो जीवण प्राण आधार ॥ २ ॥
 खाली भडाके जीवणा । कायर भागे जाय ॥
 सूरा खेत न छांडसी । जो दुक दुक होजाय ॥ ३ ॥

खाली तुपक जीवणा । बहोत करे अवाज ॥
 मुरु शब्द गोली विना । तो क्यों डगपे जमगज ॥४॥
 सूर घेर वधामणा । कायर कागा रेल ॥
 सूर सनमुख जीवणा । कायर चले मुख मोड ॥५॥
 सूर वीर्को जीवणा । मीधन खावे मांस ॥
 विहाश शोषे शरीरकु । जे हाँके निजदाम ॥६॥
 बढे विकागे जीवणा । बो तो सूर नाहि ॥
 शिश पडे सामा धमे । मो सूर सत भाइ ॥७॥
 सूर सनमुख जीवणा । टुक टुक होय जाय ॥
 शिश धड दोनो लडे । मो सूर सत भाय ॥८॥
 धनुष बान धीरज लीये । इच्छा आहुद काहान ॥
 जन जीवन शिर उपरे । माचा गम रहेमान ॥९॥
 अब एमी करु जीवणा । दुनीयासु विरोध ॥
 आन देवकु अनुमरे । ताकी काढु सोज ॥१०॥
 माई मलुणो गमजी । रहो रुदेसु लाग ॥
 आनदेव शिर जीवणा । मस्तक मुकु आग ॥११॥
 पंथ पुरातन जीवणा । मतगुरु दीयो बताय ॥
 आनदेव शिर खामडो । साचे रघुपतिगय ॥१२॥
 बाल बृदकुं जीवणा । गम भजनकी आश ॥
 सूखवीर भागी चले । दांते पकडे घास ॥१३॥
 छमीयारे सब जगतमां । पढदे बोले बात ॥
 राम भगतकु जीवणा । शिर लगावे लात ॥१४॥

कूक पडि जब जीवणा । शस्त्र धरे मब सूर ॥
 कुंवारिया रण जे बरे । ताके मोहे नूर ॥१५॥
 धरम धोरी कबीरजी । ओर अपने उनमान ॥
 जनक विदेही ज्यूं जीवणा । ओधरवा चारे खाण ॥१६॥
 धरम धोरी कबीरजी । खुंती काल्याने बली काढ़मे ॥
 जोसे तमासो गमजी । कोट ब्रह्माण्डने तासे ॥१७॥
 गम रुपति जीवणा । माथे लक्षण वीर ॥
 भीड पडे जब भगनने । तारे सूखीर रुवीर ॥१८॥
 गम रक्षा भइ जीवणा । जे समरे रुपतिराय ॥
 अंजनी सुत ओर लक्षण । सो मदा हमारे महाय ॥१९॥
 सूरधीर रुवीर मदा । मो जन रक्षाके काज ॥
 क्युं न भजे हरि जीवणा । जीणे दीयो विभीषण रज ॥२०॥
 बोहोर न पावे जीवणा । मानव जनमकी मोज ॥
 सूरा होयतो करीले । मतगुरु शब्दकी खोज ॥२१॥
 सूरा रण चढे जीवणा । पीछे न देखे पंथ ॥
 धीक पञ्चो ते मानवी । जे लाजे मोहे कंथ ॥२२॥
 मोज मानव पायो जीवणा । बोहोरन एमो दाव ॥
 खेलन हारा खेलीये । जे गडे निशाने घाव ॥२३॥
 कायर कम कमे जीवणा । जोइ सूराका संग्राम ॥
 ले हथवा सारण चढे । तो गीझ देयेगे राम ॥२४॥
 कायर कमकमे जीवणा । सरे न एका काम ॥
 खेतन छांडे सूरमा । जहाँ रमे कबीरा राम ॥२५॥

सूरा होयनो जीवणा । करे इन्द्रीसु शूङ्ग ॥
 कोगट हसावे पीवने । फट पापी अबूङ्ग ॥२६॥
 ॥ इति श्री सूरगको अंग ॥

* ॥ अथ श्री प्रेमको अंग ॥ ७ ॥ *

प्रेम रूप कबीरजी । आतम रघुपति नाम ॥
 जन तखेकुं जीवणा । कलि कियो विश्रास ॥ १ ॥
 मधुण रघुपति जीवणा । निर्गुण दास कबीर ॥
 ओ विश्वकुं पोषना । ओ गुण भजन शरीर ॥ २ ॥
 रूप रेख कलु वपु नहीं । ऐमे रघुपति राय ॥
 ऐसे हरिजन जीवणा । जे नाम निर्मल जश गाय ॥ ३ ॥
 निज कर्म निज धर्म है । निज रूप निज नाम ॥
 मोई निज जन जीवणा । जे समरे मीता राम ॥ ४ ॥
 दोई बगवर जीवणा । भगवराज रणधीर ॥
 काशी वासी कबीरजी । सम्झू तीर रघुवीर ॥ ५ ॥
 दोय बरावर जीवणा । भगवराज भगव भीर ॥
 तात पावन कीयो रघुपति । उहाँ रामानंद कबीर ॥ ६ ॥
 त्यागे त्यागी रघुनाथजी । भोगे त्यागी श्याम ॥
 ए शुगत बनाई जीवणा । एक रूप दो नाम ॥ ७ ॥
 जग तखेकुं जीवणा । कहो कबीरे राम ॥
 रामानंदके शिष्यमां । कबीर राम निज धाम ॥ ८ ॥
 त्रहे मूरत काशीमां जीवणा । शिव कबीर रामानंद ॥
 ए तीनूं उपामीया । जे गोकुलमां गोविंद ॥ ९ ॥

गोकुलमांहि गोवालियो । जे शिव शक्ति को ध्यान ॥
 ताकुं ध्यावत जे जीवणा । सो सजन परमाण ॥१०॥
 कढी काहानड भावती । बहोत खाई अधाय ॥
 दाम मीरांपे जीवणा । दूसरी लेई मंगाय ॥११॥
 छार छवीले जीवणा । बहोत पीनी अधाय ॥
 वे बलथे गिरि कर धर्यो । मार्यो मथुरां गय ॥१२॥
 तेज पुंज प्रकाशमां । पहुंचे दास कबीर ॥
 सो साईं हमारे जीवणा । जे सीता पति खुबीर ॥१३॥
 अक्षर पडे नहीं जीवणा । अकल अविनाशी रूप ॥
 सो गऊ चगवे नंदकी । जे दशस्थ कुल बढभूप ॥१४॥
 अक्षर पडे नहीं जीवणा । अदबद एक अरूप ॥
 उनपत परलो जहाँ जई समे । सो सीतापतिको रूप ॥१५॥
 पुष्प वासथी पातलो । ऐसो प्रेम प्रकाश ॥
 रूप रेख नहीं जीवणा । जहाँ दर्शन पावे दास ॥१६॥
 प्रेम रस पीवे गोपिका । सो हरिमां रही समाय ॥
 सो रस गावे हरिजना । अब जीवण कहा कहेवाय ॥१७॥
 बार मुक्ति मीडे भई । जहाँ प्रेम भक्ति प्रकाश ॥
 जीवन मुक्त जन जीवणा । जहाँ सनगुरु शब्द विश्वास ॥१८॥
 ऐसा अदबद जन कथो । जहाँ नहीं रूप औ नाम ।
 सीतापति बिना जीवणा । ए सब जम को धाम ॥१९॥
 औघट घांटी जीवणा । बहुत कही निखार ॥
 पांव न टीके पपीलका । तहाँ क्यों कर पावे बार ॥२०॥

अनहृद शब्द जहाँ उनमुनी । मदा प्रेम प्रकाश ॥
 सीनापतिके रूप पर । बल बल जीवणदास ॥२१॥
 गमावतारे वृश्च नीमन्मो । कृष्णवतारे मफल फलयो ॥
 मो फल जुलाह च विषो । नाम बूद जीवण गलयो ॥२२॥
 प्रेम स्स पीवे जीवणा । शिर माटेका काम ॥
 शेष महेश पद अप्यने । निशदिन समरे राम ॥२३॥
 सुर मुनि जन जीवणा । प्रेम पीवनकी आश ॥
 शगीर सांसो मिटो नहीं । ताथे गये निराश ॥२४॥
 सीनापति के रूपपर । नन मन वारूं प्राण ॥
 पलक पहलो जीवणा । छोडावे चारो खांण ॥२५॥
 मंशय मिटे जीवणा । जे समरे सीता राम ॥
 प्रेम स्स पीवे जीवणा । संन जन ताको नाम ॥२६॥
 प्रेम नेम हुदे नहीं । और वाणी वचन अनेक ॥
 लोहा सांध्यो जीवणा । ज्यौं लाकड मारी मेख ॥२७॥
 प्रेम न पीनो गोपिका । कलुक शंक रही मनमाँहि ॥
 सुर मुनि देखन लागे जीवणा । वृत्ती लागी ताकी छाँहि ॥२८॥
 दहूं दिश उमंगी जीवणा । श्याम घटा घनघोर ॥
 प्रेम मगन गोपी भई । मो निरखन नंद किशोर ॥२९॥
 जैमे जलधर उमंग्यो । बढन पैया प्यास ॥
 एमे हरिजन आये जीवणा । प्रेम भक्ति प्रकाश ॥३०॥
 रूप नाम दोनूँ मीटे । ख्या प्रेम प्रकाश ॥
 काई एक जाने जीवणा । निज दामनके दास ॥३१॥

सगुण भक्तिमां जीवणा । निर्गुण रघुपति नाम ।
 निर्गुण सगुण मिट गया । र्ह्या प्रेम पुंज मुखधाम ॥३२॥
 नामे आप मिश्रय के । ले अपनो करी दाम ।
 यौं सीतापति कहै जीवणा । जाके मेरी आश ॥३३॥
 सूत पुराणी जीवणा । संजय शुकदेव व्यास ॥
 ताके शिरपर गोवालनी । जहां प्रेम भक्ति प्रकाश ॥३४॥
 सकर पाकी जीवणा । दूधे उच्चा मेह ॥
 कर्म धर्म मब थक रहा । लगा हरिजन सुं नेह ॥३५॥
 सकर मलुणो नामको । प्रेम प्रीति अवधार ॥
 जीवण ऐसो पाईये । जो सदगुरु होय कृपाल ॥३६॥
 जीवण जन जग बाहेग । जहां दीमे हरिका दास ॥
 प्रेम प्रीति अंतर बसे । हरि बिना और न आश ॥३७॥
 कलि कालमां जीवणा । कीयो नाम प्रवेश ।
 अजामेल गुनिका नगी । मब मननको उपदेश ॥३८॥
 जन जीवणकी बीनती । तुम मुनियो कमलाकंत ॥
 नाम भरोमे ताहेरे । गय गणे सब संन ॥३९॥
 ताल टचूके जीवणा । कोटि कर्म लग जाय ॥
 हरिजन बजावे प्रेममूँ । और न दूजो भाय ॥४०॥
 रूप रेख नहीं जीवणा । ऐसो है रघुवीर ॥
 सीतापति तो आदि थे । अब भये दाम कवीर ॥४१॥
 पूजा प्रेम न छांडीये । यौं कहै जीवण दाम ॥
 आनन्देव जंबुक है । बेठो मिंहके पास ॥४२॥

ब्रह्माण्ड भोजन पाल्या । गमे कीयो पमाव ॥
 ब्रह्मा शंकर छूठे पडे जीवणा । हरिजन दीये बताय ॥४३॥
 व्यास कुलीन शोटिक मिले । पंडित कोटि पचीस ॥
 सुपच भर्गतकी पनहीपर । नोले न वाको शीश ॥४४॥
 प्रेम स्वरूपी जन विना । स्वुपनि नांहि अघाय ॥
 पांडव जगने जीवणा । सुपच दीये बताय ॥४५॥
 प्रेम प्रीनि विना जोवणा । भक्ति न आवे हाथ ॥
 दुनीया मव भूली भमे । बावल देवी वाथ ॥४६॥
 प्रेम विना हरि ना मिले । जो जो मन विचार ॥
 देवल दीपक नहीं जीवणा । नो क्यों कर मिटे अंधार ॥४७॥
 प्रेम प्रेम सब कहै जोवणा । कछु प्रेम तणां सेधांन ॥
 मेहमंता घूमन रहै । गुरु शरणा निशांन ॥४८॥
 प्रेम प्रीते जीवणा । कीयो विदूर घेर भोजन ॥
 शवरी भक्ति भली करी । बोर पगसां बन ॥४९॥
 प्रेम प्रीते जीवणा । बहुतेक मही उपवास ॥
 भगवाढां घेर भावनो । पीधी पियारो छाश ॥५०॥
 प्रेम सम पीयो जीवणा । धन गोकुलकी नार ॥
 वृद्धावनमें गोपीका । नाचे नंद कुमार ॥५१॥
 प्रेम पीवनकुं जीवणा । मुरमुनि अंतरिक्ष जोय ॥
 मानव मौज पाये विना । ताथे जुग जुग रोय ॥५२॥
 प्रेम पीवनकुं जीवणा । ब्रह्मा कीयो विचार ॥
 कुल करनी कछु ना मिटी । गयो जनम सा हार ॥५३॥

प्रेम प्रीनमें जीवणा । वृष भान सुनाके माथ ॥
 आपे रहे आधीन होई । चित्त चित्त दीनो हाथ ॥५४॥
 सब सखियनमां जीवणा । हरि स्वयो गम विलाम ॥
 मन वांछित फलही दीयो । पूरी अबला आश ॥५५॥
 बृंदावनकी मौजमां । ब्रह्मा गये निराश ॥
 अकथ कहानी जीवणा । कहाँ हरिजनकी आश ॥५६॥
 श्याम सखा जहाँ जीवणा । नहाँ ऐसो अदबद खेल ॥
 सनकादिक भूले पडे । गये निमासा मेहेल ॥५७॥
 ज्ञान कथेसो बावग । मुक्ति मागे सो मृढ ॥
 प्रेम भक्ति विना जीवणा । जमकी फांसी प्रौढ ॥५८॥
 नुगग मिल कर जीवणा । करे प्रेम विचार ॥
 आपे करता हो गये । रुठे नंद कुमार ॥५९॥
 प्रेम भक्ति करे जीवणा । मैं नाके हाथ बेकाव ॥
 तन मन मेरो ते सदा । जिन खेंचे तित जाव ॥६०॥
 जे जन बांधे जीवणा । प्रेम भक्ति रणधीर ॥
 ता जनको आधीन हूँ । यों कहन हैं बलवीर ॥६१॥
 प्रेम रूप गोपी भई । जीवण नाकी लहार ॥
 सदगुरुदाम गोपालजी । संब मनके उपकार ॥६२॥
 गब्बो गयंद मन जीवणा । जहाँ श्याम मखा बलवीर ॥
 दोहरी तोहरी चोहरी । पडी प्रेम जंजीर ॥६३॥
 प्रेमरूप कवीरजी । जीवण गयो गरकाय ॥
 नाम रूप दोनो मिटे । अकथ कथ्यो न जाय ॥६४॥
 ॥ इति श्री प्रेमको अंग ॥

* ॥ अथ श्री पतिव्रताको अंग ॥ ८ ॥ *

रज वीर्जथी ऊपन्यो । उदर रह्यो दश मास ॥
 चूँची ज चाली जीवणा । निज भगत गेहीदाम ॥ १ ॥
 सब नारी व्यभिचारिणी । जे समरे मीनाराम ॥
 पतिव्रता ते जीवणा । जे नाम रूप निज धाम ॥ २ ॥
 कपट भेष कोली कोयो । नृप कन्या के काज ॥
 वे नार बड भागिनी जीवणा । जे सामे दीयो सुहाग ॥ ३ ॥
 पतिव्रता मेली भली । काली कुचील कुरूप ॥
 पतिव्रता पर जीवणा । वारूं कोटि स्वरूप ॥ ४ ॥
 पतिव्रता फाटे लूगडे । कंठ न घाली पोत ॥
 सब सखियनमां जीवणा । जेम उडघनमें शशि जोत ॥ ५ ॥
 पतिकी गत जानें नहिं जीवणा । सो रहे दुहागन दूर ॥
 नामें सखी सुहागणी । सो रहस्यी सदा हजूर ॥ ६ ॥
 बगडे ताको जीवणा । जे आन देवको खाय ॥
 यदपि हरि ना भजे । पण आशा अनतन जाय ॥ ७ ॥
 पतिव्रता पर जीवणा । मैं वारु तन मन प्राण ॥
 पीयुकी पत सदा रहे । सो निश्चय गत निशान ॥ ८ ॥
 पतिव्रता को एक जीवणा । व्यभिचारीणी अनेक ॥
 ओ रांटी गेहण गक्षमी । जीनकुं नहीं पीयुकी टेक ॥ ९ ॥
 पतिव्रता मिले जो जीवणा । मैं रहु ताकी लहार ॥
 लक्ष्मण सहित संग जानकी । सदा उनकी अनुहार ॥ १० ॥

॥ इनि श्री पतिव्रताको अंग ॥

* ॥ अथ श्री उनदेशको अंग ॥ ९ ॥ *

बल मनुवा उन देशडे । जहाँ सीतापनि रघुवीर ॥
 पुन्य पवित्र जहाँ जीवणा । आयो कालिन्दी नीर ॥ १ ॥
 सुख ऊडानी गगन पर । उमडी जा उस धाम ॥
 जहाँ संतसमागम जीवणा । तहाँ सीतापनिको नाम ॥ २ ॥
 सुख ऊडानी गगन पर । लोड चली ब्रह्माण्ड ॥
 सीतापनिके रूप पर । जीवण जन मकरंद ॥ ३ ॥
 मोज मेहेगमन जीवणा । उल्ल्लो मिथु क्षीर ।
 मीठे खारे मेटीयो । ज्यों दुधे धोयो नीर ॥ ४ ॥
 गोकी रही नही जीवणा । वाणी उमंगी आय ॥
 सीतापनि रघुनाथको । नाम निरमल यश गाय ॥ ५ ॥
 बल मनुवा उन देशडे । जहाँ गधा गम विलास ॥
 संत संगत विना जीवणा । सब दिन गये उदाम ॥ ६ ॥
 बल मनुवा उन देशडे । जहाँ वेण वगाडे शाम ॥
 जीवण जुगते पाइये । वृषभान मुनाको धाम ॥ ७ ॥
 हम आये उन देशथी । सब संतनके काज ॥
 कोइ जुगत न जाने जीवणा । केमे मिले ब्रिजमज ॥ ८ ॥
 हम आये उन देशथी । ह्लि जानो उस देश ॥
 एह जुगत बनाइ जीवणा । सब संतनके उपदेश ॥ ९ ॥
 उन देशकी जीवणा । मैं कहा कहु समझाय ॥
 कह्या कोइ माने नही । सब दुनीया भ्रम भुलाय ॥ १० ॥
 ॥ इनि श्री उनदेशको अंग ॥

* ॥ अथ श्री भेषको अंग ॥ १० ॥ *

माला तिलक तो जीवणा । ए विष्णुका भेष ॥
 शरीरे मोभा देखीये । पण हरि विना पूर्ण प्रेत ॥ १ ॥
 सावर माथे सिंगडां । एमो माला भेष ॥
 झुझ केमो तदां जीवणा । जदां रजबंनी नही रेष ॥ २ ॥
 माला भरोंसे जीवणा । गयो जनमारो बांझ ॥
 मीतापति रघुनाथको । स्वप्ने नही अवाज ॥ ३ ॥
 हाथ काढ ता दासका । जो माला बांधे मांड ॥
 गमनाम विन जीवणा । भेष कीयो सब भांड ॥ ४ ॥
 माला पहरी जीवणा । मनमां हरस्वे मूरखो ॥
 ए गतरांडानी नार । फोगट देवे फडको ॥ ५ ॥
 लंबी जपमाला जीवणा । दुनीयाकुं देखलाय ॥
 अरध नामसु काम है । जे मतगुरु दीया बताय ॥ ६ ॥
 तुलसी तिलक भरोंसे नरे । ते जुग तो कोइ और ॥
 अब कलजुग कहे सुन जीवणा । मेरे नाम विना नही ठोर ॥ ७ ॥
 पाणी पहेले जीवणा । तुं मोजा मत उनार ॥
 गम नाम रुदे नही । तो क्युं छूटे संसार ॥ ८ ॥
 पारम विना परसे नही । ज्युं लोहाकुं पाधाण ॥
 मीतापति विना जीवणा । फोगट भेष और ज्ञान ॥ ९ ॥
 भगल विद्या सब भेषमां । आप कहावे दास ॥
 ब्रह्मादिक स्वेले जीवणा । अंते गये निराश ॥ १० ॥

तक त्रेवड त्रिकम विना । केसो जोग वैगग ॥
 ओ नार दोहागण जीवणा । जे शामे दीयो सोहाग ॥११॥
 वांश पीयारे पुत्रकुं । हमो हमी मंगल गाय ॥
 मान पुत्रकी जीवणा । मुख मुंदी मुसकाय ॥१२॥
 कोण कर्मथे जीवणा । वांश भइ जे नार ॥
 जसोदाये जायो दावडो । मंगल ना माये द्वार ॥१३॥
 भेष बनाया भगतका । गहि नाम परनीत ॥
 वांश मंगल ज्यों जावणा । आन पुत्र परनीत ॥१४॥
 साखी शब्द सबको करे । नाहि न रघुपति नाम ॥
 होंस घेवळकी जीवणा । पण गांड न कोडी दाम ॥१५॥
 थागल थीगल सब कोई करे । दो दो अक्षर जोड ॥
 छुंगरी वणझे जीवणा । क्यों पाय लघ कोड ॥१६॥
 मन गुरु चरणे अपीये । तन है कुल पछ मांहि ॥
 ब्रह्मादिक भुले जीवणा । सो हरिजन कहावे नाहि ॥१७॥
 एसो अजर है जीवणा । जान पांत कुल जाय ॥
 और बातनकी बात है । ब्रह्मादिक चले ठगाय ॥१८॥
 उनी पुनी जीवणा । सब कोइ धरे वैगग ॥
 जैसे के तैसे भये । मुख मूँछ शिर पाघ ॥१९॥
 कौस्तुभ मणी कोटे धरे । विच विच कुकर हाड ॥
 राम भक्तिमां जीवणा । आनदेव संसार ॥२०॥
 वैरागी विवेक विना । मागे धर धर भीख ॥
 मखस हरि दे जीवणा । जो माने गुरुकी शीख ॥२१॥

जुठन चाटे जगतकी । मनमां धरे अभिमान ॥
 गुरु कृषा नहीं जीवणा । जेम घर घर भटके श्वान ॥२२॥
 मन मुँड्यो नहीं जीवणा । तो शिर मुँडे का होय ॥
 गतरांडा मा देखीये । नहीं पुरुष नहीं जोय ॥२३॥
 मुँड मुँडाये कहा भयो । कहा छोडावे केश ॥
 आपो ना मीटे जीवणा । बिना सनगुरु उदेश ॥२४॥
 निलक धरे दे बंदगी । लाल छडीले हाथ ॥
 ए जम गोधाल मुन जीवणा । ले चलो सब साथ ॥२५॥
 जो नीमाला पुछका । तो नीमाला मुछ ॥
 गमनाम बिना जीवणा । एमी मोहोडे मुछ ॥२६॥
 गमनाम सब को कहे । अपने अपने उनमान ॥
 आपो न मेटे जीवणा । क्युं छुटे चारे खान ॥२७॥
 गोरख सब जोगी कहे । संन्यासी कहे दत्त ॥
 आतम धरम बिन जीवणा । दोये वान गलत ॥२८॥
 दत्त दिगम्बरे कब कद्यो । जे बांधो तरकस तीर ॥
 कलि कालमां जीवणा । भेष भयो बेपीर ॥२९॥
 मांम गली गली भूमी पड्हे । त्वचा हाड तन जाय ॥
 मन गले बिन जीवणा । खुपनि ना होय सहाय ॥३०॥
 मन ममकरी छांड दे । सनगुरु राय सुजान ॥
 भूत प्रेत कहा जीवणा । छोडावे जम गन ॥३१॥

॥ इति श्री भेषको अंग ॥

* ॥ अथ श्री आनदेवको अंग ॥ ११ ॥ *

कल्पवृक्ष तले बैठके । फोड हिंगों खाय ॥
 गुरु मुख होकर जीवणा । आनदेवकुं धाय ॥ १ ॥
 लडमडनो लाकड जीवणा । लागे गुडा मांहि ॥
 हरिके दाम कहायके । औंग आनदेवकुं धाय ॥ २ ॥
 गमभक्तिमां जीवणा । बली आनदेव उपास ॥
 खीर खानेकी होम है । पण भेले दुध और छाम ॥ ३ ॥
 आनदेव बगवर जीवणा । जे समरे सीतागम ॥
 मुगनफल व देत है । नहीं चरण कमल विश्राम ॥ ४ ॥
 मिंघ शार्दूल जीवणा । एमे है खुबोर ॥
 आनदेव जंबूक है । नर समस्त है बेपीर ॥ ५ ॥
 गोल मकोडो जीवणा । एमो ए संसार ॥
 आनदेवने अनुपरे । नजी जनकमुता भग्थार ॥ ६ ॥
 गाडे पाडो जीवणा । बांधे बने ना बीर ॥
 पायो चाहे परमपद । करे आनदेवमु शिर ॥ ७ ॥
 जावण जन जग बाहेग । जे समरे सीतागम ॥
 ओ भीसके मानवी । जे मुख दादुरको धाम ॥ ८ ॥
 हरि मे हाथी छांडके । गधे चढे गमार ॥
 आनदेवने अनुपरे जीवणा । एमो ए मंमार ॥ ९ ॥
 बाणी विवरी जीवणा । गई दशे दिश छूट ॥
 सीतापति खुनाथ विना । ए भई जमकी लूट ॥ १० ॥

मग्मती विचारी कहा करे । नहीं गुस्सवचन प्रमाण ॥
 मीतापनि बिना जीवणा । भटके चारे लाण ॥११॥
 मर्दो वाल्यो जीवणा । जो कर आनदेवकी मेव ॥
 मनयुरु मत तत्व कह्यो । जे माचे खुपनि देव ॥१२॥
 नाक लीटी अब जीवणा । जो कर एमो काम ॥
 मीतापनिकुं त्यागके । लेउ आनदेवको नाम ॥१३॥
 नाक लीटी अब जीवणा । जो आनदेवकुं धाय ॥
 मुग्धाकुं माटी करे । छांडी खुपनि गय ॥१४॥
 मूलापणी रुंई झाडमे । यो आनदेवकी मेव ॥
 भूमको लीपण जीवणा । यो साख कहे सुकदेव ॥१५॥
 माट ढुंगाणी जीवणा । हरि बिना कोइ नहीं और ॥
 आनदेव अप्ये थोर है । हरि माथेका मौर ॥१६॥
 नन मन अप्ये मंतकुं । आनदेव मन मांहि ॥
 मूली सभा जीवणा । बेडे कल्याणपकी छांहि ॥१७॥
 चोओरे पाटु जीवणा । एमो ए मंसार ॥
 आनदेवकुं अनुमरे । तजो जनक सुता शणगर ॥१८॥
 भर्डो भर्डी जीवणा । आनदेवको धाय ॥
 क्रिया पहोंची धरमपुरी । नेट नस्क पहोंचाय ॥१९॥
 चाटी चाटी जीवणा । धाय आनदेवकी जृउ ॥
 जीव जनन बहोत करे । पण शामे दीनी पूठ ॥२०॥
 काम हो दीयो जीवणा । अब ला हस्को नाम ॥
 आनदेव सर्व कर्म है । हरिजन बिना नहीं अम ॥२१॥

व्याजे वधारी हृगली । ऐसो यह संमार ॥
 विप्र विवेकी जीवणा । ते वेद हिते विचार ॥२२॥
 अब ऐसी करु जीवणा । दुनीयासु विरोध ॥
 आनदेवकुं अनुसरे । ताकी काहूं स्वोज ॥२३॥
 साँई सलुणो गमजी । रथो रुद्मु लाग ॥
 आनदेव शिर जीवणा । मस्तक मुकु आग ॥२४॥
 पंथ पुगनन जीवणा । मतगुरु दीयो बताय ॥
 आनदेव शिर स्वामडो । माचे रघुपति राय ॥२५॥
 आनदेव शिर स्वामडा । मेवकके मुख लात ॥
 रामनाम विना जीवणा । जो बोले दुजी बात ॥२६॥
 बाये सखे सरे जीवणा । तो बहार भोम कोण जाय ॥
 आनदेव जो मुगल आपे तो । सीतापतिकुं कोण धाय ॥२७॥

॥ इनि श्री आनदेवको अंग ॥

* ॥ अथ श्री भ्रम विघ्वंसको अंग ॥१२॥ *

अटंकी मूरत जीवणा । मेवी लेजो मन ॥
 टंकी पृठे तरफडे । ते वण कृपा भगवंत ॥ १ ॥
 देवल माचो जीवणा । जे टांके ताको स्थाय ॥
 पायो दई पेडी घढी । सब जग दीयो भरमाय ॥ २ ॥
 देवल देखी जीवणा । भरम पड़यो मन मांहि ॥
 शीश दीयो भृपनी भयो । तो मुक्ति है उन मांहि ॥ ३ ॥
 शीश चढायो शिवकुं । दीयो सो लंकको राज ॥
 नरक संपूरण जीवणा । बिन समरे ब्रिजराज ॥ ४ ॥

देवल देखी थरहयो । पूजे पहेली बार ॥
 जीवण भीतर बेटो पंडीनो । तीणे लगाया काल ॥५॥
 देवल धंटा ओ बाजीया । पाणी और पाषाण ॥
 पंडीन शिकागी जीवणा । मारे कर्मके बांण ॥६॥
 जहाँ जहाँ पंडीन पांव धरे । तहाँ तहाँ जमका वास ॥
 संत पांव धरे जीवणा । तहाँ सीतापति अविनाश ॥७॥
 शालींगरामकुं मेवतां । हरिजन नहिं अधाय ॥
 संत तृपत नहीं जीवणा । सब सेवा निष्कल जाय ॥८॥
 शालींगराम मेवु नहीं । नहीं स्वरूप सुं काम ॥
 मनगुरु ममझायो जीवणा । सीतापतिको नाम ॥९॥
 शालिंगराम हरिके जना । जाके गुरु मुख एक ॥
 और भेष भांडीयो जीवणा । जामे छिद्र अनेक ॥१०॥
 पूछ पाणी लियो जीवणा । सब तीरथ दीये बहाय ॥
 विप्र विवेकी ले रहे । सब जग दीया भरमाय ॥११॥
 आतम धर्म विना आंधलो । फरि फरि गोथां खाय ॥
 तीरथ ब्रत करी जीवणा । जमके दारे जाय ॥१२॥
 काशी चली कैलामकुं । त्रीवेणी गई ब्रूट ॥
 कलि कालमां जीवणा । भई गमनामकी लूट ॥१३॥
 काशी चली स्वर्गकुं । बहुत सहो हम मार ॥
 अब रह न पावे जीवणा । कबीर भये अवतार ॥१४॥
 काशी कहे सुन जीवणा । नहिं कलजुग मेरो काम ॥
 मुक्ति क्षेत्र मगहर भयो । जहाँ कबीर कियो विश्राम ॥१५॥

गंगा भरोसे जीवणा । भूल्यो मब संमार ॥
 जा चरणसे ऊपनी । सो ममयो नहिं एकवार ॥१६॥
 हरि चरणथी ऊपनी । पड़ो शिव शिग धार ॥
 भृत्यु लोके आवी जीवणा । भूल्या मब संमार ॥१७॥
 जहां की तहां चल जायगी । गंगा उजल धार ॥
 गमनाम विना जीवणा । कोइ न पहोना पार ॥१८॥
 भाजीको पाणी जीवणा । एमो गंगाको नीर ॥
 लक्ष्मण महिन संग जानकी । जाके हृदे ग्वुवीर ॥१९॥
 गंगा चली कैलामकुं । जहां गौरीपतिको धाम ॥
 पृथ्वी पावन भई जीवणा । ग्व्यो गमको नाम ॥२०॥
 जम कसीया मब जीवणा । जप तप तीर्थ दान ॥
 मग्न नरक मांहि आंतरी । पंडित पायो विश्राम ॥२१॥
 आपे हरिजन कहायके । नवे आनन्देवकुं शीश ॥
 ओ छूटी बाजी जीवणा । मदा तजे जुगदीश ॥२२॥
 आनन्देव कहे सब जीवणा । कछु आनन्देव मेधान ॥
 हरिजन होयकर हत्तमचे । ना मंदीर मदा मरान ॥२३॥
 आनन्देव देखावे दूरथी । आपे भयो आनन्देव ।
 जहां संत समागम नहिं जीवणा । मदा पर्वई मेव ॥२४॥
 आनन्देव कोई दूजा नहीं । आपे भया करनार ॥
 ओ गीते हाथे जीवणा । जायंगे जम छार ॥२५॥
 पोथी पढ़त पंडित भया । काजी पटि किनेव ॥
 ओ हरिजन बाहर जीवणा । मदा पर्वई मेव ॥२६॥

गंगा भरोसे जीवणा । भूल्यो मब संमार ॥
 जा चरणसे ऊपनी । सो ममयो नहिं एकवार ॥१६॥
 हरि चरणथी ऊपनी । पड़ो शिव शिग धार ॥
 भृत्यु लोके आवी जीवणा । भूल्या मब संमार ॥१७॥
 जहां की तहां चल जायगी । गंगा उजल धार ॥
 गमनाम विना जीवणा । कोइ न पहोना पार ॥१८॥
 भाजीको पाणी जीवणा । एमो गंगाको नीर ॥
 लक्ष्मण महिन संग जानकी । जाके हृदे रघुवीर ॥१९॥
 गंगा चली कैलामकुं । जहां गौरीपतिको धाम ॥
 पृथ्वी पावन भई जीवणा । रघ्यो गमको नाम ॥२०॥
 जम कसीया मब जीवणा । जप तप तीर्थ दान ॥
 मग्न नरक मांहि आंतरी । पंडित पायो विश्राम ॥२१॥
 आपे हरिजन कहायके । नवे आनन्देवकुं शीश ॥
 ओ छूटी बाजी जीवणा । मदा तजे जुगदीश ॥२२॥
 आंनन्देव कहे सब जीवणा । कछु आंनन्देव मेधांन ॥
 हरिजन होयकर हचमचे । ना मंदीर मदा मरान ॥२३॥
 आंनन्देव देखावे दूरथी । आपे भयो आंनन्देव ।
 जहां संत समागम नहिं जीवणा । मदा पर्वई मेव ॥२४॥
 आंनन्देव कोई दूजा नहीं । आपे भया करनार ॥
 ओ गीते हाथे जीवणा । जायंगे जम छार ॥२५॥
 पोथी पढ़त पंडित भया । काजी पटि किनेव ॥
 ओ हरिजन बाहेर जीवणा । मदा पर्वई मेव ॥२६॥

मायाए कीधो मरहको । हपिं सुं तोड्यो हेत ॥
 नागी चेषे जीवणा । पुरुष भयो प्रेत ॥ ७ ॥
 दांते सोनुं कापनी । शिर मुधा मुख तंबोल ॥
 मीनापति विना जीवणा । ता शिर कागा गोल ॥ ८ ॥
 सोने रूपे मावधी । मनमां मोडा मोड ॥
 कलि कूकरी जीवणा । हरि बिन मोटी खोड ॥ ९ ॥
 गते दांते गक्षमी । सब जग खाया फार ॥
 हरिजन ऊबरे जीवणा । राम नाम पोकार ॥ १० ॥
 काजल घाले कामिनी । सजे कामके बांण ॥
 मुनिजन मारे जीवणा । शंकर छोडायो मान ॥ ११ ॥
 माया माथे जीवणा । मिलकर कीजे बान ॥
 हरिजनकुं हरि मेलवे । औरनकुं लगावे लान ॥ १२ ॥
 माया हमारी आतमा । देह किया के काज ॥
 परमात्मा हमारे जीवणा । सीतापति ब्रिजराज ॥ १३ ॥
 मारुं नारुं आपणुं । ये माया व्यवहार ॥
 राम भगतकुं जीवणा । सब दीमि एकाकार ॥ १४ ॥
 छप्पन ऊपर नौबत गडे । जाके हृदे हरिनाम ॥
 झूठी माया जीवणा । अंत न आवे काम ॥ १५ ॥
 जैभी माया जीवणा । तैसी निंदा जाण ॥
 इन दोना मिल आतमा । भटकायो चारे बांण ॥ १६ ॥
 ऊंध अपराधण जीवणा । हरि सुं पाडे विरोध ॥
 ज्ञान ध्यान सब विसरे । ताकी खबर न शोध ॥ १७ ॥

ऊंघ नफट के आत्मा । जो जो मन विचार ॥
 देवल दीपक नहिं जीवणा । तो क्यौं कर मिटे ऊंधकार ॥१८॥
 ऊंघही गाडे गांठडे । ऊंघ वहाणमे कोड ॥
 हरिजन ऊबरे जीवणा । पकड़ी नामकी ओट ॥१९॥
 जेमी वहाली निंदा । तेसे हजि जो होय ॥
 कलिकालमां जीवणा । नस्क न जावे कोय ॥२०॥
 मन मायाके संग गयो । मोहो मत्सर अहंकार ॥
 हरिजन ऊबरे जीवणा । राम नाम पोकार ॥२१॥
 हाडगुड मुख दंत नहीं । जोगण रूप अदभूत ॥
 हरिजन मारी होडमें जीवणा । सब जग खायो धूत ॥२२॥
 मनवाला सा देखीये । माया निंदा माहिं ॥
 रामनाम बिना जीवणा । वरतै कालकी छांहि ॥२३॥
 हरि कीर्तनमां जीवणा । निंदा आवे जेह ॥
 विभीषण प्रतिज्ञा रामसुं । सके धोखो व्यापे तेह ॥२४॥
 एक निंदा सूतो जीवणा । कुंभकर्ण निश्चंत ॥
 एक निंदा अहिल्या मूँझ हो । हृदे धरी कपला कंत ॥२५॥
 जैमो मेलो कर्मको । एमी निंदा जांन ॥
 इनथे जीवण आत्मा । भटकायो चारे खांन ॥२६॥
 निंदा नीडेर जीवणा । काहुं न पामे घम ॥
 मंत मंगत भावे नहीं । नाके हृदे विश्राम ॥२७॥
 जाडो पडो अब जीवणा । दुनाया गई सब दाग ॥
 मीतापनिके नाम बिना । माया मोटी आग ॥२८॥

आंखे काजल जीवणा । नागी माथे मौर ॥
 ब्राले कूले मरकडो । जे हरि नजि भजवो और ॥२९॥
 साच शुंठ जाणे नहीं । भुकन फिरे दिन गत ॥
 नारी गाढी जीवणा । गई भूतनके साथ ॥३०॥
 कोण कर्ममें जीवणा । भई गंधारे नार ॥
 खुपनि वन पठायके । मंगल गायो द्वार ॥३१॥
 माया हमारे देशडो । देह क्रियाके काज ॥
 मन हमारे जीवणा । जहाँ मीतापति त्रिजगज ॥३२॥
 ऊंधे कीर्तन जे करे । बैठे काटे घास ॥
 स्वप्नान्तरमां जल पीवे । क्याँ कर मिटे पियास ॥३३॥
 आप देखावण सुंदरी । मजे मोल शणगार ॥
 वे जमको फांसी जीवणा । सूर भयो संमार ॥३४॥
 आपो ऊंध जो देखीये । मढा जैसो मुख ॥
 मीतापति विना जीवणा । न मिटे जमको दुःख ॥३५॥
 हरि हथोडे जीवणा । माया कूटी भाँज ॥
 हरि भजे तो पार है । नहिं तो हरिजन पूज ॥३६॥
 काम धाम सब खुसगे । साचे खुपनि गम ॥
 जगमां जीवण जोईया । जे जा शिर मनगुरु नाम ॥३७॥
 बेटा बेटी जीवणा । यमकी फांसी एह ॥
 मन्त ममागम छोडवे । पथर आनीमां देह ॥३८॥
 अनंत रूप अंदेशडो । माया मांहि लौ लीन ॥
 हरिजन साथे जीवणा । मढा रहे आधीन ॥३९॥

मायाए मान मुकावीयुं । खर्ग सृत्यु पानाल ॥
हरिजन देखी जीवणा । आपे रही शिरमार ॥४०॥
माया बाढी जीवणा । बोले बचन आधीन ॥
जहाँ गम रमायन हरिजना । ताके घर्में दीन ॥४१॥
माया हमारी जीवणा । प्रेम भक्तिके पास ॥
हरिजनकु हरि मेलवे । औरनकुं करे ग्राम ॥४२॥
माया मिलकर जीवणा । बाढी दे आशीश ॥
मोहे टेक नुझ नामकी । कब मिलिहो जगदोश ॥४३॥
॥ इनि श्री मायाका अंग ॥

* ॥ अथ श्री साकुनको अंग ॥ १४ ॥ *

साकुनकी मभा रची । नहाँ जन बेठन जाय ॥
एक गोवाडे क्यों बने । गेझ गधा ओँ गाय ॥ १ ॥
साकुनांसु जीवणा । केसो गग अनुगग ॥
संत संगते मदा रहो । जाके हरि मोहाग ॥ २ ॥
साकुनांसु जीवणा । कहा कीजे परमंग ॥
आपे बूडे धारमां । और माथी ले संग ॥ ३ ॥
साकुन सरज्या जीवणा । मो पर निंदा करतं ॥
पारकी आग बुझायके । आपे आप जरतं ॥ ४ ॥
जीवण जग सब बहे गया । कुल क्रिया अहंमेव ॥
ब्रह्मादिकमे भग्नीया । कहा व्याम मुनि शुकदेव ॥ ५ ॥
साकुन माना जीवणा । भरते देह वहाय ॥
अपने स्वास्थकुं तकी । रुपति वन पठाय ॥ ६ ॥

साकुन मेहरी जीवणा । कबहु न कीजे संग ॥
 ए भूतांसु भटकन किरे । होन भजनमां भंग ॥७॥
 आप आपमां जीवणा । सब हो चेठे संत ॥
 आप मते गरजी रह्या । मो वण कृपा भगवंत ॥८॥
 साकुन भइया जीवणा । कबहु न कीजे प्रीत ॥
 ए केल बेरकुं क्यों बने । एही वात विपरीत ॥९॥
 साकुन सब कहे जीवणा । कलु माकुना सेधाण ॥
 हरिजन जुडा पढे । नहा गुरुवचन प्रमाण ॥१०॥
 पंडीत पाडी वाटडी । विष्णु भगतको घट ॥
 जुगन जाणी युं जीवणा । मारी साकुनां लान ॥११॥
 काव्य चतुर्गाइ जीवणा । भारा रग प्रबंध ॥
 साकुन मरगो मारीयो । काल आहेडी फंद ॥१२॥
 साकुनां संग जीवणा । कबहु न कीजे विगेध ॥
 ओ अपनी खलकमां खुशी । तुं अपना मन परमोध ॥१३॥
 साकुनमे सलील बुग । कबहु न पावे गम ॥
 अपने स्वारथ जीवणा । मरे न एके काम ॥१४॥
 साकुनां तज जीवणा । पीयो प्रेम म दाम ॥
 पपीहग ज्युं पीयु पीयु करे । कबहु न मीटे पीयाम ॥१५॥
 साकुनांसु जीवणा । तुं हेन करी मुखही न चोल ॥
 सलील भगतमु मुन ग्रह । अनीनमु अंतर खोल ॥१६॥
 शरीर साकुनां परमतां । गुन गांडको जाय ॥
 खुपनि रीसावे जीवणा । तो हरिजन केमे महाय ॥१७॥

माकुन माकुन सबको कहे जीवणा । कछु माकुतां मेघान ॥
 निंदा करवेकुं मूगमा । नहीं गुरु वचन प्रमाण ॥१८॥
 जमही द्वारे जीवणा । माकुननके जुथ ॥
 हरिजनकी निंदा करे । सो जमकुल बढे सपुत ॥१९॥
 भट भलेग देखीये । साकुनके सरदार ॥
 कर्म गोहाडे जीवणा । घालये सब मंमार ॥२०॥
 भट भलेग देखीये । माकुतां समदार ॥
 कीर्तन बाणसे जीवणा । मायों सब मंमार ॥२१॥
 यूं बने नहीं जीवगा । अवल्ल मवली मेल ॥
 पुष्टा पूजे गमकुं । माकुन नारि धेर ॥२२॥
 जंत्रही वागे जीवणा । बोले एकही राग ॥
 नंदकु नंदक मिला । तब जाने बड भाग ॥२३॥
 वाँकी वाँकी पाघडी । ने टेहे टेहे नेन ॥
 सीतापनि बिना जीवणा । बुबड केमे चेन ॥२४॥
 चौकनाइ कीये जीवणा । हरिकी करणा नाहि ॥
 निरदावे निरभे रहे । संन चरणकी छांहि ॥२५॥
 धीक पडघो ते जीवणा । जहां न आवे हरिदाम ॥
 माकुनमु रचीपची रहे । ता कुल जालु घाम ॥२६॥
 जीव न जाने जीवणा । गम मिलनकी प्रीत ॥
 जे रीते हरिजी मिले । ओही बात विपरीत ॥२७॥
 सब तज मन न्यागे रहे । तजे कुलकी कान ॥
 जीवन जुगन एही बिना । हरि न पाइये निष्वाण ॥२८॥
 ॥ इनि श्री माकुनको अंग ॥

* ॥ अथ श्री मलीलको अंग ॥ १५ ॥ *

मलीलमे माकुत भलो । जे कबहुक पावे पार ॥
 मलील बुडा कीचमें । जीवण जेमी जल विना नाव ॥ १ ॥
 मलील भगतकुँ जीवणा । भन कोई पति आय ॥
 कबहु मनसंगत करे । कबहु माकुता भील जाय ॥ २ ॥
 हाथी बृडा कीचमें । नहीं उठनकी आश ॥
 हाथ पखरे जीवणा । भवजल बृडे दाम ॥ ३ ॥
 कनवी कुलमां जीवणा । वमन दीमे कोय ॥
 दिना चाही भक्ति करे । अंते फें फें होय ॥ ४ ॥
 भरडो भगत नहीं जीवणा । कनवी और सोनार ॥
 आधा धूधा होयगा । मनगुरुके उपकार ॥ ५ ॥
 मलील माकुतां ब्रावणा । सो खडे भेल भेल ॥
 ओ बने नहीं जीवणा । एरंडीया फूलेल ॥ ६ ॥

* ॥ साखी भेषकी ॥ *

माकुतां घर बेटडी । ना दीजे जीवण दाम ॥
 वाहीको मन गखनां । होय धर्मको नाश ॥ ७ ॥

* ॥ साखी श्री मुखकी ॥ *

मीट मेलावे जीवणा । रुदे न यदु थाय ॥
 मुकर कुकरको बेमवा । गत दिवस मलि गाय ॥ ८ ॥
 कुशल ना पूछु जीवणा । हरिजन ना आवे ढार ॥
 नस्क सम बुरो नहीं । जम समी नहीं धार ॥ ९ ॥

कमल ना बिकसे जीवणा । हरिजन न आवे द्वार ॥
 भयडो ते मानवी । कहा पुरुष कहा नार ॥१०॥
 छानीसुं छानी मिले । जाके रुदे हरिनाम ॥
 और दुनीयासु जीवणा । अपने काम बेकाम ॥११॥
 अनीन भगतके जाइये । तज सलीलको संग ॥
 अनीन मजीठ रंग जीवणा । सलील रंग पतंग ॥१२॥
 भक्ति करे नव अंगसु । आनन्द लंग अखंड ॥
 मुक्ति देउगा जीवणा । यों कहे कमला कंथ ॥१३॥
 मन करी हरि हरि ओचरे । तन रहे कुल पछ मांहि ॥
 ब्रह्मादिक भरमे जीवणा । मा हरिजन कहावत नाहि ॥१४॥
 राम उपासी जो मिले । तासु मलिये धाय ॥
 आनउपासी जीवणा । ता मुख देखे बलाय ॥१५॥
 भक्ति केसी जीवणा । सलील साकुना भेल ॥
 जेसे खाग नीरमें । पय दीया सब ठेल ॥१६॥
 कबहु वगाडे दाखलु । कब हो बेठे साध ॥
 नही जमी अममानमें । जेसे उंटको पाद ॥१७॥
 ॥ इनि श्री सलीलको अंग ॥

* ॥ अथ श्री व्यभीचारको अंग ॥ १८ ॥ *

पहले पनिब्रता होयके । पीछे करे व्यभीचार ॥
 ओ नार दोहागण जीवणा । करन जार पर जार ॥ १ ॥
 हरिजन माथे उनमनी । बेस्तीयलसु प्रीत ॥
 ओ पनिब्रता नही जीवणा । व्यभीचारणीकी रीत ॥ २ ॥

अंतःकर्ण अलगुं रहे । बाहर दिखावे भाव ॥
 वे पतित्रना नहीं जीवणा । खेले अपनो दाव ॥ ३ ॥
 नारि वरमी जीवणा । मरदा उपर माड ॥
 राम भजे नहीं बापडी । जे मोहागो रहे भव कोड ॥ ४ ॥
 हरि भक्ति होमे करे । वण पण वण पश्चीत ॥
 धूंअर वरमे जीवणा । क्यों रत पावे शीष ॥ ५ ॥
 पून जाये विना जीवणा । पीड न जाणे कोय ॥
 बांझ पीयारे पूनकुं । निश दिन बेटी रोय ॥ ६ ॥
 पीयु रत जाणी नहीं । और कहावे सोहागण नाम ॥
 आ पतित्रना नहीं जीवणा । अपने करम वे काम ॥ ७ ॥
 आपे सोहागण हो रही । और पीया न देखे छांहि ॥
 ओ पतित्रना नहीं जीवणा । बांझ रत फल नाहि ॥ ८ ॥
 राम भक्तिये जीवणा । मनमाँ आन विचार ॥
 क्यों कर पुगे मूरखा । माँईयाके दखार ॥ ९ ॥
 हरि जनमु रुच्यो फरे । अने मनमाँ मोडा मोड ॥
 ओ पतित्रताकु जीवणा । साँईया मेती होड ॥ १० ॥
 ॥ इनि श्री व्यभीचारको अंग ॥

* ॥ अथ श्री कामीको अंग ॥ १७ ॥ *

परनारी सुं प्रीतडी । जब तब होय विनाश ॥
 अंत विछोहो जीवणा । होय जगतमाँ हांस ॥ १ ॥
 थेर नारुसु रुसणो । परनारिसु प्रीत ॥
 आपे समजेगो जीवणा । ज्यो अंधो आथडे भीत ॥ २ ॥

नारि माथे नेहडो । करे मो बडो गमार ॥
 ल्लोपतो करे जीवणा । पण अंत उठावे काल ॥ ३ ॥
 नारि माथे नेहडो । ते नर यहां ना आवसो ॥
 आपो रहमे तहां । आभद्रेट ना लावसो ॥ ४ ॥
 परनारिसुं प्रीनडी । जेमो अगनको निर ॥
 घस्की नारि जीवणा । शीतल गेहेर गंभीर ॥ ५ ॥
 जग्म्ब लोटणो जीवणा । पर त्रियासुं प्रीत ॥
 गधो न जाणे बापडो । जो चंदन लाद्यो पीठ ॥ ६ ॥
 कुकर चाटे हाड ज्यू । भरे लाम्बु पेट ॥
 एमो जाणो जीवणा । पर त्रियामु हेत ॥ ७ ॥
 कामी कपटी तजे जीवणा । तो पामे हस्कि धाम ॥
 आपै आप विगोइये । पण सर्यो न एको काम ॥ ८ ॥
 कामी नरकुं जीवणा । हसि कबहु न देवे थाव ॥
 भीतर रची कामिनी । धाहेर देखावे भाव ॥ ९ ॥
 नारी नेह ज दाखवी । पीयाको चिन हगी लेय ॥
 भव जलमां बोरे जीवणा । छातीपर पथर देय ॥ १० ॥
 ॥ इनि श्री कामीको अंग ॥

* ॥ अथ श्री ब्रह्मज्ञानीको अंग ॥ ११ ॥ *

मीतापति रघुनाथ विना । काहुको धरीये ध्यान ॥
 धुंवा धरहल जीवणा । एमो ब्रह्मज्ञान ॥ १ ॥
 मातापति तज जीवणा । रहो ब्रह्मु लाग ॥
 रुई मंदिरमे पैत्रकर । द्वारे लगाइ आग ॥ २ ॥

सीतापति तज जीवणा । ध्यान धरे आकाश ॥
 प्रगट गोदको छाँडके । करे गर्भकी आश ॥ ३ ॥
 प्रगट हरिजन छाँडके । ध्यान धरे आकाश ॥
 वे जन जुग जुग जीवणा । रविमुनके निज दास ॥ ४ ॥
 ब्रह्म ज्ञानी अनुमरे । घट घट व्यापक राम ॥
 हमारे ओ वन जीवणा । जे सीतापतिको नाम ॥ ५ ॥
 बूढ़ पथ सब जीवणा । जप तप तीर्थ दान ॥
 सीतापतिकुं त्यागके । जे कथे ब्रह्मज्ञान ॥ ६ ॥
 त्रिकुटी मंजम जीवणा । ब्रह्मजौत प्रकाश ॥
 सीतापति रघुनाथ विना । स्वर्ग नर्कमां वाम ॥ ७ ॥
 अध्यातम विद्या उनमनी । करे सो कॉठ पोल ॥
 गमनाम विना जीवणा । ए सब जमका कोल ॥ ८ ॥
 मूल द्वारे एडी दह । पवन बलोवे आकाश ॥
 सीतापति विन जीवणा । ए सब जमके दास ॥ ९ ॥
 ईगला पिंगला पुग्मना । रवि शशि दोनु मेल ॥
 सीतापति विना जीवणा । जमसु कर्खो केल ॥ १० ॥
 अष्टदल कमल जे कोइ जपे । कोई ध्यान धरे आकाश ॥
 भज सीतापति जीवणा । जे लक्ष्मी चरण निवाम ॥ ११ ॥
 आंख मीचेने आंधलो । ध्यान धरे आकाश ॥
 सीतापति भूनल जीवणा । जहाँ मंत मंगन निवास ॥ १२ ॥
 गधे लीडे जीवणा । पापड पीडो थाय ॥
 तो आनदेवने अनुमरी । जगत मुक्ति फल पाय ॥ १३ ॥

जुगन विना ए जीवणा । सब हो बैठे माथ ॥
 आपे आप डाढे भये । जनम गमायो बाद ॥१४॥
 घट घटमां हरि लेखवे । आपे हो ग्ह्यो ब्रह्म ॥
 मीडे हनो जीवणा । ते शिर पर लीनो कर्म ॥१५॥
 ज्यों जलमें प्रति विंव है । त्यों घट घट व्यापक गम ॥
 गुरु परमादे जीवणा । पाईये मूल चंद्रको धाम ॥१६॥
 माँईया मेनी जीवणा । कवहु न कीजे गेष ॥
 आपे घट घट ले ग्ह्यो । आपे बनायो जोष ॥१७॥
 श्रुति स्मृति कहे जीवणा । रहा नाम शश्व विश्वास ॥
 आपमने उठायके । भवजल छबे दाम ॥१८॥
 घट घट तो हरि जाणीये । पण माँईया संतो पास ॥
 धूंवा धम्हल जीवणा । नामे केमो वाम ॥१९॥
 जन जाने हस्तिकी गनि । जन जाने हरिकी धान ॥
 अग्म पग्म ए जीवणा । और न दूजी बान ॥२०॥
 माँईया लहे सब जीवकी । माँईयाकी लहे न कोय ॥
 साँईकी लहे जे जीवणा । सीतापतिको होय ॥२१॥
 ॥ इनि ब्रह्मज्ञानीको अंग ॥

* ॥ अथ श्री गर्भावलीको अंग ॥ १६॥ *

अक्षर अक्षर सब एक जीवणा । उँकारकी आद ॥
 ममामे रो बडो । सो मनगुरु कह्यो विचार ॥ १ ॥
 एक अक्षरथी जीवणा । भयो ब्रह्माण्ड विस्तार ॥
 रो राख्या हरिजना । ममा भयो मंसार ॥ २ ॥

शिव ब्रह्मादिक आद दे । तीन गुणके आधीन ॥
 गम भगतकु जीवणा । ताके घर मब दीन ॥३॥
 त्रिगुन सहीन गुणमां बमे । सो मतगुरु दीयो बताय ॥
 निर्गुण ब्रह्म बेदे कह्यो । सो ब्रज कुल चारे गाय ॥४॥
 निर्गुण ब्रह्म थे जीवणा । सो त्रिगुण भयो विमार ॥
 सकल गुण मेवा करे । सो आप रह्यो निष्ठार ॥५॥
 को भजे आकारकुं । का निरग्कार निज धाम ॥
 हमारे ए ब्रत जीवणा । जे मीनापनिका नाम ॥६॥
 निज मूल निज नामही । दासी पलोबे पांय ॥
 सो घट घट व्यापक जीवणा । जे ब्रजकुल चारे गाय ॥७॥
 शुक मनकादिक जीवणा । ध्यान धरे अकाश ॥
 बलद्वारे वामन रह्यो । ते लक्ष्मी चरण निवास ॥८॥
 शुक मनकादिक जीवणा । जोन स्वरूपी धाय ॥
 गधा उत्तंगे शामलो । सो हस्त देखावन गाय ॥९॥
 एमो अदबद जीवणा । जे बेद भये चकडोल ॥
 शुक शास्त्र नारद थके । सो निम्बन जुगल किशोर ॥१०॥
 बूढ़ो कहुं तो बालूओ । बालु कहुं तो पीर ॥
 जोन स्वरूपी जीवणा । मीनापनि ग्धुवीर ॥११॥
 मागरमुता चरणे रहे । सदा अर्वदिन जोन ॥
 गमनाम भज जीवणा । जहाँ पाप पून्य नही छोत ॥१२॥
 जोन स्वरूपी जीवणा । सो खेले गोकुल मांहि ॥
 नाच नचाइ गोपीका । हरि अडे आभडे नाहि ॥१३॥

नाम भरुमो शामको । मीतापनि ग्युवीर ॥
 जोत स्वरूपी जीवणा । कालिंदीके तीर ॥१४॥
 नामा तो सामा रह्या । कीयो कबीरे भेल ॥
 गंके बांके जीवणा । कीयो जोतसु खेल ॥१५॥
 गंके बांके जीवणा । मेव्यो जोत स्वरूप ॥
 मो साँई हमारे गमजी । जे दशग्थ कुल बडभूप ॥१६॥
 जनम सफल कर जीवणा । भज मीतापनिको नाम ॥
 जोत स्वरूप वेदे कह्यो । पण मर्यो न एके काम ॥१७॥
 जोत स्वरूपी जीवणा । माधु मनगुरु पांहि ॥
 कंम निकंदन कहानुवो । मब जग ताकी छाँहि ॥१८॥
 पद छुव्या विन जीवणा । परब्रह्म पद कैमे पाय ॥
 ब्रह्मा सुर नर मुनि जना । मबही चले ठगाय ॥१९॥
 मुनि जन मानव जीवणा । मबही एके भाय ॥
 गधा गमणकु छाँडके । जोत स्वरूपी धाय ॥२०॥
 बल द्वारे वामन रह्यो । तो गौ चगवे कोण ॥
 मब जग भुव्यो जीवणा । ब्रद्यादिक ही कोण ॥२१॥
 अनहद मांहि हद है । जहाँ गथा गम विलास ॥
 गुरु कृपा विन जीवणा । मबही गये निगम ॥२२॥
 मब मर्वीयनमां जीवणा । मोर्ली वाही शाम ॥
 नेति नेति निगम कहे । काहु न पावे यम ॥२३॥
 द्विलमिल द्विलमिल होत है । मब मर्वीयनको शणगार ॥
 प्रेम स्वरूपी कहानुवो । मो जीवण नंदकुमार ॥२४॥

एक मुखे केती कहुं । वृद्धावनको वान ॥
 शारद नारद थके जीवणा । शंकर वस्त्रे हाथ ॥२५॥
 अंतर्यामी आपणो । रक्ष्यो जीवण सो लौलाय ॥
 कोइ हिमसुनाने अनुमरे । कोइ सागसुनाने धाय ॥२६॥
 सो साँई हमारे जीवणा । सीनापनि ब्रिजगज ॥
 दशशिर छेदी गिरि धर्यो । दीयो उप्रमेन विभिषण गज ॥२७॥
 अंतर्यामी आपणो । मिथी गह चलाय ॥
 तुजे दुःख कहा जीवणा । समरने रघुपतिगय ॥२८॥
 गर्भध्यान चीन्हो नही । करे हरिजनसु विवाद ॥
 अंतभांडी वाढो जीवणा । कहा रात्यो अनहद नाद ॥२९॥
 उतपत परल्य ओंकारमां । मूर्ख न चीन्हे मरम ॥
 मेरे हरिजन जीवणा । जहां मदा सनातन ब्रह्म ॥३०॥
 ॥ इनि श्री गर्भावल्कि अंग ॥

* ॥ अथ श्री प्रमोधको अंग ॥२०॥ *

परधर जाइ परमोध करे । आपे समझे नाहि ॥
 एमे मूर्ख जीवणा । बहोतेक है जग माँहि ॥ १ ॥
 मुख भर हरि हरि उचरे । अंतरगत कछु और ॥
 कल्पतरु तज जीवणा । तके एरंडके धोर ॥ २ ॥
 हाजी हाजी मुख कहे । अंतरगत कछु और ॥
 वे अपगढी जीवणा । चौद लोक नही ठेर ॥ ३ ॥
 मध भंतन मली जीवणा । कीनो एक विचार ॥
 मीनापति बिन और कहे । ताके मोहोढे छार ॥ ४ ॥

पोषट शाह्यो पांजरे । मार कहायो गम ॥
 छांड दीयो जब जीवणा । तब नहीं गमने नाम ॥५॥
 अलागमी जीवणा । तासु केसो गय ॥
 तन मन अरपे भावसु । ता शिर दीजे पाय ॥६॥
 अलागसी चाकरी । निशदिन आवे जाय ॥
 लेख लख्या बिन जीवणा । कोडी केमे पाय ॥७॥
 शिश माटे साँई मिले । जीवण महेली वान ॥
 दश शिश मोंथो शिवकुं । रावण भुल्यो घान ॥८॥
 शिर माटे साँई मिले । युं कही कबीरे दाम ॥
 और मब जुंडो पेखणो । जीवण जग उपहाम ॥९॥
 ए पात्र कपात्र जीवणा । सतगुरु दीये बताय ॥
 नेक शिश विभीषण नम्यो । तब रघुपति भये सहाय ॥१०॥
 लंक विभीषण थापीयो । जीवण जस अखंड ॥
 ए पात्र कुपात्र जीवणा । साख वेद कहे सत ॥११॥
 मोंधी सुंठे जीवणा । जन्यो न दिमे कोय ॥
 जा देवकुं अनुमरे । तन मन मागे मोय ॥१२॥
 साचा बोल्यो जीवणा । अबर ना दिमे कोय ॥
 तन मन अरपी जे रहे । साचा कहावे मोय ॥१३॥
 तन मन अरप्या तब जाणीये । जब जगसुं रहे उदास ॥
 चरण कमल मन उनमनी । जीवण सो निज दास ॥१४॥
 मोहनी मंत्र जीवणा । सतगुरु दीया बताय ॥
 जीने ए मंत्र श्रवणे सुन्यो । तीने तन मन अरप्यो आय ॥१५॥

शब्द चगचर देखीये । चोहोदश मुगत मेदान ॥
 ओ पंड ब्रह्माण्ड जीवणा । सो कहीये निज प्राण ॥१६॥
 देही दर्शन सबको करे । शब्द दर्शन ना होय ।
 शब्द दर्शन विना जीवणा । पर न पहोना कोय ॥१७॥
 शब्द दर्शन सबको करे । देही दर्शन भ्रुत्य ॥
 स्वप्नि कहे सुन जीवणा । ताका सख्त जाय ॥१८॥
 ब्रह्मा भुल्या वेद पढ़ी । व्याम पढि पुरण ॥
 स्त्री एक शुकदेवे लही । सो जीवण भक्त प्रमाण ॥१९॥
 गमनाम भज जीवणा । जे गाँगीपनिको ध्यान ॥
 अजामेल गुणका तसी । जे मेन वांछो हनुमान ॥२०॥
 अंबरीष गोहारे आवीयो । सुंदर श्याम स्वरूप ॥
 सो नंदद्वारे जीवणा । जे दशमथ कुल बड भूप ॥२१॥
 अंबरीष गोहारे आवीया । हरि धर्यो नटवर वेष ॥
 सब जग भुल्या जीवणा । कर अनेक अनेक ॥२२॥
 नुगर मिल वानो करे । कहे गमकृष्ण अवनार ॥
 और गाली कहा जीवणा । धिक् ताको परिवार ॥२३॥
 धर्णी बहुणो होर ज्यूं । कीम गोहाडे जाय ॥
 एसे गुरुमुख बहोणो जीवणा । मीतापनिकुं धाय ॥२४॥
 मात न जाने मनमकुं । पुत्र पिता क्यूं पाय ॥
 एसे मकल जग जीवणा । मातापनिकुं धाय ॥२५॥
 दश अवनारके दगदगे । भुल्या सब संसार ॥
 कोइ एक उवरे जीवणा । जोणे गुरुमुख कीयो विचार ॥२६॥

अवतार अपगेधी कहे जीवणा । जाके नही गुरु पीर ॥
 आद अंत मध शामलो । निष्ठुण ब्रह्म शरीर ॥२७॥
 गमकृष्ण जे जीवणा । दो मग्नुण अवतार ॥
 अंध धुंधकु कहा भजु । जे वेद न पावे पार ॥२८॥
 कबु घुपति कबु जदुपति । भक्त हेत अवतार ॥
 बेमुख न समझे जीवणा । मवही एकाकार ॥२९॥
 घुपति जदुपति जीवणा । ज्यूँ ऊडवनमें चंद ॥
 गधावर मीनापति । मो क्यूँ न भजे मनिमंद ॥३०॥
 धनुष विद्या घुपति पढे । मोग्ली धरी जदुनाथ ॥
 लंकेश मार्यो जोवणा । गिरिर धर्यो वे हाथ ॥३१॥
 मकल व्यापक वेदे कद्यो । मो क्यूँ मेल्यो जाय ॥
 मकल जीवनको जीवन जोवणा । मो माचो घुपतिगय ॥३२॥
 मकल व्यापक वेदे कद्यो । पण हमारे हे हरि एक ॥
 घुकुल जदुकुल जीवणा । गधा मीया ममेन ॥३३॥
 आद अविनाशी धाईये । जाके रूप न रेख ॥
 मो नंद धेर दुल्हो जीवणा । जे गावत शंकर शेष ॥३४॥
 वेदवनमां जीवणा । भूल्या सब मंसार ॥
 कर्म धर्म फांसी भई । काजी ब्राह्मण काल ॥३५॥
 रिद्धि मिद्धि हममां बमे । जहां मागे तहां देत ॥
 हरिजन हरि भजे जीवणा । हम हि कहेत है निन ॥३६॥
 विश्रे कीयो व्यभीचार जीवणा । मुरापान मु संग कीयो ॥
 पुत्र हेत पोकारीयो । सो नारायण नामे तर्यो ॥३७॥

भीत ना भूले जीवण । जो अंधो नाखे तीर ॥
 नरक जन पावे नही । जो भोले भजे रघुवीर ॥३८॥
 कंकण पहेयों केदारको । कीनो वजीया होम ॥
 सीता पति चिन जीवण । मुखमां पढ गयो रोम ॥३९॥
 अपने अपने तापणे । तापत है सब कोई ॥
 मिलकर तापे जीवण । जो राम भक्ति दृढ होई ॥४०॥
 वेद पुराणे जे कह्यो । सो जीवण समरो राम ॥
 पंचवटी पावन करी । जे वृंदावन सुख धाम ॥४१॥
 भेद न जानु वेदका । न जानु शास्त्र पुरान ॥
 रघुपति जानु जीवण । जीणे दीयो सुदामा दान ॥४२॥
 आपा बाढ बे तणो । कौशल्या नंद नार ॥
 सो साँई हमारे जीवण । जे जान्यो बलद्वार ॥४३॥
 रामानंद कबीरकुं । जब दीयो उपदेश ॥
 तबके कर्म कापे जीवण । हमकु दीयो उपदेश ॥४४॥
 दो बने नही जीवण । आपा और हरि नाम ॥
 आपा मेटके हरि भजे । सो पावे पद विश्राम ॥४५॥
 धाइ मिले सब जीवण । भक्त ना मिले कोय ॥
 आपा मेटके जो मिले । भक्त कहावे सोय ॥४६॥
 रघुपति कहे सुन जीवण । एही हमारी वाण ॥
 आपा साटे छोडवुं । लक्ष चोरसी खाण ॥४७॥
 सब कहे ऊडे जीवण । हरिजन सु नाहि हेत ॥
 एसा कोई ना मिल । सीताराम समेत ॥४८॥

सब जग ढुँब्बो जीवणा । नेग को नव होय ॥
 अपने अपने पदकुं । गजी है सब केय ॥४९॥
 एसो अजर है जीवणा । जान पान कुल जाय ॥
 और बातनकी बात है । जो ब्रह्मादिक चले आय ॥५०॥
 हरि होकारे आवीयो । अजामेलके काज ॥
 अन नेड्यो आवे जीवणा । जहां भगतको गज ॥५१॥
 गम अवतारे गंडी रही । कृष्ण दीयो सोहाग ॥
 ब्रह्मादिक भुले जीवणा । रम पीयो ब्रजनार ॥५२॥
 आनी फाटे जीवणा । नहीं गमभक्ति आमान ॥
 दूक दूक कलेजा होइ पडे । तो पद पामें निखाण ॥५३॥
 रामनाम भज जीवणा । अवसु नहीं काम ॥
 अजामेल गुणका तगि । एही गम एही नाम ॥५४॥
 गमनाम भज जीवणा । अवसर एकज वार ॥
 गया दिवस न बावरे । शिर उपर ढुँके काल ॥५५॥
 आद अंत जाणु नहीं । नहा मध्य सु काम ॥
 नाम प्रताप पाषाण तरे । सो जीवण ममगे गम ॥५६॥
 आद अंतमे शामलो । और न दृजी बात ॥
 सो साँई हमारे जीवण । जे भृगु लगाई लान ॥५७॥
 धनुष धर्यो जब रघुर्पान । तब तोडे रवण शिम ॥
 आद अंत मध्य माधवो । सा जन जीवण के ईश ॥५८॥
 गिरि गोवर्धन कर धर्यो । सो ब्रज मंडलके काज ॥
 सो साँई हमारे जीवण । जे दीयो विभीषण राज ॥५९॥

धनुष धयों जव जीवणा । भयो अमुर कुल त्राम ॥
 दाम विभीषण काणे । रघुपति लीनो वनवाम ॥६०॥
 स्वपन भयो नव यौवना । सुं सुनो गवण कंथ ॥
 दशे शिश छेदी जीवणा । आयो विभीषण मित ॥६१॥
 धेर नारि नव यौवना । तो मीता हरि कुन काम ॥
 गवण मूरम नही जीवणा । जे तस्यो मुगनको धम ॥६२॥
 भमर भेद्या भाल सु । नव कटे दश शिश ॥
 लंक विभीषण थापीयो । मो जन जीवणको ईश ॥६३॥
 साचा माहेव गमजी । जेणे गिरि गोवर्धन कर धयो ॥
 जनक पोले जाइ जीवणा । धनुष तोड मीता वर्यो ॥६४॥
 जमुना तीरे जादवो । खेले बाल गोपाल ॥
 दशे शिश छेदे जीवणा । अब भयो कंमकुल काल ॥६५॥
 मीतापति रघुनाथ पर । वारु नन मन प्राण ॥
 नापे महेलो जीवणा । जे जातोधो ममाण ॥६६॥
 तंत्र मंत्र कोइ करो । कोइ जपो शिव हनुमान ॥
 हमारे ए ब्रत जीवणा । जे मीतापतिको ध्यान ॥६७॥
 गमनाम कुन कामको । जो नाप हरे जो कोय ॥
 जपतप तीर्थ जीवणा । ए मव जमकी जोय ॥६८॥
 अंत ममे हरि नामकुं । इच्छन है मव कोय ॥
 जीवत न समजे जीवणा । नर अपगढ़ी सोय ॥६९॥
 देवी देवा को नही । काहुके मन कुछु नाहि ॥
 जीवण मन प्रतिन है । गम हमारि साँई ॥७०॥

बंधु महोदर को नहीं । नहीं गम ने गम ॥
 सब जग दूँखों जीवणा । कृपा करो रघुगम ॥७१॥
 मात्र शब्द बहोनु कही । मनहीं बंधे धीर ॥
 युं विनती कहन है जीवणा । तुम सुनीयो गमकबीर ॥७२॥
 गरुड लांडी हरि आवीया । जब गज पोकायें गम ॥
 सांसो केसो जीवणा । समगे सीताराम ॥७३॥
 हरि नामे हाथी तयों । तो मानव केती एक बात ॥
 मानव न तरे जीवणा । एही बात उत्पात ॥७४॥
 मानव बूज्यो मानकर । हाथी तयों कर हार ॥
 गुरु कृपा बिन जीवणा । कौन कहे समझाय ॥७५॥
 गज छोडन ग्राह छुटियो । अल्य तरने कीर ॥
 एमा रघुपति जीवणा । नर समझत नहीं बे पीर ॥७६॥
 जैसा करता तैसा भोगता । जब नहीं थे गुरु पीर ॥
 धरम पलटो जीवणा । एका एक शरीर ॥७७॥
 कर्मज वनकी जीवनी । छोडनहीं परजाय ॥
 बिछुडे बिन जीवणा । परमपद कैसे पाय ॥७८॥
 धंध उभो सब जीवणा । बिन समरे मारंगपाण ॥
 सीतापत्निके नाम बिन । सब दुनीयां पडी बिगण ॥७९॥
 कोटे बंधे कोडीयुं । एसो ए संमार ॥
 गौमित्रीने अनुमरे । नजी जनक सुना भरतार ॥८०॥
 बाजीगरे बाजी स्त्री । एसा ए संमार ॥
 ता मायामां जीवणा । गमनाम आधार ॥८१॥

पीर पेगंवर पांचदिन । अल्ला एक अखंड ॥
 वेद कतेबे लख्यो जीवणा । जीणे निपायो ब्रह्मण्ड ॥८२॥
 वे बलथा मो कहां गया । दोडी थाके पांव ॥
 मबकी ओ गती जीवणा । कहा रंक कहा राव ॥८३॥
 बाबन अक्षरमां जीवणा । एक अक्षर तत्त्वमार ॥
 ममा पहेलो जे लख्यो । तेहनो वेद न पावे पार ॥८४॥
 सूर्य बंशी अवतयो । रघुपति कीयो प्रकाश ॥
 तान पात्रन कीयो जीवणा । नाही चरणकी आश ॥८५॥
 जठर अगनमां जीवणा । रक्षा करी रघुवीर ॥
 नाकु छांडी और भजे । मो कहीये बेपीर ॥८६॥
 गळो गळो कहा करो । गळो नही लगार ॥
 मीतापति बिन जीवणा । और न दीमे पार ॥८७॥
 गमे गवण मारीयो । तब छुटे तेतीम ॥
 लंक विभीषण थायीयो । मो जन जीवणके ईश ॥८८॥
 दाकोर हमाग गमजी । जीणे तोडथो गढ लंक ॥
 और केतो एक जीवणा । जो गवण दीमे रंक ॥८९॥
 गमनाम भज जीवणा । जीणे बगह धरनी धरी ॥
 नग्का सुरकु मारके । मोल महस नारि वरी ॥९०॥
 कगम उचालो जीवणा । दीनो कलजुग मांहि ॥
 गम कबोग गम रहा । हम ही गमे ता मांहि ॥९१॥
 नारी रोवे जीवणा । शिरपर धाले धूल ॥
 खम्म गयो हम हाथमे । जब पकडथो निज मूल ॥९२॥

माता पिना सब जीवणा । मिलकर कूटे पेट ॥
 पुत्र गयो हम हाथमु । कीयो हरिजनमु हेत ॥९३॥
 धेर धेर मनोरथ जुजवा । नित नित नवला रंग ॥
 मीनापति विन जीवणा । नाथे भयो ए भंग ॥९४॥
 मार कहु नही जीवणा । सबही हमारी जात ॥
 धोले कपडे रंग ज्युं । त्युं हरिजन पलटी भात ॥९५॥
 पांच तत्र त्रिगुण लुं । सबही हमारी जात ॥
 पण हरिजन एसे जीवणा । पय धृत ज्युं छास ॥९६॥
 दुर्योधन दावो कर्यो । हम बडकुल मोटे भूप ॥
 विदुर घ भाजी लई जीवणा । दासीकेश पुत ॥९७॥
 दासी पुत्र न होय जीवणा । भक्त हमार ग्राण ॥
 तन मन अरपे भावमु । नाही करु सनमान ॥९८॥
 सनमान करी सरवस दउ । तन मन अरपु ग्राण ॥
 कछु न राखु भक्तमु । मनी भजु भगवान ॥९९॥
 म्माइ रघुपति नामकी । हरिजन ले अघाय ॥
 विमुख होये जीवणा । ते मीन न चाखन पाय ॥१००॥
 गुर्जर खण्डमें प्रगटे । ज्ञानी गोमध नाथ ॥
 दास कवीरे जीवणा । मस्तक दीनो हाथ ॥१०१॥
 मब माधनमाँ जीवणा । गमनाम तत्वमार ॥
 अजामेल गुणका तरी । ते वेद न लहे लगार ॥१०२॥
 तन मन साटे हरि मिले । तो जीवन आसान ॥
 अंत जानेगो जीवणा । नस्क देही निर्वाण ॥१०३॥

केवलीयो मल मारके । तोड़यो कंसको शिश ॥
 लंक विभीषण थापीयो । सो जन जीवणके इश ॥१०४॥
 गम गहेमान जे जपे । जाके होय गुरुपीर ॥
 गुरुपीर नही जीवणा । ते भूत प्रेत शरीर ॥१०५॥
 इन्द्री अपगथण जीवणा । बहुतक करे बुगय ॥
 मानव केनो एक धापडो । जो सुर नर महेले खाय ॥१०६॥
 गमनाम भज जीवणा । जे अंजनी मुनके ईम ॥
 हत्या उतारी लंकेशकी । जे शिव निर्मायल शीश ॥१०७॥
 देह बराबर कोटि बेर । हेम तोली देत ॥
 सो शिव निर्माल्य जीवणा । जो हरिजनसु नही हेत ॥१०८॥
 जीवण जग वहे जानदे । कर रघुपतिमें प्रीत ॥
 सतगुरु हमारे यूं कद्दो । कलिकाल विपरीत ॥१०९॥
 खाया पीया बहुत करी । इन्द्री स्वार्थ धरम ॥
 सीतापनि बिन जीवणा । कटे न एके करम ॥११०॥
 गाड़ी छांहे लंडीयु । जाणे खेचतहुं मोय ॥
 हरि समग्न धोरी जीवणा । तो भरम पडो मन कोय ॥१११॥
 जे मुखमे अमृत चुगा । बुरा क्युं बोलाय ॥
 बुरा बोलत है जीवणा । जहां गुरुपीर नाहिं समाय ॥११२॥
 वेद कितेवथी जीवणा । न्यारे हरिके दास ॥
 स्वर्ग नर्क बैकुंठ तजी । करे हरिचरणकी आश ॥११३॥
 दुध भान सब देत है । आपो कोई न देत ॥
 आपो उभो जीवणा । त्यों लो जन हैं प्रेत ॥११४॥

राजम तामम मान्विक । त्रिगुण भक्ति संमार ॥
 त्रिगुण गहन जे जीवणा । ते मतगुरुके उपकार ॥११५॥
 तन मन अग्ये जीवणा । जाके ताके हाथ ॥
 कल्पवृक्षकुं त्याग कर । देवन बावल बाथ ॥११६॥
 अभे ब्रत एकादशी । नित नित गंगा नहाय ॥
 मीतापति विन जीवणा । काल कलेजा मांय ॥११७॥
 एकादशी लंडी करु । तीर्थ करु गुलाम ॥
 नयने रमैया गमि रह्या । निनमु करु मलाम ॥११८॥
 पीछे निपायो आनमा । करि मांडा विश्राम ॥
 मुख दांत दीया जीवणा । तु क्युं न जपे रथुगम ॥११९॥
 दीया लीजे जीवणा । जो देवे लख कोड ॥
 अन दीया हरम है । न लीजे तनखा तोड ॥१२०॥
 लक्ष्मीचरण मेवा करे । चौद लोक शिराज ॥
 बलद्वारे हरि जीवणा । तीन पांउके काज ॥१२१॥
 धिक् जननी तात धिक् । धिक् मकल परिवार ॥
 गाम डाम धिक् जीवणा । जे कहे रघुपति अवतार ॥१२२॥
 भाईयो बूढापो ढूँकडो । समरो मीनाराम ॥
 हेली हमची खुंदतां । जन्म गयो बेकाम ॥१२३॥
 बाते बडां होत है । अडद शाहुके घेर ।
 ताके पहेली जीवणा । लडके मांडी रेड ॥१२४॥
 चतुर भुजकुं को भजे । अष्ट भुजकुं को धाय ॥
 रामनाम भज जीवणा । जे गोकुल चरावे गाय ॥१२५॥

कोन कर्मथी जीवणा । क्षले जदुपनि राय ॥
 प्रह्लाद पीडयो जब तब । स्थुपनि वेगे भये न महाय ॥१२६॥
 छार छवी मब जीवणा । जहाँ हरिजनका नहीं वाम ॥
 कहा घोडा कहा छापरी । कहा मोटा केलास ॥१२७॥
 संत संगत भावी नहीं । करे मुक्तिकी आश ॥
 पिना कहासु कहेगा जीवणा । जो बेटा जायो दाम ॥१२८॥
 अष्टावक्र आद दई । ब्रह्मा शुकदेव व्याम ॥
 कंस चेगी आगे वे जीवणा । सबको हो गये दाम ॥१२९॥
 यूँ बने नहीं जोवणा । कुलर्दीमां फोडे गोल ।
 आपा माटे हरि भजे । मानु जे हरिको कोल ॥१३०॥
 देख तमामा जोवणा । लांबे पांउ पसार ॥
 हरिजनसु हडमडे । ते वन कृपा करतार ॥१३१॥
 घोडा हाथी देखके । मनमें भूले मीर ॥
 पर आम मब जीवणा । न र ममझत नहीं बेपीर ॥१३२॥
 एक घहुके जीवणा । बहुनक होत पक्वान ॥
 मीतापनि तो एक है । पण जुदे जुदे नाम ॥१३३॥
 दुनीया बोले जीवणा । जे रहो दुनीयाँके पास ॥
 हमारे रजासम है । जे लक्ष्मीचरण निवास ॥१३४॥
 मुख शियाला सुंधके । मडा दीया बहाय ॥
 मुखमे राम न उच्यों । तो जीवण केमे पतियाय ॥१३५॥
 लंकेश मायों जीवणा । सुर मुनि जनके काज ॥
 लंक विभीषण स्थापीरो । एक पंथ दो काज ॥१३६॥

भगन मनोरथ जीवणा । कहा कहा कीयो रुधीर ॥
 कबहुक जोत म्वरूप भयो । कबहुक धर्यो शरीर ॥१३७॥
 अनुभवे अंधो भयो । ज्ञाने न पहोतो प्रेम ॥
 भक्ति मांसो भयो जीवणा । तहाँ सो मुक्तिको नेम ॥१३८॥
 जलबल कोशल होयगा । कोई न करेगो मर ॥
 गमनाम भज जीवणा । आ वेला आ वर ॥१३९॥
 पांच तत्व त्रिगुण लग । उपज्यो सव रंभार ॥
 ताको कर्मा जीवणा । गोकुल मांहि गोवाल ॥१४०॥
 नूरी मेरे लालकी । जीत देखुं तीन लाल ॥
 लाली देखन मैं गई । जीवण भये गुलाल ॥१४१॥
 नूरी मेरे लालकी । जीत देखुं तीन लाल ॥
 बिन बंदगी क्यूँ पाईये । जीवण लाल गुलाल ॥१४२॥
 गन जानी गजगजकी । आये हैं त्रिजगज ॥
 पहेले गोली जीवणा । पीछे होत अवाज ॥१४३॥
 कर्म काटवा जीवणा । औषध गमको नाम ॥
 आंख दुःखेर गूमडो । तो बोर बावलीयो काम ॥१४४॥
 बामन रूप धर्यो जीवणा । बलि चांप्यो धानाल ॥
 मुरणति संकट निवारीया । सो निज जन प्रतिपाल ॥१४५॥
 केवलीयो मार्यो जीवणा । तोड़यो कंसको शिश ॥
 कुबजा कीनी नव यौवना । सो जन जीवणके ईश ॥१४६॥
 ज्यूँ चीड़ी चांच भरी । अपनी तृष्णा बूझाय ॥
 एमे हग्मिण जीवणा । गंगाधाट कहा जाय ॥१४७॥

अजामेल गुणका तरी । पनिन उधारे कोट ॥
 एसो जानो जीवणा । पकड़ी नामकी ओट ॥१४८॥
 कोई केदार पची मरे । काई मका मदीना पीर ॥
 सो साँई हमारे जीवणा । जे जनम जनीका वीर ॥१४९॥
 काहुकुं बल आपका । काहुकुं बलवीर ॥
 हमारे ए बल जीवणा । सीनापनि रघुवीर ॥१५०॥
 त्रिवणी तिकम बाहेगी । छार दृष्टि मंसार ॥
 तोके शिर उपर जीवणा । कर्म धर्म आधार ॥१५१॥
 त्रिवेणी त्रिकम बाहेगी । छार छबो मंसार ॥
 संत संगत बिन जीवणा । बूढा सब संमार ॥१५२॥
 राधारमण सीनापनि । सो जन जीवणके ईम ॥
 गौस्थिनि समरे सदा । जे चरण कालिके शिथ ॥१५३॥
 गुरुहीर नही जीवणा । अलह रामकी आश ॥
 वेद कितेबहु कहा । मबही कालके पाश ॥१५४॥
 नाभि नही तो ब्रह्मा केसे । मुख बिन केसे वेद ॥
 चरण नही तो लक्ष्मी केसे । जीवण भेद अभेद ॥१५५॥
 हा हा तो कमला सुन्यो । थी सुन्यो गजराज ॥
 पहेले गोली जीवणा । पीछे होत अवाज ॥१५६॥
 ॥ इनि श्री प्रमोधको अंग ॥

* ॥ अथ श्री अधाधको अंग ॥ २१ ॥ *

आद अंत सब एक है । मध्य भाया विश्राम ॥
 नाम शरण जन जीवणा । गुणमें सब संमार ॥ १ ॥

जैसा का तैसा हरि । आदि अंत मब एक ॥
 मगन मनोरथ जीवणा । हरि धर्यो गोपको भेष ॥ २ ॥
 निरकार आकार थे । अद्भुत एक अरूप ॥
 मो साँई हमारे जीवणा । जे मीनापनिको रूप ॥ ३ ॥
 निरकार निरधार है । आकारे आनंद ॥
 गोद खेलावे जशोमनी । मो पूर्ण परमानंद ॥ ४ ॥
 ए रूप अरूपे शामले । खेले नंद द्वार ॥
 आदि अँकार ऊपन्यो जीवणा । कोटि ब्रह्माण्ड विस्तार ॥ ५ ॥
 अँकार पहलो जीवणा । सुंदर श्याम स्वरूप ॥
 मो गोकुल मांहि गोवालियो । जे दशरथकुल बड भूप ॥ ६ ॥
 नाभि कमल ब्रह्मा हवा । सो गोकुल मांहि गोवाल ॥
 आदि अँकार ऊपन्यो जीवणा । जे कोटि ब्रह्माण्ड विस्तार ॥ ७ ॥
 नाभि कमल ब्रह्मा हवा । सो गोकुल मांहि गोवाल ॥
 मोर पिछ्ठ शिर गुंगची । सा जीवण ब्रज प्रतिपाल ॥ ८ ॥
 आकार कहु तो अंग नही । अंग बिन कैसे उपदेश ॥
 वारपार नही जीवणा । हरि धर्यो नद्यव वेष ॥ ९ ॥
 निरगुण सिरगुण जीवणा । मो त्रिजकुल चारे गाय ॥
 मरगुण वृषभाणकी दावडी । निरगुण जदुपनि राय ॥ १० ॥
 अषाढ उनम्यो जीवणा । एसो श्याम स्वरूप ॥
 भीतर चमके दामिनी । मो राधाजीको रूप ॥ ११ ॥
 वृदावनकी कुंजमें । खेलत गोपी गोवाल ॥
 मो प्राण जीवण मेरे जीवणा । जे वृषभाणसुता नंदलाल ॥ १२ ॥

लाडु पायो गधिका । अंग भरी चुंबन देन ॥
 ब्रह्मादिक भूले जीवणा । सो सब मखियनके हेन ॥१३॥
 भक्ति भग्वाडां भावती । स्त्रीरच्ची होगये एक ॥
 ब्रह्मादिक भूले जीवणा । अपने मन विवेक ॥१४॥
 शेष सुखामन जीवणा । लक्ष्मा चरण निवास ॥
 नाभिकमल ब्रह्मा हवा । सो नंदघर पीछे छाम ॥१५॥
 कोन भक्ति भग्वाडकी । पाये गब और छाम ॥
 गाँ चरावे जीवणा । वहोन करी उपाहास ॥१६॥
 हास बिनोदे हरि मिले । मुनिजन रहे उदास ॥
 धन्य प्रीत भग्वाडकी जीवणा । पाये गब और छाम ॥१७॥
 कृष्णावतारे कामिनी । घृपनि कीनो जोग ॥
 वेद वचन कहे जीवणा । नारी लीनो भोग ॥१८॥
 पतित्रता पीछे पड़ी । जे गोपीये कीयो व्यभीचार ॥
 गम बिनोदे जीवणा । मिल्यो पूर्वलो भरथास ॥१९॥
 लाडु बाढ़ नंदको । त्रिविध ताप मिट जाय ॥
 कोइ एक शुरु मुख जीवणा । जे हस्ति पीये अद्याय ॥२०॥
 लाडु बाढ़ नंदको । बसुदेव दीनो जाय ॥
 कोडी बदले जीवणा । रतन दीयो ढलकाय ॥२१॥
 पेंडा पग्बन्न नामका । तीन लोक शिखाज ॥
 गोकुल गोवालो प्रगट्यो जीवणा । जोने कीयो अयोध्यां गज ॥२२॥
 दशे अवतारे शामलो । चोवीशे अखण्ड ॥
 सब सखीयनमां जीवणा । व्यापो कोटी ब्रह्माण्ड ॥२३॥

हमिये गौ चरवी नंदकी । सब मखीयनके उपदेश ॥
 प्रेम बदायो जीवणा । ना जाणे शंकर शेष ॥२४॥
 मैं दधि मढ़ी माटे जीवणा । पायो जटुपति गय ॥
 शरीर सोंयो आपणो । तो लीला केसे थाय ॥२५॥
 मजन हमारे रामजी । जे भ्रष्टुभान सुताको धाम ॥
 ताकु धावत जीवणा । मो मजन परमाण ॥२६॥
 कौस्तभ मणि मुख मोस्ती । सुंदर श्याम शरीर ॥
 रूप रेख वपु नहीं जीवणा । एमे है रघुवीर ॥२७॥
 नयन मनुणो शामलो । राधाजीको प्राण ॥
 जन जीवणके हिंदे वसो । जे मागर सुताको ध्यान ॥२८॥
 वैकुंठ छांडी जीवणा । तक्यो गोकुल गाम ॥
 सोल कलासु शामलो । सकल मेवक सुख धाम ॥२९॥
 छपन भोग पूरण भये । पायो दुध और भाथ ॥
 कृष्णवतारे जीवणा । आगेगे खुनाथ ॥३०॥
 पुरुष नकारो जो करे । नार नेडे नहां जाय ॥
 क्रहपित्नीपे जीवणा । जटुपति भये महाय ॥३१॥
 क्रहपि पत्नीपे पाहुणा । हरि गये जीवणदाम ॥
 मन बाँझीन फल पूरके । पूरी अबला आश ॥३२॥
 मोहे निकी लागे जीवणा । जे गाली देन गोवाल ॥
 चार वेद ब्रह्मा पढे । सो मेरे मन काल ॥३३॥
 भग्वाडे भोलवीयो भलो । चौद भुवनको नाथ ॥
 स्त्री एक माखन कारणे । दामन बांधे हाथ ॥३४॥

दामोदर दामन बांधीया । माखन कारण मात ॥
 यमला अर्जुन कारण जीवणा । कोई न जाने धान ॥३५॥
 दामोदर दामन बांधीया । जेने कह्यो जे छोड ॥
 बंधन ताके जीवणा । काटे चोगमी कोड ॥३६॥
 भाग्य बडो ते जीवणा । मथुरां लीयो अवनार ॥
 कहा पंखी कहा मानवी । कहा गोपी कहा गोवाल ॥३७॥
 वृदावनमां जीवणा । सब पंखी करत कलोल ॥
 नंदवर दूलहो प्रगत्यो । हम निरम्बन जुगल किशोर ॥३८॥
 नंदधर दूलहो प्रगत्यो । मुदिन भई सब गाय ॥
 शाम सखा संग जीवणा । मुख चुंबन कंठ लगाय ॥३९॥
 भक्ति हेन भरवाडकी । गोकुल चर्गई गाय ॥
 कंसासुर मार्यो जीवणा । उग्रमेन दीयो छोडाय ॥४०॥
 कोट ब्रह्मांडपति काहानबो । सो आयो गोकुल मांहि ॥
 वेण वगाढी जीवणा । श्री बंसीबटकी लांहि ॥४१॥
 अयोध्याथी आवीयो । गोकुल चरावी गाय ॥
 ब्रह्मादिक भूले जीवणा । हाथ घमे कहे हाय ॥४२॥
 भक्ति हेन भरवाडकी । प्रगटे पूरणब्रह्म ॥
 भक्त मनोरथ जीवणा । हरि कीयो आहिम्को कर्म ॥४३॥
 मोहने जग मोहिया । हर्या ब्रजका प्राण ॥
 वृदावनमां जीवणा । मारे मोरली बाण ॥४४॥
 कछुक गाई कामण कीयो । शिश गुंथन विजनार ॥
 ताथे जदुपति जीवणा । ढोलत धर धर बार ॥४५॥

गरुद वाहन गोपाल नज । नगन पनही नही पाय ॥
 भक्त मनोस्थ जीवणा । हरि गोकुल चारी गाय ॥४६॥
 खाकर्की पुत्री । आवी भग्नुभानके द्वार ॥
 ग्नुपनि छांडी जीवणा । सो शामे दीयो विहार ॥४७॥
 वृंदावनमां शामलो । दधि खाय सब लृट ॥
 ब्रह्मा छल कीयो जीवणा । नवी जुगनि अखूट ॥४८॥
 वृंदावनमां शामलो । मुख मोरली घनघोर ॥
 सब सम्बियनमां जीवणा । जय जय जुगल किशोर ॥४९॥
 निर्गुण मिर्गुण जीवणा । दोय हमारे गम ॥
 वेद धर्ममां ग्नुपनि । निर्गुण गोपीको धाम ॥५०॥
 नंद घरणी जीवणा । हमी हमी चुंबन देन ॥
 निर्गुण ने मिर्गुण भयो । सो सब सम्बियनके हेत ॥५१॥
 कर कमल लई जीवणा । काली नाथ्या कहान ॥
 त्रिज मंडल पावन कीयो । अहिपनि मरदा मान ॥५२॥
 जोत स्त्रूपी वेदे कह्यो । सकल भक्त प्रतिपाल ॥
 ब्रदादिक भूले जीवणा । सो खेले बाल गोपाल ॥५३॥
 वृंदावनमां जीवणा । शामे बजाव्यो बंश ॥
 भक्त हेत अवनार लीयो । प्रगटे मान सरोवर हंस ॥५४॥
 वृंदावनमां जीवणा । दीसे क्षीर समंद ॥
 सब सम्बियनमां गधिका । ज्यू उडघनमां चंद ॥५५॥
 वृंदावनमां जीवणा । जीत देखुं तीन लाल ॥
 सो लाली हरि नामकी । गधा लाल गुलाल ॥५६॥

यह लीला भई जीवणा । भ्रखुभान सुनाके संग ॥
 लालीसुं लाली मली । तब नीकमो रंग मुरंग ॥५७॥
 शेष महेश मब जीवणा । वेद न पावे पार ॥
 नाथे मवथे चुप भली । गाईये नंदकुमार ॥५८॥
 अपने अपने अनुमानमें । मव कोई चतुर मुजान ॥
 हरि लीलाये न रच्यो जीवणा । ताथे देही ममान ॥५९॥
 वरण परमन तरुणी धसी । कीयो कालिंदी सु विचार ॥
 साँईया कहेत जीवणा । में निशदिन ब्रजकी लहार ॥६०॥
 भेद बनायो भासिनी । जमुना भई दो भाग ॥
 वसुदेव दीनो जीवणा । जसोमनि प्रेम मोहाग ॥६१॥
 प्रेम मोहागी शामलो । वसुदेव दीनो जाय ॥
 गोहेन बदले जीवणा । चिनामणि दीनो हाय ॥६२॥
 गोवधन गिगिज पर। गजत है ब्रिजगज ॥
 ईन्द्रे मुछो मेरी जीवणा । ए भक्त मुधारण काज ॥६३॥
 ब्रिज जनकी रक्षा करी । के वाचा बद्ध हनुमान ॥
 के ऋषि रक्षा करी जीवणा । के इन्द्र उनायो मान ॥६४॥
 आप व्यापक व्यापी रह्यो । त्रिलोक ब्रह्माण्ड एकवीस ॥
 ए परमाणु परब्रह्म जीवणा । कहा जाने विरंची ईश ॥६५॥
 अंतर हरि हरि होत है । मुखमे कीयो अनुराग ॥
 ओ नार बड भागण जीवणा । शामे दीयो मोहाग ॥६६॥

॥ इनि श्री अधाधको अंग ॥

* ॥ इनि श्री वैष्णव जीवणदामनी माखीयो ॥ *

(साखी)

*

हरि सा हीग परहरी । करे आन देवकी आश ॥
निश्चय नस्के जायसी । मन भावे रोहिदास ॥ १ ॥
पहले निज मूल सीचिते । जल पहोंचे मब ठौर ॥
ज्ञानी राम संभालतां । माधव रहे न और ॥ २ ॥

अथ श्री

॥ कृष्णदासनी परचरी ॥

सूर श्यामको शांवगे । मीरंको गिरधरलाल ॥
धनुष धारी कबीरको । जीवणको प्राण आधार ॥ ३ ॥
तुलमी रघुवीर छांड कर । धरे भर्खमो और ॥
अंते मारे जायंगे । नहीं नरकमें गैर ॥ ४ ॥



॥ श्री रामकवीर ॥



॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

* ॥ अथ श्री कृष्णदासनी परचरी ॥ *



* ॥ दोहा ॥ *

श्रीहरि गुरु मंतवरण । रुदेकमल होय वाम ॥
काम क्रोध दुःख दुःख मव । तनक्षण होय विनाश ॥ १ ॥
मनगुरु जीवणदासके । मेवक भये उदास ॥
निनकी कथा कहु कछु । मेरी मनि अनुमार ॥ २ ॥
रसिक अनीनको चम्पि । कैमे वस्त्यो जाय ॥
ज्यूं जल बहुत समुद्रका । गागमां न समाय ॥ ३ ॥
* ॥ चोपाई ॥ *

गुरुके चरणकमलशिख नाऊं । प्रीत लाऊं नाने कछु भाषा करि गाऊं ॥
कृष्णदास गुण कहु बखानी । जो कछु संतन मुखमे जानी ॥
आद्य मूल गुजरातही गामा । नहांथे आय इडर कीयो धामा ॥
पिता दामादर पुन्य अभिगमा । तेजबाई मानाको नामा ॥
द्विज मेवाई अन्य ज्यूं कहे । गोत कान्धायनी सब काइ लहे ॥
साखा मान्धायनी होइ । पर्वर पांच जाने सब कोइ ॥
बहुत जोतिषी सब कोइ जाने । गजा परजा मव कोइ माने ॥
अटक दवे ज्यूं कही बोलावे । सबही शास्त्रको भेद बतावे ॥
ताके पुत्र कृष्णदास ज भये । शुभ घडीमें जन्मज लये ॥

मंवन मतरह कार्तिक दुनीया सुदा । वारगुरु रेवती नक्षत्र मुदा ॥
 जोग विशकुंभ और दिन चत्योजामा । नाही छिनजन्म भयो अभिगमा
 माना पिना बहुत सुख पाये । आनंद बहुत वाजिंत्र बजाये ॥
 जोनिषी आय ल्या विचार्यो । दामोदरमुं वचन उचार्यो ॥
 यह पुत्र कोइ देव जु नामे । तेरे पूरण है सब कामे ॥
 हरिका अंश प्रगट भयो आई । तेरे कुलके अघ सब जाई ॥
 सुनन पिना बहुत सुख पायो । भास्य बडो एमो मुत आयो ॥
 एकादश वर्षके जब भएऊ । तब पिना पर्लोक हि गयेऊ ॥
 ता समे एक म्लेच्छ हि आयो । ईदर देव बहोन सुख पायो ॥
 नृप ही निकाम आप ही लीनो । बहोन दुःख लोगनकु दीनो ॥
 सबके लीये खेत अरु गामा । जपत कीये सबहीके धामा ॥
 सब जीव ले के करे पलाई । जो है मंग तहां सब ही आई ॥
 मंवन मतरह बाग में हाक भई । गजनकी भोमी तब गई ॥
 कृष्णदास और माना दोऊ । सुदू वस्ती ग्ही न कोऊ ॥
 गाम हीदोवरमें दो आये । मान पक्षमें रहे सुख पाये ॥
 पढवेकी ईच्छा बहुत करे । पण्डित कहे सो चिन धरे ॥
 पढे वेद जोनिप पुगणा । भास्त वैदकमें भये ज्ञाना ॥
 मंस्कृत प्राकृत पढहि लीनो । सबको अर्थ जान चिन दीनो ॥
 बडे वैद औषध बहु करे । रोगीको दुख देखत हरे ॥
 बडे पण्डित सब कोइ जाने । गजा परजा कही सब माने ॥
 इष्ट देव गणपतिकु माने । और देवकु चिन न आने ॥
 गणपतिको महा ध्यान ही करे । गणपति नाम मुखमे ओचरे ॥

गणपति इष्ट मान्य ही रहे । सुख दुखकी बातो सब कहे ॥
 एक दिन एमी चिनमें आई । हरि की भक्ति पूछु मन लाई ॥
 मनमें गुणी ध्यान जब कीनो । गणपति आय दर्शन नब दीनो ॥
 माग माग ईच्छा का तेरे । जो मागे मो देऊ मवेरे ॥
 कहे तो रज माज सब देऊ । गिद्धि मिद्धिको जाने सब भेऊ ॥
 हाथी घोडे विविध गांऊ । सुन वित धनको देऊ घंऊ ॥
 जो तु मोकु देय बनाई । मो मंपदा मकल दुं भाई ॥
 कृष्णदाम बोले करजोगे । अब तुम सुनो बिनती एक मोगी ॥
 मनने हरिकी भक्ति बनानी । मो क्युं गवत मोते छानी ॥
 गिद्धि मिद्धि तो नस्क ले जाई । मो तुम केसे देड बनाई ॥
 जाते जीव मुक्तिकुं पावे । मनको सब वांधो मिट जावे ॥
 जपन नाम भव मिट जाई । सो सुमरन कहो समजाई ॥
 कहा गुण तु सुनरे भाई । याकी महिमा कही न जाई ॥
 जाको शिव धन्त है ध्याना । जाको जम कहे वेद पुराणा ॥
 देव ऋषि जाहीकुं धावे । स्वोजन ब्रह्मा पार न पावे ॥
 सो उपदेश मनतकु बनाई । नाने आवा गवन नशाई ॥
 रिद्धि मिद्धि तोकु में देऊ । अगम वरतुको मर्म न लहेऊ ॥
 मन्तको संग करो तुम जाई । नाने आवा गवन नशाई ॥
 कहानब मंडल रहे सुखदाई । तहाँ मिल ही मंत जन भाई ॥
 कृष्णदाम वहोत सुख पाये है । गणपति नब अंतरध्यान भये है ॥
 कृष्णदाम नब मनमें विचारे । गुरु करवेकी इच्छा धारे ॥
 धर्म नब पयानो कीनो । कहानब मंडल पर चिन दीनो ॥

गाम पुनीयाद कहत है जहवां । चले चले ही आये नहवां ॥
 गाम की शुभ भूमि पेखी । कृष्णदाम मन हर्ष विशेखी ॥
 पता लींबकी छांहि मांहि । बैठे अहिंया आसन लगाई ॥
 नारणदास मंत सुखदाई । गाम मांहेमे निकमे आई ॥
 देखी स्वरूप रहे लोभाई । कृष्णदामके निकट ही आई ॥
 कुनकी नान रहो क्यां भाई । मकलबात तुम कहो समजाई ॥
 हम तो है द्विजकी जाती । स्थेणी द्राविडमें विश्वाती ॥
 नारणदास बान सुनी जब ही । मंदिरमें ले आये नबही ॥
 सीधो भोजन तुरन मंगायो । अति आनंद सु पाक बनायो ॥
 पाक बनावन बैठे जबही । नारणदाम आये नबही ॥
 कोन देवको धरहु ध्याना । कोन देव हिम्दे ठेगाना ॥
 गणपतिकी हम सेवा करही । त्रिगुण ध्यान हिम्दामें धरही ॥
 त्रिगुण बिना और न कोई । वेद पुराण देख्या जोई ॥
 ब्रह्मा सब सृष्टिकुं करे । विष्णु पाले शिव संहारे ॥
 याने हम जानत हैं भाई । त्रिगुण रूप बिना नहीं उपाई ॥
 नारणदास बोले सुखदाई । तुमकुं में देऊ वस्तु बनाई ॥
 त्रिगुण रूप तुमरे मन आवे । मो मेरो हिम्दे न आवे ॥
 तुम एक बान सुनो चित लाई । वेद माग देऊ बनाई ॥
 ब्रह्मा मन विचारज करीयो । पूरण ब्रह्म कहां अवनरीयो ॥
 वेद विचार कर्यो है जबही । बृंदावन बनायो नबही ॥
 तनक्षण ब्रह्मा ब्रिजमें आये । महाप्रसाद तोहु नहीं पाये ॥
 वाकी कथा दशममें कही । शुक्र प्रत्ये परिक्षिते लही ॥

श्रीकृष्ण पूरण ब्रह्म ठेराये । सब संतन मिली ओही गाये ॥
 ब्रह्मा ग्वाल बत्म हरि गये । कृष्ण कृपाये और ही भये ॥
 वर्ष मास लु सुधी न परी । ब्रह्मा आय विनती तब करी ॥
 कृष्णकुं पूरण ब्रह्म ठेगाया । नाते हमारे हिरदे आया ॥
 और शिवजीकी कथा सुन भाई । जाते भर्म मबे मिट जाई ॥
 कृष्ण रूप गोकुलमें लीनो । शिवजी आय दर्शन तब कीनो ॥
 नगसिह मेहेनाकी बान कहुं भाई । याते मब संशय मिट जाई ॥
 नगसिह भगन ध्यान जब कीनो । शिवजी आय दरशन तब दीनो ॥
 माग माग कहनहुं नौही । तुमकुं बलभ मो देऊ मोही ॥
 तब तो वृदावनमे लाये । गस समेत श्रीकृष्ण देखाये ॥
 श्रीमुख नगसिह जे गाई । शिवप्रमाद वा निधि पाई ॥
 और बातकी सुनो निशानी । रामायणमें कही मो बानी ॥
 मीना रूप पाखनी कीनो । सनीको संग छांडी शिव दीनो ॥
 एही अंग परम कह तेरो । दास्य भाव क्यों कर रहे मेरो ॥
 मध्यकृष्ण और मीनागमा । या छांड और लीजे न नामा ॥
 लक्ष्मीही रूक्षणी अवनयाँ । ताका तुमही कहो विस्लारा ॥
 श्रीकृष्ण प्रत्ये रूक्षणी युं कही । कृष्ण लीला तुम देखावो सही ॥
 ब्रजलीला कमला नही आई । या लीला भागवतमें गाई ॥
 ब्रजरज उद्धव हिरदे गावी । शुक परिक्षित आगल भावी ॥
 त्रिगुणथे एही रूप अनुषा । मो तो जान मंत स्वरूपा ॥
 कृष्णदास कहे करजोगी । मंशय गांठ सबे गई मोगी ॥
 मंत साख अब मोही बतावो । मेरो सब संदेह मीटावो ॥

आगे कबीर बोले है बानी । रामकृष्ण विना कछु न जानी ॥

॥ तहाँ कबीरजीको वचन ॥

अंधला लकुटीया मैं पाई ।

मूरख लोग कहा जाने । मनगुरु मोकुं दर्द बताई ॥ टेक ॥

एणी लकुटीये हिणाकुश मायो । एणी लकुटीये प्रहाद उगायो ॥ १ ॥

एणी लकुटीये माहेर बांध्यो । एणी लकुटीये रावण मायो ॥ २ ॥

एणी लकुटीये गोवाल गौ चारे । एणी लकुटीये कंस कुल संघारे ॥ ३ ॥

कहे कबीर लकुटीया एकी । सब मिली मेवा करो याहीकी ॥ ४ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

नामदेव लीला एही गाई । ताहीके हरि भये महाई ॥

॥ तहाँ नामदेवजीको पद ॥

सब धन कबहु न लागे काँड़ ।

गुरु परमाद संतको संगत । भाग्य बडे बनी आई ॥ टेक ॥

गजा चोर न लूटे । धरनी धरो न जाई ॥

खस्चन खावन घटन न कबहू । दिन दिन होन मराई ॥ १ ॥

मुमरण जहाज मनगुरु खेवटीया । इसा विधि उनरो भाई ॥

छांड गोपाल आनं जो समरु । जन नामदेव दोहाई ॥ २ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

एसी वस्तु अगम हम पाई । जीन पाई तीन ही बताई ॥

ताकु छांड और रूपकुं धावे । मो चेला काल मुख जावे ॥

पीपा यह सरूप ठहराना । जयदेव कृष्ण रूप ही गाया ॥

॥ पीपाजीको पद ॥

दातन कीजे गिरिविघारी ।

ऊंबाको दातन कनककी झारी । जलभर लाई राधाजी प्यारी ॥ टेका ॥
वाधो पहेगे पाध ममारो । मेनी भगत दर्पण ले रे निहारो ॥ १ ॥
कैमङ्को तिलक कंठे तुलसी माला । —

— पीपाजीको स्वामी मिल्यो मदन गोपाल ॥ २ ॥

॥ तहां जयदेवनुं वचन ॥

धीर समीरे यमुना तीरे । वसति वने वनमाली ।

गोपी पीन पयोधर मर्दन । चंचल कर युग शाली ॥

रामकृष्ण कमाल ही जाण्या । माधोदाम उरमें यह आण्या ॥

॥ तहां कमालजीका रेखता ॥

प्रेमके आगे तो नेम पाणी भरे । कर्म और धर्म द्वार अद्वा ॥
वेद कनेबकुं कोन बुझे । प्यारे नंदके लालसुं प्रेम वाढा ॥
कहेत कमाल कबीरका बालका । लोभ और मोह हंकार छांडा ॥

॥ तहां माधोदामजीका वचन ॥

माधोदाम महानिधि लीला । गाय गाय जन पास भये ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

नगमिह मेहेते कही यह माखी । मीर्गवाई एह उर गखी ॥

॥ तहां नगमिह मेहेताको पद ॥ गग प्रभान कडखा ॥

अवतार मानवीयानो सखे कोने आपता । भूतल नरमैया नाथ वहाला ॥
कदापि अवतार आपो जो श्रीहरि । तो रुडा नंद गोविंद गावा ॥

॥ तहाँ मीरवाईंको पद ॥ रग मारु ॥

एक वयों गिरिधारी—वाई में तो ।

आनदेवकुं जो शिर नामु तो । करी मरु कंठ कटारी ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

सुर परमानन्द एह रम गायो । तुलसीदामके मनमें आयो ॥

॥ तहाँ सूरदामजीको पद ॥

सतगुरु कहो कहनहुं तोसुं । गमकृष्ण धन मचवो ॥

सूरदास स्वामी समरण बिना । जोगी कपि ज्युं नचवो ॥

॥ तहाँ परमानन्दजीको पद ॥ रग भेष्व ॥

कुमुम सुवास सुगंध सेजपर । आगे धर मन मोद बडाऊ ॥

परमानन्द निरग्नी यह लीला । भूले तुम तजी अनन न जाऊ ॥

॥ तहाँ तुलसीदामजीको पद ॥

वणु अवध गोकुल गाम । इहाँ विगजित जानकी वर उहाँ श्यामांश्याम ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

अग्रदाम भये रग उपाशी । जशवंते भगत समर अविनाशी ॥

॥ तहाँ अग्रदामजीको पद ॥

एही स्वभाव परो मेरी बानी ।

अहर्निश गावु गुण पावन । रघोगय जानकी रानी ॥

॥ तहा जशवंतजीको पद ॥ रग मारंग ॥

हम तो चेरे हैं वा धरके ।

विन ही मूल बेकाते लीने । सेवक सीनावरके ॥

* ॥ चोपार्द्दि ॥ *

व्यास मेवक उपाशी । हरिदास हरि अपने कर लीने ॥
॥ व्यामजीकी साखी ॥

गधा बल्लभ परम धन । यह स्मीकरणकी घर बात ॥
चार चरण अंकित मदा । निरखी व्यास बल जान ॥

॥ तहां हरिदासजीको पद ॥

हरिदासके स्वामी शाम कुंजविहारी ।

गौडदेश चतुभुज तारो । कृष्णनाम विना और न ऊचारो ॥
॥ चतुभुजजीका कवित्त ॥

कर्म कृष्ण केहे कीत । कवन अवकाशजु भजही ॥

* ॥ चोपार्द्दि ॥ *

कुबेरजीशम येह गाया । रामदास राम ए पाया ॥
॥ कुबाजीको पद ॥

लेहो पीया धनुष दुरधर । ओढो पिताम्बर खेलो होरी फाग ॥
जनकसुना बुं कहन रामसे । जागो परम सोहाग ॥

* ॥ चोपार्द्दि ॥ *

तुम दरशन अधर्मोचन मेग । भवमागरके भये हे उवेरा ॥
कृष्णदास बोले कर जोरी । मंशय गांठ दई सब तोरी ॥
एक अनुग्रह मोकु कीजे । शिक्षा दे कर दिक्षा दीजे ॥
तब बोले नारणदासा । सुनो पवित्र हरिके दासा ॥
जीवणदास मनगुरु है मेग । दरशनतें कर्म रह न तुमेरा ॥

कृष्णदासकु संगही लीये । श्री जीवणके मंदीर गये ॥
 श्री जीवणदास नयन जब देखे । जीवण जन्म सुफल करी लेखे ॥
 हाथ जोर चरणे शिश नायो । प्रेम प्रीत उरमें वहु छायो ॥
 नव बोले श्रीजीवणदासा । कुनही जात कहाँ है वामा ॥
 नारणदास बात सब कही । दिक्षाकी इच्छा मनमें भई ॥
 सामी कहे रसोई कीजे । पीछे तुमकुं दिक्षा दिजे ॥
 मंदीर पीछे बाग है जहाँ । जीवणजी ले गये तहाँ ॥
 जल भगय चोकाकर लीनो । सीधो सबही आनके दीनो ॥
 पाक बनायके भोग ल्यायो । पीछे जीवणके ढिग आयो ॥
 चरचा गोष्टि बहुत नव कीना । गुरु धर्मको माग चीना ॥
 अब मेरे मस्तक कर धारो । मनको मंमय सबही धारो ॥
 बात करन सब संनही आये । जीवण सब वृत्तांत सुनाये ॥
 सकल संतके मनही आई । कृष्णदास रहे शिर नाई ॥
 सबही देखत दिक्षा दीनी । एक बात अचरजसी कीनी ॥
 जीवण निजमाला ऊतारी । कृष्णदासके उर दई ढारी ॥
 सब संते विनती कीनी । निज माला तुम कैसे दीनी ॥
 जीवणदास कहो जेतीबाई । माला बान कहो ममझाई ॥
 माला जेती नवही बोले । आद अंतके अंतर खोले ॥
 वृद्धावन जब लीला करते । संगे गोवाल बोलाय विचरते ॥
 हमन हमावन बोलत तीहाँ । ओ रम जानके आये ईहाँ ॥
 जीवण सुनत बहुत सुख पाई । सब संतके ऊरमें आई ॥
 सब ही सुनत जीवण यह भाखी । तेही ममय बोले यह साखी ॥

॥ साथी ॥

सब मन्त्रियनमें राधिका । सखहनमें बलवीर ।
व्यास विवेकी जीवणा । कालिन्दीके तीर ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

याते जीव बहुत निम्नर है । भक्तिका विस्तारज करी हैं ॥
कृष्णदास बोले शिर नाई । ए तो भार लीयो नही जाई ॥
कृपा करी सतगुरु जो कहे । यामें भार काहेका रहे ॥

॥ साथी ॥

त्रेकोट तिहारी नार । बांद गुलामां जोईमे ॥
अम नणो परवार । वेची आपे विठ्ठला ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

गमकबीरको नामही दीनो । कृष्णदास अपनो कर लीनो ॥
नाम सुनत अचरजही भयो । कृष्णदास उत्तर तब दियो ॥
गमनाम सब कोइ जाने । कबीर नामकु कोइ न पहेचाने ॥
कोइ कबीर कबीर कही गावे । गमकृष्ण हिरदे नही आवे ॥
मो नाम तुमही बतायो । नाके' मोही मंदेह मीटायो ॥
तब जीवणदास कहे ममशाई । कृष्णदास सुनो चित्त लाई ॥
कबीर आदि पुरुषको रूपा । विठ्ठला जाने मन स्वरूपा ॥
कबीरकी महिमा कहु विस्तारी । पद अनि सुनाऊ न्यारी न्यारी ॥
धर्मदासपर कृपा कीनी । परम भक्ति तबहि गई चीनी ॥
जीवानत्वाके भये सहाई । नाने अविगतिकी गति पाई ॥

पद्मनाभ बनीक एक भये । नाम बनाय अपनो कर लये ॥
 शाह सुलतान अपनो कर लोनो । दामी रूप धरी दरमन दीनो ॥
 नानक बछनाद दो भये । कृष्ण कर अपने कर लये ॥
 गोग्वको मंदेह मीठायो । तवही आय चरण शिर नायो ॥
 ज्ञानीकु भये कबीर महाई । गमकृष्ण जीने दीये बनाई ॥
 ज्ञानीके गुरु कबीर भये । मनके मब मंशय गये ॥
 तब ज्ञानी मन कीया विचार । गमकृष्ण मम कबीर निर्धार ॥
 गमकबीर यह नाम उहगया । मब संतन मली एही गाया ॥
 ताके परमोधमें हम ही भये । गमकबीर मंत्र चिन दिये ॥
 तब रामकबीर नाम उहराई । मोही तुमकु दीये बनाई ॥

॥ साखी ॥

ज्ञानीके परमोधमें । उदा जीवणदाम ॥
 आन मारग मब छाँडके । मीनापनिकी आश ॥ ६ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

एक गांड और है भाई । सो तोकु में देऊ बनाई ॥
 आद रूपके मन यह आई । मकल सृष्टि काल मुख जाई ॥
 तब कबीर तहां लीये बोलाई । तुम एक बत सुनोरे भाई ॥
 मब मंमार कलमुख जावे । ताथे कोइ मोही नही पावे ॥
 ताथे तुम प्रगटो जग जाई । काल मुखथे लेहो बचाई ॥
 जो को जीव अपना छोई । शब्द तिहार माने मोई ॥

॥ साखी ॥

गम बैठ विचारीया । साखी कहो कबीर ॥
 भवसागस्मां इवतां । कोईक पावे तीर ॥ ७ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

कहे कबीर सुनो हरि गय । एह वात मोरे सही न जाय ॥
कर्म काण्डमां रहे जाई । मेरे शब्द न माने तेही ॥
॥ साखी ॥

कबीर धरती तो हाँडी भई । ढांकण भया आकाश ॥
चार वेद काठी भई । जीवका कहा निकाश ॥ ८ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

तब बोले हरि गय गोमाई । कर्म काठ तुम देहो बहाई ॥
तुमारे शब्द सुने जे कोई । ताको जन्म परग नही होई ॥
॥ साखी ॥

जहाँ तुम ही नहाँ हमे । हमे नहाँ तुम होय ॥
सो निश्च कर रखही । पारही पहाँचे सोय ॥ ९ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

तुम विना जे मोकु ध्यावे । मो नर कबहु पार न पावे ॥
तुमकु ध्याय मोकु नही जाने । परमपद मो नही पहीचाने ॥
तुम वासन में रस रे भाई । वासन विना रस कहाँ रहाई ॥
तुमारे शब्दने वासन हृद होई । ता वासनमें जानो मोही ॥
रस विना वासन क्युं सोहाये । वासन बिन रस क्युं रहाये ॥
सतजुगमें मेरो श्रेत ही रूपा । तबही तुम सत शब्द सरूपा ॥
त्रेतामे रघुपति होय आया । तब तुम लछमन नाम धराया ॥
द्वापरमें नन्द वेर राजे । ता दिन बलभद्र रूप विराजे ॥

आद्यरूप बृंदावन माही । तहाँ तुम ललिता रूप धराही ॥
कलजुग माँह रहु अरूपा । तब तुम काशी कबीरको रूपा ॥
ताथे तुम जग प्रगटो जाई । सब जीवनकी सुधी लो भाई ॥
एह कथा हरिये जब कही । तब प्रगटेकी इच्छा भई ॥

॥ साखी ॥

जे कबीरको शब्द गहे । ता घट मेरो वाम ॥
कर्म पाश पढे नही । सो जानो निज दास ॥१०॥

* ॥ चोपाई ॥ *

तब काशीमें प्रगटे आई । कर्म मारग सब दीया बहाई ॥
एह रूप कबीरको भाई । या रूप में दीया बताई ॥

॥ तहाँ कबीरजीनी गुहाई ॥

तु मेरा दाता राम में तेरो भक्ता ।

॥ तहाँ आरनिनी गुहाई ॥

आरति बंदी छोड समरथकी । पावन नाम मुगत होय जीवकी ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

श्री कबीरको शब्द है जहाँ । रेरंकार बसत है तहाँ ॥
ए रूप मेरे मन आया । ताथे रामकबीर बताया ॥

॥ साखी ॥

कबीर भये केतका । अमर भये सब दास ॥
जहाँ जहाँ कथा कबीरकी । तहाँ तहाँ राम निवास ॥११॥

* ॥ चोपार्द ॥ *

दो गुहार्द तोकुं कही । अब गुहार्द और कहुं सही ॥
 कबीर नामका अर्थ ही कहुं । तेरे मब मंदेह दहुं ॥
 कोई जानि स्वरूपकु धावे । कोई ॐकार मन लावे ॥
 कोऊ जोग धारना धरही । कोई देवीकुं अनुमग्नी ॥
 कोई कर्म कांड मन लावे । कोई त्रिगुण देवकुं धावे ॥
 कोई तीर्थ ब्रतकुं करे । कोई कुलदेवी अनुसरे ॥
 कोऊ वेद पुराण बवाने । कोऊ तीर्थ पत ठाने ॥
 कोऊ होम जगनज करहे । हरि बिन ठौर ठौर चिन धरहे ॥
 कोऊ महामाया ध्यावे । कोऊ चंद सूर्य शिर नावे ॥
 कोऊ रिद्धि मिद्धिकी आशा । ऐमे जीव परे बहु पाशा ॥
 कोऊ वैद्य जोनिषी माने । हरिकी गीति कोई नहीं जाने ॥
 कबीर रेंकार बनावे । और वातके निकट न जावे ॥
 निरमलभक्ति जा जनको होई । हरि गहेत ता घटमें गोई ॥
 निरमल भक्ति कबीरज कीनी । ता घट वाम कीयो हरि चेनी ॥
 रेंकार रूप धरी जावे । तीहां कबीर मंध चली आवे ॥
 जहां कबीर नहां रेंकारा । रेंकार तहां कबीर आधारा ॥
 रेंकार कबीर ही गाया । नाथे रामकबीर उहेगया ॥
 और वान मुनो चिन लाई । जामें मब मंदेह मिट जाई ॥
 गधाकृष्ण बृंदावन वामी । पूरण ब्रह्म आद्य अविनाशी ॥
 वेद पुराण जाहीकुं ध्यावे । खोजन ब्रह्मा पार न पावे ॥
 मब मंतन मली यह राम गाया । मनगुरु हमकुं एहो बनाया ॥

राधाकृष्ण आद्य स्वरूपा । निरगुण मरगुण एही अरूपा ॥
 निरगुण है निजकुंज निवासी । सरगुण है स्वपकी रासी ॥
 निरगुण सरगुण एक शरीरा । मो खेले कालिंद्री तीरा ॥
 नाके मंग सखी एक रही । ताकी महिमा कोऊ न लही ॥
 नाको नाम कहे गुरु रूपा । राधाकृष्ण के गुरु है अनूपा ॥
 गोपाल सुंदरी कोऊ कहि गावे । कोऊ ललीता नाम ठहरावे ॥
 एह स्वरूप कबीरको जानो । यामे कलु भिन्न न आनो ॥
 गुरु बिना कृष्ण कृपा नहीं करही । एही बान हिरदेमें धरही ॥
 रामकृष्णको गुरु ललीता भये । ताथे रामकबीरज दये ॥
 कबीर नाम प्रगट जब गावे । रेरंकार तहाँ चली आवे ॥
 दुजी गोष्टि कहुं प्रकासी । सब संदेह जान है नासी ॥
 जाने मन प्रतीत ही आवे । सब संदेह दूर नसावे ॥
 ॥ माखी ॥

सूर श्यामको शांवगे । मीरांको गिरधरलाल ।

घनुषधागी कबीरको । जीवणको प्राण आधार ॥१२॥

* ॥ चोपाई ॥ *

रेरंकार बिना और न जानो । देवी देव कलु नहीं मानो ॥
 रामकबीर जेही मुख गावे । और बातके निकट न जावे ॥
 राधा कृष्णके गुरुही भये । ताथे रामकबीर ही लये ॥
 एक गोष्टि आधी कही भाई । सोमें तोकुं कहु बताई ॥

॥ माखी ॥

कृष्ण कबीरको जे तजे । कुल न ऊगे सूर ।

ए ब्रत जाके जीवणा । जाके मोढे नूर ॥१३॥

* ॥ चोपर्दि ॥ *

आ माखीको मन ए भायो । जामे प्रगट अर्थ दम्शायो ॥
कबीर ध्यान कृष्णको करही । कृष्ण कबीर नित्य अनुसरही ॥
कृष्ण कबीर हिरदेमें आवे । मोई निज धामकु पावे ॥
अरस परस ए रूपही बन्यो । ताथे में हिरदेमें गुन्यो ॥
॥ साखी ॥

स्वामी सेवक कछु नही । नही गुण अवगुण निवाम ।
पाप पुन्य दोऊ नही । तहाँ दम्शन पावे दास ॥३४॥

* ॥ चोपर्दि ॥ *

मनगुरु कहीये दाम कबीरा । ए ब्रत गखे संत मुधीर ॥
गुरु मोही मनगुरुही बनावे । और बातके निकट न जावे ॥
ओ तोही निज ठोर बनाया । ताथे रामकबीर उहेगया ॥
ताकी एक सुनो निशानी । गुरु कृपाथे जाये जानी ॥
व्यास श्रीवृद्धावनमें रहे ।....
जुगल रूपके खरे पीयारे । छिन एक तहांनी रहे न न्यारे ॥
एक दिन जुमना नहानेकु आये । संत जन कोउ बेठे पाये ॥
सो संत कबीरको पदही गाये । सो व्यासके चित नही आये ॥
ससकु छांड का निर्गुण गावे । एसो विचार चितमें लावे ॥
यहांथी चले मंदीरकुं आये । बेठ आशानपर ध्यान ल्याये ॥
जुगल रूप हिरदे नही आवे । पद माखी विसर सब जावे ॥
चिंतातुर व्यास नब भये । चले चले तहाँ जु गये ॥
जुगल भावना चित थे गई । सो दुःख मोपे परत न कही ॥

तब तहां हिनजु बचन ही बोले । ऊ अंतर तहां सबही खोले ॥
 बहुत अपराध तुमहीकुं भयो । जुगल रूप हिरदे थे गयो ॥
 व्यास कहे कोऊ में न मंताप्तो । एकही दोष हिरदेमें लीयो ॥
 निग्गुण मन कोई एक आये । तिन-कबीरके पद ही गाये ॥
 समकुं छांड कहा निग्गुण गावे । एसो मेरे मनमें आवे ॥
 हिनजु सुन बहुत दुःख पाये । बडो दोष हिरदेमें लाये ॥
 हमनो महाम छकके पीयो । जुगल रूपके सब कह दीयो ॥
 ईननो महाम स पीय पचाये । नाथे निग्गुण रूपही गाये ॥
 जुगल रूपके एही प्यारे । एके छिन यहां ते न न्यारे ॥
 एसो दोष कीयो तुम भाई । गधाकृष्ण हिरदेते जाई ॥
 जब कबीरको जम तुम गावो । तब जुगलरूपको दर्शन पावो ॥
 व्यास कबीरजीके जम गाये । जुगल रूप हिरदे तब आये ॥
 गुरु कृपाथी मर्मही पावे । गुरु कृपा बिन कोन बतावे ॥

॥ तहां व्यासजीको पद ॥ गग सारंग ॥

माचे भक्त कबीर कलिमे । माचे भक्त कबीर ॥
 जबमें चरणकमल रुची वाढ्यो । तबथे बन्धो नहीं चीर ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

जो कबीरको दोष विचारे । ताका हरि कारज क्युं सारे ॥
 जुगल रूपके एहा प्यारे । कबीरते पल रहत न न्यारे ॥
 हिनजुके मेवक जु भये । सीकमालमें सब कह दये ॥
 व्यास चग्नि कही यह कथा । वरणीसो मेरी मति जथा ॥
 जो कबीरको दोष विचारे । जन्म पदास्थ मेजे हारे ॥

एसो व्यास हिंदेमें आन्यो । कबीरजु कलु ग्म नहीं जान्यो ॥
ताथे जुगलरूप भये न्यारे । कबीरने कोइ और न प्यारे ॥
एही ग्म कोई विरुद्ध पावे । भाग्य बढ़ो ताके ऊर आवे ॥

॥ साक्षी ॥

कबीर रूप अरूप है । मोपे कहो न जाय ॥

जुगल रूपके गुरुपहै । ललीता नाम कहाय ॥१५॥

* ॥ चोपार्द ॥ *

गुरु निन्दा सेवक सुने कोई । जुगमें भलो न कहेवे कोई ॥
जो कबीरको दोष बिचारे । राधाकृष्ण हिरदे क्युं आवे ॥

॥ साक्षी ॥

निरमल हिरदो व्यासको । नाथे परी है मूँझ ॥

और गुण श्रहे कबीरको । नाकु न जान अबुँझ ॥१६॥

* ॥ चोपार्द ॥ *

कृष्णदाम में तोकुं कही । मोही बात मान ले मही ॥
रामकर नाम यह नीको । या बिन जान सब फीको ॥
सुनके कृष्णदाम मुख पाये । मेरे सबे भर्म मिथ्ये ॥
तुम गुरु मही सतगुरुही बनाये । मेरे सब संदेह गमाये ॥
जे गुरु सता सतगुरु बनावे । भाग्य बढ़ो ऐमो गुरु पावे ॥
सो गुरु तो सतगुरुही समाना । सतगुरुको बनावे ध्याना ॥
कृष्णदाम सुनी बहुत मुख पाया । हाथ जोग चरण शिश नाया ॥
गमकबीरकी सुनी निशानी । एही बात हिंदेमें जानी ॥

कृष्णदाम बोले शिखनामी । एक बात कहो मोहि स्वामी ॥
 कुन सेवा पर चिन दीजे । कुन प्रतिमाकी पूजा कीजे ॥
 सो तुम मोहोकुं देहो बताई । जाते मन मंथय मिट जाई ॥
 तब जीवण बोले सुख दाई । कृष्णदाम सुनो चिन लाई ॥
 मनजुगमें मनभक्ति करही । त्रेहनामें नपैकुं अनुसरही ॥
 द्वापरमें पूजा आचारा । कलजुगमें एक नाम आधारा ॥
 नामही सेवा नामही पूजा । नाम विना देव नही दूजा ॥
 नाम लेत सेवा मब आई । नाम विना नही आन उपाई ॥
 नाम भावे ले रूप ही आवे । नाको भेद कोई विग्ला पावे ॥
 नाम ले सेवा चिन भावे । आद रूप मब विमर जावे ॥
 गधाकृष्ण आद दोऊ रूपा । नाहीको है नाम अनूपा ॥
 शधाकृष्ण नाम चित लावे । तहां रूप आपे चली आवे ॥
 नाम ले और रूप न माने । सो केमे कर हस्कुं जाने ॥
 नाम रूप जा घटही बासा । सोई मन हरिका दामा ॥

॥ साथी ॥

नामसे शत्या तरी जीवणा । रूपे बांधी पाज ।

नाम रूप जा जन न है । नाको मरे न काज ॥१७॥

कबीर ब्रह्मादिक सुर मुनि जना । प्रेम पीवनकी आश ।

शरीर सांसो मीठ्यो नही । ताथे चले निराश ॥१८॥

कबीर साचा मतशुरु जब मिले । तो मन बतावे राम ।

मरजू तीरे खेलके । आयो गोकुल गाम ॥१९॥

* ॥ चोपार्द ॥ *

राम है अयोध्याके वासी । कृष्ण गोकुलके निवासी ॥
यामे फेरफार मन जानो । एही कह्यो सनगुरुको मानो ॥
॥ साथी ॥

कौस्तभमणि मुख मोरली । सुंदर श्याम शरीर ।
सो नन्द द्वारे जीवणा । जे दशथ कुल बडवीर ॥२०॥

* ॥ चोपार्द ॥ *

येही रूप हिरदेमे धारे । येही नाम रमना ऊचारे ॥
ईनकी छाया मूरन कर्ही । मब कोई मूरनकुं अनुमर्ही ॥
मूल छांड छांयाकुं ध्यावे । आद रूप बिमरही जावे ॥
आदरूप हिरदेमे धारे । ताको नाम रमना ऊचारे ॥
ए में नोकुं कही निशानी । और बात कहु मन मानी ॥
कोऊ मच्छरूपकुं ध्यावे । कोऊ कच्छपकुं बतावे ॥
कोऊ सीताकुं मन लावे । कोऊ राम लक्ष्मण गुग गावे ॥
कोऊ गधे गधे कर्ही । कोऊ गिर्धारी चित धरही ॥
हमारे रामकृष्ण दो नामा । गुरु कृपाथे सरही कामा ॥

॥ तुलमीदामजीको पद ॥

बरनु अवध गोकुल गाम ।
इहां बिराजित जानकी वर । उहां श्याम श्याम ॥

॥ तहां माधोदामजीको पद ॥

स्वुकुल जदुकुलकी बलीहारी । माधोदाम आये शरण तुमारी ॥

॥ तहां परमानन्दजीको पद ॥ राग भूपाल ॥

मदनगोपाल हमारे श्रीराम ।

ईनही धनुष ईन विमल बेन कर । पीन बसन और तन घनश्याम ॥

॥ तहां सूर्यदामजीको पद ॥

खुन सुन कथा कहुं प्यारी ।

कमल नयन मन आनंद उपन्यो । रसीक लीलामें देन हुंकारी ॥

॥ सत्त्वी ॥

कवीर गमकृष्ण अवतार कहे । मन धावे चहुं और ।

ए अपराधी जीवकु । चौदलोक नहीं थेर ॥२१॥

॥ तहां जयदेवजीको पद ॥

जनकसुनाकृतभूषण । जित दृष्ण ए ।

समरथमिनदशकंठ । जय जय देव हरे ॥

॥ तहां कृष्णदामजीको पद ॥

ग्युवंशी गजा श्रीराम कनैया । दशरथ सुन बसुदेवका छैया ॥

॥ गोविंददामजीकी लीलाको पद ॥

आकार कहु तो अंतपरे । निराकार निरंजन हरि ।

अयोध्या तजी गाकुल आवीया । प्रगट प्रभु लीला करी ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

एक याकोर कंसपति दोऊ । तामे हीन कहेमा कोऊ ॥

एही इष्ट मन गुरु बताई । मकल मंतकी देइ गोहाइ ॥

कृष्णदाम सुनी सुख लाये । मेरे मनके मब मंदेह गये ॥

कुन विधि भक्ति अनीनज कीजे । सो परमोध मोहे दीजे ॥

जीवणदास बोले सुख पाई । जो पूछो सो कहु समझाई ॥
 अनीन व्रत जब चितमें आवे । सो जन भक्ति सेजे पावे ॥
 आनदशाके निकट न जावे । अनीन व्रत ग्रही हस्तिण गावे ॥
 देवी देवकी आश न करही । हरि विना और हिरदे न घरही ॥
 पतिव्रता धर्म रहे सो मंता । और भेषज जाने सब अमंता ॥
 हरि भजे आनदेवकुं ध्यावे । माला तिलक नीके बनावे ॥
 संत संगत बहोत ही करे । आनदेव माथे नम्ही परे ॥
 जेसे गंगाजल एक भर्यो । तामे सुरा बुंद एक पर्यो ॥
 सो जल कोउ न पीवे भाई । त्युं आनदेव मंग भक्ति जाई ॥
 पनिव्रता पनही त्यागे । सो केमे पनिकुं प्यारी लागे ॥
 यों भक्ति करी आनकुं ध्यावे । सो केमे कर मोभा पावे ॥
 केसरकुं मृदही त्यागे । ज्यु गेरुपर चिन लगावे ॥
 चंदनकुं त्यागके कोई । भस्म लगावे अंगे सोई ॥
 जेसे मूरख पानकुं त्यागे । लाग चावत केमो लागे ॥
 अजा स्तनकुं दीन बहाई । कंडके स्तनकुं पकरे जाई ॥
 कल्पवृक्षकुं छाडे जोई । रेत रहीन बैठे कोई ॥
 सिंघ सुन जो भुख्यो होई । जाई भंगालकुं याचे सोई ॥
 ज्युं हरि तजी अन्यकु याचे । केमे कर हरि ताहे गचे ॥
 मेरो कह्यो हिरदे नही आवे । मंत शब्द मव माखे बनावे ॥
 श्रीमुख ज्युं परिक्षन मन कही । अनीन व्रत ता संगते लही ॥
 द्वितीय स्कंध तृतीय पद । अनीन व्रत तहां बताय ॥
 मेरो कहो न मानो भाई । श्री भागवत तुं सुनरे जाई ॥

॥ श्लोक ॥

वामुदेवं पश्यिज्य । अन्यदेवमुपासति ॥
तृष्णितो जाह्नवी तीरे । कूर्पं खननि दुर्भनिः ॥

॥ तहाँ सूरदासजीको पद ॥

ता थकोर भले बुरे तो तेहरे । आनदेव सब रंक भिखारी ।
ते सब छांड अनेरे । सब तजी तुम शरणो ते आयो ॥
उपर करो प्रभु रे ।

॥ तहाँ तुलसीदासजीकी ॥ साखी ॥

तुलसी खुबीर छांडकर । धरे भरसो और ।
अंते मारे जायंगे । नहीं नरकमें ठौर ॥२२॥

॥ साखी ॥

सब सारदूल जीवणा । एमे हैं खुबीर ।
आनदेव ही जंबूका । नर ममरे बेपीर ॥२३॥

॥ गेहीदासजीकी ॥ साखी ॥

हरिमा हीर परिहरि । करे आनदेवकी आश ॥
निश्चय नरके जाय सी । मन भाखे गेहिदास ॥२४॥

॥ पीपाजीकी ॥ साखी ॥

अमलीका जीव अमल है । बालकका जीव माय ॥
आनदेव तज हरि नामसुं । पीपा वारंवार मन लाय ॥२५॥

॥ श्री ज्ञानोजीकी साखी ॥

पहेले निज मूल मीचते । जल पहोंचे सब ठौर ॥
ज्ञानी राम संभालतां । साधन रहे न और ॥२६॥

॥ मीरांबाईको वचन ॥

बाई मैंतो एक वर्यो गिरिधारी ।

आनदेवकुं जो शिर नाऊं । करी मरुं कंठ कटारी ॥

॥ तहां माधोदामजीको पद ॥

देख रे देख रघुनाथ शोभा बनी । छाँडे दुःख सुख जाय जीव ॥

मन लायजो औरसुं । दाममाधो बुद्धि विध ताकी हनी ॥

॥ चतुर्भुजजीको कवित ॥

दिक्षा मंत्र जु ग्रही । कृष्ण किंकर कहावे ॥

हरि आगधन करे । आनदेव पुनि छावे ॥

कर्मधर्मकुल कांन । काल कवहूं न विसारे ॥

ये सबल सब नीरके । भूल न संग सलील घर ॥

हरिभजन उर चतुर्भुज । नरहै मार अरु जमजालपर ॥

॥ कबीरजीकी साखी ॥

कबीर कामी नरे कोधी नरे । कपटीकी गनि होय ॥

सलील भगत संसारमां । नरा न देखा कोय ॥२७॥

कबीर मो वर्ध अनीन रहे । नीक आनदेवकुं चाह ॥

बांधपी शिर काटीय । तोहु पाप न भणाय ॥२८॥

॥ व्यामजीनी साखी ॥

आंन धर्ममें अनि प्रविण । औ हरि धर्ममें सामान्य ॥

जैसे गत्न अमोल कर । जाने नहीं अज्ञान ॥२९॥

व्याम वाघकुं भेटीये । सहीज तनकी हाण ॥

सलील भगत न भेटीये । छाँडे दीजे पहेचाण ॥३०॥

॥ नामदेवजीको पद ॥

मैतो एक रमैयौ लीनो । आनदेव बदलामे दीनो ॥

॥ जशवंतजीको पद ॥ राग सारंग ॥

हमतो चेरे है वाघरके ॥

बिनही मूल बेकाते लीने । सेवक सीतावरके ॥

॥ तहाँ नरसिंहमहेताको पद ॥ राग आसावरी ॥

गमे मने गोपीनो रे वाहलो । अवर पुरुषनुं काम कसुं ॥
बाप तणा सम खाइने कहुं छुं । नंदलाल बसे त्यां गाम बसुं ॥

॥ तहाँ परमानंदजीको पद ॥

कुसुम सुवास सुगंध सेजपर । आगे धर्म मोद चडेऊ ॥
परमानंददासको थाकोर । भूले तुम तजी अनतन जाऊ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

ऐसी अनीन भक्ति है भाई । शोधे ताङुं देहो बताई ॥

दिक्षा देकर शिश ही कीजो । अनीन भक्ति बताई दीजो ॥

श्री कृष्णदास मन भये आनंदा । पूरण पाये परमानंदा ॥

कृष्णदास कहै सुन हो स्वामी । तुम तो सबके अन्तर्यामी ॥

एक बात पूछुं चित लाई । ताको अर्थ कहो समझाई ॥

जाते सब संदेह मिट जाई ।

बोले जीवण भक्तिकी रीती । जाते मन उपजे परतीती ॥

साकुतको अन्न अति दुःखदाई । जाते बुद्धि भ्रष्ट हो जाई ॥

भक्त रोहिदासकी सुनो निशानी । जा अन्न ते नीच देह धरानी ॥

माकुतके पाक जो होई । अन्न जल पात्र जुगत सो धोई ॥
 रामनाम मुख कबहूँ न भाखे । आनंदेव निशदिन चित गखे ॥
 गुरुको मंत्र श्रवण न दीनो । संतमंगत कबहूँ नहीं कीनो ॥
 निशदिन मग्न फिरे मन माँहि । पलभर हरि संभारत नाहिं ॥
 ताके भोजनको प्राजन करे । ताके छुये दोष बहु धरे ॥
 जो कनक कथीस्ते विगरी । त्यों भोजन कीये भक्ति ही डगरी ॥

॥ पीपाजीकी साखी ॥

विवाह श्राद्ध ने कायदू । पीपा संत न खाय ॥
 सतगुरु लाजे पण घटे । बुद्धि अष्ट हो जाय ॥३१॥

॥ कबीरजीकी साखी ॥

कबीर पण विहूना मानवी । सो नर भृत खवीस ॥
 भोजन लाड्ड गखका । पडा पटके शीश ॥३२॥

॥ साखी ॥

झूठण चाटे जगतकी । मनमें धरे अभिमान ॥
 गुरु कृषा नहीं जीवणा । ज्यौं घर घर भटके श्वान ॥३३॥

॥ नरमिंह महेताको वचन ॥ गग आसावरी ॥

तुलसीनी माला निलक पण पाखे । बीजा सा झूठ शणगार रे ॥

॥ नहां बाबा कबीरजीनुं वचन ॥

पण बिना भक्ति । ज्यूं इन्द्रवणीको फल ॥
 मिटे नहीं कहुवाय ।

॥ रजवजीनी साखी ॥

एसी इष्ट उपासना । खांन पांन धरे ध्यान ॥
 जन रजव येतो मिले । ताहे सजनना जांन ॥३४॥
 अपने अपने इष्टकुं । नमन करे सब कोय ॥
 इष्ट विहृना पशुगम । नमे सो मूरख होय ॥३५॥

॥ तहां द्वुवदासजीको वचन ॥ साखी ॥

जहां तहांके पावने । भजन तेज घट जाय ।
 रसीक रंगे जे जुगल रस । तीनकी जुअन पाय ॥३६॥
 खान पान तो कीजीये । रसीक मण्डली मांहि ।
 जीनके और उपाशना । तहां उचीत ध्रुव नाहि ॥३७॥

॥ मीरांवाईर्नुं वचन ॥

मन तें भली कीनी वीर ।
 काग कर्म तजी हंस हुवो । पल्ल्यो पतीत शरीर ।
 तजी भक्ष अभक्ष भाजन । चुगो मुक्काहीर ॥

॥ कवीरजीनी साखी ॥

होम कन्यागत कारटो । माकुन राध्या खाय ॥
 जीवत विश्वा थानकी । मुवे नरक ले जाय ॥३८॥

* ॥ चोपाई ॥ *

एसे राह चले जो कोई । जे बालक सनगुरुका होई ॥
 सुनके कृष्णदास सुख पाये । हाथ जोडके शिश नमाये ॥

संगत कहो कोनकी कीजे । बानी कीनकी श्रवणे दीजे ॥
 जीवण कहे सुनो कृष्णदासा । तेरी सबमें पुरु आशा ॥
 रामकृष्ण बानी सुनीये । और बात हिरदे नहीं गुणीये ॥
 मंगतको तो भेद बनाऊ । तेरे सब संदेह गमाऊ ॥
 अपना इष्ट भंग जे करे । ताको बचन हिरदेकुं धरे ॥
 गमकृष्ण अवतार ही जानी । मेरो ध्यान रुदै नहीं आनी ॥
 अपने जनकी मंगत तजे । कवीर नाम अंतर नहीं भजे ॥
 ताको संग हिल मिल ही करे । सो तो जीव चोगसी परे ॥
 मेरी इच्छा जे जनके होई । ताकी सरभर करे न कोई ॥
 अर्थ करी और पद समझावे । संग रंगमु बहोत विध गावे ॥
 मेरी इष्टता हिरदे नहीं भावे । गुरु चेला सब नस्के जावे ॥
 चार मंप्रदाके वेगागी । चहुंदिश फिरे गृहेकु त्यागी ॥
 हस्तिकी कथा निशदिन कहे । ज्ञान मार्ग अर्थ ना लहे ॥
 एताको संग नव कीजे भाई । जाने अपनी इष्टता जाई ॥
 कल्पु न समझे मेरा भगता । सो मोकुतो व्याग लगता ॥
 मेरे संतकी संगत कीजे । और बात हिरदे नहीं दीजे ॥
 सबको संग निवारे भाई । आनंदशा सब दे हो बहाई ॥
 रामकबीर ओ मेरे इष्टा । ता बिना सब जानो भीष्टा ॥
 कोई संत देशान्तर्गता (आ)वे । अपने इष्टने मन न होलावे ॥

॥ साखी ॥

कवीर आनंदसा लागे नहीं । एकलमल अचीह ।
 हरिजन एसा चाहीये । जेसा बनका मिंह ॥३१॥

* ॥ चोपाई ॥ *

अनीन भाव सो मोकु प्यागे । इष्ट भाव हिंदेमें धागे ॥
 पण पाले बोहो धर्म ही चाले । ज्ञान ध्यान दान बहो आवे ॥
 मेरे इष्ट हिरदे नहीं आवे । सो चेला कालमुख जावे ॥
 कोईक जीव कुल कारण माहि । पण मारण चलो जाइ ॥
 मेरे ध्यान हिंदेमें गरवे । और बान मुखे नहीं भावे ॥
 अपने मंतकी मंगन करे । इष्ट कृपा भवसागर तरे ॥
 वेगगीको मंग निवारे । अपनो मन हिंदेमे धागे ॥
 जीनके मंगने प्रतोनहीं जाई । तीनके इष्ट दे बनाई ॥

॥ साखी ॥

कबीर सो सो मन दुधका । टबके कीया विनाश ॥

दुध फाट कांजी भई । हुवा घृतका नाश ॥४०॥

* ॥ चोपाई ॥ *

मु मंगने जीव निमग्नी । कु मंगते नर नरक ही परही ॥
 कबीर रूप ललीताको जानो । जुगलरूपके गुरु यह मानो ॥
 जे अग्या खेल जु कर्ही । इष्ट भाव कबीरको धरही ॥
 मोसे नोकु दीयो बनाई । जासे मब मंदेह मीट जाई ॥
 अंतगय यास्मको करे । मंत जन क्युं ताहे अनुमरे ॥
 गधाकृष्ण कबीर यस गावे । अपना धर्म हिंदेमें भावे ॥
 ताकी संगन निशदिन करीये । और बान हिरदे नहीं धरीये ॥
 औरके अपनो भगतज होई । इष्ट भंग करन है सोई ॥
 ताथे माकुन मंग निको । एही विचार करनहु जाको ॥

॥ साखी ॥

कबीर काचा दुधका । जे कीजे सो हाय ॥
दुध फाट कांजी भई । काम न आवे काँई ॥४१॥

* ॥ चोपाई ॥ *

नाम रूपको अर्थ बतावु । सो में तोकुं प्रगट सुनाउ ॥
गधाकृष्ण नामही जानो । रूप कबीरको एही पहेचाना ॥
रूपमें नामको है बासा । या बिन और न कीजे आशा ॥
जुगल नाम और कबीर है रूप । ए नाम रूप है संत स्वरूप ॥
इनको जे सुमरण चिन लावे । और बातके निकट न जावे ॥
जुगल कबीर हिरदेमें रहे । और बात खने नहीं कहे ॥
ताकुं रूप करी पेहेचानो । जुगल रूप ता हिरदे जानो ॥
एही रूपकी सेवा कीजे । और सेवाको नाम न लीजे ॥
एमे संत कुन पेहेचाने । निशदिन सेवासु चिन आने ॥
ए सेवा हरि कीनो हे । पाखण्ड मेष धरो जग मांहे ॥

॥ तहाँ कबीरजीनुं वचन ॥

पाकी सेवा पाक बनावे । शीला प्रतिमाकु भोग लगावे ॥
बागे धंट करे धणकाग । राम रहा ऊनहूसे न्याग ॥

॥ तहाँ अग्रदामजीनुं किरतन ॥ राग कल्याण ॥

श्रीपति दुःखीन भगत अपराधे ।

संतको दोस द्रोह हत्या कर । सकल सिद्ध मोहे आगधे ॥टेक॥
सुनो सकल बैकुण्ठ निवासी । संत कहत मानो निज खेदे ॥

ता पर कृष्ण कहु कीभ विधि । पूजन पाय कंडकु छेदे ॥ १ ॥
 संतन दुःख सह भाव मम निशदिन । मेरो नाम निरंतर लेहे ॥
 अग्रदास भगवंत युं भाखे । मोहे भजे पण जमुर जैहे ॥ २ ॥

* ॥ चोपार्ड ॥ *

अनीन संतकी सेता कीजे । और बात श्रवणे न दीजे ॥
 ॥ माखी ॥

भजन इष्ट उपासना अनीनता । जाके हिंदे होय ।
 ताकी मंगत कीजीये । पीजे पदरज धोय ॥ ३ ॥

* ॥ चोपार्ड ॥ *

धेष बहोत जगतमें होई । माला निलक धरे मत कोई ॥
 इष्ट विना भीष ही जानो । एही बात सब निश्चे मानो ॥
 ॥ माखी ॥

आशो मास पुनम निथो । वर्षन मेघ हि सोय ॥
 जेसे बासनमें परे । तेमो ही फल होय ॥ ४ ॥

* ॥ चोपार्ड ॥ *

केल परे कपुम्ही होई । अहिमुख परे विष है मोई ॥
 इष्ट उपाशिक कदली जानो । और भेर अहि मुख परमानो ॥
 राधाकृष्ण और सीतागमा । जीवन कवीर ए मुखको धामा ॥
 इनकु अवतारी करी गावे । सो तो चेला काल मुख जावे ॥
 जीनके एह उगाशन होई । कदली शीप कहीये मोई ॥
 भेर धरे इनकु नही माने । अहिमुख निश्चे करी मानो ॥

एही इष्टको मन जे होई । जान पांत पुछो मन कोई ॥
 इनके मुख मुगनाफल मोई । और मुखने विषही होई ॥
 ताथे अपनो संन सुजाती । ताको मंग करो दिनराती ।
 ए सुनी कृष्णदामही हरखे । माचे बचन हिरदेमें परखे ॥
 मुनके कृष्णदामही बोले । आद अंतके अंतर बोले ॥
 एक गांस मेरे उर रही । मो गोष्ठ मोहे यो कही ॥
 कोई नंद नंदन करी गावे । कोऊ वृषभान नंदनी बनावे ॥
 कोऊ दसरथ सुन करी गावे । कोऊ जनकनंदनी बनावे ॥
 रामचन्द्र कृष्ण स्वरूपा । एतो पूरण ब्रह्म अनूपा ॥
 कबीरजी वाणी ओ गाई । सुन कहेके नंदनी बनाई ॥
 ए संदेह बहोत ऊर आवे । तुम विन अर्थ कुन ममझावे ॥
 जीवणदाम कहे सुनो भाई । जाते मर्व मंदेह नमाई ॥
 रामकृष्ण ए पूरण ब्रह्म । जा समरते मीटे सब कर्म ॥
 एही अंजन मांहि अरूप । एही चौदलोकके भूप ॥
 एही सकल सृष्टिके करना । प्रतिपालन मबके हरता ॥
 अरूप अंजनमें अविनाशी । अवधपुरी वृदावन वासी ॥
 नाकु कबीर क्युं सुत करी गावे । खोजन ब्रह्म पार न पावे ॥

॥ साखी ॥

कबीर रामकृष्ण अवतार कहे । मन धावे चहु और ।

सो अपगाधी जीवकुं । चौद लोक नहीं गेर ॥४४॥

* ॥ चोपाई ॥ *

जो इनकु सुत करी गावे । रामकृष्ण अवतार कहावे ॥

ताथे सुन इनकुं बयुं कहे । एह रहस्य कोई विला लहे ॥
जे निज कुंजके निवासी । गमकृष्णके जेह उपासी ॥
अहर्निश लीलामें भीने । जुगल रूप हिरदेमें चिढ़े ॥
मो अवनाशमें काहेकु आने । श्रीकृष्णकु पूरणब्रह्म कभी जाने ॥
एतो निकुंजमें पगीरहे । ताथे नंद नंदन नही कहे ॥

॥ तहाँ कबीरजीनुं वचन ॥

लोकानुम जो कहनहो नंदको । नंदा नंद कहोधु कहांको ॥
जा दिन धरन पवन नही पाणी । ता दिन नंद कहांथो ॥ १ ॥
लक्ष चौगसी जीव जंतमां । भमी भमी नंद थाको ॥
भक्ति हेन वाके घर आये । भाग्य बडो बपडाको ॥ २ ॥
योनी न आवे संकुष्ट न जावे । नाम निरंजन ताको ॥
कहेन कबीर मुनो भाई संता । भक्ति विना हरि काहेको ॥ ३ ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

धरती आकाश पवन नही पाणी । चंद सूरज कीहे बनानी ॥
तादिन जुगलरूप है नीको । मकल संतके भावत जीको ॥
सो स्वरूप कबीरकु भावे । सो सुन कर केमे गावे ॥
नंदके घेर हरि आये जानी । भक्ति भाव मनमें पेहेचानी ॥
गर्भ मंकुष्ट हरि आये नाही । ऊपन परलेमें नही जाई ॥
ताके कबीर निकट निवासी । कबीरके एह उपाशी ॥
आद अंत वृदावन धाम । एही रूप अरूप एही नाम ॥
अहर्निश रस टरन न टारे । पल भर होइ सकत न न्यारे ॥
जुगल रूप कबीर एक रस भाई । मो सुत बयुं कहे दोय बनाई ॥

॥ साखी ॥

कवीर पवन पाणी कछु नही । नहीं धरती आकाश ॥

ता दिन रजा रामथे । संगे कवीर खवाम ॥४५॥

* ॥ तहां अध्यारुजीना गलगा गणपतना गमनु बचन ॥ * *

शामल परब्रह्म देह वहुणो । मही कारण रह मांडे सलुणो ॥

उणो नही कदापो ॥ हरि हरि ॥

* ॥ चोराई ॥ *

जाके देह वहेवार कछु नाही । सो क्युं जनुनी उदर समाई ॥

ताथे कवीर अजनमा गावे । एही रहस्य कोई विरला पावे ॥

कवीर रोहीदामकी गोष्टि भई । तामे सबे वात कह दई ॥

रोहीदाम नंदानंद कही गावे । कवीर अजन्मा रूप बतावे ॥

जुगलरूपके पिता न होई । एही रस जाने संत क्वाई ॥

॥ साखी ॥

रूप रेख कछु बपु नही । एसे खुपतिगय ।

एसे संनजन जीवणा । नाम निरमल जस गाय ॥४६॥

* ॥ चोराई ॥ *

रामचंद्र अवधके वासी । श्रीकृष्ण नीकुंज वृंदावन वासी ॥

एही इष्ट कबीरको जानो । याते तुम भिन्न मन आनो ॥

॥ साखी ॥

सूर श्यामको शांखरो । मीरांको गिरधरलाल ।

घनुषधारी कवीरको । सो जीवण प्राण आवार ॥४७॥

कृष्ण कवीरो जो तजे । कुल न उगे सूर ।
ए ब्रत जाके जीवणा । जाके मुढे नूर ॥४८॥

* ॥ चोपार्ड ॥ *

एही पूरणब्रह्मही जानो । और दशा हिरदे मन आनो ॥
कृष्णदास सुनहो भाई । मूल वात तुम देह बताई ॥
अबनो एह संदेह रखो । मो तो कृपा करके कहो ॥
पट दरशन अँकारकु ध्यावे । आद पुरुषको पार न पावे ॥
आद पुरुष अँकार है दोउ । ताको भेद बनावो सोऊ ॥
आद पुरुष सो कीनको रूप । अँकार मो कीन रूप ॥
ए सब कृपाकरके कहो । मेरे सब संदेहही दहो ॥
तब कृपाकर जीवण बोले । आद अंतके अंतर बोले ॥
आद पुरुष वृदावन वासी । आद पुरुष है अवध विलासी ॥
आद पुरुष इच्छा एह भई । सृष्टि उपावन मनमें लाई ॥
तबनो अँकारही भयो । मायाको शरणो तीन ग्रहो ॥

॥ साखी ॥

कवीर आद पुरुषतो एक वृक्ष है । निरंजन वाकी ढार ।
त्रिगुण रूपही साखा भई । पात भये मंसार ॥४९॥
मनसा देवी उपनी । ताथे भया अँकार ॥
ताके तोन भये जीवणा । मो स्वेले नंददरबार ॥५०॥

* ॥ चोपार्ड ॥ *

अँकार तब सृष्टि निपाई । ताकी स्वर कीनहु नही पाई ॥
आद पुरुष ते भूले तबही । अँकारकु लागे सबही ॥

जोत मरुप तीनकु ठहेगया । आद पुरुष कीनहु नही पाया ॥
 पट दरशन तबही उपाया । अँकारकु सवही ध्याया ॥
 बार नामकी प्रसिद्ध करी । सब संमार मोई उर धरी ॥
 चौद लोक ताहे भये । कोय संत यति विचित्र भये ॥

॥ साखी ॥

आप व्यापक ब्रह्म जोत कहे । मोह माया अहंकार ।
 तेज पुंज निरंजना । विषरे सब संमार ॥५१॥
 आप व्यापक है जीवणा । तेज जोत आकाश ।
 विना मुंडका चोर है । सब जग कीया गगम ॥५२॥

* ॥ चोपाई ॥ *

पट दरशन एह नाम उपाये । ताके पीछे सब जुग धाये ॥
 भाग तीसमा जगमें आयो । ताते सब संमार भुलायो ॥

॥ साखी ॥

अंग तीसमा भागका । भलका छुच्चा एक ।
 तीणे सकल जग मारीया । पच्चा कलेजे छेक ॥५३॥

* ॥ चोपाई ॥ *

अँकारको एमा रूपा । अंध धंध मायाको कूपा ॥
 ताथे मकल सृष्टि चली आवे । कल्प होय तब जाय समावे ॥
 कंचनके भूषण बहो भये । जुदे जुदे नाम कह दये ॥
 जुना आदु एकही भया । युं जीव सब मायामां गया ॥
 ताकु लोक कहत है मुक्ति । गुरुदेव विना क्युं पावे जुक्ति ॥
 सो मुक्तिकुं धावे सब कोई । मनुष्य देव दनुज सब कोई ॥

अंध कूपमें जीव जेह कागे । नाको मकल मनोरथ हागे ॥
 तेमे मुक्ति कूपमां परे । एको काज तहाँ ते ना सरे ॥
 जब सृष्टि चलावेकी मनिधरे । नब जीव यामें ते नीमरे ॥
 संसारको मुख भुगते आई । जमके द्वारे पीछे जाई ॥
 चोगसी लक्ष देही पावे । कबहु सुख दुःख भुगतावे ॥
 कबहुं दे लोक चली जावे । कबहुं जा बैकुण्ठ वसावे ॥
 ऐसे जीव भमेरे भाई । बिन मनगुरु को होवे महाई ॥
 फिरत फिरत कल्प जब आवे । नब मो जाय अङ्कारमां भमावे ॥
 जेसो नरक तेसीये मुक्ति । जीव अब्रुज जाने नही जुक्ति ॥
 एट दरशन एह मुगत बतावे । ताथे जीव काल मुख जावे ॥
 जेह रेरंकारके उपाशो । मो क्युं पडे मायाकी पाशी ॥
 रेरंकारको शृष्टि है भाई । मोतो संत सदा सुखदाई ॥
 जगमे सो अवनारही आवे । अहर्निश हरिका गुण गावे ॥
 जहाँ अवनार धरे सुखदाई । भजन विना नही आन उपाई ॥
 सुष्टि सबे नाश जब पावे । संत रेरंकार तहाँ जावे ॥
 रेरंकार सुख एसो भाई । जेसे मजलमें रहो जाई ॥
 जेह मजलम संतनकी होई । हरि सनमुख और नही कोई ॥
 मो सुख कह्यो जान नही भाई । बिना मनगुरु कीनहु नही पाई ॥

॥ कीरतननु वचन ॥

एही सुख कीनहु नही देख्या । अगम भोग गत न्यारी ॥
 कहेत कबीर सुनो भाई संता । एह मजलम टरे न घारी ॥

॥ तहाँ साखी ॥

त्रेह कोट निहारी नार । बांद गुलामां जोईमे ॥

अम तणो परवार । वेची आपे विठ्ठला ॥५४॥

* ॥ चोपाई ॥ *

जहाँ चलजाय तहाँ जीवनमुक्ति । पीछे मिजलमकी जुक्ति ॥

॥ साखी ॥

कबीर धरती अंबर जायेगे । विणमेंगे कैलास ॥

एक मेक - होजायगे । नब कहाँ रहेंगे दास ॥५५॥

कबीर धरती अंबर जानदे । विणमदे कैलास ॥

एक मेक होजानदे । मैं और मेरे दास ॥५६॥

उँकारथी उपन्यो । जीवण जुग समार ॥

रेरंकारथी निपन्यो । सतगुरुको परवार ॥५७॥

* ॥ चोपाई ॥ *

जे कोई सतगुरु चरणे आवे । रहेनी केहेनी माँहि रहावे ॥

झृ भंग करे नहीं साई । ताको वाम मिजलममें होई ॥

॥ तहाँ कबीरजीनु वचन राग केहेग ॥

कबीर सतगुरु मले तो सांसा भागे । नहीतर पत्री पत्री मरणा हो ॥

नाव है पण खेवट नाहि । कीम बिध पार उत्तरना हो ॥

* ॥ चोपाई ॥ *

एह मर्म सतगुरुते पावे । नहीं पावेसो काल मुख जावे ॥

भेष धरे कलु खबर न पाई । नाथे चेलो कलमुख जाई ॥

अँकारी अँकारमे जावे । रेरंकारी रेरंकार ममावे ॥
 सतगुरु कबीर रेरंकार बतावे । और मवे अँकारकु धावे ॥
 गमकृष्ण रेरंकारही जानो । अँकार मायाकु मानो ॥
 ए सब कह्यो हमारे हिय मानो । प्रेमानंद मगनमें ठानो ॥
 तब कृष्णदास बोले करजोगी । अब मेरी भरम गई सब खोगी ॥
 अब मोकु अवमर बनाई कहीये । मेंनो प्रेम आनंदमाँ रहीये ॥
 तब जीवण बोले मन लाई । नित्य ओच्छव ओ नित्य बधाई ॥
 मास बरसमाँ कहुं चिन लाई । प्रथम ओच्छव कीजे भाई ॥
 संत सब ममागमे चली आवे । तिथी नौमी राम कहावे ॥
 ते दिन भोजन करी । तुलसीमाल धरावे ॥
 पीछे परमाद सब संत मिली पावे । एसे अवमर प्रथम कहावे ॥
 दूसर अवमर ते मो कहीये । श्रावण मास कृष्ण अष्टमी लहीये ॥
 दिवस अष्टमी केरे । सब संत गवनो भेरे ॥
 साक पाक मलि भोग लगावो । संत संगत मलि हरिजनम गावो ॥
 औरज हरि दिवम ओच्छवके होई । ता दिन गुण हरिका होई ॥
 जे दिन संत मलि आवे । ता दिन जनम सुफल कहावे ॥
 एमा संत जो होई । मैं तो ता अंतरमें सोई ॥
 तब कृष्णदास बोले मन लाई । मोकी ईच्छा पुरो अब भई ॥
 तब जीवण बोले मन लाई । जावो भाई हवे आनंद पाई ॥
 तब कृष्ण बोले शिर नामी । हवे कहाँ जावुं अंतरयामी ॥
 हवे तमे जावो तमारे देशा । मनमे न रासो अंदेमा ॥
 तमो जहाँ जासो नहाँ संत घणा मलमे । भजन गोष्ट आनंदमें भलसे ॥

तब कृष्णदास तहांथी चले । मब संतनकु तब मले ॥
 पीछे तहांथी आगलोड आये । भक्त धनके धेर मीधाये ॥
 धना कहे तुम भले पधारे । मेरे कुलके अघ सब जारे ॥
 अब तुम ग्मोई कीजे । जो गमे सो सिधो लीजे ॥
 तबनो कृष्ण कहे सुनोरे धना । मेरी बात सुनोरे एक मना ॥
 अबमें अनीन बन लीयो । काहुको बग्नन न जाय छ्यो ॥
 तो साकुत अब्र लीयो न जाई । केमे भोग लगावुं भाई ॥
 तब धना बोले कर जोरी । भोजन नकरो ऐमो कुखोरी ॥
 जे कहो ते शिर धरु । आपको बचन नही परहरु ॥
 कृष्ण कहे एक काञ्ज करो । भक्तको तुम बानो धारो ॥
 बाना धरी सतगुरु चरणे मन लावे । ताके धेर सतगुरु पवगवे ॥
 पण प्रतित रखे एक मन । ताके धेर भोजन कीजे निशदिन ॥
 बासण बग्नन कोरे चहीये । हमतो सतगुरु बचनमें रहीये ॥
 धना कहे सुनो महाराजा । आज भये हमारे काजा ॥
 भक्ति ददावो भक्त बनावो । सतगुरुको मोहे नाम सुनावो ॥
 तब बोले कृष्ण महाराजा । धना तोहे में आज निवाजा ॥
 श्रीगणपते मोरी पुरी आशा । सतगुरु मिले मोहे जीवणदासा ॥

॥ साखी ॥

सतगुरु जीवण शामलो । दास कवीरजी राम ॥

अंतर तो एतो पदयो । एक रूप दो नाम ॥५८॥

* ॥ चोपाई ॥ *

तबतो धने चरण पखाला । कृष्णदास दरस देखायो माला ॥

॥ माखी ॥

माला जीवणदामकी । मिली है दिक्षा संग ॥

धना दरश देखतां । बहोत चढ़यो रंग ॥५९॥

* ॥ चोपाई ॥ *

रंग चढ़यो धनाकु भागि । रेवाजी की करी लैयारी ॥

॥ साखी ॥

मंगोतो श्रीकृष्णजी । धना मंगल शिनला विर ॥

हिल मिल हरखे चालीया । आये नर्मदा तीर ॥६०॥

* ॥ चोपाई ॥ *

सब मिलि रेवाकु गये । संपूर्ण स्नान दान भये ॥

तब धना कहे मुनो भाई । जहाँ रहे जीवण और गुरु भाई ॥

तहांथी चारही चाले । धाम पुनीयाद मुख्यमें महाले ॥

तब जीवण कहे मुनो कृष्णदामा । मंगे लाये कुन पामा ॥

कृष्णदाम कहे ढंडवत करी । एनो तुमारे बालक हरि ॥

तब धनो बोल्यो करजोगी । दरशने पाप गये सब खोगी ॥

निशदिन रहु शिर नामी । कलबी कडवो जानो स्वामी ॥

अब कृपा करो दिक्षा दीजे । बीछडो जीव चरणमां लीजे ॥

तब जीवण बोले कृष्णदामा । कहाँमें लाये तमो मो पामा ॥

तब बोले कृष्ण नीहारे । स्वामी सब तुमारे चेरे ॥

कृष्ण कहे हो गुरु । ए करो तुमारे छोरुं ॥

तब जीवण तीनकु दिक्षा दीनी । सज वात सबही कीनी ॥

सब संतकु ढंडवत कीनो । धनो परमानंद रस भीनो ॥

तब सनगुरु बोले मन लाई । सुनो धना मंगला शितलाई ॥
 तमो महंत कृष्णदामकु मानो । सब मंतनको ए दरशन चीनो ॥
 कृष्णदाम कहे ते चिन धरीय । तेमनो बोल शिरधरी निश्चे करीय ॥
 जे गुरुको कहो करे । ते जन मेजे तरे ॥
 तब धनादास कहे गुरु मेरा । मैंतो सेवक सब संत केरा ॥
 जो मैं आपको कहो न करु । तो कीम विधि भवसागर तरु ॥
 कृष्णदास नब आज्ञा मागी । सब संतनके पाये लागी ॥
 सब संत मिली ढंडवत कीना । आज्ञा पाई आगलाड भीना ॥
 आ परचरी जे कोई गाये और सुने । तेनो निश्चे परमपद भीने ॥
 आ परचरीनो कोई अर्थ विचारे । सोतो रेंकारमे जावे ॥
 ए परचरी साख जे गावे । गुरु परसाद प्रेम पद पावे ॥

इति श्री कृष्णदासनी परचरी संपूर्ण ॥

* राम कवीर *

अथ श्री ज्ञान महिमा लख्यो छे.

सत गुरु जीवणदास आधार। जाकी महिमा अपरमपारा ॥ १ ॥
 ता महिमाको कोइलहे न परमा। खोजन पार न पावे ब्रह्मा ॥ २ ॥
 जाकी अकल गति कोइन पावे। निगम नेति नेति करी गावे ॥ ३ ॥
 अगम अगोचर आप कहावे। शंभु खोजत पार न पावे ॥ ४ ॥
 परम पुरुष जहां सदा आनंदा। जाकु लखे न सनक सनंदा ॥ ५ ॥
 वाको है वृद्धावन वासां। परम पुनित जहां प्रकाशा ॥ ६ ॥
 सत जुगमे सत शब्द कहाया। त्रेहेता खुपति नाम धराया ॥ ७ ॥
 द्वापरमे मथुरगके वासी। सदा अखंड जहां अविनाशी ॥ ८ ॥
 सो कलियुगमे प्रगटे आई। परम पुरुषकी आग्या पाई ॥ ९ ॥
 परमपुरुष आपे भगवाना। सो कलियुगमे कीया पियाना ॥ १० ॥
 अपने संनन सुख प्रगटे आई। अति आनंद जहां हरिराई ॥ ११ ॥
 परमपुरुष हँस दया जब चीनी। कहानव मंडलमें करुनाकीनी ॥ १२ ॥
 सत माहेब हे परमनिधाना। नाको हे जगजीवन नामा ॥ १३ ॥
 जाकी महिमा अपरंपारा। भवसागरके ताणहारा ॥ १४ ॥
 सब दुनिया नरक जान जब देखी। तब हरि दया भई विशेषी ॥ १५ ॥
 माया कालको बहोत बल भइया। सब दुनिया इनही ले गहिया ॥ १६ ॥
 तीह कारन प्रगटे सुखदाई। सतगुरु जीवण भए सहाई ॥ १७ ॥

॥ साखी ॥

परम पुरुष प्रगट भये। सतगुरु जीवण आय।

माया काल निकंदके। प्रगट कीये खुराय ॥ १८ ॥

॥ विश्राम ॥ ३ ॥

कहानव मंडल मांहे किया प्रवेशा । जाकी महिमा लहेन शेषा ॥१॥
 प्रथम काशी महि मिधारा । जाकी महिमा अनि अपारा ॥२॥
 जहां बहोत कर्मको प्रवेशा । नहां तो भगनि नही लव लेशा ॥३॥
 वेद धर्मकी जहां चिपरीनि । तहां आन धरम सकल अनीनि ॥४॥
 वेद कतेब मो कर्म बतावे । कर्मके बंधे प्रार न पावे ॥५॥
 ब्रह्म कर्म सब लोक भूलानां । वेद कतेब किया है निशाना ॥६॥
 तीरथ ब्रत करी सब जुग भूला । केवल राम सो किनहु न तुला ॥७॥
 तिह औसर कबीर प्रगट भएउ । भरम करम और सबही गएऊ ॥८॥
 भरम करम सब गए बिलाई । प्रगट कीए श्रीखुपनि गई ॥९॥
 खुपति कबीरके निज धामा । कबीर खुपनिके निजनामा ॥१०॥
 ए स्वामी सेवक ऐसे होए रहे ही । परम भाग्य सो चिह्ने तेही ॥११॥
 नामरूप वन प्रगट प्रवेशा । चिह्ने सतगुरु को उपदेशा ॥१२॥
 नामरूपको भेद विचारे । भेद विना केसे भव निस्तारे ॥१३॥
 अब नाम रूपकी सुनले गाथा । जो परम पुरुषको चाहे साथा ॥१४॥
 परम पुरुषको क्युं संग होई । सतगुरु गुरु चिह्ने ऐक दोई ॥१५॥
 सतगुरु सोही कबीर कहावे । गुरु सोही सतगुरु बतावे ॥१६॥
 खुपति नाम सकल विस्तारा । रूप सोइ सबहीथे न्यारा ॥१७॥
 सतनाम खुपनि ठहराना । केवल रूप कबीर ही प्रगाता ॥१८॥
 ए नामरूप सतगुरु समझावे । ब्रजादिक मुनि पार न पावे ॥१९॥
 आनम खुपनि शरीर कबीर । भगतनके सुख सागर धीरा ॥२०॥
 ए नामरूपको लहे न मरमु । ते बन जीव पडे बहु भरमु ॥२१॥
 नामरूप वन जीव कहावे । ताथे जनम जनम फिर आवे ॥२२॥

॥ साखी ॥

सतगुरु जीवण कबीरजी । ताका ए विस्तार ।
भगत हेत आई प्रगटे । काहानव मंडल सुझार ॥२३॥
॥ विश्राम ॥ २०॥

अब सुनो पाटणका विस्तार । भगत ग़ज हरि आप सिधार ॥ १ ॥
सुनो हो कथा अब इनकी नीकी । परम सुख संननके जीकी ॥ २ ॥
कुन काज हरि आपे आया । सो विस्तार प्रगट कहाया ॥ ३ ॥
पहेले मथुरामे अवतस्थि । बलभद्र सहित आपे परवस्थि ॥ ४ ॥
सो तो आये अवनिंगामा । श्रीकृष्ण सहित जहाँ बलरामा ॥ ५ ॥
ऋषिअनकु पूछे जाये विचार । कुनके विद्या है अनिसार ॥ ६ ॥
जाओ मंदीपनके तुम भाई । एसो ऋषि को नाहि बडाई ॥ ७ ॥
बल विदा करी देह बनाई । अंतरजामी भए महाई ॥ ८ ॥
मूरख विद्या कछु न जाने । अखर भेद को नाहि पहेचाने ॥ ९ ॥
सो संदीपनके हरि सिधारे । सबे विध उनके काज समारे ॥ १० ॥
बहोत करुणा हरि जब कीनी । विद्या अनंत लही तब चिह्नी ॥ ११ ॥
संदीपनके कीआ विमरामा । आय मिले तब ऋषि सुदामा ॥ १२ ॥
तब मिल एसो कीओ विचारा । हम तुम पठिये एक चटसारा ॥ १३ ॥
बडा गुरु बंधु सुदामा माना । सुदामे केवल हरि ही जाना ॥ १४ ॥
एही विधि विद्या पढे अपारा । ता पिछे एक भया विचार ॥ १५ ॥
एक दीनां काष्ठ नही घर माँहि । तब ऋषि पतनी कहो समझाई ॥ १६ ॥
तब चले कृष्ण सुदामा भाई । साथ लिये बलभद्र सहाई ॥ १७ ॥
ऋषि पत्नी जब सुखरी दीनी । तब ही सुदामा बांध ही लीनो ॥ १८ ॥

चले चले गए बन मुझाग । निकसी मेघ छाओ अपार ॥१९॥
 बनमें जाय अनि बग्खा भैइया । जुदे जुदेही निकस गैआ ॥२०॥
 प्रान भयो काष्ट ले आए । गुरुही तो सबरज पाए ॥२१॥
 ऋषि तो तब खरे स्मिए । इन कोमल पे काष्ट मगाए ॥२२॥
 बोहोरु एक अचरज भैया । ऋषि पतनी दोहन बेठी गैया ॥२३॥
 गैया तो तब देवे नाहि । जब कृष्णकु कहो समझाई ॥२४॥
 कृष्ण आए खडे ताहा रहेही । भाजन मंदिरमें बिसर गएही ॥२५॥
 ऋषि पतनी भाजनमागो जबही । श्रीकृष्ण आन दीओ हे तबहो ॥२६॥
 एक करे गायन गही रहीआ । हाथ पमारी मटुकी दईआ ॥२७॥
 ए ही अकल गन आप मोरारि । मनमें एमी बात बिचारि ॥२८॥
 मकल विद्या पढ़ी हरि लीनी । गुरुकी महिमा अनि ही कीनी ॥२९॥
 तब हरि गुरुपे आग्या मागे । कहो सो भेट घरो तुम आगे ॥३०॥
 तब दोऊ मिल कीओ बिचारा । इनपे मागे कल्पु एक साग ॥३१॥
 ऋषि पत्नी बोली शिर नामी । बालक अपने मागो स्वामी ॥३२॥
 तब हरि बालक तुरन ही आना । गुरुकु दीए बोहो सनमाना ॥३३॥
 तब हरि आग्या मांग भिधारा । जाकी अकल गति अपरंपारा ॥३४॥
 सो संदीपन ऋषिन लीने चिहीनी । जीने हरि विद्या पलकमे दीनी ॥३५॥
 सो हरि परम भगवत्को दाना । तापे मागी बनसती बाता ॥३६॥

॥ मात्री ॥

ऐसे समरथ हरि सदा । सबकी पूखे आश ।
 पूरन संगत संत बिन । सब जुग चलो निराश ॥१८॥

पूर्ण संगत मंतकी । सत्यगुरु जीवण सोय ।
एह रसकु बुझे नहि । शिव ब्रह्मादिक कोय ॥

॥ विश्राम ॥ ३ ॥

बोहोरु कृष्ण सुदामा मिले शिरनामी । अबनो कबही मिलहु स्वामी ॥
बलभद्र मिले जब हाथ पमारी । सुदामे विनती अनुमारी ॥ २ ॥
अब कब मिलहो क्रिपा करही । तुम बिन हमकु चेन न परही ॥ ३ ॥
एमी प्रीतमु भए हरि न्यारे । सुदामा अपने गाँउ मिधारे ॥ ४ ॥
ता पीछे दग्धि वहु भैआ । सुदामा तो अनि दुःख पैआ ॥ ५ ॥
सो तो दग्धि काहेने आया । सुदामी गुरुकी आपही पाया ॥ ६ ॥
सुदामाकी प्रतिव्रता नारी । सो तो कहि बात चिचारी ॥ ७ ॥
तुम जाओ जहाँ कृष्ण बलशमा । उहाँ गए सरे सब कामा ॥ ८ ॥
सुदामा बोले वित्रेक विचारी । भेट कहा धरु में नारी ॥ ९ ॥
तवही परोमनके घर जाई । कांग बीज अनि सुंदर लाई ॥ १० ॥
सो ले गए द्वारकां जवही । अनि आनंदसु मिले हरि तवही ॥ ११ ॥
जब ही सुनो सुदामा नामा । अनि आतुर हरि धाए साहामा ॥ १२ ॥
आदर करी आमन बेडाए । प्रेम प्रीतमु चरण खटाए ॥ १३ ॥
कांगके तांदुल हरि देखे । अनि आतुर करी लाए विशेखे ॥ १४ ॥
परम पर्वीन परसाद ही लीनो । सुदामाकु नो निधि दीनो ॥ १५ ॥
पीछे सुदामा नीज गहे आए । कोकीला मनवांछी पाए ॥ १६ ॥
॥ साखी ॥

दुःख दाखि सब गया । श्रीकृष्ण भए सहाय ।
मनमें लही संकोचना । भगतन दिनी कहा ॥ १७ ॥

॥ विश्राम ॥ ४ ॥

दुजे अवतार धनराज कहाए । सो सुदामा पाटण आए ॥ १ ॥
 जात विप्र अति सुख पाए । राय सधरके दिवान कहाए ॥ २ ॥
 ता पीछे हरि करुणा कीनी । कबीर प्रहे जाय भगतज लीना ॥ ३ ॥
 दास कबीरको आग्या पाई । पाटण मांहि प्रगटे आई ॥ ४ ॥
 श्री पद्मनाभ नाम धगया । संननके सुख कारण आया ॥ ५ ॥
 जात कुंभारके जन्मज मैआ । धनराज अध्यारु आप मलैआ ॥ ६ ॥
 क्यु कर प्रगट भए हरि राई । ताकी महिमा सुनो चितलाई ॥ ७ ॥
 करण कुभार गए बन मांहि । माटी लेन गए ही जाहिं ॥ ८ ॥
 माटी खानमें परे ही पाए । बालक रूप होय आपे आए ॥ ९ ॥
 करण कारण बान बिचारी । एही अकलगत चरित मोगरी ॥ १० ॥
 शिरनामी लीए हरि गोदा । अनि आनंद पाओ मन मोदा ॥ ११ ॥
 दिन दिन कला भई अधिकाई । भगत हेत प्रगटे हरिगई ॥ १२ ॥
 बहोरि एक कथा भई नीकी । अति उदार संननके जीकी ॥ १३ ॥
 राय सधरा तलाव खोदावे । तहाँ अध्यारु नित हो आवे ॥ १४ ॥
 तेही औसर पद्मनाभ पधार्या । अनि अपार जाका विस्तार ॥ १५ ॥
 अध्यारु सनमुख जबरे देखो । शिरपर टोकरी अवर ही पेसी ॥ १६ ॥
 अध्यारुके मन भया आनंदु । अनि अकल गति परमानंदु ॥ १७ ॥
 अपने मंदिर गए हरि जबही । अध्यारु पीछे लागे तबही ॥ १८ ॥
 चले चले गए हे तांहि । करण कारणको स्थानक जांही ॥ १९ ॥
 इहाँ जाई बूझी एक बाना । सनमुख आई लखमा माना ॥ २० ॥
 कहो तुम बालक कहाँ है तेरो । परम पुनीत भावनो मेरो ॥ २१ ॥
 निरंतर बैठे है घर मांहि । अध्यारुजीकु देखाए तांहि ॥ २२ ॥

वरणटेक विनती करीआ । तुम हो भगतनके सुख दरीआ ॥२३॥
 करजौगी विनती अनुसारी । करो हो कृपामें तुम बलिहारी ॥२४॥
 करी दीनता रहे शिखनामी । तुम शरणागत राखो स्वामी ॥२५॥
 में अपराधी जीव कहाऊ । सुख सागर तजी अब कहाँ जाऊ ॥२६॥
 निरमल मनो हरि देखो जबही । प्रगट रूप हरि कीना तबही ॥२७॥
 आद रूपका कीया विस्तारा । परम पुरुष आपे करतारा ॥२८॥
 मोर मुगट वैजयंती माला । झल्गङ्गल रूप नयन विशाला ॥२९॥
 काने कुंडल कंठ मुगना हारा । बाल सुंदर अति रूप अपाग ॥३०॥
 मोती नासिकाकी अति शोभा । सुर ब्रह्मा दरशनका लोभा ॥३१॥
 रतन जडीन भुज वेरखा सोहे । चौद भुवनमें एसो कोहे ॥३२॥
 कहान शाम वरन एसो राजे । केटि मनमथ देखत लाजे ॥३३॥
 एसो रूप जब प्रगट कीना । अध्यारूजीकु दरशन दीना ॥३४॥
 दरशन देखत ही मन माना । परम पुरुष बन कोउ न आता ॥३५॥
 क्रिपाकरी माथे कर दीनो । निज भगत अपनो करी लीनो ॥३६॥
 तहाँ दास कबीर भए महाई । संत संगत हरि भगत दृढाई ॥३७॥
 सतयुरु दास कबीरपरमाना । रघुगति सत साहेब करी जाना ॥३८॥
 गुरु वाणीको भयो प्रकाशा । सत संगते लीया निवासा ॥३९॥
 सत संगत थे यह निधि पाई । गुरुवाणी जब हिरदे समाई ॥४०॥
 संत संगत बन सरे न काजा । सबथे याही अधिक ताजा ॥४१॥
 विनती करी बोहो परकारा । माया भ्रमथे करो मोहे नारा ॥४२॥
 करहो क्रिपा हरि अंतरजामी । माया भ्रमते जीवायो स्वामी ॥४३॥
 अवनो क्रिपा करो हरि राई । घरघर भगत करो अविकाई ॥४४॥

दया बुधका भया विस्तारा । क्रिया करी जब सरजनहारा ॥४५॥
 एमी विध हरि क्रिपा किनी । नामरूप जब लीनो चिन्ही ॥४६॥
 सतनाम श्री पद्मनाभा । जाकु कुनकी दीजे आभा ॥४७॥
 केवलरूप कबीर कहावे । संन संगतथे ए रस पावे ॥४८॥
 जब ए नाम रूप निधि पाई । आवागवन सब दूर कराई ॥४९॥
 ए रसके संत जन हे भोगी । मनक सनंदन लखेन जोगी ॥५०॥
 अध्यारु अपने मन जाना । साडेब संनो मोहे प्रमाना ॥५१॥
 एमी विध हरि कृष्ण किनी । सन कबीर की महिमा चिन्ही ॥५२॥
 दास कबीर भए सहाई । सनराम केवल हृदाई ॥५३॥

॥ साखी ॥

नामरूपकी कथा । मत्तगुरु दइ बताय ।
 केवल वस्त तबे ठरी । संन संगत पसाय ॥५४॥
 ए सतगुरु जीवणकी दया । भई सकल विस्तार ।
 अध्यारु पावन कीए । श्री पद्मनाभ अवतार ॥५५॥
 पद्मनाभ प्रगट भए । सौ सतगुरु जीवण आय ।
 चौद भुवन भाजन घडन । अकल निरंजन राय ॥५६॥

॥ विश्राम ॥ ५ ॥

कहानव मंडलकी सुनो निशाणि । प्रगट भए हे सारंगपाणि ॥१॥
 संन रूप धरो आप सिधारे । भगतनकु अनि लागे प्यारे ॥२॥
 बालक पांच प्रगट भए आई । एक पे एक उज्जागर भाई ॥३॥
 प्रगट नाम भगतनके आगर । वसंतदाम शाम सुख सागर ॥४॥
 बाबा गोविंददास सुखकारी । अखै नानकी भगत विचारी ॥५॥

गुरु परनाली है शामदासा । द्वारकांदास मए प्रकासा ॥६॥
 निज धरमका सुनो चिचारा । अनीन भगत मबहीथे नारा ॥७॥
 तीरथ ब्रत नहीं आन आगधा । होम कनागत नाहिमगधा ॥८॥
 करम धरम नहीं पुन पापा । सुर मनीको लागे न शरापा ॥९॥
 छापा निलक और माला राजे । नरनारी भगत ए छाजे ॥१०॥
 जस अपजसको डर नहीं आने । नंदोवंदो जो मन माने ॥११॥
 ए सतगुर जीवणको उपदेशा । गुरु मुख एक मनो प्रवेशा ॥१२॥
 लोकवेदको डर नहीं कीनो । स्सीक राधावर चिहीनो ॥१३॥
 नामरूपको मेल प्रमाने । सदा आनंद मोहोछा ठाने ॥१४॥
 अधिकारी दोउ कीए प्रकासा । शामशिगेमण और कहानदासा ॥१५॥
 अगम कथा ए कहो न जाई । सतगुरु जीवण त्रिभुवन गई ॥१६॥
 चौद भुवनथे अधिकाई । सतगुरु जीवणकी बडाई ॥१७॥
 जाको वृद्धावन निजधामा । आद अंतको हे विश्रामा ॥१८॥
 अधिक शोभा वृद्धावन राजे । सतगुरु जीवणदास विराजे ॥१९॥
 ताथे वृद्धावन अनि नीको । परम निधान मंतनके जीको ॥२०॥
 अति अपारह्न उपमा एसी । भाग बढो नाके उरमें बेसी ॥२१॥
 एक समे मंगलेमर गामा । भयो परचो मरो मब कामा ॥२२॥
 द्वापरजुगकी कथा चिमारी । मब मंतनकु लागी प्यारी ॥२३॥
 भोजा गुजर एक आहिर कहावे । सो गोकुलमें मदा रहावे ॥२४॥
 ताकी पूत्रीको नाम धनाई । सो मथुरा दधी बेचन जाई ॥२५॥
 मारग रोक रहे बलवीरा । ज्ञक झोकन हे फारो चीरा ॥२६॥
 निज तन मन हरिको दीना । जीवन जनम मफल करी लीनो ॥२७॥

तेह समे भोजा गुजर निहारे । देख मनमें दोष विचारे ॥२८॥
 तीह दोषथे भूत भएऊ । फिरन फिरन मंगलेसर गएऊ ॥२९॥
 नहां सतगुरु जीवण कीओ प्रयोधु । सब जीवनको कीनो सोधु ॥३०॥
 भोजा गुजर एक बान विचारी । परम पुरुष ए हरि मोरारी ॥३१॥
 अनि अकल गत लहो न भेदा । जाको पार लखे नहीं बेदा ॥३२॥
 सरगुण वस्थे रहिना स्वामी । विनती करु चरणे शिरनामी ॥३३॥
 भगत एक संतजन भाई । ताकी देहमें प्रगटो आई ॥३४॥
 सब संतनकु अचरज भाई । सतगुरु जीवण कहो विचारी ॥३५॥
 भूतप्रेतको नहीं बल जाहि । एहनो देखत अचरज काई ॥३६॥
 सतगुरु जीवण तबही बोले । भोजा गुजरके अंतर खोले ॥३७॥
 करे दीनता विनती मानो । अकल्यान देख भूलाना ॥३८॥
 तुम विछुरेते बोहोदुःख पायो । द्वारथे अब कलीयुग आयौ ॥३९॥
 पतित पावन विरद कहावे । शरणे आयो अब कहां जावे ॥४०॥
 तबनिज भगत अपनो करी लीनो । महा परसाद दधीको दीनो ॥४१॥
 सब मंतनको भयो आनंदु । एही परगट परमानंदु ॥४२॥
 बहोरों कथा भई स्स रीनि । आद अंतकी प्रेम प्रतीनि ॥४३॥
 एक समे महोछा भयो गामा । सतगुरु जीवण बलो नाहि डमा ॥४४॥
 सब मंतन लोजे करि साथा । परम पुरुष संग मनाथा ॥४५॥
 मंतनकु त्रषा अनिलामी । जल अववन अग्या मामी ॥४६॥
 सब मंतनकु मिल बिनती किनी । सतगुरु जीवण दया जब चिनी ॥४७॥
 मारग मांहि मिले नहीं नीग । सब संतनकी जानी पीग ॥४८॥
 कुअखाई बोले शिर नामी । तुमही अकलगत अंतरजामी ॥४९॥

गोवरधन पर खेलन चले । गोपी गोवाल सबे तीहा मिले ॥५०॥
 तीहा सब बहोतेक प्यासे भये । सब ही आई चरणमें नए ॥५१॥
 तब तुम थेर एकही उठायो । सबहीकुं तुम पानी पायो ॥५२॥
 कुअखाई जब कही निशानी । क्यारि मासे पाओ पानी ॥५३॥
 अजोधा राम प्रगट कहाए । सो गोकुलमें सदा सहाए ॥५४॥
 काशी मांहि कबीरकी आभा । पाटण मांहि श्री पद्मनाभा ॥५५॥
 सो सतगुरु जीवण प्रगटे आए । रुद्र मंत्रन दन वांछित पाए ॥५६॥
 ए ज्ञान महिमाको लहे न अंता । जाको पार न पावे अनंता ॥५७॥
 सोगुन गावत है कृष्णदासा । संत संगत मिलोआ निवासा ॥५८॥

॥ साखी ॥

सतगुरु क्रिपाकरी । कृष्णरमिकु आए ।
 धरमदासकु मिले । जेसे कबीर सहाए ॥५९॥
 जीवणजीकी एह कथा । सुखसागरको धाम ।
 बुध उनमाने कही कछु । कृष्णदाम सुतशाम ॥६०॥
 जीवण जस महिमा । अगम वरन सके नहि पुच ।
 जेसे जलके समदमे । चीरिआ भरगई चुच ॥६१॥

॥ विश्राम ॥ ६ ॥



॥ श्री रामकवीर ॥



अथ श्री

॥ बार मासना समाना
कीरतन ॥



॥ अथ श्री रामचन्द्रजीना जन्म समाना कीरतन॥

॥ रग सारंग ॥

राम लीयो अवतार-अयोध्यामें ॥

बैत्र मास नौमी अजुआरी । भये हुपोशीवार ॥ टेक ॥
 पूरण ब्रह्म कृपा करी प्रगटे । आये दशरथ द्वार ॥
 जन्म लीयो भक्तनके कारण । भूमी उतारण भार ॥ अयोध्यामें ॥३॥
 पुर की वधुनी मवे उठी धार्द । नौ मन मजी शणगार ॥
 नाचन मगन भई सब सुंदरी । गावन मंगल चार ॥ अयोध्यामें ॥२॥
 दोल ददामा झालर बाजे । शंख शब्द बहोतार ॥
 चढ़ी विमान सुर कौतुक आये । बरषन कुमुम अपार ॥ अयोध्यामें ॥३॥
 ले ले दुब धग्न मागन जन । गढे गृहके बार ॥
 हीरा वार देत रघुपति पर । भरी भरी कंचन थार ॥ अयोध्यामें ॥४॥
 कंचन मणि गौदान द्विजनकुं । देत बहोत परकार ॥
 मिक्षुक सब अजाचक कीने । करन न लागी वार ॥ अयोध्यामें ॥५॥
 कौशल्याजीको धन जीवन । धन दशरथको आधार ॥
 भगत जनके कल्पनरु है । रघुपति राजकुमार ॥ अयोध्यामें ॥६॥
 तीन लोक और भुवन चतुरदश । गावन मुयश अपार ॥
 तुलसीदासकु भक्ति दान दो । पूरण सदा भण्डार ॥ अयोध्यामें ॥७॥

* ॥ २ ॥ *

रामलीयो अवतार-अयोध्यामें

प्रगट भये भू भार उतारन । कारण कुल आधार ॥ टेक ॥

दशरथ गज काज सब सारन । तारन तरन मोगर ॥
 कौशल्या सुन अदभूत सुंदर । नौतम रूप अगर ॥अयोध्यामें ॥१॥
 वैत्र मास सुभ दिन नौमी । पक्ष उत्तम उत्तीयार ॥
 मधन ममे माहो माहे ओच्छव । महा मंगल सुभवार ॥अयोध्यामें ॥२॥
 करत विलास दास सब मिलके । खेलत गये दग्धार ॥
 हुध दही हरदमु रोसन । दोसन है नस्नार ॥अयोध्यामें ॥३॥
 दान मान जाचक जन पावत । गावत बधाई विहार ॥
 जय जय देव जगत गुरु स्वामी । सूरदास बलिहार ॥अयोध्यामें ॥४॥

* ॥ ३ ॥ *

भाग्य सोहाग भरी—अयोध्या ॥
 कहा बरणु कछु पार न होसी । जैमी अवधपुरी ॥ टेक ॥
 जन्म लीयो खुवीर धीर जहाँ । तहाँ कछु कही न परी ॥
 धन ते जन जे पुरमें बसत है । रहेत हुलाम धरी ॥अयोध्या ॥१॥
 हुःखदाई नही कोई पुरमें । धरमकी धरत धरी ॥
 सरजू तीर नीर अनि निरमल । झल हल जोन धरी ॥अयोध्या ॥२॥
 बसुदेव सुन अदभूत प्रगटे । धन मथुरां नगरी ॥
 परमानंद प्रभु प्रगटे अयोध्यां । पूरण काम करी ॥अयोध्या ॥३॥

* ॥ ४ ॥ *

प्रगट भये है राम—अयोध्यामें ॥
 हत्या तीन गई दशरथकी । सुनत मनोहर नाम ॥ टेक ॥
 बंदीजन सब द्वारे गावत । करत मधुर धुनी गान ॥
 सुरनरमुनि सब कोतुक देखे । रघुवर रूप निधान ॥अयोध्यामें ॥१॥

जय जयकार भयो त्रिभुवनमें । संतनके अभिराम ॥
परमानंद प्रभु बलिहारी । सब सुख पूरण काम ॥अयोध्यामें ॥२॥

* ॥ ५ ॥ *

आज आज बधाई-अयोध्या ॥

गावत मंगल करत कुतुहल । प्रगट भये रघुराई ॥टेक॥
दशरथ भूप आनंद भयो है । रहेसी मवे लौ लाई ॥
सुर विमान चढ़ी कौतुक आये । वरषत पृष्ठ कराई ॥अयोध्यामें ॥१॥
रघुपनि तिलक तिलक चिंनामणि । मवहनके सुखदाई ॥
सूरदाम कछु कहेत न आवे । प्रेम भक्ति निधिपाई ॥अयोध्यामें ॥३॥

* ॥ ६ ॥ *

आज अयोध्या प्रगटे राम ॥

दशरथ वंश भयो कुल दीपक । शिव विरंचि पायो विश्राम ॥टेक॥
वेर वेर मंगल चार बधाई । मोतीयन चोक निज धाम ॥
परमानंददाम नेही अवसर । बंदीजनके पूरे काम ॥ आज ॥१॥

* ॥ ७ ॥ *

आज मखी रघुनंदन जायो ॥

सुंदर रूप नयन भगी निर्गवे । मंगल चार बधायो ॥ टेक ॥
परम कुतोहल नगर अयोध्या । मोतीयन चोक पुरायो ॥
द्वारे द्वारे मारग गलीयारे । कंचन कल्प बनायो ॥आज मखी॥१॥
पूरण ब्रह्म मनानन कहीये । वेद उपनिषदे गायो ॥
महा भाग्य राजा दशरथको । राधो जनमज आयो ॥ आज मखी ॥२॥
ब्रह्म घोष मली करत वेद धुनी । दुदुंभी देव बजायो ॥

गुण गांधर्व चारण जश बोले । चहोदशआनंद पायो ॥आज मखी॥३॥
पान फुल फल चौंवा चंदन । बहु हार लोक ले आयो ॥
परमानंद प्रभु मनमोहन । कौशल्या उर लायो ॥आज मखी॥४॥

* ॥ ८ ॥ *

फुले फिरत अयोध्या वासी ॥

सुंदर सुत जायो कौशल्या । रामचंद्र मुख गमी ॥ टेक ॥
द्वार्घनी चंदन बार माथीयो । मोतीयन चोक पुगयो ॥
नाचन गावन देत वधाई । मानु घर्ही घर सुत जायो ॥फुले॥१॥
गली गली गज वाजी जहाँ तहाँ । हुलका दीये रे नबेले ॥
दान बहोत जावक जन थोडे । कहापे जान मकेले ॥फुले॥२॥
दशरथ भूप भंडार मुगन कीये । बंदीजन अभर भरे ॥
सकट सरीता सोहे मालनी । द्वेर्ध द्वेर्ध धरे ॥फुले॥३॥
शांत कमल मुख देन काज रवि । गधो उदय करे ॥
मुदितही देव दुंदुभी वाजे । निशाचर निमीर हरे ॥फुले॥४॥
देत आशिष नगर नर नारी । चिर(न)जीवो रुवीर ॥
अग्रदाम आनंद अग्निल पुर । मिटी ताप तन पीर ॥फुले॥५॥

* ॥ ९ ॥ *

बाजत कहाँ वधाई—नगरमाँ

गर्व उदय कौशल्या माना । रामचंद्र निधि पाई ॥ टेक ॥
ऋषि पुछे कौशल्या माना । कैसो जन्म गोसाई ॥
नौमी सोमवार तिथी निको । चौदश भुवन बढाई ॥नगरमाँ॥१॥
ब्राह्मण वेद पढे अति निरमल । ऋषि अभिषेक कराई ॥

द्वारे भीर भई दशरथके । शाम वेद धुनी गई ॥ नगरमां ॥ २ ॥
 घेर घेर मंगल चार माथीयो । मोतीयन चोक पुराई ॥
 नोहर गज रामको निको । सूरदाम जहाँ पाई ॥ नगरमां ॥ ३ ॥

* ॥ १० ॥ *

आज अयोध्या मंगलचार ।

अति आनंद भयो दशरथके । राम लीयो अवनार ॥ टेक ॥
 तरीया तोरण बाग बंधावो । नवपलब्र दरबार ॥
 गज मोतीयनको चोक पुरावो । गावत गीत रसाल ॥ आज ॥ १ ॥
 सुंदर वदन कमलदल लोचन । लिला मिंधु अपार ॥
 अग्रदाम बल जात चदनपर । भगवन प्राण आधार ॥ आज ॥ २ ॥

* ॥ ११ ॥ *

अवधपुरी आनंदको रूप ।

ठाढे मुनिजन विरद बखाने । दशरथ बडे हैं भूप ॥ टेक ॥
 जाको नाम निगम निन गावे । जोगेश्वर निज रूप ॥
 सो खेले दशरथके आंगन । अंगो अंगमुधारस कूप ॥ अवधपुरी ॥ १ ॥
 घेर घेर कामधेनु चिनामणि । कल्पवृक्ष अनूप ॥
 अग्रदाम मेवु रुनंदन । कनक कलम पंचायन धूप ॥ अवधपुरी ॥ २ ॥

॥ इनि श्री मारंग ॥

राग काफी ॥ १ ॥

साहेली आज मंगल हो । हो महामंगल, प्रगटे हैं अयोध्यामें राम ॥ टेक ॥
 चैत्रमास नौमी अजुवामी । मोम सुदन दो जाम ॥
 कौशल्या दशरथ गृहे प्रगटे । राजीव लोचन राम ॥ साहेली ॥ १ ॥

देवलोक भूलोक रसानल । परम पुनीत निज धाम ॥
 सप्त पुरीमें प्रथम गनी है । अयोध्या है जाको नाम ॥साहेली॥२॥
 छांड निमेष अनेक अमरधन । रहे विमान नभ छाय ॥
 राजा दशरथकु मानु विधि । नवी पुरी देह बमाय ॥साहेली॥३॥
 गगन थाल जामें उडवन मुगना । शशीय श्रीफल बलीहार ॥
 राजा दशरथकु मानु विधि । बधावत है जुगचार ॥साहेली॥४॥
 कल्पतरुकी पुरी कल्पना । कामधेनुकु काम ॥
 चिंतामणि चिंता परि पूरण । प्रगट भये सुख धाम ॥साहेली॥५॥
 सरजू कुंभ भरी रे नवल सखी । जल मधेत दोयो दान ॥
 नवल त्रिया मागर पाई हो । गरज करन जश गान ॥साहेली॥६॥
 दुष्ट भये सब दीन मलिन मुख । मुदिन भये सब संत ॥
 दुःखघट्ठो सुख सिंधु बब्बो हो । ताथे प्रकुलिन यशवंत ॥साहेली॥७॥

* ॥ २ ॥ *

खुबंशी दुल्हो गाईये हो । हो गाईये रे, जानकी जीवन राम ॥टेक॥
 आज बधाई दशरथके गृहे । प्रगटे जगदाधार ॥
 जन्म जन्म अवनारलीयो है । सब संतनके सुखकार ॥खुबंशी॥१॥
 घर घरमे देखन चली हो । सब सखीयन करी शणगार ॥
 कनक थाल लई कामिनी चलीहो । दशरथके दरबार ॥खुबंशी॥२॥
 धन नगरी अयोध्यापुरी हो । धन नौमीकी गत ॥
 धन धन कुल पावन कीयो हो । धन धन कौशल्या मात ॥खुबंशी॥३॥
 पठनही वेद बिमल धुनी हो । मुनिजन देत आशिष ॥
 मन कर्म बचने योंहो कहेत है । हरि जावो कोट वरीष ॥खुबंशी॥४॥

हरि जन हरि जन हरगव भरे है । असुरन के कुल त्रास ॥
भूमी भार उतारवा हो । कहेन गदाघरदास ॥ रघुवंशी ॥ ५ ॥

॥ गग काफी धूमार ॥ १ ॥

आज दशरथके द्वार । के मंगल गावही ॥ के मंगल ॥
आये नगरके लोक । बाल हुलराव ही ॥ बाल ॥ टेक ॥
शणगार मजी सब नार । चली सब सुंदरी ॥ चली ॥
आये राज दरबार । के नयने नेह भरी ॥ के नयने ॥ १ ॥
कंचनके दोउ स्वंभ । हरि छुले पारणे ॥ हरि ॥
लेनी मान उछंग । जाउ हाँगने वारणे ॥ जाउ ॥ २ ॥
हरद दधि करी भेल । कलम भरी लावही ॥ कलम ॥
उठन अबिल गुलाल । के रंग मचावही ॥ के रंग ॥ ३ ॥
तहाँ बाजन ताल मृदंग । पाये बाजे घुवरा ॥ पाये ॥
नाचन गावन गीत । के ज्यों कंपे धरा ॥ ज्यों कंपे ॥ ४ ॥
तब हर्षे दशरथ राय । वशिष्ठ बोलावही ॥ वशिष्ठ ॥
करो बहोन पमाय । के नाम सुनावही ॥ के नाम ॥ ५ ॥
चार पुत्रके नाम । जनम कर्म करो ॥ जनम ॥ ६ ॥
जा विधि शाब्दमें होय । मोही विधि नाम धरो ॥ मोही ॥ ७ ॥
तब मुनिकर कीयो रे विचार । के नयने नेह भरी ॥ के नयने ॥
वाको नाम रघुनाथ । कृषिये वाणी ओचरी ॥ कृषिये ॥ ८ ॥
तब सुमित्रा कीयो रे प्रणाम । के नाम विधे धरो ॥ के नाम ॥
तब कैकेयी बोली बेन । नाम उनको धरो ॥ नाम ॥ ९ ॥
तब कृषिये कीनो रे विचार । के अंतर चित धरी ॥ अंतर ॥

भाग्यो भवको दुःख । भरन नाम धरी ॥ भरन ॥ ९ ॥
 नब हरम्बे नगरके लाक । के नाम सुनावही ॥ के नाम ॥
 नब सुमित्राके रे पुत्रको । नाम बदावही ॥ नाम ॥ १० ॥
 नब मुनिवर अंतरमांहे । के सुरत सोहावही ॥ के सुरत ॥
 लक्षण है रे अपार । के लक्षण भावही ॥ के लक्षण ॥ ११ ॥
 नब प्रेम वचन रे सुनाय । के हैए हर्ष धरी ॥ के हैये ॥
 यात्यो शत्रुको माल । शत्रुहन नाम धरी ॥ शत्रुहन ॥ १२ ॥
 इम विधि मुन्यो जब नाम । के हरष वधाई भई ॥ हरष ॥
 आये देव विमान । के नभ छाही रही ॥ के नभ ॥ १३ ॥
 बाजत दोल निशान । वधाई गाव ही ॥ वधाई ॥
 आपे याचककु दान । के नाचत गावही ॥ के नाचत ॥ १४ ॥
 भयो तहाँ जय जयकार । सब कोई यों भणे ॥ सब कोई ॥
 कहेत गदाधरदाम । भाग्यको को गणे ॥ भाग्यको ॥ १५ ॥

॥ जन्म वधाई ॥ राग आसावरी ॥

नौमीके दिन नोबत वाजे । सुन कौशल्या जायोरी ॥
 मान धरी दिन बिन गयो है । सब मवीयन मंगल गायोरी ॥ टेक ॥
 कंप्यो मिंधु कंगुरा नायक । लंकामें अगम जनायोरी ॥
 सब लंकामें सोच पयो है । शज भूप घेर आयोरी ॥ नौमी ॥ १ ॥
 कंचनके दोउ कलम समारे । मोतीयन चोक पुगयोरी ॥
 मकल बोलाय सुचना कीनी । अम्बे भंडार लूटायोरी ॥ नौमी ॥ २ ॥
 गृहे गृहेथे सब वधुनी बोलाई । मंगल गावन आईरी ॥
 राय आंगणमें ढाल दुलीचा । आदर करी बैठायोरी ॥ नौमी ॥ ३ ॥

तब दशरथ आनंद भयो है । गमचंद्र गृह आयोरी ॥
जयजयकार करे सुर मुनिजन । इन्द्र निशान बजायोरी ॥ नौमी ॥ ४ ॥
दशरथगये बजाज बोलायो । सारी सुरंग मगायोरी ॥
जे जाके मन भावे जैसी । सो नाकु पहेगयीरी ॥ नौमी ॥ ५ ॥
पाट पीनांवर खासा झोना । मजन लोक पहेगयोरी ॥
तुलसीदास कहा लों बरणु । तीनलोक यश छायोरी ॥ नौमी ॥ ६ ॥

* ॥ २ ॥ *

अयोध्या पुरी आनंद भयो है । दशरथ सुन गृहे जायोरी ॥
जयजयकार करन सुर मुनिजन । जल सुन पुष्प वरण्योरी ॥ टेक ॥
घोन निशान बधाई बाजत । मेवा विविध मीठाईरी ॥
हरण भयो हशस्थ महाराजा । सब सुरनर सुख पायोरी ॥ अयो ॥ १ ॥
आये वशिष्ठ आनंद भयो है । धन दशरथकुल जायोरी ॥
गम लक्ष्मण भरत शत्रुहन । वशिष्ठे नाम धगयोरी ॥ अयो ॥ २ ॥
घेर घेर ओच्छव होन आनंद धन । मुनिजन मंगल गायोरी ॥
कंचन थाल भरी मुक्तारुल । कौशल्या सुनकु बधायोरी ॥ अयो ॥ ३ ॥
तरीया तोरण द्वारे शोभीतां । कंचन कलस बंधायोरी ॥
षंच शब्द दुंदुभी बजावत । पीत धजा फेहेगयोरी ॥ अयो ॥ ४ ॥
केमर कम्तुरी मलीयागर । चंदन चरच मोहायोरी ॥
एकपक्षन एक भरी भरीछाँटन । अबील गुलाल उडायोरी ॥ अयो ॥ ५ ॥
चौवा चंदन और अग्नजा । सोंधे कीच मचायोरी ॥
छाँटन लागी कनक पीचकारी । प्रेम प्रवाह बहायोरी ॥ अयो ॥ ६ ॥
बंदीजन विमल जश गावत । गरजन वेद गगन धुनीरी ॥

होत ओछाह द्वार दशरथके । नरत करन नारद मुनिरी ॥ अयो० ७ ॥
 परफुलिन मुनि सहस्र अवासी । रघुवर जनम सुन्यो नवरी ॥
 धन धन दिव्यम आज अनोपम । चेत्र माम नौमी दिनरी ॥ अयो० ८ ॥
 नहाना विधिके दान अनोपम । गजस्थ देन देवावतरी ॥
 एक आवन एक जान विदा होई । दशरथ मुन गुण गावतरी ॥ अयो० ९ ॥
 बहोत दिनको बिछूडो दाढ़ीयो । रघुपति याचन अयोरी ॥
 खोजन खोजन जनम विगत भयो । शयदशरथ गृह अयोरी ॥ अयो० १० ॥
 अपनो दाढ़ी दीन दुर्बलता । रघुकुल वचन लजावतरी ॥
 पनित शिरेमणि हैं अपराधी । निर्लंज पिनाकुल जावतरी ॥ अयो० ११ ॥
 मागन वधाई भवनर वेकी । सब संतन सुख पावतरी ॥
 रंक निवाज कीये जन तुल्सी । उमंगी उमंगी यश गावतरी ॥ अयो० १२ ॥

* ॥ ३ ॥ *

दशरथके गृहे आज भलो दिन । पुत्र भलो भयो माईरी ॥
 जीनके सोधे वेद विविध विध । सो नाम धर्यो रघुर्दाईरी ॥ टेक ॥
 नौमी परम पुनीत परम सुख । जायो जग सुखदाईरी ॥
 परम नक्षेत्र और परम महामुख । बाजन बहोत वधाईरी ॥ दशरथ ॥ १ ॥
 पुरन चंदन चौक सुवासीनी । अगर्मे सुधर्दाईरी ॥
 समझी समेट चली चहोदशथे । उमंगी उमंगी गुण गावेरी ॥ दशरथ ॥ २ ॥
 कमल वदनकी सोभा निरखन । अदभूत सुंदरनाईरी ॥
 मानु भानु उदीत भये कोटिक । किरण कला छिटकाईरी ॥ दशरथ ॥ ३ ॥
 ले ले थाल तिलक दे माथे । विप्रने दो वधाईरी ॥
 हीरा मोती रतन पदारथ । दीयो भंडार लूटाईरी ॥ दशरथ ॥ ४ ॥

फुले फिरन अयोध्यां चहोदश । प्रेम पुनीत सुखदाईरी ॥
चीर जीवो कौशल्या नंदन । नंददास बलजाईरी ॥दशरथ॥५॥

* ॥ ४ ॥ *

सुंदर गम पाल्णे झुले । कौशल्या मुण गावेजु ॥
बला उतार देन मुनि वंदन । गजीव लोचन भावेजु ॥टेक॥
दशरथ पालण चार घडाये । सब चंदनको माजुजु ॥
हीरा जहीन पाटकी दोरी । रन जडाये बाजुजु ॥ सुंदर ॥१॥
गते चरण कमल कर गते । जलद श्याम तन मोहेजु ॥
शुंधर वाले अलख बदन पर । मधुर हाम मन मोहेजु ॥ सुंदर॥२॥
गृहे गृहे मंगल चार अयोध्या । रघुवर जनम निवासेजु ॥
गावन मुनन लोक होन पावन । बल प्रेमानंद दासजु ॥सुंदर॥३॥

॥ ढाढ़ी ॥

॥ साखी ॥

कुशल तुज परिवार । आशिष वचन अमनगो ॥
श्यामल वरण मुजान । जात्रक भणनो जीवणो ॥१॥
॥ राम आसावरी ॥२॥

गम जनम सुनी अपने पतिसु । हसी ढाढ़णी युं बोली हो ।
चल्योहो कंथ गजा दशरथ गृहे । दाम कोटडी खोली हो ॥टेक॥
तुम ही मिले गो वागो अंगको । और मोतीयन भरी छोली हो ॥
हम हुं नख शिखथे गहनो । तेल मोंधे भरी चोली हो ॥राम जनम ॥१॥
माज महिन एक घोडा लीजो । हमारे चढनकुं ढोली हो ॥
हंसनी सी एक सुंदरी लीजो । ठहल करनकुं गोली हो ॥रामजनम॥२॥

मेज सहित एक पलंग लीजो । और पानकी ढोगी हो ॥
 बीरी कर कर तुमकुं खवावे । लीजो सहित तंबोली हो ॥राम जन्म३
 सहित अंबारी हाथी लीजो । हाथनी बहोत अमोली हो॥
 जन्म जन्म याचे नहीं काहुं । बहोर न ओढे ओली हो ॥राम जन्म४
 दीजो दान दाढणी केरं । ज़मो जन्म अमोली हो ॥
 जनगोविंद रघुवीर याचके । रहु अयाचक टोली हो ॥राम जन्म५
 ॥ काफी गग धुमार ॥१॥

हुं रघुवंशकी दाढणी । अवधपुर आई हो ॥ अवधपुर ॥
 मुनी जायो कौशल्या पृत । के धामसु धाई हो ॥ धामसु ॥ १ ॥
 उर्वशी शशी इन्द्र । अखाडेथे आई है ॥ अखाडे ॥
 अपनो साज संवार । समेटके लाई है ॥ समेटके ॥ २ ॥
 ता ता थे ता थे । लीये गत गोहनी ॥ लीये ॥
 दशरथके मंदीरमें । नरतन मोहनी ॥ नरतन ॥ ३ ॥
 ताल मृदंग उपेंग । के बाजन बंगरी ॥ बाजत ॥
 तान बंधन सु मान । के गावन ग्रसुंदरी ॥ गावन ॥ ४ ॥
 मंदीरमें बोलाय । जहां कौशल्या गणी है ॥ जहां ॥
 शिश नमाय आशिषदे । वंश बखानी है ॥ वंश ॥ ५ ॥
 यश सुनके रिक्षी मैया । अवध सब सुंदरी ॥ अवध ॥
 भूषण दीयोरे मगाय । के दई एक मुंदरी ॥ दई ॥ ६ ॥
 दीयो हैयाको हार । के चंदन बायको ॥ चंदन ॥
 दीयो है कंचनको जेहर । पंकज पायको ॥ पंकज ॥ ७ ॥
 दीनी सोंधे भीनी सारी । कंचुकी नेहकी ॥ कंचुकी ॥

दाढ़गी करीरे निहाल । के अपने गेहकी ॥८॥
 माँगन दीयो रे आशिष । जीयो तेगे लाडीलो ॥ जीयो ॥
 गुण गावे चहुभुज दास । सबे सुख बादीलो ॥ सबे ॥९॥

॥ गग मरु ॥१॥

तुम सुनहा अयोगा ईश । निहारे में ढाढ़ी आयो हो ॥
 में तो नामु तुमकु शिश । निहारे में ढाढ़ीरो हो ॥ टेक ॥
 में ढाढ़ी श्रीरघुरे बंशको । याचन आयो आज ॥
 बड़ी भाग्य हो राय तिहारे । आये श्रीमहागज ॥ तिहारे ॥१॥
 सुनी बधाई तबे उठी धाये । आयो एके सास ॥
 मन वांच्छिनफल दीजो गउ । पुरो हमारे आस ॥ तिहारे ॥२॥
 जहां तहां याचन नहि जाउ । न गाउ ओंको गीत ॥
 प्रभु पथारे तहां चली जाउ । एहो हमारे रीत ॥ निहारे ॥३॥
 पोमी पनि तो अनि रे भरे है । मो मेरे कोन ही काज ॥
 तुम पे याचन आयो तबही । जनमें श्रीमहागज ॥ निहारे ॥४॥
 जे मागु सो मोही दीजो । कीजो करुणा मार ॥
 जो तुम आयो तो मैं मागु । बोये आप विचार ॥ निहारे ॥५॥
 माग माग कही गजा बोले । तुमसे कौन बडाई ॥
 जो होय इच्छा मो कही मुखमे । संक न धरो मनमाई ॥ निहारे ॥६॥
 भली रे कही कही बोले तबही । जर हो दीनो बोल ॥
 कौशल्या ले गोद कुंवरकुं । निरखो करुरे कलोल ॥ तिहारे ॥७॥
 दरशन पायो कीयो मन भायो । लायो व्यावानो मार ॥
 चैत्र मास नौमी उजीयारे । सूरदाम बलीहार ॥ निहारे ॥८॥

* ॥ ३ ॥ *

खुवंशी मेरो जजमान । तिहारो में ढाढ़ीयो हो ॥
 राम जन्म सुनी हुं चली आयो । राख हमारे मान ॥
 तिहारो में ढाढ़ीयो हो ॥ टेक ॥

एकबार हुं पहेलो आयो । जब कौशल्या जाई ॥
 देई गहनो दाढ़णो पहेनाई । बड़ोन बढ़ाई पाई ॥ निहारो ॥१॥
 अब जन्मे भरत शत्रुघ्न लक्षण । रुपनि परम उदार ॥
 चारो नेग निवेगे मेरो । दशरथ नृप दातार ॥ निहारो ॥२॥
 बढ़ो रे बंश सुन दीयो है विवाता । तबही आई में गायो ॥
 अश्व गज रथ मोता मोतो दे । जश विनान जग छाया ॥ निहारो ॥३॥
 करहा बाज दीये करजोरे । कनक रतन भरी नंग ॥
 बहोत दुधको महिणी दीनी । फले हमारे भाग ॥ निहारो ॥४॥
 मेरे आश निहारे घस्की । और गमु नहीं काज ॥
 फलोरे आशिष हमारे मुखकी । बड़ोरे बंश कुल राज ॥ निहारो ॥५॥
 करहाकी गति नाचन लागयो । ढाढ़णी दुलक बजाई ॥
 कौशल्या कैक्यी सुमित्रा । कंचन मुडी उठाई ॥ निहारो ॥६॥
 वार वारके दान दहवे । लेई जनुनीके लाग ॥
 देई दुशाला कीयो निहाला । और गुहीके बाज ॥ तिहारो ॥७॥
 रतन जडीन टोडर पहेरायो । दाढ़ी कुंडल कान ॥
 महागजादशरथ तेही अवसर । हाटक वरे दान ॥ तिहारो ॥८॥
 ढाटगीकु भीतरसे आयो । कंचन पञ्च रंग चौर ॥
 कुशी ढोले चाहनी चाहन । छापे तीन पहीर ॥ निहारो ॥९॥

गाय भेंस घोड़ी मोकल्हाई । भेली गुदोमें हाम ॥
 रतन दान और हेम जगई । उदेखोली मन घास ॥ निहारो ॥ १० ॥
 तथ दाढ़ी प्रफुल्हित होई बोल्यो । सुन नृप मेरी बात ॥
 पोरे बसायो मोहे रावरो । फुल्यो अंग न मात ॥ निहारो ॥ ११ ॥
 एह मनोथ मेरे मस्का । द्वारे पगे हुं गाउ ॥
 कौशल्या सुन नयने निरखु । अपनी गोद खेलाउ ॥ निहारो ॥ १२ ॥
 जन्म वधाई दशरथ सुनकी । सीखे सुने और गावे ॥
 अरथधरम और काम मुक्तिकल । भक्ति पदारथ पावे ॥ निहारो ॥ १३ ॥
 बहोन भात दाढ़ी पहेरायो । जे मागे सो दीनो ॥
 अग्रदासकु दान अभयपद । बहोर अयाचक कीनो ॥ निहारो ॥ १४ ॥

॥ धन्याश्री ॥ १ ॥

मेंतो मागन आयो आज । खुवर मागनो ॥
 मेंदो सफल भयो सब काज । खुवर मागनो ॥ टेक ॥
 दशरथ सुन सुन्यो मन जबही । अनि मोद मन माहे ॥
 घरकी त्रिया कहे उहां जाओ । तेरो दृःख दीदर जाये ॥ रघुवर ॥ १ ॥
 इननी सुनी तबे चली आयो । अवध पुरीके मांहि ॥
 कंचन कलश विनित्र बने है । सब मंगल गावे तांहि ॥ रघुवर ॥ २ ॥
 दशरथ राय सुन्यो है जबही । मागनकु बोलायो ॥
 बहोन भान्त कर विननी कीनी । अनि आदगमे बेगयो ॥ रघुवर ॥ ३ ॥
 चैत्र मास नामो उज्जीयारी । सुभे लगन लीये है राम ॥
 गजरथ अथ बहोनेक दीने । काहुकु दोने गाम ॥ रघुवर ॥ ४ ॥
 तबही बोलाय लीयो कौशल्याये । जो चाहो सो लीजो ॥

तुलसीदास प्रभु तिहारे मिलनकु। मोहे अभयदान दीजो॥खुबर॥५॥

॥ राग भूगाल ॥ १ ॥

आजु अवधपुर मारी भीर ॥ टेक ॥

एक आवत एक जात बड़ोही । एक ठड़े सरजूके नीर ॥

एक नहावन एक चंदनचढ़ावन। एक मुमीरन मीयारखुझीर॥आज॥१॥

एकनके नृप दान देन है । एकनके पहिरावन चीर ॥

एक रघुपतिके रूप निहारे । एक गावत है गुण गंभोर॥आज॥२॥

एक दोउ कर जोरेद्वारे ठड़े । एक डारत नयनमे नीर ॥

तुलसीदास करजोरे ठड़े । भक्तिदान दीजे खुबीर॥आज॥३॥

॥ राग प्रभात ॥ १ ॥

अवध नगर चलो देखो मेरी सजनी । -

- राजा दशरथजीके रामजी भये ॥

कौन घरी भरन भये मजनी । कौन घरी गजा गमजी भये ॥ अवध १

बाजन नाल छुटंग झाँझ डक । और नोबत पर चोप भये ॥

तंबुवन तंबुवन नाचत तायफे । सब खुबंशी मगन भये ॥ अवध २

हरे हरे गोबर अंगना लियाये । मोनीयन चोक पुरायलीये ॥

अपने अपने भुवनते निकसी । गज मोनीयनको थाल लीये ॥ अ०३

बैत्रमास नौमीकी पूजा । सुखे सगेवर नीर भरे ॥

कहेत कचीर दया सन गुरुको । घर घर मंगल चार भये ॥ अवध ४

* ॥ २ ॥ *

आजु सखी महागज राजगृह । आनंद बजन बधाईरी ॥

प्रगट भये खुनाथ लालजी । सुरनर मुनि सुख दाईरी ॥ आजुसखी १

सुभ नक्षत्र सुभ धरी मूहरन । जोग बार ममुदाईरी ॥
जयजयकार भये निहृपुगमें । देवन दुंदुभी वजईरी ॥आजु सखी २
चौवा चंदन और अगजा । केशर कीच मचाईरी ॥
दधि दुर्वागेचन फलफुला । बंदन बार दनाईरी ॥आजु सखी ३
नाचही अप्सग मुदित मन । अबोर गुलाल उडाईरी ॥
हरषे देव सुमन बहु वरखे । आनंदउरन ममाईरी ॥आजु सखी ४
बाल लिलारघुनाथलाल्को । शेष महसु मुख गाईरी ॥
तुलसीदास छवि कहां लगी बरणो । निगमपार नहीं पायोरी॥आजु०५

* ॥ ३ ॥ *

सुभग सेज सोभिन कौशल्या । रुचिर राम शिश गोदलिये ॥
बार बार विधुवदर्न बिलेकति । लोचन चारु चक्रो कीयो ॥सुभग १
कवहु पोढ पयपान करावति । कवहुक राखनी लाय हिये ॥
बाल केली गावनि हुलरावनि । पुलकीत प्रेम पीयूष पीये ॥सुभग २
बिधि महेश मुनिसुरही सराहत । देवन अंबुट ओइ दोये ॥
तुलसीदास एसो सुख पायो । कहुं तो पायो पीयो न पीयो ॥सुभग ३

* ॥ ४ ॥ *

चारु भाई पलना झुलै । जननी हरखी झुलावेरी ॥
देवन मुनिजन ध्यान धरत है । ध्यान हुं आवत नाहिरी ॥चारुभाई १
ब्रह्मारिव सनकादिक नारद । निरखि परम सुख पावेरी ॥
पूरण ब्रह्म अखिल अविनाशी । नृप सुन आय कहावेरो॥चारुभाई २
भक्त वत्सल भक्त न हितकारी । शिलगुण रूप दिखावेरी ॥
देखी चरण मन भयो है कृतारथ । तुलसीदास मन लावेरी ॥चारुभाई ३

* ॥ ५ ॥ *

वागत अनि आनंद वधाई । अवध पुगी मधे आजुगी ॥
 जन्म लीयो श्रीगम धाम मुख । सरूल भये सब काजुगी ॥टेक॥
 घोस्त निशान दुंदभी अपथन । मानु महा घन गाजुगी ॥
 नाचत नर नारी रंग भीने । कीने मक्कल समाजुगी ॥वागत॥१॥
 धर्म उदार गयदशथ बहु । देत दान बड गजरी ॥
 रतननिशान कनकपट भूषण । माज धेनुगज वाजरी ॥गागत॥२॥
 नरपति सुपति महिपति नके । श्री ग्वानि शिखाजरी ॥
 प्रगटनही देग करके प्रभु । विजन गये सब भागरी ॥वागत ॥३॥

॥ राग वेलावल ॥१॥

कौशल्या प्यारे गमको । लिये गोद खेलावे ॥
 सुंदर रूप निडारिक । मन मोद बढावे ॥ टेक ॥
 चलन मिखावे प्यारे गमको । पग नेपूर वाजे ॥
 पिन झिंगुलोयां अधिक बनो । कोटिक छवि लाजे ॥कौशल्या॥१॥
 कुंडल बने है जडावरे । मणि मानिक मोति ॥
 शशी मंडलके मध्यमें । उडघनकी जोति ॥कौशल्या॥२॥
 शिर सुभग कुलही बनि । माये बिंदु गजे ॥
 निलकंज नखके हार । कर कंफन गजे ॥कौशल्या॥३॥
 वाल लिला धुनाथकी । सुरनर मुनि गावे ॥
 तुलसीदास पर येही कृष्ण । नित दर्शन पाये ॥कौशल्या॥४॥

* ॥ २ ॥ *

पलना झुगवे श्रीगमको । कौशल्या माई ॥

रतन जडितके पालना । रेसमकी दोरी लगाई ॥ टेक ॥
जननी हरखी झुलावही । छुले रघुराई ॥
रुमक झुमक पग ऐजनी । धुनि अधिक सोहाई ॥ पलना ॥ १ ॥
बाल सखा ले संगमें । सरजू तट जाई ॥
कौशल्या श्रीरामको । बोलनको जाई ॥ पलना ॥ २ ॥
आवत देखे मानुको । प्रभु चल ही पगई ॥
बार बार श्रीरामको । तुलसी बलिजाई ॥ पलना ॥ ३ ॥

* ॥ ३ ॥ *

बान धनैया किते धरि । दै दे मेरी माई ॥ टेक ॥
प्रान होन हरि खेलन गये । सब सखा बोलाई ॥
अपने अंगनामें खेलीयो । मिली चारो भाई ॥ बान ॥ १ ॥
खेल स्थ्यो बहु भाँनिके । सरजू तट जाई ॥
विविधि भाँनि बैठक बनि । फुलवारि लगाई ॥ बान ॥ २ ॥
भाँनि भाँनि पंछो बोल ही । मोहि लगन सोहाई ॥
एक बान मोरि चोरि गये । सरजू तट माई ॥ बान ॥ ३ ॥
नार निकट हम नही गये । बाबाकी दोहाई ॥
बुझो भरत बोल्य के । लक्ष्मण के भाई ॥ बान ॥ ४ ॥
मातु कौशल्या के गोदमें । बोले तुनुलाई ॥
तुलसीदास हरि मगन भये । सर धनुही पाई ॥ बान ॥ ५ ॥

॥ राग टोटी ॥ १ ॥

आनंद आनंद आनंद भाई । अयोध्यामें प्रगट भये रघुराई ॥ टेक ॥
आनंद मंगल हरखा अपारा । गावत नार आवत दरबारा ॥

नाचत गुनीयन गावन वधाई । छीरकत हरद दधि धाई धाई ॥१॥
 हमत हमत और पीसत है पात । देखी मगन भये दशरथ गउ ॥
 आये गोवाल मली सब टोली । देत है माट गयपर ढोली ॥२॥
 होहोकार करत सब बाला । अहो भले आये है गयके लाला ॥
 दशरथगय मगन भये तबही । निकट बोलाये याचक मवही ॥३॥
 लीलांबर पीतांबर देते । बंदीजन आशिष पढ़ लेते ॥
 बडे आचार्य सब ही बोलाये । दान देत तीनके मन भाये ॥४॥
 मगाई धेनु रूप ममारी । देत अलेखे न देखे बिचारी ॥
 भले भयो राय पुत्र तिहारे । सब विधि काज सरे है हमारे ॥५॥
 माना कौशल्याको मुख देखे । जात जनमके पाप अलेखे ॥
 मुर विमान चढ़ी निरखत आई । वरषन कुसुम अयोध्या माँही ॥६॥
 चीर(न) जीवो कौशल्या नंदन । देवको देव जगनको बंदन ॥
 धनुषही धारन असुर विदासन । कोण्यो ईश शिश दशरावन ॥७॥
 चैत्र मास नौमी उजीयारी । आनंद वधाई गायो नर नारी ॥
 जय जयदेव जगत गुरु स्वामी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी ॥८॥

* ॥ २ ॥ *

सब मली मंगल गावो हो भाई । आज रामजीको जन्म दिवस है ।
 बाजत रंग वधाई ॥ टेक ॥
 आंगणे मोती चोक पुरावो । विप्र पठन है वेद ॥
 करत शणगार राम लक्ष्मणकुं । चौवा चंदन मेद ॥ सब ॥१॥
 फुली फिरत कौशल्या गनी । प्रेम न हिरदे समाई ॥
 प्रेमानददास तेही अवसर । बहोत वधाई पाई ॥ सब ॥२॥

* ॥ प्रभात ॥ *

॥ १ ॥

हे रघुनाथ धर्मकी सीमा । वेद विमल जश गावे रे ।
 पोढे है प्रभु क्षीर सागरमें । ब्रह्मा जाय जगावे रे ॥ टेक ॥
 देव दुखिन दुखिन मब अवनी । लोकपाल दुःख पावे रे ।
 रावण आदि सकल असुरानन । संतनकुं दुख देवे रे ॥ हे रघुनाथ ॥ १
 जावो तुम ज्ञान करो चतुरानन । सब ईनकुं समजावो रे ।
 देव सकल तुम होवो बनचर । विरची फिरी आवो रे ॥ हे रघु ॥ २
 द्वापर मेट लिखो जुग ब्रेता । लिखीया फेर लिखावो रे ।
 में आगे मेरो भगत प्रगट है । ता पीछे में आवुं रे ॥ हे रघुनाथ ॥ ३
 भोमी भार उतारण कारण । संग शेष लेई आवुं रे ।
 माघोदास जगन्नाथ पद परसत । सूरज बंश कहावुं रे ॥ हे रघुनाथ ॥ ४

॥ इति श्री गमचंद्रना जन्म ममाना
 कीरतन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री जानकीजीना जन्म समाना कीरतन ॥

॥ राग भूपाल ॥

आज जनकपुर मंगल भाई ।

मधुपक्ष सुफल तिथी नौमी । प्रगटी कुंवरी मकल सुखदाई ॥ आजाटेक॥
 सुखनर कृत्य करत गुण गांध्रव । वरषत कुसुम देव समुदाई ॥
 जय धुनि बाजांबाजे जहाँतहाँ । गावे मंगल नरनारी सोहाई ॥ आज॥
 करी अस्नान दान दीनो नृप । गौ गज भोमी दीयो अधीकाई ॥
 कनक बसन सखीयन ही आये । जाचकमन अभीलाप पुराई ॥ आज॥
 जीन जीन माझ्यो सोतिनतिन दीन्हो । ताते बसुधा बहोत बधाई ॥
 जनकनंदनी बदन विलोकीन । तुलसीदास तहाँ बल बल जाई ॥ आज॥

॥ राग प्रभात ॥

* ॥ १ ॥ *

जा दिन सीता जन्म भयो है । आनंद मंगल छायो है ॥
 ना दिन थे सब लोकनको । मनको मूल गयो है । जादिन॥टेक॥
 अधर आद अवनिथी प्रगटी । देव न दुंदुभी बजाई ॥
 वरषत कुसुम अपार्ही जय जय । देव विमान छवाई ॥ जादिन॥१॥

जनक सुना दीपक कुल मंडण । मकल शिगेमण भायो है ॥
 रघुण मीच मुगत अवरगण । अभे दान लेलायो है ॥जादिन॥३॥
 सुंदर शील सोहागण केरो । महिमा कहन न आयो है ॥
 परम उदार रमजीकी प्यारी । पदरज नाभो पायो है ॥जादिन॥४॥

* ॥ २ ॥ *

आजु महा मंगल मिथीलापुर । घर घर वजन बधाईरी ॥
 रमा रूप गुण धाम जानकी । मुर नर मुनि सुखदाईरी ॥टेक॥
 चौबा चंदन और अगगजा । केसर कीच मचाईरी ॥
 बुंधवाले अलख बदनपर । मधुकर रहे लोभाईरी ॥आजु॥१॥
 कटि किंकनि पग नेपूर चाजे । मुनि मन रहे लोभाईरी ॥
 हरखे देव सुमन बहु वरखे । आनंद उर न समाईरी ॥आजु॥२॥
 शिव ब्रह्मा जाको पार न पावै । नारद ध्यान लगावेरी ।
 मातु सुनयना करत आरति । तुलसीदास गुण गायोरी ॥आजु॥३॥

॥ राग सारंग ॥१॥

बाजत आज बधाई—जनक गृहे ।

प्रगट भई है कुवरी किशोरी । सवहनके सुखदाई ॥टेक॥
 देत बधाई नृप कन्या । मंगल बाजत भेरी ॥
 जय जयकार होत राजघर । भेर दुंदुभी सोहेरो ॥जनक॥१॥
 गावे मंगल चार मखीगन । अंग सुगंधन खोरी ॥
 जनक भुवनकी सोभा अनुपम । देखत होगई भोरी ॥जनक॥२॥
 जनक नंदनीके गुण गावे । देत आशिष कर जोरी ॥
 चली चली सूखे सार जनकपुर । वार पार अननोरी ॥जनक॥३॥

* ॥ २ ॥ *

आज महा मंगल है जनक पुर ॥टेक॥
 कुंवरी किशोरी प्रगट भई है । सबहनके सुखदाई ॥
 ताहो दिनते जनक पुरमें । वेर वेर संयति आई ॥आज॥१॥
 द्वारे द्वारे बंधन माला । गृहे आनंद न माई ॥
 चढि विमान सुर कौतुक देखे । नभ दुंदुभी बजाई ॥आज॥२॥
 श्रीजनकललीकी सोभा देखत । पुष्प वृष्टि झडलाई ॥
 छेल छवियी रामजीकी प्यारो । दानो है सुख माई ॥आज॥३॥
 बल बल संत स्नेह छवोपर । रूप बधाई पाई ॥
 सूरदास कुंवरी मुख निरखत । आनंद उरन समाई ॥आज॥४॥

* ॥ ३ ॥ *

प्रगटी है कुंवरी किशोरी । सबहनकी सुखदाई ॥टेक॥
 देन बधाई आई नृप कन्या । भागननी वारी भोरी ॥
 जय जयकार होत राज घर । भेर दुंदुभि सोहेरी ॥ राय ॥१॥
 गावे मंगल चार मस्ती गुण । अंग सुगंधन खोरी ॥
 जनक भुवनकी सोभा उपमा । देखत हो गई भोरी ॥ राय ॥२॥
 जनक नंदनीके गुण गावे । देन आशिष कर जोरी ॥
 चली चली सूखे सोर जनक पुर । वार पार अनतोरी ॥राय॥३॥

* ॥ ४ ॥ *

आज जनकपुर मंगल माई ।
 माघव मास सुकल पञ्च नौपी नथ । प्रगटी है कुंवरी मकल सुखदाई ॥टेक
 जय जय दुंदुभि बाजा बाजे । गावत आनंद बधाई ॥

करी अस्नान दान देत नृप । गज भोम बाजी अधिकार्ह ॥आज॥१॥
 जीन जो मास्यो नीन सो पायो । बिनती कर जोर बढाई ॥
 जनक नंदनी घदन विलोकित । तुलसीदास द्वारे रहाई ॥आज॥२॥

* ॥ ५ ॥ *

आज जनकपुर होत बधाई । प्रगट भई जनकसुं कुंवरी ॥टेक॥
 मंगल साज मबे सुंदरी मली । घेर घेरथे उठी धाई ॥
 नम शिव सुंदर रूप विलोकिन । गीङ्ग लेत बलाई ॥आज॥३॥
 तोरण बंधन द्वार मनोहर । मोतीयन चोक पुराई ॥
 हाटक हीरा चीर पाटंबर । सुंदर मब पहेशाई ॥आज॥४॥
 बंदीजन सब द्वारे डाढे । उमंगी उमंगी जश गाई ॥
 देखन तुलसीदास शीतल भये । मानु रंक निधि पाई ॥आज॥५॥

* ॥ ६ ॥ *

माघव सुभ दिन नौमी । जनम लीयो है जनक लली ॥
 गय जनकके धाम मखीरी । बाजन बधाई भलीरी ॥ टेक ॥
 किरनी विसद परम गृह शोभा । देश देशकुं छाई चली ॥
 आकाश मात्र अयोध्या मंगल । आनंद छायो गली गली ॥माघव १
 परम विनोद मोद भर गावे । मंगल चार मबे अली ॥
 द्वारे द्वारे बंधन माला । महेलन महेलन गेली ॥माघव २
 नाश्यो अमंगल जग मंगल भयो । सब हनकी बिपत ठली ॥
 तुलसीदाम जगतकी जीवन । अब मतहेर रघुवीर बली ॥माघव ३

* ॥ ७ ॥ *

जनम बधावो राजकुंवरीको ।

जनक नरपतिके द्वारे गावे । नरनारी मंगल चार ॥१॥
 माघव सुकल पक्ष नौमी । जोग नक्षेत्र सुभवार ॥
 भूतल थे मानु भानु उदिन भयो । जगमग जोत अपार ॥जन्म॥१॥
 नव संघासन रूप चतुभुज । धरे मकल शणगार ॥
 चमर छत्र विजना पट भूषण । सखीगन करत विहार ॥जन्म॥२॥
 धूप दीप नैवेदन राजन । पूज नरपति वर पाई ॥
 बाणी विमल परसासीत पुलकीत । पुनी पुनी लेत वजाई ॥जन्म॥३॥
 जब भई कन्या कुंवरी सोमत्रा । मनषा तन अनुभयो ॥
 भयो सकल जग जान मुदित मन । बदत मुनिवर गयो ॥जन्म॥४॥
 मुनि देख चरण कर चिन्हे । कहेत निगम अगम अव गायो ॥
 अष्टसिद्ध नवनिध चार पदारथ । जनक नरपति धेर आयो ॥जन्म॥५॥
 धोरत है निशान नभ थे धुन । हरखे वरषे फुल ॥
 वेद विप्र गुरु सुन सुक्रित । विधिमां सब अनुकूल ॥जन्म॥६॥
 करे कतोहल मंगल गावे । विध युवा नर नार ॥
 तोरण कल्स चिनान पताका । मोतन बंधन बार ॥जन्म॥७॥
 मिले ब्रह्म क्षणि गज मभासुर । शारदा शेष महेश ॥
 बुझ गई नाप सकल जीवनकी । सुफल भयो सब देश ॥जन्म॥८॥
 पुरे पुरी जन गन जाचकजन भयो । नरप मंदीर भई भीर ॥
 चंदन चार अगजा छरके । वरषे कुमकुम नीर ॥जन्म॥९॥
 गन गंधर्व अप्सरा नाचत । करे नटी नट गान ॥
 उघटे गत नव भेदन सु । रागण तान बंधन ॥जन्म॥१०॥
 धेन स्तन मणि बसन बाज गज । कहे नरपति देव देव ॥

दान मान सनमान सबे मानो । बरषन लागे मेह ॥जनम॥११॥
 दान बहोन दीनो मिथिलापनि । मंगल करे कुमार ॥
 नर नारी पहेगयो वासन । कीये सब पूरण काम ॥जनम॥१२॥
 दल फल फुल लता हेम पलुव । नव नव वन आरंभ ॥
 बडे बडे राजन चढगज वाजन । दल बादल चढआयो ॥जनम॥१३॥
 एक बार भई भीर जो ऐमी । मिथिलापुरन समाय ॥
 बध गई सुख संपनि नृपके गृहे । भई सुख भयो संसार ॥जनम॥१४॥
 भुवन चतुरदश कई बला दूर । गए एकही बार ॥
 तरहुते देश सुदेश जनपुर । आद सकल अबनार ॥जनम॥१५॥
 श्रीजनक रायके गृहे प्रगटी । कुंवरी माहा सुखदार ॥
 सूर किशोरी करन जग मंगल । हरण सकल भूभार ॥जनम॥१६॥

॥ अथ श्री सवरा मंडप ॥

* ॥ प्रभान ॥१॥ *

भूप कुमार नदान सखीरी । तात कठिन प्रन ठनोरी ॥
 बाल मराल लाल अति कोमल । अंग पुष्पदल भीनोरी ॥टेक॥
 प्रेम बिबम जल भरे नयनमें । चुनरी अंचल भीनोरी ॥भूपकुमार॥१॥
 कोई समुजावे जाय पिताके । क्योन ऐमी मति दीनोरी ॥
 कुलिम कहोर पिनाक शंभुको । रावण बल हरि लीनोरी ॥भूपकुमार॥२॥
 देखन हाल विहाल जानकी । नाथ धनुर कर लीनोरी ॥
 तोयों धनुष मीया सुख दीन्हो । भाँवरीको सम कोनीरी ॥भूपकुमार॥३॥
 मीता व्याही अवधपुर आये । दंशरथ द्रव्य लूटायोरी ॥
 जाचक मकल अजाचक कीनो । तुलसीदास वर मागयोरी ॥भूपकुमार ४

* ॥ २ ॥ *

केवल स्वनाथ विना दूसरो न जाणु। भक्तको आधार प्रभु काहुकुन मानु।
शंकरको कठीन धनुष। जीनको भोवन तोरो ॥
बडे बडे भूप देखी। सबको मान मोरो ॥ केवल ॥१॥
कौशीकके जगन हेत। निशाचरी मारी ॥
गौतमकी नार अहत्या। चरण रेण तारी ॥ केवल ॥२॥
तूम गरीबको निवाज। मैं गरीब तेरा ॥
एक बेर कहो कृपाल। तुलसीदास मेरा ॥ केवल ॥३॥

* ॥ ३ ॥ *

दशरथ सुत अरु जनक नंदनी। चितवनमें चित चोरेरी ॥
नान्ही नान्ही बुंद पवन पुर। वसखहि थोरे थोरेरी ॥ दशरथ ॥ टेक ॥
हरि हरि भूमी घटाङ्गुकि आई। सरयू लेत हिलेरेरी ॥
उपवन वाग विहंगम बोले। दादुर मोर चकोरेरी ॥ दशरथ ॥१॥
हयदल पयदल गजदल रथदल। कोटि बने चहु चोरेरी ॥
बाजत ताल मृदंग झाँझा डफ। संखनकी धन धोरेरी ॥ दशरथ ॥२॥
नागरी नाम लीयावे पीयाको। सीयाजी हँसी मुख मोरेरी ॥
अग्रदास हरिको रूप निहारे। चरण कमल बलीहारीरी ॥ दशरथ ॥३॥

* ॥ ४ ॥ *

दशरथ सुत देख देख। जनक सुता मोहीरी ॥
धनुषबान कोउ चढावो। मेरे तो पति येहीरी ॥ दशरथ ॥ टेक ॥
बडे बडे भूपति आये। विश मुजा जाकीरी ॥
सबहनको मान मोर्यो। लछमनके भाईरी ॥ दशरथ ॥१॥

सीताजीको वचन सुनन । सबहनको मुख मोर्योरी ॥
 तब ही तनकाल राम । कठन धनुष तोर्योरी ॥दशरथ॥२॥
 जय जयकार भयो मत्वी । कहा कीनो बलारिंगी ॥
 आई सीना पायलागी । आरोपी वर मालारी ॥दशरथ॥३॥
 धेर धेर मंगल भयो । वागे बहु बाजारी ॥
 अग्रके स्वामी जीत आये । अयोध्याके गजारी ॥दशरथ॥४॥
 ॥ रग भूपाल ॥

आजु जनकपुर मोहनी डारी ॥
 सुंदर श्याम राम रघुनंदन । मोहि लीये सुरपुर नर नारी ॥टेक॥
 देश देशके भृपनि आये । उठे न धनुष महा अनि भारी ॥
 गुरु आज्ञामे उठे रामजी । तोरे धनु रघुनाथ खरारी ॥आजु॥१॥
 आई है सीना संग सहेली । जयमाला सियपिय उर मेली ॥
 तुलसीदाम दुलह रघुनंदन । दुर्लहिनि जनक कुमारी ॥आजु॥२॥
 ॥ रग कल्याण ॥

॥ कोण पे या धनुष जाय उठायो ॥
 मदन अरि को महाबल मारंग । जनक सुन विस्मय चित भयो॥टेक॥
 कमठ पीठ कडेर सुमहा । कठन शिव विकट बनायो ॥
 देखी झगेखे चितवन जानकी । कहा कीयो पण तान कहायो ॥को॥१
 धिक धिक जनक नक नहीं जानो । मोहे धीयापे धीज बनायो ॥
 ए नर मोही विधुं मन मोही । राजीव नयन वे न वर पायो ॥को॥२
 गढे भये हरि कहे गुरु जनपे । शांन बदन छवी धनुषपे आयो ॥
 धाये धीर धसी धाम धनुषपे । त्रिकुटी भाग नयन छटकायो ॥को॥३

सब सखी नृपनि निरख भये विस्मय । महाबलीनको मान गुमायो ॥
मेली माला सीय सूर प्रभू । कुसुम वृष्टि निशान बजायो ॥को॥४॥

॥ राग मरु ॥

॥ कठण पन कीनो मेरे तान ॥

कहाँये कठन कठोर शंकर धनुष । कहाँ ए कोमल गान ॥कठन॥टेक॥
उभी द्वारोखे ज्ञाखे जानकी । कही न मकन कोई बान ॥
जैसे लाल चिहंग पीजरे । प्राण चपल अकुलान ॥कठन॥१॥
तब रघुनंदन कटि भाथा बांधे । ठाढे रहे मुमकान ॥
अग्रदास प्रभु तोर्यो धनुष प्रीत । संतन सदा सुहान ॥कठन॥२॥

॥ राग मारंग ॥

कोनके दोवीर—ऋषिजी ॥

अति सुकुमार किशोर मनोहर । दीन लघु मद गंभीर ॥ऋषिजी॥
कहे विश्वामित्र मिथीलापतिसु । ए दोउ राजकुंमार ॥
यज्ञ ही कारण याचना कीनी । सरे हमारे काज ॥ऋषिजी॥१॥
यह सुनी हरदो सीरयो जनकको । या वृन् पुरण कर है गधो ॥
अग्रस्वामी प्रभु तोर्यो धनुष वृत । वैदेहीकुं करहेंगो ॥ऋषिजी॥२॥

* ॥ मनहर छंद ॥ *

फुलनकी माला हाथ । फुली कर थाली साथ
उभी है अरोखे ज्ञोखे । नंदनी जनककी ॥
देवत पीयाकी सोभा । सीयाजीको मन लोभ
एक टग गही जेमे । पुनरी कनककी ॥
कह हो पीतासु चान । कुंवर कोमल गान

कठन प्रनिज्ञा छांडो । तोडन धनुषकी ॥
तुलसी हैयेकी जान । तोयेहि पीनाक पान
वांसकी धनैया जेसे । बालक तनकसी(तान) ॥

* ॥ २ ॥ *

छोटीसी धनैया बान । पनैया पाये छोटी ॥
छोटीसी कटारी कटी । छोटीसी तरकसी ॥
राजनी है जगुली श्रीनी । दामिनीकी छबी छीनी ॥
सुंदर बदन शिर । पधीया झरकसी ॥
मुनि मन हरण आभूषण । विचित्र कीये बग्नसी ॥
सुनी सो आवन है । मनेहकी सरकसी ॥
मूरतीकी सुरती कहा । कहे जन तुलसी ॥
सोही जन जाने वाको । होय कृपा गमकी ॥

(नमु नमस्कार तेरे पावलेकुं देवा ए गग)

अहो मेरे रघोलाल । कठन धनुष तोरे ॥
द्वीप द्वीपके भूप आये । तीनहु न फोरे ॥ टेक ॥
तात प्रताप मात पे ए । विश्वामित्र जो सहाई ॥
एते जोग भये । ताते धनुष लीये चढाई ॥ अहो ॥ १ ॥
गोदमें बैठाये शिशु । बाटन वधाई ॥
अग्रदाम कौशल्या सुन पे । वार वार बल जाई ॥ अहो ॥ २ ॥

॥ हिंदोलो ॥ राग केदारो ॥

सीया गजीव नेन-झुलन ।

रतन झडीन हिंदोलनोरे । सखी समके सुख ऐन ॥ टेक ॥

श्याम अंगपर गौर झलके । दामिनी घन गेन ॥
 मिथुली शिर स्वर्वीर मोभा । निरख लजी मत मेन ॥झुलत॥१॥
 एकन मिले पीयाकुं नागरी । ज्यों मखियनमें चेन ॥
 जानकी मन ही लेन मुखसुं । देनी लोचन मेन ॥झुलत॥२॥
 अरम परम झुलाय झुलवत । बोलन मधुरे वेन ॥
 अवधपुरी निज केली दंपति । अगर सुखकी ऐन ॥झुलत॥३॥

* ॥ २ ॥ *

राम गजीव नेन-झुलत ।

जनक जाई मनमुख विगजे । तडीन घन ज्यों गेन ॥टेक॥
 अनि ही झुलत मन ही फुलन । रहेम पोहोपति मेन ॥
 लालके उर लागी राजीत । नखकी रेखा ऐन ॥झुलत॥१॥
 परमपर झुलाय झुलवत । जब लोलुधनी नेन ॥
 निरखन है विनत मखियन । अगर आनंद देन ॥झुलत॥२॥

॥ इति श्री जानकीजीना जन्म समाना
 कीरतन संपूर्ण ॥

॥ रामकवीर ॥



॥ अथ श्री कृष्णजीना जन्म समाना कीरतन ॥

* ॥ राग केदरी ॥ *

देख हो वसुदेव-हरिमुख ।

कोटि काम स्वरूप सुंदर । कोई न जाने भेव ॥हरि मुख॥१॥
 प्रथम आठो मास भादो । रोहणि अंधियार ॥
 वसुदेवके गृहे प्रगटे पुरन । कृष्णजी अवतार ॥हरि मुख॥ २ ॥
 जाके चार भुजा चार आयुध । निरस्त्री ले नर ताहे ॥
 अज हु पन परतीन नाहि । मोहे नंद गृहे लेजाये ॥हरि मुख॥ ३ ॥
 झडन ताला पढते पहुरखा । खोले सबही द्वार ॥
 बंध बेडी सबे छूटी । कहो कवन विचार ॥हरि मुख॥ ४ ॥
 श्वान सुते पहरु पोढे । निन्द्रा आई गहे ॥
 गत अंधियारी विज चमके । सुघन वरषे भेह ॥हरि मुख॥ ५ ॥
 शेष आगे मंग पीछे । बहत जमुना पूर ॥
 नाशीका लो नीर बाढो । पार पेले दूर ॥हरि मुख॥ ६ ॥
 श्रीकृष्ण हुंकार दीनो । पायो जमुना भेव ॥
 परस जमुना पार दीनो । उतरे हो वसुदेव ॥हरि मुख॥ ७ ॥
 बाबा नंदजीसु जाई कहीयो । सुनतहो वसुदेव ॥
 कहेन कबीर सुत जान अपनो । बहान कीजो सेव ॥हरि मुख॥ ८ ॥

* ॥ २ ॥ *

॥ देखो नयन अघाय—हरि मुख ॥

मान पिताके बंधन छूटे । आये वैकुंठ गय ॥ हरि मुख॥१॥
 जागे वसुदेव पोर उधारी । मंदीर देख्यो उजास ॥
 जोत जगमग श्याम धन नन । नख कोटि भान प्रकाम ॥ हरि मुख॥२॥
 शंख चक्र गदा पद्मधारी । भृगुलांछन भुजा चार ॥
 पोडम चेहेन सोहामणा । पद शोभा अनंत अपार ॥ हरि मुख॥३॥
 शिर मुगट कुँडल तिलक झलके । कौम्तुम मणि उर दाम ॥
 सकल भूषण अंग सोहीये । पीनांवर धन श्याम ॥ हरि मुख॥४॥
 माना पिना मन मोद पायो । ठुर रुदीया नयन ॥
 करी प्रणाम वसुदेव बोले । नाथ उचरे बेन ॥ हरि मुख॥५॥
 धरी धरीयो ध्यान धरीयो । दुःख तजो पिना ओर मान ॥
 मेरे कारण मंकुष पायो । बैगे छोडावु नात ॥ हरि मुख॥६॥
 कंग मारु भय निवारु । तुम सुनो हो वसुदेव ॥
 उग्रमेनकु राज देवु । करु तुमारी मेव ॥ हरि मुख॥७॥
 पिना बचन ए सत्यमानो । मोहे गोकुल दो पहुंचाय ॥
 जशोमति जन्मी जोग माया । मो यांहा ले आय ॥ हरि मुख॥८॥
 अर्ध रजनी बार लागी । मेह वस्ता होय ॥
 जाता जानां पहोरआ । अनि दुःख देवे मोय ॥ हरि मुख॥९॥
 नात त्राम न मानीयो । तुम सुनो बचन हमार ॥
 रक्षा करहु सकल ठोरे । उठो सोच निवार ॥ हरि मुख॥१०॥
 बचन सुनत वसुदेव उठे । हरि भये बाल सख ॥

वसुदेव तन ओळंग लेके । चले जादव भूप ॥ हरि मुख ॥ १० ॥
 पहरआ अति पहोर पोढे । खुले बाट कमार ॥
 रक्षा कीनी शेष मिलके । दीनी जमुना पार ॥ हरि मुख ॥ ११ ॥
 गोकुल पहोंचे जाय जे समे । सुत लीयो कंठ लगाय ॥
 पुत्री लेके पिता वसुदेव । दीन पहोंचे आय ॥ हरि मुख ॥ १२ ॥
 अर्ध रजनी बहीत भई । तब मेह झट अतिलाय ॥
 बालक जनम्यो जानके । तब पहरये कह्यो जाय ॥ हरि मुख ॥ १३ ॥
 कंस कहे ले आवो अबही । जान न लावो वार ॥
 पटक पछाडो शीला उपर । तसन लायो मार ॥ हरि मुख ॥ १४ ॥
 कन्या जानी दया आनी । ले गये उनही धाम ॥
 पटक पछाडन योग माया । उचरी ते धाम ॥ हरि मुख ॥ १५ ॥
 सुनो अनुचर कंसके तुम । कहो जाई निरधार ॥
 जनमाधो प्रभु गोकुल पहोंचे । निश्चे मोहोत विचार ॥ हरि मुख ॥ १६ ॥

॥ राग आसावरी ॥

आनंद वाध्यो अनिरे धणो । काँई हरख्या सुरनर लोक रे ।
 जादव कुलमें जादव जायो । मातानो टलीयो शोक रे ॥ टेक॥
 वसुदेव मन विस्मय पाम्या । काण कुंवर आव्या रे ॥
 दुष्टविदाग्न मंकुष्ट यालन । गोकुलमां पवगव्या रे ॥ आनंद ॥ १ ॥
 दुंदुभी नाद अंतर थकी वाजे । पुष्य वृष्टि तहां थाय रे ॥
 नरमंयाचा स्वामी जशोदाने खोलै । वसुदेव सुकी जाय रे ॥ आ ॥ २ ॥

* ॥ २ ॥ *

जशोदाजीने आंगणीये । रुडी सुंदर शोभा दीमे रे ॥

मुक्ताफलना तोरण लहेके । जोई जोई मनडां हीमे रे ॥टेक॥
 मालो माल मानुनीयो हीडे । उलट अंग न माये रे ॥
 कुक्कम केसर चरचीत अंगे । धेर धेर ओच्छव थाय रे ॥जशोदा॥१॥
 धन धन नंद भुवननी लिला । जहां प्रगत्या परमानंद ॥
 रंगनी रेल नरमैयो नाहे । मन वाख्यो आनंद रे ॥जशोदा॥२॥

* ॥ ३ ॥ *

आज आनंदा नंद तणे धेर । मानुनीयो मली मंगल गाय ॥
 वागे ताल मृदंग ने भेरी । आंगण मोती चोक पूर्ण ॥टेक॥
 कंचन थाल भरी श्रीफलमु । वधावे तहां त्रिजनी नार ॥
 कुक्कम केसर आंगणे छिरकीत । मोतीना तोरण बांध्याद्वार ॥आज॥१॥
 श्रावण मास कृष्ण पञ्चवाढी । अष्टमी सुभ रोहनी बुधवार ॥
 जय जयकारकरे सुर मुनिजन । वरषे चंदन कुसुम अपार ॥आज॥२॥
 हरख्या नंद यशोदा राणी । याचकने बहु आपे दान ॥
 जीवोरे यशोदा कुंवर तमारे । नरमैयाचा स्वामी कृपानिधान ॥आज॥३॥

* ॥ ४ ॥ *

नंद आंगणे निरधोष वागे । पांच शब्दनो पूरे नाद ॥
 धवल मंगल आलापे बाली । श्रीगोकुलमां पडीयो साद ॥नंद॥टेक॥
 धेर धेरथी गोरमडां गोली । मरखे सरखी टोली रे ॥
 दधि कादव कीधो नंद आंगणे । मरवे टोली गोली रे ॥नंद॥१॥
 श्रावण मास आठम अंधीयारी । मांहे भाग रोहणी कीधां रे ॥
 नरमैयाचा स्वामी मध रेणो गुमे । जय जय सुरनर कीधां रे ॥नंद॥२॥

* ॥ ५ ॥ *

चालो मत्वी आपन महुको जईये । रुडा नंद कुंवरने जोवा रे ॥
 मुक्ता थाल भरील्यो माथे । मंगल गान करवा रे ॥टेक॥
 धन धन यशोदाजीवन जायो । पूर्वे महा तप कीधां रे ॥
 पूरण ब्रह्म अविलोकी जोतां । मन वांछिन फल मिधां रे ॥चालो ॥१॥
 भक्त तणा सुख पूरण करवा । नारायण अवतरीया रे ॥
 कृपा कीधी नरसैयाने । गुण गोविंद ओचगीया रे ॥चालो ॥२॥

* ॥ ६ ॥ *

आजनो दिन रळीयामणो । जहां प्रगत्या देव मुरारी रे ॥
 मोतीना चोक पूर्या अनि सुंदर । मंगल गान उचारी रे ॥टेक॥
 हरस्या नंद भुवन मांहे उभा । बहुविधि दान अपाये रे ॥
 कुकम कलम कामिनी कर लीधो । धैर धेर मंगल थाये रे ॥आज॥१॥
 कोटि ब्रह्माडनो नाथ कहावे । ते गोकुलमां अवतरीया रे ॥
 नरसैयाचा स्वामी दुष्ट विदारण । मुनि जनना मन हरीयां रे ॥आ॥२॥

* ॥ ७ ॥ *

पालणे पोद्या पुरुषोनमजी । मानानो हरख न माये रे ॥
 आनंदीया विजवासी सहुको । मानुनी मंगल गाये रे ॥टेक॥
 माव सोनानु रे पालणु । मांहे माणेक मोती जडीयुं रे ॥
 चहोदश रतननीकांनि विगजे । झाझे हीरे मढीयुं रे ॥पालणे॥१॥
 हिंदोले उभां हुलासे । बुधरडी घम घमके रे ॥
 कुंवर कहान अविलोकी ने जोतां । मानुनीनामन हरखे रे ॥पा॥२॥
 धन धन मात जशोमति रे । धन धन गोकुल गाम रे ॥
 नरसैयाचा स्वामी अवतरीया । पूर्या मनुना काम रे ॥पालणे॥३॥

ब्रिज मंगल ॥१॥

ब्रिज भयो रे महेस्को पून । जब या बात सुनी ॥
 सुनी आनंदे मव ल्योक । गोकुल गुनीन गुनी ॥१॥
 ब्रिज पूरवे पूरे पुन्य । रोपी कुल सुथीर थुनी ॥
 गुह लभ नक्षेत्र वल मोध । कीनी वेद थुनी ॥ ब्रिज भयो रे ॥२॥
 उठी धाई सबे ब्रिजनाम । सहेज शणगार कीये ॥
 तन पहेरन उत्तम चीर । काजल नयन दीये ॥ ब्रिज भयो रे ॥३॥
 कमी कंचुकी निलक लिलाट । शोभीन हार हिये ॥
 कर कंकन कंचन थार । मंगल साज लीये ॥ ब्रिज भयो रे ॥४॥
 ए अपने अपने महेल । निकमी भान भली ॥
 मानु लाल मणिनकी पांत । पिंजुग चरन चली ॥ ब्रिज भयो रे ॥५॥
 वे गावनी मंगल गीत । मली दश पांच अली ॥
 मानु भोर भयो रवि देख । फुली कमल कली ॥ ब्रिज भयो रे ॥६॥
 उर अंचग उडत न जाने । मागी सो रंग सुही ॥
 मुख रोसीन मंडीन रंग । सिंधुर मांग छुही ॥ ब्रिज भयो रे ॥७॥
 सरस बनी तरल तो रंग । बेनी सीथिल गुही ॥
 शिर वर्षन कुमुम सुदेश । मानु मेघ फुही ॥ ब्रिज भयो रे ॥८॥
 पिया पहेली पहोनी जाय । अनि आनंदभरी ॥
 लेई भीतर भुवन बोलाये । सबे शिशु पाये परी ॥ ब्रिज भयो रे ॥९॥
 ते वदन उघारी निङ्गरी । देनी आशिष खरी ॥
 चरण जीवो यशोदा पून । पूरण काम करी ॥ ब्रिज भयो रे ॥१०॥
 धन धन दिवस एहि रात । धन यह पहोर धरी ॥

धन धन महेस्की कुख । भाग्य सोहाग भरी ॥ब्रिज भयो रे॥१०॥
 जीन जायो एसो पूत । मब मुख फलन फली ॥
 स्थिर स्थाप्यो मब पस्खिअ । मानु सुखकी लहरी ॥ब्रिज भयो रे॥११॥
 सुनी गोवालनी गावही गीत । बालक बोली लीये ॥
 गही गुंजांघमी वानधातु । आंग आंग चित्र ठये ॥ब्रिज भयो रे॥१२॥
 शिर दधि मावनके माट । गावत गीत नये ॥
 सब झाँझ मृदंग बजाये । ए मब नंद भुवन गये ॥ब्रिज भयो रे॥१३॥
 एक नाचन करत कलोल । छीरकन हरद दही ॥
 मानु वरपत भादो मास । नदी धृत दुध वही ॥ब्रिज भयो रे॥१४॥
 जाको जहां तहां चित जाये । कौतक तहां तहां ॥
 रम आनंद मगन गोवाल । काढुकु बदत नही ॥ब्रिज भयो रे॥१५॥
 एक धाई नंद पे जाई । पुनी पुनी पाय परे ॥
 एक आप ही आप ही माहें । हमी हसी अंक भरे ॥ब्रिज भयो रे॥१६॥
 एक अंबर सबे उनार । देत निशंक करे ॥
 एक दधिरोचन अरु दूब । सब न के शिर धरे ॥ब्रिज भयो रे॥१७॥
 तब नंद नहाय भये टाढे । अरु कुश हाथ धरे ॥
 नंद मुख पितर पूजाये । अंतर सोब हरे ॥ब्रिज भयो रे॥१८॥
 घसी चंदन चारु मगाये । विश्रने तिलक करे ॥
 वरजन गरु द्विज पहेराये । सबन के पाये परे ॥ब्रिज भयो रे॥१९॥
 घनी गैयां गनी नही जाये । तरुण सब वछ बढी ॥
 वे चरे जमुनाको कास । दोने दुध चढी ॥ब्रिज भयो रे॥२०॥
 खरी रुपे तांबे पीठ । सोने सींग मढी ॥

ते दीनी द्विजन अनेक । हरषी आशिष पढ़ी ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २१ ॥
 तब अपने मित्र मुवंधु । हमी हमी बोल लीये ॥
 मथी मृगमद मिलाये कपूर । माथे तिलक कीये ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २२ ॥
 उर मणिमाला पहराये । वसन विचित्र दीये ॥
 मानु वरषन मास अषाढ । दादुर मोर जीये ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २३ ॥
 वर मागन बंदी सुन । आंगण भुवन भरे ॥
 ते बोले लेई लेई नाम । हेत कोई न विसरे ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २४ ॥
 अनि दान मान परिधान । पूर्ण काम करे ॥
 जीने जो याचो सो दीनो । रम नंदराय ठरे ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २५ ॥
 तब अंबर ओर मंगाये । सागी सुरंग घनी ॥
 ते दीनी वधुनी बोलाये । जैसी जाही बनी ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २६ ॥
 ते निकमे देत आशिष । रुची अपनी अपनी ॥
 तेनो अनि आनंदे जाये । निज गृहे गोप घनी ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २७ ॥
 तब घर घर मेर मृदंग । पट ही निशान बजे ॥
 बार बार वाँधी बंध माल । व्यजा अरु कलस मजे ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २८ ॥
 ता दिनथे सबही लोक । सुख संपत ना नजे ॥
 सूर सबनकी एही रीत । जीने हरिचरण भजे ॥ ब्रिज भयो रे ॥ २९ ॥

* ॥ २ ॥ *

ब्रिजमें अनि आनंद बढ़यो रे । नंदरायके द्वार ॥ ललना ॥
 मननकु सुख देवनकु रे । प्रगटे जगदा धार ॥ ललना ॥
 धेर थेरे सुंदरी चली रे । कीये शृंगार नव सात ॥ ललना ॥
 नंद गोप गृहे आवही रे । मिली मिली मंगल गात ॥ ललना ॥

भादो माम सुभ अष्टमी रे । रजनी समे जुग जाम ॥ ललना ॥
 पुन नक्षेत्र सुभ गोहोर्णी रे । नाम करण श्रीगम ॥ ललना ॥
 धन ए मात जशोमनि रे । धन धन नंदजी नात ॥ ललना ॥
 धन लोक मर्व त्रिजवामी रे । जहां उदयो अनोपम नाथ ॥ ललना ॥
 गर्गाचार्य पथारीया रे । लखी जन्मकी पत्रीकाय ॥ ललना ॥
 नहीं सुंदर त्रिलोकमें रे । उपमा वरणी न जाय ॥ ललना ॥
 चिर जीवो एह बाल्को रे । गुरुदेव देन आशिष ॥ ललना ॥
 उतपत दिन गुरुकु कह्यो रे । परम पुरुष जगदीश ॥ ललना ॥
 याचक बंदीजन सब अडे रे । बाबा नंदजीके द्वार ॥ ललना ॥
 मंगल गीत सबे मिली गावे । करे जय जयकार ॥ ललना ॥
 एक धाई पालव पकरे रे । एक परमन ठाढ़ी हाथ ॥ ललना ॥
 दीजे वधाई हमही जान रे । नव नंद रहे मुमकान ॥ ललना ॥
 कपील धेनुमु वाड़रु रे । और नहाना विधिके दान ॥ ललना ॥
 श्रीफल फोफल सबकु दीने । देत ही बीरी पान ॥ ललना ॥
 विमान चढ़ी सब देवता रे । वरषत कुमुम अपार ॥ ललना ॥
 नंदकुंवर्स्को जश सुनी रे । जन गोविंद बल बल जाय ॥ ललना ॥

॥ राग सामेरी ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

शिव विरंची सुख भयो । असुरन असुख अहंमेव ॥

कंसगय कंपीन भयो । जब वर पुनीत वसुदेव ॥ १ ॥

॥ चाल ॥

अनीहां रे वसुदेव जबे सुन जायो । बाबा नंदके गृहे पठायो ॥

तब हरषी जशोदा गणी । सुन देवी सारंगपाणी ॥
अनि आनंद मन जीया आयो । एसो सुन प्रेमानंद पायो ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

प्रेमानंद प्रगट भये । नंद रायके द्वार ॥

सुर नर काज समारवेकुं । वैष्णव जन आधार ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

अनीहां रे हरि को जान कर्म जब कीनो । द्विज बोलाय दान बहु दीनो ।
जन्म पत्रीका श्रवण सुनाई । तब हरषे पिता अरु माई ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

हरषे नंद यशोमति । हरषे गोपी खाल ॥

आनंद मन ओच्छव करे । तहां दधि लाये ब्रिज बाल ॥ ३ ॥

॥ चाल ॥

अनीहां रे सब दधि लाये ब्रिज बाल । तहां छरकन गोपी गोवाला ॥
तहां लाल रंग अनि भावे । बंदी जन बहोतेक आवे ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

बंदीजन बहोत जुराईये । भयो अरुण तरुण एक रंग ॥

विविधि विविधि बाजा बाजे । तब बाढ़यो अनि उमंग ॥ ४ ॥

॥ चाल ॥

अनीहां रे तहां उमंगी उमंगी यश गावे । तेतो भव सागरमें न आवे ॥

ए लिला हरि उरलावे । जन माधोदास यश गावे ॥ ४ ॥

॥ सामेरी ॥ २ ॥

॥ चाल ॥ १ ॥

अनीहाँ रे कृष्ण जनम अब आये । सुर नर मुनि सबे सुख पाये ॥
अनीहाँ रे असुख भयो कंस मुढ़ । अगम आयो हो मास अषाढ़ ॥१॥

॥ ढाल ॥

अषाढ़ मास व्यतीत भयो । मोहाये श्रावण मास हो ॥
मधुवन भये मोहावनो । सखी मोर करे केकारहो ॥ २ ॥
रुभझुम होन तहाँ मेघ वरषे । अष्टमी बुधवार हो ॥
जुग जामिनी व्यतीत भई । तहाँ गेहिणी है सार हो ॥ ३ ॥
निशा अंधीयारी विज चमके । श्रावण गहे गहे होई हो ॥
कंस काल प्रगट भये है । सुध न जाने कोई हो ॥ ४ ॥
पहरुआ सब मोय रहे है । दादुर करे पोकार हो ॥
सुर नर कारज साखेकुं । कृष्ण लीयो अवनार हो ॥ ५ ॥

॥ चाल ॥ २ ॥

अनीहाँरे देवकी जायो कुंमार । वसुदेव सोच करे विचार ॥
अनीहाँरे वचन मफल नब कीनो । वसुदेव देवकीकुंदरशन दीनो ॥१॥

॥ ढाल ॥

दीयो दरशन वसुदेव देवकी । पूरण प्रित पिछानीये ॥
पीतांवर पट ओढवेकु । मेघ श्याम तन बरणीये ॥ २ ॥
मणि मुक्ता सोभा बनी । झलहले कुंडल कानमें ॥
चार भुज आयुध धारे । शंख चक्र गदा पद्ममें ॥ ३ ॥
कर जोरी वसुदेव करे विनती । सनाथ कीये हरि आयके ॥
जोना डरो तो रहो निरभय । कंस काल हम जानके ॥ ४ ॥

तुम दगत हो हम जाय गोकुल । नंद बावाके द्वार हो ॥
ईतनी कहत हरि भये बालक । देवकी जाया कुंवर हो ॥ ५ ॥

॥ चाल ॥ ३ ॥

अनीहांरे देवकी कहे हरि मुख देखो । जीवन जन्म सुफल करी लेखो ॥
अनीहांरे पूरण ब्रह्म मुरारी । वसुदेव मोच करे विचारी ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

विचार तुम कहा करत हो । अजहु न मन परतीत हो ॥
तुम चार भुजको दरश पायो । कीनी मुख मुख बात हो ॥ २ ॥
पावनकी बेडी छुट गई । छुट गये बजर कमार हो ॥
तुम जावो गोकुल वेगे करो । मानो हमारी बात हो ॥ ३ ॥
पलटी बालक लीयो उरपर । गये कालिन्दी धाट हो ॥
पुर जमना बहन है । मो वेगे दीनी बाट हो ॥ ४ ॥
हरि वसुदेव गये गोकुल । नंद गृहे निमेष हो ॥
पुत्र धर्मके पुत्री लीनी । चले हस्तिमुख देख हो ॥ ५ ॥

॥ चाल ॥ ४ ॥

अनीहांरे गोकुल आये जदुराई । नंद जशोदा सुकिंत फल पाई ॥
अनीहांरे वसुदेव गये मथुरा मोजारी । नब वे खोले बजर कमारी ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

कमाड ताला जुड गये । वसुदेव जब भुवन गये ॥
पावनकी बेडी जुड गई । नब पहरआ सब जागये ॥ २ ॥
आनंद लहो जब सुन्यो आई । देवकी बालक भयो ॥
प्रधान तहां पुनी कही वेगे । कंस मन आनंद भयो ॥ ३ ॥

ग्रही पाण पछास्वेकु । तबही बालक उचरे ॥
 कंम तेरो काल है । सो कीतहुं जाई उछरे ॥ ४ ॥
 कहेन कर्ते गई छुटी । कंम मन समंक भयो ॥
 गंगल सुन श्रीनाथ जय जय । गोकुलमां आनंद भयो ॥ ५ ॥

* ॥ मामेरी ॥ ३ ॥ *

॥ चाल ॥ १ ॥

अनीहारे श्रावण मास मोहायो । नंद जशोदा सुकिन फल पायो ॥
 अनीहारे वद अष्टमी बुधवार । नक्षत्र रोहिणी मांहि जन्मे कुंमार ॥ १ ॥

॥ दाल ॥

जन्म जायो आनंद पायो । धन्य जशोदा भामनी ॥
 सुकुमार सुंदर मैण मंदीर । देओ नंद बधामनी ॥ २ ॥
 सुनन सब जन गोपी ग्वालन । विविधि भूषण अंग सजे ॥
 दधि गेचन कलम कुम कुम । थाल मंगल कर सजे ॥ ३ ॥
 आनंद पावन गीत गावन । गोपी ग्वालन सब चली ॥
 आय पहुंचे भवन भीतर । वधावन मनकी रली ॥ ४ ॥
 वदन निरखी अनि हरखी । जन्म दुमकूत सब हरे ॥
 मैयारी सो चिन विचारी । कहा ज्युं उर में धरे ॥ ५ ॥
 वरण बंदी चली चनुग । नंद बैठे तहां गई ॥
 गोपी गावन दधि लावन । हरणसुं लखयो मही ॥ ६ ॥
 मृदंग स्मीकर बाजन मोरली । गावन हँसे रंग सुनी ॥
 खालन नावन कीच मचन । पगन भये सुगनर मुनी ॥ ७ ॥
 एक देन वस्त्र उतारी अपने । जात्रक बंदीजन मीले ॥

धन गोकुल धन नंदगाया । धन ग्वाल मबे भले ॥८॥
 नंद उमंगी धेनु आनी । विप्रनकु कोटि दर्ढ ॥
 करी विनती पाय लागे । ऐसी संपत्ती मृज भई ॥९॥
 एक चीर चंपकवर्ण सुंदर । कंचुकी हीरे जडी ॥
 देन अनेक बोलाय वधुकुं । नंद जु पायन पडी ॥१०॥
 पहीराय मब गोपी ग्वालन । मग्न जशोदा मनकी रली ॥
 नंदनंदन चीर जीवो । आशिष देवे मब मिली ॥११॥
 मंगल गायो मबे पायो । सुर कारज मब मरे ॥
 त्रिलोकनारण भक्त कारण । जन्म लिला जश करे ॥१२॥

॥ चाल ॥ २ ॥

अनीहारे जशोमनिके मुतजायो । मुनके गोपी ग्वालन मुख पायो ॥
 अनीहारे श्रवण मुनत मब धाये । चालक वृद्ध मब मली आयो ॥१॥
 अनीहारे निरख्यो नंदको लाला । देन आशिष मबे त्रिज बाला ॥
 अर्नीहारे मबे मिली कयो बिचाग । दधि ओच्छव रच्यो तेही वारा ॥२॥
 अनीहारे गोप वधु सब धाई । दधि अक्षत हरद दुब लाई ॥
 अनीहारे प्रथमें नंदजीकुं छीमके । करी प्रणाम हीरदमें हरखे ॥३॥
 अनीहारे परस्पर खेलन लागे । नाचन गावत अति अनुगगे ॥
 अनीहारे दधि हरद छरके बाला । मच्यो है कीच नंदके द्वारा ॥४॥
 अनीहारे हरद दधि दुब मीले । गापी ग्वाल परस्पर खेले ॥
 अनीहारे चित्र विचित्र मोहे । निरखी मुरनरको मन मोहे ॥५॥

॥ बलण ॥

निरखी मुरनर मन मोहे । दधि ओच्छव लिला करे ॥

धन्य गोकुल धन नंदजी । सुर जाको ध्यान धरे ॥ ६ ॥
 नाचत गावत करन कनोहल । प्रेम मगन मव ही भई ॥
 आई पहोंचे भवन भीतर । दीयो नंद वधाईरी ॥ ७ ॥
 नंद वहु माज मंगाई । गोपी खालनकुं दई ॥
 मणिमाला चीर भूषण । कंचुकी नव रंग नई ॥ ८ ॥
 पहीराय मव गोपी खालन । आशिष दे कर मव चले ॥
 सूरके प्रभु चीर जीवो । गोकुल चंद प्रगटे भले ॥ ९ ॥

॥ राग भूपाल ॥

दधि ओच्छव आज नंदके द्वार । सर्व गोकुलमें जय जयकार ॥ टेक ॥
 ताल मृदंग झाँझाड़ बाजे । बाजे मोम्ली अधर रसाल ॥
 बाजे ढाल निशान नगां । और वाजाको पैये न पार ॥ दधि ॥ १ ॥
 नाचत गावत करत कुनोहल । करसु करगही फिरे नरनार ॥
 हरद दधि छीखत है परम्पर । धन नंदजी तहां करन उलार ॥ दधि ॥ २ ॥
 एक आलिंगन देत परम्पर । एकही अंबर देत उतार ॥
 एक एककु दधि खवगवत । एक देत मुक्ताफल हार ॥ दधि ॥ ३ ॥
 गीझे नंदजो गेह भुवनमें । वस्त्र विविधि भरे है भंडार ॥
 पहेनाये मव ही त्रिजवामी । नसनारीकु मकल शणगार ॥ दधि ॥ ४ ॥
 बंदीजन मव द्वारे गावे । धन धन महर अवनार ॥
 निहागे पुत्र भयो त्रिभुवनपनि । अष्टमासिद्ध अवर फलचार ॥ दधि ॥ ५ ॥
 ताकु दीन मणि मुक्ताफल । कनक पीतांबरको नहीं पार ॥
 आये है विप्र गाम गामके । त्रेद धुनी तहां करत उच्चार ॥ दधि ॥ ६ ॥
 मृग मद चंदन घसीरे नंदजी । पूजे विप्र बहुत प्रकार ॥

दीने गज रथ मणि मुक्ताफल । दीनी लक्ष गौ रन्न भंडार ॥दधि॥७॥
 अबिल गुलाल उडावन मब मिली । गावन गोपी मंगल चार ॥
 हगद दधिको कोच मच्यो है । नहां सोचन है श्रीत्रिपुरारा ॥दधि॥८॥
 तेहमें लोटन है नरनारी । भये मगन नंदगाय उदार ॥
 गीझे सुरनर जय जय उचरे । पुष्प वृष्टि तहां करे रे अपार ॥दधि॥९॥
 या सुखकु ब्रह्मादिक दुर्लभ । स्वपनांतर नाहि एकु वार ॥
 कृष्णदाम प्रभु प्रगटे भूतलपर । दुष्ट संहारन मंतन प्रतिपाल ॥दधि॥१०॥

* ॥ २ ॥ *

आज नंदजीके द्वारे भीर ।

कृष्ण अवतार लीयो गोकुलमें । घेर घेर क्रिडा करन आहीर ॥टेक॥
 घेर घेर थे निकमी ब्रिज वनिता । पहेली पीतांवर ओढ़ी चीर ॥
 ताल मृदंग झांझ डफवाजे । नृत्य करन कामीनी मली धीर ॥आ॥१॥
 एकनकु तिलक दीयो केमग्को । एकनकु ओढावे चीर ॥
 एक आवत एक जान विदा होई । एक बाढी यमुनाजीके तीर ॥आ॥२॥
 बावानंद खस्कमें घडे । करन नोछावर धरे मन धीर ॥
 प्रेमानंद प्रभु सुखके सागर । कंस दहन प्रकटे बलवीर ॥आज॥३॥

* ॥ ३ ॥ *

नंदगायके नव निधि आई ॥

माथे मुगट श्रवण मणिकुंडल । पीन बमन चतुभुज रई ॥टेक ॥
 बाजन बन मृदंग शंख धुनि । घमी असगजा अंग चढाई ॥
 दधि पीवत अरुचंदन छीरकन । लपटी परन अरु लेन उडाई ॥नंद॥१॥
 छीरकन दुब लीये ऋषी घाडे । नोसन बंदन माल बंधाई ॥

मूरदाम सब मिले परस्पर । दान देत नंदगाय न अव्हाई ॥नंद॥३॥

* ॥ ४ ॥ *

नंदगायके आंगणे भीर ॥

गावत मंगल करन कुतुहल । प्रगटे हैं सुंदर बलवीर ॥टेक॥

एक आवत एक जान बिदा होई । एक ठाड़ी मंदीरके तीर ॥

एकनकु गौ दोन देत है । एकनकु पहीगवन चीर ॥ नंद ॥१॥

एकनकु फुल माला देत है । एकनकु धमी चंदन नीर ॥

मूरदाम नंद नव निधि पाई । धन्य यशोदा पुन्य शरीर ॥ नंद ॥२॥

॥ राग प्रभात ॥१॥

आज सखी श्री नंदमहर घर । आनंद बजत बधाईरी ॥

प्रगट भये गोपाल लालजी । मंतनके मुख दाईरी ॥ टेक ॥

गृहे गृहमे सब गोप ग्वालिनि । मंगल गावत आईरी ॥

बाजा विविधि नंद गृह बाजे । दोल मृदंग महनाईरी ॥आज॥१॥

दधि दुर्वागेचन फलफूल । केसर कीच मचाईरी ॥

जय जयकार भये मुगपुरमें । इन्द्र पुष्ट झरिलाईरे ॥आज॥२॥

शिव ब्रह्मा जाको पार न पावे । नारद ध्यान लगाईरी ॥

मूरदाम हरि रूप निहारे । वेद विमल जश गाईरी ॥आज॥३॥

* ॥ २ ॥ *

आज महा मंगल गोकुलमें । कृष्ण चंद्र हरि जन्म लीये ॥

मथुरामें हरि जन्म लिया है । जगत पहरुआ मोई गये ॥टेक॥

जननी जाये जल अन्हवाये । ले बसुदेवकी गोद दये ॥

लै बसुदेव चले गोकुलको । उमगीके जमुना चरण लये ॥आ॥१॥

भादो मास रेन अंधियारी । शेषनाग फन फेरि रहे ॥
 लै वसुदेव पोर भये गढे । हरखि जशोदा मैया गोदलये ॥आ॥२॥
 उलटी गीति भई गोकुलमें । कन्या देके पुत्र लये ॥
 मूरदाम हरि को रूप निहारे । नंदके घर आनंद भये ॥आ॥३॥

* ॥ ३ ॥ *

आज महामंगल गोकुलमें । ढोया जशोमनि जायोरी ॥
 जाको ध्यान धम ब्रह्मादिक । नंदमहर घर आयोरी ॥टेक॥
 बाजा विविधि नंदगृह बाजे । घर घर शब्द सुनायोरी ॥
 मुनि मुनि नगरनाग्नि न धाये । नन मन अनि पुलकायोरी ॥आ॥१॥
 बार विप्र बोल सब लीने । जन्म कर्म करवायोरी ॥
 विधिवत करि नव ग्रहकी पूजा । देवन सबन मनायोरी ॥आज॥२॥
 दधि दुर्वारोचन फल फूले । केसर कीच मचायोरी ॥
 जय जयकार भये मुखपुरमें । इन्द्र पुष्प झारी लायोरी ॥आज॥३॥
 शिव ब्रह्मा जाको पार न पावे । नारद ध्यान लगाईरी ॥
 मूरदाम हरि को रूप निहारे । वेद विमल जश गाईरी ॥आज॥४॥

* ॥ ४ ॥ *

आज नंदके गृहे बधाई । आनंद उर न समाईरी ॥
 प्रान ममे मोहन मुख निरम्बन । कोटि चंद्र छबी पाईरी ॥ टेक ॥
 मली ब्रिज नागरी मंगल गावनी । नंद भुवनमें आईरी ॥
 देती आशिष जीवो जशोमनि सुन । कोट बरप कन्हाईरी ॥आज॥१॥
 नित आनंद बढत वृद्धावन । उपमा कहि न जाईरी ॥
 मूरदास धन धन नंदराणी । देखन नयण मिराईरी ॥आज॥२॥

॥ ढाढी ॥

नंदजीना दस्वार ।

श्री. जीवणजी महाराजनी जन्म समानी साखी ।

हरि सदा बमन वृदावन । अखंड जोन अधिनाम ॥
 भगत मनोरथ जीवणा । हरि जदु कुल कियो निवाम ॥ १ ॥
 कनक मुगट कुँडल जडिन । वहु आयुध भुज चार ॥
 मात मुख निरखे जीवणा । मन सु करे विचार ॥ २ ॥
 परसव अपरसव की गोद । के आय मिले गोविंद ॥
 मात मुख निरखे जीवणा । मिटो भव दुःख द्वंद ॥ ३ ॥
 तमे मूख निरखे वसुदेवजी । मिटे शोक तन त्राम ॥
 वे भूज मिट गये जीवणा । हुआ कहेन अधिनाम ॥ ४ ॥
 वाचा बंदी जशोमति । सपनो कंथ भयो आज ॥
 नंद घेर कुंवरी जीवणा । जई पलटो महाराज ॥ ५ ॥
 वन गरजे दामनी बहु । वरसे परम झकोल ॥
 पाहु पोढे सख जीवणा । उघडे पाट पटोल ॥ ६ ॥
 गोद लिये वसुदेवजी । नंद गृहे लई जाय ॥
 आगे शेष केण जीवणा । पीछे संघ भयो निष धाय ॥ ७ ॥
 चरण परसन नरणी धसी । कियो कालिन्दि सुविचार ॥
 हुं आ कहेत हे जीवणा । में निशदिन व्रजकी लहार ॥ ८ ॥
 भेद बनायो भामनी । जुमना दियो जल माग ॥
 वसुदेव दीनो जीवणा । जसोमति परम सुहाग ॥ ९ ॥

परम सोहागी शामलो । वसुदेव दीनो जाय ॥
 गोहेण बदले जीवणा । अन दीयो दलकाय ॥१०॥
 कमला करे करणा करी । जदुकुल कीयो निवाम ।
 दो नेन झग्न है जीवणा । वसुदेव मिथ्यो नहीं त्रास ॥११॥
 उछीनो उधार कीयो । जसोपनि कहे देवकी ॥
 भूर जात भगवाडकी । पण सांमो लीधो ओलखी ॥१२॥
 भिक्षा मागत जीवणा । दाना भए सब मंत ॥
 सतगुरु वचने पाईए । केवल कमला कंत ॥१३॥
 दयाला जन्म धरी जाचु नहि । हरि बिना दाता कवण ॥
 जाचु तो रघुपति जदुपति । के सतगुरु जीवण सरण ॥१४॥

✽

कुशल तुज परिवार । आशिष वचन अमनणो ॥
 श्यामल वरण सुजान । जाचक भणतो जीवणो ॥१५॥

✽ ॥ धन्याश्री ॥ १ ॥ ✽

नंदजी मेरे मन आनंद भयो । मुनी गोवर्धन थे आयो ॥
 निहारे पुत्र भयो हुं सुनके । अति आनुर उठी धायो ॥नंदजी॥
 बंदीजन और भिक्षुक मुनी मुनी । जहाँ तहाँथे आयो ॥
 ता पहेले मोही आशा लागी । बहोत दिननको छायो ॥नंदजी॥१॥
 ते पहेने मुक्तामणि माणक । नहाना वमन अनूप ॥
 मोहे मिले मागमें मानु । जान कहाँ के भूप ॥नंदजी॥२॥
 तुम तो परम उदार नंदजी । जीने जो पाख्यो सो दीनो ॥
 एसो और नहीं त्रिभुवनमें । तुम सम साख्यो कीनो ॥नंदजी॥३॥
 कोट दिवस लो परो रहुंगो । बिन देखे नहीं जाउ ॥

नंदगय सुनो विनती मोगी । एही विदा भल पाउ ॥नंदजी॥४॥
 दीये मोही कृपा करी सोही । जे में आयो मागन ॥
 यशोमनि सुत अपने पायोनी चल । खेलन आवे आंगन ॥नंद॥५॥
 मन मोहन मैया करी बोले । सो सुनके गृहे जाउ ॥
 में तो निहारे घरको ढाढ़ी । सूरदास मेरो नाउ ॥नंदजी॥६॥

* ॥ २ ॥ *

अहो ब्रिज मांगनो जु । ब्रिज तजी अननन जाउ ॥

अहो ब्रिज मांगनो जु ॥ टेक ॥
 बडे बडे भुवनपति है भूतल में । देते सुने बहु दान ॥
 कर न पमारु शिश न नाउ । या ब्रिजके अभिमान ॥अहो॥१॥
 में व्रत करी करी देव मनाये । अपनी धरुनी मंयुन ॥
 दीयो विधाता सब सुख दाना । गोकुल पतिकुं पून ॥अहो॥२॥
 में अपने मन भायो लेहु । किन बहुरावत बात ॥
 औरनकु घर घनलो वरषन । मो देखे हमी जान ॥अहो॥३॥
 अष्ट सिद्धि नौ निधी घर मेरे । तुम प्रताप ब्रिज ईश ॥
 कहेत कल्याण मुकुंद तान । करकमल धगे मम शिश ॥अहो॥४॥

॥ राग धन्याश्री देशी ॥ ३ ॥

नंदजीमें वृषभान को ढाढ़ी ।

गवरीमें सुनी बधाई । यशोमनिये सुन जायो ॥
 सुरपति नरपति नाग लोकपति । भयो है जयजय कार ॥नंद॥१॥
 वर्षत कुमुम देवता मिलके । नंदगय दरबार ॥
 उदित भयो कुल चंदर मोरे । पुरी है मनको आश ॥नंद॥२॥

तुमतो परम उदार नंदजी । दिनो रत्न भंडार ॥
 दान देत ही अपने मनमें । नही कछु करन विचार ॥नंद॥३॥
 जिन मास्यो तीन ही परपुरे । बहोर न मास्यो दान ॥
 फिर और कहां लो बरण । भये कुबेर समान ॥नंद॥४॥
 मनजुग त्रेना द्वापर कलजुग । भयो न ऐसो दाना ॥
 तुम्हारे यशको पार ना पावे । तीन लोक विख्याता ॥नंद॥५॥
 कल्पनरु जीनके घर भीनर । काम धेनसी गाय ॥
 तीन लोककी कोन चलावे मैया । जाधेर त्रिभुवन राय ॥नंद॥६॥
 जन्म जन्मकी आशा मेरी । पुरो ब्रजके राये ॥
 देखी दरशन निहारे सुनको । मन वांछित फल पाये ॥नंद॥७॥
 एक बेर रज चरण कमलकी । धरु अपने माथ ॥
 कृष्णदास बलबल जाय ढाढ़ी । कीनो जन्म सनाथ ॥नंद॥८॥

॥ राग माझ ॥ १ ॥

तुम सुनहो नंदजी राय । निहारो में ढाढ़ीयो हो ॥
 तुम चतुर शिरोमणि मार । निहारो में ढाढ़ीयो हो ॥
 निहारो कोई न पावे पार । निहारो में ढाढ़ीयो हो ॥
 हुंतो बुद्धि विवेकी बल हीन । निहारो में ढाढ़ीयो हो ॥टेक॥
 में खुवरके घरको ढाढ़ी । परो पोकारु गत ॥
 आश निहारी करके आयो । ढाढ़ी हमारी जात ॥निहारो ॥१॥
 दशरथके गृह जन्म लीयोथो । तहां दान मान सुख पायो ॥
 किरत तुम्हारी उहां सुनके । अयोध्याथे आयो ॥निहारो ॥२॥
 जहां हरि अवतार धरन है । तहां तहां चली जाउ ॥

बड़ो भाग्य हो नंद निहारो । मैं वहोत मनोरथ पाउ ॥निहारो ॥३॥
 ब्रह्मा शंकर मनकादिक आये । सुरनर तेत्रीम कोड ॥
 नारद विणा गान करत है । अस्तुनि करे कर जोड ॥निहारो ॥४॥
 ब्राह्मण भाट मागन जन आये । करे निहारी आश ॥
 उहां तो वशिष्ठजा होने । ईहां गर्गचार्य पास ॥निहारो ॥५॥
 सुष्पति नरपति में नहीं याचु । याचु गोकुल गाम ॥
 आर कछु मेरे काम न आवे । काम नंदजीको धाम ॥निहारो ॥६॥
 आगे मैं दशथ जाई याच्यो । तहां अवतरे रघुनाथ ॥
 इहां हरिये जन्म लीयो है । नंदजी पे ओढु हाथ ॥तिहारो ॥७॥
 ब्रिजकुं छोड अवर जो जाउ । तो जननी मेंगी लाजे ॥
 तुमही मेरी आशा पुगे । दरशथे दारीदर भाजे ॥निहारो ॥८॥
 तबे उमंग भयो नंदजीकुं । वहोत वधाई मगाई ॥
 जे जे बसन बनो जाके तन । सोई मोई आन पहेराई ॥तिहारो ॥९॥
 हीग माणेक महोर सोनाकी । भरके थारी लायो ॥
 ढाढ़ी भाट मागन जन ठाठे । वहोत वधाई पायो ॥निहारो ॥१०॥
 ता पीछे गौ वहोत मगाई । दीनी द्विजकु अनेक ॥
 कहा घरणु कछु पार न आवे । देव धरी आये भेष ॥तिहारो ॥११॥
 जय जय कारकरन नर नारी । आनंद उर न समाय ॥
 ताल पवावज मोर्खी बाजे । सब कोई नाचत गाय ॥तिहारो ॥१२॥
 मैं तो तिहारो पुगनन ढाढ़ी । दरशन बिन नहीं जाउ ॥
 परो रहु तुम पार ही ढारे । सूरदाम कहाउ ॥तिहारो ॥१३॥

* ॥ २ ॥ *

नंद बड़ौ जिजमान—हमारौ नंद बड़ौ जिजमान ।
 तीन लोक में घूमि—घूमि आयौ । गर्व हमारै मान ॥टेक॥
 या ब्रज—मंडल गोप जिने । हैं मेरे एक समान ।
 तिनि हूँ मैं द्वै अब जॉच्यौ । नंदगाइ वृषभान ॥हमारौ॥
 काहू कों कुंजर, काहू को मंदिर । काहू कों हय दान ।
 जब जाँचौं तब मोहिं देहुगे । सब ही बान प्रमान ॥हमारौ॥
 ढाढ़िनि कों हौं संग लै आयो । कुटुंब महिन संतान ।
 तुवरे द्वार परवौ यह बोलों । 'कृष्ण कृष्ण' गुन—गान ॥हमारौ॥
 तुवरे बाल गोपालै दरमो । और न मन में आन ।
 "कृष्णदास" गिरिधरन जन्म भयौ । सोमा कहन बखान ॥हमारौ॥

॥ राग टोड़ी ॥ १ ॥

जन्म लीयो शुभ लम्ब विचारी ॥

लम्ब विचारी शुभ लम्ब विचारी । जन्म लीयो शुभलम्ब विचारी ॥टेक॥
 भादोकी अष्टमी अंधीयारी । शुभ नक्षेत्र रोहीणी बुधवारी ॥जन्म॥१॥
 करो शणगार दयाल लालको । श्रवणे कुंडल मकराकारी ॥जन्म॥२॥
 मुदित भये वसुदेव देवकी । प्रेमानंददास बलीहारी ॥जन्म॥३॥

* ॥ २ ॥ *

आज मली मंगल गावे हो भाई ॥

आज लालजीको जन्म दिवम है । बाजन रंग वधाई ॥ टेक ॥
 आंगणे मोती चोक पुरावो । विष पठन लागे वेद ॥
 करो शणगार प्राण बलभक्तुं । चौवा चंदन मेद ॥आज॥ १ ॥

आनंद भरी यशोदा माई । फुली अंग न माई ॥
प्रेमानंददास मन ईच्छे । बहोन नोऽवावर पाई ॥आज॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥ १ ॥

आज वधाईको दिन नीको ॥

नंद धरूणी यशोमनिये जायो । लाल भावनो जीयाको ॥ टेक ॥
पांच शब्दना बाजा बाजे । घर घरथे आयो टीको ॥
मंगल कलम लीये त्रिज सुंदरी । गोवाल बनावत छीको ॥ ३ ॥
देन आशिष सकल गोपीजन । सुत जीव हो कोट बरीषो ॥
प्रेमानंददासको थाकोर । गोप भेष जगदीशो ॥ २ ॥

* ॥ २ ॥ *

बाजन कहाँ वधाई—गोकुलमें ।

भीर भई है नंदजीके द्वारे । अष्ट महा मिद्दि आई ॥ टेक ॥
ब्रह्मादिक इन्द्रादिक जाकी । चरण रेण नहीं पाई ॥
सोही नंदजीको पुत्र कहावत । कौनुक सुनो मेरी माई ॥गोकुलमें॥ १ ॥
ध्रुव अंबरीष प्रल्हाद विभीषण । तीन तीन महिमा गाई ॥
सोही है प्रेमानंदको थाकोर । त्रिज जन केल कराई ॥गोकुलमें॥ २ ॥

* ॥ ३ ॥ *

नंदजु वधाई दीजे ग्वाल ॥

निहारे श्याम मनोहर आयो । गोकुलके प्रतिपालै ॥टेक॥
गोपीकुं नहाना विधि भूषण । विग्रनकु दीये दान ॥
गोकुल मंगल महा महोत्सव । कमल नयन घनश्याम ॥नंदजु॥ १ ॥

नावत देव विमल गांधर्व मुनि । गावत गीत स्माल ॥
प्रेमानंद प्रभु चीर जीवो । नंदगोपके लाल ॥ नंदजु ॥२॥

* ॥ ४ ॥ *

नंदजी तिहारे जायो पून ॥

खोल भंडार तु देरे बधाई । भाग्य तेगे अदभूत ॥टेक॥
कंठ निलक कुमकुम और केमर । मोतीयन चोक पूरावो ॥
सहस सोरंगी देत अनोपम । विष्णु हरण देवावो ॥ नंदजी ॥१॥
दुध दही धून उमर पखागे । छारे माल बंधावो ॥
सब दुस दूर भये प्रेमानंद । आनंद मंगल गावो ॥ नंदजी ॥२॥

* ॥ ५ ॥ *

॥ आज मृदंग मेघ ज्यूं गाजे ॥

सुनी अनि मंगल चार महेरके । भुवन बधाई वाजे ॥टेक॥
हरि दे दे गाये खेलावे । गोपी भीर दरवाजे ॥
धाये नंदजी छीन गाये बांधे । ब्रिज जन माग निवाजे ॥ आज ॥१॥
आंगण हरदी कीच मचायो । एक भरे एक भाजे ॥
एक नंदजीकुं गारी गात्रे । चढ़ी ही अटारी छाजे ॥ आज ॥२॥
चारपवासे बादल दलमें । विष्र वेद धुनी माजे ॥
मादोकी रान अंधीयारी हमकु । मुत जान अमो दिन ताजे ॥ आ ॥३॥
भक्त हेत अवनार लीयो है । कंस निकंदन काजे ॥
प्रेमानंद प्रभु पालणे झुले । बालमुकुंद विगजे ॥ आज ॥४॥

* ॥ ६ ॥ *

॥ सोवण फुले फुली-यशोदाजी ॥

निहारे पुत्र भयो कुल मंडन । वसुदेव सम तुली ॥ टेक ॥
 देत आशिष मकल वृज गोपी । गाम गामने आवे ॥
 ले ले भेट सबे मली निकमी । मंगल चार बधावे ॥ यशोदा ॥ १ ॥
 एसो होय और देशके । नेही मबे सुख पावे ॥
 बढो बंश ए नंदबाबाको । जश प्रेमानंद गावे ॥ यशोदा ॥ २ ॥

* ॥ ७ ॥ *

यशोदा गणी—आपही मंगल गावे ।

आज लालजीको जन्म दिवस है । मोतीयन चोक पुगवे ॥ टेक ॥
 गाम गामके जानही अपनी । गणी नोहोत जमावे ॥
 आये विप्र गर्ग पागमुर । नापे वेद पढावे ॥ यशोदा ॥ १ ॥
 हरद दही ले आये कुम कुम । भीर भई नंद द्वारे ॥
 बहु मणि मुक्ता चोक पुगवे । मंगल चारही गावे ॥ यशोदा ॥ २ ॥
 चौवा चंदन और अगरजा । श्यामही उचट करवे ॥
 अपने लालपर उर नोछावर । यश प्रेमानंद गावे ॥ यशोदा ॥ ३ ॥

* ॥ ८ ॥ *

नंद बधाई मागे खाल ॥

बाजे तुर होत कतोहल । प्रगटे मदन गोपाल ॥ टेक ॥
 घर घरथे सब गावन आई । मोतीयन भगी भरी थाल ॥
 कंचन कलस भरे केसरमु । मुदिन फिरे ब्रिज बाल ॥ नंद ॥ १ ॥
 मंगल नाचन है ब्रिजवासीन । माहो माहे करन है ख्याल ॥
 चतुभुजदास अति नोछावर । वारी जाउ नंदके लाल ॥ नंद ॥ २ ॥

* ॥ ९ ॥ *

आज घर नंदगाय दधिकादो ॥

वन वन चलन गोप घन नाचन । जन्म भयोपनि यादो ॥टेक॥
 दुध दहो माखण घट घर घर । माट भरे मख लावत ॥
 टोल टोलने गान कस्त गुनी । हमद दधि लपटावत ॥आज॥१॥
 छांटन छाकत अस परस्पर । वग्धत जनु भादो ॥
 बहोतेक कीच अनि भान भान रंग । थेन पीन मिलवादो॥आज॥२॥
 स्वेलन दधि माखण मुख लावत । खान पीवत रस मानो ॥
 दामोदर वर्षे सुखानंद । कृष्ण जन्म सुख दातो ॥आज॥३॥

* ॥ १० ॥ *

मजनी तुम कछु बान सुनी ॥

प्रगत्यो पून नंद महेरको । बाजत वेद धुनी ॥टेक॥
 कोट कोट मानु इन्द्र प्रगत्यो । चौद लोकको धनी ॥
 सुर ब्रह्मादिक आये दमशन । मकल देवता मुनि ॥सजनी॥१॥
 चंदन कुम कुम गोरम गाढे । लेई बहुर तनकनी ॥
 लेउ बलैया नंदगाय सु । हङ्कर झगर धनी ॥सजनी॥२॥
 गोकुल दिनकर प्रगत्यो मानु । नेज पुंज अमोल मनी ॥
 जदुकुलमे घन अंक निरखी । गुण सागर अंगुनी ॥सजनी॥३॥
 जशोदा अंक मर्यंकर नागखु । नयननमे अपनी ॥
 सूर हस्ती दासी कहाउं । अभिलाषी ईतनी ॥सजनी॥४॥

* ॥ ११ ॥ *

॥ ए धन धर्महीते पायो ॥

निको गख यशो मैया । नारायण गृहे आयो ॥ टेक ॥

जा धनकु मुनि तप माधव है । वेद उपनिषदे गायो ॥

सोई धन वसन है क्षीर सागरमें । ब्रह्मा जाई जगायो ॥ एधन ॥१॥

जा धनकु खोजन मनकादिक । नारदमुनि जश गायो ॥

सोई धन है मंत्र प्रती पालक । यशोदा हाथ बंधायो ॥ एधन ॥२॥

सोई धन है भक्तनके वश । सब विगरे काज समारे ॥

सो धन हिये दास परमानंद । बारही बार संभारे ॥ एधन ॥३॥

* ॥ १२ ॥ *

आज वधावो नंद महेशको ॥

नाचन गोपी मंगल गावत । बाजन तुर सोहाये ॥ टेक॥

बोले नाम धरनके काजे । गर्ग हरष जश गायो ॥

वासन दान उचीत अपने पर । सकल मागन पहिरायो ॥ आज ॥१॥

बेर बेर मंगल चार वधावे । मोतीयन चोक पुरायो ॥

परमानंद गोविंद यशोदा । गोविंद गोकुल आयो ॥ आज ॥२॥

॥ धोल ॥ १ ॥

॥ जीरे श्रावण वद दिन अष्टमी ॥

भले जनम्यारे गोकुलमां कहान ॥ रंग लिलाभरी ॥

जीरे तरीया तोरण बांधीयां । मोतीना रे भला चोक पुराय ॥ रंग ॥

जीरे आभ्रण सघलां पहेरीयां । भले पहेर्यां रे सोरंगी चीर ॥रंग॥
 जीरे नंद भुवनमें संचर्यां । भले नगर्या रे हलधरना वीर ॥रंग॥
 जीरे कनक मणिनु पालणु । झुलावे रे सघली ब्रिजनार ॥रंग॥
 जीरे हरद दधिना छांटणां । कीच मचीयो रे बाबा नंदजीके द्वार ॥रंग॥
 जीरे माधुजन वहु आवीया । भला गाये रे मुयश अपार ॥रंग॥
 जीरे नंदजीने मन आनंद घणो । भला आपे रे याचकने दान ॥रंग॥
 जीरे नंदयशोदा हरम्बीयां । भले प्रगट्या रे श्रीगोकुलमें कहान ॥रंग॥
 जीरे मथुरामें कंम कांपीयो । हवे आव्यो रे कंमनो काल ॥रंग॥
 जीरे नर्सेयो नहां नसन करे । मली गाय रे सघली ब्रिज नार ॥रंग॥

॥ राग काफी ॥१॥

साहेली आज मंगल हो । हो महा मंगल—प्रगटे है बल भद्रवीर ॥
 माहेली ॥ टेक ॥

श्रावण मास आठम अंधीयारी । रजनी गई दो याम ॥
 नंद गय यशोमति गृह प्रगटे । मोहन श्रीभगवान ॥माहेली॥१॥
 दधि और दुधमे भरी रे मटुकी । वार ढारनी नार ॥
 कुम कुम केसर कीच मचायो । नंदबाबाजीके द्वार ॥माहेली॥२॥
 अहो वेद धुनि कहेत है रे । कोई न पावे पार ॥
 चीर जीवो यशोदाजीको नंदन । जगजीवन नंदकुमार ॥साहेली॥३॥

बाजत ताल मृदंग बांसुरी । गरज रहो गगनांम ॥
 कंसगय मन त्राम पर्यो है । प्रगट भये जदुवंश ॥माहेली॥४॥
 एही विधि आनंद बहोत बढ़ो है । शोभा वरणी ना जाय ॥
 अनंतदासको जीवन गिरधर । यशोमति लेन बलाय ॥माहेली॥५॥

॥ इति श्री कृष्णजीना जन्म समाना
 कीरतन संपूर्ण ॥

॥ रामकवीर ॥



॥ अथ श्री राधाजीना जन्म समाना कीरतन ॥

॥ साथी ॥

स्तनाकरकी पुत्री । आवी भ्रखुभान के द्वार ॥
 खुपनि छांडी जीवणा । सो मामे दीयो विहार ॥
 निरंजन हमार गम है । जे वेद न पावे पार ॥
 सागर मुना मंग जीवणा । जे राधा कुंज विहार ॥
 राघे तुं बडभागिनी । कौन तपस्या कीन ॥
 तीन लोकके जो धनी । सो तेरे आधिन ॥

* ॥ राग सारंग ॥ *

॥ वेर वेर होन बधाई-ब्रिजमें ॥

प्रगट भई भ्रखुभान गोपके । श्रीराधा सुखदाई ॥ टेक ॥
 मादो मास पक्ष अजुवारी । दिन अष्टमी सुभवार ॥
 माहोमाहे ओच्छव होन गोप गृहे । महेरी महा सुखकारी ॥ ब्रिजमें ॥ १ ॥
 शिल स्वरूप गुण सुंदरना । उपमा वरणी न जाई ॥
 प्रेमानंद प्रभुकी जीवन । श्री गिरधर मन भाई ॥ ब्रिजमें ॥ २ ॥

* ॥ २ ॥ *

आज रावरीमें जयजयकार ॥

प्रगट भई भ्रखुभान गोपके । श्री राधा अवतार ॥ टेक ॥

गृहे गृहे थे चली मव सुंदरी । गावती मंगल चार ॥
 प्रगट भई शोभा त्रिभुवनकी । रूप शिल सुखवार ॥ आज ॥१॥
 नाचत कुदत करन कुनोहल । भीर भई अनि द्वार ॥
 प्रेमानंद भ्रखुभान कीशोरी । जोरी नंद दुलार ॥ आज ॥२॥

* ॥ ३ ॥ *

आज गवरीमें होत बधाई ॥

प्रगट भई वृषभान गोपके । नंद मुवन सुखदाई ॥ टेक ॥
 बेर घेरथे आवे त्रिजनारी । आनंद मंगल गावे ॥
 एक एक कुम कुम गोले । मोतीयन चोक पुगावे ॥ आज ॥१॥
 हरपे लोक नगरके वासी । भेट नहाना विधिलावे ॥
 प्रेमानंदाम छुगनी । बाणी बेद सुत गावे ॥ आज ॥२॥

* ॥ ४ ॥ *

कोन नागरी नार—ईनमें ॥

रूपको मिंधु सुख ही बाट्यो । बदत नाहि न पाए ॥ टेक ॥
 अंगो अंग कहाँ लो बरणु । रही है समना हार ॥
 प्रेम पची विधी नाहि समाई । रची है सांचे ढार ॥ ईनमें ॥१॥
 कौनके कुल जन्मज लीनो । निगम ही गावत चार ॥
 सूरदास केमे सूरी सुनाउ । गये शिवपु रीपु हार ॥ ईनमें ॥२॥

* ॥ ५ ॥ *

चलो भ्रखुभाने गोप पे जाईये ॥

भादो मास चंदनी आठम । गवेकुं हुलराईये ॥ टेक ॥

यशोमनि अपने गृहेथे निकमी । कोटिएक युवती बोलाय ॥
 बाजत हुम नहाना विधी बाजे । मंगल चार गवाय ॥ चलो ॥ १ ॥
 मधु मेवा पकवान मीठाई । कंचन थाल भराईये ॥
 सूरदास प्रभु सबे मन मान्यो । एही बान उहराईये ॥ चलो ॥ २ ॥

＊ ॥ ६ ॥ *

अखुभान भयो अभिमानी-अबे ॥
 प्रगट भई श्रीकुंवरी राधीका । तीन लोक पटरानी ॥ टेक ॥
 इन्द्रादिक ब्रह्मादिक नारद । हरदे धरी रहा ध्यान ॥
 नभथे होन कुमुमकी वसा । प्रगटीन वेद बखान ॥ अबे ॥ ३ ॥
 वेर वेरथे गोपा सब आई । दुध दही लपटानी ॥
 सूरदास निके गुण गावे । बोल लई पहेचानी ॥ अबे ॥ २ ॥

＊ ॥ ७ ॥ *

॥ आज बरमाणे बाजत बधाई ॥
 धन कुख माता किसीकी । कुंवरी सुभ लक्ष्म जाई ॥ टेक ॥
 गर्गचार्य मुनि धरीही विचारत । सोची रहे अगाई ॥
 अनि लहेनो वृषभान गोपको । सब गोपी चली आई ॥ आज ॥ १ ॥
 निखी निखी फुलत है गोपी । भई हमारी भाई ॥
 पूख सुक्रित विचारत अपनो । आन आशनिधि पाई ॥ आज ॥ २ ॥
 जासु प्रेम लक्षणा कहीये । सो एह वेद ना गाई ॥
 सूरदास स्वामीते अधकी । चली त्रिलोक बडाई ॥ आज ॥ ३ ॥

＊ ॥ ८ ॥ *

आज वृषभानके घर फुल ॥

प्रगटी कुंवरी गधीका जाके । मिटी मबनकी मुल ॥ टेक॥
लोक लोकते दीको आयो । विविधी मन पटकुल ॥
सूरदास मानाको पावे । ताके भाग्य समनुल ॥ आज ॥१॥

* ॥ ९ ॥ *

आज बधाई मंगल चार ॥

मंगल गीत गावे ब्रिजसुंदरी । मंगल कोट अपार ॥ टेक ॥
मंगल मास भादो पक्ष अष्टमी । मंगल दिन सुभवार ॥
मंगल पुत्री जन्मी मुझ मंगल । मंगल भान कुमार ॥ आज ॥२॥
मंगल कुमकुम हाथ बिरजे । मंगल तोरण द्वार ॥
मंगल द्विजवर अनि आनंदे । मंगल देत उचार ॥ आज ॥३॥
मंगल दधि वृत छांट छंयावे । मंगल कुनोहल बार ॥
मंगल किरती देह मान फुली । मंगल सुनायो चार ॥ आज ॥४॥
मंगल बरमाणु अनि सोभित । मंगल होत हुलाम ॥
मंगल ताल सृदंगन भेरी । मंगल गोकुलदाम ॥ आज ॥५॥

* ॥ १० ॥ *

आज बधाई है वरमाणे ॥

कुंवरी कीशोरी जन्म लड़ है । महु लोकन बाज मदाने ॥ टेक॥
कहेत नंद वृषभान गयसु । और बान कोन जाने ॥
आज भई ब्रिजवामी हम सब । तेरे हाथ बेकाने ॥ आज ॥६॥
आ कन्याके आगे कोटिक । बेटा कोई ना माने ॥
तेरे भलो भलो मबहीको । आनंद कोन बखाने ॥ आज ॥७॥
छेलछाबले गोवाल रंगीले । हमद दधि लपटाने ॥

भूषन ब्रह्मन विविध पहेलन । गीनत न रजा रने ॥ आज ॥३॥
नाचत गावत मुदित परम्पर । नर नारी न पहेचाने ॥
व्यास रसीक सब तन मन फुले । निरस सबे खीसाने ॥ आज ॥४॥

* ॥ ११ ॥ *

आज गवरीमें बाजत बधाई ॥

दोल भेरी सहनाई धुनी सुनी । खबर महाबन आई ॥ टेक ॥
वे देखो वृषभान भुवनपर । विमल ध्वजा फेहराई ॥
धुप लीये छिज आये तबही । किनी ए कन्या जाई ॥ आज ॥१॥
नंद यशोदा फुले तन मन । आनंद उर न समाई ॥
मंगल साज लीये त्रिज वधुअन । गावती गीन सोहाई ॥ आज ॥२॥
चौवा चंदन अगर कुम कुम । भादो कीच मचाई ॥
व्यासदास कुंवरी मुख निरखत । कुमुम वृष्टि वर्षाई ॥ आज ॥३॥

* ॥ १२ ॥ *

आज बधाई बाजत गवल ॥

श्रीवृषभान गय गृहे प्रगटे । श्यामा शाम सुखावल ॥ टेक ॥
वेर वेरथे गोपीजन आई । आनंदीत तन दावल ॥
मानु कनक काम जरदाई । पीवत जीवत मध पावल ॥ आज ॥१॥
नाचत गावत बैन बजावत । तारी देत गोपावल ॥
दधि कादो भादो झाड लई । प्रेम मुदित व्यासावल ॥ आज ॥२॥

* ॥ १३ ॥ *

श्रीवृषभान दुलारी-जन्मी ॥

भादोमास सुभ सुख मंगल । आठम सुद उज्जीयारी ॥ टेक ॥

प्रीत रीत जननी तनखाके । सुधा निधि बदन निहारी ॥
 रूप अवध सुंदरनाकी सीमा । मानु सांचे ढारी ॥ जन्मी ॥ १ ॥
 वरणी ना सकन सकल अंग शोभा । निरखी शारदा हारी ॥
 तीन ल्योक छवि या तन उपर । वार फेरके ढारी ॥ जन्मी ॥ २ ॥
 प्रेम मुदित तन देखन धाई । आई आनुर ब्रिज नागी ॥
 आंगण भुवन भीर भामनीकी । सब गावन आन कुमारी ॥ जन्मी ॥ ३ ॥
 यथोमति मुणी प्रगट कुंवरीको । मन आमंद बढ्यो भारी ॥
 पद्म नोऽग्नवर विधि बहोतके । मुक्ता रनन भरी थागी ॥ जन्मी ॥ ४ ॥
 विधि अति निपुन नत्व माल्वन सु । अपने हाथ समारी ॥
 गोकुलमें गोवाल लालके । एही प्राण ते प्यारी ॥ जन्मी ॥ ५ ॥
 धन वरसाणु धन ब्रिजवासी । धन भ्रखु भान किशोरी ॥
 व्यासदाम एही मागत है । सदा निरखु या जोरी ॥ जन्मी ॥ ६ ॥

* ॥ १४ ॥ *

धन तेरी माता जीने तु जाई ॥

ब्रिज नरेश वृष भान ही धन धन । नागरी कुंशरी खेलाई ॥ टेक ॥
 धन श्रीदामा भईया तेरे । कहेन छविलीवाई ॥
 धन वरसाणु हरि पुरहुथे । जाकी बहुआं कहाई ॥ धन ॥ १ ॥
 धन कुंज मुख पुंजनी वरपन । तामे तु सुखदाई ॥
 धन पहोप साथा द्रुम पल्लव । जाकी मेज बनाई ॥ धन ॥ २ ॥
 धन कल्प तरु धन बंसीबट । वर विहार रहो छाई ॥
 धन यमुना याको जल अवशन । होत सदा अवाई ॥ धन ॥ ३ ॥

धन धुनी सखी ललीतादिक । निशदिन निखत महाई ॥
धन अनीन व्यासकी गसना । जेही स्म कीच मचाई ॥धन॥४॥

* ॥ १५ ॥ *

आयो भादोकी उजीयागे ।

रावरेमें वृषभान नंदनी । प्रगटी श्री राधा प्यागे ॥ टेक ॥
स्तुति स्वरूप सब संग करी लीने । ब्रिजपति हेत विचारी ॥
दास गोपाल बलभक्ति मानी । वश कीने गिरधारे ॥आयो॥१॥

* ॥ १६ ॥ *

श्री नागरी रूप निधान—प्रगटी ॥

सीक स्वरूप शोभाकी सीमा । नही त्रिभुवनमें आन ॥टेक॥
उपमाजाकु जे जे कहेत है । तेज पुंज निरमान ॥
कुंभानदास प्रभूकी गिरधर । जोगी सहेज समान ॥प्रगटी ॥२॥

* ॥ १७ ॥ *

श्री वृषभानके ढोटी जाई ॥

भादो पक्ष अजुआरी अष्टमी । आनंदकी निधि आई ॥टेक॥
सीक रास रूपकी सीमा । अंगोअंग सुंदरताई ॥
कोटि काम वारु मुमकानी(पर)। मुख छवि वरणीन जाई ॥श्रीवृष॥३॥
देन आशिष मकल गोषीजन । हर्षीत मंगल गाई ॥
कृष्णदास स्वामीनी वृज प्रगटी । श्रीगिरधर सुखदाई ॥श्रीवृष॥२॥

* ॥ १८ ॥ *

में देखी सुता वृषभानकी ॥

मृगनयनी सुंदरी सुभामनी । अंगो अंग रूप मुगनकी ॥टेक॥

गौर वरणमें काँति बदनकी । शरदचंद उनमानकी ॥
 विश्व मोहिनी वाल दशामें । कटि केसरी सुखधामकी ॥१॥
 विधिकी सृष्टि नहीं ए मानु । बनक और ही बानकी ॥
 चतुभुजप्रभु गिरधर पीयाकु (ब्रिज) प्रगटी जोरी सुमानकी ॥२॥

* ॥ १९ ॥ *

नंद वृषभानके हम भाट ॥

बंद हुं ब्रिजवलभ कुलकुं । मेट हमारी बाट ॥ टेक ॥
 भूषण बसनकी आजलूट बहु । अरु गारीनकी ढाट ॥
 एमा देउ जो मोल लई हम । मथुरंगके सब हाट ॥ नंद ॥१॥
 एही कुबेर हमारे भायो । ब्रिजके गुजर जाट ॥
 बढ़ो वंश हरि वंश व्यासको । व्यास चीरके घाट ॥ नंद ॥२॥

॥ राग आसावरी ॥ १ ॥

प्रगट भई शोभा त्रिभुवनकी । वृषभान गोपके आईरी ॥
 अदभूत रूप देखी ब्रिज बनीता । रोझी लेत बलआईरी ॥ टेक ॥
 नांहि कमला नांहि सची स्त्री । उपमा उर न समाईरी ॥
 जाके प्रगट भई ब्रिज भूषण । धन पिता धन माईरी ॥ १ ॥
 जुग जुग राज कगे दोउ जन । ईन तुम उन नंदगाईरी ॥
 उनके मदनमोहन तेरे राधा । सुखदाम बलजाईरी ॥ २ ॥

॥ इनि श्री राधाजीना जन्म समाना
 कीरतन संपूर्ण ॥

॥ रामकवीर ॥

॥ अथ श्री वामनजीना जन्म समाना कीरतन ॥

॥ मात्री ॥

बल द्वारे वामन रह्यो । तो गौ चणवे कोण ॥
 सब जग भुत्यो जीवणा । ब्रह्मादिक ही कोण ॥१॥
 वामन रूप धर्यो जीवणा । बलि चांप्यो पाताल ॥
 मुरपनि संकट निवास्या । मो निज जन प्रतिपाल ॥२॥
 लक्ष्मी चण्ण सेवा करे । चौद लोक शिरताज ॥
 बल द्वारे हरि जीवणा । तीन पांउके काज ॥३॥
 धरणी धर अधर रह्यो । बलि द्वारे आधीन ॥
 ईन्द्रे कहा दीयो जीवणा । बलि कहा लीयो छीन ॥४॥
 धरणी धर अधर रह्यो । बलि द्वारे आधीन ॥
 सर्वम अरपो जीवणा । हरि भये लौ लीन ॥५॥

* ॥ गग देवगंधार ॥ (सारंग) *

श्रीवामन अवतार-प्रगटे ॥

देख आदिन मुख कर्त प्रमंशा । जगजीवन आधार ॥ टेक ॥
 नन धनश्याम पीन पट गजे । शोभीन है भुजचार ॥
 माथे मुगट कंड कौस्तुभ मणि । उर भृगु रेखा सार ॥प्रगटे॥१॥
 निरम्बी मगन आनंदित सुरमुनि । कर्त निगम उचार ॥
 गोविंद प्रभु बदु वामन होय के । अढे बलके द्वार ॥प्रगटे॥२॥

* ॥ २ ॥ *

पंडित पोर निहारी गजा-एक ।

चारो वेद पद्धत मुख अपने । वामन है वपु धारी ॥ टेक ॥
 अपद द्वैपद सुभाषासु बोले । सूरज कोटि उजीयारी ॥
 नगर्न में नरनारी मोहे । अविगत अल्प आहारी ॥ राजा ॥१॥
 धुनी सुनीके गजा उठी धाये । आहुति जगन विसारी ॥
 देखी स्वरूप सकल विश्रनको । कीनी अनि मनुहारी ॥ राजा ॥२॥
 चलीये देव जहां जग वेदी । कहो वचन मुखकारी ॥
 जे मागो सो देउ तरतही । हीरा रन भंडारी ॥ राजा ॥३॥
 रहो रहो गजा अधिक न बदीये । दुःख न लागे भारी ॥
 तीन पैर वसुधा मोहे दीजे । जहां गु धर्मशाली ॥ राजा ॥४॥
 सुक कहे सुनीये बलराजा । भोमीको दान निवारी ॥
 एहतो विप्र न होई आपन । आये छलन मुरारी ॥ राजा ॥५॥
 कीजे कहा जगनगुरु जाके । आपन होई भीखारी ॥
 करी संकल्प उदक जब लीनो । विप्रने देह पमारी ॥ राजा ॥६॥
 जय जय शब्द भयो महिमापन । दोउ पैर भई सारी ॥
 एक पैर देउ तुम राजा । अब चलो सप्त पताली ॥ राजा ॥७॥
 सत नही हारुपमगुरु मेरे । मारो पीढ हमारी ॥
 मूरदास प्रभु सर्वसलीनो । दीनो राज पतारी ॥ राजा ॥८॥

॥ इनि श्री वामन जन्म समाना
 कीरतन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री दशेग समाना कीरतन ॥



॥ राग सारंग ॥ १ ॥

विजे दशमीके दिन आए-आज ॥

आशो मास सुभ मंगल दशमी । धर्म ही लाल जवारे ॥
 घेर घेरथे सब मखा बोलाये । नाचन गावन आए ॥ टेक ॥ १ ॥
 देख स्वरूप मदन मोहनको । प्रमुदित मोद बढ़ाए ॥
 मेवा मीठाई देन सबनकुं । अनन्त मित्र बोलाए ॥ आज ॥ २ ॥
 सबहनकुं हरि पास बैयए । उलट अंगे ना माए ॥
 आपे खात खवावन औरे । प्रेमानंद बलजाए ॥ आज ॥ ३ ॥

* ॥ २ ॥ *

दशेगको सुभ दिन नीको-आज ॥

गिरधरलाल जवारे पहेन । बने है भाल कुम कुमको टीको॥टेक॥
 आरनि करन देन नोछावर । जीयोलाल भावनो जीयाको ॥
 परमानंद प्रभुकी छ्वी देखन । सुख त्रिलोकको लागत फिको॥आ-१॥

* ॥ ३ ॥ *

विजे दशमीको दिन निको-आज ॥

मोहनलाल शिर धरे है जवारे । और बनायो टीको ॥ टेक ॥
 विविधि भाँत घोड़ा साजन है । गोधाल बनावत छीको ॥
 परमानंद दासको ठाकोर । लाल भावनो जीयाको ॥ आज ॥ १ ॥

* ॥ ४ ॥ *

विजीया शुभ दिन जानो आ वार ॥

नंदलालकुं करो तिलक अनि । उग गज मोतन हार ॥ टेक ॥
 सुनी नंद गणी हरखी मन माँहि । भई अंग उलट अपार ॥
 त्रिज सुंदरी मबे मिली आई । गावत मंगल चार ॥ विजीया १
 बाल वृद्ध नर नारी प्रसुदित । आई नंदके द्वार ॥
 सूर संतकी शोभा देखन । तन मनकीयो बलीहार ॥ विजीया २
 ॥ इनि श्री दशरा समाना कीरतन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री दिपमाल समाना कीरतन ॥

॥ माखी ॥

दीपक प्रगत्यो जीवणा । जब दर्शन पायो मंत ॥
 भानु उम्यो निमिर गयो । कटे कम्म अनंत ॥ १ ॥
 ॥ गग मारंग ॥
 मखा जगावन चले कन्हाई ॥

गिरधग्लाल द्वारे हीई टेरत । मखा मंडला धाई ॥ टेक ॥
 विविधि शींगार पहेर पट भूषण । आनंद उग ना ममाई ॥
 सुचिर गली श्री गोवरधनकी । खेलन मबे सुखदाई ॥ मखा ॥ १ ॥
 खेलन गंग बोलाई बुमरी । ढाढ महेली आतुर धाई ॥
 भई सु चेत भोर खेलनकुं । चबुभुजदाम चले शिरनाई ॥ मखा ॥ २ ॥

* ॥ २ ॥ *

दांडो तात विहार—घडी एक ॥

गमकृष्ण तुम दोउ भैग । आय कगे शींगार ॥ टेक ॥
 यथोमति कहे आज पहोनी है । दिपमालका नाम ॥
 और बालक सबे शींगारे । सुन हो लाल घनश्याम ॥ घडी ॥ १ ॥
 खेले गोपालगाय औरनाचे । मध्य गोपी गावे गीत ॥
 परमानंददास एही मंगल । वेद पुण्य पुनीत ॥ घडी ॥ २ ॥

* ॥ ३ ॥ *

देव दिवाली सुभग एकादशी । हरि प्रबोध कीयो हो आज ॥
 निंद्रा तजी बैठ हो गोविंद । मकल विश्व हेत काज ॥ टेक ॥
 भये समूर्ख भुग्न बधाई । ठोर ठेर मध्य मंगल सार ॥
 प्रेमानंददास को याकोर । जगपतित आधार ॥ देव ॥ १ ॥
 ॥ इति श्री दिपमाल समाना कीरतन सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गोवर्धन समाना कीरतन ॥
 ॥ मात्री ॥

गोवर्धन गिरिजपर । राजन है ब्रिजराज ॥
 इन्द्रे मुझे मेटी जीवणा । ए भक्त सुधारण काज ॥ १ ॥
 गिरि गोवर्धन कर धर्यो । सो वृज मंडल के काज ॥
 सो साँई हमारे जीवणा । जे दीयो विभीषण राज ॥ २ ॥

सो साईं हमारे जीवणा । सीतापनि ब्रिजगज ॥
 दश शिर छेदी गीर्गी धर्यो । दीयो उग्रमेन विभिषण राज ॥३॥
 भक्ति भखाडां भावनी । स्त्रीपची हो गये एक ॥
 ब्रह्मादिक भुले जीवणा । अपने मन विवेक ॥५॥

* ॥ गग सारंग ॥१॥ *

मकल गोपके सब ब्रिजवासी । सो नंदगाय बोलाए ॥
 कगे विचार ईन्द्रमहोत्मवको । अब ही निकट दिन आए ॥टेका॥
 जे चाहो सो पूजाकीयेकुं । आनो हो बेग मंगाए ॥
 जे मनमुख होई सुरपनि अपनो । गोप गायन सुख पाए ॥मकल ॥१॥
 तब ही गोपाल तातपे आए । पूछत कहो समझाए ॥
 प्रेमानंद प्रभु चीनायो । उल्टी बात समझाए ॥मकल ॥२॥

* ॥ २ ॥ *

ब्रिजकुं नाहि ना चाहिए—ऐसो ॥

गोपको रथ गोवर्धन पर्खत । ताकी कीरनि गाई ए ॥टेका॥
 अपने सूरपनि कहा ओशियारे । ईनकोखेन कलु खाई ए ॥
 गौवां चारत गिरिवरके पाढे । एह प्रनाप सुख पाई ए ॥ऐसो॥१॥
 निश दिन रक्षा करत गोकुलकी । जाके निकट रहाई ए ॥
 प्रेमानंद प्रभु कहे अब ही । मब मिली शैल पूजाई ॥ऐसो ॥२॥

* ॥ ३ ॥ *

कोन कहांको ईश—मघवा ॥

ताथे तुम ढरपत है सब ब्रिज । धरत चरण पर शिश ॥टेका॥

कहेतो कहे ए बपरेको । कहा करेगो रीश ॥
 जबते प्रगट भये तुम तबते । आपन सबेमाँ दिश ॥मघवा ॥१॥
 अब ही बल अस्थ्यो सब ब्रिज जन । गिरिखर वरस वरीस ॥
 प्रेमानंद कहे जनमाद्यो । ए अपनो जुगदीश ॥मघवा ॥२॥

* ॥ ४ ॥ *

महानम में ही जानु—गिरिको ॥

केनीक बात कहुँ हुँ याकी । कैमे करी बखानु ॥टेक ॥
 सखा सब बरतन ईन आगे । सकल देव परमानो ॥
 है कोई याने नाहि बडेगे । मेरो कह्यो तुम मानो ॥ गिरिको ॥१॥
 निगम गान जश जाको निशदिन । चाहन दरश देखानो ॥
 प्रेमानंद प्रभु जे जे कहो तुम । सो नंदराय परमानो ॥ गिरिको ॥२॥

* ॥ ५ ॥ *

गोवरधन पूजो आज—नंद ॥

तुमारे गाय खाल सब गोपी । सब सुख उनके राज ॥ टेक ॥
 जाकुं रुचि रुचि ले ले बनाकन । कहा शंकरके काज ॥
 गिरि के बल अपने घर बैठे । कोट इन्द्र शिर गाज ॥नंद ॥१॥
 मेरो कह्यो मान अब कीजे । भरी भरी सकटने माज ॥
 प्रेमानंद आनके आपो । वृथा करत किन काज ॥नंद ॥२॥

* ॥ ६ ॥ *

शिला खेलनकी गोर—सुंदर ॥

मदन गोपाल तहाँ मध्य नायक । चहोदश मंडली जोर ॥ टेक ॥

बांटन छाक गोवरधन उपर । बेठक नांहना विधिकी और ॥
 हसो हमो भोजन करन परस्पर । दधि चान्वन रोचन कोर ॥ सुंदरा ॥ १ ॥
 कबहुं शिखर चढ टेरन गईयां । ले नाम मधुरी घोर ॥
 चतुभुज प्रभु लिला सागर । गिरधरलाल रसीक शिर मोर ॥ सुंदरा ॥ २ ॥

* ॥ ७ ॥ *

गोवरधन पूजो आज-तात ॥

मधु मेवा पकवान मीठाई । व्यंजन सरम बनाई ॥ टेक ॥
 एह पावन है ललीत मनोहर । मदा चोरे मन्वा गाई ॥
 कहान कहे भोई कीजीये । मधुग रहो द्विसीयाई ॥ तात ॥ ३ ॥
 भरी भरी मकट चले गिरी मनमुख । अपनी अपनी चाहे ॥
 सूरदास प्रभु बल बल भोगी । शैलरूप हरिराई ॥ तात ॥ २ ॥

* ॥ ८ ॥ *

पूजहीत विजगाय-गोवरधन ॥

बल मोहन आगे दे लीनो । गोप वधु संग लाय ॥ टेक ॥
 दीप मालका मांहो मांहे ओच्छव । गोवाल ले हो बोलाय ॥
 विविध भाँत वस्त पहेरावत । जे जाके मन भाय ॥ गोवरधन ॥ १ ॥
 दध दही मान्वन भरी भाजन । पात्रम बहोत कराय ॥
 घैठे हैं गोपाल शिखर पर । भोजन करन देवाय ॥ गोवरधन ॥ २ ॥
 कुले फिरत सबे विजवासी । खेलन खेलावन गाय ॥
 लालदास गिरिकर गिरि पूज्यो । भयो भगतन मन भाय ॥ गोवरधन ॥ ३ ॥

* ॥ ९ ॥ *

मदन गोपाल गोवर्धन पूजन ॥

बाजन ताल मृदंग शंख धुनि । मधुरे स्वरे मोगली गुंजत ॥ टेक ॥
 कुंमकुम निलक लिलाट दीये नव । बमन आई गोपी बनी ॥
 आसपास सुंदरी कनक नन । मध गोविंद मरकत मणि ॥ मदन ॥ १ ॥
 आनंद मगन खाल मव ढोलन । हो हो घोर सब ही बोलावत ॥
 गते पीले बने है पीया रे । मोहन बन धेनु चरावत ॥ मदन ॥ २ ॥
 छिकत हरद दुध दधि अक्षत । देत आशिष लागती पग ॥
 कुंभनदास प्रभु गोवर्धन पर । गोकुल राज करे बहोत जुग ॥ म. ३ ॥

* ॥ १० ॥ *

पूज चले गोपाल-गोवर्धन ॥

मन गयं जीयामें लज्जीत । निरवी मद गति चाल ॥ टेक ॥
 त्रिजनागी पक्षान बहोत करी । गावत गीत रमाल ॥
 बाजन अनेक बेन सुनावत । चित चलन विविध सुगनाल ॥ गो० ॥ १ ॥
 धजा पनाका छत्र चमर धरी । कमत कुलाहल खाल ॥
 बालक वृदं चहोदश शोभीत । मानु कमल अलीमाल ॥ गो० ॥ २ ॥
 सब ही चले शैलके सनमुख । मधवा के मन साल ॥
 कुंभनदास त्रिभुवन मोहित । गोवर्धन धर्यो लाल ॥ गो० ॥ ३ ॥

॥ इति गोवर्धन समाना कीरति संपूर्ण ॥



॥ साखी ॥

गाई गवरावे जीवणा । कही समजावे आप ॥
चीड़ी चुण ज्युं देत है । ऐसे सतगुरु बाप ॥

॥ अथ श्री स्वधाम पधार्या ते समो ॥

॥ राम कबीर सत्य छे ॥

श्री धाम पुनीयाद, सकल संतनो निवास, तहां वैष्णव जीवणदासजी
विराजे छे, हरि कीरतन महा मंगल थाय छे, वैष्णव आवी
मत्या छे, जे कोई महा परम सुख उपजे छे म्नेह दिन
दिन अधिक वाधे छे, व्रहे वैरग विश्वास आवे छे. नमो
कृपानाथ छो, आत्माने कहाडवा आव्या छो ।

॥ साखी ॥

कबीर केडे प्रगटे । जगमां जीवणदास ॥
धजा बांधी धर्म दृढ़वीयो । जम किंकर पामे त्रास ॥ १ ॥

॥ वैष्णवजीनो दोहो ॥

काँटो हाथ कबीरके । तहां सकल धर्म तालीयो ॥
जप तप नीस्थ दान । ता मूले मीठो चोलीयो ॥ २ ॥

ए धर्म आद सनातन छे, तीनलोक एकवीम ब्रह्माण्ड
जोयां, पण आधर्म तुल को आवे नहीं ।

सकल संत मली बैठ छे, तहां कथा कीरतन थाय छे.
पाछली रात पहोर एक रही, तहां वैष्णव बे आव्या, वैष्णव
जीवणदासजीने दरशन आयां, कोई देखे नही, गोष्ट चरचा
मांभले, महा रूपनो अंवां छे, हाथमां लाल छडी छे, देह
गोरी छे, भर जोवन छे, ढाढी मुळ छे नही ।

ए वैष्णव जीवणदासजी प्रत्ये बोल्या.

जे तमोने तेडवा आव्यो हुं, तहां कबीरजी छे, गंकाजी छे,
नामदेवजी छे, सेनीजी छे, धनाजी छे, पीपाजी छे,
रोहीदासजी छे.

विशेषे वैष्णव जीवणदासजी बोल्या, जे तहां कबीरजी छे ?
त्यारे ते वैष्णव बोल्या, जेहां तहां कबीरजी छे, वैष्णव
जीवणदासजी घणो आनंद पाय्या ।

ते वैष्णव प्रत्ये जीवणदासजी बोल्या जे इहां वैष्णव बाल
गोपालने आशा घणी छे, माम छठे हुं आवीस ।

वैष्णव जीवणदासजी प्रत्ये वैष्णव बोल्या, जे तमो विना
चालतु नथी, घणी, वाट जोवाय छे ।

वैष्णव जीवणदासजी बोल्या.

वैष्णवोने प्रणीपान करीने गमकबीर कहेजो, वलनां ते
वैष्णव वाय्या, इहां वैष्णवोये पूछ्युं, महागज ए गोष्ट कोहोनी
माथे कीधी, नजरे कोई आव्या नही ।

वैष्णव जीवणदासजी बोल्या—जे इहां वैष्णव तेडवा आव्या,
घणी चांप कीधी, वायदो माम छोनो कीधो ।

मास छोनी अवध कीधी, तेमां दिन वीस रह्या त्यारे,
वैष्णव मर्वे तेहाव्या, सर्वे कोई आवी मली बेड़ा छे, हरि
कीरनन अहो गन थाय छे, खंडीन थतुं नथी ।

वैष्णवजी बोल्या—सीधा सामग्रीनी चांप करो, रसोई खाजा
जलेबीने करीनी करो, वैष्णव सर्वे टेहेले लाग्या, फेर दिन
अष्टमीनो आव्यो, सर्वे कोई आवी मली बेन्दुं छे ।

वैष्णव जीवणदामजी बोल्या ।

॥ साखी ॥

सत गुरु मंदेसो मोकल्यो । कचां बचां सब आव ॥

नाम चिंतामणि जीवणा । जे भावे सो पाव ॥ ३ ॥

बाल बूढकुं जीवणा । राम भक्तिकी आश ॥

सुखीर भागी चले । दांते पकडो घास ॥ ४ ॥

भाईयो कोई भोलवेनो भोल्वासो नही, परमेश्वर मोरली
मनोहर ते खग, जो बीजा होय तो ब्रह्मा वेद अलगा लेइ जाय,
दिन पांच लिला ओच्छव थयो, वैष्णव सर्वे कोई वाध्या, वैष्णव
चार टेहल करवा रह्या तेना नामः—

(१) वैष्णव लालदासजी (२) वैष्णव गोपालदासजी

(३) वैष्णव नडीयादा हरिदासजी, (४) वैष्णव रुपा भगत

वैष्णवजीनी अवधना दिन आवी पहोच्या, वैष्णव आवी मली बेड़ा
छे, वैष्णव जीवणदामजी बोल्या, बाल गोपाल सहु कोई आव्युं ? ।

कहानदासजी बोल्या—जे महाराज तमारु बाल गोपाल,
सहु आवीने मंडपमां बेन्दु छे ।

वैष्णव जीवणदासजी बोल्या—तहाँ मारु आमन मंडपमां करो,
हुं वैष्णवोनुं दरशन करुं ।

बलने वैष्णवजी आमने पधार्या, वैष्णव सर्वे कोई आवी
चरणे पञ्चा, जाएँगुं के छेले अवसर छे, बिनती धणी कीधी,
महाराज हमारी पाल करो ।

वैष्णव जीवणदासजी बोल्या—नामदेव कबीर रक्षा करमे,
वैष्णव जीवणदासजी बोल्या के, कहानदासजी प्रत्ये टहेल
सौंपिये छीये, वैष्णवोनी परिक्रमा करो, ए वैष्णव कृपा करमे,
कहानदासजी परिक्रमा फर्या, वैष्णवजीने प्रणाम कीधा, पोनानी
माला कोटनी आरोपी, निलक धर्युं, सर्वे वैष्णवे प्रणाम कीधा ।

फरि वैष्णवोये कहुं के, श्यामदासजीने कृपा करो, ए
तमारे धेर होय ।

वैष्णव जीवणदासजी बोल्या के धर्म तो नादनो छे. वैष्णव
जीवणदासजीये हाथ कहानदासनो माहो, फेर माला अंगुठे
भगवी, निलक अंगुठे धर्युं, माला आरोपी श्यामदासजीने.
सर्वे वैष्णवोये प्रणाम कर्या, कहानदासजीये पूछयुं के, कंई
कहो छो महाराज ।

वैष्णव जीवणदासजी बोल्या ।

॥ माखी ॥

कहेना था मो कहे लीया । अब कहा कहुं समझाय ॥

संतसेवा करो जीवणा । जे ग्युपति होय सहाय ॥५॥

बली बोल्या के गधाजीना हस्तमां ते मध्यम जल छे,

बीजा अवतार ते तरंग छे, नरंगनो भंग छे, जेम खेलो छे, ने
अनेक वेषे रूप धरी आवे छे, पण वेष तो फोक थई जाय छे,
अने खेलो ते खगो, माटे परमेश्वर गोकुलमां गौ चारी ते खग ।

॥ श्रीमुख माल्यी ॥

गोकुलमें वासो बसु । सुरते काज मगउ ॥

अपणी सो जे जीवणा । मैं ब्रिज नजी अन्य न जाउ ॥६॥

॥ वावा कबीरजीनुं वचन ॥

आद अंत कालिन्दी तीर । श्री वृन्दावनकी मीठी शीर ॥

सतगुरु वचने धरजो धीर । निज गुण गावे दाम कबीर ॥७॥

वैष्णव जीवणदामजी बोल्या, जे रास अवण्ड छे, एक
निमेष वार खंडीन छे नही ।

॥ महेनाजीनुं वचन ॥

अखिल वृन्दावन अखिल वृज सुंदरी । अखिल अवनेश्वर गमधारी ॥

बलना वैष्णव जीवणदामजी बोल्या—जे आ परथागे नामदेव
कबीरनो छे. स्वामीपणु होय तो आन्मा परमेश्वर पामे नही,
आतो मल्हीने गोविंद गुण गावाना छे ।

॥ साल्यी ॥

सबके मनगुरु कबीरजी । ममत करो जीन कोई ॥

और दुनीयाकु जीवणा । सतगुरु धर्मकी जोई ॥८॥

स्वामी ते साठ कोम । कीरननीयाते वीश ॥

हरिजनके हिरदे वमे । साधु जनके शिश ॥९॥

॥ बाबा कबीरजीनी गुहाई ॥

कबीर स्वामीको नहीं । स्वामी सरजनहास ॥

स्वामी होकर बैठ ही । ते घनो महेगो मार ॥ १० ॥

॥ वैष्णवोनो देश भाख्यो तेहेनी साख ॥

कबीर स्वामी मेवक जहां नहीं । जहां नहो जप और जाग ॥

गुण अवगुणकी गम नहीं । जहां नहीं पुन्य और पाप ॥ ११ ॥

॥ स्वामीने स्वामीपणानो भाव वरते नहीं तेहेनी साख ॥

रूप रेख कछु वपुनही । एमे रघुपतिगय ॥

एमे हम्जिन जीवणा । नाम निगमल जश गाय ॥ १२ ॥

वैष्णव जीवणदामजी बोल्या, “जे गोकुल अष्टमी तथा
गमनवमी ए ओच्छव, कृपानाथना छे,” दलनी वाट जोसो नहीं,
आप आपने पह्योंचे ते लावजो, ए महारु वचन पालजो, मलीने
गोविंद गुण गाजो ।

॥ श्रीमुख साखी ॥

आप आपनी नापणो । तापत है सब कोई ॥

मिलकर तापे जीवणा । जे सनगुरुका होई ॥ १३ ॥

वैष्णव जीवणदामजीये कह्युं, के आमन लिंगन तरे करावो,
बाईयो सर्वे तेडावीयो, बाईयोने कह्युं जे नहावानु जल लावो,
के महारु स्वामी पणु धोई नाखु, सर्वे बाईयोने कह्युं के महारे
माथे तुलसीदल मुको, बाईयोये तुलसीदल मुक्खुं, त्यारे जीवण-
दामजी बोल्या जे हृद बली छे. हरमार्वाई बोल्यां के महाराज

महाग आयुष्यनी केरली वार छे, त्यारे वैष्णवजीये माथे हाथ
मुक्खो, अने बोल्या के, दिन दश पांच पुठे आवीसुं ।

वैष्णव जीवणदामजीये आमन मंडपमां कराव्युं, वलता
वैष्णवजी आमने पथार्या, कहानदामजीये पूछ्युं के, महाराज काँई
कहो छो ? वैष्णव जीवणदासजी बोल्या, के महापुगनी वाढी छे,
ते मोटा गोपालदामजीनी छे, तहां दहन करजो, तुलसीक्यागे
बनावजो, मंतना धामनी जग्या छे ।

वैष्णव कहानदामजी तथा हरिभाई बोल्या के महाराज
तमारु वचन छे ।

॥ साखी ॥

खुवर जहां अयोध्या । काँहनड तहां गोकुल गाम ॥

सप्तपुरि तहां जीवणा । जहां मंत संगत विश्राम ॥१४॥

आ साखी सुनीने घणु आनंद पाम्या, वैष्णव जीवणदामजी
बोल्या के, एवडानो नहीं थाय, पण वस्त्र उजलां मंगवजो,
कीरतन कथा करना बेर आवजो, बाईओ थाल लावो जे
कृपानाथने आरोगावीये ।

सर्वे कोई थालने काजे गयां, थाल प्रसाद चरणे लावीने
मुक्खो, ते वैष्णव जीवणदामजीये कृपानाथने आरोगाव्यो,
वलती बोल्या जे आ परसाद, गामे गाम निलक तुलसी ज्यां
महारो हीरे होय त्यां पहोंचे, परसाद सर्वे वैष्णवोने आप्यो,
हाजर मीजलस महापरसाद पाम्या ।

वैष्णव जीवणदामजीये सर्वे वैष्णवो सामे भालीने रामकबीर कह्या,

जे तमो विघ्न हरण गाव, वैष्णवे चरण पांच गायां,
वैष्णव जीवणदासजी स्वधाम पधार्या, हरि कीरन महा झक्कोर
थई रह्यो छे ।

तहां कहानदासजी बोल्या.

॥ साखी ॥

भाईयो बीजीबार । एमो न आवे दावडो ॥
माया मलमे कई वार । ना होय संत मेलवडो ॥ १५ ॥

आवेला फरी फरी नही आवे ।

॥ साखी ॥

संवत सतरमें मानत्रीम । सुद पंचमी भादुर माम ॥
ता दिन जीवणदासजी । लीयो स्वधाम निवास ॥ १६ ॥

॥ समागमसंपूर्ण ॥

॥ साखी ॥

स्मीक जन जीवण भये । कीनी भक्ति प्रकाम ॥
नहाना निकठ बोलाय के । गरुद्या चरण निवास ॥ १ ॥
गाम हमारा दगपरा । साँई हमार राम ॥
मन गुरु जीवणदासजी । पारख धरीया नाम ॥ २ ॥

॥ इनि श्री स्वधाम पधार्या ते समो संपूर्ण ॥



॥ अथ श्री वसंत ऋतुना कीरतन ॥

* ॥ गग वर्मन ॥ १ ॥ *

चल चल रे भमग कमल पास । तेरी भमगी बोले अनि उदास ॥ टेक ॥
 तें अनेक पुष्पको लीयो हे भोग । तेरे सुख न भयो तन बढ्यो हे रोग ॥
 मैं जो कहुं तोहे बाखार । मैं सब बन छूटी ढार ढार ॥ चल ॥
 दिवस चास्के सुरंगी फुल । वा देवी कहा स्त्री हे भूल ॥
 इम वनसपनिमें लगेगी आग । नव तुम कहाँ जाओगे भाग ॥ चल ॥
 पुष्प पुराणो भयो हे सुक । नव भमरेकुं लगी हैं अधिक भूख ॥
 उड़ी न सके बल गयो हे छूट । नव भमगी गई शिश कूट ॥ चल ॥
 चहोदश जोवे मधुपराय । नव भमगी ले गई शिर चदाय ॥
 कहेन कबीर ए मनका भाव । राजा राम भक्ति विना जमको दाव ॥

* ॥ वर्मन ॥ २ ॥ *

हरि नाम तत्त्व तीन लोक सार । लौलीन भये जन उतरे पार ॥ टेक ॥
 एक जोगी जंगम जटाधार । एक भभूत करे अपार ॥
 एक मुनि एक मन लीन । ऐसे होत होत जुग जान छीन ॥ हरि ॥ १ ॥
 एक आराधे शक्ति शिव । एक पडदा दे दे बांधे जीव ॥
 एक कुल देवीको जपे जाप । एक त्रिभुवनपति विना त्रिविधि ताप ॥
 एक अन्न छांडीने पीवे दुध । हरि नाम विना नहीं हिंदो सुध ॥
 कहेन कबीर एक निज विचार । हरि नाम विना नहीं उतरे पार ॥ ह.

* ॥ वसंत ॥ ३ ॥ *

बनमाली जाने बनकी आद। गजागम भक्ति विना जनम बाद॥टेक॥
 फुलज फूल्यो छनु वसंत। नामें मोहि रख्यो सब जीव जंत॥
 फुलनमें जैमे बमन बाम। ऐमे घट घट गोविंद हरि निवाम॥बन॥१॥
 तरुवर एक अनेक ढाल। नाकी शाखा ढाली अधिक गमल॥
 परबली गच्छो मेरे कंथ। मेंतो कौन मंग खेलु छनु वसंत॥बन॥२॥
 उड उड भपरा जा वे देश। मेरे पियासु जाइ कहो संदेश॥
 चोली फटी मेरो जोवन भार। मोहे बिहू संतापे बार बार॥बन॥३॥
 आडा हुंगर ओघट घाट। जहां जोगी जंगम लहे न घाट॥
 कहेत कबीर मन भयो आनंद। मोहे भाग्य मिले गुरु गमानंद॥४॥

* ॥ वसंत ॥ ४ ॥ *

देखो देखो रे आ नस्की भूल। सिंचत शाखाने तजत मूल॥देव॥टेक॥
 प्रगट निरंजन घट समान। ताहे छांड नर पूजे पाषाण॥
 जल पीवे पाषाण धोय। मो तो आद अंत पाषाण होय॥देव॥१॥
 पग पताल जाका शीश अममान। मो केमे मंपुट ममान॥
 अलख निरंजन आवे न जाय। सो केमे दियो रे निहारो खाय॥देव॥२॥
 एही भानि सब गये है बिन। काहु न मानी शब्द गीत॥
 कहेन कबीर नर कीया न सोज। मटकी मुवा जैमे बनका रोझ॥देव॥३॥

* ॥ वसंत ॥ ५ ॥ *

माथो दारुन दुख मोपे मह्यो न जाय। मेरी चंचल मत ताथे कहां वसाय
 मेरे तन मंदिर बसे मदन चोर। जेने ज्ञान गन हरी लीनो मोर॥
 मैं अनाथ प्रभु कहा कहुँ। अनेक बगुचे तहां मैं कहा हुँ॥ माथो॥१॥

मनक सनंद शिव सुनकाद । नाभि कमल उपजे ब्रह्माद ॥
 जोगी जंगम जटाधार । सो तो अपनो अवसर गये है हार ॥ माधो ॥ २ ॥
 तुम जो अथाह में तो लहु न थाह । मेरे मकल कामकी सोज आह ॥
 अहर्निश मेवुं चरण धीर । ऐसी जुगत जानके कहन कबीर ॥ मा. ३ ॥

* ॥ वसंत ॥ ६ ॥ *

माधो मोह मरघ मायों न जाय । मेरी बुध बाड़ीमें बमेने खाय ॥ टेक ॥
 मेरी बाड़ीमें निपजे मुगना येन । मोहेदेखन चर चर जाये एन ॥
 होइन सके वाकु फुल पान । हुंतो सिंच मिंच रही पटक हात ॥ मा० १ ॥
 ज्ञान धनुष माधो संधान । सुरन निग्न के ग्रहे है बान ॥
 जब ही में मारु नाक नाक । होत वेदेही पलट जान ॥ माधो ॥ २ ॥
 मोहे मरघ कोई मके न मार । सुरनर मुनि मद गये है हार ॥
 कहेन कबीर सोई उनरे पर । जीने रामनामकी करी है वार ॥ मा. ३ ॥

* ॥ वसंत ॥ ७ ॥ *

मोहे तार माधो अवकीवेर । तेरी भक्ति बिना भयो अनेक वेर ॥ टेक ॥
 अंबरिष मुन्यो विष्णुदाम । हरि कथा सुनत भयो सुख निवाम ॥
 श्रवण सुनी भयो ज्ञान दीप । प्रलहाद आद राखे समीप ॥ मोहे ॥
 राजवंश बडे सुभट धीर । वेद विदिन छांच्यो शरीर ॥
 मेरी मेरी कर्नो गयो बिलाय । तेरि भक्ति बिना बैकुंठ गय ॥ मोहे ॥
 में ब्राह्मण मरज्यो अनेक बार । वेद विद्या पढ़यो है अपार ॥
 राज प्रजामें भयो है मान । तेरी भक्ति बिना भई सर्वे हान ॥ मोहे ॥
 आसन जोगी देवी भूत । तेरी भक्ति बिना पाखंड धूत ॥
 जटा जूट पाखंड डंड । तेरी भक्ति बिना भयो खंड खंड ॥ मोहे ॥

हुंतो चंदन सरज्यो गिरी निवास । मेरी शीतल छांयाने अधिक वास ॥
 घमी कबहु न चरच्यो श्याम अंग । तेरी भक्ति बिना रह्यो सरण संग ॥
 बनगेहीमे तरुन ताल । शाखा समुह जहां फल स्माल ॥
 करत करम गत भयो कुलार । नन खंड खंड कीयो वार बार ॥मोहे॥
 हुं सिंघ थान सुकर शियाल । खग इड जोनी मारम मगाल ॥
 मच्छ कच्छ जल जीव जंत । नामे भ्रमत भ्रमत नही आयो अंत ॥
 तोरे चरण कमल पंकज मोझार । रामराय अबकेही उबार ॥
 त्राहि त्राहि कहें कबीरदाम । परहग्हो नरहर जमकी त्राम ॥मोहे॥

* ॥ वसंत ॥ ८ ॥ *

तथे गमनाम भजी लग्यो हे तीर । जान है दुर्लभ पुन्य शरीर ॥तथे
 गयो प्रीयब्रन पृथ्वीको रात । बलि विक्रम गये रह्यो न गंउ ॥
 चकवे मंडलीक चाहे नाहे । ताके देखो विचारी जाके कोई न आहे ॥
 गयो बेनु अरु गयो है कंस । दुर्योधन गयो है बुढयो बंश ॥
 छत्र छत्र जाके चले है छांहे । ताके देखो विचारी जाके कोई न आहे ॥
 हिणाकंमकेमे जन कबाल । ए सब छेदे जमकी दाल ॥
 कहेन कबीर यों पूरे खेल । सतगुरु करदीयो जीयासु ले मेल ॥

* ॥ वर्मन ॥ ९ ॥ *

हरि बोल सुवा बार बार । तेरी ढीग मीनरी कलु करे पोकार ॥टेक॥
 अंजन मंजन तज बिकार । गुरुदेव बतायो तत्व सार ॥
 सत संगत मिली करो वर्मन । तेरे बंधन छूटे जुग जुग अनंत ॥१॥
 अनेक जनम तें पायो दाव । मनुषा जन्म कर भक्ति भाव ॥
 ऐमे अवमर बहोर न पाय । तथे में जन कहुं याही समझाय ॥२॥

कहा भयो सुत बनिना जाय । अंतकी बेर कोई संग न आय ॥
कहे कबीर मन भयो आनंद । जब मिले हैं पुरण परमानंद ॥३॥

* ॥ वर्मन ॥ १० ॥ *

करनम कर्माकुं कहेत लोय । भक्ति मुक्ति वाकुं कभुन होय ॥टेक॥
ब्रह्मा भूल परी हैं फुल । निगम भूले मुख आये थुल ॥
मव दरशनको ए है मूल । जीने पीयो दावानल प्रवल सूल ॥कर०॥१॥
बिन सम्गुन रस पीयो न जाय । निरगुनकुं नहीं हाथ पाय ॥
सो जशोदा लीये गोद खेलाय । सो तो जनुनी जठरमें कदीन आय ॥२
जग मग जोत ब्रह्मांड मार । उने कौरम कला रची है अपार ॥
सुर नर मुनि मव करे विचार । जुडा जुग सञ्चाकी लहार ॥ ३ ॥
निरगुन ब्रह्मकुं कहै अवनार । सो तो भवमागर कैसे पावे पार ॥
सतगुर वचने लहो विचार । यो दास कबीर कहें पोकार ॥ ४ ॥

* ॥ वर्मन ॥ ११ ॥ *

ऐसे मधुकर माधो सुं कहीयो जाय । रत पलटी बिज रहो न जाय ॥
ऐसी बास सुंगधी फुली है वेल । तहाँ बन बन कोकीला करन केल ॥
मदन नाप नन सहो न जाय । हमरी सुध तुम लीजो रे आय ॥१॥
प्राण गयेकी अवध आई । तुम बिन गोकुल रहो न जाय ॥
ऐसी सूरस्याम सों कहीयो जाय । प्राण गये कहा कर हो आय ॥२॥

* ॥ वर्मन ॥ १२ ॥ *

जशोदा क्यों न बरजो अपनो बाल । मेरी चोरी चर्ची ब्रहे समाल ॥
मैं द्वीलन गईनी जुमनातीर । उपकंठ उतारे आम्रण चीर ॥
जलमें पैठी मेरी नीची हृष्ट । पीछेते कहांन मेरी मढन पीठ ॥ज.॥

मेरे आभ्रण चीर लीये हगय । मुख टेर टेर सबा लीये बोलाय ॥
 कहे दो कर जोरी करे प्रणाम । नुम छोडो कामरत रहो निष्काम ॥
 येह अरूपकी एह छांय । जान निगमल जे अरूपे गाय ॥
 कहेत कवीर तोरे लहु न पार । यामे कोन पुष्पने कोन नार ॥

* ॥ वसन्त १३ ॥ *

कुंज विहारी खेले क्रतु वसन्त । ब्रिजनगरी मली उमंग अनंत ॥१॥
 एकके शिर केसरको माट । एक चौग चंदनको कीयो है डाढ ॥
 एक अबील गुलालके कीयो विचार । मधु सुंदरी आई बन मोझारा ॥२॥
 मोहनके मन भयो उमंग । वसन्त समीये गोपीन संग ॥
 अस्म परम हुये नंदनाल । वसंत अदभूतकी एही ख्याल ॥३॥
 नभमें सुर मधु देखे आय । सुर वधुओंके मन रह्यो न जाय ॥
 ब्रिजमें जायके लेउं अवनार । ब्रिज ललना संग कर विहार ॥४॥
 ऐसी लिलामें मेरे लग्यो है चिन । वृदावन गमीये क्रतु वसन्त ॥
 जुग जुग मागु एही गोपाल । सूरदाम प्रभु नंदको लाल ॥५॥

* ॥ वसंत ॥ १४ ॥ *

नहि छांडु बाबा श्रीगमनाम । मेरे और पढ़नसे कोन काम ॥ टेक ॥
 प्रह्लाद सिधारे पढ़नशाल । संग सबा लीये बहोत बाल ॥
 कहा पढ़ावे पांडे आल जाल । मेरी पाटीमें लिख दे श्रीगोपाल ॥ नही ॥
 पंडामर्के कह्यो है जाय । प्रह्लाद बंधाये बेगे आय ॥
 रामनामकी छांड बान । तोकुं अबही छोडाउ मेरे कह्योही मान ॥ नही ॥
 कहा डगावे पांडे बार बार । जेणे जल स्थल गिरि तो कर्यो प्रहार ॥
 मारडाल भावे देह जाल । रामनाम छांड तो मेरे गुरु ही गाल ॥ नही ॥

काढ़ी खड़ग कोयो रीमाय । तेरो गखनहारो मोहे बनाय ॥
 खंभ फोड प्रगटे मागर । हिरण्याकंस मायें नव विदार ॥नही॥
 आद पुष्प देवाधि देव । जेणे भगतकारण धयें नगमिह भेव ॥
 कहेत कबीर तोरो लहुन पार । प्रलहाद उबायें अनेकबार ॥नही॥

॥ वसंतनी सखी ॥

वसंत आयो हो सखी । फुल्यो सब बन राय ॥
 एकन फुली केनकी । अमर तहाँ नही जाय ॥ १ ॥
 वसंत आयो हो सखी । आंबे 'आयो मॉर ॥
 जा घर कृष्ण परोणला । गोपीयोनी दोढा दोड ॥ २ ॥
 वसंत आब्यो हो सखी । आंबे रस झरंत ॥
 गयो मीयाल्ये रुतु फीरी । आब्यो मास वसंत ॥ ३ ॥
 चौआ को दुहो मच्यो । चली धरणी पर रेल ॥
 अबील गुलाल की आंधी भई । पीया प्यारी को खेल ॥४॥
 रत आवी रे वसंतनी । थई रही लीला लहेर ॥
 रघुनाथ प्रभु रामजी । होली रमे रंग भेर ॥ ५ ॥
 सखीरे वसंत सोहामणो । अने आनंद थयो अपार ॥
 घेर घेरथीरे गोवालणी । प्यारी खेलन नीकशी बहार ॥६॥

* ॥ राग वसंत ॥ १ ॥ *

प्रथम दिवम ब्रिजवसंतपंचमी । मुख्य सखी घेर सोहिये ॥
 ता पीछे ब्रिज सुंदरीयो रे । श्री हर्मिना मन मोहिये ॥ टेक ॥
 कुलडे फगर भगवो भामनी । मोनीडे चोक पुगवो ॥
 चौवा चंदन कस्तुरीना । छांटणलां छंटावो ॥ प्रथम ॥१॥
 सोनापाट पाट पथरवा । वहालाने पधगवो ॥
 अंबामोर मूस्तक धरी अबला । अधिक केल करावो ॥ प्रथम ॥२॥
 चीरन जीवो तमो नाहोलीयारे । कोटि वसंत रमीजे ॥
 नरसेयाचा स्वामी संगे रमना । अधिक केल करीजे ॥ प्रथम ॥३॥

* ॥ वसंत ॥ २ ॥ *

वसंत रतनी हुं बलीहारी । नारी निरंकुस फाग रमे ॥
 माधो संग सखा महु मली मली । जयुरे अंबुजपर भमर भमे ॥ टेक॥
 कनक कलश केमर रम घोली । उभी रही मूस्तक ढोले ॥
 चौवा चंदन अगर कुमकुम । मुख लोजन पर रोले ॥ वसंत ॥१॥
 मासु नणदल ढाई ढमरां । मरजादा अनुसरनां दे ॥
 ते कहे वहुवर चालो रमवा । आडो शणघट धरतां दे ॥ वसंत ॥२॥
 मन रे भावना वचन परसपर । वनितावृद विलास करे ॥
 लक्ष्मीवर लघु वेश लाडकडो । धाई धाई सहुकोने अंकभरे ॥ वसंत ॥३॥
 नरसेयाचा स्वामी संग रमनां । विचित्र लिला केल करे ॥
 जे हरिने ओङ्कडले आवे । ते पुरुष पणु वेगे विसरे ॥ वसंत ॥४॥

* ॥ वसंत ॥ ३ ॥ *

घेर छांटणलां छंटावो छवीली । छवीलोजी रमवाने आवे रे ॥

सकल साहेली मलीरे मलीने । आनंदे गाये रे ॥ टेक ॥
 कनक कचोलां केसर रंग धोली । मली महियरनी योली ॥
 नंदा नंदन कृष्णजीसुं । स्मीये होरी रे ॥ वेर ॥ १ ॥
 कडकडती पटोली पहेरी । आभ्रण चोली रे ॥
 नरसैयाचा स्वामी वसंत खेले । भपर भोली रे ॥ वेर ॥ २ ॥

* ॥ वसंत ॥ ४ ॥ *

राता नख कर कामनीया रे । राता अधर मुख दंत ॥
 राता मांग सिंदुरे भरीयां । कुसुम रातो वसंत ॥ टेक ॥
 राती पटोली पाये रोलाती । रातां रतन दीसे रुदे ॥
 रातां गुलाल उडाडे अनि अबला । कृष्ण कृष्ण मुख बानि बदे ॥ गता ॥ १ ॥
 कृष्णजी गता कामनीया रे । कामनी गती कृष्ण गुणे ॥
 मरखे सरखुं सहुको रातु । नरसैयो गतो हरि चरणे ॥ गता ॥ २ ॥

* ॥ वसंत ॥ ५ ॥ *

भलेरे पधार्या भूवरजी रे । भाग्य हमारा जाग्यां ॥
 वसंत रनमां वहालाजी रे । आपो मॉहोना माग्या ॥ टेक ॥
 अमो अबला ग्मवा इच्छुँ । नाथ नमारी संगे ॥
 हार्या जीत्यानी होड वकीने । स्मीये रंगे रे ॥ भले पधार्या ॥ १ ॥
 तमो मागो ते अमो रे आपीये । अमो मागु ते दीजे ॥
 अबलाने आलिंगन देइने । अधर सुधारस पीजे ॥ भले ० ॥ २ ॥
 आग्न आवी ग्मवा केरी । फुली फागण वेली ॥
 नरसैयाचा स्वामी संग ग्मतां । संघ सखी साहेली ॥ भले ० ॥ ३ ॥

* ॥ वसंत ॥ ६ ॥ *

आरत रुडी रुडी महारा वहाला । रुडो माम वसंत ॥
 रुडां वनमें केमुर मोर्या । रुडो राधाजीनो कंत ॥ टेक ॥
 रुडां रंगे वाजां वगाडे । एक लीए करताल ॥
 चतुर मली मली चंग वगाडे । मोरली मदन गोपाल ॥ आरत ॥१॥
 रुडां रंगे गधाजी मोहीये । झाँझरनो झमकार ॥
 बावन चंदन बेहेक बछुटे । भमर करे रे गुंजार ॥ आरत ॥२॥
 रुडां बन बृंदावन केरां । रुडां जमुना तीर ॥
 रुडां गोप गोवालनी मंडली । रुडा हलधर वीर ॥ आरत ॥३॥
 रुडां रंग अवील गुलालना । रुडां मुख तंबोल ॥
 नरसेयाचा स्वामी अनि रुडा । निन नित ज्ञाकम ज्ञोलो ॥ आरत ॥४॥

* ॥ वसंत ॥ ७ ॥ *

क्षिती रम तरु शाम्याये प्रसर्यों । अनंग नयने वमीयो रे ॥
 रुदे भाव पुर्या अबलाना । आव्यो म्नीपनि रमीयो रे ॥ टेक ॥
 अद्वार भार वनस्पतिनु बल लेई । नाथे उलट पुलट कीधुं ॥
 अखिल भुवन तणु अमृत लेईने । युवतीने वदने दीधुं ॥ क्षिती ॥१॥
 अदभूत बल आप्यु अबलाने । निरधन कायर अंग ॥
 हसबुं वन वेलीने आप्युं । कोकोला स्वर मुख बेन ॥ क्षिती ॥२॥
 रोग विरोध आप्यो बेमुखने । भोग भगत भगवान ॥
 जप तपमा क्रम जडने आपी । नरसेयाने आप्यु गान ॥ क्षिती ॥३॥

* ॥ वसंत ॥ ८ ॥ *

गुलाल भरीया गोविंदजीरे । बेरैया मन भावो ॥

वसंतनी वरणागी करी । महारे आंगणीये आबो रे ॥टेक॥
 आखतमां अनि रुडा दीमो । अनि सुंदर ढो मारे ॥
 सुर नर मुनिजन शामलीयाने । पावलोये लागे रे ॥ गुलाल ॥१॥
 आज वसंत रमो अम माथे । कोई ना दे तमने मेहेणुं ॥
 नरसैयाचा स्वामी पेला भवनुं । तम साथे छे लेहेणु ॥गुलाल॥२॥

* ॥ वसंत ॥ ९ ॥ *

केसुर रातां ने रत राती । कोयलडी बन वासी ॥
 मानुनीयो जोबन मदमाती । माधव चरण उपासी ॥ टेक ॥
 मोगी आंबा साख अनि मनोहर । शोभीत द्रुम वेली ॥
 क्रिडा कारण शाम मनोहर । शोभीत संग साहेली ॥ केसुर ॥१॥
 धन धन रे जमुनाना तीरे । धन वृंदाबन सोहीये ॥
 नरसैयाचा स्वामीनी लिला । देवन सुरीनर मोहीये ॥ केसुर ॥२॥

* ॥ वसंत ॥ १० ॥ *

राती मोल धरो महारा वहाला । राती रन छे रुडी ॥
 राता फुल फुल्यां केसुग्ना । वसंत रन आबो रुडी ॥ टेक ॥
 राती चांचना बेउ पंखीडां । सुडो ने सुडी ॥
 राता दंत ओपे गधाना । राती कर चुडी ॥ राती मोल ॥१॥
 राता मालुवा महु सहियरने । राती गुंथी छे जुडी ॥
 नरसैयाचा स्वामी संग रंभतां । रंगमां रही सहु बुडी ॥ गर्नी मोल ॥२॥

* ॥ वसंत ॥ ११ ॥ *

आंबा ढार कोयलडी काली । बोलत अमृत वाणी ॥
 सजीरे सणगार साहेली चाली । वसंत आव्यो जाणी ॥ टेक ॥

केमरीया सालु अंगे पहेरण । कसुंबीया चोली ॥
 नंदकुंवर अखाडे आव्या । रंग भरी समवा होली ॥ आंबा ॥१॥
 आवो रे आपण महुको गमीये । आ अवमर छे रुडो रे ॥
 नरसैयाचा स्वामी भले मलीया । पहेगवो चुडो रे ॥ आंबा ॥२॥

* ॥ वसंत ॥ १२ ॥ *

वसंत रन आवी महारी बेनी । स्मवाने रंगे रे ॥
 वृंदारे वनमें चालो जईये । शामलीया संगे रे ॥ टेक ॥
 सहियर समाणी मली रे मानुनी । करी सणगार मारो रे ॥
 थानी वहेली सहियर घेली । नही आवे वारो रे ॥ वसंत ॥१॥
 वाजां वहु वाजे वृंदावनमां । थेर्ड थेर्डकार थाये रे ॥
 भणे नरसैयो समनो भोगी । तेणे मंदीर केम रहेवाये रे ॥ वसंत ॥

* ॥ वसंत ॥ १३ ॥ *

वसंत रन आवी महारा वाहाला । चालो वृंदावन जड़ये रे ॥
 आपन बेहु बेलडीये बलगी । बेर्द्दया थईये रे ॥ टेक ॥
 अबील गुलालनी रेल चाले तहां । हो हो होरी करीये रे ॥
 वनमां बगाडे वहालो वांमली रे । तेने मनेह धरी सुनी रे ॥१॥
 सम्बे सम्बी जोड मलीने । प्रेमे पालव ग्रहीये रे ॥
 नरसैयाचा स्वामी वसंत खेले । नहां जोवाने जड़ये रे ॥२॥

* ॥ वसंत ॥ १४ ॥ *

सखना रहो शामलीया वहाला । सीदने करो ओ चाला रे ॥
 बलग्या झुम मारी वेण वछुटी । दृटमे महारो हार रे ॥ टेक ॥
 काले कसुंबी चोली पेहंगी । ते तो कीधी कटका रे ॥

लगन लड्डने परण्या होय तो । तेरे सोहे लटकारे ॥सखना ॥१॥
 अलगा स्हो मेरो चीर खसेगो । जो चोरासे चोरी रे ॥
 गोरां गात्र उधाडां दीसे । तो नही रमीये होरी रे ॥ सखना ॥२॥
 अंग बधे एधान हमारां । कर ग्रहीने कीधां रे ॥
 नरमैयाचा स्वामी वसंत रमे । तहां वेचातां लीधां रे ॥ सखना ॥३॥

* ॥ वसंत ॥ १५ ॥ *

चालो सखा वृदावन जड्ये । मोहन खेले होली ॥
 नट्वर वेष धर्यो नंदानंदन । मली मानुनीनी टोली ॥ टेक ॥
 करो शणगार हार नागोदर । पहरो चरना चोली ॥
 मेथो शिश कुल नयन समार्यो । केसर कुमकुम रोली ॥ चालो ॥१॥
 एक नाचे एक ताल बगाडे । छांटन चंदन धोली ॥
 एक अबील गुलाल उडाडे । एक ते भमर भोली ॥ चालो ॥२॥
 मदमां छकेली छांनुं छांनुं बोले । अबला बनी मतवाली ॥
 एक मांहो मांहे करे मरकडलां । हसी हसी दे कर ताली ॥ चालो ॥३॥
 ऋतु वसंत वृदावन प्रगट्यो । फूल्यो फागण मास ॥
 गधा माधो होली खेले । नग्वे नग्मयो दास ॥ चालो ॥४॥

* ॥ वसंत ॥ १६ ॥ *

रंग भरी रंग तणा श्वाकम श्वोल । होरी रमे रे रसीली ॥
 भृगमद चंदन हरिने छांटे । धाई धाई धावलीयाली ॥ टेक ॥
 कनक कलस अगर रम उत्तम । उछाले ब्रिज नारी ॥
 क्रिडा कासन शाम भनोहर । शामा मदन मुरारी ॥ रंग ॥१॥
 नार मलीते तेवडी सरवे । हरजी साद्या बहि ॥

जमुना पुलीन सोहामणु रे । वहालो वेण मधुरी वाहे ॥ रंग ॥ २ ॥
रंग विनोद करे मर्वे श्यामा । गमा रंगे राती ॥
नरसेयाचा स्वामी संगे रमतां । मानुनीयो मद माती ॥ रंग ॥ ३ ॥

* ॥ वसंत ॥ १७ ॥ *

मजनी आवो आवो रे महारा वहाला । महावनु मुखुड जोवा ॥
भूतल खेल रच्यो पुरुषोत्तम । मानुनीनु मन मोहवा ॥ टेक ॥
राती चूडी कर कामनीयां । रातां चरणे चुंडीयां ॥
राती पीयल करी कुम कुमनी । ने नले राती टीलडीयां ॥ सजनी ॥ १ ॥
राता हार गले अंग ओपे । राती सुंदर मांग भरी ॥
गता नंबोल गधा मुख द्वालके । राती चोली भरत भरी ॥ सजनी ॥ २ ॥
काली कोरना पहेयां पीतांवर । काले कमखे कमन कसां ॥
काला नयणे काजल मार्यां । काली दंत मुख मणिरे जसा ॥ स. ३ ॥
काला दोर गोफणले गुंथी । काली वेण विविध वली ॥
कालां निर कालिन्दीकेरां । काला कृष्णने कामनी मली ॥ स. ॥ ४ ॥
पीलां पटकुल पहेयां प्रेमदा । पीली केमर आड करी ॥
पीलां अंग ओपे अनि अबला । पीली सोने मेर भरी ॥ स. ॥ ५ ॥
पीलां चंप कलीनारे टोडर । पीली आंबे साक वली ॥
रंग भरी फाग खेले अति गधा । पीतांबगमु प्रीत मली ॥ स. ॥ ६ ॥
लीलां पटकुल पहेयां प्रेमदा । लीलां करमां पान घणा ॥
लीलां गुलर कोमल अनि कमखे । लीला टोडर तुलमी तणा ॥ स. ॥
लीलां गिरि गोवर्धन परवत । लीलां ते वृदावन वली ॥
लीलां पोपट कर कामनीया । तहां त्रिकमने पीया मली ॥ स. ॥ ८ ॥

उज्ज्वल थैन सालुडा पहेर्या । उज्ज्वल चोली भरन भरी ॥
 उज्ज्वल जाई बेलना टोडर । उज्ज्वल चंदन उलट करी ॥स. ॥१॥
 उज्ज्वल चित गखो हरि चरणे । पुनरप विठ्ठ्ये रुदे धरी ॥
 उज्ज्वल धेन चरे वृदावन । उज्ज्वल वाणी महेना नरमैनणी ॥म. ॥१०॥

* ॥ वसंत ॥ १८ ॥ *

बलीहारी रे आजे रंग थयो । रमनां रजनी भारी ॥
 शामलीया मोमे मेलां थईने । धेरी लीधो रे गिर्धारी ॥ टेक ॥
 श्यामा श्याम थयां बेहु सरखां । अबील गुलाले रंग गोल ॥
 खौवा चंदन कीच मच्यो तहां । थई रह्यो झाकम झोल ॥ बली ॥१॥
 खालनी शिर केमरनी गोक्की । शामा हाथ पीचकारी ॥
 छांटन छीरकन अरम परस्पर । जय जय शब्द उचारी ॥ बली ॥२॥
 बंसीवट जमुना तट कुंजे । प्रेमतनो परवाह चाल्यो ॥
 भायग जाग्युं महेना नरमैयानुं । ते रस मांहे महाल्यो ॥ व. ॥३॥

* ॥ वसंत ॥ १९ ॥ *

बलीहारी रे रस भरी होरी । रमीये नाथ मुजाण ॥
 कामनी कहान मखा महु मंगे । ना माने कोईनी आण ॥ टेक ॥
 एक पासे अबला महु उभी । एक पासे गोवाला ॥
 बलीया छो तमो बलभद्र वीरा । आज लहेवासे नंदलाला ॥ बली ॥१॥
 एवां वचन शांभली वनिताना । विफर्या विड्हुल वीर ॥
 अबील गुलाल युद्ध मंडाणुं । शोभा ते जमुना तीर ॥ बली ॥२॥
 गोपी थई व्याकुल प्रेमातुर । मनमुख श्यामा धाई ॥
 हल पडी हयोयामां तहारे । हरिने लीधा साही ॥ बली ॥३॥

एकही कुंवन देती कहानने । कहे बलीहारी तमारी ॥
 श्यामा प्रेम घेलडी थईने । लीधो हार उतारी ॥ बली ॥ ४ ॥
 झाकम झोल ने नित्य कलोल । चूंदावनमां थाये ॥
 लोट पोट तहां थयो नरसेयो । ते चरण तणी रज माहे ॥ बली ॥ ५ ॥

* ॥ वसंत ॥ २० ॥ *

हरख भरी होरी रे मारा वहाला । रमीये होडा होड ॥
 वसंत मास विनोद्यो विछुल । पहोंचे मनना कोड ॥ टेक ॥
 चौवा चंदन अगर रम उत्तम । छोल कगी ते छांटो ॥
 अमे रे नमोने गुलाले भरीये । आज तजीने आंटो ॥ बली ॥ १ ॥
 एहेवां वचन सुनी वनिताना । पीचकारी कर लीधी ॥
 तेल गुलाले टपके चोली । एम लिला वहु विधि कीधी ॥ बली ॥ २ ॥
 केसर रम कम्तुरी में भेली । मुख पर चाले रेली ॥
 नर नारीको नव लहेवाये । कहांनड केरी केली ॥ बली ॥ ३ ॥
 अघाध रमने अनोल महिमा । ते वरण्यो नव जाये ॥
 रमना होय जो नेत्रे नरसेयो । तो वरणीने गाये ॥ बली ॥ ४ ॥

* ॥ वसंत ॥ २१ ॥ *

भोजन करवा बेठा कहानजी । आबी सखानी टोली ॥
 कहान कुंवर तमो बेगे पधारो । रमवाने होरी रे ॥ टेक ॥
 जशोदा कहे क्षणु एक नमे बेमो । पुत्र जमी परवारे ॥
 मजो सणगार लेई सामगरी । रमवाने मंग पधारे ॥ भोजन ॥ १ ॥
 उठ्या आरोगी भोगी लिला रम । मुखमें बीडी तंबोल ॥
 नरमैयाचा स्वामी जई मलीया । वाध्यो छे रंगनो रोल ॥ भोजन ॥ २ ॥

* ॥ गग वसंत ॥ २२ ॥ *

आबो रे छोगाला रे वहाला । तमने छांटणलां करीये ॥
 कोमल कंठे नमारे वहाला । वरमाला धरीये रे ॥ टेक ॥
 कुंजन वनमें केसुर फुल्यां । जोवाने सांचरीये रे ॥
 शुक पीक मधुकर महावन गुंजे । मुख मोरली धरीये रे ॥ आबो ॥ १ ॥
 चौवारे चंदन अगर कुम कुम । एक एकने भरीये रे ॥
 नरमेयाचा स्वामी वसंत लगन छे । अमो तमोने बरीये रे ॥ आ ॥ २ ॥

* ॥ वसंत ॥ २३ ॥ *

वसंत आजे मखी भले उदीयो । वस्थो रे जय जय कार ॥
 अबील गुलाल उडाडत अबला । सुंदरी खेले फाग ॥ टेक ॥
 पाडल परिमिल आंबो मोरे । गुलाल केसर घोले ॥
 सहिंयर समाणीमां रंग भरी ग्मनां । तारुणी मुख तंबोल ॥ वसंत ॥ १ ॥
 आद्वार भार वनस्पति मोरी । केसुर लहरे जाय ॥
 नरमेयाचा स्वामी संग ग्मनां । उलट अंगे न माय ॥ वसंत ॥ २ ॥

* ॥ वसंत ॥ २४ ॥ *

वसंत वधावा चालो त्रिजकी नारी । मखी नंदपोर डरे मुरारी ॥ टेक ॥
 गधा चंद्रभागा चंद्रावली मली । भामा ललीना सुशिले ॥
 शिल संगावती कनक घट शिरले । आंवा मोर जब लीने ॥ वसंत ॥ १ ॥
 नये नये चीर कसुंबी पहेरण । नव मत आध्रण मजीये ॥
 नये नये केल करत मोहन संग । न झल कहाँन पीथा भजीये ॥ व ॥ २ ॥
 चौवा चंदन अगर कुम कुम । उडत गुलाल अबील ॥
 खेलत फाग भाग्य बड गोपी । छिकन श्याम शरीर ॥ वसंत ॥ ३ ॥

बाजत ताल मृदंग झालरी । बाजत बेन रमाल ॥
कृष्णके प्रभु गिरधर खेले । सीक राय गोपाल ॥४॥

* ॥ वसंत २५ ॥ *

महाराज कुंवर गज राज चढ़े है । अवध आज खेले होरी ॥
अबील गुलाल उडन गोबनमें । नव नागर भर झोरी ॥ टेक ॥
गावत गीत रीत केसरसुं । कुम कुम कीच मच्योरी ॥
मानु इंद्र वसंत होत है । वरण आन मच्योरी ॥ महाराज ॥१॥
मंद सुगंध समीर बहन है । प्रेमल चहोदश दोरी ॥
बाजत मृदंग रंग वरषन है । पुर सब भींज ग्योरी ॥ महाराज ॥२॥
अनुज सहित खुबीर विराजित । मखी मंग जनक किशोरी ॥
चिन वसो निन चतुदासके । सीयारामकी जोरी ॥ महाराज ॥३॥

* ॥ वसंत ॥ २६ ॥ *

बली भरन रुनाथ कुंवरकुं । संग लीये अगनीत नारी ॥
नहाना भूषण माज सजके । पहेरी नौतम सारी ॥ टेक ॥
चौबा चंदन और अगजा । भर छीकन पीचकारी ॥
उमंगी चले श्रावणके धन ज्युं । दशरथ लालपे ढारी ॥ चली ॥१॥
जबही इल करी लछमन तन । लोयो केमरकी झोरी ॥
मंद मंद मुमकात राम छ्वी । जनक ललीपे ढारी ॥ चली ॥२॥
खेल कुलाहल कौतुक बाट्यो । पुखासी बड भागी ॥
सीताराम रूप हिरदे धरी । जन अग्रदास अनुरागी ॥ चली ॥३॥

॥ राग धन्याश्री धूमार ॥ १ ॥

तेरे हरि आवेंगे आज । खेलन फागरे ॥ खेलन ॥
 मुनरे सखी एक मुकन संदेशो । तेरे आंगणे बोले काग ॥
 पानी पान विछाना आदर । अली उठ उनको पाये लाग ॥ खेलन ॥
 ताल पखाज ब्रांझ डफ बाजे । अली कहा मुनी उठी जाग ॥ खेलन ॥
 खेलन नीकसी खाल मंडली । जहां चूंदावन बाग ॥ खेलन ॥
 सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । आज मनि तेरो भाग ॥ खेलन ॥

* ॥ धन्याश्री धूमार ॥ २ ॥ *

संतो करो मन गुरु मन मंग ॥ होरी खेलीये ॥
 प्रेम पीचकारी हाथ दयाले । हरि पद नाम सुरंग ॥ होरी ॥ टेक ॥
 काया नगर भ्वी हरि होगी । घर घर भरी उमंग ॥
 ज्ञान मजीउ अरगजा लोजे । भगन मंडली मंग ॥ होरी ॥ १ ॥
 धुव प्रहाद वशिष्ठ व्याम मील । ले दोरो हरि संग ॥
 क्रिणुत अप्र मुगनको सखम । बाजन मधुर मृदंग ॥ होरी ॥ २ ॥
 पीपा मेनी धना गेहिदामा । खेलन खेल निशंक ॥
 नारी रूप देखायो मोहनी । तांहां न मोह्यो अंग ॥ होरी ॥ ३ ॥
 पांच पचीस त्रिगुण तीनो । साजी सरस उपंग ॥
 ज्ञान जोग वैराग संगमे । गुरुमन उठन तो रंग ॥ होरी ॥ ४ ॥
 बेन बांसुरी शंख धूनी घोरे । मधुरे भ्वरे मोम्चंग ॥
 माह अबीर मुडो भर ढारन । भाव भगति रम रंग ॥ होरी ॥ ५ ॥
 होरी हरि सुं होत परम मुख । बट्यो है पोयाजोसु रंग ।
 दाम कबीर एसो खेल बनायो । निशदिन रहन अभंग ॥ होरी ॥ ६ ॥

* ॥धन्याश्री धूमार ॥ ३ ॥ *

हम घर मंत सुजाण ॥ खेले रंग भरी ॥
 जन्म जन्मकी मिटी है कल्पना । पायो जीवन प्राण ॥ टेक ॥
 पांच मस्ती मिली मंगल गावे । गुरुगम शब्द विचार ॥
 बाजन ताल मृदंग आँश ढक । अनहद शब्द गुंजार ॥ खेले ॥ १ ॥
 होन आनंद भुवन प्रीतमके । तनकी तपत गई ॥
 पीचकारी छुटन है अदबद । सकी कीच भई ॥ खेले ॥ २ ॥
 सुख सागर आमन कीयो है । निरमल भयो है शरीर ॥
 आवागवन मिथ्यो भाई संतो । यों कहे दास कबीर ॥ खेले ॥ ३ ॥

* ॥ धन्याश्री धूमार ॥ ४ ॥ *

तजो काम क्रोध मद लोभ ॥ खेलो होरीयां ॥
 संत संगत मिली उनही भजोहो । जो हंसाकी जोर ॥ टेक ॥
 ज्यों पंकज जलमांहि बसे वा । जल परसत नही अंग ॥
 युं मान मद परहरोरे । लेई लेई सत संग ॥ खेलो ॥ १ ॥
 मतगुरु शब्दका करो रे दीपहो । कुबुद्धि गुलाल उडाव ॥
 कहेन कबीर तुम चेतीयो हो । बहोर न एसो ए दाव ॥ खेलो ॥

* ॥ राग काफी धूमार ॥ *

अविनाशी दुल्हो कब मिले हो । हो मेरे ध्यारे-मिल ही तो जानना देउं ।
 जल उपनी जलसु नही नेहा । रटन पीयास पीयास ॥ *

* राग काफी धूमारनी, नमाम पदनी टेक सीवायनी दरेक चरणनी मात्र पहेली लीटीज नीचे प्रमाण डोढवीने गावी । जल उपनी जलसु नही नेहा । रटन पीयास पीयास ॥ बल जाइ ॥ रटन पीयास पीयास ॥

ओ गही ब्रेहेनी मग जोवे । पीया मिलनकी है आस॥ अवि० ॥ १ ॥
 दिवस न भुख रेन नहीं निंद्रा । गृहे आंगणे न सोहाय ॥
 सेजड़ीयां बेघन भई मोकु । जागत रेन विहाय ॥ अवि० ॥ २ ॥
 छांड गृह नेह जोब्यो तुमसुं । रहु चरणे लौ लीन ॥
 तलफत रहुरे प्रेमकी प्यासी । जेमे ए जल बिना मीन ॥ अ० ॥ ३ ॥
 मैं तो तुम्हारी दासी हुं मोहन । तुम हमरे शिरदार ॥
 दीन दयाल कृपाकर माधो । साँई तुम मरजनहार ॥ अवि० ॥ ४ ॥
 अब हम प्राण तजत हुं मोहन । के अपनी करी लेहो ॥
 दास कबीर ब्रहे अनि बादब्यो । साँई तुम दरमन देहो ॥ अ० ॥ ५ ॥

* ॥ काफी धूमार ॥ २ ॥ *

हरि पिया मंग होरी खेलीये हो । हो मेरे प्यारे । -

हारे सुनो सुरत सोहागण नार ॥ टेक ॥

हरि कृपा नर देही पाई । होते पशु रे पतंग ॥
 सकल संत मूल गही बेठे । सब जुग गद्यो अनंग ॥ हरि पीया ॥ १ ॥
 इंगला पींगला सुखमन नाडी । दशमें द्वार मठ लाय ॥
 भमर गुफामें जे रम चाख्यो । गमनाम लौ लाय ॥ हरि पीया ॥ २ ॥
 ढार ब्रम अजहुं क्युं न चेते । कहेत कबीर समजाय ॥
 शब्द हमारो जे कोई माने । नहीं आवे नहीं जाय ॥ हरि० ॥ ३ ॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ३ ॥ *

तुम खेलो दिना दश जान हो । हो मेरे प्यारे - बहोस्न एमो ए दाव ॥
 क्रतु बसंत समे रे संयोगे । कर हो कछु अनुगग ॥
 किर पिछे पिछना ओगे रे । बिन जायगो ए फाग ॥ तुम खेलो ॥ १ ॥

ज्ञान डंक मारो पीचकारी । सनमुख रहो रे समार ॥
 मारेगी चित चोँ मोहनी । ठगनी ए चंचल नाँ ॥ तुम खेलो॥१॥
 अनहद धुनि बाजाँ रे बजन है । सुनीयो प्रीत लगाय ॥
 केमर छाक्यो प्रेमको हो । जुग जुग लुट न जाय ॥ तुम० ॥३॥
 हरि सुपर्नकी गारी दीजे । गुरुको शब्द विचार ॥
 मन संगत मिली होगी खेलो । कबहुन आवेगी हार ॥ तुम० ॥४॥
 धन सतगुर धन संतकी संगत । धन जो हमारो भाग्य ॥
 कहेत कबीर खेलो मन ऐसो । फगुवा परमपद पाय ॥ तुम० ॥५॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ४ ॥ *

उस खेलनकुं कहा खेलीये हो । हो मेरे घ्यारे

-जामें आवा गवन विशेष ॥ टेक ॥
 पांच चोर पोटीयार छड़ो मन । निश दिन करन विकार ॥
 पांच पचीस संग जंजाली । काम क्रोध कोट्वाल ॥ उस खेल०॥१॥
 नव दखाजा जेरेरे मलोना । काहेकुं करन उपाय ॥
 कायाके कोट भीतर जरजरी । अष्ट धानका जगव ॥ उस खेल ॥२॥
 ऊस खेलनमें शंकर भूले । ब्रह्मा वेद पसार ॥
 नाम्दमे मुनि खेलत भूले । जोगेश्वर जटाधार ॥ उस खेल०॥३॥
 सुनकादिक भमर होई खेले । दत्त दिगंबर धार ॥
 शुकदेव व्यास गर्भमें खेले । गोरख एही विचार ॥ उस खेल०॥४॥
 ढार भर्म अजहुं क्युन चेते । छांडो जमको देश ॥
 आवा गवन रहीन घेर आवो । देत कबीर उपदेश ॥ उस खेल०॥५॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ५ ॥ *

खेलत माया मोहनी हो । हो मेरे प्यारे –

जीने जेर कीयो है संमार ॥ टेक ॥

चंद्र बदनी रु मृग लोचनी हो । बंदलो बन्यो है रसाल ॥

जनी सनी सब मोहीया हो । वाकी है गज गती चाल ॥ खेलन ॥ १ ॥

ससीक रंगकी चुंदरीयां हो । सुंदर पहेंगी ताहे ॥

वाकी अदबद रूपकी हो । उपमां बरनी न जाये ॥ खेलन ॥ २ ॥

अनहट धुनि बाजाबाजे हो । श्रवण सुनत भयो भाव ॥

खेलनहारा खेलीये हो । बहोर न एसो ये दाव ॥ खेलन ॥ ३ ॥

गान डग्यो तब डर हुवो हो । यायों टरन न पाय ॥

बांमलीये कर आपने हो । फिर फिर जुखन ताह ॥ खेलन ॥ ४ ॥

छीरकन थोथे प्रेमके हो । भरी पीचकागी हाथ ॥

सुनक सुनंदन लेन कहे हो । औरकी केनीक बात ॥ खेलन ॥ ५ ॥

ब्रह्मा रे शंकर धायके हो । दोनु पकरे जाय ॥

गर्व घहेली गर्वसुं हो । उल्ट चली मुसकाय ॥ खेलन ॥ ६ ॥

नारदको मुख मांजके हो । वाके लोचन लीये हे अंजाय ॥

फुग्याले कर आपने हो । छांड दीयो है छीरकाय ॥ खेलन ॥ ७ ॥

सुखनर सब एकान भये हो । एक एक ले जाय ॥

सनमुख कोई नाहि रहे हो । पकरेहै एक ही धाय ॥ खेलन ॥ ८ ॥

जेते थे ते ते लीये हो । बुंधट मांहि समाय ॥

वाम अंजनकी रेखमां हो । अटक रहा जन कोय ॥ खेलन ॥ ९ ॥

इंद्र संकोच ठाढ़ो रे भयो हो । वाके लोचन लीये हैं अंजाय ॥
अविनाशी पीया रामजी हो । दास कबीर जश गाय ॥खेलना १०॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ६ ॥ *

मायाते काली नागणी हो । हो मेरे प्यारे-

-जीने डमीयो हैं मकल संसार ॥ टेक ॥

इंद्र डमी ब्रह्मा रे डमी हो । नारद डसीयो व्यास ॥
वात करंता शिवजीकुं डमी हो । पल एक बैठी है पास ॥ मायाते ॥
कंस डमी शिशुपाल डमी हो । गवण डसीयो जाय ॥
दश ममतक लंका लेई हो । छीन माँहि देई है विहाय ॥ मायाते ॥
बडेरे बडे विख्ला रे डमे हो । कोई न खेलन हार ॥
कच्छ देश जाई गोरम्ब डसी यो । जाकी है तीक्षण धार ॥ मायाते ॥
चुन चुन मारे सुर महा हो । जाकी करे जग आश ॥
मोहे गरीबकुं कोण गणे हो । कहेन कबीर निजदास ॥ मायाते ॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ७ ॥ *

नित मंगल होरी स्वेच्छीये हो । हो मेरे प्यारे-नितही वसंत नित फाग ॥
दयारे धग्मको केमर धोरो । प्रेम प्रीत पीचकार ॥
भाव भगानि भरि लो मतगुरुसें । सुफल जनम नर नार ॥ नित ॥ १ ॥
क्षमा अबील चरचो चित चंदन । सुमरन ध्यान धूमार ॥
ज्ञान गुलाल अग्न कस्तुरी । उमंगी उमंगी रंग ढार ॥ नित ॥ २ ॥
चरणामृत परमाद चरण रज । अपने शिश चढ़ाय ॥
लोक लाज कुल कांन तोड़के । भक्ति निशान बजाय ॥ नित ॥ ३ ॥

कथा रे कीरतन मंगल ओच्छव । कर संतनकी भीर ॥
कबहुं काज बिगडे नहीं तेगे । मन मन कहेत कबीर ॥नित॥४॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ८ ॥ *

मोहन मंग खेलन रंग हो । हो मेरे प्यारे—पूरण वृदावन चंदा॥टेक॥
अपने अपने भुवन बनी आई । चल हो नंद दखार ॥
देवी स्वरूप पीया मदन मोहनको । भई है प्रेम बेहाल ॥मोहन॥१॥
होत वृदावन हो हो होरी । जहाँ तहाँ मंगे श्याम ॥
मगन भई सब गोपी नाचे । मनमथके संगराम ॥मोहन॥२॥
ताल मृदंग भेगी सब बाजे । गृहे गृहे होत निशान ॥
तीन लोक स्वर पुरी रहो हो । सुरपनि शिव उकलान ॥मोहन॥३॥
कोऊ काहुको अंबर खेचे । को काहुको हार ॥
मगन भई सब गारी काढे । नाहि न सरम संभार ॥मोहन॥४॥
बाल बूढ़ सब भई है दीवानी । मेटी ल्योक कुल लाज ॥
देवर जेठ कोई ना माने । जहाँ तहाँ आप विराज ॥मोहन॥५॥
करीरे मान जब चल्यो रे शामगे । मधुरी वजाई बेन ॥
छांश्चा बंसी बट हरि ठाढे । आवन गज गती मेन ॥मोहन॥६॥
एह कृष्ण है प्रेमकी मूरगि । वृज कुलको शणगार ॥
अधर लाग सब गोरस चाल्ये । नाहि न बरण विवार ॥मोहन॥७॥
देख कबीर थकीत भये हो । कहा रे पाप कहा पुन ॥
बाजीगर बाजी संकेली । रही है अकेली ए सुन ॥मोहन॥८॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ९ ॥ *

कहाँनैया न मार पीचकारी हो । हो मेरे प्यारे-नहीं तो खासो मोहनगारी

कंचवो भीज्यो मेरो केमरमे हो । मुख गयो है छीरकाय ॥
 रंगे रंग्यो महागे चईणो हो । ऐसी कान ब्रिजगय ॥ कहा० ॥ १ ॥
 अबला अबील उडाडे अनि घणुं । गुलाल उडाडे गोपाल ॥
 एक एक पर ढारन हमी हमी । करत ऐसो ए ख्याल ॥ कहा० ॥ २ ॥
 राधे खणत मोहनकुं चुंटी । मोहन पक्कन हाथ ॥
 कंठ परस्पर हाथ ढास्के । चुंबन कस्त है नाथ ॥ कहा० ॥ ३ ॥
 धन धन रे जे ब्रिजमां वसन है । धन धन गोपी गोवाल ॥
 सूरदास धन मास फागणकुं । धन धन नंदाजीको लाल ॥ क. ॥ ४ ॥

* ॥ काफी धूमार ॥ १० ॥ *

रम होरी खेले शामगे हो । हो मेरे प्यारे—संग लीये है ब्रिजबाल ॥
 लाल गगन भयो लाल भोमी भई । लाल ही ब्रिजको पात ॥
 लालही लाल गोवालन नीकमी । लाल लालजीको साथ ॥ रस ॥ १ ॥
 सब सखी मिलके मनो बिचायों । चलोहो नंद दरबार ॥
 मार पड़ी फुलनकी भारे । हायों है गधाजीको साथ ॥ रस ॥ २ ॥
 भगी पीचकारी सुबल सुदामा । देन लालकुं दोर ॥
 चिनवनी करे मन मोहन प्यारे । देन अंचरा ओट ॥ रम ॥ ३ ॥
 कनक कचोलामें केमर घोयों । कर लीये ललीता हाथ ॥
 कृष्ण जीवनको वागो छीरके । चरच्यो है लालजीको साथ ॥ रस ॥ ४ ॥
 भुज गही भामनी फगुवो रे मागे । मेवा बह्नेत मगाय ॥
 जुगल स्वरूपके चरण कमल पर । जन सूरदास बल जाय ॥ रस ॥ ५ ॥

* ॥ काफी धूमार ॥ ११ ॥ *

वसंत आवे वहालो लागे हो । हो वहालो लागे-वेगलेथी महारोवीर ॥

पहेलो वसंत मंतन पर बरीयो । काँन सुन्यो अवधूत ॥
 ताली लागी है त्रिकमजीसुं । उठी चढ़ावे भभूत ॥वसंत॥१॥
 कलाने कांबी अनवट बीछुवा । ज्ञांझरनो ज्ञमकार ॥
 बांहे सोभीनो चुडलो हो । कंठे एकावल हार ॥ वसंत ॥२॥
 गोपीयोमें ज्ञान करे रे गोविंदजी आयो है फागुन मास ॥
 सोल सहस्र टोले रे मली ही । रंग भरी रमवाने राम ॥ वसंत॥३॥
 गुलाल भरीया गोविंदजारे । अग्नि परम भयो एक ॥
 सूरदास प्रभु निहा रे मिलनकुं । भला लख्या एवा लेख ॥वसंत॥४॥

* ॥ काफी धूमार ॥ १२ ॥ *

रंगीली केसर हम बोई हो । हो मेरे प्यारे-अपने बालमजीके काज ॥
 उंचे उंचे पस्वत केसुर बोयो । मरघा चरी चरी जाय ॥
 क्योंरे मरघा डरण नाहि । मारुंगी धनुष चदाय ॥रंगीली॥१॥
 आमपाम सब केवड़ी बोई । बीच बीच बोयो है गुलाब ॥
 बेरो रंग गुलाबको सोहीये । ताको में गुंथाऊं हार ॥रंगीली॥२॥
 कनक कच्छोलामां केसर धोर्यो । और यमुनाको नीर ॥
 कृष्ण जीवनको वागो चरचो । चरच्यो है राधाजीको चौर ॥रंगीली॥३॥
 बृंदावनमें मुरली बजत है । धुनि सुनी रह्नो नव जाय ॥
 वेगे मिल्यो हरि वंसको स्थामी । उलट अंग न माय ॥रंगीली॥४॥

* ॥ काफी धूमार ॥ १३ ॥ *

वसंत वहेवा आदर्यो हो । हो मेरे प्यारे-परणे छे नंदाजीनो लाल ॥
 वसंत पंचमीने नौतम नक्षेत्र । लगन लीयो निरधार ।
 संत पधरावुं ने चरण धोवडावुं । तोरण बंधावुं ढार ॥ १ ॥

धन धन फागण धन रे आ महिमां । मंडप रच्यो अनिसार ॥
 हेत प्रीत करी जुगते जमाडुं । वरत्यो छे जय जयकार ॥वसंत॥२॥
 भावे सो ब्रद्या वेद भणे रे । मंगल वरत्या चार ॥
 सुरनर मुनिजन मर्वे मलीने । कंठे आरोपी वरमाल ॥ वसंत॥३॥
 बावा नंदजीको कुंवर कन्हैयो । कन्या भ्रगुभान दुलार ॥
 पहेलो परण्यो महेता नग्मैनो म्वामी । पछी परण्यो आ मंसार ॥

* ॥ काफी धूमार ॥ १४ ॥ *

बालम विना फागुन हो । हो मेरे प्यारे-

कैमे भरुंगी दीन रेन ॥ टेक ॥

पोरुको फाग मेरो पीया संग खेल्यो । उढायो अवील गुलाल ॥
 अबको फाग मेरो पीयु घर नांहि । खेलन मोरी बलाय ॥बालम॥१॥
 सेज उजडीयांने पृष्ठ उजडीयां । और उजडीयां रेन ॥
 जबथे पीयु परदेश पधारे । उजड भये दोनुं नैन ॥बालम॥२॥
 प्रीतममें पतीयां लिख भेजुं । कोई कागद लेई जाय ॥
 आस पास जोबन लिख भेजुं । सुख दुःख लिख्यो न जाय ॥बा.॥३॥
 देउमें चोमर हार हैयाको । कोई कागद लेई जाय ॥
 मेरे प्रीतमसुं वहां जई कहीयो । होरी खेलन धेर आय ॥बा.॥४॥
 जोरेपीया हुं ऐमो जानती । आंगणे बोती खजुर ॥
 वा पर चढी चढी पंथ निहालुं । प्रीतम केनीक दूर ॥बालम॥५॥
 मेरे आंगणे केवडो रे बोयो । कौवा बेडो आय ॥
 उड उड कौवा सुलक्षणारे । प्रीतम कब आवे वेर ॥बालम॥६॥
 जुढी बनकी कोयलडी रे । जुठो बनको काग ॥

मोरे जोजन मेरो पीयु बमत है । केसे आवे थेर आज ॥ वा. ॥ ७ ॥
 मथुरां नगर सोहामणु रे । तीर बहे जमुना नीर ॥
 राधाजी पाणीडां मंचर्यां हो । ओढन नव रंग चीर ॥ वा. ॥ ८ ॥
 सब मखियन मली मनो चिचार्यो । चलहो नंद दरबार ॥
 वेगे मल्यो हरि बंसको स्वामी । मरनीकुं ल्योरे जीवाय ॥ वा. ॥ ९ ॥

* ॥ काफी धूमार ॥ १५ ॥ *

वाधंबर ओढयो शांकरो हो । हाँरे मखो हो जोगीया काहु नर कोन ॥
 एक समे मन मोहन उपन्यो । लीयो तपसीको भेष ॥
 गोकुल मथुरां ब्रिज मंडलमें । जाय जगायो अलेख ॥ वाधंबर ॥ १ ॥
 सप्त दीप नव खंड ब्रह्मांडमें । घट घट रह्यो है समाय ॥
 सो गवल भ्रखुभान गोपके । द्वारे यहो रह्यो आय ॥ वाधंबर ॥ २ ॥
 शिरपर आड भस्म कर लीनी । सुंदर भेष बनाय ॥
 भयो है दिगंबर डाढयो है द्वारे । दीयो हे शंख बजाय ॥ वाधंबर ॥ ३ ॥
 शंख शब्द धुनि मुनी जिन तिनथे । जुरी आई ब्रिज नर ॥
 वदन बिलोकी कुंवरी राधेको । बैठे है आमन मार ॥ वाधंबर ॥ ४ ॥
 ना रे जानु महादेव मखी हो । ना जानु शुकदेव ॥
 ना जानु कोई भूपनि गजा । कोई न जाने वांको भेव ॥ वाधंबर ॥ ५ ॥
 हसीरे पूछे भ्रखुभान नंदनी । राघल उत्तर देह ॥
 कारण कौन भेष तपसीको । बन तजी डोलन गेह ॥ वाधंबर ॥ ६ ॥
 कोन देश ने आयो हो राघल । कहां नेगी मनसा जाय ॥
 अब तो मौन गहो मन मोहन । दहोदश मान बनाय ॥ वाधंबर ॥ ७ ॥
 शिंगी खपर भभूत और बटवा । शिर चंदस्की खोर ॥

बेर बेर बुझतहुं तुमकुं । कहां विमारी गोरम ॥वाधंवर॥८॥
 बडे बडे नयन रमिकके भाँहर । मुख मोरली मुसकान ॥
 जोगी नही भोगी है कोई । भोगी है भमर सुजान ॥वाधंवर॥९॥
 जटाजुट कोपीन पावरी । ज्ञोगी कस्ता भभून ॥
 मेरी जीयामें एमी बसत है । नंदबाबाजीको पून ॥वाधंवर॥१०॥
 चुटकी भभून दीनी राधेकुं । चले है वाधंवर झाल ॥
 मन हरलीनो तनक चित्वनमें । व्याकुल भई ब्रिजनार ॥वाधं ॥११॥
 नगर नगर और डगर डगर में । निशदीन फिरत उदास ॥
 नयन चकोर भये राधेके । हरि दरथानकी है आस ॥वाधं॥१२॥
 ए मन रतन जनन करी लीनो । निरखी नयन किशोर ॥
 श्रीजगन्नाथ जीवन धन माधो । प्रीत लगी है दोनु और ॥वाधं॥१३॥

* ॥ काफी धूमान ॥ १६ ॥ *

रघुनाथजी आये जानीये हो-हो मेरे प्यारे-

जानकी जीवन राम ॥ टेक ॥

राम सभामें बीड़लो फिरायो । लीयो हनुमान उदाय ॥
 सीनाकी सुध में लेई आबुं । पलट लंका जलाय ॥रघुनाथजी॥१॥
 जब रघुनाथे माहेर बांध्यो । सेना उनारी पार ॥
 तीन लोक शिर कंपन लायो । कंप्यो है वासुकी नाग ॥रघु॥२॥
 कहेत मंदोदरी मुनो पीया गवण । मिलीये दोउकर जोर ॥
 जाकी जानकी तुम हरि लाये । ढारेगो दश शिश तोर ॥रघु॥३॥
 कहेत ही गवण सुनहो मंदोदरी । घटन हमारो मान ॥
 मकल देवता में बस कीनो । र्ह्यो एकीलो ए गम ॥रघु॥४॥

हनुमान जेमे पायक जाको । लक्ष्मण जेमे वीर ॥
जलनी अगनमें ऐमे धसत है । जेसो है साहेर नीर ॥रघु०॥५॥
कुंभ करण जेमे भैया रे हमारे । इंद्रजीत बल वीर ॥
पकड़ही फेटो फेंक देहंगो । साहेर पेली ए तीर ॥रघु०॥६॥
जनक सुना जाके पनि रघुवरमे । मंग लक्ष्मणमे भाई ॥
पवनको पुत्र महा बल दाई । सपनेमें लंका जलाई ॥रघु०॥७॥
नाकनमें सरनाई बजत है । कान बजायोरे भेर ॥
जाग जाग कुंभ करण हो । लीयो लंका गढ घेर ॥रघु०॥८॥
रावण मायों दुहाई फिराई । दीयो है विभीषण राज ॥
हसत खेलन जानकी लेर्ह आये । सूरदाम बल जाये ॥रघु०॥९॥

* ॥ धूमार ॥ १७ ॥ *

दशरथ नंदन वर बरु । हो वरखरु-औरनकुं कहा करु ॥टेका॥
गजा जनके महा जंग माँड्यो । कंकोतसी रे पठाय ॥
देश देशके भूपति आये । आये है मंडप माँहि ॥ दशरथ ॥१॥
अपने रे अपने आमन बैठे । अपने रे अपने रूप ॥
देव दानव सर बे आये है । आये है रावण राय ॥दशरथ॥२॥
बुरो ब्रन पीताये लीनो । समजत नाहि तात ॥
जाओ सखों सम ज्ञावो उनकुं । पाढुंगी माहेगे आप ॥दश०॥३॥
जानकी शोच करन है मनमें । कोन प्रगत्यो पाप ॥
कौशल्याको कुंवर अनि कोमल । ना रहेगो माहेगे आप ॥दश०॥४॥
जानकी मौच सुन्यो रघुनाथे । आये है मंडप माँहि ॥
तुलसीदासको स्वामी बलीयो । धनुष तोयों है नाहि ॥दश०॥५॥

* ॥ धूमार ॥ १ ॥ *

श्री गोकुल राजकुमार । लाल रंग भीने हो ॥ लाल रंग ॥
 मानु खेलन ढोलन फ़ाग । सखा संग लीने हो ॥ सखा संग ॥१॥
 चित्र सुचित्र विचित्र । सबे अनुकुल है ॥ सबे ॥
 राजिन रंग विरंग । सीरोजसे फुल है ॥ सीरोजसे ॥२॥
 एकनके कर कंचन । जेरी जगवकी ॥ जेरी ॥
 एकनके पीचकारी । मो हेम भरावकी ॥ मो हेम ॥३॥
 केमर धोर भरे घट । हाटक के घने ॥ हाटक ॥
 पंकज पुंज परग । मृग मद सुं छने ॥ मृग ॥४॥
 ढोलकी ढोल निशान । मुख्य डफ बाजही ॥ मुख्य ॥
 मानु मीनके मेघ । महा वृष्टि गाजही ॥ महा ॥५॥
 ऐमी धुनि सुनी अकुलाई । चली ब्रिज नागरी ॥ चली ॥
 एक ते एक अनुप । रूप गुण आगरी ॥ रूप ॥६॥
 प्यागी गधेके संग मोहाई । अनेक माहेली है ॥ अनेक ॥
 जैसे कामके कानकी । (मानु) कंचन बेली है ॥ कंचन ॥७॥
 ऐसे भेष बनाय कै भाँत । न जान बखानी है ॥ न जात ॥
 जेती तेती उपमा । मनमें बिलखानी है ॥ मनमें ॥८॥
 कोयल कीर कहा स्वर । भेद न जानही ॥ भेद न ॥
 कायर कुंजर कोन । कहा गती ठानी है ॥ कहा ॥९॥
 केरनको जो सुभाव । परो अति कंपको ॥ परो ॥
 हेम लीया हठ नेम । के पावल झंपको ॥ के पावक ॥१०॥
 अंजन खंजन मीन । रहे छुपी लाजते ॥ रहे ॥

केमर कंदीर मंदीरमें । धुरो अनि त्रासते ॥ धुरो ॥ ११ ॥
 पंकज में पंकज मूल । रहे गती लाजते ॥ रहे ॥
 निन प्रकास विलास । मौटो द्विजराजके ॥ मौटो ॥ १२ ॥
 नाल पखाज अवाज । के बाजत जंत्र ही ॥ के बाजत ॥
 ज्ञान मनोहर गीत । के मोहनी मंत्र ही ॥ के मोहनी ॥ १३ ॥
 इन उन कौनककी । धुनि लागी सोहाई ये ॥ धुनि ॥
 मानु अनंगके आंगन । बाजे बधाई है ॥ बाजे ॥ १४ ॥
 गोकुल गोरीने खोरीमें । खेल मचायो है ॥ खेल ॥
 लाल गुलाल अबीलसु । अंबर छायो है ॥ अंबर ॥ १५ ॥
 लाल गुलालकी धुरी । पीया मुख यों लसे ॥ पीय ॥
 पीन पतंग प्रभावीच । कंचन कंजसे ॥ कंचन ॥ १६ ॥
 मंजुल हास कपूरकी । धुरी उडाव ही ॥ धुरो ॥
 सुंदर श्याम सुजान सों । नयन जुराव ही ॥ नयन ॥ १७ ॥
 हृषि करी पीचकारी । भरी अनुरागसुं ॥ भरी ॥
 जाय लगी ब्रिजराज । लाल बड भागसु ॥ लाल ॥ १८ ॥
 आये घेर अबला सब । लाल गोपालसु ॥ लाल ॥
 मानु हेम लता लपटाई । के शाम नमालसु ॥ के शाम ॥ १९ ॥
 एक गहे पट पीन । एक बन दामकुं ॥ एक ॥
 एक होय निशंक । अंक भरे शामकुं ॥ अंक ॥ २० ॥
 श्यामाके शिरपर श्यामजी । केमर ढोयों हैं ॥ केमर ॥
 देकर ताली हमी सब । हो हो होरी है ॥ हो हो ॥ २१ ॥
 गावती गारी दे नारी । सबे सम प्रीतकी ॥ सबे ॥

बात बनावत अपनी । अपनी जीतकी ॥ २२ ॥
 तब ही गोपाल कहो कल्पु । आज्ञा दीजे जु ॥ आज्ञा ॥
 जो तुमारे मन इच्छा सो । फगुवा लीजे जु ॥ फगुवा ॥ २३ ॥
 तब प्यारी बोली सुच पाई । प्रभु अब रीझे जु ॥ प्रभु ॥
 तहारी निज भक्ति रूपा करी । फगुवा दीजे जु ॥ फगुवा ॥ २४ ॥
 ऐमो ध्यान सदा हरिको । जीयामें जो रहे ॥ जीयामें ॥
 कहेत गदाधर दास । भाग्यकी को लहे ॥ भाग्य ॥ २५ ॥

* ॥ धूमार ॥ २ ॥ *

खेलत मदन गोपाल सो । फाग सोहामणो ॥ फाग ॥
 ब्रिज युवती नंदलाल । अनंग लजावनो ॥ अनंग ॥ १ ॥
 मचल सुदामाके मंग । मखा बहु राजही ॥ मखा ॥
 बहु अवाज और मोरचंग । मोरली डफ वाजही ॥ मोरली ॥ २ ॥
 वाके करमें कनक पीचकारी । सो फेट अबीलकी ॥ सो फेट ॥
 बहु आवत भरी कावर । केमर नीरकी ॥ केमर ॥ ३ ॥
 मजके साज ममाज । चले भ्रखुभानके ॥ चले ॥
 मुनि मनमा गई भूल । सुनत धुनि कान ते ॥ सुनत ॥ ४ ॥
 तब ईनथे झुंडन जार । आई ब्रिज वासनी ॥ आई ॥
 तीनमें कुंवरी किशोरी । सो नित बिलासनी ॥ सो नित ॥ ५ ॥
 संग रंगीलो साज । लीये नव नागरी ॥ लीये ॥
 घरन घरन कर राजीन । फुलुनकी छड़ी ॥ फुलन ॥ ६ ॥
 ताल मृदंग उपंग । चंग अरु ज्ञालरी ॥ चंग ॥
 गावती मोहनी मंत्र । जंत्र कर तालरी ॥ जंत्र ॥ ७ ॥

मृग मद हास सुवास सें । केसर धोयो है ॥ केमर ॥
 साहलीके शिश । धरी सब मोली है ॥ धरी ॥१॥
 और गुलाल अबील । अरगजा माजके ॥ अरगजा ॥
 वहु विधि करत विलास । चली ब्रिज राज पे ॥ चली ॥२॥
 जोन बहु कबहु । दर शिर विषेखही ॥ दर ॥
 वेतो गुरु जन केरी लाज । न करत निमेष ही ॥ न करन ॥३॥
 खेलनकुं हस्मि । हुलसी सब आव ही ॥ हुलसी ॥
 मंजुल हास कपूरकी । धुरी उडाव ही ॥ धुरी ॥४॥
 एही विधि करत ही ख्याल । बाल सब आव ही ॥ बाल ॥
 तहाँ ऊटन नहाना रंग । अनंग लजाव ही ॥ अनंग ॥५॥
 इतथें धसे सब ख्याल । मखा नंदलालके ॥ सखा ॥
 भरी पीचकारीन मारन । भरी ब्रिज बालसें ॥ भरी ॥६॥
 छरकत अरस परम्पर । मोहन भामनी ॥ मोहन ॥
 तहाँ ऊटन अबील गुलाल । कीयो दीन जामनी ॥ कीयो ॥७॥
 हारो सखाको मान । सुता ब्रखुभानकी ॥ सुता ॥
 सब कोई करत संभाल । के अपने प्राणकी ॥ के अपने ॥८॥
 संग सखा नही कोय । कहो सब कहाँ गये ॥ कहो ॥
 तब सखियन मिलके श्याम । अचानक आइ गहे ॥ अचानक ॥९॥
 दोढ आई ब्रिजनार । ठोर दश विशथें ॥ ठोर ॥
 दीयो है अरगजा ढार । मनोहर शिश पे ॥ मनोहर ॥१०॥
 अब कैसोहो नाथ । बाथ भरी बोलहीं ॥ बाथ ॥
 श्री राधे करत विलास । हास मुख डोल ही ॥ हास ॥११॥

ले ललीता दर्द गांठ । निल पट पितमुं ॥ निल ॥
 घन दामिनी ज्युं गजीत । मोहन मित्र सुं ॥ मोहन ॥ १९ ॥
 ताली दे ब्रिज नारी । चली सब दौरी है ॥ चली ॥
 भली रे बनी है जोगी । के हो हो होरी है ॥ के हो हो ॥ २० ॥
 गावनी गोपी गीत । रीन करी ब्याहोकी ॥ रीन ॥
 भई है मनोहर मोदके । गधे नाहोकी ॥ गधे ॥ २१ ॥
 बहो बिधि भयो है विलास । आश सब ही भई ॥ आश ॥
 देखत सुखनर वृंद । के मद मानी गई ॥ के मद ॥ २२ ॥
 तब ही गोपाल दयाल । दया करी यों कहे ॥ दया ॥
 मागो माथी सब मोद । निहारे चिन चहे ॥ निहारे ॥ २३ ॥
 लेती बचन कर माँहि । के बाँहि पमारही ॥ के बाँहि ॥
 तमो निन करो येही रंग । संग ब्रिज नार ही ॥ संग ॥ २४ ॥
 फगुवो मागन रंग । रहो न कद्दो परे ॥ रहो ॥
 ए सुख देखी कोण । जे मनमें धिरज धरे ॥ जे मनमें ॥ २५ ॥
 खेले फाग नर नार । भरे अनुराग में ॥ भरे ॥
 ब्रिज वासीनी मोहे श्याम । सूर बड भाग्यमुं ॥ सूर ॥ २६ ॥

* ॥ धूमार ॥ ३ ॥ *

होरी खेलत मोहन लाल । लाल रंग होरी हो ॥ लाल ॥
 इन मखियनको जुथ । सबे मिल दोरी हो ॥ सबे ॥ १ ॥
 इन गथा ललिता । मोहन संग जोगी हो ॥ मोहन ॥
 अब हो हो करे सबनार । सबे कहे होरी हो ॥ सबे ॥ २ ॥
 चैवा चंदन कुम कुम । गुलालकी जोगी हो ॥ गुलाल ॥

आंख आंज मुख मांज । मोहन शिर मोरी हो ॥ मोहन ॥ ३ ॥

अब फगुवा बहोत मंगायके । भर भर झोरी हो ॥ भर भर ॥

अब सूरदास बल जाय । जुगो जुग जोरी हो ॥ जुगो जुग ॥ ४ ॥

* ॥ धूमार ॥ ४ ॥ *

निकम्त गोप कुमार । कहो कृष्ण पाईये ॥ कहो ॥

वासु खेलीये फाग । के धुंम मचाईये ॥ के धुंम ॥ १ ॥

लोचन बपल विशाल । चली नव यौवनी ॥ चली ॥

मानु मदनकी सेन । चली है अनिघनी ॥ चली ॥ २ ॥

झाँझरनो झमकार । लगी धुन भागी हो ॥ लगी ॥

मानु मदनकी सेन । गयेद अमवारी हो ॥ गयेद ॥ ३ ॥

मानु कंचन वेल । कहान फुल वाडी हो ॥ कहान ॥

केसर रंग सोरंग । कनक पीचकारी है ॥ कनक ॥ ४ ॥

नंदा नंद सोगंद । धरो धिर धागी है ॥ धरो ॥

औरन कुंडल छांडके । छीरकन कानकुं ॥ छीरकन ॥ ५ ॥

हमती चली ब्रिज नार । ना माने आणकुं ॥ ना माने ॥

अबील गुलाल लपटाय । संग बलवीरकुं ॥ संग ॥ ६ ॥

दीनो मुख लपटाय । करे सब सोरकुं ॥ करे ॥

पकड सुदामाजीकुं । पहेगयो चीरकुं ॥ पहेगयो ॥ ७ ॥

ले गुरु ज्ञानकी लाज । रहे हरि हासके ॥ रहे ॥

जशोमनि कहे मुसकाय । सुनो ब्रिज नागीयो ॥ सुनो ॥ ८ ॥

जोरे चाहो सो लेहो । जोवन मद मातीयो ॥ जोवन ॥

फगुवो लीयो रे मंगाय । के समय विचारके ॥ के समय ॥ ९ ॥

नित नित खेलीये फाग । के नवल किशोरी हो ॥ नवल ॥
गावे जन रोहीदास । सदा रंग होगी हो ॥ मदा ॥ १०॥
॥ होरी ॥ १ ॥

बरसाणे खेल मांज्यो होरी ॥ बरसाणे ॥ टेक ॥
चौबा चंदन और अरगजा । केमर गागर शिर ढोरि ॥ बरसाणे ॥
सब मखियन मिली खेलन निकसी । जामें गधे है गोरी ॥ बरसाणे ॥
अरी देखन दाँगी कुंवर कन्हाई । बीच करत है हम गोरी ॥ बरसाणे ॥
फगुवा दीयो जब भले छुटे हो । तुम मत जानो यह भोरी ॥ बर० ॥
सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । चिरण जीवो अविचल जोरी ॥ बर० ॥

* ॥ होरी ॥ २ ॥ *

चलो बरसाणे खेले होरी । खेले होरी खेले होरी ॥ टेक ॥
इतथे आये कुंवर कन्हैया । उतथे आई राधे गोरी ॥ चलो ॥
पांच बरषका श्याम मनोहर । सात बरषकी राधे गोरी ॥ चलो ॥
चौबा चंदन और अरगजा । अबील गुलाल लीयो भर झोरी ॥ चलो ॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ । मोरली मधुरी धुनि थोरी ॥ चलो ॥
सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । जुग जुग जीवो आ जोरी ॥ चलो ॥

* ॥ होरी ॥ ३ ॥ *

धर्यो मुगट खेले होरी । कहान धर्यो मुगट खेले होरी ॥ टेक ॥
इतथे आये कुंवर कन्हैया । उतथे आई राधे गोरी ॥ कहान ॥
हाथमें ताल गुलाल फेटमें । अबीलकी लेई भर भर झोरी ॥ कहान ॥
नंद महेसके कुंवर कन्हैया । केमर गागर शिर ढोरी ॥ कहान ॥
सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । फगुवा लेउ भर भर झोरी ॥ कहान ॥

* ॥ होरी ॥ ४ ॥ *

खेले कन्हैयो धूमरसें । होरी खेले कन्हैयो धूमरसें ॥ टेक ॥
गोपी ग्वालन सहुं लुंगरसें ॥ होरी खेले ॥
अबील गुलालकी मार पड़ी है । मोती दृष्ट्यो है झुलरसें ॥ होरी ॥
चौवा रे चंदन और अरगजा । पीचकारी मानु मे बसें ॥ होरी ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधरना गुण । हाथी छुट्यो हो लंगरसें ॥ होरी ॥

* ॥ होरी ॥ ५ ॥ *

खेलन दो रंग होरी हो रमीया । खेलन दो रंग होरी ॥ टेक ॥
काले गुलाल पड़यो अँखियनमें । अजहु न भई पीया कोरी हो ॥
चौवा रे चंदन और अरगजा । अबीर गुलाल भर झोरी हो रमीया ॥
पकड रहुंगी पीया जानेन देऊंगी । तुम मन जानो पीया भोरी हो ॥
दुंदी कहै प्रभु फ्युवा रे दीजो । मेवा भर झोरी हो रमीया ॥

॥ राग फेर ॥ होरी ॥ १ ॥

रज शिरोमणि रजीयो रंगीलो ।

रंगीलो रे रंगीलो-दामोदर गथ ॥ रज शिरोमण ॥ १ ॥
जासु बांधी मागी आंखडी अदक्षणु ।

अदक्षणु रे अदक्षणु-अलगी नव थाय ॥ रज ॥ २ ॥
थाल भरु छग मोतीडे वधावुं ।

वधावुं रे वधावुं-हैडे हरव न माय ॥ रज ॥ ३ ॥
आरती ने अगर कपूरनी तहां करनां ।

तहां करतां रे तहां करनां-मन मुदित न थाय ॥ रज ॥ ४ ॥

शुं करे बंधन बापडां तेना दुःखडां ।

तेना दुःखडां रे तेना दुःखडां—अनि दृ पलाय ॥ राज ॥ ५ ॥
भव सागरनी छोडमां रम भीनो ।
रस भीनो रे रस भीनो—भक्त भवान जश गाय ॥ राज ॥ ६ ॥

* ॥ होरी ॥ २ ॥ *

हो शामलीया रे शामलीया । छे थोडामां स्वाद ।

अतिवणु हमबुं सारु नही शामलीया ॥ १ ॥
आगल पाल्ल देखे लोकडां हल्को छे ।

हल्को छे रे हल्को छे—आ पछी उपहास ॥ अनिवणु ॥ २ ॥
मारी आर ना करमो एवडी पातलीया ।

पातलीया रे पातलीया—परनारीनो संग ॥ अतिवणु ॥ ३ ॥
तरणाने तोले नने गणु नथी रहेतो ।

नथी रहेतो रे नथी रहेतो—तहारो सखनो हाथ ॥ अनिवणु ॥ ४ ॥
तुं तो हांसी करे हळ्वो रही वेगलो रहे ।

वेगलो रहे रे वेगलो रहे—ना आवे मारीपाम ॥ अनिवणु ॥ ५ ॥
राखी मुक्यो हतो कहां थकी मारा करमें ।

मारा करमें रे मारा करमें—एवो ब्रिजमें वास ॥ अनिवणु ॥ ६ ॥
भक्त भवान प्रभु ताहरो वाणी वदे ।

वाणी वदे रे वाणी वदे—आपथी हुंशीयार ॥ अनिवणु ॥ ७ ॥

* ॥ होरी ॥ ३ ॥ *

केम भरीये रे केम भरीये । जमुनाना नीर ॥

नंद कुंवर केडे पड्यो केम भरीये ॥ टेक ॥

रेल कीधी रंग रेलनी वण साढ्यां ।

वणसाड्यां रे वणसाड्यां—चौलीने चीर ॥ नंद ॥ १ ॥
हराया दिवम होरी तणां न हराये ।

न हराये रे न हराये—हल्लथस्नो वीर ॥ नंद ॥ २ ॥
ताकी मारे पीचकारीयां जेम वागे ।

जेम वागे रे जेम वागे—तनडामां तीर ॥ नंद ॥ ३ ॥
ओथां लई अलगी रहुं तांहे आवे ।

तांहे आवे रे नाहे आवे—सांमो श्याम शरीर ॥ नंद ॥ ४ ॥
जंत्र वगाडे मंत्रना ना गनाये ।

ना गनाये रे ना गनाये—एवा गुण रे गंभीर ॥ नंद ॥ ५ ॥
वहाले अबील गुलाल खेलां करी हरी लीधां ।

हरी लीधां रे हरी लीधां—हैडाना हीर ॥ नंद ॥ ६ ॥
भक्त भवान प्रभु तमो विना जो धरावे ।

जो धरावे रे जो धरावे—वीजु कोन जधीर ॥ नंद ॥ ७ ॥

* ॥ होरी ॥ ४ ॥ *

रंगरमे रे रंगरमे गधाने माधव। पीचकारीनी छाड़ीयो पडे रंगरमे ॥
इनथे आई सब खालनी मोहनमें ।

हो मोहनमें रे मोहनमें—खेलनकुं फाग ॥ पीचकारी ॥ २ ॥
उनथे आये नंद लाडीले संग सखा ।

हो संग सखा रे संग सखा—आये जुथके जुथ ॥ पीचकारी ॥ ३ ॥
चौवारे चंदन अरगजा रंग घोयों ।

हो रंग घोयों रे रंग घोयों—केमरने कपूर ॥ पीचकारी ॥ ४ ॥

गधे गुलाल भरी हाथमें नाख्यो है ।

हो नाख्यो है रे नाख्यो है—मोहनजीकि मुख ॥पीचकारी॥५॥

मार पड़ी गुलालकी मोहन पर ।

हो मोहन पर रे मोहन पर—मब हो गये लाल ॥पीचकारी॥६॥

सखा ते सर्वे नासी गया गही लीधा ।

हो गही लीधा रे गही लीधा—नंदाजीके लाल ॥पीचकारी॥७॥

आंखो भरी रे अबीलमें गोविंदनी ।

हो गोविंदनी रे गोविंदनी—मुख मारे गुलाल॥पीचकारी॥८॥

बैमाने आव्या सब देवता आकाशे ।

हो आकाशे रे आकाशे—देखनके काज ॥ पीचकारी ॥९॥

फगुवो आलो तो छोटीये शामलीया ।

हो शामलीया रे शामलीया—भला आव्या छो हाथ ॥पीच॥१०॥

फगुवो आलीने छुटीया मोहनजी ।

हो मोहनजी रे मोहनजी—ब्रिजनारी ने हाथ ॥पीचकारी॥११॥

भक्त भवान प्रभु नाहेरी लीलानो ।

हो लीलानो रे लीलानो—ना आवे पार ॥ पीचकारी ॥१२॥

* ॥ होरी ॥ ५ ॥ *

होरी खेले रे होरी खेले । नंदाजीके लाल ।

संग सलुणी राधिका होरी खेले ॥ १ ॥

गौर वर्ण शोभे राधिका रंग भीन्यो ।

रंग भीन्यो रे रंग भीन्यो—श्यामलीयानो रंग ॥ संग॥२॥

चौवा रे चंदन अरगजा रंग रुडो ।

रंग रुडो रे रंग रुडो—केसर रंग संग ॥ संग ॥ ३ ॥
केसर भगी पीचकारीयां वहालो मारे ।

वहालो मारे रे वहालो मारे—हो नाकीने अंग ॥ संग ॥ ४ ॥
ताल मृदंग डफ खंजरी रुडा बाजे ।

रुडा बाजे रे रुडा बाजे—चंगने मरदंग ॥ संग ॥ ५ ॥
नरसेनो खामी मल्यो होगी खेले ।

होरी खेले रे होरी खेले—नाथ नवला रंग ॥ संग ॥ ६ ॥

* ॥ होरी ॥ ६ ॥ *

बेलु ना बोल गोवालीया तुने वारु ॥

हो तुने वारु रे तुने वारु—मुख संभागी बोल ॥ बेलु ना ॥ १ ॥
सरखी समाणी देखतां जाये छे ।

हो जाये छे रे जाये छे—हो हमारो तोल ॥ बेलु ना ॥ २ ॥
ख्याल पढे मारी खांतमां नारी माने ।

हो तारी माने रे नारी माने—कहानुडा कहेम ॥ बेलु ना ॥ ३ ॥
अल्या अर्बील ना भर मारी आँखमां रेलामे ।

हो रेलामे रे रेलामे—मोहनजी मैम ॥ बेलु ना ॥ ४ ॥
मारी लाख टकानी लोबडी कीधी कटका ।

हो कीधी कटकारे कीधी कटका—फाडीने वीस ॥ बेलु ॥ ५ ॥
चोलीने चुग कर्या मारी साथे ।

हो मारी साथे रे मारी साथे—तुने शु छे गीम ॥ बेलु ॥ ६ ॥
पेलां भाभीजी भाली ख्यां तेने पडमे ।

हो तेने पडमेरे तेने पडमे—बहु भांतनो भार ॥ बेलु ना ॥ ७ ॥

सासुने जईने सोंपमे हावे जामे ।

हो हावे जामे रे हावे जामे—अमारो अधिकार ॥ घेलुना ॥ ८ ॥
अल्या मोना कटारी बांधीये ना मराये ।

हो ना मराये रे ना मराये—पोनाने पेट ॥ घेलुना ॥ ९ ॥
लाडकवायो तारी मानने सांमा देखे ।

हो सांमा देखे रे सांमा देखे—दीयेहने जेठ ॥ घेलुना ॥ १० ॥
हुंतो मोधी घणी मारी मानने मामरामें ।

हो सासरामें रे मामरामें—बहला माम पराण ॥ घेलुना ॥ ११ ॥
मालुवा कसुंची फाटमे अमो करीसुं ।

हो अमो करीसुं रे अमो करीसुं—मारा तातने जान ॥ घे. ॥ १२ ॥
भुज साथे भुदर भीडमां तमे छांटो ।

हो नमे छांटो रे नमे छांटो—गिरधरजी गुलाल ॥ घेलुना ॥ १३ ॥
दरशनना दुनीयां थयां जाणे जडीया ।

हो जाणे जडीया रे जाणे जडीया—नंदजीना लाल ॥ घे. ॥ १४ ॥
ताणीने तोडी मारी चावस्त्री सुरे आवुं ।

हो सुरे आवुं रे सुरे आवुं—हरजी, नहारे हाथ ॥ घेलुना ॥ १५ ॥
नसैना स्वामी शामला नहीं स्मीये ।

हो नहीं स्मीये रे नहीं स्मीये—प्रभु ताहेरी माथ ॥ घेलुना ॥ १६ ॥

* ॥ होरी ॥ ७ ॥ *

हो अलबेली रे अलबेली । हो पानली पनीहार ॥

केसर गागर ले चली अलबेली ॥ १ ॥
कहाना उरपर हाथ ना नाखाये हार ढूटे ।

हार दूटे रे हार दूटे—हैया केरो हार ॥ केमर ॥ २ ॥
कहाना मन्क हाथ ना नाखीये माट फुटे ।

माट फुटे रे माट फुटे—हो मारु मही केरु माट ॥ केमर ॥ ३ ॥
कहाना बंसीवटना चोकमां से न रोके ।

मे न गेके रे मे न रोके—माहेलीनो माथ ॥ केमर ॥ ४ ॥
नग्मेयानो स्वामी मल्यो वाणी मागे ।

वाणी मागे रे वाणी मागे—मागे वैकुंठ वास ॥ केमर ॥ ५ ॥

॥ राग फेर ॥ होरी ॥ १ ॥

अनीहो रे होरी खेलन आये । ऐमे मोहनजीके साथ रे ॥ होरी ॥
इतथे आये श्याम मनोहर । उतथे गोवालनी जाय रे ॥ होरी ॥
जमुना के तट पर खेल मच्यो है । खेलन जदुषनिगय रे ॥ होरी ॥
सामा ते मामी मोरचो रे । इन रधा उन श्याम रे ॥ होरी ॥
बाजारे बाजे सोहामणा रे । झाँझ मृदंग और ताल रे ॥ होरी ॥
बेन बागे सोहामणी रे । बाजन ताल मृदंग रे ॥ होरी ॥
चौवा रे चंदन घोरीयो रे । तहां घोरे है केसुर रंग रे ॥ होरी ॥
अबील गुलाल उडावही रे । उडे कस्तुरीने कपूर रे ॥ होरी ॥
पीचकारीनी ब्रह्मियो पडे रे । बरषन मूमल धार रे ॥ होरी ॥
रेल चाली तहां रंगनी रे । तेणे भींजे गोपी गोवाल रे ॥ होरी ॥
अबील गुलाले आंधी भई रे । दीमत नाहि कोई रे ॥ होरी ॥
जीत भई सब ग्वालनकी रे । तहांतो हारे है शाम सखा रे ॥ होरी ॥

गोपीये गोवालने बेरी लीधा रे । धेयों छे कुंवर कन्हाई रे ॥ होरी ॥
 तहांतो मार मारे गुलालको रे । अबील मारे मुख मांहि रे ॥ होरी ॥
 वाजींत्र खुंचावी लीधा रे । खुंची लीधां छे अबील गुलाल रे ॥ होरी ॥
 मोरली पितांवर लीयो छीनाई । लीयो मुगट उनारी रे ॥ होरी ॥
 मखा ते सर्वे नामी गया रे । गही लीधा बन्ने वीरे रे ॥ होरी ॥
 हाथ बांध्या बेहु एकवा रे । बीजा बांध्या छे बल भद्र वीर रे ॥ होरी ॥
 अल्या नंद जशोदाने लाय बोलावी । ते तुजने छोडावे रे ॥ होरी ॥
 फगुवो आलो तो अबही छोडीये । नहीं तो राधेकुं लागो पाय रो ॥ होरी ॥
 मध दीनको मैं माटो वारुंगी । आज आव्यो छे हाथ रे ॥ होरी ॥
 मधुइ बचन बोले रे मोहनजी । तुमजीनी हम हारे रे ॥ होरी ॥
 तब ही श्यामने फगुवो मंगायो । दीयो ब्रिज नारीने हाथ रे ॥ होरी ॥
 फगुवो आलीने छुटीया रे । घणु हगव पामी ब्रिजनार रे ॥ होरी ॥
 अकल लीला प्रभु नाहरी रे । शुं जाणे नरसेयो दास रे ॥ होरी ॥

* ॥ होरी ॥ २ ॥ *

धुंम मची नंद द्वार रे । श्याम स्वेलन होरी ॥ टेक ॥
 धुंम मची सुध ना रही तनकी । धायल फिरन बेहाल रे ॥ श्याम ॥
 अपने रे अपने गृहमे निकसी । ले मोतीयन भर थाल रे ॥ श्याम ॥
 गोकुल गाँवकी मुधरी गुजरीयां । वाके मुखपर ढारे गुलाल रे ॥ श्याम ॥
 कैमरीयो वागो रे बन्यो है । ताके शिश्पर पच रंगी पाघ रे ॥ श्याम ॥
 चौबारे चंदन और अरगजा । सोंधे भीने बाल रे ॥ श्याम ॥
 कृष्ण जीवन लछीरामके प्यारे । जुग जुग कस्त विहार रे ॥ श्याम ॥

* ॥ होरी ॥ ३ ॥ *

आई मिली ब्रिजनार रे । होरी खेले कन्हैयो ॥ टेक ॥
 खेल मच्यो रुडो जमुना के नटपर । इत सधे उत श्याम रे ॥ होरी ॥
 आज फाग अनुगग भलो दिन । लोक लाज सब छोड रे ॥ होरी ॥
 चौधा रे चंदन कीच मच्यो है । तहाँ रंगकी चाली रेल रे ॥ होरी ॥
 भरी पीचकारी श्याम मनोहर । छिक्यो है गोपीको चीर रे ॥ होरी ॥
 भीज गई मब गोप तरुरी । राधे भई रंग रेरी रे ॥ होरी ॥
 मान करी नब धायो श्यामरो । धेर लई मब बाल रे ॥ होरी ॥
 गही पिनांवर रंगमें भीजायो । डार दीयो है गुलाल रे ॥ होरी ॥
 ताली रे दे दे गोवाल हमत है । बोलन मुखसें फाग रे ॥ होरी ॥
 फगुवो दीयो तुम चले रे जाई हो । नहीं तो रही हो गन विचार रे ॥
 सूरदास एसो खेल मच्यो है । फगुवो लीयो नंदलाल रे ॥ होरी ॥

* ॥ ग्वालन होरी ॥ १ ॥ *

हाँरे गोवालन खेलन आई ।

हाँरे तुम देखोने बलभद्र भाईरे । गोवालन खेलन आई ॥ टेक॥
 अपने र अपने गृहमे रे नीकसी । जमुना नटपर जाईरे ॥ गोवालन॥
 चौधारे चंदन और अगजा । केसर सु रंग मिलाई रे ॥ गोवालन॥
 उडत गुलाल लाल भयो बादल । अबीलकी धूम मचाई रे ॥ गोवा॥
 इतथे आये श्याम मनोहर । उनमें ग्वालन धेराई रे ॥ गोवालन॥
 दौरन दौरन पकड़ लीयो है । धेयो है कुंवर कन्हाई रे ॥ गोवालन॥
 फगुवा दीयो मेरे मोहन प्यारे । सब सखियन मिली जाई रे ॥ गोवा॥
 सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकुं । फगुवा दीयो घर जाई रे ॥ गोवा॥

* ॥ ग्वालन होरी ॥ २ ॥ *

आज होरी रे कनैया होरी रे । आयो फागुन माम स्वेलो होरी ॥
गृहे गृहे तें सब बनीन बनीना । नामें राधाजी सोहावेरी ॥ आज होरी ॥
चौवा रे चंदन और असगजा । केसर गागर भर होरी रे ॥ आज ॥
आज उडन गुलाल केसर रे । अबील लीयो भर झोरी रे ॥ आज ॥
मीरं कहे प्रभु निहारे मिलनकुं । फगुवा लेऊंगी भर झोरी रे ॥ आज ॥

* ॥ होरी राग फेर ॥ १ ॥ *

हो मेरी अली तट जमनाके तीर । गुलालकी मार पड़ी ॥
तहाँ स्वेले सुंदर शाम रे ॥ राधे रंग भरी ॥ टेक ॥
हो मेरी अली इन मोहन उन राधिका । बीच बीच स्वेले गोवाल राधे ।
हो मेरी अली मदन मोहनजीकी बांसुरी । श्रीराधेलीनी छीनाय राधे ।
हो मेरी अली हाँ रे मखा सब ग्वालके । फगुवा दोजु मंगाय राधे ।
हो मेरी अली सूरदाम प्रभु राधिका । सहु सखीयांमें शिरदार राधे ।

॥ होरी ॥ राग फेर ॥ १ ॥

आरे गोकुलके चहुट्ठे रंग राते गोवाल ॥
मन मोहन स्वेलन फाग । नयन सलुणी—रंग राते गोवाल ॥ टेक ॥
नस्नारी आनंद भरे । रंग राते ॥ शामके अनुराग ॥ नयन ॥
उमग्यो मानु गोपके ॥ रंग राते ॥ नहाँ कब्यो न मानत कोय ॥ नयन ॥
बाजत दुंदुभी दुंदुभी ॥ रंग राते ॥ नगर कुतुहल होय ॥ नयन ॥
ढफ बाजत सोहामणो ॥ रंग राते ॥ बाजत ताल मृदंग ॥ नयन ॥
झाँझा झालरी कीर्गरी ॥ रंग राते ॥ बाजे मुरज मुखंग ॥ नयन ॥

घम घम बाजत धुघरी ॥ रंग राते ॥ दृम दृम बाजत दोल ॥ नयन ॥
 रुमजुम नुपूर चाज ही ॥ रंग गते ॥ प्रमुदित करन कलोल ॥ नयन ॥
 ईत गोप मखा मंगे लीये ॥ रंग राते ॥ बल जाउ नंदकुमार ॥ नयन ॥
 उत युवती नव जोबना ॥ रंग राते ॥ अंबुज लोचन चारु ॥ नयन ॥
 केमर कुमुम निचोयके ॥ रंग राते ॥ भरन परस्पर आन ॥ नयन ॥
 चौवा रे चंदन कुम कुम ॥ रंग राते ॥ मलपनि कर दे सान ॥ नयन ॥
 कनक विचित्र पीचकारीयां ॥ रंग राते ॥ कर लीये गोकुलनाथ ॥ नयन ॥
 तकी तकी छोरके बदन पर ॥ रंग राते ॥ भींजे गधेकी माथ ॥ नयन ॥
 युवती जुथ मब उलट्ठो ॥ रंग राते ॥ गावत मदन विहार ॥ नयन ॥
 गारी देत मोहामणी ॥ रंग राते ॥ प्रमुदित गोपकी नार ॥ नयन ॥
 अबील गुलाल उडावही ॥ रंग राते ॥ बुका बदन भरपूर ॥ नयन ॥
 सुर विमान चढ़ी पेखही ॥ रंग राते ॥ देह दशा गई दूर ॥ नयन ॥
 श्री गधेजीये हेत करी ॥ रंग राते ॥ हरीसें स्वयो है विनोद ॥ नयन ॥
 मोहनके मंग खेल ही ॥ रंग राते ॥ उमण्यो मदन प्रमोद ॥ नयन ॥
 लीला लाल गोपालकी ॥ रंग राते ॥ पीकत कौन अधाय ॥ नयन ॥
 श्रीगधे मोहन मंग हो ॥ रंग राते ॥ जन कृष्णदास बल जाय ॥ नयन ॥

* ॥ काफी होगी ॥ २ ॥ *

शामरे मे कहीयो मोरी । कहीयो मोरी-मुनैयो मोरी ॥ शाम रे ॥ टेक ॥
 मधुरे बनमे उधवजी आये । सुनके मखी सब दोरी ॥ हरि हरि ॥
 कहे हमकुं नंदलाल मिलावो । नहींतो-लाला नहींतो दीयो विष घोरी ॥

करी रे कहा हमने चोरी ॥ शामरे से कहीयो मोरी ॥ १ ॥
 शिश नमाय चरण गही लीनो । कर बिनती कर जोरी ॥ हरि० ॥
 ऐसी चूकपरी कहा मोसे । प्रिन-लाला प्रिन पीछली मब नोरी ॥
 सुख नहि लीनी हमोरी ॥ शामरे से कहीयो मोरी ॥ २ ॥
 निश दिन व्याकुल फिरत राधिका । बिहव्यथा तन घेरी ॥ हरि० ॥
 श्यामा श्यामकुं दुदन कुंजनमें । शिश-लाला शिश जटा गृह छोरी ॥
 श्याम कहे हो रही होरी ॥ शामरे से कहीयो मोरी ॥ ३ ॥
 भूषण बसन सबे तजी दीनो । खान पान बिसर्योरी ॥ हरि० ॥
 भभूत लगाई जोगन होई बेठी । तेरो-लाला तेरोही ध्यान धर्योरी ॥
 हालु गल बिचमें शेली । शामरे से कहीयो मोरी ॥ ४ ॥
 आयो बमन कंथ घर नाहि । अबमैं कैसी करोरी ॥ हरि हरि ॥
 पीया बिना फाग आगसम जलके । तन-लाला तन मेगे जाय जर्योरी ॥
 कहो केमे खेलुंगी होरी ॥ शामरे से कहीयो मोरी ॥ ५ ॥
 सूरदास प्रभु जाईके कहीयो । अवध आश रही नोरी ॥ हरि हरि ॥
 प्राण दान दीजे नंदा नंदन । गावत-लाला गावत किस्ती तोरी ॥
 सूख तुम करीयो बहोरी ॥ शामरेमे कहीयो मोरी ॥ ६ ॥

* ॥ काफी होरी ॥ ३ ॥ *

शामरो अजहुं नही आयो । भलारे-शामरो अजहुं नही आयो ॥ टेक
 ब्रिज-बिनताको भंग छोडके । मधु बन जाई बसायो ॥ हरि हरि ॥
 दामी करी पटरणी जायके । गोपीनाथे-गोपीनाथको नाम लजायो ॥
 कंथ कुवजाको कहायो ॥ शामरो अजहु नही आयो ॥ १ ॥

तलखत छोरी ब्रिजमें गधिका । कृष्ण द्वारिकामें आयो ॥ हरि० ॥
 कहारे कहुं हम है विमवासी । दासी-लाला दासीने चिन चोरायो ॥
 गरल वाङुं धोग पीलायो ॥ शामरो अजहुं नहीं आयो ॥ ३ ॥
 कुर अकुर कहांसे रे आयो । घरघर होरी जलायो ॥ हरि हरि० ॥
 एकतो होरी जलन छतीयनमें । सुपने-लाला सुपनेमें सुख नहीं पायो ॥
 बेरी कहांसे फागुन आयो ॥ शामरो अजहुं नहीं आयो ॥ ४ ॥
 लिख लिख पतीयां रे छतीयां जलत है । ओधवकुं विष्टिपठायो ॥ हरि० ॥
 विरहव्यथा मोकुं अधिक मंतापे । कुवरी-लाला कुबरीके मन अनि भायो
 धिरज नहीं जान धरायो ॥ शामरा अजहुं नहीं आयो ॥ ४ ॥
 बेदरदी मेरो दरद न जाने । कामीका जौर जनायो ॥ हरि० ॥
 सूखदाम अबलाकी रे चिनती । करत है—लाला करन है मनको भायो ॥
 जले पे तो लुन लगायो ॥ शामरो अज हुं नहीं आयो ॥ ५ ॥

* ॥ काफी होरी ॥ ४ ॥ *

ब्रिजमें वहाले होरी मचाई । मचाई रे—ब्रिजमें वहाले होरी मचाई ॥
 ईनसें आई सुघड गधिका । उतसे कुंवर कन्हाई ॥
 हरि हरि लाला—उनसे कुंवर कन्हाई ॥
 दोनु मिलके खेलत है परस्पर । मोभा—लाला मोभा वरनी न जाई ॥
 नंद चेर वसन धधाई । ब्रिजमें वहाले होरी मचाई ॥ १ ॥
 बाजत नाल मृदंग झाँझ डफ । भेरी शब्द सुनाई ॥—
 हरि हरि लाला—भेरी शब्द सुनाई ॥
 उडत अबील अरगजा केसर । सब ब्रिज जोनेकुं धाई ॥
 मानु मधवा झरी लाई । ब्रिजमें वहाले होरी मचाई ॥ २ ॥

राखेने मान कीयो मखियनकुं । झुंड झुंड उठी धाई ॥ -

हरि हरि लाला-झुंड झुंड उठी धाई ॥ -

लपट लपटके गही रे शामकुं । पगीयां-लाला पगीयां छिन छिन लाई ॥

लालनकुं तो नाच नचाई । ब्रिजमें बहाले होरी मचाई ॥ ३ ॥

छीन लीयो है पीतांबर मुख्ली । शिरपर चुनरी ओढ़ाई ॥

- हरि हरि लाला-शिरपर चुनरी ओढ़ाई ॥

दोनो नयनमें भर्यो है रे काजल । नाके-लाला नाकमें नथ पहेनाई ॥

मानु नवी नागी बनाई । ब्रिजमें बहाले होरी मचाई ॥ ४ ॥

सूम कहन मुख मोर हसन है । कांहांरे गई चतुराई ॥ -

- हरि हरि लाला-कांहांरे गई चतुराई ॥

पिना तुम्हारे कहांरे गये है । कहां गई-लाला कहां गई जशोंमति माई ।

लालनकुं तो लेन ओढ़ाई । ब्रिजमें बहाले होरी मचाई ॥ ५ ॥

फगुवा लीये बिन जाने न देउंगी । करो तुम कोटि उपाई ॥ -

- हरि हरि लाला-करो तुम कोटि उपाई ॥

सब दिनकीमें तो कमर लउंगी । दधि मावन (२)चोर चोर खाई ॥

निर्लज तोकुं लाज न आई । ब्रिजमें बहाले होरी मचाई ॥ ६ ॥

प्रान भयो फगुवा दीया बिना । गोपी संग जदुराई ॥ -

- हरि हरि लाला-गोपी संग जदुराई ॥

मूरके श्याम प्रभु अब कहां जावो । आई लाला आई मिली ब्रिजनारी

पितांबर लीयो है उतागी । ब्रिजमें बहाले होरी मचाई ॥ ७ ॥

* ॥ काफी होगी ॥ ५ ॥ *

शामरा मत मारो पीचकारी । लड़ेंगी मान हमारी ॥ शामरा ॥ टेक॥
 मत मारो मुरजादासें रहियो । मैं हुं कन्या कुंवारी ॥ हरि हरि० ॥
 तुम हो निग्लज हम नहीं ऐसी । दऊंगी—लाला दउंगी मुखमें गारी ॥
 फजेनी तो होयगी तुम्हारी ॥ शामरा मत मारो पीचकारी ॥ १ ॥
 ऐसी जो होंस होय हैयामें । तो पणो ने नौतम नारी ॥ हरि हरि० ॥
 जाके पठावो जशोदा मैयाकुं । अजहुं—लाला अजहुं में बाल कुमारी ॥
 दुंदत वर मान हमारी ॥ शामरा मत मारो पीचकारी ॥ २ ॥
 परनारीको पाल्य एकड़यो । मोहन मन ना विचारी ॥ हरि हरि० ॥
 मान नात मेरे वृद्ध भये हैं । राज—लाला गज कंसको भारी ॥
 कहु तोकुं सब विस्तारी ॥ शामरा मत मारो पीचकारी ॥ ३ ॥
 खेंच पकर मेरी नवल चुनरीया । जीवन जोसें फारी ॥ हरि हरि० ॥
 सूरदास प्रभु अब कहां जावो । बोलन—लाला बोलन ब्रिजकी नारी॥
 पिनांवर लउंगी उतारी ॥ शामरा मत मारो पीचकारी ॥ ४ ॥

* ॥ काफी होगी ॥ ६ ॥ *

शांवरे रंग डारी हो डारी ।

सहज सुभाव जानि जमुनाकुं । पहरके जरकमी मारी ॥ हरि हरि० ॥
 वहुरे ठाढे कदमकी छंहीयां । कर ही कनक पीचकारी ॥
 लाल मेरे मनमुख डारी ॥ शांवरे रंग डारी हो डारी ॥ १ ॥
 मासु बुरी घर ननदी हठीली । झुकी झुकी दे मोहि गारी ॥
 मेरन आंशु चुवावे माथीरी । उनकी—रीनि है न्यारी ॥
 मोहि डर लागत भारी । शांवरे रंग डारी हो डारी ॥ २ ॥

अबील गुलाल मेरे मुख ढारत । तनक न सकत विचारी ॥
नवलदास एही अचग्ज होगी । आप ही—ढीठ बिहारी ॥
लाल चितवनी परवारी ॥ शांवरे रंग ढारी हो ढारी ॥३॥

* ॥ काफी होरी ॥ ७ ॥ *

राधीका चली खेलन होरी ॥
कर मींगार नखमीख ते बनीता । सकलभई एक ठोरी ॥
हरि हरि ॥ लाला सकलभई एक ठोरी ॥
लै लै अबील गुलाल फेटमे । फागको छठ कमोरी ॥
चली सब मील के गौरी ॥ राधीका चली खेलन होरी ॥टेक॥
कंचन हाथ लीये पीचकारी । केसर रंग कमोरी ॥हरि हरि ० (२)॥
बृंदावनहिं चली सब मीलके । कोई साम कोई गोरी ॥
बैसकीहैं सब थोरी ॥ राधीका ॥ १ ॥
नंदसुवन तिहिं अवसर आये । लै गुलाल भर झोरी ॥हरि ० (२)॥
देव सखी वृजराज कुंवरको । वृजवनीता सब दौरी ॥
सामको पकर लीयोरी ॥ राधीका ॥ २ ॥
कोउ कर पकर कहन मोहन सों । बहुत करी दधि चोरी । हरि ० (२)
रंगी लाल कोउ गुलचा मारे । कोउ हमे मुखमोरी ॥
हसन वृषभान कीसोरी ॥ राधीका ॥ ३ ॥

* ॥ काफी होरी ॥ ८ ॥ *

राघोजी रंग खेलन होरी ॥
ईन ग्युनाथ अनुज संग लीने । उन मिथिलेश किशोरी ॥
केसर कीच मच्यो छन उपर । रंग बरसे चहुं औरी ॥

चलो सखी देखन गौरी । रघोजी रंग खेलन होरी ॥१॥
 मुख मोढ़ मीया जनक नंदनी । चंद धदन से रोरी ॥
 गिंग ब्रिज दृग आंज लालकी । लीयो है—पीन पट छोरी ॥
 करी सब सुध बुध भोरी । रघोजी रंग खेलन होरी ॥२॥
 फगुवा दीयो सबके मन भावत । गडे हो जुगल किशोरी ॥
 बंदन करन सकल जुग बंदत । चंदन भाल लख्योरी ॥
 हसी सखी सब मन मोरी । रघोजी रंग खेलन होरी ॥३॥
 राम जानकी ध्यान बसोरी । गौर श्याम रंग जोरी ॥
 तुलसीदाम बल बल दंपती पर । निरखी—दृगन तन तोरी ॥
 दृगन ते छिन छन गेरी । रघोजी रंग खेलन होरी ॥४॥
 ॥ दोहा ॥ (होरी)

निजनिज मंदीर गोपीका । दृपन शब्द सुन कान ॥
 गुरुजन भय संकोच बम । सोचत मन अकुलान ॥१॥
 नवल सहेली संगले । मनमें अति अनुराग ॥
 कीरन जा खेलन चली । नँद नन्दन ते फाग ॥२॥
 वृदावन धन मधनमें । चली सकल वृजबाल ॥
 रंग कमोरी कर लीये । झोरी भयों गुलाल ॥३॥
 उडन रंग धनसम गगन । घरखन ज्यां बौछार ॥
 नंदलाल वृज बधुनमें । होय परस्पर मार ॥४॥
 लीपट झपट कट गिरन कोउ । कोउ फीरन उठ सँभार ॥
 कोउ गुलाल ले मुख मलन । कोउ देत रंग ढार ॥५॥
 या बीधी होरी मचि स्ही । श्रीवृदावन बीच ॥
 और ठौर देखन लगी । रंग गुलाल की कीच ॥६॥

अथ श्री रंग रसीयो

रंग रसीयो ते होरी स्वेल्वा रे । नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहां बोलावे ब्रिजनार । जुमनाना तीरमां रे नंदलाल कुंवर हो ॥
 सहियर सहु थोले मली रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 मांहि प्यारी राधे मिरदार ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल कुंवर हो ॥१॥
 श्याम मखा तेडावीया रे । नंदलाल कुंवर हो ॥
 कीधो समवाने उलट अंग ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥ २ ॥
 सा'मा ते सा'मी मोस्चो रे । नंदलाल कुंवर हों ॥
 तहां खेल मच्यो अनि रंग ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३॥
 ताल बगाडे तारणी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 गावे सुंदर गग बर्मन ॥ जुमनाना तीरमा रे नंदलाल ॥४॥
 नामा ते लेई लेई नारीयोरे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहां गोविंदना गुण गाय ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥५॥
 ताल मृदंग डफ खंजुरी ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहां बागे वेण स्माल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल कुंवर हो ॥६॥
 कुल दडो ते लेई हाथमां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 धाया मद भरीया रे गोवाल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥७॥

अबील गुलालना पोटला रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 उडे कस्तुगीने कपूर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥१॥
 एवुं धुंध थयुं रे ब्रह्मांडमां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तेण झांखा थया रे मुग्भाण ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२॥
 पीचकारीनी बड़ीयो पडे रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 जाणे अषाढ़ो रे वरषाद ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३॥
 केमर कुम कुम धोरीयो रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 भीज्यो रंग रसीयानो माथ ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४॥
 केमर धोर्योने रंगनो ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहाँ चाली रंगनी रेल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥५॥
 शाम सखा रसबस थया रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 एहवी प्यारे गधेनी रे साथ ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥६॥
 गोपीये गोवालाने गही लीधा रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 रंग गेलीने कीधा ल्याल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥७॥
 वाजिंत्र खुंचावी लोधां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 खुंची लीधां अबील गुलाल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥८॥
 एवुं जोर वांछुं ब्रिजनास्नु रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 गई गोवालनी धीर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥९॥
 साथीने महु नासी गथा रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 वेरी लीधा ते बने वीर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥१०॥
 चोपामे चोमर बांधीया रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 गही बांध्या बने वीर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥११॥

ब्रिज विनताने वश थया रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 जुवो क्येटि ब्रह्मांडनो नाथ ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥१९॥
 फगुबो आलो तो छोड़ीये रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 नहीं तो गधे ने लागो पाय ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२०॥
 अमथा ते केम छुटमो रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 आज गमतुं अमारु थाय ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२१॥
 धणे रे दहाडे आव्याहाथमां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 आज करीये अमारो भाव ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२२॥
 दाणने काजे गैकता रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 आज हाथ चब्बा कहाँ जाव ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२३॥
 जल जुमनामें झीलतां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 चोगी लीधां हमारा चौर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२४॥
 कर गस्तां अमो कामनी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 अमो जलमां उघाडे शरीर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२५॥
 मुगट कुंडल उनारी लीधां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 गुंथी तेल भरीने रे बेण ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२६॥
 मेंथो पुयों सिंदुरनो रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 काँई काजल सायाँ नेन ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२७॥
 चोरी पहेरावी रे चुंडी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 कुम कुमनी कीधी आड ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२८॥
 हाथनां पौचा पहेरावीयां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 चोखलीया चोहोञ्चारे ललाट ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥२९॥

मोल शणगार पहेगवीया रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 जुवो जुवो कन्याना रूप ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३०॥
 मुगट कुंडल राखेने धर्या रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 नारी कीधी ते कृष्ण स्वरूप ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३१॥
 हरि हलधर तहाँ जोई ग्या रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहाँ कोईनु न चाले रे जोर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३२॥
 एवुं कौतक कीधुकामनी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 प्यारी कीधी ते कृष्ण स्वरूप ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३३॥
 वर कन्या पणावीये रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 मखी महु मली कीधो रे विचार ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३४॥
 नंद जशोदानी बेटडी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 वरसे भ्रगुभान दुलार ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३५॥
 एवांलगन उगव्यां वसंतना रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 एवो वनमां कीधो रे विलास ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३६॥
 मंडपमां पधगवीया रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहाँ फुलनी आरोपी वरमाल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३७॥
 छेडाते गांडन गांडीयां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 सामां मामी ते छांटे अबील ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३८॥
 ताल वगाडे तारुणी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 वर कन्या ते रंक अकोर ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥३९॥
 तहाँ समेवरते सावधान रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहाँ मंगल वरत्या चार ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४०॥

तहां वेद विधि ब्रह्मा भणे रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
तहां फगुनानो जमे रे कंसार ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४१॥

* ॥ धोळ ॥ *

हांजी तमो मात सोहागण आधो रे ।
हांजी तमो खांधे धोननीयो मोवराओ रे ॥
हांजी तमो वर कन्याने वधावो रे ।
हांजी तमो अखंड आशिष दोनी रे ॥
हांजी तमो मात सोपारीयो ल्योनी रे ।
हांजी तमो मदा सौभाग्यवंती कहोनी रे ॥
हांजी तमो वर कन्या परणीने उद्धां रे ।
हांजी तमो दधि धृत गोरस लूब्धां रे ॥

* ॥ दाळ ॥ *

एवं कौतुक जोवानेदेवता रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
आव्या बेमीने रे विमान ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४२॥
तहां फुलोनी वरण करे रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
तहां सुरनर करे नहाना रंग ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४३॥
एक सखी तहां संचरी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
चाली आवी ते नंद भुवन ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४४॥
बेठां तहां रे जशोमती रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
बाई जुओ रे तमारा जीवन ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४५॥
जशोदा तमारे संपन नहीं रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
वर मलीयो ते तांहां जोग ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४६॥

जशोदा तमारे बेटडी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 अमें दीधु ते कन्या दान ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४७॥
 त्यारे विसमय ते पाम्या जशोमनी रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 जोयां जोयां रे कुंवरना काम ॥ जुमनानातीरमां रे नंदलाल ॥४८॥
 जशोदा ते मायुं जोई ख्यां रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 लज्जा पाम्या ते घणु लाल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥४९॥
 कन्या रूप बनायुं छे रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 जुवे छे जशोदा रे मान ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥५०॥
 कगुवो ते ल्यो रे मन भावतो रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 मुक्रो मुक्रो कुंवरनो ख्याल ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥५१॥
 कगुवो आलीने छोडावीया रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 घणुं हस्त पामी ब्रिज नार ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥५२॥
 काले ते समवाने आवजो रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 कहेछे महु सुंदरीनो रे साथ ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥५३॥
 वसंत लीला रंग जोईने रे ॥ नंदलाल कुंवर हो ॥
 तहां नरमैयो बल जाय ॥ जुमनाना तीरमां रे नंदलाल ॥५४॥

॥ इनि श्री रंग गमीयो मंपूर्ण ॥

* ॥ इनि श्री वसंत क़तुना कीरतन मंपूर्ण ॥ *

बहुत स्वीजायो वृजबधुन । गही कर श्रीवृजगज ॥
 तबही स्याम चट शपटके । गयो सबन ते भाज ॥ ७ ॥
 होरी देखन सुर बधु । मनमें अति हस्ताय ॥
 बैठी बैठी आकासमें । गही पुष्प वस्ताय ॥ ८ ॥

* ॥ अथ श्री हिंदोलाना कीरतन ॥ *

॥ दोहा ॥ (हिंदोलाना)

हरि हिंदोले जीवणा । विमार्यो मध्वले माथ ॥
 कृग मई ग्युनाथकी । जब सनगुरु पकडे हाथ ॥ १ ॥
 वर्षा पर ब्रय नामनी । सदा होत अखंड ॥
 गुरु कृपाथी जीवणा । बादल भये सब संन ॥ २ ॥
 श्रीसमगती वरसा लगी । वृन्दा विपिन बहार ॥
 घन गरजत उमड़न घटा । दामिनी दमक अगर ॥ ३ ॥
 स्त्र्यो हिंदोरो नंदगृह । सुमुहूर्त सुभघरी देखी ॥
 विश्वकर्मा रुची च्यो । हाटक ग्ल विमेखी ॥ ४ ॥
 मोह सहस्र वृजसुंदरी । निरखी साम सुबाँहि ॥
 अति आनंद मो हलमिकें । जुवनी जन हिलिमिलिगाँहि ॥ ५ ॥
 रुक्म झुनक नूपुर बजें । कटि किंकनी झनकार ॥
 परम चतुर बनवारि ही । झुल्कनि सुंदरी नारि ॥ ६ ॥

* ॥ गग-मामेरी ॥ १ ॥ *

सजनी आ मोभा रुडी । शामलीयोने शामाजोडी ॥
 तेनो हरखे हिंदोले हींचे रे । वहालो प्रेमे महागम मिंचे ॥ टेका ॥
 एक रूप रमालु गाय रे । एक वेण मधुगी वाहे रे ॥
 धुमरडी ने घाले गोषी रे । मरयादा मध्वली लोषी ॥ सजनी ॥ १ ॥
 पाली पलवट सुंदर सोहे रे । तेणे तेजे त्रिभुवन मोहे रे ॥
 वहालो कंउ बांहलडी देतो रे । आलिंगन वालीने लेनो ॥ म० ॥ २ ॥

तहां वाजां विविध पेर वागे रे । तहां मेघ घया धन गाजे रे ॥
 लीलां पीलां ते अंबर झलके रे । नाचनां नेपूर खलके ॥मजनी॥३॥
 श्यामा मजीरे सकल शणगार रे । उर लहेके मुक्ता हार रे ॥
 जोवनमें ते जुवनी माती रे । तेनो मधुरे मधुरे स्वरे गाती रे॥४॥
 गोपीवर केलि करावे रे । जमुना नट सुंदर भावे रे ॥
 तहां मोर कोकीला बोले रे । जोनां नही एने तोछे ॥म०॥५॥
 बृंदावन विलमे नाथ रे । तहां मोहा छे सुरनर साथ रे ॥
 ब्रह्मादिक भेद न जाणे रे । तेनो निशदिन गोपी माणे ॥म०॥६॥
 नरसंया ते केरी वाणी रे । कृष्ण आपी ते करुणा आणी रे ॥
 बहाले पोन पोताना कीधां रे । महारममें नाणी लीधां ॥स० ॥७॥

* ॥ सामेरी ॥ २ ॥ *

मजनी जुबो नाथ निहाली । वहालो वाहे छे बेणभसाली ॥
 बुमरडी ते हलवे धाले रे । सुख मागर मोहन महाले ॥टेक ॥
 शिर मुगट महामणि मार रे । काने कुँडल जोत अपार रे ॥
 वन माला ते उर पर लहेके रे । तेम चौवा रे चंदन बहेके ॥ १ ॥
 शामलडी ते मोहीये संगे रे । अनि उलट वाढ्यो अंगे रे ॥
 वहालो हमी हसी रुद्या भीडे रे । मानुनीयाचा मनमथ पीडे ॥२॥
 श्यामा मर्वे ते सनमुख उभी रे । शणगार सकल श्यामा सोभी रे ॥
 वहालो सान करी करी जुवे रे । जुवनी जनना मन मोहे ॥ ३ ॥
 ताली ताल पखाव बुधरडी रे । आगल नाचे छे नारी रुडी रे ॥
 उमंग्यो गम कौतक भारी रे । आनंदे अबला चाली ॥ ४ ॥
 बुमरडी ते धाले लांबी रे । पाये खलके छे कलांने कांवीरे ॥

तेहने नादे ते नेपूर वागे रे । पम्छंदे धग धुम गाजे ॥ ५ ॥
 वहालो मरकडलां करी बोले रे । तेम आवीने हिंदोले रे ॥
 वहालाने वहालेरी लागे रे । मान मुकी घणुं पाये लागे ॥ ६ ॥
 नरसैयोते रमां मातो रे । गोपीधरचा गुण गातो रे ॥
 तेनो पाम्यो महा फल मोटुं रे । हुंतो चरण रेणुमां लोटूं ॥ ७ ॥

* ॥ सामेरी ॥ ३ ॥ *

सजनी झरमर झरमर वर्षे । तहां नाथने नारी विलसे ॥
 लपटाणां ते अंबर अंगे रे । धुमरडी ते बाधी रंगे ॥ टेक ॥
 अबलाये अंबोडो वाल्यो रे । उर अंबर अंतर दाल्यो रे ॥
 चतुरनी ते चोली चमके रे । नाके वेसर मोती झलके ॥ सजनी ॥ १ ॥
 तेम वादे ते विज झबुके रे । मध्ये मोर कोकीला टहुके रे ॥
 वासलडी ते वहालो वाहेरे । तेम नाचे ने गोपीगाये ॥ सजनी ॥ २ ॥
 कामा काम घहेलडी ढोले रे । मनमोहनसु हसी बोलेरे ॥
 गोफणले धुघरडी घमके रे । ताली देनां ते काकण खलके ॥ स. ॥ ३ ॥
 हींचे हिंदोलो वनमाली रे । वार वार वारणा ले वाली रे ॥
 वाल्या कंठे ते मुक्ताहार रे । मोहा मचके ने नंदकुमार ॥ म० ॥ ४ ॥
 एक उभी नाथ निहाले रे । एक चालीने चमर ढोलावे रे ॥
 एक फुली ते अंगे ना माय रे । एक भीडी ने रुदया माँहे ॥ स० ॥ ५ ॥
 करे देव दुंदुभी नाद रे । श्रवणे सुणी शामनो साद रे ॥
 करे पुष्प ते वृष्टि अपार । मुख बोले जय जयकार ॥ स० ॥ ६ ॥
 नरसैयो ते प्रेम भरणो रे । श्यामा सरवेमां सपडाणो रे ॥
 लिला जोतां तृपतना थाय रे । नाल लेईने पुढे गाय ॥ सजनी ॥ ७ ॥

* ॥ सामेगी ॥ ४ ॥ *

सजनी बांसलडी चालो । गधा गोरीने कहानडो कालो ॥
 तेहने नयना भरीने निहालो । सोहे सरद पुनम स्त्रीयालो ॥ टेक॥
 लपटाणा ते अंबर अंगे रे । मन मोहन वाध्यो रंगे रे ॥
 भुज भीड़ीने भासिनी चाले रे । श्यामा सधल बुमरडी घोले ॥ १ ॥
 लालां पीलां ते अंबर झलके रे । मुख जोता ते मोहन हम्बे रे ॥
 शिथ सोहे राखलडी रुडी रे । तहाँ फरके फुमनडां जोडी ॥ २ ॥
 एम दीमे ते नंदकुमार रे । प्रेमदाना ते प्राण आधार रे ॥
 एहेनी दृष्टि ते मोहन वेली । प्रेमे बांधी छे रंगनी रेली ॥ ३ ॥
 बृंदावन फुल्यु अपार रे । नहाँ पमर्यों प्रेम साल रे ॥
 तहाँ त्रिविधी पवन अनिवाये । घन गरजे ने घटा थाये ॥ ४ ॥
 बुधरडी ते घमके पाये रे । मांहे नेपूर नाद सोहाये रे ॥
 गोपी करती प्रधुरु गान रे । कोनी ना रही सुधने सान ॥ ५ ॥
 कंठे बांह परम्पर घाले रे । सुखे श्यामा ते मोहन महाले रे ॥
 ए सोभाते कही नव जाये रे । वश कीधा ते वैकुंथाय ॥ ६ ॥
 कृष्ण कामनीये उम लीधो रे । प्रभा प्रेम प्रवल सम पीधो रे ॥
 नरसेनो मनोमथ मिधो रे । लिला जोई कृतारथ कीधो ॥ ७ ॥

* ॥ सामेगी ॥ ५ ॥ *

मजनी चालो रे जमुना । बृंदावन केलि करें कहाना ॥ टेक॥
 हिंदोले बांधी हीर दोरी रे । शामलीयोने श्यामा जोडी रे ॥
 हिंदोले बेहुजन बेटां रे । हुल्मावे सखी सहु हेडां ॥ १ ॥
 बुमरडीते घाले नारी रे । वच्चे वच्चे ते लाल विहारी रे ॥

भुज गही अंगो अंग भीडे रे । मानुनीयाचा मनमथ पीडे ॥२॥
 रंगे रूप रमालु गाय रे । वच्चे वेण मधुगी वाहे रे ॥
 तहां ताल मृदंग झड लागी रे । तहां गमण रमे बड भागी ॥३॥
 तहां लिला लहेर लट लागी रे । झुले बेहु प्रेम सोहागी रे ॥
 ए सोभा ते वर्णी ना जाये । कंठ लागी अधर रम पाये ॥४॥
 एहवुं पुलीन पवित्र सोहावे रे । मली नंदा नंदने झुलावे रे ॥
 एहनी लिला सकल जन गचे । तहां नर्मैयो नित नित नाचे ॥५॥

॥ राग कालेरो ॥१॥

(मोर मुगटने करमां मोग्ली ए गग)

परम चतुर झुले मारो वहालो । शामाजीनी संगे रे ॥
 सीवरणकु अंगो अंगनी रे सोभा । वारूने कोटि अनंग रे ॥टेक॥
 श्रावण मास पर्म सुख कागी । द्वारमर वरमे मेह रे ॥
 दादुर मोर बपैया रे बोले । उपजे अनि मनेह रे ॥परम॥१॥
 मैं दीदु एक कौतक सजनी । हिंचनां हरि हमीया रे ॥
 श्यामा सनमुख दृष्टि करीने । पीछां ने बेहु हमीयां रे ॥परम॥२॥
 श्याम सुभग नन गधा गोगी । सुरंगे हिंडोले झुले रे ॥
 जम जम धुमणी धाले सजनी । नम नम नर्मैयो फुले रो ॥परम॥३॥

* ॥ कालेरो ॥ २ ॥ *

हिंडोले झुले रे गोवालो । जमुनाजीने आरे रे ॥
 सांभल सजनी क्यम रहेवाये । सामु नणदी बेहु वारे रे ॥टेक॥
 पाढोसण परण्याने सांथे । वात न राखे छांनी रे ॥
 कांनुडे कांई कामण कीधुं । हुं छुं अबला बाली रे ॥ हिंडोले ॥

अंबा रे डाले हिंदोलो रे बांध्यो । झुले ते सहीयर समाणी रे ॥
जय जयकार करे महु उभा । थाये आकासे वाणी रे ॥हिं०॥
धन वृंदावन धन जमुना नट । धन जे हरि गुण गाय रे ॥
भणे नर्सेयो झुले ए समां । ते फरी गर्भवास नाथाये रे ॥हिं०॥

* ॥ कालेग ॥ ३ ॥ *

हिंदोले झुले नंदानंदन । संग भ्रमुभान कुमारी रे ॥
नव जोबनन नवले रंगे । नवल नवल ब्रिजनारी रे ॥टेक॥
नवल वृषा अति सुंदर दीसे । जगमर वर्षे मेह रे ॥
नवल श्यामा धन दामिनी चमके । नवरंग वाध्यो नेह रे ॥हिंदोले॥
नवल हिंदोले नव रंग मोनी । नवल आभूषण अंगे रे ॥
सुकल सणगार मजी मृगनयनी । नवल चोली नवल अंगे रे ॥हिं०॥
नवल वृंदावन नवतम लिला । नवल गोपी हरि पासे रे ॥
भणे नर्सेयो ए सम मुकी । सुं करीये वैकुंठ वास रे ॥हिं०॥

* ॥ कालेग ॥ ४ ॥ *

नहानारे सरखा नाथ रमे रे । पलघेटडीने रुद्धी रे ॥
हिंदोले हिचवाने खांते । आवीते अबला बाली रे ॥ टेक ॥
तडीने शामलीया मरमी । बेमाडो ब्रिज बाली रे ॥ नाहना ॥
हमे रमे हिंदोले हिंचे । नारुणी लेनी ताली रे ॥
छमकलडां वाये छे छांना । मरकडलां ल बाली रे ॥ नाहना ॥२॥
गीझी मन मनावे मोहन । घोलीने घावलीयाली रे ॥
पुरुषोत्तम संतोष्या प्रेमे । हिंची हिंचीने दराई रे ॥ नहाना ॥३॥
नर्सेयाना स्वामा वाद वदो छो । वहाणे स्मसुं कन्हाई रे ॥

॥ साखी ॥ दोहा ॥

अपने अपने भुवनसें । कर करके सणगार ॥
 तन सागी रंग रंग की । वैसी देत बहार ॥ १ ॥
 उमर बुमर बादल सखी । छाय रही चहु और ॥
 कागी घटा डगबनी । कोयल कर रही सौर ॥ २ ॥
 पर्यैया पीयु पीयु कर रहे । बेग आमकी डार ॥
 केही फुलवारी खीली । देखो बाग बहार ॥ ३ ॥
 चलो सखी बागन चले । सखीयनको सुख देव ॥
 हरी हरी भोम सोहावनी । बरसन लाघो मेव ॥ ४ ॥

॥ वर्षाक्रिङ्गु वर्णन ॥ पद १

देखो सखी चहुं दिसि तें । झर लायौ ॥
 श्याम घया जु उठी चहुं दिसितें । दामिनी अंबर छायौ ॥
 रमकी बुंद परनि धरनी पर । ब्रज-जन प्रेम बढ़ायौ ॥
 'कुंभनदास', प्रभु गोवर्धन-धर । रग मलार जमायौ ॥

॥ प्रीयाजी वचन ॥

हे महागज आज तो या श्री वृदानमें चडो आनंद वहे रहो है
 आपकी इच्छा होवे तो चले ललत कदंब तर हिंदोला झुले ।

॥ दोहा ॥

प्यारी के सुनिके वचन । उठे लालजी हरखाय ॥
 तुम कदंबकी ढारमें । जुला दीयो डराय ॥

॥ पद १ रग मलार फेर ॥

चलोरी पीया वाही कदम पर जुले ।

झुकी रही लता अनी सघन प्रफुल्लीन । कालीन्द्रीके कुले ॥टेक॥
बोलन मोर चकोर कोकीला । अली गुंजन मन कुले ॥ चलोरी ॥
लल्लीन किसोरी मग बतलावनी । करी करी बतीयां भूले ॥ चलोरी ॥

॥ पद २ ॥

युगलबर झुलन है गलबाँही ॥

बादल बरमे चपला चंमके । सघन कदंबकी छाँही ॥
इन उन पेंग बढ़ावन सुंदरी । मदन उमंग मन माँही ॥
लल्लीन किसोरी हिंडोला झुले । बढ़ यमुना लों जाँही ॥

* ॥ गग मलार हिंडोला ॥ १ ॥ *

झुलत नंदकीशोर—हिंडोले । झुलन नंद किशोर ॥
ख जड़ीन हिंडोलो रे सोहे । ब्रखुभान नंदकी जोड ॥ टेक ॥
कंवन के दोउ भूषण सुंदर । दाँड़ी परम अमूल ॥
फटुली ख जड़ीन जरावकी । चुनी जड़ीन चहु और ॥ हिं० ॥ १ ॥
करी घटा घनदामिनी चमके । नभ गाजन घनघोर ॥
हंस मोर कोकीला रे बोले । माग्म सोग सोर ॥ हिं० ॥ २ ॥
मोर मुगट पीतांबर पहेरे । मोरली अधर घन धोर ॥
कमल नयन किशोरकी मूरती । ब्रिज जनको चिन चोर ॥ हिं० ॥ ३ ॥
मुक तुलके तकीया बिराजे । बीछोना चहु और ॥
निरखी अनंग लजीन भयो है । श्याम श्यामजीकी जोर ॥ हिं० ॥ ४ ॥
मिली परस्पर झुले झुलावन । भामिनी मिली चहुं और ॥
सूरदास प्रभु निरखी थकीन भये । नयन टन नहीं मोर ॥ हिं० ॥ ५ ॥

* ॥ २ ॥ *

झुल्न है नंदलाल-हिंदोले । झुल्न है नंदलाल ॥
 मोर मुगट पीतांबर पहरे । उर वैजंती माल ॥ टेक ॥
 कंचनके दोउ खंभ बिगजीन । दांडी है चार बिशाल ॥
 पटुलि परम धन मारकी सोहे । जहाँ रब जडीन अपार ॥ हिं० ॥ १ ॥
 ईन ही पीन पीतांबर मोहे । उनही निलाम्बर मारी ॥
 श्यामा श्याम मिली दोउ झुल्न है । बढ्यो मुख सिंधु अपार ॥ हिं० ॥ २ ॥
 आसपास विनोद होत है । जहाँ झुल्न प्यारी लाल ॥
 आमपास मिली देन है श्वेका । गावन राग म'लार ॥ हिं० ॥ ४ ॥
 पवन मंद मुघंधीन शीतल । तट जमुनाको रमाल ॥
 हंस मोर बपैया बोले । कोकीला करत पुकार ॥ हिं० ॥ ५ ॥
 शिव विरंची इन्द्रादिक देवता । सोउ न पावे पार ॥
 मोही प्रभु जुझती संग झुल्न । सूरदास बलीहार ॥ हिं० ॥ ६ ॥

* ॥ ३ ॥ *

झुल्न है नंदलाल । हिंदोले झुल्न है नंदलाल ।
 गावन मरम मकल वृजनारी । बढ्यो है रंग रसाल ॥ टेक ॥
 कंचनवेळी योंराजन है । उरगज मोतन माल ॥
 संग झुले वृषभान नंदनी । अरुजीत ताल तमाल ॥ हिंदोले ॥ १ ॥
 बाजन ताल एखावज मोरली । यग नूपुर झणकार ॥
 सूरदास प्रभूकी छ्वी उपर । तनमन डारोवार ॥ हिंदोले ॥ २ ॥

* ॥ पद ॥ ४ ॥ *

झुलत जुगल किसोर । हिंदोले झुलत जुगल किसोर ॥
 ललिता विशाखा चंपकलत्ता । देती हैं प्रेम झक्को रे ॥
 तेमिये रितु पावस सुखदाईक । मंद-मंद घनघोरे ।
 तैसोई गान करती व्रज सुंदरी । निरखि निरखि चहुं औरे ॥
 कोटि-कोटि मदन-छब्बी निरखत । होत मखी मन भोरे ॥
 'कुंभनदास' प्रभू गोवर्धन-धर । प्रीति निबाहत जोरे ॥

॥ राग कान्हरे ॥ ५ ॥

फुलको हिंडारो फुलनकी ढोरो । फुले नंदलाल फुली नवलकिसोरी ॥
 फुलनके खंभ दोऊ पटुली । फुलनकी दांडी जराय जरी ॥ १ ॥
 फुली फुली जुवंती देत हे झोटा । फुल्यो मदन तन वारी डारी ॥ २ ॥
 फुल्यो रे वंद्रावन फुल्यो रे सघन बन ।

फुली श्रीयमुनाजी लेन हीलोरे ॥ ३ ॥
 नंददास प्रभू फुले झुलवन । चंद्रमुखी चहुं औरे ॥ ४ ॥

॥ हिंडोग राग फेर ॥ ६ ॥

रंग भर झुलत । श्याम संग झुलत झुलत राधीका यारी ॥
 मधुरे सुर गावन उपजावत । आळीन अनमनुहारी ॥
 कबहुक मंद-मंद मुसकात परम्पर ।

कबहुक रीझ देत करतारी ॥
 नीरख नीरख या सुख पर । तहाँ नंददास बलहारी ॥

हिंडोरा रग पंचम की ॥ १ ॥

जीवनने प्राण रे (२) वृद्धावन विशेरे ।
 विलमे बहालो बनिना संग ॥ टेक ॥
 कालिंदिना कुलेरे (२) निकट कुंजमाँ रे ।
 हिंदोलो तो हसिनो छे नवरंग ॥ २ ॥
 ते उपर बेगंरे (२) म्यामाने स्थामलो रे
 बुमणी ते घाले ललीता नार ॥ २ ॥
 केकी पीक बोले रे (२) अंबर छाहीयो रे ।
 धनने गरजे वरषे कोहार ॥ ३ ॥
 कुसुम सुरंग रे (२) परिमिल फुलीया रे ।
 वासीन वन ते अति रे सोहाय ॥ ४ ॥
 सीनल ने मंदरे (२) सुगंधीत पर वर्यो रे ।
 अनुकुल पवन ते वायु वाय ॥ ५ ॥
 सखी तरुलनारे (२) स्वेचर मोहीयाँ रे
 जोई जोई जुगल सरुप हिंदोल ॥ ६ ॥
 नमी नमी नाचे रे (२) कीरन अति धणी रे ॥
 तेतो करे मधुर मधुर कल बोल ॥ ७ ॥
 मान मद मोहरे (२) मदन यकी रह्याँ रे ।
 वाणि सती प्रेमे रह्याँ कर जोड ॥ ८ ॥
 वरणी ना सके रे (२) नरसैयो वाणी ये रे ।
 मारा पहोच्या मनना कोह ॥ ९ ॥
 ॥ इनि श्री हिंदोला संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री शरद निशा समाना कीरतन ॥ *

* ॥ साखी ॥ *

मोर मुगट शिखपर धर्यो । मुख मोरली घन धोर ॥
 वृद्धावनकी कुंजमें । जय जय जुगल किशोर ॥ १ ॥
 मोर मुगट कछी काछनी । पीतांश्वर बन माल ॥
 या बनक मेरे मन वसो । सदा बीहारीलाल ॥ २ ॥
 चंपक वरणी राधीका । सुंदर श्याम शरीर ॥
 कान्हान बजाई बांसरी । कालीन्दीकी तीर ॥ ३ ॥
 गधे तु बढ़ भागीनी । कोन तपस्या कीन ॥
 तीन लोक के जो धनी । मो तेरे आधीन ॥ ४ ॥
 श्रीहरि वचन संभारीयो । करने बोल प्रमाण ॥
 ब्रिज वनिता उद्धरवे । प्रथम दई पहिचान ॥ ५ ॥
 एसी नीरन निहारवेकुं । उपज्यो मन हुलाम ॥
 ब्रिज विनता संग लेनकुं । रचीयो गम विलाम ॥ ६ ॥
 श्रीजमुना तट पावन पुलीन । त्रिविधि मंद समीर ॥
 कनक भोम विचित्र मणी । उंहाँ ठाढे बलवीर ॥ ७ ॥
 श्री वृद्धावन अखिल मंडल । जहाँ द्रुमलताल तमाल ॥
 अधिक तहाँ बैकुंठथे । किडा रची गोपाल ॥ ८ ॥
 सोल कला संपूर्ण शशी । श्रवण सदा सुखकारी ॥
 दामोदरसुं रति पति । शरद निशा अजुवारी ॥ ९ ॥

कहान बजाई बांसुरी । कीयो केदरे राग ॥
 रीझ भई सब घ्वालनी । डोलन लगे नाग ॥१०॥
 मममधुरी धुनि बाज ही । कीयो मोरलीमे गान ॥
 व्याकुल भई त्रिज सुंदरी । दीने नन मन प्राण ॥११॥
 भूषण बसन सब अटपटे । अंजन दीयो मो भाल ॥
 नयन शिख रेखा धरी । कटि कंकन कर माल ॥१२॥
 काम धाम भावे नही । पति पुत्र सब छोर ॥
 चली सब अपने भुवनयें । जहां श्रीनंद किशोर ॥१३॥
 मदन जगायो माननी । सामे वेण बजाय ॥
 ऐसे मतगुरु जीवणा । हम सुने लीये जगाय ॥१४॥

* ॥ राग—कालेगे ॥ १ ॥ *

मोर मुगटने करमां मोरली । नठवग्नों वेष लीधो रे ॥
 शरद पुनमनी रजनी जोईने । रमवा उलट कीधो रे ॥मोर॥१॥
 केसर तिलक कपारे कीधुं । चंदन चल्लुं अंगे रे ॥
 पिनांबरनी पलवट वाली । काली कोर नव रंगे रे ॥मोर॥२॥
 काने कुँडल नाके मोती । तेज अघरणर चलके रे ॥
 मुंजाफलना हार मनोहर । उर अनोपम ललके रे ॥मोर॥३॥
 बाजु बंध आंगलीये मुद्रिका । कटि मेखला घणु राजे रे ॥
 बुधरडी घमकार करंती । ते मांहे नेपुर वागे रे ॥मोर॥४॥
 सोभारे सुंदर शामलीयानी । जोई माना मन हरखे रे ॥
 उलट अंगे अनिमे रे वाध्यो । नयना भरी रूप नरखे रे ॥मोर॥५॥
 थकीत थईने पूछे रे माता । कुंवर कागण कहीये रे ॥

अहावुं सुंदर रूप धरीने । कहो बहाला कहां जईये रे ॥मोर॥५॥
 माना रे रजनी रमवा सरखी । ते जोई महारे मन भावी रे ॥
 आसो मास शरदनी सोभा । रमवानो रढ़ लागी रे ॥मोर॥६॥
 अमने रे इच्छा रमवा केरी । जईने रमीसुं रंगे रे ॥
 ग्वाल ही बाल सखा सहु गोपी । रमीसुं तेनी मंगे रे ॥मोर॥७॥
 वारु कहीने ले रे भामणलां । रदिया चांपी बलाव्या रे ॥
 रमझुम करना प्रभुजी पधार्या । ते बंसीबटमां आव्या रे ॥मोर॥८॥
 मणिमय भोम रतन पर चोकी । उभा श्री बनमाली रे ॥
 अदभूत रूप देखी शशी लाज्यो । एक चिने रह्यो भाली रे ॥मोर॥९॥
 धन धन रे वृंदावननी रे सोभा । जमुना जोवाने धाई रे ॥
 भणे नरसेंयो अरधी राते । मोहने मोरली बाही रे ॥मोर॥१०॥

* ॥ कालेरो ॥ २ ॥ *

श्री वृंदावनमें वेण बगाडी । गोपीने विव्हल कीधां रे ॥
 वर आप्यो ते वचन पालवा । चित हरि मन लीधां रे ॥ वृंदावन॥
 एक अंजन मुकीने उजाणी । बीजी मांग मिंदुर रे ॥
 जुकती जुथ मलीने चाल्यां । जाणे मागर पूर रे ॥ वृंदावन ॥१॥
 पीतांवरनी पलबट बाली । कंठे नवमर हार रे ॥
 वींछुडाने ठमके चाले । पाये नेपूर्णो झमकार रे ॥ वृंदावन॥२॥
 स्तन जडीत राखडली रुडी । आल झबुके काने रे ॥
 राता दंत अधुर मुख ओपे । गोपी ते गोरे बाने रे ॥ वृंदावन॥३॥
 हरखे आव्यां हरिनी पामे । वृंदावन मोद्धार रे ॥
 नरसेंयाचा स्वामी संग स्मर्ना । उल्ट अंगे अपार रे ॥ वृंदावन॥४॥

* ॥ कालेगे ॥ ३ ॥ *

मधु राते मधुरी अनि वहाले । तहां वांसलडी वाही रे ॥
 कामनी काम बेहेलडी थईने । बृंदावन भणी धाई रे ॥ टेक ॥
 आभूषण अबलां अंगे अबलाये । विहवल ताए सजीया रे ॥
 रेणी रास रमवाने कारण । जई जादवने भजीया रे ॥ मध ॥ ३ ॥
 नयना भरी निरख्या लक्ष्मी वर । आनंद अनि धणो पामी रे ॥
 नरसैयाचा स्वामीने जोईने । विरहनी वेदना वामी रे ॥

* ॥ कालेरो ॥ ४ ॥ *

तमो साने काजे सहुको आव्यां । सुं छे तमारु काम रे ॥
 पतित्रतानो धरम छे गोपी । जावोने नमारे धाम रे ॥ टेक ॥
 मोहन केरां वचन सांभली । निचुं निहालै वाली रे ॥
 मुख आंगली गोपी मनमां विमासे । सुं कहोछो वनमाली रे ॥ साने ॥ १ ॥
 गद गद कंठे बोले गोपी । सुणीयो देव मोरारी रे ॥
 जो भूधर हमसुं नही बोलो । तो नजीसुं देह अमारी रे ॥ साने ॥ २ ॥
 अंतर प्रीत जोईने हरि हसीया । रुदीया साथे भीड़ी रे ॥
 प्रेम धरी नरसैयो हरखे । जोई सरखे सरखी जोड़ी रे ॥ साने ॥ ३ ॥

* ॥ कालेरो ॥ ५ ॥ *

सा माटे सामलीया रे बहाला । सान करी अमने तेढ्यां रे ॥
 व्याकुल वनिता थई सबैं अंगे । वेण वगाडी रुडी रे ॥ टेक ॥
 आंणी वेलाये अरथी राते । नजीयो कुटुंब परिवार रे ॥
 सामु आळ चढावो अमने । निरलज नंदकुमार रे ॥ सा माटे ॥ १ ॥
 अंतर प्रीत जोईने हरि हसीया । गोपी रुदीया साथे भीड़ी रे ॥
 नरसैयाचा स्वामी भले मलीया । दीन थया कर जोड़ी रे ॥ सा ॥ २ ॥

* ॥ कालेरो ॥ ६ ॥ *

श्री वृद्धावनमां स्व्यो रे अखाडो । नाचे छे गोपी ने गोवालो ॥
ताल मृदंगने थाजे बंसरी । तान मिलावे शामलीयो ॥ टेक ॥
सुंदर रात रुडी शरद पुनमनी । सुंदर उगयो चंदो रे ॥
सुंदर गोपीने कंचन माला । वच्चे मस्कन मणि गोविंदो ॥ वंद्रावना १ ॥
झलके कुँडल कनक राखडली । उर मुगताफल माला रे ॥
रुमझम रुमझम नेपूर वाजे । मस्कडलं करनी बाला ॥ वंद्रावना २ ॥
हम्मे सुगनर देव मुनिश्वर । पुष्प वधावे भरी पलवटीयो ॥
जयं जय देव देवकीनंदन । नरमेयो तहां दीवेटीयो ॥ वंद्रावना ३ ॥

* ॥ कालेरो ॥ ७ ॥ *

श्री वंद्रावनमां रमन मांडी । गोपीये गोविंद माथे रे ॥
पीनांबरनी पलवट वाली । श्यामाने साही साथे रे ॥ टेक ॥
शांझर शमके घुघरी घमके । पाये नेपूरनो शमकार रे ॥
एक एक गोपीनी प्रत्ये रे माधव । आनंद वाध्यो अपार रे ॥ वंद्रा. १ ॥
मोहन मस्तक मुगट बिगजे । ते जोनां मन मोहे रे ॥
गोरीमी राखडली झलके । कांने कुँडल सोहीये रे ॥ वंद्रावना २ ॥
खेल मच्यो गधावर रुडो । उलट अंगे ना माय रे ।
धन धन कृष्ण लीला रम प्रगद्यो । पुष्प वृष्टि तहां थाये रे ॥ वंद्रा. ३ ॥
अमर आशिष दे उपरथी । चरण रेण ने जाचे रे ॥
नहाना भांत बिलास जोईने । मनमांहिं अति गचे रे ॥ वंद्रावना ४ ॥
सुस्नर मुनिजन मनमां बिचारे । पार ना पामे कोई रे ॥
उमीया ईश्वर कृपाथी उभो । नरमेयो रंग जुवे रे ॥ वंद्रावना ५ ॥

* ॥ कालेरो ॥ ८ ॥ *

श्रा वृंदावनमां विलमे बनिता । मधुरु मधुरु गाये रे ॥
 कंठ परस्पर बांहोलडी ने । श्यामा श्याम मोहावे रे ॥टेक॥
 अधर अमृत रम पान करावे । वहाले भीडी अंगे रे ॥
 आलिंगन परि रभन चुंबन । वाध्यो अनिरस रंगे रे ॥वृंदावन॥१॥
 छेल पणे छाँहे संभाले । मुख मरकडलां करती र ॥
 भोली भामनी कई नव समझे । मोहन संगे रमती रे ॥वृंदावन॥२॥
 चपलपणुं चतुरानु देखी । रह्या नाथ निहाली रे ॥
 भणे नरसेयो सुख सागरमां । झीले अबला बाली रे ॥वृंदावन॥३॥

* ॥ कालेरो ॥ ९ ॥ *

वृंदावनमां राम रमे हरि । गोपीयांसुं परवरीयो रे ॥
 पीतांबरनी काळ कछी ने । मोर मुगट शिर धरीयो रे ॥टेक॥
 कुँडल तेज ते गल शत झालके । कंठे मुगना हार रे ॥
 कटि मेखला सोहीये संग श्यामा । बुघरीनो घमकार रे ॥वृंदावन॥१॥
 झांझर नेपूर कलांरे कांवी । उर परस्पर हाथ रे ॥
 धाई धाईने दे आलिंगन । गोपीने गोपीनाथ रे ॥वृंदावन॥२॥
 नाल मृदंगने वेण मोरली । बहु विधि वाजां वागे रे ॥
 थेई थेई थेईकार करंता । नादे अंबर गाजे रे ॥वृंदावन॥३॥
 अबील गुलाल उल्लाले अनि अबला । चांपा चोसर लहेके रे ॥
 लांबी वेणी कुसुमें गुंथी । चौवा चंदन बहेके रे ॥वृंदावन॥४॥
 प्रथम धरीने पालब तांणे । हरि सुं हास करंती रे ॥
 ललाट टीलडीने नयन समार्था । नाके अनोपम मोती रे ॥वृंदा॥५॥

नाद निघोष उलट अनि वाध्यो । पुष्ट वृष्टि अनि थाय रे ॥
नरसैयो रस मगन थयो रे । तहां संग नाचे ने गाय रे ॥वंद्रा.॥६॥

* ॥ कालेरो ॥ १० ॥ *

धन धन वृदावननी रे सोभा । धन धन आसो मासरे ॥
धन धन रे श्रीकृष्णनी किडा । धन धन गोपी राम रमे ॥टेक॥
शणघट माहेथी मान करता । मानुनी मोह उपजावे रे ॥
हलवे अंग मोडे अनि अबला । नयने नेह जणावे रे ॥धन॥१॥
कंठे कोकीला शब्द उचारे । नहाना रंग मचावे रे ॥
मगन थई अनि मोह पामीया । गांध्रव गान हरावे रे ॥धन॥२॥
अमर लोकना जुथ मल्यां तहां । मुनिवर जोवा आवे रे ॥
जय जय शब्द उचार करीने । पुष्टज लेई वधावे रे ॥धन॥३॥
धन धन गोपीने धन धन लीला । धन धन राममां महाले रे ॥
मत्तगुरुनी किरण दृष्टिये । नरसैयो ताल झीले रे ॥धन॥४॥

* ॥ कालेरो ॥ ११ ॥ *

वारेस मा माता तु मुझने । जावादे जदुनाथ भणी ॥
रंग भरी रास रमे राधावर । सबी रे ममाणी मली छे घणी ॥टेक॥
पाये पडी रे माना एटलु रे मागु । हुंतो नंद तणो नंदलाल भजुं ॥
ब्रह्मादिकने मोह उपजावे । अमो अबलानुं कोन गजुं ॥वारेस॥१॥
धन धन रे साहेली पेली । जे हरखे हरि सुं राम रमे ॥
हसतुं मुख हरजीनुं जोईने । जन्म तना भय ताप समे ॥वारेस॥२॥
जे नर कहेसे ते नर बहेसे । पेला दुरीजनने शिख ढाको पाय ॥
नरसैयाचा स्वामी संग रमतां । उलट माहा रे अंग न माय ॥वारेस॥३॥

* ॥ कालेरो ॥ १२ ॥ *

आजो रे हरि जोवा रे सख्वो । रंग रातोने मद मातो रे ॥
 रजनी गम रमी वंदावन । आवे वांमलडी वहातो रे ॥टेक॥
 पाये बुधगडी रुमझुम वागे । नाचंतो धेर आवे रे ॥
 त्रिजनारीना जुथ मली मली । मोहनजीने वधावे रे ॥आजो ॥१॥
 मुस्तक मुगट जडाव मनोहर । कुँडल झलके काने रे ॥
 हैडे हार गुंजाना मोहिये । मोहनजी भीने बाने रे ॥आजो ॥२॥
 मोहा सुरनर देव महेश्वर । पुष्प वृष्टि तहां थाये रे ॥
 राधा माधवना जोडी जोईने । नरमैयो बल जाये रे ॥आजो ॥३॥

* ॥ कालेरो ॥ १३ ॥ *

आवो रे चालो हरि जोवा । आवतडा रे गोवालानी साथ ॥
 मोर पिछु शिर मुगट बिराजे । मोहन मोरली हरिने हाथ ॥टेक॥
 गोपी चाल्यां हरिने रे जोवा । श्यामा सोल सणगार सजी ॥
 टोलडे टोलडे उभां रहीने । निर्घनां नयना भरी रे भरी ॥१॥
 मंडली मध्ये मलपतो आवे । सुंदर शामलीयो गोपाल ॥
 नरमैयाचा स्वामी भले मलीया । मेवक जानी करो प्रतिपाल ॥२॥

* ॥ कालेरो ॥ १४ ॥ *

आज वंदावन आनंद सागर । शामलीयो रंग रास रमे ॥
 नट्वर वेषे वेण वगाडी । गोपी ने मन गोपाल गमे ॥टेक॥
 सोलकलानो शशी हरि उपर । उडघन सहिन नमे नभर्मे ॥
 धीर समीर नीर जमुना त्रट । त्रिविधि नाप तत्खेव सर्मे ॥आ. १॥

एक एक अंगना संगे माधव । जेम अंबुजपर भमर भमे ॥
 तन थेर्ह ता थेर्ह तान मिलावे । गग रागणोयो सस्स जमे ॥आ॥२॥
 हरख्या सुरनर देव महेश्वर । पुष्प वृष्टि करी चरणे नमे ॥
 भणे नरसैयो धन ए नारी । जे काण जोगी देह दमे ॥आ॥३॥

* ॥ कालेरो ॥ १५ ॥ *

मध राते मोहनजी रमता । मोह्या मानुनी माथे रे ॥
 नहाना भान रमे महा रसीयो । भीडी रह्या भुज बाथ रे ॥टेक॥
 तरुण पणे तारुणी डग भरती । पाये नेपुरनो झामकार रे ॥
 नयना नचावे विरह लडावे । गीझीयो मोरारी रे ॥ मध ॥१॥
 अधर अमृत रम पान करतां । श्यामा श्याम सोहावे रे ॥
 नरसैयाना स्वामी संगे गमतां । सुखनो पार ना पावे रे ॥मध॥२॥

* ॥ कालेरो ॥ १६ ॥ *

भूतल भक्ति पदारथ मोटुं । ते ब्रह्मलोकमां नाहिं रे ॥
 पुन्य करी अमरापुर पाये । अंते चोगमी माहिं रे ॥टेक॥
 भरत खंड भूतलमां जनमो । जेणे गोविंदना गुण गाया रे ॥
 धन धन तेनी मान पिनाने । मफल करी तेनी काया रे ॥भू॥१॥
 हरिना रे जन तो मुक्ति ना मागे । मागे जन्मो जनम अवतार रे ॥
 निन सेवा नित कीरतन ओच्छव । निरखन नंद कुंमार रे॥भू॥२॥
 धन बंद्रावन धन जमुना त्रट । धन धन ब्रिजना वासी रे ॥
 अष्ट महासिद्धि आंगणे उभी । मुक्ति ते चरणनी दासी रे ॥भू॥३॥
 ए रसनो स्वाद शंकर जाणे । कई जाणे शुकदेव जोगी रे ॥
 कंई एक जाणे ब्रिजनी रे गोपी । जाणे नरसैयो भोगी रे॥भू॥४॥

* ॥ राग फेर पद ॥१॥ *

मोरली धुन श्याम बजावेंगे । मोरली धुन शाम बजावेंगे ॥टेक॥
 ऊंचो नंदगांव नीचो वरमानो । गोकुल गढ़ कब आवेंगे ॥मोरली॥
 हम भखुपानकी कुंवरी गधिका । वे नंदजीको कुंवर कहावेंगे ॥मो॥
 इन गोकुल उन मथुरगं नगरी । जीन बीच गम गमावेंगे ॥मोरली॥
 सब सम्बियन मिली मंगल गावे । नयन निख्ती सुख पावेंगे ॥मो॥
 सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । वे हसी हसी प्रिन बढ़ावेंगे॥मो॥

॥ पद ॥ २ ॥

बजाई बंसी रे बजाई बंसी । जमुनाके निकट बजाई बंसी ॥टेक॥
 जीव जंतु जल स्थलके मोहीये । और मोहे तरुवर एंसी ॥जमुना॥
 गेल चलत गेलाउड़ा मोहे । और मोहे हरणा नंपसी ॥जमुना॥
 सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । कुंडल जोन बनी मरसी ॥जमुना॥

॥ राग केदारो ॥१॥

मबनको मन हर्यो । मोरली तें मबनको मन हर्यो ॥
 प्रथम ही ब्रिजनार प्राणके । जान गिरधर वर्यो ॥ टेक ॥
 पति पुत्र विसार अंबर । चली तजी गृह भरो ॥
 तब थे मोपे रहो ना पर है । शब्द श्रवणनि परो ॥ मोरली ॥१॥
 कोयल रही चिन दई सनमुख । किसीको मन मरो ॥
 ध्यान सो धर रहे द्रूप वेली । नाद उरमांपरो ॥ मोरली ॥२॥
 निकमी दृथे सरण बिंबथे । कछु एक बंसी करो ॥
 तृण तोरन सुगमीणी । डमन डाम न चरो ॥ मोरली ॥३॥

मधुप मोर चकोर शिल्ता । उनहुंको चित फिरो ॥
 अपनो बरद विसार बाणी । जोग दृढ ब्रत धर्यो ॥मोरली॥३॥
 थके थीर चर सुर असुर नर । ध्यान निनहुं धरो ॥
 सूर मोरली अधर धारी । काम नाच्यो खरो ॥ मोरली ॥ ५ ॥

* ॥ केदारो ॥ २ ॥ *

बाजी यमुना तीर । मोरली बाजी यमुना तीर ॥
 धुनि सुनी ब्रिजनार निकसी । विसर्यो ननको चीर ॥ टेक ॥
 थई थई नफेर बाजे । और राग गंभीर ॥
 भाल ही बाल खुमाल गोपी । निरखी श्याम शरीर ॥ मोरली ॥१॥
 चरत ही सब धेनु मोही । बच्छा तज रहे खीर ॥
 उडत ही पशु पक्षी मोहे । मोह्यो सखि नीर ॥मोरली ॥२॥
 शरद रेन सोहामणी रे । रास रच्यो जदुवीर ॥
 सूर हरिको सुजश सुनी सुनी । रही न कुलकी कीर ॥मोरली॥३॥

* ॥ केदारो ॥ ३ ॥ *

खेलत मदन गोपाल । बनमे खेलत मदन गोपाल ॥
 मोर चंद्र शिर मुगट बिगजे । निलक शिश दीये भाल ॥टेक॥
 रास बिलास रच्यो बंसीबट । मंग सुंदरी ब्रिज बाल ॥
 शरद निशा पूरण शशी उदयो । उडत अबील गुलाल ॥ बनमे ॥
 गोपी जुगल जुगल प्रनि माधो । उर पर भुजा बिसाल ॥
 सूरदास प्रभु शिव ब्रह्मादिक । मोहे बेन रसाल ॥ बनमे ॥

* ॥ केदारो ॥ ४ ॥ *

नचवन सौख्यत प्यारी । पीयाङ्कुं नचवन सीख्यत प्यारी ॥

वृद्धावनमें राम सच्यो है। शरद चंद अजुवारी ॥ टेक ॥
मान गुमान लकुटी लीये गढ़ी। डगपत कुंज विहारी ॥
व्यास श्यामनिकि छवि निख्वन। इसि हसि दे कर तारी ॥ १ ॥

* ॥ केदारो ॥ ५ ॥ *

धरी गिखर धरन। मोरली धरी गिखर धरन ॥
जमुना नीर सुनी थकीन थीर भयो। धेनुके मुख तरन ॥ टेक ॥
धुनि सुनी ब्रिजनार मोही। अटपटे आभरन ॥ मोरली ॥ २ ॥
मान दिना पघवा झार लायो। इन्द्र आये पाय परन ॥
दासमींग लाल गिरधर। तुम हो तारन तरन ॥ मोरली ॥ ३ ॥

॥ राग मिंधुडो ॥ १ ॥

हरि वेण वाह्यो रे हरि वेण वाहियो। मली मंडली मधुरुं गान गाये ॥
मुगट मस्तक धरे थेर्ड थेर्ड महु करे। जुबती जन कंठे बांहडी सोहे ॥
मकल कला करी वंन विलमे हरि। राम मंडल सच्यो स्मो रे रंगे ॥
शरद सुंदर शशी रजनी रलीयामणी। भामिनी सुं भलारमो रे रंगे ॥ १
ताल ताली पाये नेपूर रण झणे। झामकतो झाँझरी नार नाचे ॥
सुख केरो मागर श्याम शामा तणो। निख्ववा नरसेंयो एह चाहे ॥ २

* ॥ मिंधुडो ॥ २ ॥ *

वागी वन वांसली नाथ अधुरु धरी। प्रगट थया नास्नो नेह जाणी ॥
अबला आनंद रस अंग फुली रही। धन धन नाथ वदे रे वाणी ॥ टेक
जम शशी धंनमां विंटो रे चांदणी। तम हरि विंटोयो मल्यां रे गोपी ॥
बली बली वाणे जाय जुबती जन। तन मन प्राण ते गद्यां रे मोंपी ॥ १

काल वाल्यो वली कृष्ण कोडामणो । मज थयां नाथ संग सबल श्यामा ।
नरमैया नाथ सनाथ कीधां सुंदरी । वली बन विलमतां कृष्ण कामा ॥२

* ॥ सिंधुडो ॥ ३ ॥ *

नाथ नाचे ने शिर मुगट ते झलकतो ।

तहां अबला आलापीने मधुर गाये ॥

नेपूर कांकण शब्द सोहामणो । कर धरी कामनी नाल बाहे ॥टेक॥
कुँडल करणमें माननी मल्घनि । हम्बती हरि सुंरे हास करनी ॥
शरण सुखदायक पूरण प्रेमानंद । मकल व्यापी रह्यो राम समतां ॥१॥
हार शणगारने अंवर ओपनां । कर तर्णी किंकणी खलके चुडी ॥
नरमैया अंगमां आनंद अनि घणो । नाचतां निरखतां जुगल जोडी ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ ४ ॥ *

नार नाचे बली नाथ संग स्वर करे । तहां नाल मृदंग सम वेण वागे ॥
मान मनकास्नी शामला मनमुख । मुव तणो मानुनी मच्छर छाड्ने ॥
चोली ने चमकती घमघमे बुधरी । ठमक ठमकावती नूपुर तारी ॥
अलवे अंग मोडती पीयु मन भावती । जाणे घन दामनी देरे भमरी ॥
नाथने वाथ ने भरी रही भामनी । अबला आनंद ने उरन माये ॥
भणे नरमैयो रंग रेले झकोलतां । मानुनी मोहन भलीने गाये ॥२

* ॥ सिंधुडो ॥ ५ ॥ *

ए गज गामनी गम मंडल मधे । एक एक अंगना अधिक रंगे ॥
वाजां वागे वहु थई थई करे महु । मिलावे तान ते नाथ संगे ॥
मानुनी मन मोहेरे मोहन तणु । मोहन मानुनीनु मन मोहे ॥
एक सम थईने अंगो अंग भीडतां । कामनी करे कंठ कृष्ण सोहे ॥१॥

प्रेमदा प्रेमसु पान अधुर करे । एक भरी नाथने उग्में गखे ॥
धन रे धन रे धन रे आ मुख । भणे नर्सैयो ने प्रगट पेखे॥२॥

* ॥ सिंधुडो ॥ ६ ॥ *

गम मंडल मध्ये कृष्ण कोहामणो । वहालो जुवतीना जुथ मध्ये विराजे॥
मोरना पिच्छनो मुगट मस्तक धयों । काने कुंडल उर माल ढाजे ॥
कहान कर वांमली नानालापे बली । नार नाचे अने नाथ मोहीये ॥
नयन नचावती पीयु मन भावती । श्याम सुंदर संग श्यामा सोहीये ॥
धन्य ए नाथने धन्य ए सुंदरी । जे अखिल भुवन तणो नाथ कहावे ॥
भणे नर्सैयो अदभूत रम ओपतो । ते सुंदरीना नयनमांहे ममावे ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ ७ ॥ *

गम मंडल मध्ये सुंदरी मोभती । हरवी हरजीसुं रे हास कस्तीटेक॥
एक कर नाल एक वैण वगाडती । एक धाई धाई द्वाथने बाथ भगती ॥
एक ते अधील गुलाल उडावती । एक करती कलोल आनंद अंगे ॥
हास विनोद अनि प्रेमसुं प्रेमदा । अखिल भुवन तणा नाथ संगे॥१॥
धन्य ए नाथने धन्य ए सुंदरी । धन्य जुवती जन जोडे मोहीये ॥
धन्य ए नर्सैयो अखिलने निरखतां । बेहुने देखीने मन मोहीये॥२॥

॥ राग बेहाग ॥ १ ॥

(ईम तन धनकी कौन बडाई ए गम)

नवल कुंज नवल मृग नयनी । नवल नेह तेरो लागी ग्लोगी ॥
चलरी सखी तोही शाम घोलावे । काहे न करन अली मेगे कह्लोगी ॥
सुनरे मखी एक बान सयानी । मागे आज प्रभु तेगे देहोगी ॥

छिन छिन बिलम करनी काहेकु । तेरो विहर नही जान सह्योरी ॥
 अधर बिंबपर मोर्ली सोहे । गधे राधे तेरो नाम प्रह्योरी ॥
 सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । ले ले प्रेम रस जान बह्योरो ॥
 * ॥ बेहाग ॥ २ ॥ *

घरि घरि रुमनो केसे रे आवे । बेर बेर तोकुं कौन मनावे ॥
 है कोई निहाग बाबाकी चेरी । निन उठी आपन कौन मनावे ॥घरि॥
 अबतो कठन परी मेरी अली । तुज विनामोहन और न भावे ॥घरि॥
 सूरदाम प्रभु मोरली बजावत । मोर्लीमें गधे गधे धुनगावे ॥घरि॥
 * ॥ राग धन्याश्री ॥ * +

रमभयुं रुमणु रे सबलु रे सोमे ।

वहालोजी व्याकुल मनहुं ना थोमे ॥ रमभयुं ॥३॥
 युंघट उधाडी बालो मारो विनतडी दाखे ।

सुंदरी ते हाथ नखोडी रे नाखे ॥ रमभयुं ॥२॥
 मुखमें आंगली बालो मारो मानज मागे ।

पालव पाथरीनें वहालो पावलीये लागे ॥रमभयुं ॥३॥
 नरमैयाचा स्वामीये समज खाधा ।

रीम उतारी हरि हमी बोल्यां रे राधा ॥रमभयुं ॥४॥

* ॥ केदारो ॥ *

मध निशा बेलडी रे । भरती लडसडतां डगलां ॥
 पंथीडो निहालती रे । जोनी पीनांबर पगलां ॥ टेक ॥
 श्यामा श्यामने रे । हींडे मारगडो जोती ॥
 नयने नीर झरे रे । चतुरा चीर वडे लो'ता ॥ मध ॥१॥

+ राग. -जे जन कृष्ण कथा रस नष्ट्यो । त इत ससार कुचो कही नाल्यो.

हींडे वन सोधनी रे । जाणे वन चरती हरणी ॥
 जोवन जालब्युं रे । जाणे भूदर मेट करेश ॥ मध ॥२॥
 जई पूछयुं द्रमने रे । काँई महारा नागर नंदनी भाल ॥
 चाली सखी नहां गई रे । जहां हतु जमुनाजीनु तौर ॥ मध ॥३॥
 अहिंया हरि बेमता रे । जमता करमडलो ने खोर ॥
 वहालो वहाता वांमली रे । गोपीका गाती सघली गीत ॥ मध ॥४॥
 ते केम विसरे रे । प्रभु महारा पुख जनमनी ग्रीत ॥
 महु सखी टोले मली रे । मनसुं कीधो एक विचार ॥ मध ॥५॥
 चालो महु तहां जईये रे । जहां मारा नागर नंदनी भाल ॥
 चतुराना चीर हर्यां रे । लेई चब्बा कदम केरी ढार ॥ मध ॥६॥
 मनखा देही भली रे । ज्यारे पामीये नंद कुमार ॥
 आणी आणी वाटडी रे । आव्यां आव्यां लख चोरासी वारा ॥ म.७॥
 सरोवर पूछीयुं रे । काँइ नट नागर केरी भार ॥
 नरसैयाना स्वामी मल्या रे । वहाले मारे उतार्या भवपार ॥ म.८॥८॥

* ॥ राग-सामेरी ॥ १ ॥ *

अमने ते गम रमाड वहाला । थेर्इ थेर्इ नाच नचाड वहाला ॥
 वैकुंठथी वंद्रावन रुहु । ते अमने देखाड वहाला ॥
 भव चंधनथी छोडाव वहाला । रजनी करो खट मास वहाला ॥
 आव्यां तमागी पाम वहाला । पुरो अमागी आस वहाला ॥

॥ वलण ॥

जादव जमुनाना काँठ्डे रे । वाह्यो वेण रमाल ॥

नादनी मोही गोपीका रे । घेर गेतां मेल्यां बाल ॥
वा'ले वाहि वांसलडी ॥

एक अंजन अंजनही चली रे । वसन कर्या परिधान ॥
अबला ते आभ्रण पहरीयां रे । काँई नेपूर धात्यां कान ॥वा'ले॥
मनमुख जई उभी रही रे । नयने निरख्या नाथ ॥
तन मन धन मोपी रही रे । गोपी हरजीसुं जोख्या हाथ ॥वा'ले॥
वृद्धावनने ओलवे रे । गोपी खेले गम ॥
वेण वगाडे विठ्ठो रे । गोपी लळी लळी लागे पाय ॥वा'ले॥
एक एक मली ताली देय रे । बीजी कुम कुम गेल ॥
गधाने माधव गस गमे । नहां शाक्षा रंग झक्केल ॥वा'ले॥
वंदावन रुलीयामणुं रे । शरद पुनमनी गत ॥
ललित त्रिभंगी भामनी । काँई दीमे नवली भात ॥वा'ले॥
जे गाये जे सांभले रे । हरि गधानो गम ॥
ते वर विछुल पामसे । हम भणे नरमैयो दास ॥वा'ले॥

॥ राग सामेरी ॥ १ ॥

॥ चाल ॥ १ ॥

अनीहांरे—शरद निशा अजुआरी । बनमें डढे कुंजविहारो ॥

अनीहांरे—मोर्ली मधुरी बजाई । त्रिज वधुन सुनत उठी धाई ॥

* ॥ दाढ़ छंद ॥ १ ॥ *

उठी धाई त्रिज वधु श्रवन सुनके । भुवन कृत उन सव नजे ॥

भई हेत चिंता कामआतुर । उलटी आभ्रण अंग मजे ॥

एक लोचन दीयो रे अंजन । एक अंजनही चली ॥

कमल मुख हरि दरश प्यामी । प्रीत मन उपजी भली ॥
श्री नंदानंदन चरण परमन । मुदित गोकुल नारीयां ॥
गोपी आई सनमुख भई है गढ़ी । शरद निशा अजुवागीयां ॥

* ॥ साखी ॥ २ ॥ *

शरद रेन बृंदावन । पुरो बंस मोरार ॥
हरि दरशनकी लालची । आई सबे विजनार ॥

* ॥ चाल ॥ २ ॥ *

अनीहाँरे-विजनार सबे मिल आई । देखन जदुपनि गई ॥
अनीहाँरे-सुंदर नहींको त्रिभुवन एमो । शाम कोट मदन तन जेसो ॥
अनीहाँरे-जाके ममक मुगट बिगजे । देखन अंधीयारो भाजे ॥
अनीहाँरे-कुंडल झलके दोउ कान । ते तो रवि शशी कोट समान ॥
अनीहाँरे-जाके कंठे बनी बनमाला । फहेसन पट पीत गोपाला ॥
अनीहाँरे-अंगुलीये मुद्रिका सोहीये । मानु उपमाकुं ना कोईये ॥
अनीहाँरे-नखर वेष धयों जदुराई । विज सुंदरी देखन आई ॥

* ॥ साखी ॥ ३ ॥ *

ढीग ढीग गोपी देखके । बोले श्री महाराज ॥
अरध निशा बिनी जामनी । तुम आई कहेने काज ॥

* ॥ चाल ॥ ३ ॥ *

अनीहाँरे-जब ढीग देखी विजबाला । तीनसुं बोले मदन गोपाला ॥
अनीहाँरे-अरधनिशा तुम किन आई । वेतो नंदी वेद श्रुति गई ॥

* ॥ ढाल छंद ॥ ३ ॥ *

नंदीया श्रुति वेद गई । कुल वधु क्यों पति नजे ॥

लोक कहेत लँछन लागे । पर पुरुष तारुणी भजे ॥
 तुम जावो भामनी उलटी अब गृहे । जुगत नहीं इन बातीयां ॥
 पति तुमारा पंथ जोवे । जाम जुग गई गतीयां ॥
 गोप वधु यह धरम नाहिं । कहेत शाम तमालजुं ॥
 निदूर वचन गोपाल बोले । देखी दीग ब्रिज बालजुं ॥

* ॥ साखी ॥ ४ ॥ *

गोपीन सु हरि हम कल्यो । सुनो सुंदरी कुलराय ॥
 दशन पायो हम तनो । अब तुम अपने गृह जाव ॥

* ॥ चाल ॥ ४ ॥ *

अनीहांरे—तुम जाव गृहे मब नारी । तुम मानो ने मीख हमारी ॥
 अनीहांरे—वेद उपनिषदनी काजे । निज पतिकुं आदर दीजे ॥
 अनीहांरे—तुम करम धरम संमारी । एक पुरुष भजो तुम नारी ॥
 अनीहांरे—तुम अपनेरे भुवन पधारो । तुम मानो ने वचन हमारो ॥
 अनीहांरे—जाके सुर समरथ दीयो माखी । मोई सोई बान लो दाखी ॥

* ॥ साखी ॥ ५ ॥ *

कृष्ण वचन तब सुनके । मुख्तानी ब्रिजनार ॥
 आई चरण शरण निहारे । कृपा क्यों न करो मोरार ॥

* ॥ चाल ॥ ५ ॥ *

अनीहांरे—सुनी रे गोविंद मुख बाणी । तब गोप तरुणी मुख्तानी ॥
 अनीहांरे—दीन वचन बोली गोवाली । एसी तेरी जुगत नहिं बनमाली ॥

॥ ढाळ छंद ॥ ५ ॥

बन बिहारी तेरी जुगत नाहिं । निदूर वचन नहीं बोलना ॥

सुम्न नाथ सुभड भुज भीडी । श्याम हम संग खेलना ॥
हम छांडी सुनपनि विषीन आई । आश लगी तुम लाडीले ॥
खेलीये मधुबन मोहन । चाल अपनी चालीये ॥
हम जाउ कैसे उलटी अब गृह । प्राण नजु दधि दाणीया ॥
बिलखी बचन गोवाली बोली । सुनी गोविंद मुख बानीया ॥

* ॥ साथी ॥ ६ ॥ *

विविधि बचन गोवाली कहे । कृपा ज्यों न करो हरि ॥
आई चरण शरण निहारे । गोपी बोली हमी करी ॥

* ॥ चाल ॥ ६ ॥ *

अनीहाँरे—नव गोपी हमी करी बोली । हम तुम सु लज्जा खोली ॥
अनीहाँरे—हम जाने त्रिभुवन गई । नाथे सुन पनि छांडके आई ॥
अनीहाँरे—गोपीनके जीयाकी जानी । वृदावन किंडा थानी ॥

* ॥ साथी ॥ ७ ॥ *

शशी संग ज्यों ताम्का । यों गोपी कृष्ण के पास ॥
अरध निशा बिनी जापनी । नहां मोहन रचीयो शस ॥

* ॥ चाल ॥ ७ ॥ *

अनीहाँरे—गिरधर हमे दयाल मोगरी । नव बोल लई सब नारी ॥
अनीहाँरे—राम मंडल प्रभुजीये कीनो । मिली गोपीनकुं सुख दीनो ॥

॥ ढाळ ॥ ७ ॥

सुख दयोरे मोहन रास रंग रच । अंग अंग प्रति वपु धरे ॥
भई अनि रस मगन किंडा । कामनी कारज मरे ॥
अधर सुधा रस पाय पीवन । केलि भूतल सुची रचे ॥

भोगि गजिन कनक मणिमे । पंच खंभ ढीग ढीग खचे ॥
सुधन चंद्र विलोकी थकी रह्यो । श्याम अवला मन बमे ॥
कहन कृष्णदाम मानुनी मली । दया निधि गिरिधर हमे ॥

* अंतरध्यान ॥ *

॥ मात्स्वी ॥ ८ ॥

राम मंडल गिरधर स्त्र्यो । दीयो गोपीन सुख दान ॥
गधा रमीक संग ले करी । हरि भये अंतरध्यान ॥

॥ चाल ॥ ८ ॥

अनीहांरे—हरि भये अंतरध्यान । गुण सागर रूप निधान ॥
अनीहांरे—जुवनी जुथ जुथ ब्रिज डोले । श्यामा श्याम कही कही बोले ।
अनीहांरे—दुँडे गुलम लता द्रमबेली । काहु देखे शाम साहेली ॥

॥ मात्स्वी ॥ ९ ॥

कुंज कुंज दुँहत फिरे । खोजत फिरे ब्रिजनार ॥
प्राणनाथ पावे नही । तब व्याकुल भई ब्रिजनार ॥

* ॥ चाल ॥ ९ ॥ *

अनीहांरे—नब व्याकुल भई ब्रिजबाला । काहु दुँडे ताल तमाला ॥
अनीहांरे—एक जाई कदमकुं बुझे । बीजुं और कछु ए न सुझे ॥

॥ मात्स्वी ॥ १० ॥

पीया भंग एकांत रम । विलमे गधा नार ॥
खांध चटन राधे कह्यो । तब तजी गये मोगर ॥

॥ चाल ॥ १० ॥

अनीहांरे—तब तजी गया मोरारी । गधा आप संगते टारी ॥

अनीहारे—तब और सखी नहां आई । काहुं देखे कुंवर कनाई ।
अनीहारे—मेंतो मान कायो मेंगे वाई । ताथे अलप भये जदुराई ।

॥ साखी ॥ ११ ॥

कृष्ण चरित्र गोपीन रच्यो । ब्रह्म व्याकुल ब्रिज बाल ॥
एक भई है पूतना । एक भई नंदलाल ॥

॥ बाल ॥ ११ ॥

अनीहारे—एक गोपी भई मोगगी । तेणे दुष्ट पूतना मारी ॥
अनीहारे—एक रूप मुकुंदको कीनो । तेणे नरणावर्त हसिलीनो ॥
अनीहारे—एक भेष दामोदर धारी । जाणे जमला अरजुनज नारी ॥
अनीहारे—एक भई है जशोदा गणी । जेणे अनुमल वांध्या नाणी ॥
अनीहारे—एक वनमां किरडा ठानी । अमने दया करे दीन जानी॥

* ॥ साखी ॥ १२ ॥ *

प्रेम प्रीत हरिजानके । आये मखियन पास ॥
मुदिन भई सब मानुनी । गुण गावे कृष्णदास ॥

* ॥ बाल ॥ १२ ॥ *

अनीहारे—गुण गावत है कृष्णदास । मली शरद रेन रच्यो गस ॥
अनीहारे—गोपी पान पान करजो रे । हरि मबहन को चिन चोरे ॥
अनीहारे—जल स्थल किडा सुच पाई । ताथे ग्माक जने गुण गाई ॥

॥ साखी ॥ १३ ॥

अधुर मधुर सस पाई परम्पर । सान खवावत आपही ॥
तहां अनुगगी जन कृष्णदास । श्री गिरधर जश गावही ॥

* ॥ मान समो ॥ *

* ॥ माखी ॥ *

बृंदावनकी कुंजमें । ए दोउ करत सुधा स्म पान ॥
 नंदा नंद गोपालसें । कर बैठी अभिमान ॥ १ ॥
 मान कीयो तुम भलो करी । जानो तिहारे मान ॥
 जेसो कनका ओसको । एसो तिहारे मान ॥ २ ॥
 लटपट लेलाट पट । अटपट बोलत बेन ॥
 जो पीयाथे खटपट भई । सो टप टप चुवन है नेन ॥ ३ ॥
 बृंदावन विछुल रमे । तहां वहे रंगनी रेल ॥
 हुं तुने लेवा मोकली । मखी हठ हैयानो मेंल ॥ ४ ॥

॥ चाल ॥ १ ॥

अनीहांरे—हठ मुकोनी हरजी मनावे । दुती पेर पेर समझावे ॥
 अनीहांरे—नहां मली रे मकल बिजनारी । वहालो वाट जुवे छेनमारी ॥

॥ माखी ॥ २ ॥

ब्रिज बनिना मब धाई मली । माथे बैकुंठ नाथ ॥
 मखी अलुनु तुज बिना । पंथ निहाले नाथ ॥

॥ चाल ॥ २ ॥

अनीहांरे—मखी नाथजी पंथ निहाले । तेने अंग अंग परजारे ॥
 अनीहांरे—मुको मान चालोजी सुनारी । तुम बिना कोन ताप निवारे ॥

॥ माखी ॥ ३ ॥

जोबन क्षण भंगुर छे । मान मुको मृग नयनी ॥
 नवमन भुषण मज करो । अलप रही छे रेनी ॥

* ॥ चाल ॥ ३ ॥ *

अनीहांरे—तहाँ रेन गई निरधार । तमो सें न करो शणगार ॥
अनीहांरे—रमना निरम थई भारी । तमे चालो भ्रखुभान दुलारी ॥

* ॥ साखी ॥ ४ ॥ *

मनमुख श्यामा नव जुवे । दुती करे विचार ॥
फरी आवी भध नायका । तमो नंदकुंवर अविधार ॥

* ॥ चाल ॥ ४ ॥ *

अनीहांरे—नही माने बोल हमारो । तमो मन माँहे रे विचारे ॥
अनीहांरे—विनवतां रे रमना गाँठी । शामा थई बेठी उफराँठी ॥

* ॥ साखी ॥ ५ ॥ *

वचन सुनी वनिना तणां । चाल्या चतुर सुजाण ॥
जई मनावे मानुनी । ग्रही पीतांबर पाण ॥

* ॥ चाल ॥ ५ ॥ *

अनीहांरे—ग्रही पाण पीतांबर नारी । मन हरखीने कुंज पधारी ॥
अनीहांरे—तेने विस्फनी वेदना वामी । मल्यो नरसेंयानो स्वामी ॥

॥ इति श्री मान समो संपूर्ण ॥

॥ रामकवीर ॥

* ॥ अथ श्री तुलसीदासनो राम ॥ *



॥ राग—मामेरी ॥ (प'लार)

* ॥ माखी ॥ १ ॥ *

तुलसी कहे रंग उपज्यो । महारे हैडे हस्ख अपार ॥
वेण सुणी वहाला तणी । हवे मोह पामी ब्रिजनार ॥

* ॥ ढाळ ॥ १ ॥ *

अनीहांरे—हथे मोह पामी ब्रिजनार । मन माहि कगे विचार ॥
अनीहांरे—चालो बहेनी ते जोवा जईये । सखी मर्वे मांचर्गां थईये ॥
अनीहांरे—आवी शम्द पुनमनी गन । स्मीये ते वहालानी माथ ॥
अनीहांरे—कालिन्दी ते जमुना पाम । शामलीये ते मांडयो गम ॥
अनीहांरे—हैडामां ते हस्ख न माय । जोवाने ते मनहुं थाय ॥
अनीहांरे—मोहन मुख मोरली बाजे । तेनी धुन गगनमां गाजे ॥
अनीहांरे—एतो वेण वाहे वनमाली । तेने जोवाने सहु चाली ॥

* ॥ माखी ॥ २ ॥ *

जोवा जादवगायने । ब्रिज बनिना सहु थाय ॥

तुलसी कहे रंग उपन्यो । तहां रंग घनेगे थाय ॥

* ॥ ढाळ ॥ २ ॥ *

अनीहांरे—तहां रंग घनेगे थाय । कोने मंदिरमां ना रहेवाय ॥
अनीहांरे—कोणे मूकी ते कुलनी लाज । ते तो त्रिकम तहारे काज ॥
अनीहांरे—कोणे भोल्कीया भरथार । कोणे वाह्नी ते सहु वहेवार ॥

अनीहांरे-एके गोकी ते गखी गमा । महु पहेली पहोंची श्यामा ॥
 अनीहांरे-एक नहानी ते चाली नार । नहाँ तो लाज ग्ही ना लगार ॥
 अनीहांरे-एके अवलो ते पहेगी चोली । मली ठाम ठामथी टोली ॥

* ॥ माखी ॥ ३ ॥ *

आनुर थई ते नार महु । मेहेली कुल्जी मान ॥
 कहे तुलसी रंग उपज्यो । कोने हाथ न लागे काम ॥

* ॥ ढाळ ॥ ३ ॥ *

अनीहांरे-कोने हाथ न लागे काम । जोवाने सुंदर श्याम ॥
 अनीहांरे-चालो बेनी ते जोवा जईये । विनंनि वहालाने करीये ॥
 अनीहांरे-कोणे अखी ते आंजी आंख । ते तो वांसलडीनो वांक ॥
 अनीहांरे-अवलो ते मज्या शणगार । मन थोभे ते नही लगार ॥
 अनीहांरे-दोडनी ते श्वाम न खाये । सखी जे जम ने नम धाये ॥
 अनीहांरे-वृद्धावन लागी लहार । जाणे हरण वछूटी हार ॥

* ॥ माखी ॥ ४ ॥ *

मरवे पहोंची प्रेमने । सहीयर सघलो माथ ॥
 कहे तुलसी पछी शुश्रयुं । जई नयणे निरख्या नाथ ॥

॥ ढाळ ॥ ४ ॥

अनीहांरे-जई नयणे ते निरख्या नाथ । वहालाजीसुं करिये वात ॥
 अनीहांरे-मुख देखीने मोहज पामी । महु विरहनी वेदना वामी ॥
 अनीहांरे-देखीने ते देव मोगारी । हईडामे ते हरख अपारी ॥
 अनीहांरे-प्रभु गम स्माडोनी हावे । अमो आव्या ते सहुये भावे ॥
 अनीहांरे-आज एवा ते रंग स्माडो । अमने वंद्रावन लेई चालो ॥

* ॥ साखी ॥ ५ ॥ *

मोहन मुख एम ओचरे । नीचुं भाले नर ॥
कहे तुलसी आ गममें । ओछो अबलानो अवतार ॥

॥ ढाळ ॥ ५ ॥

अनीहांरे—ओछो अबलानो अवतार । मुखे बोले नहीं लगार ॥
अनीहांरे—आतुर थईने आव्यां । पण भूधरने नव भाव्या ॥
अनीहांरे—कहोने महीयरशी पेर कीजे । धेर जईने उतर सो दीजे ॥
अनीहांरे—को'नी केम जवाये धेर । त्यारे नीकलबुं न्होतुं धेर ॥
अनीहांरे—आपन आव्यांवन मोङ्शार । बहालाने भाव्यां नहिं लगार ॥
अनीहांरे—आ तन ते तजबुं सारुं । कहेवाशे सारुं सारुं ॥

॥ साखी ॥ ६ ॥

गापी कहे गिरधर सुनो । मनमें मोटी आश ॥
तुलसी गीक्षा नाथजी । हावे रमो ते राम ॥

॥ ढाळ ॥ ६ ॥

अनीहांरे—रंग रसीयो ने रमवाने बोल्या । मखियो महुनां मन खोल्यां ॥
अनीहांरे—गोपीना ने मननी जाणी । वृदावन लीला गनी ॥
अनीहांरे—रजनी ते कीधी पट्माम । रमवाने ते रंग विलास ॥
अनीहांरे—नहां तो ताल पखावज वाजे । रडो सुंदर झ्याम विराजे ॥
अनीहांरे—मुख मोहनजीनुं निरखो । गोपी सहु हर्डामां हरखी ॥
अनीहांरे—हर्डामां हरख ज पामी । मने मलियो ने अंतरजामी ॥

॥ साखी ॥ ७ ॥

वृदावननी कुंजमां । बागे वेण रमाल ॥
तुलसी हरिसुं गम रमें । गोपीने गोवाल ॥

॥ ढाळ ॥ ७ ॥

अनीहांरे-रमे गोपीने रे गोवाल । रुडां दीसे झाक ब्रमाल ॥
 अनीहांरे-रुडा रंगे भर्या रणछोड । गोपीना ते पुर्या कोड ॥
 अनीहांरे-अबलाने थई आधिन । तहां मोह्यां ते मृगने मीन ॥
 अनीहांरे-मोह्यां ते बनमें बेली । गोपी रमे ते गोविंद भेली ॥
 अनीहांरे-मोह्यां ने नगने नागी । त्रिकमनु तेज अपारी ॥
 अनीहांरे-मोही ते गधाजी प्यारी । प्रेमे ने लेवे ताली ॥

* ॥ साखी ॥ ८ ॥ *

तेज नमारुं जोईने । हैडे हरख न माय ॥
 कहे तुलसी रंग उपज्यो । मान मुके सुख थाय ॥

॥ ढाळ ॥ ८ ॥

अनीहांरे-मान मुकनां ते सुख थाय । एवो रास रमें जटुगय ॥
 अनीहांरे-आवी सखे देवना भाले । तहां तो इन्द्र विमान ना चाले ॥
 अनीहांरे-कर जोडी ग्ह्यां ते कामा । आधीन थईयां ते वामा ॥
 अनीहांरे-त्रिकमनु ते देवी तान । मुनिजन ते चुक्या ध्यान ॥
 अनीहांरे-जोवा शंकर आव्या उठी । त्रिव्यानी ते ताली छुटी ॥
 अनीहांरे-मोह्यां धरनी ने आकाश । मोह्या मोर कलापर वास ॥

* ॥ साखी ॥ ९ ॥ *

जे जहां ते तहां स्थिर ग्हुं । माया मुक्ती मोह ॥
 कहे तुलसी आ गममें । तृपत ना थाये कोय ॥

॥ ढाळ ॥ ९ ॥

अनीहांरे-मोह्यां पशु पंखी महुये । मोह्या मोर कला बहु जोये ॥

अनीहांरे-चच्छ धावतां छांडे खीर । थंभी रहुं ते जुमना नीर ॥
 अनीहांरे-मोहां शशी सूरजने ताग । तेनो थकीन थया रे बिचाग ॥
 अनीहांरे-मोहां मांकहलां बन मांहे । घणु कुदे ने फुंदे तांहे ॥
 अनीहांरे-मोहुं महु ते वृदावन । धन धन ते जगजीवन ॥

॥ साखी ॥ १० ॥

धन धन दीनानाथने । पुरे मननी आश ॥
 कहे तुलसी महु थयुं हरि । हवे रमाडो राम ॥

* ॥ ढाळ ॥ १० ॥ *

अनीहांरे-हावे हरि रमाडो राम । अबलानी ते पहँची आश ॥
 अनीहांरे-रुडा रंग रमाडो रीने । पातलीया ते प्राणनी प्रीते ॥
 अनीहांरे-गोपीने ते लाडलदावे । वहालो एवा ते भ्रम जगावे ॥
 अनीहांरे-अबला आनंदमें झीले । नेना रोम रोम अंग खीले ॥
 अनीहांरे-देखीने ते लीला लहरे । कोई जावा न पामे घेर ॥
 अनीहांरे-अमने लाख्या ते मोहना बाण । विधायां ते तनमन प्राण ॥

॥ साखी ॥ ११ ॥

विद्यां तन मन प्राणने । सुख पामे घणुं सुंदरी ॥
 तुलसी रंग जाम्यो घणो । अंनर ध्यान थया हरी ॥

* ॥ ढाळ ॥ ११ ॥ *

अनीहांरे-हरि अंनर ध्यान थया रे । गोपीना प्राण गया रे ॥
 अनीहांरे-मने महेली गया महाराज । मनमें रही ते मोटी दाङ ॥
 अनीहांरे-हावे केम करी रहेवाये । मन आकुल व्याकुल थाये ॥
 अनीहांरे-आंसुढानी चाली धार । जाणे दृद्या मोतीना हार ॥

अनीहांरे—व्याकुल थई ब्रिजनारी । आब्यां वृद्धावन मुखकारी ॥
अनीहांरे—तहां नव दीठा वनमाली । जोई टलवले ब्रिजबाली ॥

* ॥ साखी ॥ १२ ॥ *

योले बलीने टलवले । नाथ वियोगे नार ॥
तुलसी रडनां महु फरे । आब्यां वृद्धावन मोझार ॥

* ॥ ढाळ ॥ १२ ॥ *

अनीहांरे—आब्यां वृद्धावन मोझार । अंही रमना देव मोरार ॥
अनीहांरे—आपनने मैल्यां उवेखी । तरछोडी अवगुण देखी ॥
अनीहांरे—पहेलां ने लाहलडाकी । तरछोडनां दया न आवी ॥
अनीहांरे—आपनने उवेख्यां नाथे । राधाजी ते लीधां साथे ॥
अनीहांरे—राधाजीए मोटम आणी । हुं तो मोटी रे पटगणी ॥

* ॥ साखी ॥ १३ ॥ *

राधा मन मोटम करे । जाणे दीन दयाल ॥
तुलसी रती एक कहे । नमो बलगो आणे ढाल ॥

॥ ढाळ ॥ १३ ॥

अनीहांरे—नमो बलगो ते आणे ढाल । पछी वाही गया गोपाल ॥
अनीहांरे—माहनजीये महेल्यां रोनां । राधा हीडे वन वन जोनां ॥
अनीहांरे—हरि कहेनां ते हैडु ना फाटे । खोयु कंचन काचने माटे ॥
अनीहांरे—मेंतो मनमां आन्यो अहंकार । तारे तजी गया मोरार ॥
अनीहांरे—सखी आवी मली सहु तांहे । राधाजी दीय वन मांहे ॥
अनीहांरे—नमो तारे हुती अति वहाली । वनमाहे महेल्यां केम टाली ॥

* ॥ साखी ॥ १४ ॥ *

दश दशनी टोली मली । रुदन करे अपार ॥
तुलसी रसनी गधिका । प्राण तजु आणी वार ॥

* ॥ ढाळ ॥ १४ ॥ *

अनीहांरे-हावे प्राण तजु आणी वार । देखीने दुःख अपार ॥
अनीहांरे-एक गोपीने खाये फांसी । एक रहे ते मनमां विमासी ॥
अनीहांरे-एक जुमनामे झंपलावे । एक कहे कां घेली कहावे ॥
अनीहांरे-बाई प्रेम हसे काई ज्यारे । दीनोनाथ ते मलमे त्यारे ॥
अनीहांरे-पातलीयो ते प्रगट थाय । तो करीये एक उपाय ॥

* ॥ साखी ॥ १५ ॥ *

महु सहियर टोले मली । मन विचारे वान ॥
प्रेम विना नव प्रगटे । तुलसीनो रसीयो नाथ ॥

* ॥ ढाळ ॥ १५ ॥ *

अनीहांरे-तुलसीनो ते रसीयो नाथ । तेनो हेतेरे आवे हाथ ॥
अनीहांरे-बाई गस रमोने हावे । दीनोनाथ पधारे भावे ॥
अनीहांरे-राधाने करो गण्डोड । सहु गोपी रहो कर जोड ॥
अनीहांरे-रुडी रमन मांडोने एम । दीनोनाथ पधारे तेम ॥
अनीहांरे-आगधो ते एके मन । तो तो आवे जुगजीवन ॥
अनीहांरे-हावे नाटक थईने नाचो । दीनानाथने सवें याचो ॥

॥ साखी ॥ १६ ॥

नायक थई नाचे सहु । विस्ह भरी त्रिजनार ॥
तुलसीनो स्वामी रही नव सके । नहां प्रगटे देव मोरार ॥

* ॥ ३६ ॥ *

अनीहांरे—हावे प्रगत्या देम मोरारी । तहां भेटे भूदरने नारी ॥
 अनीहांरे—सहु मोतीडे वधावे । घणु हेत हैयामां आवे ॥
 अनीहांरे—बाईं प्रेम हनो तो पामी । मने मलीयो अंतर्यामी ॥
 अनीहांरे—अबलानी ते पहोंचो आस । रास गावे तुलसीदास ॥
 अनीहांरे—ए हरि राधानो रास । सांभलतां ते सुख थामे ॥
 अनीहांरे—सांभले ते नरने नारी । तेतो छुटेरे भव मंसारी ॥

॥ इति श्री तुलसीदासनो रास संपूर्ण ॥

॥ इति श्री शरदनिशा समाना कीरतन संपूर्ण ॥

राधा राधा रटन है । आक ढाक अरु खेर ॥
 तुलसी आ वृज भुमी में । कहा राम सु बैर ॥१॥
 वृंदावनमां जाय के । करलीजे दो काम ॥
 वृज रज मुखमे ढारके । बोलो राधेसाम ॥२॥



॥ रामकवीर ॥



अथ श्री
 ॥ नित्य समाना
 कीरतन ॥



॥ श्री रामकवीर ॥

* ॥ अथ श्री राग सामेरी केदाराना कीरतन ॥ *

* ॥ दोहा ॥ *

सामेरी साहेर उलब्बो । रत्न तणांयां जाय ॥
करम वीना भरे मुढ़डी । संखले हाथ भगाय ॥

* ॥ सामेरी केदारो ॥ १ ॥ *

श्री आ गोकुल आंबो मोर्यो रे । जोवा जईये रे ॥
तेहेनी छांया छे घेर गंभीर रे । सुखीयां थईये रे ॥ टेक ॥
श्रीरे गोकुलमां आंबो रे मोर्यो । वहालो महारो गुणवंतने अनि मीठो ॥
श्रीनंदजीये सुकरीन वाव्यो । आंबो माना जशोदाये मिञ्च्यो रे ॥
आंबो मोर्यो रे ॥ १ ॥

माखा रे पत्रनो पार न जाणु । वहालो महारो चौद भुवन विस्तरीयो ॥
शुक सनकादिक पंखी रे वेणु । आंबो वेद न जाये वरण्यो रे ॥ आं ॥ २ ॥
आरे भूतलमां अमीरम भगवा । वहालो महारो ब्रह्माये जाचीने तेज्यो ॥
नरसंयाचा स्वामी सुफल फल्यो । आंबो विज विनताये वेढ़यो रे ॥ आं ॥

* ॥ सामेरी किदारो ॥ २ ॥ *

मखी तोड़ले तोरण बंधावो रे । अलबेलो आवे ॥
हुं तो मोतीडे चोक पुगावुं रे । मोहन महारे मन भावे ॥ टेक ॥
माह्यर समाणी मलीरे मानुनी । आज महारे मंगल गावाने आवो ॥
थाल भरुरे छग मोतीडे । महार वहालाने वधावुं रे ॥
अलबेलो आवे ॥ २ ॥

मा मा मनेह जणाचु मोरी मजनी । आज महारे हैडे हरखन माय ॥
मोहनजीनु मुखहुरे जोवा । महारो एक पलक जुग जाय रे ॥अ.॥
आज अंगे उलट घणेरो महारी मजनी । हांरे हुं तो नेह भरीने नाचु ॥
नरसेयाचा स्वामी मंदीर पधार्या । ए सपनु के माचु रे ॥अलबेलो.॥

* ॥ मामेरी केदारे ॥ ३ ॥ *

महारे वहालोजी बन मांझ रे । वगाडे रुडी वांमलडी ॥
मेंतो घरमां गँझां नव जाय । वेधि महारी पांमलडी ॥टेक॥
कुंभ विना जल भग्याने चाल्यां । हांरे वेहनी हाथ ग्रही उढरणो ॥
गणु ओछाडी जल गाळ्याने लाग्यां । कुंभ तणी सुध नाहीरे ॥

वगाडे रुडी वांमलडी ॥ १ ॥

झोटडीये वाल्लर्दां हेल्यां । हांरे बे'नी खानमां रेड्यां पाणी ॥
मुरली लेईने दोहवारे बेर्गां । घरमां विसरी आव्यां दहाणीरे॥व.॥
गोरमडां अबनीमां ढोल्यां । हांरे बे'नी महीडे वलोव्यां पाणी ॥
चीर लेईने अनुग्रह वांश्यां । नेतर्गं तणी सुध नाही रे ॥व.॥३॥
भोजन कसनां परमरम भूल्यां । हांरे बे'नी मर्चां मोदकमां भेली॥
माकर वाटीने माक वधार्या । सुंठ मेवैयोमां भेली रे ॥व.॥४॥
गोपीये नयने मिंधुर मार्या । हांरे बे'नी सेंथे ते काजल दीधां॥
नरसेयाचा स्वामी मोर्गली वगाडी । गोपीने ब्रह्मवंत कीधांरे ॥व.॥५॥

* ॥ मामेरी केदारे ॥ ४ ॥ *

रजनी विनी महाराज । अमो धेर मिद आव्या ॥
मंगे सोकलडीनु साल । नमो वरी मिद लाव्या ॥टेक॥
वात करंता वहांणेगं वायां । वहाला माग प्रीत नमारी जाणी ॥

जुड़ा बोला जावोने पग रहो । जुठी नमारी छे वाणीरे ॥
अमो घेर मिद आव्या ॥ १ ॥

नयना तो अनि निंशाये घेयाँ । वहाला महाग काजल कपाले लाख्याँ ॥
पीनांवर प्रभु कहाँरे पालट्याँ । लक्षणे लंछन लाख्याँरे ॥ अमो घेर ॥ २ ॥
जहाँरे नमाग मनडाँरे माने । वहाला महाग तेह तणे घेर जावो ॥
नरसेंयाचा स्वामी कहणानिथि । माहारी मेजमां मेज समावोरे ॥ अ. ॥

* ॥ सामेगी केदारो ॥ ५ ॥ *

मुने गिरधरे वेली कीधिरे । महियर सुं कहोछो ॥
महारी बुध हरीने लिधीरे । महियर सुं कहोछो ॥ टेक ॥
संत नणी मेंडीये रे गईती । बेनी में तो महेज स्वभावे जोयुं ॥
विछुलवर तहाँ रमता रे दीठा । तहाँ थकी मनडुं मोहुं रे ॥

सहियर सुं कहोछो ॥ १ ॥

आगेमें मोट मोटेग रे जोया । हाँरे बेनी ब्रह्मा शंकर सखा ॥
आणे अवमर जादवने रे जोतां । भागी भुख गई तरसा रे ॥ महियर ॥
सर्वे मलीने बैकुंठ वावाने । हाँरे जेणे धाम मुगतनु दीदुं ॥
वंशीविट वृद्दावन जोतां । मुने अवर न लागे मीदु रे ॥ महियर ॥
पग्ब्रह्म परम धामनो रे स्वामी । हाँरे एनु निगुण नाम दृढ गहीये ॥
कहे नहानो एनो त्रिभुवन तारन । सुमरतां केम रहीये रे ॥ महियर ॥

* ॥ सामेगी केदारो ॥ ६ ॥ *

महारु मनडुं मोहुं मेवामीरे । सुंदर शामलीया ॥
तहारा सुमरणथी जाय नासी रे । सुंदर शामलीया ॥ टेक ॥
साची शिखामण देऊ रे आ मनने । हाँरे एतो तेम तेम आङ थाये ॥

माया मोह ममतानु रे बांध्यु । ए जहां तहां उठी धाय रे ॥
सुंदर शामलीया ॥ १ ॥

हुं नवली मन मद भरभानु । हांरे एतो हांक्यु नव हंकलाये ॥
वहालुं ने वेरी थई लाग्यु । ए विषगीत केम वेश्य रे ॥ सुंदर ॥
पहेले एने बहु पोषण कीधां । हांरे जाणे करमे भगति तमारी ॥
सुंडाने में भुंडु चबाह्यु । ए परथम चुक हमारी रे ॥ सुंदर ॥
आतम मनना धणी रे तमो छो । हांरे दुःख अवर कोने जई कहीये ॥
आपणी वस्तुने आप संभालो । भव भटकतां रहीये रे ॥ सुंदर ॥
हुं अपगाधी काई नव जाणु । हांरे हुंतो किंगा वखाणु तमारी ॥
कहे नहानो तमो समरथ स्वामी । मार करोने हमारी रे ॥ सुंदर ॥

* ॥ सामेरी केदारो ॥ ७ ॥ *

तमो महीयर सांभाये सार । सनगुह मन कहे छे ॥
तमो विलम न करो रे लगार । सनगुह मन कहे छे ॥
संनोनी संगत हरनीम कीजे । हांरे बेनी मनमां पलवट वाली ॥
नीरमल गुण गोविंदना गावा । नीरमल नाम वनमालीरे ॥ सत ॥ १ ॥
तीलक तुलमी अखंड धर्मां । हांरे बेनी लोक लाज कुल त्यागी ॥
माया मोह अभीमान तजीने । गुरुवरणे अनुरागी रे ॥ सत ॥ २ ॥
आन देवनी आमा ना करवी । हांरे बेनी परनीवृता धरम पालो ॥
अन उदक अनीन वेर लेवां । अवर अवीदा टाळोरे ॥ सत ॥ ३ ॥
क्षमा दयानु खेडुरे करये । हांरे बेनी सोक संतापना लावो ॥
कडवां वचन ते वखथी भुडां । हैरे बांण थईने वागेरे ॥ सत ॥ ४ ॥
वैश्रदजन तो होय विवेकी । हांरे ते तो संत सबद नीज खोजे ॥

अंतर घटमां थाय अजवाळु । अगम अगोचर मुजे रे ॥सती॥५॥
 धरणी धरने जे मुख नव बोले । हाँरे ते तो वभीचारण कहेवाय ॥
 मुखडुरे तेनु श्वान बरावर । मांस मेला भणी जाये रे ॥सत॥६॥
 भाव भगती भुदरनीरे कीजे । हाँरे बेनी मनमां परतीत आणी ॥
 नानाने नीरभे थई बेठी । परम धामनी वाणो रे ॥सत॥७॥

॥ इति श्री राग मामेरी केदाराना कीरतन मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग विहागना कीरतन ॥ *

* ॥ विहाग ॥ १ ॥ *

कब कर होरे दया ।

काम करोध अहंकारज व्यापे ।

ना छुटे आ माया हो माधोजी ॥ कबकर हो ॥टेक॥
 उपजन बुंद स्वयो जा दिन थे । मोत्र कबहु नही पायो ॥
 पांच चौर संग लोगे फिरन है । ता संग जनम गमायो हो माधोजी॥१॥
 नन मन डम्योरे भोर्सिंग ज्यों भासीनी । लहेरी वार न पार ॥
 गुरु गारुडी मिले नही कबहु । परमयों विषय विकार हो माधोजी॥२॥
 कहेत कवीर आ दुःख कहासुं कहीये । जाने कोई विग्लारे जन ॥
 ज्यो दिदार विकार मव दूर करे । नव मेगे मन माने हो माधोजी॥३॥

* ॥ विहाग ॥ २ ॥ *

अवमर चत्यो रे बजाय ।

मुठी एकमटीयाने मुठी एक कठीया । संगे काहुन जाय हो शणीया ॥

देहड़ी लगी तोरी सगी रे मेहेगीया । फग्मा लगी तोरी माय ॥
 मगहट लगी मव लोक कुटुंबी । पीछे हंस अकेलो जाय हो प्राणीया ॥१॥
 कहां वे लोग कहांरे पुर पाटण । कहां वे मिलवो रे आय ॥
 कहेत कबीर गुनाथ भजी ले । नेगे जनम मनाथ थाय हो प्राणीया ॥२॥

* ॥ विहाग ॥ ३ ॥ *

वे दिन कब आवेगे गमगय ।

जा कारण या देही धरी है । मिलवो अंग लगाय हो माधोजी ॥टेक॥
 मैं जानु पीयाजीसु हिलमिल खेलु । तन मन प्राण ममाय ॥
 या आसन करो परीपूर्ण । ममरथ हो गुराय हो माधोजी ॥१॥
 निशदिन मोकु तो निंद न आवे । जागत रेन विहाय ॥
 मेज हमारी मिंध भई है । जब सोवु तब खाय हो माधोजी ॥२॥
 या आसन सुनत हरि आये । तनकी तपत बूझाय ॥
 कहेत कबीर मिले सुख मागर । बैठो मंगल गाय हो माधोजी ॥३॥

* ॥ विहाग ॥ ४ ॥ *

मेरी अंखीया सुजान भई ।

देवर भरम मसुर संग तजके । हरि पीयु ताहां गई हो माधोजी ॥टेक॥
 मेरे करम कुंवारपणाके । मेटे जान दई ॥
 अब ही निवाज सोहाग दीयो है । चाँये अंग लई हो माधोजी ॥१॥
 जीन जलबुंद या माज रच्यो है । तीन संग अधिक रही ॥
 कहेत कबीर पल प्रेम घटे नही । दिन दिन प्रीत नई हो माधोजी ॥

* ॥ विहाग ॥ ५ ॥ *

भयो मन परोनो दिन चार ।

आजके कालमें उठी चलेगो । लीजे राम संभार हो प्राणीया ॥ टेका ॥
 सोज पर्व तु जीन अपनावे । ऐसो मुन काहु लेह ॥
 ए संसार ऐसो मेरे प्राणी । जैसो धूमर मेह हो प्राणीया ॥ १ ॥
 मीमल केरो फूलज फुल्यो । गरभे कहारे गुमार ॥
 तन धन जोबन अंजलीको जल ज्यों । जान न लागे वार हो प्राणीया ॥
 खोटा साटे खरों क्यों न लीनो । कबहु न कीनो रे साट ॥
 कहेत कबीर कछु वणझन कीना । आयाथा ईम हाटहो प्राणीया ॥

* ॥ बिहाग ॥ ६ ॥ *

(बलैया लेउ) कब देखु राम राय तोहे ।
 अहर्निश आतुर दरशन कारण । ऐसी व्यापे मोह हो माधोजी ॥
 नयन हमारे तुमकुरे चाहे । रतीयन मानेरे हार ॥
 विरह अगन तन अधिक जलावे । ऐसी लेहो विचार हो माधोजी ॥
 अबक्युं न सुनो मेरी दाद गुसाई । मो मन धरे न धीर ॥
 तुम धीर धीर मे आतुर स्वामी । ज्यों काचे भाँडे नीर हो माधोजी ॥
 बहोत दिनोंके बिछुडे रे माधो । अब जन कर हो बधीर ॥
 देह छनां तुम मिल हो रे स्वामी । आतुर वन कबीर हो माधोजी ॥

* ॥ बिहाग ॥ ७ ॥ *

कब करहो रे दयाल । किरण कब कर हो रे दयाल ॥
 चिन तरसे चानककी रे नाई । निशदिन फिरन बेहाल हो माधोजी ॥
 जल बिन मीन कहो कैमे जीवे । तलफ तलफ जीव जाय ॥
 एहो अरज दामकी रे सुनीये । तुम बिन कछु न सोहाय हो माधोजी ॥
 मैं जु दोहागन कहा करी बोलु । विरद संभालो रे तोहे ॥

हथवालो प्रभु तुमसु रे लोनो । दरशन दीजो आय हो माधोजी ॥
छिन छिन आयु घटे तन छोजे । जनम अवरथा रे जाय ॥
कहेन कबीर कव मिल हो रे स्वामी । मिलकर मंगल गाय हो माधोजी ॥

* ॥ विहाग ॥ ८ ॥ *

हो परदेशी-पगेणा तु पीयुने संभाल ।

कहा भयो तोकु खबर ना पँही । लागी ताहे कबाण हो परदेशी ॥
भोम विगनीमें कहारे तुं गनो । कहा कीयो रे तें मोह ॥
लोहा काण मूल गमायो । समजावत हुं तोहे हो परदेशी ॥
निशदिन क्यों तोहे निंद पग्न है । चिनवत नाहिं न तोहे ॥
जमसें बेरी शिरपर बडे । पर हाथे काहे बिकाय हो परदेशी ॥२॥
जुठ पग्पंचे कहा रे तुं गच्यो । उठ काहे रे नहीं चाल ॥
कहेन कबीर अब बिलंब न कीजे । कोने दीडी काल हो परदेशी ॥३॥

* ॥ विहाग ॥ ९ ॥ *

विरहन फिरे नाथ अधिर ।

मर्म बिना कलु समज न वाके । बांझ न जाने पीड हो माधोजी ॥
आ बड विरथा कबनसु कहीये । राम विरह शिर भार ॥
जाहे लागी सोही भल जाने । जे कोई चोट सहारी हो माधोजी ॥
संगके बिछुडे मिलन कैसे होई । सोच करे और काहे ॥
समना रटन रामकुं रे चाहे । नब हरि पीयु मिले आई हो माधोजी ॥
दीन भाव बूझन सखियनकुं । है कोई राम मिलावे ॥
दास कबीर मीन ज्यो नलफे । मिले तो भले सुख पाउ हो माधोजी ॥

* ॥ विद्वाग ॥ १० ॥ *

ए सुख सुपनोरे जान । ए संमार मृगकोरे जलज्युं ॥
 जुठडो होसी निदान हो प्राणीया ॥ ए सुख ॥ टेक ॥
 जैसे सुवा सीमल मेव्यो । तापर पूयोरे वाम ॥
 बहोन जनन करी चंचलगाई । तव उमटी आयो कपास हो प्राणीया ॥
 जैसे रंक सूपनमेरे सजा । अनि सुख भोग विलाम ॥
 जब जाग्य तब कछुए न देख्यो । पलमां हुवो निगश हो प्राणीया ॥
 देही धरीने हरिनो दाम ना कहायो । भुल्यो माया रे मोह ॥
 जुठे माचे हरिनाम न जायुं । ममज न आवी तोहे हो प्राणीया ॥
 कहे जन ज्ञानी सुनो रे नर प्राणी । हजु कछु सोत्र विचार ॥
 मब जग जुग एक हरिनाम माचा । मोले रुदीया मोजार हो प्राणीया ॥

* ॥ विद्वाग ॥ ११ ॥ *

अवर गयो रे गुमार । राम न मध्याने कुलमां रे डमर ॥
 जमर देसी मार हो प्राणीया । अवमर गयो ॥ टेक ॥
 भरमेरे भुल्यो ने नातमे डुल्यो । फुल्यो फरे रे अचेन ॥
 काल अहेढी जडे पग बेढी । गेढी मुँडमें देत हो प्राणीया ॥१॥
 खोया लायाने माचा गमाया । धाया जुठे रे माथ ॥
 घरके धंधा सुझे रे नहीं अंधा । फंदा जमके हाथ हो प्राणीया ॥२॥
 बहोनेक दंभी ने मोटा कुटुंबी । लंबी गवीरे बांध ॥
 पलमां होवे कुटुंब मब रोवे । मोवे जंगल मांश हो प्राणीया ॥३॥
 मदभर मातो फिरे बहु धातो । रातो रामारे रंग ॥
 वेरी ननमें आणे नहीं मनमें । क्षणमें करसी भंग हो प्राणीया ॥४॥

अब जम आये तोहे बांध ले जाये । काहे न जागेरे जीव ॥
गमर नहाना भागेरे जम स्थाना । दाना पूरे पीव हो प्राणीया ॥५॥

* ॥ विहाग ॥ १२ ॥ *

मोहे तोहे लागी कैसे छूटे । ज्यों हीग फौयों नहीं फूटे ॥
तोही मोही जीव शिवकारे बासा । प्रभुजी तुम डाकोर में दासा ॥टेक॥
मोही तोही किट भ्रंगकी नाई । जैसे मरिना ममुद्र समाई ॥
मोही तोही नवल प्रीत बनी आई । मोपे दुरीजन आई दूर हो ॥१॥
मोही तोही देख्या मकल सयाना । हरजी तुम सयान नहीं आना ॥
कहेत कबीर मेरा मन लाग्या । जैसे मोन मिला सोहाग हो ॥२॥

॥ इति श्री राग विहागना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग रामग्रीना कीरतन ॥ *

* ॥ रामग्री ॥ १ ॥ * *

बलिहारी रे नाथ मुने मुकेस मा । तारा चरण थकी अलगो ॥
नाथ मुने मुकेस मा ॥
अमो परमारथ कंझ्ये ना जाणु । तारा नामनां बलग्यां ॥
नाथ मुने मुकेस मा ॥ टेक ॥

* राग रामग्रीना कीरतन पहेला कीरतन ब्रमणे ढोढवीने गावां । रामग्रीना धीज़
कीरतनामो ढोढवानां प्रथम शब्द मुकेलो छे यथा ॥ बलीहारीरे छे नर झीलया रे । आवा हरि
रस कीरतन मार्हि ॥ झे नर ॥

बलीहारी रे वहाले मारे विघ्न हर्या । एवां विघ्न हर्या कंईवार ॥
 वहाले मारे विघ्न हर्या ॥
 गोकलीयुं रेलतुं रे गर्वयुं । वहाले द्विजनी किधी महाय ॥
 नाथ मुने मुकेस मा ॥ १ ॥
 तमोरे अमारे ने अमोरे तमारे । अंतर नाहि लगार ॥
 नरसेयाचा स्वामी एळुं रे मागु । महासा आवागवन निवार ॥
 नाथ मुने मुकेस मा ॥ २ ॥

* ॥ रामग्री ॥ २ ॥ *

बलीहारी रे झेनर झील्या रे । आवा हरिरस कीरतन मांहि ॥झेनर॥
 परलोके पाल्य ना सोहाये । तेतो जीवन मुगन केवाय ॥
 झेनर झील्यारे ॥ टेक ॥

बलीहारी रे भवजल निधि तखा । बीजा नथी रे अवर उपाय-भव ॥
 केशव कीरतन करोरे निरंतर । तमे लज्जा छांडीने गाव ॥झेनर॥
 बलीहारी रे आदेही थीर नही । तेने पढनांनलागे वास-आ देही ॥
 भणे नरसेयो संनो रे लूये । आवा गोविंदगुण भंडार ॥झेनर॥

* ॥ रामग्री ॥ ३ ॥ *

बलीहारी रे अलबेलो आवे । सखी तोग्ण बंधावो रे वार ॥अलबेलो॥
 चौआ चंदनउगट करावो । पधरावो मोरार ॥अलबेलो॥टेक॥
 बलीहारीरे सनेह सबलो धरीये । जेम प्राण जीवन वम थाय-मनेह ॥
 मुखदुं निहालो मखी मोइनजीनु । तेणे त्रिविधीताप मटी जाय ॥आ॥
 बलीहारी रे सुंदर शोभाने । तेतो कोणे कही नव जाय-सुंदर ॥
 भणे नरसेयो प्रापननु फल । जेणे ह्रीय कृष्ण कृपाय ॥अलबेलो॥

* ॥ रामग्री ॥ ४ ॥ *

बलीहारी रे थयु अजवालु रे । ज्यारे उदियो शशीयर भाण ॥ थयु ॥
कीरण जेणे जगजीवन केरी । ते केम रहेमे अजाण ॥

थयु अजवालु रे ॥ टेक ॥

बलीहारीरे मुखडे मोढ़ी रहो । मने लाख्यारे मोहना बाण-मुखडे ॥
सुद्ध ना रहो सुंदर वर जोनां । सखी निहालु चरणने पाण ॥ थयु ॥
बलीहारी रे धन धन जीव्याने । महारे मुग्न साथे नदी काम-धन धन ॥
जनम जनम जुग जीवनजी । मने चरणे गखोने इयाम ॥ थयु ॥
बलीहारी रे गोड़ी ते कोणे कहीये । जेणे अंतर्नो नही वहाल-गो ॥
भणे नसैया संतोरे लूटो । तपो साचेथी वांधोने पाल ॥ थयु ॥

* ॥ रामग्री ॥ ५ ॥ *

बलीहारी रे धन धन मनोने । जेहने कृष्ण उपर छे ध्यान-धन धन ॥
अहरनिश जेणे हस्तिण गाया । तेने चौद लोकमें मान ॥

धन धन मनोने ॥ टेक ॥

बलीहारी रे जेणे हरि गुण गाया । तेतो नरीया कुल वहेवार-जेणे ॥
लज्जारे छांडी ने भक्ति रे मांडी । वांधी हरिजन साथे प्रीन-धन धन ॥
बलीहारी रे सुणतां सुख उपजे । जेहेने कृष्ण श्री अविनाश-सुणतां ॥
नरसैयाचा स्वामी एणीपेर बोल्या । हुंतो हरिजननी करु आश-धन ॥

* ॥ रामग्री ॥ ६ ॥ *

बलीहारी रे मोहन मन वसीयो । तेहनी सी कहु प्रेमनी वात-मोहन ॥
अमो अबला आधीन जीवरे । कोण हमारी जान ॥

मोहन मन वसीयो ॥ टेक ॥

बलीहारीरे अमो तारे नामें रह्यां । तो निरुद्या विना ना रहेवाय-अमो॥
भवनारे बंधन सहेजे वाये । जे तहाग गुण गाय ॥ मोहन ॥१॥
बलीहारीरे आजनो दिवमडो । माहारे प्राण जीवन घेर आव्यारे-आ॥
नरसेयाचा स्वामी प्रीते मलीया । अनिरुद्धा मन भाव्या ॥मोहन॥२॥

* ॥ गमग्री ॥ ७ ॥ *

बलीहारीरे पूरण पामीरे । तहाग चरण तणे परनाप-पूरण ॥
बौद लोकमें कीधां जाणीतां । पडी निरभे छाप ॥

पूरण पामी रे ॥ टेक ॥

बलीहारीरे मन गमनुं कीजे । सखी मोहन माथे आज-मन ॥
लटकेरे ल्हावो लीजेरे मजनी । सरीयां सघलां काज ॥ पूरण ॥३॥
बलीहारीरे गतनते हाथे जडयु । सखी गखोरे प्रेमने पाम-स्तन ॥
नरसेयाचा स्वामी एटलुं रे मागु । तहाग चरणकमलनी आस॥पूरण॥

* ॥ गमग्री ॥ ८ ॥ *

बलीहारीरे आनंद ओघबल्या । रिध मिध रही आंगणे करजोरी ॥
कनकना कलम ढल्या । आनंद ओघबल्या ॥ टेक ॥
अमरीत रमना मेहो उव्या । मन बांछिन फल दीनो ॥
रंगनी रेल प्रगठ हवी चोहोदश । सुरि नर लोक बल्या ॥आनंद॥
प्रेमानंद पूरण सुख आयुं । तनना ताप ठल्या ॥
नरसेयाचा स्वामी महेजे आव्या । सनभुख थईने मल्या ॥आनंद॥

* ॥ गमग्री ॥ ९ ॥ *

बलीहारीरे आनंदनी ऐली । नौतम ब्रेहेमें मारे नाथजी पधार्या ॥
ते दीउडे थई घेली । आनंदनी ऐली ॥ टेक ॥

तरीया तोरण द्वारे बंधावो । पेहेगे नव रंग चोली ॥
कुम कुम केशर ने कस्तुरी । छांद रंग रोली ॥आनंद ॥१॥
सनाथ कीधाँ रे स्वामीजी माहाग । तमाग गुण सा कहीये ॥
नरसेयाचा स्वामी एटलुं रे मागु ।

महाग मंदीर थकी नव जईये ॥ आनंद ॥२॥

* ॥ गमग्री ॥ १० ॥ *

बलीहारी रे हस्ति बेन वाहीरे । सखी गमगरी गाई ॥ हरि ये ॥
गोपी गृहे सुतपनिने छांडी । जोवाने धाई । हस्ति बेन वाहीरे ॥टेक ॥
बलीहारी रे नेपूर काने रे । सखी कुंडल पहेयाँ पाय—नेपूर ॥
टिलडीये सेथोने सेथे रे टिलडी । एश विपरीत शणगार थाय ॥ह.१॥
बलीहारी रे रजनी ते मसदतणी । सखी गमगर्म बाली—रजनी ॥
वचमे वनमाली ले कर ताली । सखी बांहलडी बाली ॥ हरि ॥२॥
बलीहारी रे मानुनीने मान घणु । ते तो गोकुलनी ब्रिजनार-मानुनी ॥
अंतरध्यान हवा हरि तनक्षण । श्री वृदावन मोहार ॥ हरि ॥३॥
बलीहारी रे कामनीने कहान मत्या । ज्यारे मुक्युं छे अभीमान-का ॥
नरसेयाचा स्वामी गम रमे ज्यां । मुग्नरवाहे निशान ॥हरि ये ॥४॥

* ॥ गमग्री ॥ ११ ॥ *

बलीहारी रे सजनी शामलीयो । वहालो ओरोने ओरो आवे—म ॥
मनी वान ते तो वहाली रे लागे । वहालो नयने नेह जणावे ॥

मजनी मामलीयो ॥ टेक ॥

उपरवाडे साद सांभली । भाँणे भोजन ना भावे ॥
मुखनो ग्राम ग्यो मुख माहे । वहालो अमथो उठी वेर आवे ॥म ॥१

आवता जानां हष्टि पडी रे । कहाँन मारो केडेना छांडे ॥
नरसेयाचा स्वामी जुगतु जोईने । समण रंगीलो माने ॥सण॥२॥

* ॥ गमग्री ॥ १२ ॥ *

बलीहारी रे देही पामीमुं कीधं ।
करेकरीने हरि ना संत न पूँज्या । मुखे गमनु नाम ना लीधुं ॥देही॥
महारु तहारु कम्नो हींडयो । मन मायामें बलुंच्यो ॥
जनम जग लगी कपट न मुक्युं । रसनाये बोल्यो ना मिधुं ॥देही॥१॥
जहांथी तुं आव्यो ते नव जाण्युं । काज एकु नव मिधुं ॥
अमृत कचोळां नाज करीने । विष हलाहल पे धुं ॥देही॥२॥
जम तणा जोषम चित न आव्या । नयने थयो नर अंधो ॥
नरसेयाचा स्वामीने नव जाण्या । फोगट कीधो धंत्रो ॥ देही ॥३॥

* ॥ गमग्री ॥ १३ ॥ *

बलीहारी रे पंप झड पाल्यां रे । भूमा की नन सुणे नहीं काने ॥ं पं॥
ओच्छव आवीने उंवे रे अभागी । ते तो सोखीढा साने आवे ॥
पंप झड पाल्यां रे ॥ टेकः ॥
अमृत रसनो स्वाद ना जागे । ललचानो विष पाने ॥
मूरखने परमोध न लागे । ते सुं ममजे साने ॥ पंप ॥१॥
मोटाईये हींडे मरडानो । अफलांणो अभिमाने ॥
नरसेयाचा स्वामीने नहि गाया । ते तो जीवत शान समाने ॥पंप॥२
* ॥ गमग्री ॥ १४ ॥ *

बलीहारी रे धन धन सतगुरुने । जेणे आप्यु रे निरमल नाम-धन०॥

प्रेम भक्तिनी पेर तहां लगी । मरीयां सघलां काम ॥
धन धन सदगुरने ॥ टेक ॥

बलीहारी रे आनंद ओघवत्या । ज्यारे काम धेन घेर आवी-आनंद
बागड गवरीने विद्या आपी । साधे संग सोहावी ॥ धन ॥ १ ॥

बलीहारी रे संत मोभागी रे । जेनी प्रेमानंदसु प्रीत- संत ॥
देह पडे पण नेह न छोडे । तेतो कदीये न जाय अनीन॥धन॥२॥

बलीहारी रे मंगन मंन तणी । सखी कीजे रे तन मन प्राण-संत ॥
नहानो कहेनिःशंक हरि भजीये । तजीये लोक कुल काण॥धन॥

॥ इति श्री राग रामग्रीना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग पंचमना कीरतन *

* ॥ राग पंचम ॥ १ ॥ *

आंखलडीनो चालो रे (२) शामलीयोजी करी गयो रे ।
हवे केम जीबुं रे मोरी माय ॥

मोर पिछ्छ मुगट रे (२) छे सोहामणो रे । कुंडल मोताकारसोहाय ॥

आजने हुं उभी रे (२) आंगणीये आपने रे ।
आंणीवाटे जाता रे हुता कहान ॥

मीठोने मेलावो रे (२) अमने तहां हवो रे ।
वहाले मारे करी रे नयनानी सान ॥ १ ॥

वेण वाहिनेरे(२) वनमें तेढ़ीयांरे । हांजी अमे मुक्यां रे घरना काम ॥
वहालो मारे ग्मे रे (२) आंख मीचांमणी रे ।

हरि हवे हवा रे अंतर्ध्यान ॥२॥

हुंयने साहेली रे(२) जोवा नीमर्या रे । जोया जोया बृंशवन मोशार॥
नरसैयानो स्वामीरे (२) बईमने तहां मत्यो रे ।

धन आहिगढांनो अवतार ॥ ३ ॥

* ॥ पंचम ॥ ३ ॥ *

गोकुलीयु ते गामरे (२) अति ख्लीयामणुं रे ।

तहां छे महारा वहालाजीनो वास ॥

ब्रिजनी नारीयोरे (२) सहु टोले मलीरे । रंगभरी रमवाने आव्या गस ॥
ब्रिजनी नारीयोरे(२) आकुल व्याकुली रे । पूछे कंई दीठारे नंदकुमार ॥

थेई थेई नरन रे(२) करतो आवीयो रे । वहाले मारे कंठे आरोप्यो हारा ॥१
सुंदर जमुना रे (२) जीने कांठडे रे । उगीयो सरद पुनमनो चंद ॥

गममंडलरे २ प्रभुजीये तहां रच्योरे । गोपी मन पाम्यां रे परमानंदा ॥२
एक एक गोपीरे (२) वचमें वालमोरे । हमची खुंदेने बली गाय ॥

वांकेने अंबोडे रे (२) मन बेशाई रह्यां रे । वांका वांका विविध
वाजितर वाय ॥ ३ ॥

वांकावांका वेण रे, बोले रसालुवांरे । वांकावांका गाय रे मधुरं गान ॥
नरसैयाचा स्वामीने (२) जाउ बलीहारडे रे । वहाले महारे
आप्यां रे मुखडां निधान ॥ ४ ॥

* ॥ पंचम ॥ ३ ॥ *

अंगणीये मनोहर रे (२) मोरली वाही गयोरे । हवे केम जीवुंरे
मोरी माय ॥

कालजडांने छेद्यां रे (२) कपटी कहांनुडे रे ।

ते तो मुनें साले रे हैदामांय ॥ टेक ॥

जीवनजीने जानां रे (२) मरी अमो नव गयां रे ।

रह्यां रह्यां गातर गलवाने काज ॥

भाल देखाढोरे (२) कोई भूधर तणोरे ।

सखी हुंतो कहुं छुं मुकीने लाज ॥ १ ॥

वृद्धावन् मोध्यु रे (२) श्यामा महु मली रे । जोयु जोयु जमुनाजीनु नीर

नागी रस भाले रे (२) सर्वे सुंदरी रे । नयने आव्यां भरी भरी नीर ॥ २ ॥

मननो मेलापी रे (२) सखी मने मेलबोरे । ब्रिजमंडल केरो आधार ॥

नरसैयांनो स्वामी रे (२) जो आवी मले रे । करी राखु हैया केरो हार ॥

* ॥ पंचम ॥ ४ ॥ *

ब्रिजनो बिहारी रे (२) अमो वेर आवीयो रे । सा सा धरु रे हुं शणगार ॥

मांगने समारुरे (२) सखी आज मोतीडे रे ।

कंठडे मोहिये एकावलहार ॥ टेक ॥

श्यामाने बोली रे २। सोंहिये अनि घणी रे । पावले झांझरनो झमकार ॥

भाव धरीनेरे (२) वहालाजीने भेटसुरे । हाँरे महारे अंगे उलट अपार ॥

निशाने अजचाली रे (२) सरदनी गनडी रे । उगीयो पुनम केरो चंद ॥

नरसैयाना स्वामी रे (२) मोतीडे वधावीये रे ।

सखी मुने मलीया पूरणानंद ॥ २ ॥

* ॥ पंचम ॥ ५ ॥ *

कहानजी छोगालो रे (२) महारे मन वस्यो रे ।

जा दिन मलीयों जमुना तीर ॥

अंगने उपर रे(२) पीतांवर पामरी रे । महारे पहेघन नवरंग चीरा॥टेक॥
 जल हलतीने रे(२) मोहन मलपति रे । कंठे सोहिये मुगता हार ॥
 महारेने चोली रे(२) नवरंग चमकनी रे । पावले झाँझरनो झमकार ॥
 शामलीयो वगाडे रे(२) सुंदर वांसली रे । सुंदरी ते गाये मधुरां गांन
 मोहनजीने जाणी रे(२) में जोयुं फरी रे । महारे बेढ़लाना थई हांन ॥
 चित मारु चोर्युं रे(२) छबीलाये छंदमारे । महारे जोबनीयानो दन॥
 जीवनजीने जोवा रे(२) मन माहरु चट पटे रे ।

नागर निरखुं ते धंन धंन ॥ ३ ॥

धन धन गोपी रे(२) गोकुल गामनी रे । धन धन उत्तम रास विलास॥
 धन धन लीला रे(२) लक्ष्मीवर तणो रे ।

धन धन गाय रे नरसेंयो दास ॥ ४ ॥

* ॥ पंचम ॥ ५ ॥ *

धंन धंन धंन रे(२) वृदावन भलुं रे । जहाँ छे रमिक प्रेम भरपूर ॥
 जुगल किशोर रे(२) निरंतर वसी रह्यो रे ।

मिट थकी निमेश न थाये दूर ॥ टेक ॥

कालिन्दिना तीरमां रे(२) कुंज सदन विषेरे ।

विलमे महार ग्राण जीवन ॥

दंपति सेजे रे(२) निरखी मोही रह्यां रे ।

सखी मारा त्रपन न थायेरे लोचन ॥ १ ॥

श्री वृदावन रे(२) उत्तम फुलीयुं रे । मदन मनोहर वायुवाय ॥

जेह स्म शिव रे (२) विरंची ना पामीया रे ।

ते रस विथीका वहि वहि जाय ॥२॥

विटप विहंग रे (२) रस पद रस रसां रा। रसीक रंगीली स्त्रीं भरपूर ॥
श्यामाजी सोहंती रे (२) सुंदरी शिरोमणी रे ।

वहालो महागे रनि रे रमणमां मूर ॥३॥

एह रस रसीये रे (२) काँई नव गखीया रे ।

ते तो साँथो संत शिरोमण हाथ ॥

सतगुरु कृपाये रे (२) नरसेंथो पामीयो रे ।

जगमां निमेष न मेले साथ ॥४॥

* ॥ पंचम ॥ ७ ॥ *

कुंजनी केलिरे (२) अनि रस रंग भरी रे। विलमे श्यामा श्याम किशोर॥
कुमुमची मेज रे (२) नव पल्लव थई रे। राजे रे गौर श्याम शिर मोर ॥
निल बसन रे (२) कसुंबीयो कंचवोरे। मणिमय मुगनाफलनो हार ॥
बहि बाजु बंध रे (२) लटके मेखला रे। करपर कंकण मीनाकार ॥१॥
पद पंकज रे (२) नेपूर बीछूवा रे। ते तो मधुरां मधुरां करे गांन ॥
शुक पीक भुंग रे (२) शब्द सोहामणारे। वहालो करे अधर सुधारस पान
आलिंगन लेनां रे (२) पीया मुख निरखनां रे। आनंद अंगे नव समाय
दंपती केल रे अनि रस रंग भरी रे। नरसेंयो निरखि निरखि बलजाय ॥२॥

* ॥ पंचम ॥ ८ ॥ *

सोकलडीधुतारी रे (२) सहिंयर सुं करु रे। परण्यो पोते परघेर जाय ॥
कालानेवाला रे (२) ने ये अनि कर्या रे ।

तेणे दुःखे दाङ्गे रे मोरी काय ॥ टेक ॥

घणा दिन थया रे (२) वहालो मारो घर तजे रे ।

लाग्यो पेली नवल नारीसुं नेह ॥

अमोने उवेखी रे (२) वहालजीये मेहेलीयांरे ।

विसायों ने पूख नणो रे मनेह ॥१॥

पितांबर पाटरे (२) कहां नमो पालटुं रे । पालटी पटोलीमें पंचेकोर ॥

पटोलीने छेडेरे (२) रातो सावलो रे । सावलीये छे कमबी कोग ॥२॥

कामणने गागे रे (२) गोगी तागे कंचवो रे । चंचल चेढा गालो चीर ॥

नरसैयाचा स्वामी रे (२) सबल मवादीया रे ।

तेणे माँग हयाँ रे मनना हीर ॥३॥

* ॥ पंचम ॥९॥ *

रातलडी रमीनेरे (२) कहांथकी आवीयारे । हांरे बलवंता वारणा ठेल ॥
दोषडा चढावोरे (२) अमने सांभले रे । जावो जहां कीधी होय रंगनी रेल
रातां गनां नयणारे (२) अनि निद्रालुवां रे ।

वहाला मारा गनी अधरनी रेख ॥

कुसुमचा हार रे (२) कंठे करमाई गया रे । धुरत धुतारा तहारा वेष ॥१॥

चांदलीयोने उग्यो रे (२) हरणीयी आथमी रे ।

तहां लगी जोईरे तमारी वाट ॥

कुसुमची मेजरे (२) स्वीते सुनी रही रे । वचन ते दीधुंतु सामाट ॥२॥

समीरे सांझनो रे (२) पीयु मने कही गयोरे ।

जाण्युं मेजडीये रमीसुं रात ॥

चार ने पहोर रे (२) निशा तो वही गई रे ।

आव्या जहा हुवो रे परभात ॥३॥

अंबर ने पितांबर रे (२) कहां तमो पालब्धां रे ।

पास्की पटेली पाढ़ी आल ॥

मंदीरे पधारे (२) पेली नारने रे । अमो वेर आवजो वहाला काल ॥४॥

लटपटी पाघरे (२) वहाला सोहामणी रे । अघर तंबोल ने भीना दंत ॥

कईरे सोहामणरे (२) संगे तमे रंग स्प्या रे । माचु बोलो महागकंता ॥५॥

सुंदरी कहोतोरे (२) हुं सोगन करुं रे । भोली भरम मनमां नहि आन ॥

निंदरढीने आवी रे (२) तहारे आंगणे रे । वचन अमारु साचु माना ॥६॥

पंचम आलाप्यो रे (२) पंखीडां स्वर करे रे ।

वहाला मारो प्रगट थयो परभात ॥

नरसैयानो स्वामी रे (२) मंदीरे पधारीया रे । व्रहे घगाने थोड़ी रात ॥७॥

* ॥ पंचम ॥ १० ॥ *

रेन विहाणी रे (२) महारे रस भरी रे । विलसी वहालाजीनी रे संग ॥

अंगोने अंगे रे (२) आनंद उलब्धोरे । वाध्यो वहालाजीमु रंग ॥टेक॥

सफल ने थयुं रे (२) उर वर माहेरुंरे । जेम जेम भीडो भावे नाथ ॥

गमतीने कीधी रे (२) वहालाजीमुं गोड्डी रे ।

धाली कंड परमपर हाथ ॥ १ ॥

नयणा नयण रे (२) रम माहे झीलनांरे । करनां अधुरु मुधारस पान ॥

दरपण ने लेईरे (२) हुं निहालनी रे । मुखडुं सुंदर व्यामल वान ॥२॥

एम एम करतां रे (२) दिनकर उगीयो रे । मफल थयुरे वहाणुं आज ॥

नरसैयानो स्वामी रे (२) अलगो नव करुं रे ।

ए छे महारे ग्राणजीवन ॥ ३ ॥

* ॥ पंचम ॥ ११ ॥ *

जीवन अमारुं रे (२) सुंदर श्यामलो रे । धन धन महाली मंदीर मांह ॥
घडीये ने घडीये रे (२) वदन निहालती रे । महारे हैडे हरख ना माय ॥
धन धन दहाडो रे (२) महारे आजनो रे । हुं सोहागण कीधी नाथ ॥
मोतीडे ते चोक रे (२) आज पुगवसुं रे । मंगल गाऊँ सहियर माथ ॥१॥
तोरण ने स्व्युरे (२) द्वारे उभी रही रे ।

बारी बारी आपुरे आज हुं दान ॥
खीरने खांडुरे (२) घृत तावी करी रे । आगल मुकी मागु मान ॥२॥
आंगणु हमारु रे (२) अति रलीयामणु रे ।

जहां कीधा कुम कुम केरा गेल ॥
नरसेयानो स्वामी रे (२) मन महारे वस्यो रे ।

वहालाजीसुं वाध्यो झाकम झोल ॥३॥

* ॥ पंचम ॥ १२ ॥ *

झाकमने झोल रे (२) विलमतां वाधीयो रे ।

विलमे महारे सुंदर श्याम ॥ टेक ॥

नयणने नयणारे (२) रसमां झीलतां रे ।

एम एम वित्यारे चारे जांम ॥ १ ॥

उर नें उपर रे (२) हुंतो धरी रही रे ।

शामलीया ते चतुर शिरोमण गय ॥ २ ॥

मन ने गमतो रे (२) मनोरथ में क्यों रे ।

बारी बारी जाऊँ रे तन मन प्राण ॥ ३ ॥

वहालो ने महागे रे (२) रंगमां स्म चढ़यो रे ।

ताली ते दई दई मारे हाथ ॥ ४ ॥

मरकलडां करीने रे (२) कंठे वलगीयो रे ।

भुजबल भिख्यो रे मारो नाथ ॥ ५ ॥

अंगो ने अंग रे (२) महारे अमी दर्यां रे ।

कस्तां अधुर सुधासस पान ॥ ६ ॥

नरसेंयानो स्वामी रे (२) में भोगब्या रे ।

सेजड़ीये सुता शामल वान ॥ ७ ॥

* ॥ पंचम ॥ १३ ॥ *

शामलो सनेहि रे अम धेर आवीयो रे ।

आव्यो आव्यो स्मवा माझम रात ॥ टेक ॥

वचन रमालुरे, नयणा निंदालुवां रे । अधर ओपता छे रे गात ॥ १ ॥

मुस्तक मुगट रे, कुँडल झलकनां रे । कंठे कुमुमनी छे रे माल ॥ २ ॥

मुखडुं ने जोनां रे, दुःख मारु विसरे रे । वहालो वाही वेण स्माल ॥ ३ ॥

मंदीरनी मांहि रे, हिंडु हुं मलपनि रे । सजाया रे सकल शणगार ॥ ४ ॥

सुरने समे रे, सेज सोहावनो रे । रंग भरी कीधो रे विहार ॥ ५ ॥

कंठे बांहोलडी रे, वहालोजी धरी रह्यो रे । करनो रसाली रसाली वानाथ

भणे नरसेंयो रे, नयणा अमी भर्यां रे । एम एम करतांथयो परभात ॥

* ॥ पंचम ॥ १४ ॥ *

अंगोने अंगरे, आनंद उलठयो रे । ना आव्यो मारो प्राण आधार ॥ टेक ॥

कांमणने कीधुं रे, कोणे मारा कहानने रे । रस मांहि कीधो छे रे विहार ॥

पंखीयां मधुररे, मधुग स्वर करे रे । केम करी गखुं रे मारुं धीर ॥
 वहालाना विनारे, वेदना कैम ठले रे । बिकल थयुं छे रे मारु शरीर ॥
 सेजने तो रचीरे, मारी एम रही रे । करमाणां ते कुसुम तणा हार ॥
 बाटलडीने जोतां रे, निंद्रामें तजी रे । उभी रही रे मंदीर द्वार ॥
 सुंदरने वररे, तहां लोभी रह्यां रे । अवगुण आव्यो रे मारे मन ॥
 नरसैयाना स्वामी रे, संगे महालती रे । धन धन तेनुं रे जोबंन ॥

* ॥ पंचम ॥ १५ ॥ *

मारु मन मोहुं रे, सखी येणे शामले रे । बीजुं बोत्युं नव सोहाय ॥
 मिटडी भरीने रे, हुं निरखी रही रे । जाणुं रखे ए अलगो थाय ॥
 भुजबल भीडी रे, भलीपेरे भोगवी रे । करता अधर सुधा रस पांन ॥
 रेनीना रसमां रे, वहालोजी विलसीया रे । मुकी मनथी रे अभीमान ॥
 सेजडीये वहालो रे, ऊरे धरी रे । ते सुख कहुं नव जाय ॥
 अंगोने अंग रे वेदना मारी ठली रे । वहालो मारो भीडीयो रुदीयामांहि ॥
 नयणाने नयणारे, वहालोजी मली रहो रे । दरपण लीधुं छे रे हाथ ॥
 मुखडाने सुखे रे, धरी अवलोकतां रे । ते नरसैया केरो नाथ ॥

* ॥ पंचम ॥ १६ ॥ *

मोहनी लगाडी रे, मामुने मोहने रे । रसीये देखाडी रे रंगनी रेला । टेका
 जीवन सधायुंरे, सखी एणे शामले रे । नित नितथाय रे वृदावन खेला ॥
 आडी आडी दृष्टे रे, जुवे वहालो अम भणी रे ।

जुवे मारा नख शिखनो शणगार ॥

मेणुं देसेरे, सासुडी सासरे रे । बाई तारो गिरधर सुं घरबार ॥
 राधाने माधवरे, वल्लभां बेहु बेलडी रे । अंगोअंग नयणामां लपटाय ॥

मोल वस्तुनी रे, मोभे सुंदरी रे । अंगोअंग मज्या नवमत शणगार ॥
 धन धन लीला रे, लक्ष्मीवर नणी रे । धन धन उच्चम गस विलास ॥
 धन धन गोपी रे, गोकुल गामनी रे । धन धन गाये नरसेयो दास॥

* ॥ पंचम ॥ १८ ॥ *

मजनी घजनी रे, आज रे सम भरी रे । विलम्बी वहालाजीने संग ॥
 सुखनो सागर रे, मारे शामलो रे । सुरत समागम वाव्यो रंग ॥
 तालीने देतां रे, आँबर झमकतां रे । प्रगट्यो तहां प्रेम अपार ॥
 आँखलडीने चाळे रे, चित महारुं चल्युं रे । आव्यो मुने हैडाकेगे हार ॥
 प्रीतढीने बांधी रे, पीयुजी सुं अति घणीरे । हैडे मारे हस्तना माय ॥
 मार्दिङ्गने दीधुरे, वहाले वहाल मुंरे । अम थकी अलगोरे नव थाय ॥
 जोवन हमारुं रे मफल मखी थयुं रे । मफल थयोरे मारे शणगार ॥
 नरसेयाचा स्वामी रे, उरवर गम्बीया रे । तेनो मारा प्राणजीवन आधार॥

* ॥ पंचम ॥ १९ ॥ *

कुबजाने कहेजोरे, ओधव एटलुं रे । हरि हीरे आव्यो तारे हाथ ॥
 जतन करीने रे, एनेतुं जाल्वे रे । कहुं नुने शिखामणनी वात ॥
 परभाते उठीने रे, परथम पूछजे रे । जे मारे ते आणी ने आप ॥
 बीजुने काँई रे, भुदरने भावे नहीरे । वहालाजीने मही माखननी टेव ॥
 मेजडी समारी रे, रुडां पुष्पनी रे । नित नित धरजो नवला रंग ॥
 ज्ञाज्ञा ना जगावो रे, जादव गयनेरे । कोमल करमासे एनी देह ॥
 एनो तोआ संग रे, बेनी करवो नही रे । मनमां ना करीयो अहंकार ॥
 शिवने विरंची रे, मोटा महा मुनि रे । कोईने ना जडे एहनो पर ॥

कंस तणी दासी रे, पेली कुबजा रे । तेहने शामलीयो भरथार ॥
नरसेयाचा स्वामी रे, वाई मुने मत्यारे । वहाले मारे उतार्यां भवपार ॥

* ॥ पंचम ॥ २० ॥ *

वहालाने विशेष हे रे, दिवस माग केम जसे रे ।

बाई मुने मोटी विमामण थाय ॥

मेंथी ना रहेवाय रे, मुख दीडा विना रे ।

बाई भारो एक पलक जुग जाय ॥ टेक ॥

कंसनी तो वंश रे, सजनि से ना गई रे ।

अकुर ने मेना थयो पंड रोग ॥

रथने जोडीने रे, समी सांझे आर्वीया रे ।

परभाते तो पढ़यो रे हरि मुं वियोग ॥

नगर धुतारुं रे, वहालाने देखाडीयुं रे । मोहमे हावे मुनिवर केरं मन ॥
हाँ जी हाँ कहीने रे, हा भणसो नहीं रे । नीचुं तो जोईने चालजो नाथ
जमवा ना जासो रे, मामाजीना महोलमां रे ।

मामाजीनो मथुरं नगरनो भूप ॥

हलाहल पासे रे, तमने हेत्वी रे । कहुं हुंतो शिवामणनी वान ॥
मलने अखाडेरे, मामाजीने मारजो रो । नरसेयाने, रुद्रीये रहेजो रूप ॥
एवां एवां वेनरे, कही वनिता वली । हावे क्यारे देखोसुं सुंदर रूप ॥

* ॥ पंचम ॥ २१ ॥ *

तट जुमनानो रे (२) अनि र्लीयामणो रे ।

तहाँ छे माग वहालाजीनो वास ॥

जीवन अमारो रे (२) दचमें वालमो रे । वहाले मारेवाही रे वेणगमाल ॥

तमो तस्वर रे, अमो द्रुमवेलही रे । हाँ मारे हैडा केगे हार ॥
 ममममलोने रे, मोहन मोगगे रे । उपम भमर करे गुंजार ॥
 लहंगी तोरंगी र, लहके हग्निकरमांदडी रे । अमो ब्रेहेणीयाकेगी वेल ॥
 गुणवंत साथे रे, मखी मारे गोठडी रे । हाँ ग्हीयालोरे रंगनी रेल ॥
 चहोदश चमके रे, बनिता बीजली रे । मेहुलो गाजे छे घन धोर ॥
 मेहदल छुट्यां रे, गरुद्यां नव रहे रे । माहे मखी शामलीयानो सोर ॥
 हग्निख जोईने रे, ब्रिजजन महालनां रे । हग्नवे हीँडनां मोढा मोढ ॥
 नगर्मेयानो म्वामी रे (२) मखी मारे मन वम्यो रे ।

बहाले मारे पूर्या रे मनना कोड ॥

* ॥ पंचम ॥ २२ ॥ *

महिंयर समाणी रे, महु टोलेमली रे ।

हाँरे बेनी गाईये गोविंदजीना गीत ॥
 जेम जेम गीझेरे, बाल्म आपणो रे । तेम तेम कीजे रे तेसुं प्रीत ॥
 बालोजी विवेकी रे, कोई एक भातनो रे । हाँरे तेनी केहि विधी कीजे मेव
 पनिवता नागी रे, कोईने पेखे नही रे । एवी एनी अजब अनेरी टेवा ॥
 संत सोभागी रे, भच्छेजो महेश्वो रे । हाँरे बेनी लागुरे तेहने पाय ॥
 बातडीनो कहे रे, पोयाजीना पंथनीरे । हाँरे तेने हैडां यादां थाय ॥
 पीयुडोजी जेनो रे, होय परदेशमांरे । हाँरे नेनी रहनां रेणी विहाय ॥
 बहालाने वियोगेरे, बाई मरवुं भलुं रे । ग्वे पीयुजी सुं अंतर थाय ॥
 मोहामण धणी छे रे, आ संमारमांरे । हाँरे नव जाणे बहालाजीनी वान
 केही विधी कीजे रे, ते संगे गोँडडीरे । हाँरे नव कीजेरे तेनों मंगात ॥
 प्रीतडी डगावेरे, आपणा पीयुनीरे । हाँरे बेनी त्यारे थाये उतपात ॥

आपन तो अबला रे कोँडीने नव धीरीये रे ।

हांरे बेनी त्यारे वरते कुशलात ॥
नहानाकेरास्वामी रे, द्वारकादामजीरे। हांरे जेने आयुं रेनिर्मलनाम ॥
अहर्निश गाईये रे, समस्थ शामलोरे। हांरे वालों आपे रे अविचलगम ।

* ॥ पंचम ॥ २३ ॥ *

द्वारकाना वासी रे, अवमरे आवजोरे । गणी रुक्षमाणि केग कंथ ॥
दुष्ट ने दुयोधन रे, लाघ्यो मने पीडवा रे ।

प्रभु मारा चोदशन्याळु तारो पंथ ॥ टेक ॥
मॉड ताणीने रे, शुं सुता शामला रे । आळम मोडीने उठो आज ॥
लक्ष्मीजी तलांसे रे, नमारा पावला रे ।

अमपर महेर करो महाराज ॥ द्वारका ॥ १ ॥
छपन कोड जादव रे, प्रभू नमो तणा रे । माथे बलिमद्र सरीखा भ्रान ॥
नगमिंह रूपे रे, हरणाकंश मास्थियो रे । वहाले मारे उगायो प्रह्लाद ॥
ग्राह थकीने रे, गजने मुकावीयो रे ।

बहाले मारे सुधनवानी कीधी सहाय ॥
गोपीजन काजे रे, (२) गोवर्धन धारीओरे ।

वालामारा दावोनब पीधो दोउ हाथ ॥
विषने केडीने रे (२) विषीया करी रे ।

वहाला मारा उगायो चंद्रहाम ॥
काळीनारा नाथ्यो रे, जरासंघ जीनियो रे ।

ते बल क्यारे, गयुं महाराज ॥ द्वारका ॥ ३ ॥

वसमी वेलाये रे, वहारे चडो विडुला रे। धाजो धाजो छत्रपति महाराज॥
असवारी करजो रे, ओ पेला गरुडनी रे।

नरसैयो विनवे वारंवार ॥ द्वारका ॥४॥

* ॥ पंचम ॥ २४ ॥ *

पाढ़ीने बलाचो रे (२) गजा रावण जानकी रे।

जानकी छे गढ़े लंकानो काल ॥ टेक ॥

एक एक सपनु रे (२) स्वामी मने आवीयुं रे।

रंदापाने पामी मंदोदरी नार ॥ पाढ़ीने ॥१॥

लंका केरा कोट रे (२) रावण तहाग ध्रुजीया रे।

कांगरे कंई चढ़ीया छे वांदरने गिँछ ॥ पाढ़ीने ॥२॥

वांदरने गिँछां रे (२) रामे दल भेलां कयाँ रे।

महिं छे योद्धा हनुमंत लक्ष्मण वीर ॥ पाढ़ीने ॥३॥

बाढ़ीयोने भेली रे (२) रावण त्वारी वांदरे रे।

वरम उखेड़ी नांख्यां छे उंधे मुर ॥ पाढ़ीने ॥४॥

बाई मीरां कहे छे रे (२) गिरधर लालने रे।

संतोने कंई देज्यो अमरापुर वास ॥ पाढ़ीने ॥५॥

* ॥ पंचम ॥ २५ ॥ *

जुवानीने दहाडे रे (२) हरि समर्या नहीं रे।

मोहुं मोहुं पर दारासुं मंन ॥

काँईक ते मोह्यो रे (२) कामनीना कल्पमां रे।

बली कंई जोद्वा चाल्यो धंन ॥

पांचने पचीसरे (२) गया परपंचमांरे। आव्या पेला साठीवाला दंन ॥

सीतेरने सुधी रे (२) काँई समज्यो नही रे ।
 नवरे ओलखीया अशण शण ॥

नयणे नव सुझे रे (२) गले बहु नाशिकारे ।
 दुट्ठाने शिथल थयुं छे तन ॥

चरण न चाले रे (२) कर गही जेष्टिका रे ।
 बलनी कँई मेववा चाल्यो वंन ॥

मुखडामां दंत रे, एके दीमे नही रे । तोहे पापी उदर मागे अब्र ॥

नर्सेयानो स्वामी रे, सुखमें सांभले रे । जो होय पूर्व जनमनुं पून्य ॥

॥ इति श्री पंचमना कीरतन मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग कडखा-मिधुडो ॥ *

— — — — —

* ॥ मिधुडो ॥ १ ॥ *

जीरे गत रहे जाहे रे, पाळ्ली घट घडी । माधु पुरुषने सुई न रहेवुं ॥
 निंदाने परहरी, समर वा श्री हरी । कृष्ण तुं कृष्ण तुं एम कहेवुं ॥टेक॥

जीरे जोगीया होय तेणे, जांग उपामवा । भोगीया होय तेणे भोगलडवा
 वेदीया होय तेणे, वेद संभामवा । वैष्णवज्ञने केवल कृष्ण कहेवा ॥ग.॥

जीरे कविजन होय तेणे, मदग्रंथ मोधवा । दानार होय तेणे दान कखां ॥
 पनित्रिना नारीये, पीयुजीने पूछवुं । वचन कहे ते तो शिश धगवां ॥ग.॥

जीरे आपणे आपणा, धर्म संभालवा । मन क्रम वचन ते मेल टाली ॥
 भणे नर्सेयो तमो, पनित पावन मदा । चम्गे गम्बो मुने वागी वागी ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ २ ॥ *

जीरे म्हेल पीतांवरा, अंबर माहेरुं । सूर उगे केम सूई रहीये ॥
मासु जुठी वेर ननदी अदेखी छे । कंथ पूछे तारे शुं रे कहीये ॥टेक॥
घेन दोहवी रे घेर, वाढरुं टलवले । महीरे वलोववुं आज मारे ॥
लोंकनी लाज लोपी लक्ष्मीवरे । काळे कोण आवमे पाम तहारे ॥म्हेल॥
जीरे कंठथी कुमुमना, हार कम्पाई रह्या । दीपक जोन ते क्षीण थाये ॥
पंखीयां शब्द करे अनि सुंदर । गायन पंचम गग गाये ॥ म्हेल ॥
जीरे तुं तारे मंदिरे, प्रेमथी पोहीयो । माह्यरे मंदीरें दूर जावुं ॥
नरमैयाचा स्वामी, मेल पीतांवरा । हवे बीजी वारे हुंतो नही रे आवुं ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ ३ ॥ *

जीरे पलंग पहानी करी, कुमुम माळवडे ।

हरिना वेहु का बांधे पछे लाज लोपी ॥
जोउ महारे मंदीथी कोण मुकावमे । शुं कम्मे पेली शोक्य गोपी ॥टेक
जीरे तुं वनमालीने, हुं वन वेलडी । नीर ता मींचे तारे सिद गोपी ॥
भमर मकांद्र ते, कमल वामे वमे । कमल मांहे रहे तन सोंपी ॥पलंग॥१॥
जीरे प्रीतनो करनामे, प्रेमना पात्रसुं । तन मन प्राण म्हेज सोंपी ॥
भणे नरमैयो जेम जेम रीस उतरे । तेणी पेर शीख देजो रे गोपी ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ ४ ॥ *

जीरे धन्यतुं धन्यतुं, एम कहे श्री हरि । नरमैयातुं मारो भक्त साचो ॥
मे'ली पुल्लातन, मखी रे वेषे थयो । ताहेरा प्रेमथी हुं रे नाच्यो ॥टेक॥
जीरे मुजमां तुजमां, भेद नही नागरा । मानतु माह्यरी वेद वाणी ॥
हजु परतीत ना उपजे तुजने । मैं तुने मोकल्युं यादु पाणी ॥धन्य॥

जीरे मोमालुं कीधुं ते, केम गयो विमगी । हार आप्यो परनक्ष भूप ॥
 चौद लोकमें मारे तुज समोको नही । नाह्यरु माह्यरु एक स्थ ॥धन्य॥
 जीरे नाह्यरो अक्षर, गायजे मांभले । तेना कुटुंब महित पावन थाय ॥
 भणे नरमेयो मीठा बोली शुं गीञ्चवे । तारे कर जोडी कृष्णजीमम खाय॥

* ॥ मिंधुडो ॥ ५ ॥ *

मोगरे शुंरे मोहि रह्यो शामला । हार आपो जश स्यात वाधे ॥
 कहेशे नागगे, नाम कहोनुं गातो हतो । कृष्णजी तुने कोई न आराधे ॥
 अल्या सारीपानिना, लोकमवेमल्या । जेनी सार करमो तेनी पास थामे ॥
 प्रीतने पामे नरसैयो बीतो नथी । पण नाहयगे यश जगदीश जासे ॥
 रजनी सर्वे वहीगई, लज्जा राखो नही । जोन क्षिण क्षिण थई जाय दीवा ।
 केशवा कंठथी, माला परीकरो । आगेपो नरमेयानी रे ग्रीवा ॥मोगरे ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ ६ ॥ *

हारने कारणे शुं बिलंब वामा करे । नहिरे कौम्नुभ मणि बिद्रुम माला ॥
 उजला पुष्पने सुत्रने तांतणे । तेने शुं मोहि रह्यो नंदलाला ॥ टेक ॥
 उंचने मुकीने, नीचने अनुमर्यो । जोई नहि जादवा जान दासी ॥
 राजानी दीकरी, रसमणी परहरी । कंसनी कुवजा धेर वासी ॥हारने ॥
 रजनी अलपरही लज्जाराखु नही । जोंत क्षिण क्षिण थई जाय दीवा ॥
 केशवा कंठथी, माला परीकरो । आगेपो नरमेयानीरे ग्रीवा ॥हारने॥

* ॥ मिंधुडो ॥ ७ ॥ *

आपरे हार वसुदेव सुन नंदना । आपरे आप तुने लाज थोडो ॥
 कंसना भयथकी, नामी गोकुल गयो । रह्योरे आहीरडांसुं प्रीत जोडी
 अल्या गरज भाटे, मा वाप तें बे कयाँ । सूर असुर मुनि सर्वे जोतां ॥

कंमनो वध कयो, काम तारूं सर्यु । ब्रिज बापडाने मेहेल्यां रे रोनां ॥१
भगति करे आहीग्नो, तुं नव हवो । तो मुने हार तुं केम आपे ॥
भणे नरसैयो हवे, रजनी थोडी रही । हार आप तस्कर कां मंतापे ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ ८ ॥ *

जीरे टेव तुजने पडी, दिनप्रतिपालशा । कंथ कमला रहो संत सामे ॥
लाड पालो तेनो, पाड शो मानीये । हाथ जमनो होय मुख मामे ॥
गज तणी वहारे, गरुड मुकी धाइयो । ग्राहना मुखधी तें छोडाव्यो ॥
धायो नारणीया, नाम लेनां हरि । अधम अजामेल टबक तायो ॥१॥
द्रौपदी केरी लाजने काणे । द्वारकांथी धस्यो एक शामे ॥
पांच पांडव तणी, प्रीतने कारणे । दूत थई आवीया दुष्ट पामे ॥२॥
इन्द्रनी कामघेन, कोड कमी रही । गोपीनुं गोसस चोरी पीधुं ॥
शवगीना बोरमां खाद झाझो जब्बो । त्रिष्णि तणा वृदमां मान दीधुं ॥३॥
भूपनुं नोनरुं भाव विना रहुं । प्रेमने पास्खे परम ढाह्यो ॥
भक्तनी शुंपडी, जगथी उंची करी । भाजीने भोजने तुं ज मोह्यो ॥
बिरह तारुं वहु, संत गाये महु । नव टले नाथजी वेद वाणी ॥
नरसैया रंकने झाँखना ताहेगी । तार अलबेलडा दीन जाणी ॥५॥

* ॥ मिंधुडो ॥ ९ ॥ *

अखिल वृदावन, अखिल ब्रिज सुंदरी । अखिल अवनेश्वर गम धारी ॥
अखिललीला रहे, स्व स्मण रंगे रमे । अखिल मधुग तें त्रिलोक न्यारी ॥
हंस सासम रमे, मोर मक रंद तहां । अखिल कोकिला नहां बोले कीर ॥
मंद सुगंध समीर शीतल वहे । अखिल कालिन्दीना सुभग नीर ॥१॥
अखिल गोपी गोप, ग्वाल गौवालहु । अखिल मोरली मधुरी घुन गाजे

राधिका राधिका रटन अखिल करे । निज नाम निज मंत्र निज ॥
घरम साजे ॥ अखिल ॥२॥

मुरुन ज्यारे संचरे, शेष सुखामने । आद नागयण नाम धारे ॥
वैकुंठ वासि वैकुंठ महायक मदा । ग्रस मेहेली बहालो क्षणुना जाये ॥
ब्रह्मा शंकर मती, मनक आदे यती । पवन पर बैम ना तहांज थाये ॥
निगमने आगम शेष अनुदिन रटे । अखिल नगमैयो ते रमनी माहे ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ १० ॥ *

ध्यान धर ध्यान धर नंदना कुंवरनुं । जेणे अखिल भुवन आनंद पामे ॥
अष्टमहासिद्धि ते, द्वार उभी रहे । देहि नणा दुस्कृत मवें वामे ॥
जीरे मोरना पीच्छनो, मुगट मस्तकधर्यो । मकरकृत कुंडल करण झलके ॥
नीलवट निलक ते, सुभग केमर तणा । कंठ मुक्ता फल हार ढलके ॥
जीरे प्रेमना नयनते, सुभग आनंद भयाँ । दीन पर दया आणीने जुवे ॥
रम भयाँ गनडां, कवि केम वर्णवे । कोटि कंदर्प जोतां ज मोहे ॥
जीरे पीतांबर पलवट, कटिटट रुचिर छे । उभेला त्रिभंगी बेण वाये ॥
कदमनां ब्रुमतके, राधिका रम भरी । गिरधारी संग आल्यापी गाये ॥
जीरे मोर्खीनी धुनी सुनी, बनिना व्याकुल थई ।

गोपीका केरडां बूँद आवे ।

नगमैयाने मन, आनंद अति घणो । अभय नहां पृष्ठ लैई वधावे ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ ११ ॥ *

विहार चग्नि रखे कोणे आपता । भूतल नगमैया काज गखो ॥
ताहेगी कृपाथकी, ए रम अनुभवुं । अव जंनने नव दाखो ॥
निर्मल निरगुण नागयून निरंजन । कामिया बुद्धि तुने कामी पेखे ॥

ताहेरी लिलाम, अनुभवे वर्णवे । ते कोटि दुरजंन समजाण लेखे ॥
 जीरे गोपी गुण आग्ना प्राणपनि पीयुजी । एरे अध्यात्म रहेज अलगा ।
 भक्त मनोस्थ भक्त हेत कारणे । गोपीचा बांहि गोविंद वलग्या ॥
 जीरे सतगुरुशब्द विश्वास जे चिनधरे । जीवन मुक्ति ताहरे नाम द्वारे ।
 चार मुगनि गिद्धि मिद्धि मेवा करे । जनमो जनमे मानवावतार रे ॥
 शुक सनकादिक आदि महामुनि । ते तो बिहे छे रे गर्भ धरतां ॥
 धन धन जीवन नरसेयाकेरहुं । वली वली अवतरुं कृष्ण कहेनां ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ १२ ॥ *

तहागी गाय गोपी गोपवछना चरणनी । रेण सर्गजी नारे पाये लागु ॥
 गुल्मलता द्रुमलता वायम औषधी । तृपत थयो रे हुंतो कंई न मागु ॥
 ब्रह्माजी एवडी उपमा, गोपने नवधटे । अमोरे आहीरडां कंड न जाणु ॥
 भोरे भावे भमुं, गोवालामां रम् । विधिनिषेधते कंई न जाणु ॥
 ब्रह्माजी विश्वकर्मानो वहेपार छे नमने । अमोरे पीडारीडां वनवासी ॥
 ताहेग चरण इच्छे सुग महामुनि । पार न पामे गद्या विमासी ॥
 एहवुं कही ब्रह्माजी ब्रह्मपदन गया । कृष्णजीये कीधुं अभिमान हस्वा ॥
 नरसेयानो स्वामी जेहने कृपा करे । तेहने नव दे अभिमान कर्वा ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ १३ ॥ *

हरि तमो दयाशील, हुं दीन दामोदर । जुत्रो दिनानाथ रुदे विचारी ॥
 चरणने शरणे आव्यो कृपानाथजी । करने संभाल गोपाल महारी ॥
 हरि तमो देवना देवछो देवकी बालक । भक्तपालक एह विरद तहारुं ॥
 एवुं जाणी जेम घटे तेम कीजीये । अवर अदाप नहि कांइ मारुं ॥

माहेग कर्मना भाल्वसोभूधग । नहिनो पतितपावन तहारुं बिरुदजासे ॥
 छोडनां नांहि छुटा शरणांगता । छांडमो तो उपहास थासे ॥
 वैर भावे करी, हनी तमे पूतना । जमना दृथी तें निवारी ॥
 माम की नाम ते, नरकथी छोडवी । तुं विना कोण तारे मोगरी ॥
 द्रौपदीनां तमे अंबर पूरियां । थापीयो ध्रुव अविचल आगे ॥
 एहेबुं जाणी नरसेयो, नाम तहारुं जपे । राख चरणे रखे लाज लागे ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ १४ ॥ *

ताग दामना दामनी, नित्य संगत विना । अष्ट थाय भूधरा मंन मारुं ॥
 दुष्टनी संगते, दुष्ट द्रष्टे करी । श्रवण कीर्तन नव थाय तारुं ॥
 जीरे विषपाने पेला, दुरिजन दोहेला । विषपान करनां तन तेज हनसे ॥
 तुजथकी वेगलो, तेनी संगत करे । जन्म कोशीतणा सुकृत हरसे ॥
 जीरे अमृतनी उपमा, साधुने नव घटे । राहुनी दुष्टता नव गङ्ग जेहेणे ॥
 प्रल्हादे नारदनी गर्भ संगत करी । वश कीधा वैकुंठनाथ तेहेणे ॥
 जीरे चार मुक्तीतणी, जुगत छे जुजबी । ते मांहि नाहेरा नवरे राचे ॥
 बेहु कर जोडीने, नरसेयो वीनवे । जनमो जनम तारी भक्ति याचे ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ १५ ॥ *

साधो माचे भजो, चरण गोविंदना । मानवी देह ते तत्व कहिये ॥
 कृष्ण कृष्ण कहो, वलि वलि कृष्ण कहो । कृष्ण कहेनां सउ सुखलहिये ॥
 कृष्ण मेवातणी, अमर इच्छा करे । मूढ थया मानवी कंडे न जाणे ॥
 निगम निरंतर, जेनी स्तुति करे । धन्य रे धन्य जे कृष्ण माणे ॥
 वहालो घेर घेर परवरे, गोपीयां उर धरे । विड्लो वंन चारे रे गैयां ॥
 नरसेयानो स्वामी, माहेरे मन वस्यो । वश करी राखुं वैकुंठगय ॥

* ॥ मिठुडो ॥ १६ ॥ *

हुं रे सौभागणी, कृष्ण माथे धणि । देवना देव ते दाम जाणे ॥
कोटि ब्रजांडनो, नायक दायक । पूरण ब्रह्म मुने प्रेम आणे ॥टेक॥
महाग सुकून घणा, पांच पतंग हण्या । जे मोहन मूरते मीट मांडी ॥
अनेक सुखे सहु, प्रभुनी पासे रहुं । ना जाउ नाथना चरण छांडी ॥१
भक्तिनो मागर, मुक्तिनो आगर । नंदना कुंवरने हुंरे पामी ॥
धर्म धूरंधर, श्रीवर सुंदर । भले मलगो रे नसैंयानो स्वामी ॥हुंरे॥२

* ॥ मिठुडो ॥ १७ ॥ *

अल्या भूलमा भूलमा, भक्तिभूधगतणी । कारमी माया जोई कारे हरख्यो
स्वप्रनी वानमां, शुं राची रह्यो । प्रेम हृषे करी हरि नरखो ॥ अल्या ॥
शाने तें देह धरी, समर्ने श्रीहरि । आव्यो संमारमां शुरे करवा ॥
मायानी जाळमां मोह पामी रह्यो । अवनीपर अवनर्यो भार भखा ॥
भक्ति कारण जोने, भूधर देह धरे । भावे भरवाडनी छाश पीधी ॥
शंकर उगारीने, भस्मांगद मारियो । आपी कैलाश उमियारे दीधी ॥
लोकनी लाज, मरजाद ते परहगे । नीरभे धडने हरि गुण गावो ॥
मनना मनोरथ, पूर्णे मावजी । तजी संमार वैकुंठ जावो ॥अल्या॥
देह दमन पट कर्मथी वेगळो । साधनवालो जो जम जागे ॥
नसैंयाचा स्वामि, सबल वशभक्तिने । अवर उपाय नहीं देह त्यागे ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ १८ ॥

(देवा) आद्य तुं मध्य तुं, अंत्य तुं त्रिकमा । एकतुं एकतुं एक पोते ॥
अखिलचो ब्रह्म ब्रह्मादिक नव लहे । भूरचा मानवी अन्य गोते ॥
गवि शशि कोटि नव, चंद्रिकामां वसे । हष्टि पहोंचे नहीं खोज खोले ॥

अर्क उद्योत ज्यम, तिमिर भासे नहीं । नेति नेति कही निगम ढोके ॥
 कोटी ब्रह्मांडना, ईश धरणीधरा । कोटि ब्रह्मांड एक रोम जेनुं ॥
 मर्म समज्या विना, भर्म भागे नहि । मगुण स्वरूप निर्गुण एनुं ॥
 ए नथी एकलो, विश्वथी वेगलो । सर्व व्यापिक छे शक्ति जेनी ॥
 अखिल शिव आद्य आनंदमय कृष्णजी । सुंदरी गधिका भक्ति तेनी ॥
 वेद ए वाननो, भेद लाधे नहीं । तेनुं हारद ते कोक जाणे ॥
 शिव मनकादिक, देव मुनि नारद । पूरण ब्रह्मानुं ध्यान आणे ॥ देवा ॥
 ते पूरण पुरुषोत्तम, प्रेमदा शुं रमे । भावे शुं भामनी अंक लीधो ॥
 जे रस वृज तणी नार विलसे मदा । मखी रूपे ते नरसंये पीधो ॥

* ॥ पंचम ॥ १९ ॥ *

ध्यान धर हरि तणु, अल्पमति आव्यसुं । जे थकी जन्मनां दुःख जाये ॥
 अवर धंधो करे, अरथ काँइ नव मरे । माया देखाडीने मृत्यु वहाये ॥
 सकल कल्याण श्री कृष्णना चरणमां । शरण आवे सुख पार होये ॥
 अवर बेपार तुं, महेत्य मिथ्या करी । कृष्णनुं नाम तुं राख म्होये ॥
 पटक माया परी, अटक चरणे हरी । वटक मा वान मुगनांज माची ॥
 आशनुं भवन आकाश मूढी रच्युं । मूढ ए भूळथो भीन काची ॥
 अंग जो बन गयुं, पलिन पिंजर थयुं । तोय नथो लहेतो श्रीकृष्ण कहेवुं ॥
 चेतरे चेत दिन, चार छे लाभना । लींघु लहेकावनां गज लेवुं ॥
 ससम गुण हरिनणा, जे जने अनुमर्या । ते तणा सुजशनो जगत बोले ॥
 नरसंया रंकने, प्रीत प्रभु शुं घणी । अवर वैपार नहि भजन तोले ॥

* ॥ मिंधुदो ॥ २० ॥ *

प्रेमरस पाने तुं, मोरना पीछंधर । तत्क्षनुं टूपणुं तुच्छ लागे ॥

दुबला होरनुं, कूथके मन चले । चतुर्घा मुक्ति नेओ न मागे ॥
 प्रेमनी वात परीक्षित प्रीछ्यो नहीं । शुरुजीये सप्तजीने रम संताड्यो ॥
 ज्ञान वैगम्य करि, ग्रंथ पूरे कर्यो । मुक्तिनो मारग मीधो देखाड्यो ॥
 मारीने मुक्ति आपी धणा दैत्यने । ज्ञनी विज्ञानी वह मुनिरे जोगी ॥
 प्रेमने जोग तो, ब्रजनणी गोपिका । अवर विला कोई भक्त भोगो ॥
 प्रेमने मुक्ति तो, परम वलभ मदा । हेतुना जीव ते हेतु त्रूठे ॥
 जन्मो जन्म लीलारम गावनां । लहांगनां वहाण जेम द्वार छूटे ॥
 में श्रद्धो हाथ गोपिनाथ गस्वा तणो । अवर बीजुं काँईये न भावे ॥
 नरसैयो महामनि, गाय छे गुण कथी । जनि मतिने तो स्वप्ने न आवे ॥

* ॥ मिथुडो ॥ २१ ॥ *

हरि हरि रण कर, कठण कलि कालमां । दाम बेसे नहो काम सरशे ॥
 भक्त आधीन छे, श्याम सुंदर सदा । ते ताग कारज मिद्ध करशे ॥
 अल्प मुख मारुं शु, मृदु फुल्यो फरे । शीशपर काल रह्यो दंत करडे ॥
 पामर पलकनी, खवां तुजने नहीं । मृदु शुं जोडने मृदु मरडे ॥२०॥
 प्रौढ़ पापे करी, बुद्धि पाली फरी । परहरी थड शुं ढाळे वक्ष्यो ॥
 ईशने ईरणा छे नहीं जीवर । आपणे अवगुणे रहोरे अलगो ॥
 परपंच परहरो, सार रुदए धरो । उचरे हरि मुखे अचल वाणी ॥
 नरसैया हरितणी, भक्ति भूलीश मा । भक्ति विना बिजुं धूलधाणी ॥

* ॥ मिथुडो ॥ २२ ॥ *

जागीने जोउं तो, जगत दीमे नही । उंघमां अटपटा भोग भासे ॥
 चित चैतन्य विलाम नद्रुप छे । ब्रह्म लटकां करे ब्रह्म पासे ॥टेक ॥
 पंच महाभूत परि ब्रह्म विषे उपन्यां । अणुं अणुं मांहि रह्यो रे वक्षगी ॥

फूलने फल ते तो वृक्षनां जाणवां । थडथकी ढाल ते नहि रे अलगी ॥
 वेदनो एम बदे, श्रुतिसूनि शाखदे । कनक कुंडल विषे भेद न्होये ॥
 घाट घञ्चा पछी, नामरूप जूजवां । अंते तो हेमनुं हेम होये ॥जा०॥
 जीवने शीव तो, आप इच्छाए थया । च्व परपंच चौदलोक कीधा ॥
 भणे नरसैयो ए तेज तुं तेज तुं । एने ममर्याधी कङ्क संत मीध्या ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ २३ ॥ *

यदुपति नाथ ते, मित्र छेनम तणा । जाओ बेगे करी कृष्ण पामे ॥
 प्रित पूरव तणी, हेने धमशे हरि । मनना मनोरथ सफल थासे ॥
 धेर बालक सहु, दुःख पामे बहु । अन्नने वस्त्रथी रहे छे उणा ॥
 निरधन सरजोयां, पुन्य कीधा विना । कर्मना दोषते आवी पुण्या ॥
 जदुपति जादवो, भक्तिवश माधवो । करशे करुणा प्रभु दीन जाणी ॥
 गोमती म्नानथी, कोटि अघ नाशमे । निरखनां कृष्णने प्रेम आणी ॥
 कृष्णने हलिमलि, सीघ आवो फरी । जाणमे दुःख अंतरजामी ॥
 विनति मनमां धरो, आलम परहरो । सहाय थासे रे नरसैनो स्वामी ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ २४ ॥ *

मांभलो भामिनी, कान धरि कामनी । कवण कहावुरे हुं कुपण पापी॥
 त्रिभुवन नाथने, महिपति माधवो । केम बोलाय त्यां वात चांपी ॥
 दिवम झाङ्गा थया, बालापणने गया । नृपति नव जाणेरे प्रित जुनी ॥
 दुर्बल रंक हुं, भिक्षुक बापडो । नव लहुं चोकमी खोयी चुनी ॥
 उग्रमेन अकूर, ओधव छे तहां । बलिभद ने अनिरुद्ध पामे ॥
 कोटि जोद्वा जहां, उभो रहीश कहां । कोण आवी म्हारो हाथ महासे ॥
 जडित रत्नो मणि, कांनि भामे घणी । निमर न आवे तेनी ज्योति पासे ॥

त्यां केम बोलि शकुं, वेण वदनो थको । धमण धमतो सहुं श्वासो श्वासे ॥
मौन बेसी रहो, सुख दुःख सहुं सहो । भोगवो करम जे भाग्य चोट्युं ॥
दुर्घिन लोक ते, छोने लबना रहे । नरमैना स्वामीनु विरद मोटुं ॥

* ॥ सिंधुडो ॥ २५ ॥ *

स्वामी साचुं कहुं, बोलबुं नव रहुं । कंथना वचन ते वेद वाणी ॥
भवनणुं नावते, भक्ति भूधर तणी । तेह हुं प्रीछुं स्नेह आणी ॥
नयि हरि वेगला, भक्ति भावे मल्या । रायने रंक ते एक धाटे ॥
लबपनि कोटिवज मनना माणे रनि । शक सख्ती तहां नथी रे साहे ॥
ब्रह्मण्य देव दयाल श्री कृष्णजी । निज जन जाणिने सुदू लेशे ॥
प्रितनी रीन ते, जाय नव विसरी । बाललिला तणा चरित्रि कहेशे ॥
नथी कई ओढ़वा, भेट लेई जवा । केम करी जाणशे कृष्ण कामी ॥
बृज नथी आपणुं, वदन लजावशे । निरखनां लाजे नसैयानो स्वामी॥

* ॥ मिंधुडो ॥ २६ ॥ *

वीननि बली कहुं, भेटलावी दउं । पोनिये नांदुल गाँड बांधो ॥
जाणशे थोडे धणु, भाव भोजन तणुं । धन्य ए कृष्णसुं स्नेह माधे ॥
भिलहीनां बोरते, भावे आरोगीयां । जुदुं आहीरनु अन्न लीधुं ॥
भक्ति विदूरनी, भाजी भावे जम्या । भृपनुं नौतरुं पालुं कीधुं ॥
पेरे पेरे पांडवना, कष्ट निवारीयां । भक्ति कारण काँइ दुष्ट मार्या ॥
उचने निचनुं, एने छे पासखुं । पनिन अधर्मि कंइ कोटि नार्या ॥
भक्ति वश विछुलो, संत माथे मल्यो । समोवडने रे नव चुके टाणे ॥
संत समरे तहां, आवी उभो रहे । भक्तना मन तणो भाव जाणे ॥

जाओ वेगे करी, निरखो मुकिनपुरी । धन्य धन्य तासणी स्नेहन्यालो ॥
नर्सैना नाथने, निरखो निश्चय करी । कामनिये कंथने बहि ज्ञात्यो ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ २७ ॥ *

चालियो वाटमां, ज्ञानना घाटमां । मित्र मोहनतणुं नाम लेनो ॥
धन्य ए नार, अवनार सुफल कर्यो । कृष्ण कृष्ण मुख एम कहेनो ॥
मागवुं मृत्यु, प्रमाण छे प्राणीने । लोभ कीधो तहां प्रीत तूटे ॥
कहुं में अबला, सुखे बेसी रहो । मागतां तो वधो मर्झ छूटे ॥
मागियुं में नथी, शुं मुखे कहुंकथी । भोगवुं करम जे भाग्यलाव्यो ॥
श्रीपनिनाथे मुने, रंक मगजावीयो । एम कहेनां द्विज द्वार आव्यो ॥
आवी उभो रह्या, कंठ गद गद थयो । कोटि सूरजसी ज्योत भासे ॥
उर दया आणीने, हरिजन जाणीने । पोलिये जई कहयुं कृष्ण पासे ॥
मंदीर तेढीया, चालीने भेटीया । त्रिविधिना ताप ते मर्व नाडा ॥
हेम मिंहासने, लेई बेमाडीया । ताणनां विप्रना वस्त्र फाट्यां ॥
तेल फुलेल मरदन कगवियां । सुद्ध उष्णोदके स्नान कीधुं ॥
कनकनी पावडी, चरण आगळ धरी । कृष्णे चरणोदक शिश लीधुं ॥
पुनिन पीतांबर, पहेखा आपियुं । कनक थाले पकवान दीधां ॥
भावतां भोजन, कृष्ण माथे कयां । लीधुं आचमन ने कार्य सिध्यां ॥
कृष्णे पलंग पर, पोने पधारविया । दधि सुना विजणे वायु भगतां ॥
सत्यभामादिक, नारी निरखी रही । नर्सैनो नाथ पद सेव कर्ता ॥

* ॥ मिंधुडो ॥ २८ ॥ *

भाग्य जो जो भाई, कृपण भिक्षुकतणुं । रक्षमणी आदि महुनार बोले ॥
हलधर जोगते, भोग पोहाँचाडीया । आज अमरीषथी अधिक तोले ॥

आ कृष्ण रूप ते, प्रकटयुं स्यां थको । वस्त्र मेलां दिशे कर्म फूट्यो ॥
 नेत्रने दुर्लभ, सेज रमानणी । वश करी नाथने पाप छूट्यो ॥
 अंग अति कमकमे, धमण म्होडे धमे । उधरमने बली नाक लूतो ॥
 जोजो कौतक हरि, देह दशा फरी । कृष्णने कृष्णने संग सूतो ॥
 पोटिने उठीया, स्नाने बेसारीया । बदन एवालवा निर दीधुं ॥
 कनक झारी भरी, शितल जल आपियुं । कनक कटो रे ते पाणी पीधुं ॥
 श्रीमुख बोलिया, कहोने रे बांधवा । नमो ब्रह्मचारी के गृह धर्म कीधो ॥
 कुशल छेवाल गोपाल महु नम तणां । भाग्य मोटुं मने चिन लीधो ॥
 गृहस्थना धर्ममां, हुंय बलमी रह्या । हुंने मारी बली गत्य भूल्यो ॥
 मित्र सुदामानी सुद्ध लीधी नही । कामनी केफमां हुंज छुल्यो ॥
 मांदिप गोरने, घेर आपण भण्या । धन्य धन्य दिवम ते मफल कहाव्यो ॥
 एक रेणी रह्या, बनविषे आपणे । शरणां भागतां मेह आव्यो ॥
 अन्न लीधा विना, भूख्या बेसी रह्या । गोगणीये आपणो पीडजाणी ॥
 विसरी गयुं छे के, वीर नने मांभरे । मांदिप गोरनी अचल वाणी ॥
 भाभीये भेटजे, मोकली मुज भणी । भावसु भाई ते लागे मोठी ॥
 संकोचनो गांडडी, विप्र आश्री धरे । नरमैना स्वामीये नजरे दीडी ॥

* ॥ मिठुडो ॥ २९ ॥ *

छप्पन भोग ने कवण तांदुल त्यां । आपतां उर मंकोच आवे ॥
 जेरे जोईये ते आवी मले कृष्णने । तांदुल भेटने तुच्छ कहावे ॥
 धाई लीधा हरि, मुठी तांदुल भरो । प्रेमे आरोगीया तुसि पासी ॥
 इन्द्र कुबेरथी, अधिक वैभव कर्यो । रुक्मणी करग्रह्यो शिश नामी ॥
 एक रह्यां अमो, एक बीजा तमो । भक्तने अदलक दान करतां ॥

प्रेमदाये प्रेमनां, वचन श्वां कह्यां । हाथ माह्यो त्रिजी मुटी भरतां ॥
वनिता वचन ते, विप्र समज्यो नहीं । चालवा घरभणी शिखमाणी ॥
नरसेने नाथे दुरबल पणु टालीयुं । मित्रना दुःखनी भीड भाँगी ॥

* ॥ सिंधुदो ॥ ३० ॥ *

विप्र चाल्यो बछो, कृष्ण माथे मली । चित्तमां सोच विचार करतो ॥
आप्युं काँइ नहीं, पीडजाणी नहीं । ते तणो सोच रुदीयेज धरतो ॥
अष्टमा मिद्दि तणी, रिद्दि नव निधि धणी । संपतमां रह्यो भोग माणी ॥
कामनी कथने हुं, द्वारका आवीयो । अमतणी पीढतो नव रे जाणी ॥
बाल गोपाल जे, बाट जोनां हुशे । तेहने जाई अमोशुंय कहेशुं ॥
मित्र मोहन तणुं, हेत ज्यारे पूछशे । कामनीने उत्तर केम देशुं ॥
एम चिंता करे, नेत्रथी नीर झरे । कर्मनी वान मन माँहि धारी ॥
नरसेनो नाथ ते, अति घणो लोभीयो । पीतांचरी पण लीधी उतारी ॥

॥ इति श्री कदखा-सिंधुदो मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग प्रभातना कीरतन *
— — — — —

* ॥ प्रभात ॥ १ ॥ *

मैं जोगी जश गाया बाला । मैं आनंद जश गाया रे ॥
अलख अलख करना योगी । ब्रिज मंडलमें आया रे ॥ टेक ॥
भिक्षा लेकर आई नंदगणी । शंकर शीश ढोलाया रे ॥
नगन देखकर गये मंदीरमें । ले कर अंवर ओढ़ाया रे ॥ १ ॥

क्या कर्न मैया तेरा पाट पीतांबर । क्या करु कंचन माला रे ॥
 मुख दिखलाव तेरा बालकजीका । गुरुजीये मोहि बनाया रे ॥ २ ॥
 दो कर जोरी कहे नंदराणी । सुनहो शंकर राया रे ॥
 बालक नहीं दिखलावुं दिगंबर । बालक जात ढराया रे ॥ ३ ॥
 जाकी द्रष्टि सकल घट व्यापी । सो क्युं जाय ढराया रे ॥
 मेरा स्वामी अंतरयामी । नुम किन भुवन छुपाया रे ॥ ४ ॥
 बाल कृष्ण ले आई नंदराणी । शंकर शिश नमाया रे ॥
 चरण धोई चरणासृत लीना । शिंगी नाद बजाया रे ॥ ५ ॥
 सुफल फलो मैया बालक तेरा । देखी शंकर मुख पाया रे ॥
 धन्य जशोदा धन्य नंदजी । कहेन कबीर पद पाया रे ॥६॥

* ॥ प्रभान ॥ २ ॥ *

आजु मखी नरसिंह जन्म लियो । भक्तनके आनंद दियो ॥टेक॥
 हिरनाकुस प्रह्लाद भक्तको । ले के खंभमें बन्हि दियो ।
 राम कहाँ तेरो मोहि बनावो । ऐमो कहके खड़ग लियो ॥आजु॥१॥
 मोमें तोमें खड़ग खंभमें । मव मांहि प्रतीन कीयो ॥
 खंभ फोरि हिरनाकुम मारे । देवन जयजयकार कीयो ॥आ॥२॥
 लियो गोद प्रल्हाद भक्तको । हस्तकमल शिर फेरि दियो ॥
 माधोदास आश नरहरि के । सकल बिघनको दुरि कियो॥आ॥३॥

* ॥ प्रभान ॥ ३ ॥ *

आज महामंगल त्रिभुवनमे । खंभ फोरि हरि प्रगट भये ॥
 देवन मुदिन निशान बजाये । सुख उपजे दुःख दूरी गये ॥ टेक ॥
 असुर मारि प्रल्हाद उबारे । संतनके आनंद भये ॥

श्रवण सुन्यो नयने नहि देख्यो । अदभूत रूप अनूप भये ॥आ०॥
 नगहरि रूप धर्यो अविनाशी । भक्त हेतु अवनार लिये ॥
 ब्रह्मादिक जाके निकट न आवे । लक्ष्मीजी देख चकित भये ॥
 खंभ फोरी हरनाकंस मारे । जन प्रलहाद उबार लिये ॥
 कहेत कवीर सुनो भाई मंतो । घर घर मंगल चार कीये ॥आज॥

* ॥ प्रभात ॥ ४ ॥ *

देखो बाबा राम कलंदर । कैमी बाजी लाया रे ॥
 आद अंत मध सदा निरंतर । अलख निरंजन राया रे ॥टेक॥
 लंका जैमी पार बधाई । ममुदर जैमी खाई रे ॥
 रावण मार्यो विभीषण थाप्यो । फिर गई राम दुढाई रे ॥दे. ॥१॥
 मथुरामें हंरि गोकुल आये । प्याले दृध पिलाया रे ॥
 नंदबाबाकी धेन चराई । जशोमनि सुन कहाया रे ॥दे. ॥२॥
 केम पकड कर कंम पछाडे । और पूनना धाव्या रे ॥
 बाकी मरभर कौन करत है । जाका हलधर भाई रे ॥दे. ॥३॥
 फिकर फिकर कर मब जग जागे । फिकर कलू नहीं पाई रे ॥
 भणन नामदेव सुनोहो त्रिलोचन । गम कलंदर आया रे ॥दे. ॥ ४ ॥

* ॥ प्रभात ॥ ५ ॥ *

गम मंत्र जप गम मंत्र जप । पाख्यति शिव धाय रे ॥टेक ॥
 काशीपुरिमें मकल जीवनकुँ । शंकर नाम सुनावे रे ॥
 शेष महस्त्र मुख रटन निरंतर । अजहुं पार न पावे रे ॥ गम ॥१॥
 गमनाम प्रलहाद प्रतिज्ञा । ध्रुव अविचल पद पावेरे ॥
 मोहि गम पांडव हितकारी । द्रुपदिना चीर बदायारे ॥गम॥२॥

गमनाम गज गुणका तारी । अजामेल पद पाया रे ॥
 अंत काल व्यापे नहीं कबहुँ । गमनाम कहावे रे ॥ राम ॥ ३ ॥
 गमनाम हनुमंत प्रनिज्ञा । कर मुद्रा दिखलावे रे ॥
 सोही गम जानकी आभृषण । नामदेव जश गावे रे ॥ राम ॥ ४ ॥

* ॥ प्रभान ॥ ६ ॥ *

जागरे जंजाली जीवडा । यहनो मेला हाटका ॥ टेक ॥
 तान मात सुत भाई बंधवा । यहनो मेला घटका ॥
 अंत समे तुं चला अकेला । जैसा बठोही बाटका ॥ जागरे ॥ १ ॥
 गजकाज मव छुठे धंधा । जरा पीनांबर पाटका ॥
 महेल खजाना रहा भंडाग । लादा भांडा काठका ॥ जागरे ॥ २ ॥
 थोरीके घर गदहा होगा । घरका भया न घाटका ॥
 लालच लोभधरी शिर गठरी । जेसे घोडा भाटका ॥ जागरे ॥ ३ ॥
 गत दिवस युं खोई गमाया । भजन न कीना गमका ॥
 कहेत कवीर सुनो भाई साधु । जम कुटे ज्यूं टाटाका ॥ जागरे ॥ ४ ॥

* ॥ प्रभान ॥ ७ ॥ *

क्या मोया गफलतके माने । जाग जाग उठ जाग रे ॥ टेक ॥
 उमदा चोला बना अमोला । लगा दाग पर दाग रे ॥
 दो दिनकी जिंदगानी जगमे । जगत मोहकी आगरे ॥ क्या ॥ १ ॥
 तन सरोयमें जीव मूसाफिर । कर्त्त बडा दिमाग रे ॥
 रैन बमेग करले डेरा । चला सबेरा ताक रे ॥ क्या ॥ २ ॥
 कर्म कांचली लगी चित्तकुं । भया मनुष्यते नाग रे ॥
 पडता नाहिं समझ सुखमागर । चिना प्रेम वैराग रे ॥ क्या ॥ ३ ॥

साँई सुमरे सो हंस कहावे । कामी क्रोधी काग रे ॥
कहेत कबीर दया सतगुरुकी । प्रगटे पूरण भाग रे ॥क्या ०॥४॥

* ॥ प्रभात ॥ ८ ॥ *

होंसदार होई रहो मुमाफिर । कजाक फिरता गली गली ॥टेक॥
ईस नगरीमें तीन चौर है । जाय पांचसों खबर करी ॥
ताके बीच ठगन बन चोकम । लेन खबर तेरी घडी घडी ॥होंस॥
ईस नगरीमें दश दशवाजे । खिरकी जाकी नवी बनी ॥
नया द्वार नवी है खिरकी । अंन समेकी सुध विसरी ॥ होंस ॥
जब जम आवे यह मरायमें । पान पान तोहि लूट लई ॥
जबरदस्त भटीयार पचीसों । छिन लेई तेरी शिर गठरी ॥होंस॥
जीन सोया तीन मूल गंवाया । जागा निनका गह भली ॥
कहेत कबीर निशा मनवाले । भोर भया उठ मिल झुली ॥होंस ॥

* ॥ प्रभात ॥ ९ ॥

प्रान ममय मधुबनके भीतर । मोहन बेनु बजायोरी ॥ टेक ॥
मोर मुकुट कर मुरली सोहे । मधुर मधुर धुनि लायोरी ॥
तनं तनं तननं तननं तं । सोवन मदन जगायोरी ॥ प्रान ॥१॥
बंसिकी टेर सुनि त्रिजवनिता । करि मिंगार उठि धाईरी ॥
झनं झनं झननं झननं झं । नेपूर शब्द सुनायोरी ॥ प्रान ॥२॥
हिमरितु गृमभ जाढ़वडलगे । रसना बचन न आवेरी ॥
सनं सनं सननं सननं सं । पवन माधुरी आवेरी ॥ प्रान ॥३॥
सरं सरं सरनं सरनं सं । आरत बचन सुनावेरी ॥
सूरदास व्याकुल ब्रज बनिता । द्वंद्वत श्याम न पावेरी ॥ प्रान ॥४॥

* ॥ प्रभात ॥ १० ॥ *

लक्ष्मण गम कौशल्या सुत माई । अंगनामें गोद खेलावे ॥
 स्थुवर लक्ष्मण भग्न शत्रुहन । पलना माँहि झुलावे ॥ टेक ॥
 घरमें पौर पौरमें वाहर । पावन चलन सिखावे ॥
 हाथ लिये बुंदीके लाडु । कागभुशंडी चुगावे ॥ लक्ष्मण ॥ १ ॥
 जस्कम पाग केसरीया जामा । हरमि निरमि यहिरावे ॥
 क्रीट मुकुट मकराकृत कुँडल । उर बनमाल मोहावे ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥
 कटि किंकिणि नूपुर धुनि बाजे । दुष्क चाल मन भावे ॥
 शेष महसु मुख रटन निरंतर । माँ वाको पार न पावे ॥ ल ० ॥ ३ ॥
 शिव मनकादि आदि ब्रह्मादिक । नारद ध्यान लगावे ॥
 तुलसीदास धन धन कौशल्या । मुख चुंचन लाड लडावे ॥ ल ० ॥

* ॥ प्रभात ॥ ११ ॥ *

आज ममी मपनेमें देखे । गम लघन मिया जनक लल्ली ॥ टेक ॥
 बे दोउ ढाढे मिंव पोर पे । में अपने गृहमे निकमी ॥
 रूप देखी व्याकुल भई सजनी । मानो कालभुजंग ढमी ॥ आज ॥
 क्या छ्यां बरणी श्रीरामचंद्रकी । अमृतवृद घश उगमी ॥
 मानो लक्ष्मण धनुष चढावे । ज्यें बादल बिजूली चमकी ॥
 क्रीट मुकुट मकराकृत कुँडल । चंदन खोर लिलाट लमी ॥
 लाल कमान बान कर सोहे । पीतांबरसो कमर कसी ॥ आज ॥
 ब्रह्माजाक्षे पार न पावे । ध्यान धरे वाको जनी सनी ॥
 तुलसीदास गंध्रव गुण गावे । जन्म जन्मका हरि विपती ॥ आज ॥

* ॥ प्रभात ॥ १२ ॥ *

प्रात ममे उठि जनक नंदनी । त्रिभुवन नाथ जगावे ॥
 उठो नाथ ममनाथ प्राणपनि । भूपति भवन बुलावे ॥ टेक ॥
 हस्त कमल चरणनपर लोटे । लय लय हगन ल्यावे ॥
 सोईपद परस गौतमकी नारी । अभय परम पद पावे ॥ प्रात ॥ १ ॥
 उरज्जि माल गले मोतियनकी । कर अंगुरी सुरज्जावे ॥
 धुंधर वारे अलख बदनपर । पागका पेच मंवारे ॥ प्रात ॥ २ ॥
 कनक कलश मस्तु जल झारी । दानुन दान करावे ॥
 कमल नयन मुख निरखि रामको । आनंद उर न ममावे ॥ प्रात ॥ ३ ॥
 मंतजननकी एहि बिनती । आरत वचन सुनावे ॥
 कान्हरदास सिया खुबरके । हरखि निरखि गुण गावे ॥ प्रात ॥ ४ ॥

॥ इति श्री राग प्रभातना कीरतन मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री मंगल आरतिना कीरतन ॥ *

—~~~~—

* ॥ राग भैख ॥ १ ॥ *

भजो भगवंत भूल मन जावो । मनमा जनमको एहीरे ल्हावो ॥
 गुरु मेवा करी भक्ति कमाई । ताथे मनमा देहीरे पाई ॥
 ता देहीकुं वछे देवा । मो देहि करीले तुं हरजीकी सेवा ॥ १ ॥
 मेवक सोई जो लागे मेवा । ताकुं मिले निरंजन देवा ॥
 मतगुरु मिले तो खोल कपाटा । बहुर न आवे योनीरे वाटा ॥ २ ॥

अब न भजे भजेम कब भाई । आवेगो अंत भज्या नहीं जाई ॥
 जो हरि भजे सो तत्वमारा । फिर पिछनायगो नरवारं बारा ॥३॥
 जब लगी जरा रोग नहीं आया । जब लगी काल डमे नहीं काया ॥
 जब लगी हीन पड़ो नहीं वाणी । तब लग भजिले तुं सारंगपाणी ॥
 आ तेरे अवसर आ तेरी बागी । घट ही भीनर सोच विचारी ॥
 कहेत कवीर जीन भव हारी । वहु विध कह्यो रे पोकार पोकारी ॥५॥

* ॥ भैख ॥ २ ॥

जागो जागो कमलापति । रत्न जडिन मंगल आरनि ॥टेक॥
 तुम जागो जागे मब कोई । चौद भुवन उजियारा होई ॥
 तुम जागो भक्तनके ईशा । तुम जागे जागे तेनिसा ॥३॥
 जागे धरती और आकाशा । मैरु मंडल जागे कैलासा ॥
 जागे ब्रह्मा जागे इन्द्रा । सोल कला जागे रवि चंद्रा ॥२॥
 जागे उद्धव और अकर्षा । हनुमंत जागे लेई लंगूरा ॥
 नारद शारद करत खवामी । चरण तलामे कमलारे दासी ॥३॥
 शंख चक्र गदा पद्मज धरो । अजर अमर अविनाशी करो ॥
 भणत श्रिलोचन भयो अब भोरा । तुम माहेब हम मेवक तोरा ॥४॥

* ॥ भैख ॥ ३ ॥ *

मंगल आरनि रामजीकी कीजे । चरणकमल मुख निरखत लीजे ॥
 मंगल आद मदा मुख राजे । दशरथ सुन वेर नोबत बाजे ॥टेक॥
 कनक भुवनमें रत्न सिंधासन । तहाँ बैठे सियारामजी सुखासन ॥
 क्रीट मुगट कर धनुष विराजे । जनक सुना लिये आरति साजे ॥१॥
 भरत शत्रुहन लछमनभाई । सियारामकी सोभा वरणी न जाई ॥

धंया तालु पखावज बाजे । पवन तनय जाके सनमुख गजे ॥२॥
 सिंघासनपर मियार्घुर्गई । आरनि कमल कौशल्या माई ॥
 मंगल मंगल भया उजियाग । मेघवरण तन नयन रसाला ॥३॥
 पीत वसन वैजंनीमाला । मणिमय भूषण पढ़ेरे लाला ॥
 जन रोहिदास अरज करी गावे । विमल भक्ति सियारामजीकी पावे ॥

* ॥ भैरव ॥ ४ ॥ *

राधा माधो सुमिरो मेरे भाई । जा सुमिसन तन ताप नमाई ॥टेक॥
 राधा नहां माधो माधो नहां राधा । छांडो मकल तुम मनकीरे बाधा ॥
 आदिहु अंत मध्य है सोई । बिन विवेक पावे नहीं कोई ॥१॥
 सो खेले कालिन्दी तीरा । निजगुण सगुण एक शरीरा ॥
 चरण कमल चिन राखो धीरा । निजगुण गावे दास कबीरा ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ ५ ॥ *

राधा मोहन भजरे भाई । ए सुमिरे बिन गत नहीं पाई ॥
 राधा मोहन मोहन राधा । ए समर्था बिना मिटे न बाधा ॥१॥
 राधा मोहन परम सनेही । निश्च एक प्राण दो देही ॥
 विहारत है सदा जमुनाके तीरा । ए जश गावे दास कबीरा ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ ६ ॥ *

रे मन ए कहेकेकी नाहि । जहां राधा मोहन केलि कराहि ॥टेक॥
 सदा वसन वृदावन माँहि । छिन एक कबहुं अंतर नाहिं ॥
 ब्रज जुथ जुथ मली राम रचावे । मन मोहन तहां बेनुं बजावे ॥१॥
 प्रेम मगन होई राधे गावे । मन मोहन तहां शिश नमावे ॥
 श्रीकृष्णे हमी दीनो बीरा । नित्य विहार रम रहे कबीरा ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ ७ ॥ *

आद मनातन हरि अविनाशो । सकल निरंतर घट घट वासी ॥
जोनि स्वरूप जगनाथ कहावे । सो वृदावन मोगली बजावे ॥१॥
पूरण ब्रह्म पूरण बखाने । चतुरानन शिव अंत न जाने ॥
एक निरंजन ध्यावे ज्ञानी । पूरण पूरानम निर्वाण वाणी ॥२॥
ल्लेचन श्रवण रमना नही नाशा । चरणकमल विन तन प्रकाशा ॥
निगकार निज नाम कहावे । सो जशोदा लीये गोद खेलावे ॥३॥
कोटि ब्रह्मांड एक गेम प्रकाशा । गवि शशी कोटि नष्कर्त्ति प्रकाशा ॥
दाना भुक्ता विश्व मब जीवे । सो माना पयोधर गही पीवे ॥४॥
शुक सनकादिक करन विचाग । ब्रह्मा शेष न पावे पाग ॥
एक निरंजन पावे नही ज्ञानी । सो मुख चुंबन नंदजीकी रानी ॥५॥
इन्द्र आदि देव लौ लावे । कमला महित कोई पार न पावे ॥
नारद मुनि कहावे मयाना । सो गोकुल लिला देखी भूलाना ॥६॥
अरुण कुवेर वरुण जाही ध्यावे । मुनि मनमा कोई पार न पावे ॥
शब्दानित निज नाम धगवे । सो जमुना नट धेनु चगवे ॥७॥
अंजन गहित मोहनी माया । माना पिना सुन बंधु न जाया ॥
विश्वभू निज नाम कहावे । सो घर घर गोरस जाई चोरवे ॥८॥
योग ध्यान हरि स्वर्जे न आवे । कोटि यज्ञ तें हरि दूर रहावे ।
सो नवनीन माना पे मांगे । मुख दधि लेप देहोरीयों लागे ॥९॥
पृथ्वी तेज पवन अप छाया । पांच तत्त्व मली जगत उपाया ॥
चिंतामणि रिद्धि मिद्धि निपाई । सो नंद महेरको कुंवर कन्हाई ॥१०॥
पदा अनुष्ठल नले धगवे । बैठ मखा खंघ आप चढ़ावे ॥

ले लकुटि दधि भाजन फोडे । पीवन मही कहान शिश ढोले ॥१०॥
 स्वें लोक पाले और मारे । तीन भवन एक पलमें तारे ॥
 काल ढरपे जाके बल भागी । सो अनुखल बांधे महतागी ॥११॥
 अगम अगोचर लीला धारी । सो गधा मंग कुंज विहारी ॥
 जे रस गोकुल गली बहायो । सो रस ब्रह्मादिक नहीं पायो ॥१२॥
 काग किट होई ब्रिजमें आयो । अविगतकी गत आप भूलायो ॥
 जाकी गनि लखे नहीं कोई । निरगुण सरगुण कहावे सोई ॥१३॥
 अखिल ब्रह्मांड स्वंडित हो जावे । ब्रिज अंगना मली सुजशही गावे ॥
 प्रेम रूप गवालन मंग खेले । दरशन मात्रमें अघ मब पीले ॥१४॥
 सोबढ़ भाग मकल ब्रिजवामी । जाके मंग खेले अविनाशी ॥
 दाम कबीर गुण कहा बघाने । गोविंदकी गनि गोविंद जाने ॥१५॥

* ॥ भैरव ॥ ८ ॥ *

तेरा जन घर घर काहेकुं जाचे । जो मन लागे श्रीपति साचे ॥टेक॥
 जाके चरण मकल निधि चेरी । ताका दाम काहे करे फेरी ॥
 जो जन जगन पिनाकुं जाने । भुख मुयेका भय क्यों आने ॥१॥
 पूरणहार मकलकुं पूरे । ताका दाम रहे क्युं अधुरे ॥
 कहेत कबीर तेरा दाम न मागे । उंचे कुलकुं लंछन लागे ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ ९ ॥ *

राम ठगोरे हुं ठग लीनी । सबतें छोडाई अपने बस कीनी ॥
 लोक वेदकी संक्या नाशी । हरदे वेधि स्त्री अविनाशी ॥१॥
 देह गुहे अभिमान नसावा । परम पुनीत परमपद पावा ॥
 कहे कबीर हरि चरण निवासा । रामनाम भन भयारे उजासा ॥२॥

* ॥ भैख ॥ १० ॥ *

अब में राम सकल निधि पाई । आन कहुं तो राम दुहाई ॥टेक॥
एही चिन चाख सबे स्म दीय । रामनाम सा अवर न पीय ॥
और स्म पीये होय कफ बाता । हरि रस है सकल सुख दाता ॥१॥
दूजा वणज कलु नहीं कीना । रामनाम सो तत्वरे लीना ॥
कहें कबीर जे हरि रस भोगी । ताकुं मिल्या निरंजन जोगी ॥२॥

* ॥ भैख ॥ ११ ॥ *

नर जानेरे मेरी अपर काया । घर घर बात दुषोरकी छांया ॥
मारग छांड कुमारग जांवे । आपन मरे औरनकुं रोवे ॥
जल बुदबुद ऐसा संसारा । ऊपजन वणसत नाहिं न वाग ॥१॥
कलु एक कीया कलु एक करना । धंधा बहोन निहायत मरना ॥
पांच पांखडी एक शरीर । राम कमलदल भमर कबीर ॥२॥

* ॥ भैख ॥ १२ ॥ *

गुरु मेरे गारुडी में विषके माना । अबका उचारो गुरु समरथ दाना ॥
मदन भुजंग ढमे मेरी काया । एक तृष्णा दूजे दारूण माया ॥
नागिन एक टिपोरे जागे । जो मोवे तेह उड उड लागे ॥१॥
बाघिन एक जो मोहि सनावे । पूरे गुरु बिन कोन बचावे ॥
कहे कबीर जो गुरु गम जागे । वाकी नगरीमें डंक न लागे ॥२॥

* ॥ भैख ॥ १३ ॥ *

धन सतगुरु जीने दीया उपदेशा । भव दुबत गही काढे केसा ॥टेक॥
साकुतथा सो हरिजन कीना । रामनामका सुमरन दीना ॥
लोक वेद कुलकान बहाई । संत मिले तब संन कहाई ॥१॥

परम परमत कंचन होई । लोहा न वाकुं कहेमा कोई ॥
 कंचन मोघे मूल बेकाई । पारमका गुण देखोरे जाई ॥२॥
 स्वांत बुंद कदलीमें परही । रूप बरण कल्प औरही धरही ॥
 नाम कपूर वासना होई । कदली वाकुं कहे न कोई ॥३॥
 चंदनके छिंग चंदन होई । काष वाकुं कहेमी न कोई ॥
 दाम कबीरका एमा खेला । फुलपरमत तेल भयो रे फुलेन्दा॥४॥

* ॥ भैरव ॥ १४ ॥ *

सोहि धन मेरे रामको नाउं । गांठ न वांधु बेच न खाउं ॥
 नाम मेरी खेती नाम मेरी बारी । भक्ति करुं हरिशरण तुम्हारी ॥१॥
 नाम मेरे बंधु नाम मेरे भाई । अंतकी बेरीयां राम महाई ॥
 राम मेरे निर्धन ज्यूं निधि पाई । कहेत कबीर ज्यूं रांक मीठाई ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ १५ ॥ *

जायरे जाय दिने दिन देही । करले राजा राम मनेही ॥
 बालपण गयो जोवन पण जासी । जरामरण भय संकुष्ट आसी॥टेक॥
 पलटा केश नयन जल छाया । मूरख चेत बुद्धापा रे आया ॥
 राम कहेत लज्जा क्यूं कीजे । पल पल आयु घटे तन छीजे ॥१॥
 लज्जा कहे हुं जमकी दासी । एक हाथ मृगदल एक हाथ फांसी ॥
 कहेत कबीर तीने मर बस हार्या । रामनाम जीने चित्सें विसार्या ॥

* ॥ भैरव ॥ १६ ॥ *

में बोरा तो रामजी बोरा । में बिगर्यो बिगरे जन औरां॥टेक॥
 हम नहीं बावरा राम कीया बोरा । मनगुरु ब्रह्म भान भया भोरा ॥
 न पढ़यो विद्या वाद न जानुं । हरिगुण कथा सुमरत बहोरानुं॥१॥

काम क्रोध अरु विषय विकारा । आपही आप जले संमारा ॥
मीठो कहा जाहि जो भावे । दाम कबीर रामगुण गावे ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ १७ ॥ *

जागरे नर (तुं) सोवे कहा । जम बटमारे रुंधे पहा ॥
जाग चेत कछु करले उपाई । मोटा वैरी है जम राई ॥१॥
काहेरे नर चेते नाहिं । शेत काग आये बन माहिं ॥
कहेत कबीर नर जबही जाग्या । जमका डंडा मूँडमें लाग्या ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ १८ ॥ *

अब हुं हरि अपनो कर लीनो । श्रेम भक्ति मेरो मन भीनो ॥
शरीर जले तो अंग न मोड़ु । जो जीव जाय तो नेहन तोडु ॥१॥
ब्रह्मा खोजत जनम गमाया । मोहि गम घट भीतर पाया ॥
कहेत कबीर झुटी सब आशा । मिले राम उपज्यो विश्वासा ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ १९ ॥ *

धिक् तेरी जान जन्म धिक् जिना । राम भक्ति बिन थाक्यो रे मना ॥
इन पांचो खोही पन मोरी । बहोन जनन करी माया जोरी ॥
भई लक्ष्मी तब शाह कहायो । लेखो करनां जन्म गमायो ॥१॥
गई लक्ष्मी तब भयो फकीर । मायाके संग तज्यो शरीर ॥
तब अपने मन कीया बिनाग । हरिजनकुं हरिनाम आधारा ॥२॥
कहे कबीर या गंदी देही । तब साची जब राम सनेही ॥
स्वास्थ कारण भक्ति न होई । अजहु न चेते अंध नर लोई ॥३॥

* ॥ भैरव ॥ २० ॥ *

हरिजन हंस दशा लीये ढोले । निरमल नाम चवे जश बोले ॥

मुक्ताफल बिन चंचन वाहे । मुन गहे के हरिगुण गावे ॥
 मान सरोवर तङ्के वामी । हरि चरणन चिन आन उदामी ॥१॥
 कौवा करणी निकट न जाई । ताते हंसा दर्शन पाई ॥
 कहे कबीर मोही जन तेरा । क्षीर निरका करे निवेरा ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ २१ ॥ *

लोक कहे गोवर्धन धारी । ताका मोहे अचंचा भारी ॥टेक॥
 अष्टकुल पर्वत चरणकी रेणा । सान माहेर जाके अंजन नेना ॥
 ए उपमा हरि केतिक ओपे । कोटि मेरु नव उपर गेपे ॥३॥
 घरती आकाश अधर कर राखी । ताकी मुख न माने माखी ॥
 शिव विरंची जाको जश गावे । कहेन कबीर ताको अंत न पावे ॥४॥

* ॥ भैरव ॥ २२ ॥ *

बोलना कहा कहीये रे भाई । बोलन बोलन तन नशाई ॥टेक॥
 बोलन बोलन बाधे व्याधि । अन बोलेही होन ममाधी ॥
 संत मिले तो कछु एक कहीये । मिले असंत तो मुन गही रहीये ॥
 संतन सुं बोलो हिनकारी । मूरख सुं बोल्या झालमारी ॥
 कहेन कबीर अर्ध घट बोले । पूरग हो तो कबहु न होले ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ २३ ॥ *

हरि चिन सब झुठ बहेवाग । झुठे झुठ बंधा संसाग ॥टेक॥
 झुठा जपनप झुठा ज्ञाना । गम बिना सब झुठा ध्याना ॥
 विधि निषेध पूजा आचाग । सब दरीयामें वार न पाग ॥१॥
 इन्द्रि स्वार्थ मनके स्वादा । जहाँ साच तहाँ मांडेरे वादा ॥
 दास कबीर रहै लौलाई । भरम कर्म सब दीया बहाई ॥२॥

* ॥ भैरव ॥ २४ ॥ *

हरि भज हरि भज रे तुं मूँदा । बिन हरि भजन भये नर भूदा ॥१॥
 जन्म जन्म तुं भ्रमनो फिरो । अनेक जन्म पशु होय अवनरो ॥
 पायो नहीं काहुं विश्रामा । सतयुरु शरण न सुमर्या नामा ॥२॥
 गज तेज सुन वित सब जाई । अविनाशीं सुं प्रीत लगाई ॥
 ले उनमनी भक्ति ब्रत धारो । जग मरण भव संकुष्ट यारो ॥३॥
 युण सागर गोविंद युण गाई । अपना विरद प्रभु नाहिं लजाई ॥
 भणन नामदेव संत सहाई । चरण शरण राखे खुगाई ॥४॥

* ॥ भैरव ॥ २५ ॥ *

नामदेवकी प्रीत निरंतर लागी । महेज स्वभाव भये वैरागी ॥१॥
 ऐसी प्रीत तुं हरि सुं लाई । कबहु न छुटे रहे समाई ॥
 युरु पसादे दुवधा जाई । नामदेवकी प्रीत लागी हरिराई ॥२॥
 जैसी परपुरुषा न नारो । ऐसी नामदेवकी प्रीत मुरारी ॥
 जैसी भुखे प्रीत अनाजा । तृष्णावंत जलमेती काजा ॥३॥
 मूरख नर जैसे कुटुंब प्राणा । ऐसी नामदेवकी प्रीत नारायणा ॥
 कृष्ण हेत माया सुं जना । निश्वासुर वाहीसु ध्योना ॥४॥
 जैसी प्रीत बालक अरु माता । ऐसी हरिजन हरि सु राना ॥
 नामदेव कहे लागी प्रीता । गोविंद बसे हमारे चिना ॥५॥

* ॥ भैरव ॥ २६ ॥ *

कहा जानु देव में कहा जानुं । मन मायाके हाथ बेकानुं ॥१॥
 चंचल मन मेरो चहोदश धावे । पांचो इन्द्री हाथ न आवे ॥
 इन पांचो मेरो मनो विगारो । दिन दिन हरजीसुं अंतर पारो ॥२॥

कहा कहुं मेरी सुक्रित बडाई । लोक लाज मोपे नजी न जाई ॥
 तुम तो आदि जगत गुरुस्वामी । हम कहीं अंन कलजुगके कामी ॥२॥
 जहाँ जाउ तहाँ दुःखकी गामी । मोहे न पनि आयो निगमही माखी ।
 इन जम दूतन बहु विधि मायों । अजहुं निर्लज लाज नहीं हायों ॥३॥
 सनक सुनंदन महामुनि ज्ञानी । शुक नारद व्यास बखानी ॥
 गावत निगम उमीयापनि स्वामी । शेष महव मुख किमत गामी ॥४॥
 केवल रामनाम कबहु न लीया । माया काज विषे चिन दीया ॥
 वहो विधि याही कर्म भटकावे । तुमही दोष हरि कौन लगावे ॥५॥
 हरिपद विमुख आश नहीं छुटे । ताने तृष्णा दिन हिन लूटे ॥
 कहे रोहिदास कहाँ लगी कहीये । बिन रघुनाथ वहोत दुःख सहीये ॥६॥

* ॥ मैरव ॥ २७ ॥ *

अब कहा सोवे नर जाग दिवाना । झुंठ जीवन तें मन करी माना ॥
 जीव दीया तीन रजक बनाया । लख चोगमी रहेट चलाया ॥
 कर कर बंदगी उठ मवेग । बहुर न आवे भवजल फेग ॥१॥
 मंगी चल गये हमही चलना । पंथ अगम शिर उपर मरना ॥
 तजी अभिमान रहो हरि शरणा । ताथे मिटे जन्म ने मरणा ॥२॥
 खांडा धार मार्ग नहि नेढां । ता उपर है मारग टेढा ॥
 पंथी पंथ समार मवेग । चेन चेन शशांगत चेग ॥३॥
 कहा खरचा कहा ते खाया । चल दगहाल दिवान बोलाया ॥
 इश्वर तोपे लेखा लेगा । भीड़ पढे तब भर भर देगा ॥४॥
 बावेगा लुनेगा सोही । तामे फारफेर नहीं होई ॥
 भणे रोहिदास में ज्ञान दिवाना । अब क्यूं न चेते जग फंदखाना ॥

* ॥ भैख ॥ २८ ॥

भेष धयों पण भेद न जाण्यो । अमृत लेकर विषसुं छांन्यो ॥
तिलक दीयो षण नाप न जाई माला पहेगी लोभ न जाई ॥१॥
काम कोधमें जन्म गपायो । सत संगत मली राम न गायो ॥
कहे रोहिदाम राम जो गावे देव निरंजन सत करी पावे ॥२॥

* ॥ भैख ॥ २९ ॥ *

उठो गोपाल दुहो धाई गईयाँ । सद्य दुधमथी थीवोरे धईयाँ ॥
प्रात भयो बन तमचर बोले । घर घर ग्वाल पाट सब स्खोले ॥टेक
गोपी रही मथनीयाँ धोवे । अपनो अपनो दहीं विलोवे ॥
तुम्हारे ममा बोल्यावन आये । कृष्णनाम ले मंगल गाये ॥१॥
भूषण वसन पटी पहेगवुं । मृगमद तिलक ललाट बनावुं ॥
चतुभुजप्रभु श्रीगोविर्धनधारी । मुखछड़ी पर बलीगई महतारी॥२॥

* ॥ भैख ॥ ३० ॥ *

मैं दधि मथु तुम खेलो गोविंदा । तुमकुं देवुंगी माखनका लोंदा ॥
मात जशोदा महि विलोवे । कमल नयन गडे मुख जोवे ॥
मात जशोदा नंदजीकी गणी । गोद खेलावे सारंगपाणी ॥१॥
बन वैश्वानल दुध उफाने । मात जशोदा मर्म न जाने ॥
भणत नामदेव तृष्णा बोरी । छांड दामोदर दुधकुं दोरी ॥२॥

॥ इति श्री भैख संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग भूपाल कारितन * ~~~~~

* ॥ (मंगल आरति) ॥ १ ॥ *

गम कहो पंजरके सुवा । राम कहो रे पंजरके सुवा ॥
हजुलगी खबर पडत नहीं अंधा । धंधो करन मकल जग मुवा ॥
घडिरे सुथारे कटेरो कीनो । हजुलगी साज निश्चल नहीं हुवा ॥
अंतकाल मिपुं होत मंजारी । हरि चत्यो जैसे जुवारी जुवा ॥रा.१॥
आशा मेट पांच पनिहारी । खुटन नाहिं करम जल कुत्रा ॥
कहे कबीरजेणे हरि रस चास्यो । वाहिके मुख अमस्तिरस चुवा ॥२॥

* ॥ भूपाल ॥ २ ॥ *

तुमही गोपाल मोसें बहोत करी । तुमही दयाल मोसें बहोत करी ॥
सुमरनकुं नर देही दीनी । मो पापी तें कछु न सयों ॥टेक॥
गरभवास अति त्राम उंधे मुख । तहां न मोरी सुध विसरी ॥
जठग अग्रिमें राखी लीनो । कंत्रनमी मोही देहि करी ॥तु.१॥
कहा कहुं अपगाधी जनमसें । आद अंत मोसें बिगडी ॥
तुलसी पनितनाथ तमो पावन । बांनेकीअब लाज पढी ॥तु.२॥

* ॥ भूपाल ॥ ३ ॥ *

रामनाम मोसें क्युं बिसरे । गमनाम मोसें क्युं बिसरे ॥
जलसुन ता सुतता वाहन भक्ष । ता जनुनीको विरद टरे ॥टेक॥
जो पे बन्हि होत शीतलना । रवि शशी पश्चिम उदित करे ॥

होत नाहर मिंध बनराई । डावि बेस्थियां जोगुजरे ॥ राम ॥ १ ॥
जग मरण जाके शिर उपर । सोही मूर्ख किन मरव करे ॥
मूरदाम वाकुं काहु ठौर नही । हरि चरणे आवी उगरे ॥ गम ॥ २ ॥

* ॥ भूपाल ॥ ४ ॥ *

कहाजु भयो मुख गम कह्यो । कहाजु भयो मुख गम कह्यो ॥
जैसे मंत्र भोरिंग वश कीनो । अंनःकरण विष नाहि गयो ॥ टेक ॥
माला रे निलक स्वांग धरे हगिको । धुनि धुनि धन आप लीयो ॥
ज्यूं टटरीके ओट पाथ्री । अनेक जीवनकुं ढाघ दीयो ॥ क ॥ १ ॥
हिरदे कपट बचन शीतलना । अति आधीन होई नमन नम्यो ॥
कहें कबीर वाको संग न कीजे । विनरे विवेक जेणे भेष लीयो ॥ क ॥

* ॥ भूपाल ॥ ५ ॥ *

जन्म पदारथ बाद जान । रुडो जन्म पदारथ बाद जानरे ॥
सुमरन भजन करो केशवको । जब लगी नाहिं गलिन गान ॥ टेक ॥
ए संगी सब दिवम चारके । धनरे जोबन सुन पितामान रे ॥
बिछुडन मिलन बहोर नही पावे । ज्यों तस्वरके खीस्त पान ॥ रुडो ॥
अजहुरे चेत अल्पमनि बहोरे । नजी अमरिन किन विष सातरे ॥
तेरे शिर काल सदा सर मांधे । आवी अचानक करन घात ॥ रु ॥
तब कैसे हरि नामज लेहो । कंठ ग्रह्यो कंपे शिश गान रे ॥
विद्यादाम आश परिपूरण । श्री गोपालजीके रंगे राच ॥ रु ॥

* ॥ भूपाल ॥ ६ ॥ *

मन जानो गृह रुडोरे । मत जानो गृह रुडोरे ॥
कंचन कलश समार्यो जनन करी । राम भजन बिना कूडोरे ॥ टेक ॥

इन गृह ज्ञान हयों मबहनको । ना पाढ्यो काहुको पुरो रे ॥
 राजा रे रंक छत्रपति भूपति । अंत भसम कर चुरोरे ॥मत ॥३॥
 सबसे रे नीकी संत मंडलीया । हरि भगतनको मेलो रे ॥
 गोविंदके गुण बैठे गावे । पावे टूको टेढो रे ॥ मत ॥२॥
 एहि विधि जान जपो जगजीवन । जमसुं तनखा तोडो रे ॥
 कहें कबीर राम भजवेकुं । एक आध कोई सूरो रे ॥मता॥३॥

* ॥ भूषाल ॥ ७ ॥ *

चरण कमल तजी अब कहाँ जाउँ । चरणकमल तजी अब कहाँ जाउ॥
 महापतित आयो शरणांगत । पतित पावन प्रभु तुम्हारो नाउँ ॥टेक॥
 जो मेरो अपराध गिनोगे । तो मोकुं काहु नहीं ठौर ॥
 तनखा छांड परबन ओट पकडी । अबधु अब में कहाँ जई रहाउँ ॥
 जे घडी राम भजन बिन बीने । सो दिन सुमरी सुमरी पिछताऊँ ॥
 प्रेमानंद प्रभु सुखके सागर । श्याम मूरत पर में बलजाऊँ । चरण॥

॥ भूषाल ॥ ८ ॥

तुम मेरी प्रभुता बहोत करी । तुम मेरी प्रभुता बहोत करी ॥
 महापतित आयो शरणांगत । निचदथा लेई ऊंच धरी ॥ टेक ॥
 जन्म मरण संताप आपदा । तुम परमन मेरी सबे हरी ॥
 अष्ट मिद्धि नव निधि मुगती । कर जोरी रही द्वार खडी ॥ तुम ॥
 तीनलोक और भुवन चतुरदम । वेद पुराणे सहि जो करी ॥
 मूरदाम प्रभु अपने भगतनकुं । देन परम सुख घडी रे घडी ॥तुम॥

॥ भूषाल ॥ ९ ॥

रामनाम बिना ना छुटे मल । रामनाम बिना ना छुटे मल ॥

तीर्थ ब्रत कोटिक करे निन नित । पंड पखालमरे जल थल ॥टे.॥
मम द्वीप और नव खंड पृथ्वी । परकंपा देने पल पल ॥
वेद पुराणकुं पढ़ पढ़ पंडित । भूले पड़े अखेर अखेर ॥गा.१॥
जहां तहां सब आन भरोंमा । बिन भगवंत भयो काहु भल ॥
सूरदाम भगवंत भजन चिना । मिथ्या और सकल बुद्धि बल ॥२॥

* ॥ भूपाल ॥ १० ॥ *

जबते रमना गम कहो । जबते रसना गम कहो ॥
मानु रे धरम भाध सब बैठो । यद्वेमें ज्यूं कहारे रहो ॥टेक ॥
हिरदे प्रकाश ज्ञानगुरु गमते । दध मथ वृन ले तज्यो रे महो ॥
मास्को मार सकल सुखको सुख । हनुमंत शिवे आन ग्रहो ॥१॥
नाम प्रतीत भई जे जनकुं । मदा आनंद दुःख दूर रहो ॥
सूरदाम धन धन वे भगता । जीणे हस्तिको ब्रत ले निभव्यो ॥२॥

* ॥ भूपाल ॥ ११ ॥ *

गोविंद गुणा गोपाल गुणा । गाईले रे गोविंद गुणा ॥
ऐमो भमय बहुरि नहीं पैहो । फिर पछितैहो मेरे मना ॥टेक॥
जिन तुमको तन मन धन दीन्हो । नयन नाशिका मुख रमना ॥
जाको रचीत माम दश लागे । ताहि न सुमर्यो एक छिना ॥गा.१॥
बालापण हसि खेल गमायो । तरुण भयो तव स्वप्न रीझा ॥
विरध भयो तव आलम उपजे । ऊठ गई हाट कच्छु न बना ॥गा.२॥
अधम नरे अधिकार भजनते । जे जे आये हरि शरणा ॥
ना मानो तो साखि बताबुं । अजामेल गुनिका सदना ॥गा.३॥

धन जोबन अंजुरीको जल जम । घटही जान लिन पलही पला ॥
अम जीय जानी भजो रघुनंदन । नामदेव आये हस्तिशणा ॥गा. ४॥

* ॥ भूपाल ॥ १२ ॥ *

मदन गोपाल हमारे श्रीगम । मदन गोपाल हमारे श्रीगम ॥
इतही धनुष इन विमल बेन कर । पीतवमन अरु तन धन झ्याम ॥
अपनी भुजा जेणे जलनिविवाध्यो । गोवरधन रख्यो कर वाम ॥
दश शिश विशभुजा असुर विदारे । गम रमाञ्चां कोटिक काम ॥
जेही अयोध्यां पंचवटी पावन । सोही वृदावन गोकुल गाम ॥
सोही शेष वेष धरी आये । माथे बंधव लछमन बलराम ॥म॥
तव रघुवर अब जदुवर मोहन । लिला ललीत विमल बहुनाम ॥
मेद रहीत दास परमानंद । निजजन मली गावे गुण गम ॥म॥

॥ भूपाल ॥ १३ ॥

आज नंदजीके द्वारे भीर । आज नंदजीके द्वारे भीर ॥
कृष्ण अवतार लीयो गोकुलमें । वेर वेर क्रीडा करत आहीगाटे ॥
वेर वेरथे निकमी ब्रिज विनता । पहेरे पीतांवर ओढे चीर ॥
ताल पखाज झाँझ डफ बाजत । नरत करे तहां मलिमलि भीर ॥
एकनकुं तिलक दियो केमरको । एकनकुं ओढायो चीर ॥
एक आवन एक जात बिदा होई । एक ठाडी जुमनाजीके तीर ॥
बाबा रे नंद खडकमें ठडे । करत नोछावर धरे मन धीर ॥
प्रेषानंद प्रभु सुखके सागर । कंस दहन प्रगटे बलवीर ॥आज॥

* ॥ भूपाल ॥ १४ ॥ *

मंगल आरति कीजे मोर । मंगल आरति कीजे भोर ॥

मंगल जनम करम गुण मंगल । मंगल राधे जुगल किशोर ॥टेक॥
 मंगल मुगट बेन धुनी मंगल । मंगल है मोरली बन घोर ॥
 मंगल खाल बाल सब मंगल । मंगल जशोमनि नंद किशोर ॥१॥
 त्रिजवासीके नो वेर वेर मंगल । नाचन गावन दो कर जोर ॥
 मंगल गुण गावे प्रेमानंद । मंगल सब विधि माखन चोर ॥२॥

॥ भूपाल ॥ १५ ॥

जागो रे मोहन प्रात भयो । जागो रे मोहन प्रात भयो ॥
 प्रात समे जागेकी बेरीयां । खेलन हो कल्पु खेलो रहो ॥टेक॥
 छारे ढाड़ी कुंमारी राधिका । उनको चुराई तुम कहाजु लीयो ॥
 नव हसी थोलत कुंवर कन्हैया । मैं भ्रखुभान घर कबहुं गयो ॥जा॥
 लई संपट पट दूर कीयो है । धन रे जनुनी वाको दरशा दीयो ॥
 सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । रवि करुणामय उदित भयो ॥जा॥

* ॥ भूपाल ॥ १६ ॥ *

जागो गोविंदा तुम जागोने हरि । जागो गोविंदा तुम जागोने हरि ॥
 तुम जागंता सब जग जागे । जागे मथुरां उमंग भरी ॥ टेक॥
 कृष्ण कृष्ण करो ग्वाल ढोलन है । माता जशोदा आन खड़ी ॥
 पहेरो अजाप कमर कमी बांधो । उठो मेरे लाल शिरपर मुगट धरी ॥
 शिरपर बैरी तो कंम बमत है । दोनुं नयन आत निंदा भरी ॥
 सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । मोहन मोरली अधुर धरी ॥जागो॥

* ॥ गग विमास ॥ १ ॥ *

जागिये महाराज कुंवर पंखीयां बन बोले ॥ जागिये ॥ टेक॥
 शशि किरण शितल भये । चकई पीया मिलन गये ॥

अनि सुगंध पवन बहन । द्रुमल पान ढोले ॥ जा. ॥ १ ॥
 उदित भयो प्रगट भाण । जीव जंत सुखिन भाण ॥
 भ्रमर करत गुंज । कमलदल खोले ॥ जागिये ॥ २ ॥
 ब्रह्मादिक धरत ध्यान । सुरनर मुनि करत गान ॥
 जागनकी बेर भई । नयन पलक खोले ॥ जा. ॥ ३ ॥
 तुलमीदाम अनि आनंद । निरखन मुखारबिंद ॥
 दिननकुं देत दान । भूषण अमूले ॥ जा. ॥ ४ ॥

* ॥ विभास ॥ २ ॥ *

जागिये गोपाल लाल देखुं मुख तेरो ।
 पीछे गृहे काज करु एही नेम मेरो ॥ जागिये ॥ टेक॥
 विगत निशा अरुण दिशा उदय भाण ।
 गुंजन अलि पंकज बन, जागो हो भगवान ॥ जागिये ॥ १ ॥
 छारे झडे बंदीजन, करत है केदार गग ।
 बंसी बजावन हरि लीला अवतारी ॥ जामिये ॥ २ ॥
 प्रेमानंद दीन दयाल—जागत मंगल रूप ॥
 वेद पुराण पढन हरिको—महिमा अनूप ॥ जागिये ॥ ३ ॥

* ॥ विभास ॥ ३ ॥ *

जागिये गोपाल लाल जनुनी बल जाई ॥ जागिये ॥ टेक ॥
 उठो लाल प्रभात भयो । रजनी बिनी तिमिर गयो ॥
 टेखन है सब खाल बाल—मोहन कन्हाई ॥ जागिये ॥ १ ॥
 संगी सब पुरत बैन । तुम बिना न छुटन धेन ॥
 लाढीले मेरे नजो सैन । सुंदर बन राई ॥ जागिये ॥ २ ॥

मधन गगन चंद मंद । उठो मेरे आनंद कंद ॥
 प्रगट भई हंसमाल । कुमुदिनी सकुचाई ॥ जागिये ॥ ३ ॥
 मुखने पट दूर कीयो । जशेमनिकुं दरश दोयो ॥
 भोजन कल्पु मंग लीयो । बिविध मीठाई ॥ जागिये ॥ ४ ॥
 जिमन दोउ झ्याम रंग । मंगल सब पूरण काम ॥
 थालमां कल्पु झुंड रही । सूरदास पाई ॥ जागिये ॥ ५ ॥

* ॥ प्रभात ॥ १ ॥ *

प्रात समे रघुवीर जगावे । कौशल्या महतारी ॥
 उठो लालजी भोग भयो है । सुरनर मुनि हिनकारी ॥ टेक ॥
 ब्रह्मादिक इन्द्रादिक देवता । मनकादिक मुनि चारी ॥
 बाणी वेद विमल जश गावे । रघुकुल जश विस्तारी ॥ प्रात ॥ १ ॥
 बंदीजन गांध्रव गुण गावे । नाचत दे दे नाली ॥
 मेना महित शिव द्वारे आढे । होन कुतोहल भारी ॥ प्रात ॥ २ ॥
 भग्न शत्रुघ्न चरम छत्र लीये । जनकसुना लीये ज्ञारी ॥
 मेवा पान लीये कर लछमन । भर कंचनकी थारी ॥ प्रात ॥ ३ ॥
 मुन प्रिय बचन उठे रघुनंदन । नयनन पलक समारी ॥
 चिनवन अभय कीये हैचराचर । मुदित भये नरनारी ॥ प्रात ॥ ४ ॥
 करी अस्नान दान नृप दीनो । लेकर तिलक समारी ॥
 जय जयकार करत जन माधो । तन मन धन बलिहारी ॥ प्रात ॥ ५ ॥

* ॥ आरति ॥ १ ॥ *

आरति गोपाल राथकी । करो रे संत लौ लाई ॥ टेक ॥
 मन करी घृत काया कर थाए । ब्रह्म अग्न कर बाती ॥

पांच तत्त्व लई दीपक जोरो । वले रे अखंड दिन गती ॥ १ ॥
 चित कर चंदन ध्यान सुगंधन । अनहद घंट बजाई ॥
 अजपा धुन भाव करी भोजन । मनसा भोग लगाई ॥ २ ॥
 चवर सोपावना अकथ मो गावना । नाभीको पाठ लगाई ॥
 भीतर द्वार पूज परमेश्वर । आनंद पुष्ट चढाई ॥ ३ ॥
 शंख शब्द महेज धुन उपजे । अनहद बाजे बेना ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नारद । सकल संत लोलीना ॥ ४ ॥
 दुष्ट निकंदन सुर नर वंदन । संतन प्राण आधारा ॥
 कहें कवीर भक्ति एक मागुं । आवागवन निवारा ॥ ५ ॥

* ॥ २ ॥ *

आगति हो नाथ निरंजन गई । करि ले गगन मंडलमें रे जाई ॥
 चेतन कुंची अचेतन ताला । संक्या सकल जडाई ॥
 अलख राय सुंमेवक मनमुख । भ्रमका पाट लगाई ॥ १ ॥
 प्रेम धृत अभग भर थाली । बाती बिह लगाई ॥
 गगन मंडलमें भया अजुवारा । पांच पतंग जल जाई ॥ २ ॥
 अनहद नाद उपंग ही मरदंग । धीरज घंट बजाई ॥
 दास कबीर परमपद वंच्छे । मागे अखंड पसाई ॥ ३ ॥

* ॥ ३ ॥ *

मंगल रूप आरनि साजे । अभय निशान ज्ञान धूनि गाजे ॥ टेका ॥
 अखे वृक्ष जहाँ छुल न छांया । प्रेम प्रतीन अपरिन फल पाया ॥
 निशवासर जहाँ चंद न सुर । प्रेम प्रकाश सकल भरपूरा ॥ १ ॥

जग मरण भव संकुष्ट मेटे । समर माच जब सत्गुरु मेटे ॥
कहेन कवीर अमर जन सोई । जा घट एमी आरनि होई ॥२॥

* ॥ प्रभात ॥ १ ॥ *

आरति श्री जगन्नाथ मंगला करी । परसन चरणार्बिंद आपदा हरी ॥
घनन घनन धंट वाजे बेन बंसरी । बाजत मृदंग ताल नाद खंजरी ॥
दिपक जोन जगमगे श्री कंचनापुरी । नवबानि अगरतेल पावक जरी ।
इन्द्र दमन सिंधु गाजे गेहिणी खडा । मारकंड सेनगंगा आनंद भग ।
एकनाम तीन लोक चौदभुवन मंचगचरी । रोम रोम रंकार काहेसुं दरे
गरुड खंभ मिंधपौर जातग भरी । हीर माणेक मोनीयना जोनकी छडी
सनन मिंहासन आप बिराजे-बेनकी छडी ।

छपन भोगनित लागे होन हरि हरि ॥ ३ ॥
सुर नर मुनि द्वारे ठडे ब्रह्मा वेद ओचरी ।

धन्य धन्य गधो श्री आजकी घडी ॥ ४ ॥

* ॥ प्रभात ॥ २ ॥ *

श्रीगममंत्र गममंत्र आरनी कीजे । शंकर सनकादिक आद एही रंग भीजे
हिरदे नाल विमल बोध पंचवाती जारी ।

तन मन निज परहगे तो आये वेदवारी ॥ १ ॥
अखंड जोन विमल-मोद बहे दिन राती ।

आरति रघुनाथजीकी कीजे परभानी ॥

कहेत कर्षीर समझ धोर एमे लौलाये ।

चरण टेक रघुनाथ जाके निरभेषद पाये ॥ श्रीगममंत्र ॥२॥

॥ इति श्री मंगल आरतिना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग प्रभातना कीरतन ॥ *

* ॥ प्रभात ॥ १ ॥ *

कृष्णजी कृष्णजी कहेना, उठोरे प्राणी ।
 कृष्णजीना नाम विना, मिथ्यारे वाणी ॥ कृष्णजी ॥ टेक ॥
 प्रभाते उठीने लीजे, कृष्णजीनुं नाम ।
 कृष्णजीये वास्युं रुडुं, गोकलीयुं गाम ॥ कृष्णजी ॥ १ ॥
 कृष्णजी मानारे हमारे, कृष्णजी तान ।
 सगांने सहोदर म्हारे, कृष्णजी प्रान ॥ कृष्णजी ॥ २ ॥
 कृष्णजीये मामो मायी, मामी मंहारी ।
 पोनाना जाणीने हसिये, मुगति आपी ॥ कृष्णजी ॥ ३ ॥
 कृष्णजीए अजामील तायी, महा हुतो पारी ।
 एक कोलीए कौतुक कीधुं, तेने अचल पदबी आपी ॥ ४ ॥
 कृष्णजीये गुणका तारी, अहल्या उद्धारी ।
 कृष्णजीना नाम उपर, जाउं बलीहारी ॥ कृष्णजी ॥ ५ ॥
 दामलडां भणेरे हसिनी, भगति जाणी ।
 महेना नरमैयाना स्वामीनी बोलो, अमस्तिवाणी ॥ कृष्णजी ॥ ६ ॥

* ॥ प्रभात ॥ २ ॥ *

जागोरे जशोदाना जीवन, ब्हाँणेरां वायां ।
 तमाग उशीका हेठल, चीर चंपायां ॥ जागोरे ॥ टेक ॥

पासुरे पलटो तो बहाला, अंवर कहाहुं ।
 मरावी महीयरो साथे, जल भरवा बादु ॥ जागोरे ॥ १ ॥
 देगणी जेठाणी वेरण, नणदी रे जागे ।
 सहियर समाणीने धेर, बलोणा वागे ॥ जागो रे ॥ २ ॥
 दुरीजन लोक पेला, अबलुं रे आंणे ।
 महेता नर्मेयाना स्वामीनी लिला, कोई विरला जाणे ॥ जागो रे ॥ ३ ॥

* ॥ प्रभात ॥ ३ ॥ *

राधाजीना बलभ प्रभुजी, अलगा मा थासो ।
 बांहोलडी मोडीने बेला, हाथ मा बहासो ॥ राधाजी ॥ टेक ॥
 तेलने तंबोले भीनो, गुलाले गतो ।
 प्रभाते आवेरे बहालो, वांशलडी बहातो ॥ राधाजी ॥ १ ॥
 ओ नंदगाउ रे हरिना, गुणला गाता ।
 महेता नर्मेयाचा स्वामी मलिया, मद भसना माता ॥ राधाजी ॥ २ ॥

* ॥ प्रभात ॥ ४ ॥ *

भोलीरे भरवाडण हरिने, वेचवा चाली ।
 मोल सहज गोपीना बहालाने, मटुकीमां चाली ॥ भोलीरे ॥ टेक ॥
 सुंदर चोली अंगे पहेरी, ब्रहे व्याकुली ।
 शेरीये शेरीये पोकारे, कोइ ल्योने मोरारी ॥ भोलीरे ॥ १ ॥
 मटुकी उतारी मांहि, मोरली वागी ।
 त्रिजनी सुंदरी सर्वे, जोवाने लागी ॥ भोलीरे ॥ २ ॥
 ब्रह्मादिक इन्द्रादिक सर्वे, कौनुक पेर्खे ।
 सोल सहज गोपीना बहालाने, मटुकीमां देस्खे ॥ भोलीरे ॥ ३ ॥

विज सुंदरीने भावे मलीया, अंनरयामी ।
महेना नरसैंयोने लाड लडाव्या, जुगते स्वामी ॥ भोली रे ॥ ४ ॥

* ॥ प्रभात ॥ ५ ॥

जशोदाना जीवन उमा, जुमनाने तीरे ।
मोरली बाही रे बहाले, मधुरे स्वरे ॥ जशोदाना ॥ टेक ॥
मोर मुगटने काने कुँडल, उर लहेके माला ।
पीतांवरनी पलबट बाली, ओपे रे शाला ॥ जशोदाना ॥ १ ॥
परभाते उठीने गोपी, गायो हेरावे ।
हे कहानुंडा हे छोगाला, कही बोलावे ॥ जशोदाना ॥ २ ॥
आज मारा गावलडीये दुध, थोडेरु दीधुं ।
एरे धुतारे नंदने छोकरे, दोहीने पीधुं ॥ जशोदाना ॥ ३ ॥
सांभलरे सलुणी गोपी, वान अमारी ।
तुज सरखी लक्षणवंती, गावलडी तहारी ॥ जशोदाना ॥ ४ ॥
एवां एवां वचन सुणी, गोपी आनंद पामी ।
भगत उधारण भूदरा, महेना नरसैंना स्वामी ॥ जशोदाना ॥ ५ ॥

* ॥ प्रभात ॥ ६ ॥ *

आज अमने किरपा कीधी, वैकुंठ नाथे ।
पलंगे आवीने बेग, अमारी माथे ॥ टेक ॥
पलंग पाथरी आपु, सुखीया थावो ।
रमोइ निपजावुं हरि नमो, जमना जावो ॥ आज ॥ १ ॥
आलमढां मोडीने हरि, हींडवा लाग्या ।
घडी एक टकोने प्रभुजी, उतारो वागा ॥ आज ॥ २ ॥

खांड खाजां जलेबी में, तुवेर तली ।
 पुड़ा पुरी अनि घणा, माँहे वेडमी गली ॥आज॥ ३ ॥
 धी आण्या में गवरी तणा, नरनना ताव्यां ।
 नरसेयाचा स्वामी जमवा बेग, गधा पीरसवा आव्यां ॥आज ॥४॥

* ॥ प्रभात ॥ ७ ॥ *

माता रे जशोदाने धेर, बलोणां वागे ।
 मनमां विमासी रे महु, जुगते जागे ॥ माता रे ॥ टेक ॥
 माहेर भणे रे मुजमें, ग्नन नथी ।
 हावेनु महावजी तमो, सुं जोमो ममथी ॥ माता रे ॥ १ ॥
 मेरु रे भणे रे हुंतो, चहोदश गांठो ।
 हावेनो रवैयो करमे तारे, कहां रे जाउ नाठो ॥ माता रे ॥ २ ॥
 वासुकी भणे रे मारी, सीपेर थासे ।
 हावेनुं नेतरुं करमे तारे, जीवलडो जासे ॥ माता रे ॥ ३ ॥
 महादेव भणे रे म्हेतो, मागीने लीधुं ।
 हावेनुं हलाल विष ते, केम जासे पीधुं ॥ माता रे ॥ ४ ॥
 मनमां ना बीमो रें तमे, जशोदा माता ।
 महेना नरसेयाचा स्वामीजी छे, दीनना नाथा ॥ माता रे ॥ ५ ॥

* ॥ प्रभात ॥ ८ ॥ *

महीडुं मथवाने उव्यां, जशोदा राणी ।
 विमामो देवाने आव्या, शारंगपाणी ॥ महीडुं ॥ टेक ॥
 माहेर कंप्योरे जाण्युं, मथमे बली ॥
 सोक तणा भये कंप्या, कमला राणी ॥ महीडुं ॥ १ ॥

वासुकी कंप्योरे जाण्युं, नेतरं महासे ।
 सकल देवनाये जाण्युं, अमृत पाये ॥ महीदुँ ॥ २ ॥
 भग्न कारण वहाले, अवनारज लीधा ।
 महेता नरसैयाना स्वामी मत्या, तारे कृतास्थ कीधा ॥ म० ॥३॥

* ॥ प्रभान ॥ ९ ॥ *

जुबोने जशोदाने कहाने, गोलीरे फोड़ी ।
 नमोने कहिये त्यारे कहोछो, खालणे फोड़ी ॥ जुबोने ॥ टेक॥
 वाछर्डां छोड़ीने मेल्यां, कीधां छे जान ।
 माखण चोरीने खाधां, शामल बान ॥ जुबोने ॥ १ ॥
 आओ तो देखादुँ कृष्णजीये, कीधां छे काम ।
 त्यारे बालक थईने खोले, बेग सुंदर इयाम ॥ जुबोने ॥ २ ॥
 बाईरे बालुडो म्हारो, कंझीये नव जाणे ।
 महेता नरसैयाना स्वामीनी, लिला वेद वखाणे ॥ जुबोने ॥३॥

* ॥ प्रभान ॥ १० ॥ *

माने माटे बेग हरि म्हारुं, बासनु बांधी ।
 जशोदा बेर जमवा तेढे, रह्यां छे गंधी ॥ साने ॥ टेक ॥
 जाणु छुं जे माखण लेइने, नाशीरे जावा ।
 छोकर्गना साचावा करोछाँ, खावुं त्यो खावा ॥ साने ॥ १ ॥
 माखणनुं सुं मेणुं दे छे, घेलीरे गोपी ।
 कालनी विसरी गयो छुं, हुं पेली टोपी ॥ साने ॥ २ ॥
 हरि हरि करना रे उछ्या, दामोदर देवा ।
 महेता नरसैयाना स्वामीजीनी, आमीरे टेवा ॥ साने ॥ ३ ॥

* ॥ प्रभात ॥ ११ ॥ *

छानो मानो आवे कहाँन, पाछली गते ।
मोर्लीमां भैख गायो, आवी परभाते ॥ छानो ॥ टेक ॥
मम स्वाइने सुती हुती, नहीं बोलुं नम साथ ।
द्वार उघाडीने पाये लागी, मोर्लीने नादे ॥ छानो ॥ १ ॥
कोण नप कीधां हशे, आहिडांनी जान ।
नग्सैयानो स्वामी मलीयो, गोपिकानो नाथ ॥ छानो ॥ २ ॥

* ॥ प्रभात ॥ १२ ॥ *

मानारे जशोदा मुजने, स्मन आलो ।
मोटा मोय ताम विणीने, मारे गजवे घालो ।
चांदलीयो चुटीने मारा, हाथमां आलो ॥ मानारे ॥ टेक ॥
रुवे रुवेने गता थाये, चांदा मासु जुवे ।
मानारे जशोदा हरिनां, आंशुडां लुवे ॥ मानारे ॥ १ ॥
भान भानना स्मकडां आप्यां, तोये ना गीझे ।
आकाशमानो चांदलीयो, ते लेवाने ईच्छे ॥ मानारे ॥ २ ॥
बालकडां तो महुने हमे, कहां रे थयां अजान ।
आकाशमानो चांदलीयो केम, उतरे भोका कहान ॥ मानारे ॥ ३ ॥
माव मोनानुं पालणुं ने, हीरनी दोरी ।
हालरडां हुलरावे, माना जशोदा गोरी ॥ मानारे ॥ ४ ॥
वाळकडां में जल जुमनामें, चांदलीयो दाख्यो ।
महेना नरसैयानो स्वामी, जशोदाये रुठनो राख्यो ॥ मानारे ॥ ५ ॥

* ॥ प्रभात ॥ १३ ॥ *

जेवोने तेवोरे तमारे, पालबे बांध्यो ।
 अणछनो अबलारे, तमारो वधायो वाध्यो ॥ जेवोने ॥ टेक ॥
 अन तेड्यो आंगणीये रे आवुं, नाण्यो ना तुटूं ।
 तारा प्रेमनो बांध्योरे सखी, कवहु ना छुटूं ॥ जे० ॥ १ ॥
 रमाढ्यो रमुरे सखीः जमाढ्यो जमुं ।
 तमारे समेरे गोपी, अमारे सारुं ॥ जे० ॥ २ ॥
 हुंकारे आगेरो जावुने, दुंकारे राखुं ।
 जहां नरसैयो गान करे तहां, प्रेमे हुं नाचुं ॥ जे० ॥ ३ ॥

* ॥ प्रभात ॥ १४ ॥ *

धामस धूमस करी, विश्व वगोयो ।
 संमार सागररे माया, कंपमां खुंप्यो ॥ धामस ॥ टेक ॥
 मूंद मनि तो काँई न जाणे, आप वग्वाणे ।
 कारमा कुटुंब केगं, धूमरां नाणे ॥ धामस ॥ १ ॥
 संसार सागररे उंडो, माया छे मोटी ।
 रामजीनुं नाम न जाण्युं, थयो छे खोटी ॥ धामस ॥ २ ॥
 रामजीनुं नाम न जाण्युं, विषया सुं गच्यो ।
 रुड रतन तजीने काचे, ठीकरे बाज्यो ॥ धामस ॥ ३ ॥
 कंपमां खुंप्योरे एने, कोण ज काढे ।
 महेता नरसैयाना स्वामी मले, तारे पार उनारे ॥ धामस ॥ ४ ॥

* ॥ प्रभात ॥ १५ ॥ *

मले तुं भगवान प्रगत्यो अमारे काजे ।

आटला दिवम छानो रह्यो, पेला मुनिकरनी लाजे ॥ भलेतुं ॥ टेक ॥
 एवा महा निशंके रहेबुं, पेला कंसने राजे ।
 प्रेमगम कीडा करे रे, निशान बाजे ॥ भलेतुं ॥ १ ॥
 गोकुल मांहे कोटिक नारी, शणगार माजे ।
 गज गनि चाल चाले, नूपुर बाजे ॥ भलेतुं ॥ २ ॥
 नारी गज निश्चल हबुं, लिलाये छाजे ।
 नस्मैयो सुख मागर झीले, प्रेमनी पाजे ॥ भलेतुं ॥ ३ ॥

॥ इति श्री राग प्रभातना कीरतन मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग वेलावलना कीरतन *

* ॥ वेलावल ॥ ३ ॥ *

आज मार्ग नयनां सफल थयां । जोया नाथने निस्त्री ।
 सुंदर वदन निहालीने । हैडामें हस्त्री ॥ आज ॥ टेक ॥
 जेबुं रे मन माहरुं हतुं । तेबुं नाथे कीधुं ।
 प्रभे प्रभुजी पथारीया । आलिंगन दीधुं ॥ आज ॥ १ ॥
 शिव विरचीने महामुनि । तेने ध्याने न आवे ।
 परम भाग्य ब्रिज नासनां । वहालो लाड लहावे ॥ आज ॥ २ ॥
 महारो वहालोजी विहारीला । तेने जावा न दीजे ।
 हाथेथी हरिने ना मुकीए । अंतरगत लीजे ॥ आज ॥ ३ ॥

श्यामजी संग श्यामा रहे । आलापीने गावे ।
 स्वर पुरे महु सुंदरी । अनि आनंद थावे ॥ आज ॥ ४ ॥
 धन धन रे जुमना तट । धन ब्रजनो रे वास ।
 परम भाग्य आ भूमिना । वहालो रमीया छे राम ॥ आज ॥ ५ ॥
 अमर लोक अंतरिक्षिर्थी । जोवाने आवे ।
 पुष्प वृष्टि देवता करे । नरमैयो वधावे ॥ आज ॥ ६ ॥

* ॥ वेलावल ॥ २ ॥ *

नयना कुरंगी नागरी । नव योवन माता ।
 वरुं तो त्रिज नाथने । नहिं तो रहुं रे कुंवारी ॥ टेक ॥
 जीरे योवन मारुं निन नवुं । कोईने नव दाखुं ।
 आपुं तो ब्रजनाथने । मारु मुजकने रखुं ॥ नयना ॥ १ ॥
 जे रस नयने निपजे । तेहने कोई न जाने ।
 के जाने मारो वालमो । नरसैयो माने ॥ नयना ॥ २ ॥

* ॥ वेलावल ॥ ३ ॥ *

बाल विनोद गोपालकी । देवन मोहे भावे ।
 प्रेम पुलकी आनंद भरी । यशोमति गुण गावे ॥ टेक ॥
 बाल समेन धन शामरो । आंगणमें धावे ।
 बदन चुंबन गोई दीये । सुन साने खेलावे ॥ बाल विनोद ॥ १ ॥
 शिव विरचि मुनि देवता । जाको पार न पावे ।
 मो परमानंद गोवालणी । हसी कंठ लगावे ॥ बाल विनोद ॥ २ ॥

* ॥ वेलावल ॥ ४ ॥ *

बाल लीला गोपालकी । सब काहुकुं भावे ।

जाके भुवनमें जात है । सो ले गोद खेलावे ॥ टेक ॥
 कमल नयन मुख निरंगिके । यशोमति मुख पावे ।
 लाल बाल कहे गोपिका । हमी कंठ लगावे ॥ बाल लीला ॥१॥
 चुटकी देन प्रेम मुदित हो । कर ताल बजावे ।
 परमानंद कृष्ण नाच ही । वस ताहि जनावे ॥ बाल लीला ॥२॥

* ॥ वेलावल ॥ ५ ॥ *

तें मेरी लाज गुमाई रे । जशोमतिके ढोया ।
 देही विदेही हो गई । मिट्ठे बुंधट ओया ॥ तें मेरी ॥ टेक॥
 कमल नयन मन मोहना । हलधरमें छोया ।
 छेल छबीले रूपमें । भई रूपका पोया ॥ तें मेरा ॥३॥
 श्री गोपाल तुम चासन । हम मनिके बोया ।
 प्रेमानंद सोई जान है । जाही प्रेमकी चोया ॥ तें मेरी ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ ६ ॥ *

ए सुंदर ढोया कौनके । सुंदर मृदु वाणी ।
 भैद बतायो खालनी । जायो नंदगणी ॥ टेक ॥
 सुंदर भाल तिलक दीये । सुंदर मुसकानी ।
 सुंदर नयन निहार लीये । कमलको पाणी ॥ ए सुंदर ॥१॥
 सुंदित्ता तीहु लोककी । लेई त्रिजमें आणी ।
 परमानंद जशोमति । सब सुख लपटाणी ॥ ए सुंदर ॥२॥

* ॥ वेलावल ॥ ७ ॥ *

आज गई हरि राधिका । जशोमतिके याहि ।
 महेरि कथो हसी दधि मथो । भ्रमुभान दुलारि ॥ आज ॥ टेक ॥

सुनी आनंद घाँड़ी भई । कर नेत सहाई ।
 छुँछो माट बीलोवही । चित्त जहाँ रे कन्हाई ॥ आज ॥१॥
 उनकी गति में कहा कहुँ । जीने हषि चोगई ।
 बछर्गं तो ओ वृषभसो । गईयां विसराई ॥ आज ॥२॥
 देखी दोउनकी होशको । जशोमनि मुमकाई ।
 सूरदाम दंपनि दशा । मोंपे बरणी न जाई ॥ आज ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ ८ ॥ *

दूर जीन जाओ मेरे गघवे । खेलो आंगन घरके ।
 नयनथे न्यारे जिन थो । छनीयां मेरी घरके ॥ दूर॥टेक॥
 निश दिन रहे मोहे चटपटी । गमन के घरके ।
 लाल धनैया तेरे हाथकी । तोरुंगी तरके ॥ दूर जीन ॥१॥
 सुन मैया तोकुं कहुँ । सुनियो चिन घरके ।
 लंकापनि कैसे मरे । पेसुं खुने घरके ॥ दूर जीन ॥२॥
 कौशल्या विस्मय भई । ऐमो शबद सुनके ।
 सूरदास बात अटपटी । कही छोटेसे लडके ॥ दूर जीन ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ ९ ॥ *

वनचर वीरा वधामणी । कोन देशथी आव्यो ।
 आरे मुद्रिका मारा नाथनी । कहने क्यां थकी लाव्यो ॥ टेक ॥
 आरे मुद्रिका मारा नाथनी । कोने जोवा न जडनी ।
 तारे हाथे क्यांथी आवी । मुने गम नधी पढतो ॥ वनचर ॥१॥
 साचु बोलो मारा बंधवा । साची संभवावो वात ।
 झार होलाय मारा नन नणी । कुशल छे रघुनाथ ॥ वनचर ॥२॥

कुड्डरे कीधुं माग कंथजी । हग्गिये हाथे न मार्या ।
 कपूर सोयुं लई कागने । मारे बहाले विसार्या ॥३॥
 माग नाथ नमेग सुंथया । हैडां कठणज कीधां ।
 छतां आपे महु देखतां । मुखडे मुनिवत लीधां ॥४॥
 जोग लीधो बे चांधवे । बेठा आमन वारी ।
 सीता आपीने तापम थया । उपवीत दीधां बारी ॥५॥
 पंथ निहाली नेत्र मयां । हजु पार न आवे ।
 तुलसीना स्वामीने जई कहो । मती मंदेमो कहावे ॥६॥

* ॥ वेलावल ॥ १० ॥ *

हसीने बोल्या हनुमानजी । माता आज्ञा माणुं ।
 कहो तो गवणने रोल्युं । कहो तो लंका लगाढुं ॥ टेक ॥
 मातु बोलो मार्ग मानजी । चिंता तनक न करीये ।
 एक मने आगधाये । ध्यान प्रभुजीनु धरीये ॥हसीने ॥१॥
 आरे आव्या रुडा गमजी । दुष लेवा तमारु ।
 मुने पोकल्यो सुध लेवाने । कहुं मानोने मारु ॥हसीने ॥२॥
 गम लक्षण बहु बंधवा । समाचार छे सारा ।
 मती तणा दुःख सांभली । आवे आंसुनी धरा ॥हसीने॥ ॥३॥
 आरे आव्या रुडा गमजी । सुनजो मोरी माया ।
 थनार हमे ते थई रहेमे । गुण तुलसीये माया ॥हसीने॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ ११ ॥ *

जान सय कहासुं कहुं । जानन हो जीयाकी ।
 हिरदे कपट मुख चातुरी । लागे सब फीकी ॥ जान ॥ टेक ॥

काम क्रोध छाकयो छकयो । छल करी तन स्वोयो ।
 मे ऊनकुं आदर कीयो । मोहे बहोत बिगोयो ॥ जान ॥१॥
 ओ तो मौं बिन कछु नहीं । मे तो उन बिन नीका ।
 ओ तो मिले बिगारु ए । मेरे शिखे टेका ॥ जान ॥२॥
 प्रभु मैं तुमसुं बिमुख भया । विषया अनुगगे ।
 मैं भिक्षुक का कपी भया । नाच्या जुग आगे ॥ जान ॥३॥
 प्रभु तुमने मोसुं बहोत करी । मैं तो बहोत बिगारी ।
 माधोदास भयभीत भया । त्राहि त्राहि पोकारी ॥ जान ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ १२ ॥ *

भाईरे-सतगुरुशब्दे छुटसो । कीजे अतवाग ।
 ए संमार सब बांधीया । जम जाल पमाग ॥ सतगुरु ॥ टेक॥
 कीर भये तीनो जना । दोये विषका गाग ।
 मोहकी फांसी डारके । पकडा मंसाग ॥ सतगुरु ॥१॥
 ब्रह्माए वेद सहि कीया । शिवे योग पमाग ।
 विष्णु दया उनपत भई । ए उस्ला वहेवाग ॥ सतगुरु ॥२॥
 तीनलोक दशो दशा । जमें रुधा द्वाग ।
 जोत स्वरूपी हाकमें । निज अमल हमाग ॥ सतगुरु ॥३॥
 अमल छोडावुं मैं तासका । पठवुं भवपाग ।
 कहेत कबीर अमर करु । निज होय हमाग ॥ सतगुरु ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ १३ ॥ *

भाईरे-गम भजे सो जानीये । जाके आनुर नाहिं ।
 शील संतोष लिये रहे । धीरज मन माहिं ॥ गम भजे ॥ टेक॥

काम क्रोध व्यापे नहीं । तृष्णा न जगावे ।
 परफुलिन आनंदमें । गोविंद गुण गावे ॥ राम भजे ॥१॥
 पर निंदा भावे नहीं । मुख असत न भासवे ।
 कलह कलपना मेटके । चरणे चित गरवे ॥ राम भजे ॥२॥
 आनंदेव आश्रय नहीं । पतिव्रता धर्म पेखे ।
 संत समागम नित करे । काहु दोष न देखे ॥ राम भजे ॥३॥
 मम दृष्टि शीतल मदा । दुबधा नहीं आने ।
 कहेन कबीर ना दाससुं । मेरे मन माने ॥ राम भजे ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ १४ ॥ *

भाईरे-सो वैरागी रामका । मनमा श्रहे लावे ।
 आतम देव निरंजना । ताकुं आन जगावे ॥ सो वैरागी ॥टेका॥
 मग्न होय मनकुं श्रहे । सब भरम भगावे ।
 पांचोकुं परमोधके । मली मंगल गावे ॥ सो वैरागी ॥१॥
 राजस गुणकुं मेटके । तामस विमगावे ।
 तीजे गुण आमन करे । चौथे लौलावे ॥ सो वैरागी ॥२॥
 अंतरगत आसन करे । निजतत्व निरतावे ।
 कहेन कबीर पद परमके । पद माहिं समावे ॥ सो वैरागी ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ १५ ॥ *

भाईरे-अकथ कहानी मेरे पीवकी । कछु कहेन न आवे ।
 गूंगे केगी सखग । बैठा मुसकावे ॥ अकथ ॥टेका॥
 भौम बिना और बीज बिना । तन तरुवर भाई ।
 अनेक फल प्रकाशीया । गुरुगम लखाई ॥ अकथ ॥१॥

मन थोर बैठ विचारीया । रामे लौलाई ।
 झुटी अनभे विस्तरी । थोथी सब भाई ॥अकथ ॥२॥
 कहेत कबीर सकत कछु नहीं । सतगुरु भया महाई ।
 आवन जाना मिट गया । मन मन ही समाई॥अकथ ॥३॥
 * ॥ वेलावल ॥ १६ ॥ *

भाई रे—जग सुं प्रीतना कीजिये । मोहे मनमोग ।
 स्वाद हेत लिए रहे । नीकमे कोई सूरा॥जगसुं ॥टेक ॥
 एक कनक अरु कामनी । जगमें बड़ फंदा ।
 आपे जो न बंधारही । नाका में बंदा ॥ जगसुं ॥१॥
 रूप रूप सेती भया । रूपे रूप उपाया ।
 रूप रूप सु लगो रहा । रूपे रूप स्वाया ॥ जगसुं ॥२॥
 एक एकते मिली रहे । तत्त्व ही सब पाया ।
 प्रेम प्रीत लौ लीन होई । तब बहोर न आया ॥ जगसुं ॥३॥
 कहेत कबीर कृपाभई । निरभे पद पाया ।
 सांसा तो सब ही गया । सतगुरु समझाया ॥ जगसुं ॥४॥
 * ॥ वेलावल ॥ १७ ॥ *

भाईरे-कहा करुं कैसे नह । भवजल अनि भागे ।
 राख राख हो रामजी । मैं शरण निहारी॥कहा करुं ॥टेक॥
 गृह नज बन खंड जाईये । बन खाईये कंदा ।
 विषय विकार न त्यागही । ऐमा मन गंदा ॥ कहा ॥१॥
 तन मन धन जोवन गया । कछु कीहा न नीका ।
 ए हीरा निरमोलका । कौड़ीले बेका ॥ कहा ॥२॥

विषम विष्यकी वासना । तजे नजीयन जाई ।
 जनन जननकर टागीये । फिर फिर लपटाई ॥ कहा ॥३॥
 कहेत कबीर कलि केशवा । तुम सकल व्यापी ।
 तुम समान दाता नहीं । हमसे नहीं पापी ॥ कहा ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ १८ ॥ *

भाईरे-मन पतंग चेते नहीं । जल अंजलि समाना ।
 तृष्णा लागी बगुचही । दाढ़े ए निदाना ॥ मन पतंग ॥ टेका ॥
 कहेकुं नेनन दीये । मृद्ध नहीं आगो ।
 जनम अकारज खोईया । मापन संग लागी ॥ मन पतंग ॥१॥
 कहेत कबीर चित चंचल । गुरु कद्मा ममझाई ।
 भगत कोई न जर्जरे । भावे किंत जाई ॥ मन पतंग ॥२॥

* वेलावल ॥ १९ ॥ *

भाईरे-बाजीगर बाजी स्त्री । बाजी विस्तार ।
 बाजीमे बाजी रमे । बाजीगर न्याम ॥ बाजीगर ॥ टेका ॥
 काम क्रोध मद लोभकी । लीढ़ी रज बाही ।
 जल थल जीते तेते । बाजी भरमाई ॥ बाजीगर ॥१॥
 अहं बांस ममना चढ़ी । मोह दोर पमारी ।
 भर्म ढोल वागे सदा । नाचे नर नारी ॥ बाजीगर ॥२॥
 सुख दुःख गोय ऊळले । ममना मद पीना ।
 ब्रह्मा इन्द्र महेश लुं । बाजी बश कीना ॥ बाजीगर ॥३॥
 चंचल था निश्चल भया । निर्भय गृह पाया ।
 कहेत कबीर बाजी तजी । बाजीगर पाया ॥ बाजीगर ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ २० ॥ *

भाई रे—मो हरिजन गृही भला । जाके हरिसुं प्रीत ।
 रात दिवस नही विसरे । करे हरिजन मीत ॥ मो हरि ॥ टेक॥
 कुल करणी सब मेटके । तजे जग वहेवारा ।
 आहार प्रमाणे उद्यम करे । और तजे पमारा ॥ मो हरिजन ॥ १॥
 काम कोध मद मत्तमर । अभिमान निवारे ।
 अपना ही जीव सर्वनमें । दया धर्म विचारे ॥ सो हरिजन ॥ २॥
 कहेत कबीर कलियुगमें । हरिजन कोई एक ।
 और मकल स्वांगी सदा । जाका चित अनेक ॥ सो हरिजन ॥ ३॥

* ॥ वेलावल ॥ २१ ॥ *

भाई रे—ऐसे हरि क्यों पाईये । मन चंचल भाई ।
 विकल भयो चहोदश फिरे । गोक्यो ना रहेगी ॥ ऐसे ॥ टेक॥
 में मेरी छूटे नही । ननकी नही तूगे ।
 आश करे बैकुंठकी । नब लगी सब झूड़ी ॥ ऐसे हरि ॥ १॥
 कहार शान पढ़ाईये । मन मैंगल भैसा ।
 अंतर तो बिधा नही । जैसेका तैसा ॥ ऐसे हरि ॥ २॥
 देखनका बग ऊजला । मनमें कपटाई ।
 आंख मुंद मुनि भये । मछली गटकाई ॥ ऐसे हरि ॥ ३॥
 छापा निलक बनायके । नाचे और गावे ।
 आपे तो समझे नही । औरां समझावे ॥ ऐसे हरि ॥ ४॥
 कपट कीये रीझे नही । करता नही काचा ।
 कहेत कबीर सहेजे मिले । अंतर होय माचा ॥ ऐसे हरि ॥ ५॥

* ॥ वेलावल ॥ २२ ॥ *

भाई रे—यों साधो संसारमें । कमल जल माहिं ।
 सदा सखदा संग रहे । जल परमे नाहिं ॥ टेक ॥
 जुगत जान जलकूकडी । जल माहिं रहाई ।
 पाणी पांख लेपे नही । कोई कसरन पाई ॥ यों साधो ॥ १ ॥
 मीन तले जल उपरे । कछु लगनन भाग ।
 आड अडक माने नही । बिचरे जल माग ॥ यों साधो ॥ २ ॥
 पट रम भोजन पायके । कर मुख लपटाई ।
 जिभ्या तो लागे नही । काँई चिकनाई ॥ यों साधो ॥ ३ ॥
 भगल विद्या नट खेलीया । कर मोह पमारा ।
 खंडव खंडा हो पडा । फिर सारेका मारा ॥ यों साधो ॥ ४ ॥
 भेद जंबुरे पाईया । सरप लपटाई ।
 भय काँई लागे नही । कछु गुरुगम पाई ॥ यों साधो ॥ ५ ॥
 जैमे मीप समुद्र बसे । जल बरसे आकाशा ।
 कूर्म कला विचारके । बिचरे निज दासा ॥ यों साधो ॥ ६ ॥
 ज्यों बंधी बसीयर बसें । कोई पकड़ न पावे ।
 कहेत कवीर गुरु मंत्र थे । आपे चली आवे ॥ यों साधो ॥ ७ ॥

* ॥ वेलावल ॥ २३ ॥ *

भाई रे—नाम वणझ रे वाणीया । जो परमपद पावे ।
 जीने ए नाम वणझीया । फिर हाट न आवे ॥ टेक ॥
 ज्ञान पलकर ताकडी । चित तोल मबेरा ।
 चित चेतन करी तोल ले । नाते होय निवेरा ॥ नाम ॥ १ ॥

जुगने जुगन मिलायके । धीरज कर ढांडी ।
 पुग तंत उनारीले । बोहोरी होय न भाँडी ॥ नाम ॥२॥
 दाम कबीर निरभे भया । जीत्या मनि हारे ।
 ताते जीव भया खालमा । जम कागद फारे ॥ नाम ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ २४ ॥ *

भाईरे-जंगलमें कहा सोवना । जहां औघट घाटा ।
 सिंघवा दो बनमें बसे । अरु लांबी वाटा ॥ टेक ॥
 निशवासुर केढे पढे । जम दाणी लूटे ।
 सूर धीर साचे मते । सोई जन छूटे ॥ जंगलमें ॥१॥
 चाल चाल मन माहेरा । पुर पाठण गहीये ।
 मिल रहीये त्रिभुवन नाथमें । निरभे होई रहीये ॥ जंगलमें ॥२॥
 अमर नही मंमारमें । बिनमें नर देही ।
 कहेत कबीर विश्वासमें । भज राम सनेही ॥ जंगलमें ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ २५ ॥ *

भाईरे-तुजे बिगनाकहा पडी । तुं अपनी निवेड ।
 ए दुनीयां है बावरी । मन कीसीकुं छेड ॥ टेक ॥
 सिधी चात समझे नही । पैडे उलटे जावे ।
 बात बनावत वेदकी । फिर दोहोरी लावे ॥ तुजे बिगनी ॥१॥
 बड़ी घात बेहदकी । ताका कोन गोहाई ।
 ईन तो सारी आलम जूरी । तुं चुपकर माई ॥ तुजे बिगनी ॥२॥
 समझेमें सुख है धना । कथनी जग जोवे ।
 कहेत कबीर बकवादमें । दिल दिलगीर होवे ॥ तुजे बिगनी ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ २६ ॥ *

भाईरे—तन वैरगी मन करो । मन हाथ न आवे ।
 पुरुष विहूनी नाखो । नित विह मतावे ॥ टेक ॥
 चौबा चंदन अरगजा । घस अंग लगावे ।
 रोक रही मग नागनी । जुग जुग भग्मावे ॥ तन वैरगी ॥ १ ॥
 मान बडाई उर घमे । कलू काम न आवे ।
 आडा कोट है भर्मका । किमी दश्तन पावे ॥ तन वैरगी ॥ २ ॥
 माया प्राण अंकूर दे । कर ले गुरुकी मेवा ।
 कहें कबीर नब बंचि हो । जम लेखा देवा ॥ तन वैरगी ॥ ३ ॥

* ॥ वेलावल ॥ २७ ॥ *

अरे मन मूरख बावरा । तेरी मदा न देही ।
 काहे न सुमिगे नामको । गुह परम सनेही ॥ टेक ॥
 सोनेकी लंका रही । भई धूला धानी ।
 सो रावणकी साहेबी । छिन मांहि हेरानी ॥ अरे मन ॥ १ ॥
 सोगह जोजन दल चले । चले छत्रकी छांहि ।
 सो दुर्योधन यों गयो । मिलो पांटी मांही ॥ अरे मन ॥ २ ॥
 ये माया कहाकी भई । किसके संग लागी ।
 गुडियासी उडजायगी । चित चेत अभागी ॥ अरे मन ॥ ३ ॥
 कहें कबीर कहासें कहुँ । कोई नहीं अपना ।
 यादुनिया बहिजायगी । जैसा रैनका सुपना ॥ अरे मन ॥ ४ ॥

* ॥ वेलावल ॥ २८ ॥ *

भाईरे—संत चले दशा ब्रह्मकी । तजी जग वहेवाग ।

सिधे मारग चालनां । निंदे संमारा ॥ टेक ॥
 दादा बाबा चालते । सो तो मारग खोया ।
 सोई वहेपारक्यों कीजीये । जामें आवे टोया ॥ संत चले ॥ १ ॥
 जो मरजादा वेदकी । सो तो संने मेटी ।
 जैसे गोपी कृष्णकुं । सब तज कर मेटी ॥ संत चले ॥ २ ॥
 पंथ पृगतन ना लखे । ताथे वहोतेक छेटा ।
 दास कबीर उलटी चले । जब सत्गुरु मेटा ॥ संत चले ॥ ३ ॥

* ॥ वेलावल ॥ २९ ॥ *

भाई रे—ऐसी भक्ति नव कीजीये । जामें होवे हाँसी ।
 अंतकाल जम मारही । गले देवे फाँसी ॥ टेक ॥
 ज्यो मंजारी सुन कथा । खोया ब्रत कीना ।
 करसे दीपक डास्के । मूमा ग्रही लीना ॥ ऐसी भक्ति ॥ १ ॥
 ज्यों कुंजर जलमें धसो । जल रहो भरपूरा ।
 जलमें निकम ढाढ़े भयो । शिर डागी धूरा ॥ ऐसी भक्ति ॥ २ ॥
 लाख पिगल जैसे चली । पावकके संगा ।
 दूर कीया पिगले नही । हरदा बजरंगा ॥ ऐसी भक्ति ॥ ३ ॥
 कहेत कबीर गुरुज्ञानमे । जीवन ही मरीये ।
 मेल पकरीये माचकी । पांचोसुं लरीये ॥ ऐसी भक्ति ॥ ४ ॥

* ॥ वेलावल ॥ ३० ॥ *

भाई रे—पखा यखीके पेखने । मब जग भूलाना ।
 निर्पक्ष होयके हरि भजे । सोई संत सयाना ॥ टेक ॥
 ज्यों खसुं खर बांधिया । ऐसे बांध्या लोई ।

जाके आतम दृष्टि है । माचा जन सोई ॥ पखा पखी ॥१॥
पूरेकी पूरी दशा । कोई पूरा ही पेखे ।
कहेन कबीर कहामो कहुँ । यानो बात अलेखे ॥ पखा पखी ॥२॥
* ॥ वेलावल ॥ ३१ ॥ *

भाईरे-कमल नयन प्रभु केशवा । सुनो त्रिभुवन नाथा ।
तेग जन होई क्यों डरे । जाके मस्तक हाथा ॥ टेक ॥
जल पेसन जोखम भयो । कुंजर दुःख पायो ।
नव स्थुनाथ पोकारीया । तनकाल छोडायो ॥ कमल ॥१॥
जल थल गिरी ज्वाला थकी । प्रह्लाद उबायें ।
नरसिंह होयके प्रगटे । हरणाकंस मायें ॥ कमल ॥२॥
अंचरिष केरे कारणे । धरीया अवतारा ।
नामदेव कीसन करी । हरिये फेर्या द्वारा ॥ कमल ॥३॥
चरणे अहल्या उद्धरी । द्रौपदि पन रानी ।
कहेन कबीर सांमो केमो । जाकी निगम है माल्ही ॥ कमल ॥४॥
* ॥ वेलावल ॥ ३२ ॥ *

भाई रे-गम भरोसा गलीये । अपने मन मांहि ।
मव विधि काज समारही । कछु चिना नाहि ॥ टेक ॥
नव तेरी गांड कहा हुनो । जव गर्भ बमेरा ।
अब तोकुं कोडी मिली । काला मूँह तेरा ॥ राम ॥१॥
पशु पंखी अजगर धणा । बहु कीट पतंगा ।
सबकुं भक्षन देत है । प्रभु सबके संगा ॥ राम ॥२॥
मिथु सरीना पोहोकर कुञ्जा । भर रान्धा पाणी ।
खाली काहु न पेखीये । ऐसी अकथ कहानी ॥ राम ॥३॥

बैठ कबीर जहाजमें । उनसे भव पाग ।
खेबन हाग खेब ही । जाके भीर भाग ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ ३३ ॥ *

भाईरे-उत्तम कुलसें कहा सरे । जोपे राम न भावे ।
मबथे सुपच शिरोमणि । गोविंद गुण गावे ॥ टेक ॥
वेद व्यासमे को बडो । मब विद्याधिकारी ।
तीनकी तपत नबे बुझी । जब उलटी विचारी ॥ उत्तम ॥१॥
और सुनो शुकदेवकी । तपकुल अभिमानी ।
जनक विदेही गुरु किया । ताथे गत जानी ॥ उत्तम ॥२॥
तजी अहंकार मोह भर्मना । नारदे गुरु कीना ।
तन मन दई सेबा करी । निरभे पद लीना ॥ उत्तम ॥३॥
मैं मेरी लुटी नही । तनकी नही आई ।
कहेत कबीर हरि भक्ति बिन । मिथ्या चतुर्गई ॥ उत्तम ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ ३४ ॥ *

भाईरे-तत्त्व कहेनकुं राम है । भजी लीजो सोई ।
लिला मिंधु अघाध है । गत लखे जन कोई ॥ टेक ॥
जोग जगनथे कहा सरे । तीरथ अस्ताना ।
ओसे व्यास न भाजही । भजीये भगवाना ॥ तत्त्व ॥१॥
कंचन मेरु समान है । गज दीजो दाना ।
कोट गौ जो दान दे । नही नाम समाना ॥ तत्त्व ॥२॥
पूजनकुं साधु जना । हरिके अधिकारी ।
उनसे गोविंद पाईये । एह परउपकारी ॥ तत्त्व ॥३॥

एक मना एक दशा । हरिको ब्रत धरीये ।
नामदेव नाम जहाज है । भवमागर तरीये ॥ तत्त्व ॥४॥

* ॥ वेलावल ॥ ३५ ॥ *

भाई रे—मेरे ब्रत हरि नामका । ममरु मन माँहि ।
अनेक ब्रत संमारके । उनमें खप नाहि ॥ टेक॥

इन्द्री निश्रह होवे नहीं । लगे नहीं ध्याना ।
तप तीरथ साधु नहीं । देउं नहीं दाना ॥ मेरे ब्रत ॥१॥

रिद्धि मिद्धिकी इच्छा नहीं । नहीं मुक्ति मु कामा ।
सतगुरु शब्द बताईया । सुमरुनिज नामा ॥ मेरे ब्रत ॥२॥

आनदेव याचु नहीं । याचुं हरि एका ।
अब ज्ञानी भूले नहीं । गुरु कद्या विवेका ॥ मेरे ब्रत ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ ३६ ॥ *

भाई रे—हो मन मेरे बावरे । बकवाद न कीजे ।
संत संगत हस्तिण कथा । निरमल रस पीजे ॥ टेक॥

बाद किये विष उपजे । कछु हाथ न आवे ।
सुमरनमें मेरी पडे । आगे दुख पावे ॥ हो मन ॥१॥

सतगुरु सोहम सत कहा । गत लखे न कोई ।
श्याम मनेही जो मिले । विष अमस्ति होई ॥ हो मन ॥२॥

कोई नंदे कोई बंद ही । तु मन धर लेही ।
जन ज्ञानीकुं ज्ञानी मिल्या । भज चरणकी खेही ॥ हो मन ॥३॥

* ॥ वेलावल ॥ ३७ ॥ *

भाई रे—जब महाराज कृपाकरे । तब सब बनी आवे ।
सुख संपत्ति आनंद घणो । धेर बेगं पावे ॥ टेक॥

बणझ ना छांडेस वाणीया । भ्रमण ब्रत धारी ।
 पनिब्रता ठाठी रही । गजगुणका ओधारी ॥ जब ॥ १ ॥
 कुवजाये कहारे उद्यम कीयो । मथुगंको माली ।
 ले चंदन और पुष्पसें । अरचे बनमाली ॥ जब ॥ २ ॥
 कछु सेवा कछु दान पुन्य । कछु जप तप कीनो ।
 पांडव हेत कुल लाजनां । अपनो करी लीनो ॥ जब ॥ ३ ॥
 माची प्रीत गोपालकी । जाके सुर मुनि माखी ।
 परमानंद सभा मध्ये । द्रोपदि पत राखी ॥ जब ॥ ४ ॥

* वेलावल ॥ ३८ ॥ *

भाई रे-सब बातनकुं चतुर है । सुमरणकुं काचा ।
 राम ही नाम विसारके । माया रंग गता ॥ टेक ॥
 दिनदयालु भूल गये । देई आये वाचा ।
 जहां जहां नचायो कामनी । तहां तहां ही नाचा ॥ सब ॥ १ ॥
 जिह्वा इन्द्री सुख कारणे । महे नरककी आंचा ।
 कहें मलूका विषय छांडके । भजो माहेव माचा ॥ सब ॥ २ ॥

* ॥ वेलावल ॥ ३९ ॥ *

भाईरे-कहा पढे भयो पंडिता । जो पे मनहुं न जीता ।
 लोभ अगनके बस पढा । पढ थाक्यो गीता ॥ टेक ॥
 पांचो मार ना बस कीया । इहां आई फिरो रीता ।
 कहे मलूका भरम छांडके । हरि नाम न लीता ॥ कहा ॥ १ ॥

॥ इति श्री राम वेलावलना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग धनाश्रीना कीरतन *

* ॥ धनाश्री ॥ १ ॥ *

तुं तो समझि सुमालग चलरे । लाडकडारे मनवा ।
 तुं तो हरिभज विलंब न कररे । लाडकडारे मनवा ॥ टेक ॥
 काम क्रोध मद लोम निवारो । तृष्णा दुर्मनि कपट विसारा ।
 ले गुरुज्ञान दिपक (घट) निहालो । तब तेरो मिटेगो निमिररे ॥१॥
 पढदा खोल मगन होई नाचो । सुमन ते सनगुरु राचो ।
 परधन परदारा दूर बंचो । तुं परनिंदा परहर रे ॥लाडकडा ॥२॥
 लख चोरासी तुं भमि भमि आयो । मनुषा जनम पदारथ पायो ।
 हीरो हाथ बहुरि नहीं आवे । आ मोक्ष मुगत अवसररे ॥ला०॥३॥
 गजपति अश्वपति भूप कहावे । (बैठ) तखतपर चमर ढोलावे ।
 सुख सपनो ए कछु थिर नाही । तुं चेत अलख अमर रे ॥४॥
 मात पिता सुन बंधु दारा । ए सब तज गये अंतकी बारा ।
 प्रीत रित करी सबही पोकारे । जब फुटी अंबु गागर रे ॥५॥
 उख उसास अंतकी बेरा । बिन सनगुरु कोन साहे है तेरा ।
 मन थिर करीतुं चेन सबेला । तुं काल चक्रसें ढर रे ॥ला०॥६॥
 लक्ष करोड पद्मजो पावे । बिन सतगुरु कछु काम न आवे ।
 जीती जन्म पदारथ पावे । तुं तो समर रे सनगुरु रे ॥ला०॥७॥
 या तनको तुं सोंध लगावे । खट रस भोजन भोग भोगावे ।
 सो तन कोडी काम न आवे । जब उठी चल्यो भमर रे ॥८॥
 आतेरो अवसर आतेरी वारी । कछु न जीते तुं बाजी हारी ।
 कहेत कबीरमें प्रगट पोकारुं । तुं रामही राम सुमर रे ॥ला०॥९॥

* ॥ धनाश्री ॥ २ ॥ *

ना कछु ना कछु रामजी विनारे। ना कछु ना कछु रामजी विनारे।
 देही धरेको एहो परमगत । संत संगतमें रहेना ॥टेक॥
 मंदिर रहत मास दश लागे । बिनशत एक थना ।
 पल एक सुखके कारण प्राणी । परपंचकरत धना ॥ना कछु॥३॥
 मात पिता सुत लोक कुटुंबमें । फुल्यो फिरत मना ।
 कहेत कबीर राम भज प्राणा । तुं छांड सकल भ्रमना ॥ना कछु ॥४॥

* ॥ धनाश्री ॥ ३ ॥ *

कर मन माधोकी चकरी रे ।
 आनदेव ऐसे करी मानो । ज्यो कडवी ककरी ॥ टेक ॥
 आनदेवकी ना कर सेवा । जो मागे बकरी ।
 परम हंसकी करे रे धातनी । ताके शिर टकरी ॥ कर ॥१॥
 सतगुरु शब्द संतकी संगत । चरण कमल पकरी ।
 कहेत कबीर में और न जानु । दुजी बात फकरी ॥कर मन॥२॥

* ॥ धनाश्री ॥ ४ ॥ *

अवसर बेर बेर नही आवे ।
 जाको मन साच पर लाग्यो । ताकुं झुंठ न भावे ॥ टेक ॥
 तन मन धन जोबन महु झुंठो । ए कोई काभ न आवे ।
 तन छुटे धन कोन कामको । काहेकुं करपी कहावे ॥अ०॥१॥
 जो जाने तो कर ले भलाई । अवसर फिर पिछनावे ।
 कहेत कबीर खुनाथ भजन बिना । जनम अवस्था गमावे ॥अ०॥२॥

* ॥ धनाश्री ॥ ५ ॥ *

ता जनको मन क्यों कर डोले ।
 अष्ट सिद्धि नव निधि जाके । हरख हरख जस बोले ॥ टेक ॥
 जहां जहां जाय तहां सुख पावे । माया तहां नव झोले ।
 बार बार विषय रस बरजे । ते नर जो मन तोले ॥ ता जन ॥ १ ॥
 ऐसी जो उपजे जा जनकुं । कुटिल गांठ जो खोले ।
 कहेन कबीर तबे सुख पावे । रहे रामके ओले ॥ ता जन ॥ २ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ६ ॥ *

जनके में आधिन सहाई ।
 जब दुर्वासा वैकुंठ सीधाये । तब ए कथा सुनाई ॥ टेक ॥
 बदन वेद ब्रह्मांड देव तुम । करुणामय सुखदाई ।
 जारत है मोहे चक सुदर्शन । अब मोह लेहो छोढाई ॥ जनके ॥ १ ॥
 जे जन मोथे कलू न राखे । ममता मान बढाई ।
 ताके विषय विकार आपदा । मो पे सहि ना जाई ॥ जनके ॥ २ ॥
 उलट जाओ ऋषि तुमनृप चरणे । वे राखेगो भाई ।
 कहेन कबीर जनकी महिमा । श्रीपति श्रीमुख गाई ॥ जनके ॥ ३ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ७ ॥ *

हरिविन कौन गरिब निवाजे ।
 तृणथे बजर बजरथे तृण । वाहिकुं सबे छाजे ॥ टेक ॥
 जलथे थल थलथे जल । ऐसी कोन पे ओवे ।
 नरथे नार कीयो नारदकुं । अजामेल कौन तरावे ॥ हरिविन ॥ १ ॥

मन कोई गरभ करो करनीको । करता करम बिसरावे ।
 श्रष्टिको गरब हयों सब देखत । जनको जश विस्तरावे ॥हरि॥२॥
 जीवत मरे मरन जीवावे । चिंगरी फेर समारे ।
 कहेत कबीर राम समरीये । भव जल पार उतारे ॥हरि विन ॥३॥

* ॥ धनाश्री ॥ ८ ॥ *

कर मन साकुतको मुँह कारो ।
 साकुत मोकुं देख्यो न भावे । कहा बुढो का बारा ॥ टेक ॥
 साकुत देखी ढर लगत है । नाहर हुंते भारो ।
 भक्त हेत ते मम प्राण हेत तें । नेकन हरे भठारो ॥कर मन ॥१॥
 आठम चौदश कुडो पूजे । अभागीको प्राण आधारो ।
 व्यासदास एही संगत नजीये । भजीये शाम सवारो ॥कर ॥२॥

* ॥ धनाश्री ॥ ९ ॥ *

मन तोहे कोटि एक बेर कही ।
 समजी न शरण ग्रह्यो रे गोविंदको । और सब मूल सही ॥ टेक ॥
 सुमरन भजन कथा गुरु सेवा । एकु नाहि ग्रही ।
 लोभी लालची विषयी लंपट । एही सदा निभई ॥मन ॥१॥
 छांड अमूलख रतन सो हीरा । काचकी करच ग्रही ।
 ए तेरी विवेक चतुराई । तुं पयतजी पीवत मही ॥मन ॥२॥
 शिव विरांचि इन्द्र आद देई । शेष सहस्र मुख कही ।
 सूरदास भगवंत भजन विना । सुख तीन लोक नही ॥मन ॥३॥

* ॥ धनाश्री ॥ १० ॥ *

तें नर कहेकुं देह धरी ।
 घटक मटक खायो अरु पीनो । तनकल्यै न चाह सरी ॥टेक॥

भुखे जन दीयो नही भोजन । तीरथ डगना भरी ।
 श्री भगवंत सुन्यो नही श्रवणे । गुरु सेवा न करी ॥ तें नर ॥ १ ॥
 श्री गिरिधिर गिन्नत नही कबहुँ । कैसे मिलत हरी ।
 सूरदास भगवंत भजन बिना । थोथी बहोन मिली ॥ नें नर ॥ २ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ११ ॥ *

गुरु मेरे दीनो एक जड़ी ।
 कहा कहुँ कछु कहेत न आवे । अमृत रस ही भरी ॥ टेक ॥
 जाका मर्म संतजन जानत । वस्तु अमोल खरी ।
 ताथे मोहे प्यारी लागे । लेकर शिश धरी ॥ गुरु मेरे ॥ ३ ॥
 मान भोरीग अरु पांच नागिनी । सुंघन तुरत मरी ।
 द्वायण एक खात सब जगकुँ । सो भी देख हरी ॥ गुरु ॥ २ ॥
 त्रिविधि वि कार ताप तन भागे । दुरमत सकल हरी ।
 ताके गुण सुनो मीच पलाई । और कहा बपरी ॥ गुरु ॥ ३ ॥
 नि शवासुर नही ताहे बिसारत । पल छिन धरीय धरी ।
 सूरदास भयो घट निरविष । सबहोव्याधहरी ॥ गुरु मेरे ॥ ४ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ १२ ॥ *

गुरु बीन ऐसी कौन करै । गुरु बीन ऐसी कौन करे ॥
 माला तीलक मनोहरबाना, लै शीखत्र धरे ॥
 भवसागर सें बुढत रखै, दीपक हाथ धरे ।
 सुरस्याम गुरु ऐसो समरथ, छिनमें लै उधरै ॥ गुरु ॥

* ॥ धनाश्री ॥ १३ ॥ *

सब दिन गये विष्यके हेत ।
 तरणापो तो आले निगम्यो । कैस भये शिर सेत ॥ सवाटिक ॥

नेननी अंध श्रवण नहीं सुनियत । थाक्यो चरण समेत ॥
 रामनाम बिना कोन लोडावे । चंद गह्यो जैसे केत ॥ सब ॥ १ ॥
 गंगजल छांड कृपजल अचवे । हरि तजी पूजे प्रेत ।
 सूरदास कछु गथ ना लागे । रामनाम रम लेत ॥ सब ॥ २ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ १४ ॥ *

जाको मोहन अंगीकरे ।

शिरथे केम स्वमे नहीं कबहुँ । जो जग वैर परे ॥ टेक ॥
 राखी लज्जा द्रुपद तनयाकी । कोपित चीर हरे ।
 दुर्योधनको मान भंगकरी । वसन प्रवाह चले ॥ जाको ॥ १ ॥
 हिरण्याकंम रखीपची हारे । प्रह्लाद न नेकु डरे ।
 अजहुँ है उत्तानपाद सुन । राज करत न टरे ॥ जाको ॥ २ ॥
 सुरपति कोप कीयो ब्रिज ऊपर । नीर प्रवाह बहे ।
 गख लीयो ब्रिज जनके ठाकुर । गिरधर विरद बहे ॥ जाको ॥ ३ ॥
 जाकी विरद है गर्व प्रहारी । सो कैसे चिमरे ।
 सूरदास प्रभु तिहारे शरण लीये । कोटिक बंध टरे ॥ जाको ॥ ४ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ १५ ॥ *

जे जन आनदेव शिर नावे ।

तजि गोपाल क्षीर सुख सागर । काग सरोवर नहावे ॥ टेक ॥
 दृढ विश्वास नहीं गोविंदसुं । अनन्तही मन धावे ।
 सीमल फुल आनकी मेवा । कहों कैसे सुख पावे ॥ जे ॥ १ ॥
 विष्य विलास महामद मानो । रुचि रुचि भेष बनावे ।
 वेद पुराण कथा सुनि सुनि सठ । कुकर ज्यूं विसरावे ॥ जे जन ॥ २ ॥

इन्द्रवरणी देस सुभग फल । चाखत ही पिछनावे ।
अनि सुधम सोई पद अंबुज । सूरकहा समजावे ॥ जे जन ॥ ३ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ १६ ॥ *

प्रभुजी ज्युं राखो त्यो रहीये ॥
जानत हो सुख दुःख जीयाको । मुख कर कहा कहीये ॥ टेका ॥
कबहुक भोजन देत कृपा निधि । कबहुक भुख महुं ।
कबहुक चढे गज तोरंगे । कबहुक भार बहुं ॥ प्रभुजी ॥ १ ॥
कमल नयन धनश्याम मनोहर । ए चरणु भज हुं ।
सूर सौभाग्य दिन मेरे । हरजीके चरण गहुं ॥ प्रभुजी ॥ २ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ १७ ॥ *

अब मैं जानी देह बुढानी ।
शीश पाउं धर कहो न मानत । ननकी दशा बिसरानी ॥ टेका ॥
आन कहन आनै कहि आवत । नाक नैन बहे पानी ।
मिट गइ चमक दमक अंग अंगकी । दृष्टि रुमति हेरानी ॥ अब० ॥ १ ॥
नारी गारी बिन नहिं बोले । पूत करे कल्कानी ।
घरमे आदर कादस्को सो । खीझन रेन बिहानी ॥ अब० ॥ २ ॥
नाहिं रही कछु सुध तन मनकी । भई है बान पुरानी ।
सूरदास अब होत बिगूचन । भजिले सारंगपानी ॥ अब० ॥ ३ ॥

* ॥ धनाश्री ॥ १८ ॥ *

माधवजू जो जनते बिगरे ।
तउ कृपालु करुणामय केशव । प्रभु नहिं जीय धरे ॥ टेका ॥

जैसे जननी जठर अंतरगत । सुन अपराध करे ।
 तउ पुनि जतन करै अहु पोषे । निकसे अंक भरे ॥माधवजू॥१॥
 यद्यपि मलय वृक्ष जड काटन । कर कुठार पकरे ।
 तऊ सुभाव सुगंध सुमीनल । रिपु तनु ताप हरे ॥माधवजू॥२॥
 ज्यों हल गहिधर धरत कृषीबल । वारि बीज विशुरे ।
 सहि सन्मुख त्यों शीत उष्णको । सोई सुफल करे ॥माधवजू॥३॥
 कारण कर्ण दयालु दयानिधि । निज भय दीन डरे ।
 एहि कलिकाल व्याल मुख ग्रासिन । मूर शरण उवरे ॥माधवजू॥४॥

* ॥ धनाश्री ॥ १९ ॥ *

दीनानाथ अब वार तुम्हारी ।
 पनिन उधारन विरद जानिके । बिगरी लेहुं संवारा ॥टेक ॥
 बालपन खेलत ही खोयो । युवा विषय रस माने ।
 शूद्र भये सुधि प्रगटि मोको । दुखिन पुकारन ताते ॥दीनानाथ॥१॥
 सुननि तज्यो निय भ्रान तज्जी पुनी । तनत्वच भई जु न्यारी ।
 श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन वहे जल धारी ॥२॥
 पलिन केश कफ कंठ बिरोध्यो । कल न परे दिन राती ।
 माया मोह न छाडे तृष्णा । ए दोऊ दुख दानि ॥दीनानाथ ॥३॥
 अब या व्यथा दूरि करिबेको । और न समरथ कोई ।
 सूरदास प्रभु कम्लणा सामर । तुमते होई सु होई ॥दीनानाथ ॥४॥

* ॥ धनाश्री ॥ २० ॥ *

नाथको सको तौ मोहि उधारो ।
 पतितनमें विस्थात पतित हीं । पावन नाम तुम्हारो ॥टेक ॥

बडे पतित पासंगहु नाहिं । अजामिल कौन विचारे ।
 भाजे नरक नाम सुनि मेगे । यमनि दियो हठतारो ॥१॥
 क्षुद्र पतित तुम तारिख्मापति । जिय जु करौ जिन गारो ।
 मूर पतितको ठौर कहुं नाहिं । है हस्तिनाम सहारो ॥ नाथ ॥२॥

* ॥ धनाश्री ॥ २१ ॥ *

हरि विना कोई मेरे काम न आयो ।
 ए माया क्षुटी परपंचकी । रुडो स्तन सौ जनम गमायो ॥टेक॥
 कंचन कलम समायों जनन करी । रुचि रुचि भुवन बनायो ।
 वेगे वेगे काढो घरहुने । पल एक रहेन न पायो ॥ हरि ॥१॥
 अनेक जनन करी सुन एक जायो । बहोतेक लाड लडायो ।
 काढ लीयो कमग्नुके धागो । बदनपर आग जलायो ॥हरि ॥२॥
 त्रिया कहे पीया तेरे मंग ज़लहुं । दिन दिन नेह बढायो ।
 अंत समे छुपी घर भीतर । डग एक नाहिं पोहोंचायो ॥ हरि ॥३॥
 हरि अधम ओधारण गुणका नारण । में सठ क्यों बिसरायो ।
 नाम न लीयो मायाके धोखे । माधो मन पिछतायो ॥ हरि ॥४॥

* ॥ धनाश्री ॥ २२ ॥ *

मन पिछतेगो अबमर बिने ।
 दुर्लभ देही पायो हरि पद भज । मन कर्म वचन सहिते ॥टेक॥
 सुत बिन दाग बंधु सज्जन । ना करो नेह उनाते ।
 ए सब तोहे तजेरे पामर । तुं क्यूं न तजे अबहीते ॥मन॥१॥
 सहम बाहु दश बदन आद नृप । बचेही न काल बलीते ।
 हम हम करी धन धाम समायो । अंत चले उठी रीते ॥मन॥२॥

अब नाथ अनुराग जाग जड । नजो दुराशा जीवते ।
मिट न काम अगन तुलसी कहे । विषयभोग भोगीने ॥३॥

* ॥ धनाश्री ॥ २३ ॥ *

श्याम तेरो मुरली में नीकी बजावुं ।
जेहि जेहि गत प्रभु तुम उपजावत । सोई सोई गाई सुनावुं ॥टेक॥
जो बंसी में धरहरे अधग्पर पर । शिवकी समाधि ठगउं ।
पशु पंखी मब मोहन लागे । मस्ति नीर ठहराउं ॥ श्याम ॥१॥
पीया अधर धर ध्यान कर मुरली । थोरे स्वरे जो गाउं ।
तुम श्रोता रीझो तो मायु । बचन एक में पाउं ॥ श्याम ॥२॥
निहारो आभूषण हम पहेनु पीया । हमरे तुम पहेनाउं ।
तुम होई बैठो मानी मानुनी । हम गंही चरण मनाउं ॥ श्याम ॥३॥
निहारे शिर पिया बेनी में गुंथु । हम शिर मुगट धगउं ।
मूरदाम प्रभु हो तुम गधे । हम नंदलाल कहाउं ॥ श्याम ॥४॥

* ॥ धनाश्री ॥ २४ ॥ *

कनैयो मेरो जुमनामें जाई पछ्यो रे ।
जल जुमनाको गहेरो पाणी । देखन नाहिं डयों ॥ टेक ॥
पकड मगावु गोपि घ्वालनकुं । गिरतां क्यूं न श्रहो ।
कंसराय धेर होन बधाई । मेरे शिरको मालटयों ॥ कनैयो ॥१॥
आरे नगर्को लोक ठगारो । गिरतां क्यूं न कहो ।
रुदन करत जशोदा मैया । नयनमें नीर भयो ॥ कनैयो ॥२॥
पेसी यनाल कालिनाग नाथ्यो । सुनतां कंस डयों ।
मूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । शश्व आई उगयो ॥ कनैयो ॥३॥

* ॥ धनाश्री ॥ २५ ॥ *

मैया मोहे दाऊजी बहोत खिजायो ।
 मोकुं कहे तोकुं मोल्के लीनो । कब जशोदाये जायो ॥ टेक ॥
 नंदजी गोरे जशोदाजी गोरे । तुम कैमे श्याम शरीर ।
 चुटकी दे दे खाल हमन है । मिथ्यवत बलभद्र वीर ॥ मैया ॥ १ ॥
 बकणे दे ए बलदाऊकुं । ए मिथ्यावादि धून ।
 अग्रदाम हरि गोवरधन धर । हुं जनुनी तुं पून ॥ मैया ॥ २ ॥
 ॥ इनि श्री राग धनाश्रीना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग टोडीना कीरतन *

* ॥ टोडी ॥ १ ॥ *

माधोजी मेग जनम निवारो । कहाजी बहोर जारे पर जारो ।
 दो दुख मेटो साहेब भेग । आगदहन और गरभ बसेरा ॥ टेक ॥
 आवत जान बहोत कठिनाई । राखीलो संनन शरणाई ।
 आवागवनका तोडोने दोग । तुमरी हाँसी मरण है मोरा ॥ १ ॥
 जो जन दुखिया तुम दुख फेडो । बहोर रामजी तुम पछीतै हो ।
 कहेत कबीर सुनो रुग्नाई । तुमसुं राम कहा चतुराई ॥ २ ॥

* ॥ टोडी ॥ २ ॥ *

राम भक्ति विना धिक नगनारी । मिथ्या जनम गयो संसारी ।
 पंड धरी नर देही विगोई । पुत्र पहली तेरी मातासेन मोई ॥ १ ॥

कुंवारी कन्या जो करे शणमाग । सोभान पावे संतो बिन भरथारा ।
गुणकाको पुत्र पिता कहासु कहावे । गुरु विना चेला पार न पावे ॥२॥
रज विना जैसे रजपूता । ज्ञान विना कैसे अवधूता ।
कहेत कबीर मैं कहेता न डरहुं । शुकदेव कहे तो मैं कहा करहुं ॥३॥

* ॥ टोडी ॥ ३ ॥ *

गम सुमरे हो मन अंधा । बिन सुमरे जम मांडे फँदा ॥
कुड कपट करी जो धन लावे । तो सुन दागके मन भावे ॥टेक॥
सुन दागका नहिं पतियारा । अंतकी बेर मांडे कुचीयारा ।
सोक्यो न समरो जे अंत उवारे । गाडे बाहुग कबीर पोकारे ॥१॥

* ॥ टोडी ॥ ४ ॥ *

उठ भाई नामदेव बाहर जाई । लोक महाजन बैठे आई ॥टेक॥
ब्राह्मण बनीया उच्चम लोक । इहां नहिं नामदेव तेरा योग ।
बेर बेर कोमीचा लेत । नब नामदेव ढीग बेठन देत ॥उठ॥१॥
नामदेव कमली लेई उठाई । देवल पिछे बैठे जाई ।
पायमें बुधरी हाथमें ताल । नामदेव गावे गुण गोपाल ॥उठ॥२॥
कंपी धुजा देवल थर हरो । द्वार फयों नामा दम हर्यो ।
नामदेव न रहरि दर्शन भयो । पकड बांह मंदिरमें लीयो ॥उठ॥३॥
नामदेव भक्ति करी लौलाई । ब्राह्मण बनीया चले सिखाई ।
कहेत कबीर सुनो नर लोई । नामदेव सा(भगत) विस्ला होई ॥उठ॥४॥

* ॥ टोडी ॥ ५ ॥ *

बहोत अपराष्ट कीयो मैं माधो । मैं जनमो जनम अपराष्टी ।
करुणामें करुणानिधि केशव । तुमरी भक्ति न साधी ॥ टेक ॥

पनितनमें महापनिन शिरोमण । में रोम रोम का खोय ।
 निरमल निरमल नाम नागयण । सुमरी सुमरी जन छुय ॥१॥
 माया मोह विषयसम बाह्यो । दोनानाथ मुगरी ।
 जन ज्ञानीका करो होनिवेढा । आयो शरण तुम्हारी ॥२॥

* ॥ टोड़ी ॥ ६ ॥ *

सुनो भाई महिमा नाम तणो । महाग मत गुरु पासे जईने सुन्यो ॥
 कोटि कोटिवार जो भणिये वेद । मक्कल शास्त्रनो लीजे भेद ।
 पुराण अठार तणो मन जोई । महिमा नाम समान नहीं कोई ॥३॥
 कोटि जप तप करे ब्रत दाना । कोटि कोटि तीरथ अस्त्राना ।
 सुकृत कोटि करे जो अपार । नाम समान नहीं निरधार ॥४॥
 कोटि कोटि कृप खनावे वाव । कोटिक कन्या दे परणाव ।
 कोटि कोटि तुला करावे याग । नाम समान नहीं सहस्रमें भाग ॥५॥
 विश्व सघली दीजे दानां । तोहेन आवे हरि नाम समाना ।
 महिमा नाम अगर अनंत । सुनीले साख मक्कल कहे संत ॥६॥
 देव पितर पीढा नव करे रे । भूतादिक ग्रह पाम ना केरे ।
 रिद्धि मिद्धि बेहु पाणी भरे । राम नाम लेई रुदिया धरे ॥७॥
 मांमा कोई न जापे आय । तृष्णा सक्कल सहु मिट जाय ।
 लागे नहीं काहु को संताप । रत्नियन लेपे पुन्य और पाप ॥८॥
 पारवती द्रौपदि ए नार । नामे मेना उतारी पार ।
 गज गुणका गौतमवधु तारी । ऐसो नाम नागयण हरी ॥९॥
 शुकदेव नारद मुनि जन शेशा । ध्रुव प्रह्लाद और जनक महेशा ।
 उद्धव अकरुर और व्यासा । राम भज्या सत करी विश्वासा ॥१०॥

कलिमा हवा नामदेव कबीर । सुपर्णी राम कीया मन धीर ।
 सेनी धना पीपा रोहिंदामा । राम भज्या जग छाँड़ी आशा ॥१॥
 उत्तम मध्यम ओधरीया कोड । गुण अवगुण मिट गई खोड ।
 अनेक पनित हरिये पावन कीया । भावे कुभावे जेणे हरिनाम लीया ॥२॥
 सतगुरु मिला मोहि दीना भेदा । याकी साव कहे नित बेदा ।
 जन ज्ञाना सुमिरो हरि नाम । आन मत सब तज बेकाम ॥३॥

* ॥ टोड़ी ॥ ७ ॥ *

हम ममताके बांधे माधो । कोन कोन दुख पायो ।
 कीट पतंग और पशु पंखी । नहाना जोनि फरि आयो ॥टेक॥
 कभु एक सुन भये काहुके । कभु एक पिना कहायो ।
 कभु एक नरपति रंकज होयके । घर घर टूक मगायो ॥हम॥१॥
 हरि गुण कथा सुनी नही श्रवणे । मुखहि न राम गुण गायो ।
 माधोदास जनम धिक ताको । जनुनी ने नान लजायो ॥हम॥२॥

* ॥ टोड़ी ॥ ८ ॥ *

सबथे उंची प्रेम सगाई ।
 प्रेम बिना सनमुख नही आकोर । कोटि करे चतुर्गई ॥टेक॥
 प्रेम प्रीते हरि चरण पवाले । कहो सुदामा भाई ।
 प्रेम प्रीते हरिये स्थ ज हाँक्यो । विसर गई सुरनाई ॥सबथे॥१॥
 शवरी जात भीलडी कहीये । देखो प्रेम बडाई ।
 अनी एक प्रेम भयो गुणकाको । लेई बैकुंठ बसाई ॥सबथे॥२॥
 गजके काज हरि आपे धाये । गरुड दीयो छिटकाई ।
 रत्ती एक प्रेम देख्यो हुपताको । अंबर चीर पुराई ॥ सब ॥३॥

प्रेम प्रीने हरिए दुध ज पीनो । मृतक गौ जीवाई ।
 प्रेम प्रीते हरि मंदीर केर्यो । जनकी आन छवाई ॥ सब ॥ ४ ॥
 कलजुगमां एक भक्त कवीरा । देखो प्रेम बढाई ।
 प्रेम हेत हरि पीछे ढोले । बालद आन छलाई ॥ सब ॥ ५ ॥
 धीरज देखो धनारे भगतकी । वीज चिन भोम बोवाई ।
 प्रेत हेत मफल भई खेनी । हरिये आप निपाई ॥ सब ॥ ६ ॥
 मेनी भगतको सांसो मेख्यो । आपे भये हरि नाई ।
 जन रोहिदामकी काढ जनोई । जनकी महिमा बढाई ॥ सब ॥ ७ ॥
 त्रिलोचन घेर रहे वर्तीया । हरि वैकुंठये आई ।
 स्त्री एक प्रेम देख्यो पीपाको । चंद्रवा लीया बुझाई ॥ सब ॥ ८ ॥
 अगन जाल प्रह्लाद उत्तारे । देखो प्रेम बढाई ।
 काच कयोरे विस भगी दीनो । अचबो मीरांचाई ॥ सब ॥ ९ ॥
 श्रीजगन्नाथ जीवन धन माधो । देखो प्रेम बढाई ।
 जहां जहां प्रेम देख्यो हरि अदको । तहां तहां प्रगटे रघुराई ॥ १० ॥

* ॥ टोडी ॥ ९ ॥ *

पनितनके हो पावन माधो । मैं तुम नजी अनितन जाउं ।
 मैं जो अपूंजपूंज भयो तुमथे । नाम अमुलव गाउं ॥ टेक ॥
 अष्टादश पुगण वसाणे । तीन काल षट् जीते ।
 विष्णु भगति अंतरगत नाहि । नाथे धाणक नीके ॥ पनि ॥ १ ॥
 सूपच शानको मांस भक्षन करी । हरि चम्पे चित लावे ।
 जीवन मुक्ति सदा ने जनने । अंते परमपद पावे ॥ पनि ॥ २ ॥

जान असौच नीच कुल जनम्यो । सजन कुटुंब करे हांसी ।
भणे गेहिदास राम भज रसना । काट करमकी फांसी ॥ पनि ॥३॥

* ॥ टोडी ॥ १० ॥ *

मारे घेर आवोतो एणी पेर आवजो । जेरे मागु ने लावजो रे ।
भाव भक्ति ने दीन गरीबी । बीजु चरण कमल फल लावजो रे ॥ टेक ॥
जोरे आवो तो प्रभु नहीं देव जावा । एवुं छे मन मारुं रे ।
अखंड हेवातन एयलुंरे मागु । माग रदीयामां ध्यान तमारुं रे ॥ १ ॥
तमो विना मने एवुंरे लागे । पुरुष विना जेम नागी रे ।
एकवार रोहिदासने मंदिर पधागे । प्रभुगखोनी लाज अमारी रे ॥ २ ॥

* ॥ टोडी ॥ ११ ॥ *

मार्ग आज सबे दुख जासे रे । दुख जासे ने सुख थासे रे ।
कौशल्याजीने पग्नापे । रुडा गमजीनां दरशन थासे रे ॥ टेक ॥
गजा दशरथनो नैधडीयो । माग प्राण थकी मुने गमसे रे ।
झांझरडी घुघरडी पावले । मारो वालमोजी आंगणामें गमसे रे ॥ १ ॥
निगकार निरलेप निरंजन । वेद ववाने जेणे रे ।
रुदिया साथे चांपीने बाढे । मायणुं देसे तेने रे ॥ मार्ग ॥ २ ॥
रेचक कुंभक पुरुक भरीया । पेला जोगी डाते ध्यान जधरसे रे ।
बाल चग्नि पवित्र गुण गातां । जन जशवंत भव तसे रे ॥ मार्ग ॥ ३ ॥

* ॥ टोडी ॥ १२ ॥ *

गम मेरे पुंजी ने राम मेरे ध्याना । या पुंजी सुं ल्या मेग मना ।
शाहकी पुंजी आवे जाये । कबहु वो बैठे गमाई ।
राजा ढंडे चोर ले जा ई । अगन जले और मेव खाई ॥ राम ॥ १ ॥

खेती करु न वण्ड्हे जाउँ । राम स्वजीना बैठे खाउँ ।
नामदेव कहे मैं पाया शाही । कागद चढे खुटे न काँई ॥२॥

* ॥ टोडी ॥ १३ ॥ *

समना बोले तो गमही बोले । नहि तो मुख पाट न खोले ।
जो बोले तो हरिका नामा । आन बक मिथ्या बे कामा ॥३॥
गम नाम मेरे हिरदे लेखे । और मकल फोगट करी देखे ।
नामदेव कहे मेरे हरि नाम । गोविंद नाम पर बल बल जाव ॥४॥

* ॥ टोडी ॥ १४ ॥ *

हमारे एक गोपालही गजा । और देवसु नही काजा ॥टेक॥
काहुकुं स्भृति वेद पुराणा । चरण कमल मेरा मन मान्या ।
काहुकुं लक्ष्मी कोटि भंडारा । मेरे तो रामजीका नाम आधारा ॥१॥
काहुके है पायक और हाथी । मेरे रामजीको नाम संगाती ।
सब लोक आप जशकुं लाग्या । नामाका चित हरिसुं लाग्या ॥२॥

॥ इनि श्री राग टोडीना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग सारंगना कीरतन ॥ *

॥ साखी ॥

मारंगे सारंग गहो । सारंग पहोंचे आय ॥
मुखको सारंग जो कहुं । तो भक्षको सारंग जाय ॥ १ ॥

सारंग गग शिरोमणि । वेद शिरोमणि शाम ॥
 भक्ति शिरोमणि गविका । जे प्रगट्यो गोकुल गाम ॥ २ ॥
 सारंग गग शिरोमणि । नाम शिरोमणि राम ।
 भगत शिरोमणि कबीरजो । जे प्रगटे काशी गाम ॥ ३ ॥
 सारंग गग शिरोमणि । ग्रंथ शिरोमणि धोल ।
 भगत शिरोमणि जीवण । प्रगटे ब्रीजके घ्वाल ॥ ४ ॥

* ॥ सारंग ॥ १ ॥ *

आनंदको घर पायो—अब हम । आनंदको घर पायो ।
 जबतें किरणा भई सतगुरुकी । अनमे निशान बजायो ॥अब॥
 काम क्रोधकी गागर फुटी । दुरमत दूर बहायो ।
 हृद छाँड़ी बेहृद घेर आमन । गगन मंडल मठ छायो ॥अब॥
 प्रेम प्रीतको कियो है चोलनो । सुमनको टोप बनायो ।
 तजि परपंच वेदमन किया । चरणकमल चित लायो ॥अब॥
 धरणन गगन पवन नहि पाणी । तहां जई मठ छायो ।
 कहें कबीर में पीयाजीको प्यासी । पिया पिया रटलाई ॥अब॥

* ॥ सारंग ॥ २ ॥ *

इम लीकनकुं बहे जानदे—हंसा । इम लोकनकुं बहे जानदे ।
 हंसा हंस मिलीचलोरे सरोवर । बगहीकु मेडक खान दे ॥टेक॥
 संत गयंद गम सम माते । जगतही शान भूंकान दे ।
 साकुन काग करे नित रोग । संत सुनो जीन कान दे ॥हंसा॥
 संतगम एकानही बैठे । गमरसायन पान दे ।
 कहेन कबीर हार दुनियासुं । संत संगत विश्राम दे ॥हंसा॥

* ॥ सारंग ॥ ३ ॥ *

चलो हंसा देश सौहामणे—हंसा । चलो देश सौहामणे ।
 यह संमार ओमको पाणी । किरण छुटे नहि पावनो ॥टेक॥
 कहा ब्रह्मलोक कहा शिवलोक । कहा विष्णुलोक रहगवनो ।
 चल हंसा वे देश अमर हे । उंहांथे फिर न आवनो ॥हंसा॥१॥
 सुन्यकाल और जोन म्खरूपी । ए लोकन मन भावनो ।
 योनि संकुष्ट मिटे नहि कबहुं । भ्रम भटकी फिर आवनो ॥२॥
 हंसा होय मो वा देश जई है । कहेत कबीर समजावनो ।
 जहां नहो राम उगोरी लात्रे । जनम मरण नहि दाहनो ॥३॥

, * ॥ सारंग ॥ ४ ॥ *

राम जीन विसरो हो जीया-मेरे । राम जीन विसरो हो जीया ।
 गरभ वासमें बोलज बोल्यो । बाहर आयके कहा कीया ॥टेक॥
 महोलमें बैड़ी मौज नित करती । सोलसें साहेलीयां ।
 छिनमें छांड दई टकुगई । वे देखो उनका हीया ॥मेरे राम॥१॥
 जब तुं पथ चलेगो प्राणी । संगे कोई ना लीया ।
 दास कबीर राम भज जीया । तन मन अरपण कर दीया॥मेरे॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ५ ॥ *

रामको नित कीजे रे—सुमरण । रामको नित कीजे ।
 निरमल निरमल प्रेम हरि रस । संन संगत मलि पीजे ॥
 छूड़ी माया मोह विषय रस । ए मनते ल्यागीजे ।
 हिरदे कमल बिच निशदिन हरि हरि । एही विलंबन कीजे॥सु॥१॥
 तन मन धन मब मनमा रे बाचा । राम समरण कीजे ।
 कहेत कबीर में और न मागुं । चरण कमल चिन दीजे ॥सुम॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ६ ॥ *

धन धन रे बलवके मीर हो । धन धन रे बलवके मीर हो ।
 अपने साँई मिलनके कारण । सब नजि भया फकीर हो ॥टेक॥
 छोडे तखन और बिछोना । उमगवांकी भीर हो ।
 कोट कोट खजाना छोडे । सनझवेगी हीर हो ॥धनधन ॥१॥
 सोलसे खाहेली छांडी । छांडे कमची चीर हो ।
 तुरंग अग्रह लाख ही छांडे । किसका नहीं शरीर हो ॥धन॥२॥
 जे पाव हुगम कुचपर समते । लोहो लीन नित करीर हो ।
 सो पग प्यादे पायो बनकुं । लगे ज्ञानके तीर हो ॥धन धन॥३॥
 धन वे माना धन वे पिना । जाको पीयो ते खीर हो ।
 धन तेरी करतूत कमाई । धन तेरा गुरु पीर हो ॥धन धन॥४॥
 माया मोहके पखन नाखे । नाखे दग्धिया नीर हो ।
 कहेत कबीर उहां जाई पहोंते । सदा हरिके समीप हो ॥धन॥५॥

* ॥ सारंग ॥ ७ ॥ *

मरतकको घर पांयो रे—अब हम । मरतकको घर पायो ।
 यश अपयश दोउ थे न्यारो । निश्चुण माहे समायो ॥टेक॥
 आंखे अंधो ने काने बहरो । मुखसे नाहिं बोलायो ।
 सुर्ख रही निरंतर लागी । महेज सून्य समायो ॥अब हम ॥१॥
 हाथ पाव करन सब काजा । उदर निमित कछु धायो ।
 कुल करणी अभिमान वृथा नजि । याते दूर रहायो ॥अब ॥२॥
 थकिन भयो जब अनहृद देखी । हृदमें नाहिं रहायो ।
 कहेत कबीर पद परसके । पद माहि समायो ॥अब हम ॥३॥

* ॥ सारंग ॥ ८ ॥ *

दुरमति या संसारकी-देखो । दुरमति या संसारकी ।
 अपने हाथ गलेमें ढारे । माया फाँसी जारकी ॥टेक॥
 अपने सुखमें लाग रह्यो है । खबर नहीं शिर भारकी ।
 हरिमो हीरो हाथ झारके । मोट बांधी अहंकारकी ॥१॥
 हरि भक्तनकी संग न जावे । बोलत झुंठ लबारकी ।
 कहेत कवीरा सुनो भाई संतो । छांडो सबही विकारकी ॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ९ ॥ *

काहेकुं माया जोडी रे-हो नर । काहेकुं माया जोडी रे ।
 में जाण्युं मायां संग चलेगी । गाय भेंस घेर घोडी ॥टेक॥
 जोड जोड धन उंडोरे गाडे । अजहु कहे माया थोडी ।
 (फुटी हांडी तेरी संग चलेगी । और काष्ठकी मोली रे ।)
 मान पिना सुत रोवन लगे । लीयो रे कंदोरे छोडी ॥ नर ॥१॥
 चार मिलके स्वांधे उठायो । चढ गयो काष्ठकी घोडी ।
 सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । फुंक दीयो जैसे होगी ॥ नर ॥२॥

* ॥ सारंग ॥ १० ॥ *

हरि विमुखनको संग-नज मन । हरि विमुखनको संग ।
 जाका संगत कुबुधि उपजत । पडन भजनमें भंग ॥टेक॥
 कागहि कही कपुर चुगावे । स्वान नहावन गंग ।
 खरकुं कहा अगजा लेपन । मरकट भूषन अंग ॥ तज ॥१॥
 कहा भयो पथ पान कगावे । विष नातजेरे भोरींग ।
 सूरदास प्रभु कागी कामरि पर । चढत न दुजो रंग ॥ तज ॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ११ ॥ *

खेती करो हरि नामकी—संतो । खेती करो हरि नामकी ।
तन करो भोम ने मन करो हल्कुवा । सुख गखो गुरु ज्ञानकी ॥संतो॥
ए खेतीको कर नहि बर्मे । फिकर नहि कल्पु दानकी ।
सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । अरज सुनो खाना जातको ॥मंतो॥

* ॥ सारंग ॥ १२ ॥ *

गयुंरे जोबनीयुं वाहिने-अंधा । गयुंरे जोबनीयुं वाहिने ॥टेक॥
नारे हलाये ने नारे चलाय । नारे चलाय लाकडी माहिने ।
पचामे आब्यां परीयां ढाचां बेहु मलीयां । शरीर गयुं सुकाईने ॥१॥
काला फिटीने थयांरे सफेता । मुरख गयो छे वाहिने ।
सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । आयो बुदापो धाई धाईने ॥२॥

* ॥ सारंग ॥ १३ ॥ *

रुदिया कमलमें हरि बमो-मेरे । रुदिया कमलमें हरि बमो ।
इतनी कृपा करो केशब राय । दुरिजन होय सो दूर खमो ॥
जहां नहि सेवा हरि चरणनकी । वाहिकुं भोरींग दमो ॥ मेरे ॥१॥
भाव भक्ति जाकुं नहि हर्मिं । सो नर जगमें कहावसो ।
सूरदास भगवंत भजन बिना । श्वान होई चेर घेर वसो ॥ मेरे ॥२॥

* ॥ सारंग ॥ १४ ॥ *

जोउंरे तमारां मोरीयां—रामजी । जोउंरे तमारां मोरीयां ।
तमारे मोरीये गमजी रंग घणेगे । कुमकुम केशर रोरीयां ॥रामजी॥१॥
सीर खांड घृत तरतनां ताव्यां । पीसुं पातली पुरीयां ।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकुं । पावन कीधां खोरीयां ॥रामजी॥२॥

* ॥ सारंग ॥ १५ ॥ *

गोविंद गोविंद कहीये रे—ताते । गोविंद गोविंद कहीये ।
 आवत जान बेर नहि लागे । काल व्यालथे ढगीये ॥टेक॥
 काहेको पुत्र पिता कोनको । काहेकुं अनुसरीये ।
 फुटीमी नाव और लोहेकी जलमें । बोज कहापर धरीये ॥ताते॥१॥
 काहेकुं छुठ काहेकुं निंदा । कौन काज धन हरीये ।
 निच संगत और नार बिगनी । भवमागर क्यों तरीये ॥ताते॥२॥
 मनुषा जन्म बहोर नहि आवे । लख चोगमी फरीये ।
 सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । ज्ञान अगनमें जरीये ॥ताते॥३॥

* ॥ सारंग ॥ १६ ॥ *

जीवतहीको नातो—जगतमें । जीवतहीको नातो ।
 मन बिछुरे तनु छार होईगो । कोउ न बात पुछातो ॥टेक॥
 में मेरी कबहुं नहि कीजे । कीजे पंच सुहातो ।
 विषयासक्त रहत निशावासर । सुख सीरो दुख तातो ॥जगतमें॥१॥
 सांच छुंड करि माया जोरी । आपुन रुखो खातो ।
 सूरदास कछु थिर नहि रहई । जो आयो मोजातो ॥जगतमें॥२॥

* ॥ सारंग ॥ १७ ॥ *

चेरे है वा घरके—हमतो । चेरे है वा घरके ।
 अब तो मोल बेकाते लोने । सेवक सीनावरके ॥टेक॥
 ताकुं कौन भुखकी चिना । पंखी कलपनरुके ।
 सो केसेकर प्यासे मरेंगे । मीन मान सरोवरके ॥हमतो॥१॥

देवी भेख भूत न जानु । हम न उगासी हरके ।
मीताराम छांड जमवंत कहै । और भजे मुन स्वरके ॥हमतो॥३॥

* ॥ सारंग ॥ १८ ॥ *

माचे भक्त कबीर-कलिमे । माचे भक्त कबीर ।
जबथें चरण कमल रुचि बाढे । तबथे बने नहीं चीर ॥टेक॥
दीयो न ले याचे नहि कबहुं । ऐसे मतके धीर ।
योगी यनि और तपीरे मन्यामी । उनकी मिटी नहीं पीर ॥कलि॥१॥
पांच तत्व वाकुं कबहुं न व्यापे । काल न ग्रहे शरीर ।
व्यास भगतको खेत झुलाहो । हरि करुणामे नीर ॥कलि॥२॥

* ॥ सारंग ॥ १९ ॥ *

माचे कलजुग आयो-अब तो । माचे कलजुग आयो ।
पुत्र पिताको कह्यो न माने । करन ही अपनो भायो ॥टेक॥
कन्यारे बेचत मंख्या न माने । दिन दिन मूल सवायो ।
ताथे वरखा अल्प भई है । पापे कलजुग छायो ॥अब॥१॥
कट्ट वृद्धावन बेचत मधुकरी । झुठे साच छुपायो ।
ए अपराध देखवाके कारण । व्यासकुं काहा जीवायो ॥अब॥२॥

* ॥ सारंग ॥ २० ॥ *

रंग लाघ्यो रमता रामसुं-रंग । लाघ्यो रमता रामसुं ।
जनम मरण मिटे अम दोउं । छुटे आवन जानसें ॥टेक॥
हरि रंग लाघ्यो धोखो भाघ्यो । पांचो जारे ज्ञानसें ।
निरभे होई भजो अविनाशी । काल न झांपे ग्रानसें ॥रंग॥१॥

मन बम कानो अनन्त नादीनो । गच्छो नाहि न आनसें ।
 मब सुख पायो कर्म नशायो । तन मन सोंध्यो प्रानसें ॥ रंग ॥ २ ॥
 आद अंत अविगत आगाधो । गतो मातो नामसें ।
 जन तुलसी प्रभु अरमपग्स भयो । दाम कबीर मुजानसें ॥ रंग ॥ ३ ॥

* ॥ सारंग ॥ २१ ॥ *

राम भजो मेरे भाईरे—केवल । राम भजो मेरे भाई ॥ टेक ॥
 धन्य धनाको खेन नियायो । नामाकी छान छवाई रे ।
 नामापर मुगले जोर कीयो है । मृतक गौवां जी आई रे ॥ केव ॥ १ ॥
 सेनी भगतको सांझो मिटायो । आप भये हरि नाई रे ।
 उच्चन जोयुं हस्थि नीचन जोयुं । तार्थो कबीर झुलाहीरे ॥ केव ॥ २ ॥
 जात न जोई हस्थि भान न जोई । तार्थो सजना कसाई रे ।
 जन तुलसी प्रभु अरसपरस भये । साची मीरांवाई रे ॥ केवल ॥ ३ ॥

* ॥ सारंग ॥ २२ ॥ *

काहेकुं रहत अचेत रे—हो नर । काहेकुं रहन अचेत ।
 जे घडी जाय राम भजन बिना । जम कागद लिख लेन रे ॥ टेक ॥
 संत संगत तें कवहु न कीनी । कियो विषय सुं हेन रे ।
 बेर बेर मूख ममझाउं । केस भये शिर श्वेन रे ॥ हो नर ॥ १ ॥
 मेरी मेरी करते जनम सीरानो । राहे गह्यो जैसे केनरे ।
 कहें तुलसी राम भज प्राणी । भक्ति अपनी देत रे ॥ हो नर ॥ २ ॥

* ॥ सारंग ॥ २३ ॥ *

निरमल जश गाई ले हो मना ।
 अनीतना जाये राम भज प्राणी । कहेत संत हस्थिके जना ॥ टेक ॥

ए संसार सकल विख मागर । यामे दुख रुदोजख घना ।
 वामें दुख पावे सुख नाहि । भजी ले राम निरंजना ॥१॥
 परहर काम क्रोध मद मत्सर । गवन न कीजे विष वना ।
 ल्प रंगकुं देखी पतंग ज्यों । बहोत बगुचे मुनिजना ॥२॥
 निरभे निगकार अविनाशी । सुख सागर दुःख भंजना ।
 कहें तुलसी राम भज प्राणी । मनसा वाचा करमना ॥३॥

* ॥ सारंग ॥ २४ ॥ *

समझायो कई बेरी—मन । समझायो कई बेरी ।
 माने नहीं शब्द सत्गुरुको । शिख निरफल करी देनरी ॥टेक॥
 काम क्रोध मद रु मत्सर । दोजख गन हिरदे धरी ।
 भाव भक्ति और दया दीनता । मूरख मनथे परहरी ॥ मन ॥१॥
 राम विमार काम चित दीनो । सेव्या नहीं तें नरहरी ।
 अवगुण कीये अघाय रैन दिन । क्यों पावे सुखकी घरी ॥२॥
 चेत चेत मूरख समझावुं । शिख मान करीले खरी ।
 कहें तुलसी राम भज श्वाणी । नहीं तर जम करसे बुरी ॥३॥

* ॥ सारंग ॥ २५ ॥ *

या देही कोन कामकी—नर । या देही कोन कामकी ।
 या देही माटीको भाँडो । उपर चादर चामकी ॥टेक॥
 जब आयो तब मंगल गायो । क्यारी लूटाई दामकी ।
 तुलसीदास प्रभु अंतर यामी । मरण है नेट नादानकी ॥१॥

* ॥ सारंग ॥ २६ ॥ *

एक पलक जो रहीये रे—मथुरामें । एक पलक जो रहीये ।
 जनमो जनमको पाप कटत है । कृष्ण कृष्ण मुख कहीये ॥टेक॥

शीतल जल जमनाजीको नीको । रुचित रुचित जल पीये ।
सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । भाग्य विना कहांसे लहारीये ॥१॥

* ॥ सारंग ॥ २७ ॥ *

भावत कुबजा कुबड़ी—हस्तिकुं । भावत कुबजा कुबड़ी ।
कुबजा मोकुं ऐसी लगत है । जाने कढ़वी वेलडी ॥टेक॥
इन गोकुल उन मथुरां नगरी । बिचमें हमारी झुंपडी ।
सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । कंचन लोहा बरा बरी ॥हरि॥१॥

* ॥ सारंग ॥ २८ ॥ *

क्युं ना भये हम मोर—वृद्धावन । क्युं ना भये हम मोर ।
करत निवास गोवरधन उपर । निरखत नंद किशोर ॥टेक॥
क्यूंना भये बंसाकुल सजनी । करत अधुर घन धोर ।
क्यूंना भये गुंजाफल वेली । रहत श्यामजीकी उर ॥वृद्धा॥१॥
मोर पिछ्छ शिर मुगट बिराजे । जैसे चंद्र चकोर ।
सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । विजजनको चिन चोर ॥वृद्धा॥२॥

* ॥ सारंग ॥ २९ ॥ *

वृद्धावनको नीको रे—बमवो । श्री वृद्धावनको नीको ।
नित्य प्रनि दर्शन जुगल जोडीको । सदा आनंद मन जीको ॥टेक॥
धन ए मथुरां धन ए गोकुल । धन जल जुमनाजीको ।
मंजन करके तिलक बिगजे । आन धरम सब फीको ॥१॥
सब संतन मली निरगुण गावे । सीरगुण ब्रज गोपीको ।
ब्यासदासकी आश वृद्धावन । जनम जनम गाउं हस्तिको ॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ३० ॥ *

चलत जनम भोम जाईये-रुक्षमणि । चलत जनम भोम जाईये ।
साव सोनेकी रची है दवारका । मथुरांकी छबी नाहिं ॥रुक्षमणि॥
जबसे छोड़ी मथुरां नगरी । गोस्सको सुख नांहि ।
माता जशोदा पितारे नंदजी । कलपत है मन मांहि ॥रुक्षमणि॥
शीतल जल जुमनाजीको नीको । मीठी कदम केरी छाँई ।
सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलनकुं । सुरता रहि ब्रिज मांहि ॥रुक्षमणि॥

* ॥ सारंग ॥ ३१ ॥ *

देखत श्याम हमे-सुदामाकुं । देखत श्याम हमे ।
फाटे वस्तर देह अति दुरबल । ढोलत पाव धमे ॥टेक॥
जाके हरिसे भ्रात सुख दाना । काढेकुं दूर बमे ।
कहा कहुं कछु कहेत न आवे । विधना बहोत कसे ॥सुदामा॥१॥
भोजाई मेवा दीयोरे पठाये । तंदुल एक पमे ।
तामें तीन लोक है थाले । ऐसे दान धसे ॥सुदामाकुं॥२॥
विश्वकर्माकुं आज्ञा दीनी । कंचन महेल रचे ।
सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । कीजे मित्र एसे ॥सुदामा॥३॥

* ॥ सारंग ॥ ३२ ॥ *

मंदिर देख ढरे-सुदामाजी । मंदिर देख ढरे ।
कहां गई मेरी तनकी झुंपडीयां । ता घेर महेल बने ॥टेक॥
जा घेर ताल पखावज बाजे । ता घेर नोबत झडे ।
या घेर छत्तीस रागज होत है । ता घेर अभर भरे ॥सुदामा॥४॥

पहेली पोरे हम्नी झुले । दूजीये तुरंग खडे ।
 तीजी पोरे वस्तर बाढे । चोथीये स्तन जडे ॥सुदामाजी॥२॥
 महोलमां बैठी नागर ब्राह्मणी । पंदित आबो ग्रहे ।
 सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । दगिदर दूर खडे ॥सुदामाजी॥३॥

* ॥ सारंग ॥ ३३ ॥ *

मंदिर देख डरे—सुदामाजी । मंदिर देख डरे ।
 कहां गई भेरी तृणकी झुंपडीयां । कौन विस्तार धरे ॥टेक॥
 दो कर जोगके शिश धुनायो । अब कहां जाउं फियो ।
 हे मति हीन कामनी मेरो । काज अकाज कीयो ॥सुदामा॥१॥
 त्रिया कहे प्रभु महेले पधारो । अब तेरो बखन खुल्यो ।
 सूरदास प्रभु निहारे मिलनकुं । रंक निहाल कीयो ॥सुदामा॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ३४ ॥ *

गोविंद नाम धर्यो—कोने तेरो । गोविंद नाम धर्यो ।
 द्रौपदि सतीकी लज्जा राखी । चौरको दान कीयो ॥टेक॥
 चार पदारथ दीयो रे सुदामा । तांदुल मुखमां धर्यो ।
 संदिपके सुन आन दीयो है । विद्यापाठ कीयो ॥कोने तेरो॥१॥
 लेन देनके है हरि दाना । मोसे कछु न सर्यो ।
 सूरकी बेर कठण होई बेटो । जनमको अंध कीयो ॥कोने॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ३५ ॥ *

बहोत गुमान भरी—मोगली तुं । बहोत गुमान भरी ।
 जात भात तोरी सब कोई जाने । जंगलकी लकडी ॥टेक॥

अपने तन पर छेद पड़ावे । बालापण बगडी ।
 रत्न मिंहासन बढ़ कर बेडी । मोहन अधुर धरी ॥१॥
 वृद्धावनकी कुंज गलनमें । राधेसुं जगडी ।
 सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकुं । संगतमें सुधरी ॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ३६ ॥ *

मानोनी वचन हमारो-गजाजी । मानोनी वचन हमारो ।
 पांच गाव पांडवकुं दीजे । और सब गज तिहारो ॥टेक॥
 दो दो गाम देशमां राखो । यह कुदुंब तिहारो ।
 भीष्म द्रोण कर्ण दुर्योधन । सब मिलि मनमां विचारो ॥गजाजी॥१॥
 उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम । देश हस्तिनापुर आपो ।
 सोयना अप्र जेटलीना आपुं । रणमंग्राम मिधारो ॥ राजाजी ॥२॥
 राज रीतकुं तुम कहा जानो । गौवां चरावन हारे ।
 सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकुं । कौन जीते कून हारे ॥ गजाजी ॥३॥

* ॥ सारंग ॥ ३७ ॥ *

गई छे भोम तमारी रे-पांडव । गई छे भोम तमारी ।
 अंधनो सुन ज्यारे अवकुंरे बोल्यो । विष्णुना मानी हमारी ॥टेक॥
 दिलीमां तमने द्युत रमाढ्या । हार्या गरथ भंडारी ।
 लाखा घरमां तमने उतार्या । तहारे मीरे सगाई मंभारी ॥ पांडव ॥१॥
 खांडा विना क्षत्रियट केम रहेशे । नपुंसक घेर नारी ।
 पोनानी होय तो नाणीने बांधो । भूपनिना रहे भिखारी ॥ पांडव ॥२॥
 क्षत्रि होय तो खांडुं खेडो । नहि तो सूरा पे भक्ति सारी ।
 अंधनो सुन ज्या रे अवनि लेसे । त्यारे फूलमे गंधारी ॥ पांडव ॥३॥

पाप तणो एणे पायो रे पांडवो । पंचाली रही पोकारी ।
सगाई तणु एणे कंड नव जाण्यु । जुवो धरम विचारी ॥ पांडव ॥ ४ ॥
पांडवने उकराटो आव्यो । बोल्या भीम हंकारी ।
सूर्यनो स्वामी ज्यारे आज्ञा देशे । त्यारे लेउ सर्वे संभारी ॥ पांडव ॥ ५ ॥

* ॥ मारंग ॥ ३८ ॥ *

चलो विदुर घर जाईये-उधव । चलो विदुर घर जाईये ।
दुर्योधन गृह कोन कामको । आदर भाव न पाईये ॥ टेक ॥
मनिको हीन बडो अभिमानी । कापे मेव कराईये ।
टूटीमी छाज मेघ जल वरषे । त्रिया कहे प्रभु आईये ॥ उधव ॥ १ ॥
चरण पखाल चरणोदक लीनो । दुटीसी पलंग बिछाईये ।
दामी सुन गृहे पीयाको सुख चेना । भोजन कहा कराईये ॥ २ ॥
बपुयाको माक अल्दुणी भाजी । रुचि रुचि भोग लगाईये ।
सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । भक्तनके हाथ बेकाईये ॥ ३ ॥

* ॥ मारंग ॥ ३९ ॥ *

आये हो नंदलाल-विदुर वेर । आये हो नंदलाल ।
कोन पुन्यते सुकृत कीनो । मोहे दीन दयाल ॥ टेक ॥
भाजी भोजन लेन कृपानिधि । भोजन मन पस्साद ।
येरे मन आनंद भयो है । राजाके हैये साल ॥ विदुर वेर ॥ १ ॥
अपरम पार पुरण पुरुषोनम । मोहे भक्तनके आधार ।
सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । भक्तवत्सल गोपाल ॥ विदुर वेर ॥ २ ॥

* ॥ सारंग ॥ ४० ॥ *

हरि पे चक न धगड़-जो में । हरि पे चक न धगड़ ।
लाजे गंगा जनुनी भेरी । शंतनु सुन न कहाउ ॥ टेक ॥

कंचन स्थंभ महारथी जीतुं । कपिधज महिन द्वातुं ।
 पांडव सहिन समेत मास्थी । सोनीन मरिना बहातुं ॥जोमें॥१॥
 इननी न करुं तो मोहे मपथ श्यामकी । क्षत्रिकुल न कहातुं ।
 सूरदास रन और मखाकुं । जीवन मुख न देखातुं॥जोमें॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ४१ ॥ *

कोण हमे खुनाथ—इनमें । कोण हमे रखुनाथ ।
 नौतम नार अयोध्या पुरकी । पुछत है कुशलात ॥टेक॥
 भाल निलक मोतनकी माला । धनुष बान लीये हाथ ।
 जाके रथ पर कनक भिंहामन । पीन धजा फहरान ॥इनमें॥३॥
 बल जाउं छत्र विमल शिर सोहे । अनाथनके नाथ ।
 कमल नयन केसरीया वागा । चंदन चरच्योहै गात ॥इनमें॥४॥
 आगे विश्वामित्र महामुनि । पीछे लक्ष्मण भ्रात ।
 रावण मार्यो विभीषण स्थाप्यो । खोमदास बलजान ॥इनमें॥५॥

* ॥ सारंग ॥ ४२ ॥ *

आये अयोध्या नाथजी—घेर । आये अयोध्या नाथजी ।
 तोढ़यो धनुष जगन जग पूरण । सीता करन मनाथजी ॥टेक॥
 आगे विश्वामित्र महामुनि । पीछे लक्ष्मण भ्रातजी ।
 कमल नयन केसरीयारे वागा । खुबंशी खुनाथजी ॥घेर॥६॥
 हनुमंत बीर बालीमुन अंगद । भगत विभीषण माथजी ।
 कौशल्या माता मनमें हरखी । गावत गुन गन गाथजी ॥७॥
 अनि आनंद भये पुखासी । फुले अंग ना मायजी ।
 तुलसीदाम हस्खे गुण गावे । प्रेम ना हिंदे समातजी ॥घेर॥८॥

* ॥ सारंग ॥ ४३ ॥ *

आरोगो रघुवीर-महाप्रभु । आरोगो रघुवीर ।
 प्रफुल्लित होय पीरमे जनुनी । दोरन शीतल समीर ॥टेक॥
 कंचन थार कटोग जडीन नंग । बडे बडे गेटी खीर ।
 छपन भोग छतीमे व्यंजन । नाना विधिके मीर ॥१॥
 भग्न शत्रुघन लछमन द्विग द्विग । प्रसाद लेत चारे वीर ।
 जनकसुता झारी ले आई । सर्जूजीको नीर ॥महाप्रभु॥२॥
 केसर चंदन मृगमद घोर्यो । चरच्यो श्याम शरीर ।
 पुष्पमाल कर बीरी दीनी । गावे दास कबीर ॥महाप्रभु॥३॥

* ॥ सारंग ॥ ४४ ॥ *

भोजन करवा मधारो-कनैयालाल । भोजन करवा सधारो ।
 बेर ही बेर पुकारत जनुनी । तेडन तात निहारे ॥टेक॥
 बहोत अबेर भई तुम चिहरत । तात वचन जीय धारो ।
 बल बल जाउं बदनको सोभा । इतनो खेल निवारो ॥कनै॥१॥
 बांहि पकड लई अपने कुंवरकी । लई आये नंदराणी ।
 सूखदास प्रभु भोजन महिमा । निगम विरंची वसाणे ॥कनै॥२॥

* ॥ सारंग ॥ ४५ ॥ *

आरोगो नरसिंघ-महाप्रभु । आरोगो नरसिंघ ।
 छपन भोग छतीमो व्यंजन । नहाना विधिके रंग ॥ टेक ॥
 लक्ष्मीजी भोजन आप संभार्यो । मनमां धरीरे उर्मंग ।
 पनवारो नारद लई आये । जल भरलाये गंग ॥महाप्रभु॥१॥

भाव प्रीतसुं भोजन कीजे । तुम मेरे प्राण पीया रे ।
 सब ही घटके अंतरजामी । सब विधि जाननहारे ॥ महाप्रभु ॥ २ ॥
 आरति साज इन्द्र ले आये । दूर कीये पट चीर ।
 शुक सनकादिक चमर ढोगवे । गावे दास कबीर ॥ महाप्रभु ॥ ३ ॥

॥ इति श्री राग मालगोडीना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग मालगोडीना कीरतन ॥ *

* ॥ मालगोडी ॥ १ ॥ *

आवे आवे रे गोवालीयानी संगे रमतो ।
 संगे रमतो मारे मन गमतो ।
 वहालो फुलनो ते तोरो मेहेल्यो मन गमतो ॥ टेक ॥
 फुलनी रे पोहँचीने छुलनो रे हार ।
 वहालो दहुलो दोटावतो आवे नंदलाल ॥ आवे ॥ १ ॥
 जै नर जांणे तमारी सार ।
 महेता नरसैयाचा स्वामीनी जाऊ बलीहार ॥ आवे ॥ २ ॥

* ॥ मालगोडी ॥ २ ॥ *

चालो चालो बेनी जोवा जईये नवलो नंद ।
 रमे रमे रे वंदावन गोपीने गोविंद ॥ टेक ॥
 हमीने अबोला ले महारो नाथ ।
 वहालो ताली ते ले पेली ग्वालनीने हाथ ॥ चालो ॥ १ ॥

एरे कहानुढासुं लाग्युं महारु ध्यान ।
 वहालो जेटलीते गोपीयोने तेटला कहांन ॥ चालो ॥ २ ॥
 वहाले मनोहर वाह्यो वंस ॥
 वहालो मान सरोवर मोहेला हंस ॥ चालो ॥ ३ ॥
 नरसैयाचा स्वामी सुंदीर श्याम ।
 वहाले अविचल कीधां श्री गोकुल गांम ॥ चालो ॥ ४ ॥

* ॥ मालगोडी ॥ ३ ॥ *

तमो महारे वेर नाथजी सें ना आव्या ।
 सें ना आव्या रे तमो सें ना आव्या ॥ टेक ॥
 कुकमे पीरु तमारा पाय ।
 तमो मारे वेर आचो श्री जादवराय ॥ तमो ॥ १ ॥
 शेरी वरावी पथराबुं फुल ।
 हरिना पंथीडा निहालु नयने घालुं नीर ॥ तमो ॥ २ ॥
 कनक कचोलामां कट्टीएलां दुध ।
 मांहे भेरु भेरु साकर माहि कपूर ॥ तमो ॥ ३ ॥
 खटरस भोजन कीघेलां सार ।
 महारा प्रभुजी आरोगो वारंवार ॥ तमो ॥ ४ ॥
 नरसैयाचा स्वामी दीन दयाल ।
 वहालो भक्तवत्सल केरा प्रतिपाल ॥ तमो ॥ ५ ॥

* ॥ मालगोडी ॥ ४ ॥ *

तमो मारे वेर आचो रे शामलीया ।
 हुंतो वारी वारी जाउं रे पातलीया ॥ टेक ॥

तमो दीठडे सुख पामे मारी देह ।
 वहालो प्रीत करी नव देजो छेह ॥ तमो ॥ १ ॥
 बात करतां लागी बढ़ी बार ।
 आवढा मौंघा सुं थाव छो नंद कुमार ॥ तमो ॥ २ ॥
 भोक्ले भावे मुने भेटेला कहान ।
 महेता नरसैयाचा स्वामी छे रूप निधान ॥ तमो ॥ ३ ॥

* ॥ मालगोढी ॥ ५ ॥ *

अमोरे वहेवारीया श्री राम नामना ।
 वहेपारी आवे महारे गाम गामना ॥ टेक ॥
 अमारु वसाणु खहु कोईने भावे ।
 संतो अरादे वरण सहु ओखाने आवे ॥ संतो ॥ १ ॥
 अमाग वहेपारमां ना आवे स्वोट ।
 संतो घेर बेड़ी प्राणीया तुं ब्रिजमां लोट ॥ संतो ॥ २ ॥
 रामनाम धन मारे गाजे ने बाजे ।
 मंतो छपन उपर भेर भुंगरो वागे ॥ संतो ॥ ३ ॥
 ए धन काल दकाले न खुटे ।
 संतो राजा ना दंडे चोर ना लूटे ॥ संतो ॥ ४ ॥
 लाख ना तो लेखां नही ने पाखीनानी पुंजी ।
 वहोखु होय तो वहोरी लेजो कस्तुरी छे सोंधी ॥
 आवरोने खानावहीमां लक्ष्मीवरनु नाम ।
 चीड़ीमां चतुभुज लखीआ नरसैयानु काम ॥ मंतो ॥ ५ ॥

नारायणे दया करी लखेमरी थाप्या ।
महेना नम्मैयाचा स्वामीये रुडा जश आप्या ॥ संता ॥६॥

॥ इति श्री राग मालगोडीना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग संज्ञागोडीना कीरतन *

॥ साखी ॥

बनथे बनी आवत मखी । मोहन मदन गोपाल ।
मोर मुगट लखी यों रही । कमल फिरवत लाल ॥१॥

* ॥ गोडी ॥ १ ॥ *

श्री गुरुने पाये लागु—परथम पहेलो । श्री गुरुने पाये लागु ।
करोरे किरणा गुरुजी गोविंद गाईष । बीजुं काँई ना मागु ॥टेक॥
दो उपदेश मदा सुखकागी । जेणे मन निरमल थाये ।
काम करोध लोभ मोह ममता । विकार मधलो जाए ॥परथम ॥१॥
संतनी संगत सदा गुरु सेवा । और सकल भ्रमणा त्यागी ।
जन्म मरण ओर आवा गवन गहित । हरि चरणे अनुरागी ॥२॥
अनहद शब्द महेज धुनि उपजे । चरण कमल निज वासा ।
चार पदारथ दीयो गुरु मेरे । गवन जन गेहिदासा ॥परथम ॥३॥

* ॥ गोडी ॥ २ ॥ *

रुमझुम रुमझुम गोविंद आवे । हरि हरि हाथ बे'न मुख मोरली बजावे
देवकीके आंगणामें तुलमीको बड़ो ।
हरि जशोमति आंगणामें खेलो प्यारे ललना ॥

दुर खेलन जीन जावरे ढोटावना। हरि सांझ पडेने घेर आवो प्यारे ललना
जमुनाके नीर तीरे धेन चरावे। हरि गौधनकीरे संग निश्चन आवे
कहेंत कबीर मेरो रोवन मोगावना। हरि तीन लोक रमी रह्योरे ढोटा विना

* ॥ गोडी ॥ ३ ॥ *

गौ चारीने घेर आवे—वहालो जी महारो। गौचारीने घेर आवे।
पीढारो पखरीयो मोहन। मधुरसी मोरली बजावे॥टेक॥
गुंजारे फलनो हार मनोहर। मोर मुगट शिर सोहे।
श्याम तणी सुंदिरता जोईने। ब्रिजनारीना मन मोहे॥वहालो॥
अगर चंदनना छांटणा छंगावुं। मोतीडे चोक पुरावुं।
नरसेयाचा स्वामी मारे मंदिरे पधारो। आणी शेराये फुल पथरावुं।

* ॥ गोडी ॥ ४ ॥ *

वाट जुवे ब्रिजनारी—वहाला तारी। वाट जुवे ब्रिजनारी।
घेली थई गोविंद तमो विना। वेला आवो बनमाली॥टेक॥
कंचन याल भरी मुक्काफल। गोपी रश्यां छे गडी।
ओ पेला आवे बनमाली। बनमांथी गउ धन चारी॥वहाला॥१॥
अमुर थयुने भांणज आथम्यो। ना आव्या कुंज विहारी।
सुंदर मुख जोवाने काजे। उभां छे रावे प्यारी॥वहाला॥२॥
मोर पीच्छ शिर मुगट विशजे। शामरीसी मूरत सारी।
नरसेयाना स्वामी मारे मंदिर पधारो। हेते जाऊं बलीहारी॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ५ ॥ *

काहे न मंगल गावे-जशोदा मैया। काहे न मंगल गावे।
पुरण ब्रह्म अकल अविनाशी। सो तेरी धेनु चरावे॥टेक॥

कोट ही कोट ब्रह्मांडनो करता । जप तप ध्यान न आवे ।
 न जाणु ए कौन पुन्यसें । जशोदाजी गोद खेलावे ॥ज०॥१॥
 ब्रह्मादिक इन्द्रादिक शंकर । निगम नेति करी गावे ।
 शेष सहस्र मुख रटन निरंतर । सो वाको पारन पावे ॥ज०॥२॥
 सुंदर बदन कमल दल लोचन । गौ धनके संग आवे ।
 आरति करत जशोदा मैया । कबीरजी दरशन पावे ॥ज०॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ६ ॥ *

हरि गवानी टेव पडी बाई मुने । हरि गवानी टेव पडी ।
 विंधाएलुं मन अलगु ना जाए । साची शामकीयासुं प्रता ॥टेक॥
 आखा दिवमनो हुंसी खपी आयो । भाभीए ना मेल्युं पाणी ।
 में जाप्युं जे वेरण मोरी । भाभी नोय गोपणी ॥बाई॥१॥
 नामदेवजीनु जेने छापरुं छायुं । कबीरजीनी अविचल वाणी ।
 एवुं जाणीने हुंतो रोम भगणो । छवीलोजीमुकसे मुने पाणी ॥२॥
 धन बृंदावन धन जुमनानट । धन राधा रुक्माणी राणी ।
 धन धन नरसेया तारी जीभलडी । जपीरे छवीलाजीनी वाणी ॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ७ ॥ *

नाव लावुं गम गोसाई कैसे में । नाव लावुं गम गोमाई ।
 इन नौका मेरे कुदुंब जीवत है । रहुं रंक शिर नाई ॥टेक॥
 जाके पाय पाषाण उढत है । सो हरि मागत नौका ।
 जो नौका उड जाय सरगमें । तो कहा करु में रंका ॥कैसे॥१॥
 किरण करे अनन होई उनरो । तजो दीन मोहे जाणी ।
 पूर्ख दिशा पेढ सो उपर । तहां गलेलों पाणी ॥कैसे॥२॥

कृण करी ढीमगकुं बोहोनेगी । हिंगदे नही विश्वामा ।
में बल बल रघुनाथ रूप पर । चरण शश्य रोहिदामा ॥कैमे॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ८ ॥ *

हरिजन भक्ति ना छांडे-संतो भाई । हरिजन भक्ति ना छांडे ।
तन मुख संपत जावे मो जावे । नामका नेजा गाडे ॥टेक॥
सूर हथीयार धरे नहि धरती । जो वेरिको दल कोपे ।
गही नखार समो होई आवे । खंभ देहीका रोपे ॥ संतो ॥१॥
द्रव्य भंडार मती नही राचे । पडदाकीये नव ढोले ।
पियु पियु करे पियु रट लावे । राम नाम मुख बोले ॥ संतो ॥२॥
केमरी धाम भखे नहि कबहुं । प्राण निकम क्युं न जाई ।
कहें कबीर जन नाम उपासी । ओर न सुमरे काँई ॥संतो॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ९ ॥ *

कहो कोने मन वश कीनो—जगतमें ।
भरत खंडमें ज्ञानी भरतसें । मृगमुन मन हर लीनो ॥टेक॥
सुके पात पवन भक्ष रहेने । पागममें ज्ञानी ।
भरमे रूप देखी गंधकाको । काम कदला ठानी ॥जग०॥१॥
शृंगी ऋषि बन खंडमें रहेते । विषय विकार न जाने ।
पठई नार भूप दशरथने । पकड अजोध्या आने ॥जग०॥२॥
पारखतीसी पतनी जाके । ताको मन केसे ढोले ।
खलीत भये छबी देख मोहनी । हाहा करके बोले ॥जग०॥३॥
सोई सुरपति जाकी नारमचीसी । कोकीला जैसी बानी ।
गौतम घरुनी काम हेत कारण । निगम कहेत वस्तानी ॥जग०॥४॥

सोई जमदग्नी जाकी नार रेणुका । गई नदीयां जल लेना ।
भरम्यो रूप भूपके मन दल । थकीन भये दोनैना ॥जग॥५॥
एकनाल कमल रहेत ब्रह्मा । जगन उपराज कहावे ।
कहेत कबीर एक गम भजन बिना । मन विश्रामन पावे ॥जग॥६॥

* ॥ गोडी ॥ १० ॥ *

बहोन भलो भेरे भाई—अवमर । बहोन भलो मेरे भाई ।
मनुषा देही देवताकुं दुर्लभ । सो देही तें पाई ॥टेक॥
तज पाखंड अविद्या परपंच । छांड गुमान बढाई ।
संत संगत मली भजो भगवंता । सोही सकल सुखदाई ॥१॥
जब लगी जरा निकट नहीं तेरे । ले गुरु ज्ञान बढाई ।
मात तान स्वारथके लोभी । माया जाल बंधाई ॥अव॥२॥
कहुं पोकार चेत नर अंधे । या तन एडे गमाई ।
कहेत कबीर देही काचको कुंपो । वणसता वारन लाई॥अव॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ११ ॥ *

ऐसे ही बन आई—अब मेरे । ऐसे ही बन आई ।
कोई नंदो कोई वंदो । छांडी लोक बढाई ॥टेक॥
कुलसें निकस भई जब गुनका । बहोर न कुल समाई ।
केसरी कोट पडे जो लांघन । भुखे धाम न खाई ॥अब॥१॥
भवसागर तस्वेके कारण । नामकी नाव बनाई ।
राम भजे सो पार उनर गये । डुबी लोक बढाई ॥अब॥२॥
पड गई लाप भक्ति भई निर्भय । उर अंतर लपटाई ।
दास कबीर ढगे नहीं कबहुं । गढ़ी अटल सगाई ॥अब॥३॥

* ॥ गोडी ॥ १२ ॥ *

गधा कृष्ण भरोंसो-ऐमो । गधा कृष्ण भरोंसो ।
 वाला आनिपरे वृज उपर । इन्द्र कोप करे सो ॥टेक॥
 दावानलको पान कियो है । वच्छासुर मारे सो ।
 अगासुर मारा बगासुर मारे । अनेक असुर मारे सो॥ऐसो॥१॥
 संग सखा कहत कृष्ण सो । मबको दुःख हरे सो ।
 पैठि पताल कालिनांग नाथे । फन पर नृत्य करे सो ॥२॥
 अंतर्ध्यान भये गोपियनमें । गधा ध्यान धरे सो ।
 वृज वनिता को संग छोडके । जदुवर नाम धरो सो ॥ऐसो॥३॥
 दुसामन बलवंत जानाके । द्वुपदी चीर गहे सो ।
 कृष्ण कृष्ण कहि द्वुपदी पुकारे । अंबर जात बढो सो ॥ऐसो॥४॥
 मजकी टेर सुनी हार शरणे । बाहन छांडी चले सो ।
 विप्र सुदामा हरि पद भेटे । कंचन महल खडो सो॥ऐसो॥५॥
 पांडवके दुःख हरवे कारण । कौख नाश करो सो ।
 कहत कबीर सुनो भाई साधु । निरभय ध्यान धरो सो॥ऐसो॥६॥

* ॥ गोडी ॥ १३ ॥ *

छांडदे मन बहोग-डगमग । छांडदे मन बहोग ॥टेक॥
 होई निःशंक मग्न होई नाचो । लोभ मोह भ्रम छोडो ।
 सूग कहा मरण पे डरपे । सतीयन साचे भाँडो॥डगमग॥१॥
 लोक लाजको मरयादा । ए हो गलेमें फांसी ।
 आगे होकर पीछे निकसे । होयगी जमपुर हाँसी॥डगमग॥२॥
 ए संसार सबल जुग मेला । राम कहे सोइ सूरा ।
 कहेत कबीर तोरी भक्ति न छांडुं । गीर्घ परत चढु उंचा॥डगमग॥३॥

* ॥ गोडी ॥ १४ ॥ *

नाम सुमररे भाई—सकलतज । नाम सुमररे भाई ।
 माटीके संग माटि मिली है । पवनमे पवन समाई ॥टेक॥
 जतन जतन करो सुनको पाले । काचा दुध पीलावे ।
 सो बेटा काल होई बैआ । बाबा कहन लजावे ॥सकल॥१॥
 जो तिरीया मुख बिरीया खानी । सोबत अंग लगाई ।
 सो तिरीया मुख सोगके बैठी । दूरगई सगम सगाई ॥सकल॥२॥
 जो देहीयांपर नीर पखारे । चौबा चंदन लगाई ।
 सो देहीयांपर काग उडन है । देखत लोक धिनाई ॥सकल॥३॥
 झुटी काया झुटी माया । झुठे लोक ल्लगाई ।
 कहेत कबीर सुनो भाई साधु । झुठे जगत पतियाई ॥सकल॥४॥

* ॥ गोडी ॥ १५ ॥ *

कोन रंग तृपत कन्हाई । नजानु तुम-कोन रंग तृपत कन्हाई ॥टेक॥
 जे जोगी रहे मन मारके । सून्य ध्यान लौ लाई ।
 तापर कृपा करत नहीं कवहुं । सपने न देत देखाई ॥नजानु॥१॥
 छिज कुल उत्तम दोउ पक्ष निर्मल । प्रान सदा असनाई ।
 पट कर्म सहित रहत परविना । उनके न भये रे महाई ॥नजानु॥२॥
 आहीरी असोच पोचमत । दधि मही बेचन हारी ।
 कहेत कबीर तोरी अकथ कथा प्रभु । उनके भये मनकाई ॥नजानु॥३॥

* ॥ गोडी ॥ १६ ॥ *

कागदका जतना । मन रे तन—कागदका जतना ।
 लागत बूंद बिनस जाय छिनमें । गरम करे कहा ईतना ॥टेक॥

माटी सोद भीत ओमगी । अंध कहे घर मेरा ॥
 आवि तलप बांध ले चलावे । बहोरन कीया फेगा॥मन रे ॥१॥
 कूद कपट करी धन ही जोरा । ले धनीमैं गाडा ॥
 रुंधा द्वार श्वास जब निकसा । ठौर ठौर सब छांडा॥मन रे ॥२॥
 गये प्राणीया ऊजडी बाजी । को काहुके आवे ॥
 कहेत कबीर नट नाटक थाका । मदला कोन बजावे॥मन रे ॥३॥

* ॥ गोडी ॥ १७ ॥ *

दुबधा दिमे नाहि । मंतो भाई—दुबधा दिसे नाहि ॥
 आगे राम पीछे राम । राम बोले घट मांहि ॥टेक॥
 उत्तरी राम दछीन राम । पूर्ख पश्चिम राम ॥
 स्वरग पताल मही थल राम । राम सकल विश्राम ॥संतो ॥१॥
 राम राम कही जपे निरंतर । राम राम कही गावे ।
 कहे कबीर रामके परसे । आपा ठोर न पावे ॥संतो ॥२॥

* ॥ गोडी ॥ १८ ॥ *

राम नाम निस्तारे । जबतब—राम नाम निस्तारे ।
 साठि घरिमैं एक घरि भजु । सोउ सकल अध जारे ॥टेक॥
 काशी पुरि बसत गौरापति । निशदिन नाम उचारे ।
 किट पतंग सुनत गति पाये । रघुकुल जश बिस्तारे॥जबतब॥१॥
 अजामेल गनीका गृह बासी । सुन हित नाम उचारे ।
 गज अरुगीधनरे हरि सुमिरन । महिमा व्यास बखाने॥जबतब॥२॥
 परम पुनित नाम रघुवरके । हरिजन हरित्रित धारे ।
 नामदेव सोई भक्तशिरोमणि । चित्सें पलन बिस्तारे॥जबतब॥३॥

* ॥ गोडी ॥ १९ ॥ *

आवत चारो मैया । बनहुते—आवत चारो मैया ।
 दौ श्याम दौ गौर मनोहर । राजा दशरथजीके छेया ॥टेक॥
 बनहुते आवत तुरंग नचावत । कर गहि कमल फिरेया ।
 अवधपुरी नरनारी निहारे । दौ कर लेन बलैया ॥बन॥१॥
 विविधि भाँति आभूषण पहिरे । मंद मंद मुसकैया ।
 राम ललाजीके रूप बिलोके । कोटि काम छवि छैया ॥बन॥२॥
 रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन । शोभा बरनी न जैया ।
 अग्रअलि प्रभुकी छवि निरखी । करन आगति मैया ॥बन॥३॥

* ॥ गोडी ॥ २० ॥ *

लागत मोहि प्यारो । श्री रघुवीर—लागत मोहि प्यारो ।
 अवधपुरि सरजू तट विहरे । दशरथ प्राण पियारो ॥टेक॥
 किट मुकुट मकराकृत कुँडल । पीतांधर पटवारो ।
 नयन विशाल माल मोनीयनके । मध्वी तुम नेक निहारो ॥१॥
 रूप स्वरूप अनुप बन्यो है । चित्से रस्त न यारो ।
 मधुरी मूरति निरखो मजनी । कोटिभानु उजीयारो ॥रघु॥२॥
 जानकी नायक सब सुख दायक । गुण गन रूप अपारो ।
 अग्रअलि प्रभुकी छवि निरखे । जीवन प्राण हमारो ॥रघु॥३॥

* ॥ गोडी ॥ २१ ॥ *

राघोजी बान धरेगे । जबतब—राघोजी बान धरेगे ।
 संग रघुनाथ भीर बनचरकी । कपिदल कोप चढ़ेगे ।
 श्याम धयाघन झुकी अंधेरी । सूर्य गगन छिपेगे ॥जब॥१॥

पचरंग बान राम लक्ष्मणके । सामर तीर गेवेंगे ।
 जो सागरको गर्व कस्तहो । ना पर मेतु बधेंगे ॥जब॥२॥
 लंका ऐसे कोट ममुद्र ऐसि साई । थर हर भुमि परेंगे ।
 जामवंत हनुमान निल नल । महाधुनि गर्ज करेंगे ॥जब॥३॥
 राति भयानक सप्ना देख्यो । लंका कपि लूटेंगे ।
 नाम विभीषण बंधु तुम्हारे । रघुपति जाय मिलेंगे ॥जब॥४॥
 मेघनादसे पुत्र तुम्हारे । ओ नहीं धीर धरेंगे ।
 कुंभकरण बल बंधु तुम्हारे । रणमें जुझि मरेंगे ॥जब॥५॥
 महिंगवणमें जोधा मरी है । लंकामें शोक परेंगे ।
 चौमठ जोगिनि मंगल गावे । खपर वीर मरेंगे ॥जब॥६॥
 दश शीश बीश भुजा तुमारे । एकही बान हरेंगे ।
 जो नारद मुनि मुष्मसे भासे । भारथ गमजी करेंगे ॥जब॥७॥
 श्रीग्युनाथ अनाथके बंधु । शरणे जाय परेंगे ।
 अग्रकेस्वामीको ले मिलो जानकी । कछु दिन राज करोंगे ॥८॥

* ॥ गोढ़ी ॥ २२ ॥ *

बोलनके बलि जैहो । लाल—इन बोलनके बलि जैहो ।
 छोटे छोटे चरण अधर तल सुंदर । ठुमकी ठुमकी चलि जैहो ॥टेक॥
 कटि किंकिनि पग नेपुर बाजे । मधुरे शब्द सुनै हो ।
 सब बालक रघुर छवि निरखत । प्रेम प्रिन लफै हो ॥लाल॥१॥
 धुंधर बाले अलख बदनपर । मंद हमन सुख दै हो ।
 जाको ध्यान धरन ब्रह्मादिक । शारद गान करै हो ॥लाल॥२॥

गोद राखि पथ पान करावत । दशस्थ लेत बलै हो ।
 यह छविदेख मगन भये सुरमुनि । रवि शशि कोटि लजै हो ॥३॥
 शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक । निगम नेनि जश गै हो ।
 अग्रदास भजो दशस्थ नंदन । दिन प्रतिदिन अधिकै हो ॥४॥

* ॥ गोडी ॥ २३ ॥ *

निरखत जात जटाई । रथको—निरखत जात जटाई ॥टेक॥
 विप्ररूप जब धेर निशाचर । जयजय कार सुनाई ।
 लेकर भिक्षा निकसी जानका । रथ पर लेत चढाई॥रथको॥१॥
 रथ उपरसें बोली है जानकी । चरण शरण रघुराई ।
 है कोई योद्धा तीन लोकमें । हमको लेत छुडाई॥रथको॥२॥
 इतनी सुनी खगपति उठी धाये । रथ आये नियराई ।
 कौनकी हो तुम परम सुंदरी । कौन हरे लिय जाई॥रथको॥३॥
 अबध नगर राजा नृप दशस्थ । उनके सुत रघुराई ।
 उनके प्रिय मम नाम जानकी । हमन निशाचर जाई॥रथको॥४॥
 इतनी सुनी खगपति उठी धाये । राख्यो स्थ बिलभाई ।
 जाने न पैहो महाजठ मूरख । जो हरि होन सहाई॥रथको॥५॥
 चौंचन मारि महा जुध किन्हो । स्थसें दीयो है गिराई ।
 अभि बान जब हनेउ निशाचर । धम्नी गीरे मुझाई॥रथको॥६॥
 देत आशिष जानकी माता । प्राण सखो घट माहि ।
 तुलसी दास रघुबर जब ऐहै । कहीयो कथा समुझाई॥रथको॥७॥

* ॥ गोडी ॥ २४ ॥ *

रामजी धजा फहरानी । अब देखो—रामजी धजा फहरानी ॥

श्वलकत ढाल फरकत नेजा । गरद उडी अममानी ।
 गम लक्षण बालिसुत अंगद । हनुमान अगुवानी ॥ अब ॥ १ ॥
 कहत मंदोदरी सुन पिया रावण । त्रिभुवन पतिमें दानी ।
 जो सागरको गर्व करते हो । ता उपरशिला नगनी ॥ अब ॥ २ ॥
 अबला जानि बुद्धिकी ओछी । उनहुकी करत बडाई ।
 ध्रुव मंडलसें पकर मंगई हो । वे तपसी दोउ भाई ॥ अब ॥ ३ ॥
 हनुमानमें पायक उतके । लक्षणसें बली भाई ।
 जरत अग्रिमें कुदि परत है । कोटि गने नही खाई ॥ अब ॥ ४ ॥
 मेघनादसे पुत्र हमारे । कुंभकरण बली भाई ।
 एकबार सनमुख होई लडी हो । जुग जुग होत बडाई ॥ अब ॥ ५ ॥
 कहत मंदोदरी सुन पिया रावण । तें मेरी एक न मानी ।
 रातिको स्वप्नो ऐसो भयो है । सोनेकी लंका लूटाई ॥ अब ॥ ६ ॥
 बंदर एक लंक बिच आयो । घर घर धुम मचाई ।
 बाग उखारी समुद्र बिच डारे । लंकामें आग लगाई ॥ अब ॥ ७ ॥
 गरवि रावण गरव करत है । गर्व ही लंका लूटाई ।
 जाय मिलो रघुनाथ कुंवर मो । लंका अमर होई जाई ॥ अब ॥ ८ ॥
 एक लक्ष पुत्र सबा लक्ष नानी । मोत अपनी ठानी ।
 अग्रके स्वामी गढ लंका बेरे । अजहुन चेते अभिमानी ॥ अब ॥ ९ ॥

* ॥ गोडी ॥ २५ ॥ *

दंड कठिन जिन तोरा । हरको—दंड कठिन जिन तोरा ॥ टेका ॥
 कहत मंदोदरी सुन पिया रावण । बानर भालु बयोरा ।
 सेतु बांधी दल पार उतार्यो । सोर भयो चहुं औरा ॥ हरा ॥ १ ॥

सुर्पनखाको रूप हर्यो है । घर दृष्टन मद तोरा ।
 उनसे बैर कबहु नहीं कीजे । बिननी करहुं कर जोरा ॥हरा॥२॥
 गम लखन दोउ बीर धुरंधर । पवन ननय बलजोरा ।
 जामवंत सुग्रीव निल नल । काल ममान कठोरा ॥हरा॥३॥
 तामें मिल्यो है विभीषण देवर । बंधु लगे पिया तोरा ।
 लंका जारिके गरद मिली है । जस पथरके रोरा ॥हरा॥४॥
 दोउ कर जोरी मीया ले आगे । मिलन चलो पिय मोरा ।
 तुलसीदास प्रभु शीलके स्वामी । मानो वचन पियु मोरा ॥हरा॥५॥

* ॥ गोडी ॥ २६ ॥ *

अब जो गवन आवे । रघुपति—अब जो गवन आवे ।
 अनि आविन होई जानकी माँपे । चरण कमल चिन लावे ॥
 बिन आशिष दर्द लंका विभीषण । ऐमी करी नहि कोई ।
 दंत तृण ग्रही मिले जो निशाचर । तब बुद्धि कैसी होई ॥रघुपति॥
 सुन हो सुग्रीव वचन हमारा । में और जीत गढ़ लेउं ।
 अग्रदास जो रावन आवे । ताहे अजोध्या में देउं ॥रघुपति ॥३॥

* ॥ गोडी ॥ २७ ॥ *

शरण रामजीके आयो । कुटुंब नजि—शरण रामजीके आयो ॥
 नजि गढ़ लंक महल अरु मंदिर । नाम सुनत उठि धायो ॥टेक॥
 भरी सभामें रावन बैठे । परहित लात चलायो ।
 मूरख बंधु कहा नहीं माने । बार बार समुझायो ॥कु०॥१॥
 आवनही लंकापति कीनो । हरि हसी कंठ लगायो ।
 जन्म जन्मके मेटे पराछिन । राम दरशन जब पायो ॥कु०॥२॥

श्री रघुनाथ अनाथके बंधु । दीन जानि अपनायो ।
तुलसीदास भजु नवल सीयावर । भक्ति अभयपद पायो ॥कु०॥३॥

* ॥ गोडी ॥ २८ ॥ *

फिरगई राम दुहाई । अब गढ़-फिरगई राम दुहाई ॥टेक॥
कहत मंदोदरी सुन पिया रवन । यह बुद्धि कौन शिखाई ।
ओछी बुद्धि कर्म तुम कीन्हो । त्रिया हरन पराई ॥अबगढ़॥१॥
कंचन कोट देखि मत भुलो । और समुद्र ऐसी साई ।
पवनके पुत्र महा बलदाईक । छिनमें लंक जगाई ॥अबगढ़॥२॥
बीम भुजा दश मस्तक मेरे । कुंभ करण बल भाई ।
सवालाख परिवार हमारे । कहा करे दोउ भाई ॥अबगढ़॥३॥
जो रावन तुम हरिमो मिलते । देत अयोध्या ठाई ।
तुलसीदास रघुवरके शरणे । लंकाविभीषण पाई ॥अबगढ़॥४॥

* ॥ गोडी ॥ २९ ॥ *

को उदार जगमाहि । ऐसो—को उदार जगमाहि ।
विन सेवा द्रवत है दीनपर । राम सरीस कोउ नाहि ॥टेक॥
जो गति जोग वैराग जनन करी । नहीं पावन मुनि ज्ञानि ।
सो गति दीने गीध शवरीको । राम अधिक कर जानी ॥ऐसो ॥१॥
जो लंका दश शिश अरपीके । रावन शिव पह लीन्ही ।
सो संपदा विभीषण जनको । सकुची महन पर दीनी ॥ऐसो ॥२॥
तुलसीदास सब भाँति सकल सुख । जो चाहे मन मेरो ।
तौ भज राम काम पद पूरण । करि है कृपानिधि तेरो ॥ऐसो ॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ३० ॥ *

साचे मनके मिता । रघुवीर-साचे मनके मिता ॥टेक॥
 कब शवरी काशीको धाई । कब पढ आई गीता ।
 जुठे फल शवरीके साये । नेक लाज नही कीता ॥रघुवीर॥१॥
 चरण छुवत तर गई है अहल्या । गीध गति है कीता ।
 लंकापतिको गर्व हन्यो है । राज विभिषण दीता ॥रघुवीर॥२॥
 सुग्रीव सखा कीये रघुनंदन । बानर कीये पुनिता ।
 सखा निषाद कंदफल लाये । कीनो अधिक प्रतिना ॥रघुवीर॥३॥
 सुफल यज्ञ मुनि जनकको कीन्हो । सबही भूपन बल जीता ।
 तुलसीदास छबी निरखी जानकी । मन वांछित फल लीता ॥रघु॥४॥

* ॥ गोडो ॥ ३१ ॥ *

राम दीनन हितकारी । ऐमे-राम दीनन हितकारी ।
 अति कोमल करुणा निधान है । बिनु कारण उपकारी ॥टेक॥
 साधन हीन दीन निज अध्वस । शील भई मुनि नारी ।
 गृहने गवनी परसी पद पावन । घोर श्रापते तारा ॥१॥
 हिंसा रत निषाद तामस बस । पशु समान बनचारी ।
 भेटे हृदय लगाय प्रेम बस । नही कुल जाति बिचारी ॥२॥
 जदपि द्वोह कीयो सुखनि सुत । कहिन जाय अति भारी ।
 सकल लोक अवलोकीसो कहेते । शरण भये भय टारी ॥३॥
 विहंग थोनी अमीष आहार बस । गीध कवन ब्रतधारी ।
 जनक समान क्रिया करी ताकी । निज कर बात संवारा ॥४॥

अधम जात शवरी योषीन मठ । लोक वेदते न्यारी ।
 जानी प्रीती दे दररा कृपा निधि । मो रघुनाथ उधारी ॥५॥
 कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल । आयो शरण पुकारी ।
 सहिन सके दारुण दुःख जनके । बाली हन्यो सही गारी ॥६॥
 गिपुको बंधु विभीषण निशिचर । कौन भजन अधिकारी ।
 शरण गयो आगे होई लीन्हो । भेटयो भुज पसारी ॥७॥
 असुभ होई जिन्हके सुमिरनते । बानर रिंछ विकारी ।
 वेद विदित पावन कीये सबही । महिमा नाथ तुम्हारी ॥८॥
 कहां लगी कहौ दुखी दीन अगनिन । जीनकी विपत्ती निवारी
 कलिमल ग्रसीन दाम तुलमीपर । काहेकुं कृपा विसारी ॥९॥

* ॥ गोढी ॥ ३२ ॥ *

गम मदा खवारे । जीनके—गम मदा खवारे ॥टेका॥
 जलहुसें राखे अनलहुमें राखे । गिराते गिरत उवारे ।
 खंभ फोरि हिरण्यकंस मारे । नखसें उदर बिदारे ॥जी०॥१॥
 रावण रारि करी हरिजनमे । रण चढाय तेही मारे ।
 नहीं राखे कुलदिप धरनको । तिलक विभीषण सारे ॥जी०॥२॥
 अंबरीष पे दुर्वासा कोपे । चक्र सुदर्शन जारे ।
 नहीं राखें हरि जनको द्रोहि । दाम ही चक्र निवारे ॥जी०॥३॥
 कंस कुमनि किन्हो हरिजनसो । कर गही केस पथारे ।
 कुंती पुत्र बंधु भये व्याकुल । आपही जाय निवारे ॥जी०॥४॥
 जहां जहां भीर पडे भक्तनको । तहां तहां आपु मिधारे ।
 तुलसीदास आशा खुवरकी । दारुण विपत्ती निवारे ॥जी०॥५॥

* ॥ गोडी ॥ ३३ ॥ *

रामचरित सुन काना । मन रे तुं-रामचरित सुन काना ।
 सनक सनंदन सनत कुमार । नारद येहि बखाना ॥टेक॥
 येहि चरित उमापति गायो । गुप्त प्रगट सो बखाना ।
 याज्ञवल्क्य कहे भरद्वाज सों । तीरथ राजसु धाना ॥१॥
 बालपनमें गये ध्रुव राजा । सुनी नारदको ज्ञाना ।
 राम नामकी येही प्रभुतार्द्दि । गनीका चंदी है बिमाना ॥२॥
 काम क्रोध मद लोभ निवारन । आलस उर नहीं आना ॥३॥
 कृषि कृपामें सवरी गायो । आगम प्रभुको अजाना ।
 प्रेम महित वाके फल पाये । पहुंचाये निज धामा ॥४॥
 येहि चरित्र विभीषण गायो । बैर बंधुसो धाना ।
 लंका तजीके भज्यो सीतापनि । मिल्यो राम सो आना ॥५॥
 रामनामकी महिमा मोटी । मन मेरे अनुमाना ।
 तुलसीदास धन्य धन्य येही भक्ता । गावे वेद पुराना ॥६॥

* ॥ गोडी ॥ ३४ ॥ *

(मीरांनो तुलसीदास प्रत्ये प्रश्न)

॥ पद ॥

स्वस्ति श्री तुलसी गुण दुष्ण हरण गोसाँई ।
 बारहि बार प्रणाम कर हुँ अब । हरहु शोक समुदार्द्दि ॥स्व०॥१॥
 घरके स्वजन हमारे जेते । मबन उपाधि बढार्द्दि ।
 साधु संग और भजन करत मोहिं । देत कलेश महार्द्दि ॥स्व०॥२॥

बाल्पनेते मीरां कीन्ही । गिरिधरलाल मिताई ।
 सो तो अब छूट नहिं क्यो हूँ । लगी लगन वसियाई ॥स्व०॥३॥
 मेरे माना पिताके सम हौ । हरि भक्तन सुखदाई ।
 हमको कहा उचित करियो है । सो लिखियो समझाई ॥स्व०॥४॥

* ॥ गोडी ॥ ३५ ॥ *

(मीरां प्रत्ये तुलसीदासनो उत्तर)

प्रिय न राम बैदेही । जिनके-प्रिय न राम बैदेही ।
 तजिये नाही कोटि बैरी सम । जदपि परम सनेही ॥टेक॥
 तजे पिता प्रह्लाद विभीषण । बंधु भरत महतारी ।
 बली गुरु तजे कंश वृज वनिना । भई जग मंगल कारी॥जिनके॥१॥
 नातो नेह रामसो कीजे । शिल सनेह जहांलो ।
 अंजन कहीये आंख जो छटे । बहुत कहही कहांलो॥जिनके॥२॥
 सोई सजन सोई हितु हमारो । पुत्र प्राण ते प्यारो ।
 जा संग बढत सनेह राम पद । तुलसी मंतो हमारो॥जिनके॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ३६ ॥ *

सीया खुवीर भरोंसो । ऐसो-सीया खुवीर भरोंसो ॥टेक॥
 बारि न बोरि सके प्रद्वलादे । पावक नांहि जरो सो ।
 गिरि उपरसे ढारी दियो है । भुमि परे उबरो सो ॥१॥
 हिरण्याकंस प्रह्लाद भक्त सो । हठि हठि बैर करे सो ।
 मारन चहत दास नरहरिको । आपुहि दुष्ट मरो सो ॥ऐसो॥२॥
 लंका जारी अंजनीके नंदन । देखत पुरुष गरो सो ।
 ताके मध्य विभीषणको गृह । राम कृपा उबरो सो ॥ऐसो॥३॥

गवण सभा कठिण पण अंगद । हियधरि हरि सुमिरो मो ।
 मेघनादसे ं कोटीन जोधा । टारेपग न टरो सो ॥ऐसो॥४॥
 छुपद सुनाके चीर दुमासन । राज सभा पक्ष्यो सो ।
 खेवन खेवत दोउ भुज हारे । नेक न अंगउगारो सो ॥ऐसो॥५॥
 महा भारत भरदुलके अंडा । क्षोनी दल बढुरो सो ।
 राम नाम जप पंछी टेरे । धंटा दुष्टिपरो मो ॥ऐसो॥६॥
 मीरांके मारनके कारण । दिनो जहर खगे सो ।
 रामकृपासे अमृत होगयो । हरषित पान कयों सो ॥ऐसो॥७॥
 गज अरु ग्राह लडे जल भितर । गजको ग्राहे गद्यो सो ।
 गरुड छोडी हरि यादे धाये । छुबन गज उचयों सो ॥ऐसो॥८॥
 विप्र सुदामा फिरत दुखीत होय । कबहु न उदर भरे मो ।
 रामकृपा कंचन गृह पायो । हय गज बाजी खद्दो सो ॥ऐसो॥९॥
 तुलसीदास विश्वाम राम पद । जो नर नारि करे सो ।
 और विभुनि कहां लगी बगु । जेही जमराज डरे सौ ॥ऐसो॥१०॥

* ॥ गोडी ॥ ३७ ॥ *

जीवनकी बलि जै हो । जानकी-जीवनकी बलि जै हो ।
 चित कहै राम सीयापद परहरी । अब न कहुं चलि जै हो ॥टेक॥
 उपजी उर प्रतिति सपनेहु । प्रभुपद विमुख न पै हो ।
 मन समेत एह तनके वासी । ईह शिखावन दैहो ॥जानकी॥१॥
 श्रवणनि और कथा नहीं सुनि है । रसना और न गै हो ।
 रोकी हो नयन विलोकन और ही । शिश ईश पद नैहो ॥जानकी॥२॥
 नातो नेह नाथ सो करि के । सबनते नेह निमै हो ।
 यह स्वर भार ताहि तुलसी जग । जाको दास कहै हो ॥जानकी॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ३८ ॥ *

महनी रामसे नाहि । जिनकी-रहनी रामसे नाहि ।
 ते नर खर कुकर सुकर सम । वृथा जीवत जग माहि ॥टेक॥
 काम क्रोध मद लोभ मोह मय । भ्रुव प्यास मबहीको । -
 मनुष देह सुर माधु सराहन । नेह मीया के पियाको ॥जि०॥१॥
 सुर सुजान सुपुन्य सुलक्षण । गुनियन गुन गरुआई ।
 बिनु हरिभजन ज्युं नासुनको फुल । तजन नाहि करुआई ॥जि०॥२॥
 कीर्ति कुल करुती हुं भुली । शील स्वरूप सलोने ।
 तुलसीदास प्रभु राग रहिन जेसे । व्यंजन साग अलोने ॥जि०॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ३९ ॥ *

लागत है मोहि प्यारो । जदुवर-लागत है मोहिप्यारो ॥टेक॥
 मथुरामें हरि जन्म लीयो है । गोकुलमें पगु धारो ।
 जन्मत ही पुतना गनि दीनो । अधम उधारन हारो ॥जदु०॥१॥
 जमुनाके नीर तीर धेनु चरावे । ओहन कामरी कारो ।
 सुंदर बदन कमल दल लोचन । पीनांवर पट वारो ॥जदु०॥२॥
 मोर मुकट मकराकृत कुँडल । करमें मुरली धारो ।
 शंख चक्र गदा पद्म बिराजे । संतनके सखवारे ॥जदु०॥३॥
 जल छुबत गज गखी लीयो है । करपर गिरिवर धार्यो ।
 मीरां कहे प्रभु गिरधरना गुण । जीवन प्राण हमारे ॥जदु०॥४॥

* ॥ गोडी ॥ ४० ॥ *

ते मेरो दुध लजायो । पवन सुत-ते मेरो दुध लजायो ।
 करि करि रीस अंजनी यूं बोले । धारे परवत डायें ॥टेक॥

लंका गयो तो कहा करी आयो । कहा मुख देखलायो ।
 सीता क्यूँ न ले आयो शिरपर । लंका उठाई क्युँ न लायो ॥१॥
 गम मधारे सेना सब माथे । शत्याये समुद्र छवायो ।
 उढी उढी कीश पडन लंकापर । गमचंद्र चढी आयो ॥२॥
 रावन मार्यो दुहाई फिराई । कीयो भक्तन मन भायो ।
 तुलसीदास दासको धाकोर । लंका जीतने घर आयो ॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ४१ ॥ *

बलि छलकेका कीन्हो । हरितुम—बली छलकेका कीन्हो ।
 बांधन गये बंधाये आपही । बडो सयान ए कीनो ॥टेक॥
 लीये लकुटीया ढारे ठडे । निशवासर आधिनो॥हरि॥१॥
 तीन पैर वसुधाके कारण । बलिको सर्वस दीनो॥हरि॥२॥
 सूरदास प्रभुकी एही बिनती । हरि चरणन चित दीनो॥हरि॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ४२ ॥ *

तें मेरी गेंद चोराई । ग्वालिनी—तें मेरी गेंद चोराई ।
 खेलत गेंद परी तोरे अंगना । अंगीया बिच छिपाई ॥टेक॥
 काहेकी गेंद काहेका धागा । कौन हाथ बनाई ।
 कुल्लनकी गेंद रेसमका धागा । जशोमति हाथ बनाई॥ग्वा०॥१॥
 साचे लाल जुठ मत बोलो । अंगीया तकत पराई ।
 जो अंगीया बिच गेंदन निकसे । भुल जावो चतुराई॥ग्वा०॥२॥
 हसि हसि बात करत गधे संग । इनमें जशोदा मैया आई ।
 सूरदास प्रभु चतुर कनैया । एक गये दोइ पाई॥ग्वा०॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ४३ ॥ *

नेक चलो नंदरानी । उहांलगी—नेक चलो नंदरानी ।
 देखो अपने सुतकी करनी । दुध मिलावत पानी ॥टेक॥
 हमारे सीरकी नयी चुनरीयां । ले गोखसमें सानी ।
 हमारे उनसे कउन बाद है । हम देखावे जवानी॥उहां॥१॥
 तुमरे कुलकी ऐसी बनीया । सो हमने सबजानी ।
 पिता तुम्हारे कंस घर बांधे । आप कहावन दानी॥उहां॥२॥
 यह बृजको वसवो हम त्यागे । आप रहो राजधानी ।
 सूरदास ऊखरकी वरणा । थोरे जल उनरानी॥उहां॥३॥

* ॥ गोडी ॥ ४४ ॥ *

क्यों ठाड़ी नंद पोरी । ग्रालिनी—क्यों ठाड़ी नंद पोरी ॥टेक॥
 बार बार इन उन फिर आवे । विजिया खाय भई बौरी ।
 नंद नंदनजीसें कवन काम है । हमसे क्यों न कहोरी॥ग्रां॥१॥
 सुंदर श्याम सलोने ढोया । उन दधि लेन कहोरी ।
 हमसें कहे तुम नेक खड़ी रहो । आपुन बैउ रहोरी॥ग्रां॥२॥
 नव लव धेनु नंदशावाके । तेरोही लेन कहोरी ।
 जो बन मानी फिरती ग्रालीनी । ते मेरो लाल ठगोरी॥ग्रां॥३॥
 इननी सुनी निकसी आये मोहन । दधिको मोल कहोरी ।
 परमानंद स्वामी रूप लोभाने । यह दधि भलो बिकोरी॥ग्रां॥४॥

* ॥ गोडी ॥ ४५ ॥ *

सुनी बंसीकी टेरी । मगन भई—सुनी बंसीका टेरी ।
 पनीयांके मिस निकसी अबेरी । गौ आवनकी बेरी ॥टेक॥

गज गति चाल चले मृग नयनी । चपल नयन चित हरी ।
 मोरली धुन सुनी भई बावरी । श्याम मिलनकी बेरी ॥मगन॥१॥
 आजकी सोभामो मेवरनी न जाई । श्याम घटा घन बेरी ।
 आज सखी वृजगज पधारे । ओढे पीत पीछेरो ॥मगन॥२॥
 मासु पुछे सुनोगी बहुगीया । कहां लगाई एती देरी ।
 परमानंदके स्वामी मिले है । हरख कहे भई बेरी ॥मगन॥३॥

॥ इति श्री राग संज्ञागोडीना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ +अथ श्री राग संज्ञा आरती ॥ *

* ॥ आरति ॥ १ ॥ *

आरति नरसंघ कुंवरको । हरि हरि वेद विमल जश गावे मेरे प्रभुजीके ।
 पहेली आरति प्रह्लाद उगारे । हरणाकंस नख उदर विदारे ।
 दूसरी आरति वापन मेवा । बलके द्वारे पधारे हे देवा ॥१॥
 तीसरी आरति ब्रह्म सधारे । सहस्रा बाहुके कारज सारे ।
 चौथी आरती अमुर संहारे । भक्त विभीषण लंका सधारे ॥२॥
 पाँचवी आरति कंस 'पडाडे । गोपी ग्वाल सखा प्रति पाले ।
 तुलसीको पत्र कंठ मन हीग । आरति गावे हो दास कबीरा ॥३॥

* ॥ आरति ॥ २ ॥ *

आरति कीजे राजा रामराय गीजे ।

हरि हरि भक्ति करोतो जमकुं जवाबना दीजे ॥टेका॥

+पृष्ठ १० मा लेखेजी-धी पञ्चनाम पुरुषात्म येद नदी ये ॥ ए आरती प्रथम
 गाईने पछो गावानी, आरती ॥

पहेली आरनि पुष्टकी माला । कालीनाग नाथ्यो कहाँन गोवाला ॥
 दूसरी आरनि देवकी नंदन । भगत ओधारन कंस निकंदन ॥
 तीसरी आरनि त्रिभुवन मोहे । गरुड मिंहामन रजा रामजीकुं सोहे ॥
 चौथी आरति चहोदश पूजा । देव निरंजन और न दूजा ॥
 पांचमी आरनि रामजीकुं भावे । रामजीके हरि जश नामदेवजी गावे ॥

* ॥ आरनि ॥ ३ ॥ *

आरनि बंधि छोड समरथकी । पावन नाम मुगल होय जीवकी ॥
 पावन आरनिकर प्रथमी पाव धाग । मन जुगमां मन शब्द प्रकाशा ॥१॥
 आरनि करजुग प्रगटे आई । त्रेना म्बुपनि नाम धरावे ॥
 आरनि कर मुखे मंगल गावे । द्वापर में कृष्णनाम धरावे ॥२॥
 आरनि करकर बंधीरे आमा । कलजुग मांहे कबीर प्रकाशा ॥
 चाररे युग धरो एक शरीर । आरनि गावे हो दाम कबीग ॥३॥

* ॥ आरनि ॥ ४ ॥ *

आरती कीजे श्री राम रायकीरे ।

जाहेकीएरे जम निकटन आवे । भवके बंधन शरतीरे ॥टेक॥
 आनंद चेन नेन अनि निरमल । बोलन बेन रसालतीरे ।
 हरखधरी निरखत कौशल्या । सुंदर बदन निहारतीरे ॥१॥
 अजामेल अघ सागरहुतोरे । जीवनंको हतारतीरे ।
 एसे पतिन ओधारे अमंक । हरि हरि पनितपावन विरदारतीरे ॥२॥
 धुव प्रहेलाद अमरीष हनुमान । बड़ेरे कीए मुगनारतीरे ।
 नेक शिश नमायो विभीषण । दीनी लंका हेमारथीरे ॥३॥
 जीवणसुनको समरथ स्वामी । परब्रह्म परमारथीरे ॥४॥

* ॥ आरनि ॥ ५ ॥ *

आनंद आरति हरख अपारा । हरिजन आये मेरे प्राण आधारा ।
संतो दरशन मेरे ब्रण ताप निवारे । जनम मरण भवसागर तारे ॥
साकपाक मली भोजन पावो । संत संगत मली हरि गुण गावो ।
घेर घेर मंगल होत बधाई । जनजीवण तहां बल बल जाई ॥
आनंद आरति हरख अपारा । हरिजन आये मेरे प्राण आधारा ।

॥ परणाम करवा रामकबीर रामकबीर १०८ बार ॥

॥ इति श्री संज्ञा आरनि संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री परचरी सोल्पदी ॥ *

—(भक्तमालनी)—

* ॥ परचरी सोल्पदी ॥ *

भक्त आधिन हरजी सदा, प्रभुदासनके दास ।

भक्त आधिन हरजी सदा ॥ टेक ॥

ना देखे कुल जात रंक, गजा ना विचारे ।

भक्त वत्मल भगवान, शरण आए प्रतिपाले ॥

दीन सुदामा जानके रे, कृष्ण करी मनुहार ।

अपने भक्तनको दाखिद टायों, दीयो पदास्थ चार ॥ भक्त ॥ १ ॥

सेवा बिध आचार करे, द्विज पाक बनावे ।

प्रित विना पाखंड, प्रभुकुं एकु न भावे ॥

अभक्तकी सेवा तजीरे, गये भक्तके धाम ।
 तिन बेर सदना घर आये, फिर फिर शालिंगराम ॥ भक्त ॥ २ ॥
 प्रभु लेन श्रीत की सीत, श्रीत विन तजत मीडाई ।
 दुयोधन घर छांड, विदुर घर भाजी पाई ॥
 जान पात राचे नही रे, कहा मूरख कहा जान ।
 जुठे फल भीलडीके पाये, हेत प्रित पहेनान ॥ भक्त ॥ ३ ॥
 पांडवकेरे यज्ञ मांहे, भक्त अधिकार जनायो ।
 ब्रह्मण रहे लज्जाय, सुपचजीये शंख बजायो ॥
 दुर्वासा कषि मुनि रे चरण लगाये आन ।
 अंजपिको गर्भवास निवायो, गावन वेद पुराण ॥ भक्त ॥ ४ ॥
 त्रिलोचन हरि भक्त, ध्यान सेवा चिन लायो ।
 करन भक्तकी टहेल, आप केमब चली आयो ॥
 रहो बनोटा चरण लोरे, टहेल करी मन जान ।
 पिसन पोषनको दुःख सुनके, हरि भये अंतरध्यान ॥ भक्त ॥ ५ ॥
 काशी बसे कबीर, दीन पट बेचन जाई ।
 सर्वस माझ्यो भक्त, देत कछु बार न लाई ॥
 घर लडके भूखे रहे रे, आप गंये कहुं भाग ।
 अपने भक्तनकुंबालद लाये, भान भान्तको अनाज ॥ भक्त ॥ ६ ॥
 जयो भक्तको धाम, घोर पावस रीतु आयो ।
 चरण लाझ्यो मेघ, पवन छुटे झडलायो ॥
 घरमां भीजे नामदेव रे, गुण गावे भगवान ।
 अपने भक्तनको हउ राख्यो, छाई छबीले छान ॥ भक्त ॥ ७ ॥

दुःखित देखि रोहिदास, आप केशब चली आये ।
 धर्यों भक्तनको रूप, देन पारसमणि लाये ॥
 पारसजन राखे नहीं रे, बर्जन है महाराज ।
 पांच महोर बटवामां दीनी, दिन दिन मेवा काज ॥ भक्त ॥ ८ ॥
 घरमें विपत विचार, दासकुं द्रव्य दिखायो ।
 पीपे धर्यों विश्वास, देख चहुं हाथ न लायो ॥
 रात बात घरमां कहीरे, चोर गये धन पास ।
 तस्करके शिर देकर लाये, डायों छान उकास ॥ भक्त ॥ ९ ॥
 सेनी चल्यो दरबार, राज सेवाकी वारी ।
 घर चली आये संत, तहाँ कीनी मनुहारी ॥
 सेनी संत सेवा लगेरे, तहाँ गये प्रभु आप ।
 मरदन करके नृपत रीझायो, टाल्यो जनको ताप ॥ भक्त ॥ १० ॥
 प्रभु पदे प्रेमके पास, भक्तनके हाथ बेकाये ।
 हठ कीनो जयदेव, तहाँ प्रभु आप ही आये ॥
 गुण गावत रीझे हरिरे, करो सजीवन नार ।
 भक्तवत्सल भक्तनके द्वारे, सेवा करत मुरार ॥ भक्त ॥ ११ ॥
 नगसिंह निर्धन भक्त, जगनमें हाँसि कीनी ।
 घर चली आये मंन, तहाँ हुंडी लिख दीनी ॥
 गये जात्री द्वारकारे, हुंडी न स्वीकारे कोय ।
 अपने भक्तनको देन हैया, हरि आये पारख होय ॥ भक्त ॥ १२ ॥
 मीरां गुरु परताप, रायकुं परचो दीनो ।
 मनसा वाचा जान, झेर अमरीत कर लीनो ॥

कहां देव द्वागमति, कहां शुपता नार ।
 आय पहोंचे पलकमारे, अंबर हरत मोरार ॥ भक्त ॥ १३॥
 कमर काष्ट तलवार, भुवन खांडे पत राखी ।
 गुण गावे जेचंद, सूखकी दीनी आंखी ॥
 घाट्य घोडा पलट्ये रे, भयो श्यामको श्वेत ।
 श्री जगन्नाथ माथोपर रीझे, कृष्ण कामरी देत ॥ भक्त ॥ १४॥
 काजी मुलां पकड, दरबार बोलाये ।
 कर दाढुको वेष, तहां प्रभु आप ही आये ॥
 चार जाम रहे भासकी रे, अपने जनके काज ।
 दोनु ठोर प्रगट देखाये, चरण लगायो रज ॥ भक्त ॥ १५॥
 भक्तवत्सल भगवान, वेद संनन मली गावे ।
 जहां जहां पडे भक्तकुं भीड, तहां प्रभु आप ही आवे ॥
 श्रुति स्मृति गीता कहे रे, अघ मोर्चन भगवान ।
 दासचरणकी ओट लहिरे, विरद तिहारे जान ॥ भक्त ॥ १६॥

॥ इति श्री परचरी सोलपदी संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राम मंजरी ॥ *

जय जय श्रीराम सुमगे राम धन साचो । राम ही जनकुं आगेवांचो ॥ टेक ॥
 राम ही गावो राम ही धावो । राम मनेही निज मन लावो ॥ १ ॥
 राम ही सेवा राम ही पूजा । राम समान देव नहीं दूजा ॥ २ ॥
 राम भक्ति मुक्तिके दाता । राम लक्ष्मण भक्तनके त्राता ॥ ३ ॥

भरत शत्रुघ्नि लक्ष्मण भाई । रघुपति महिमा कद्योन जाई ॥ ४ ॥
 रामनाम धन अनन्त अपाग । राम नाम शिव रुदिये धार्या ॥ ५ ॥
 रामनाम पूरण अविनाशी । राम कहेता जम काटे फाँसी ॥ ६ ॥
 राम कहेनकी बहोत बडाई । रामनाम संतन सुखदाई ॥ ७ ॥
 राम चण रुदये राखो । रामना नाम स्मायण चाखो ॥ ८ ॥
 रामही मानपिना कुलदेवा । रामही सुमरण रामही सेवा ॥ ९ ॥
 रामनाम तो मध्ये न्यारा । राम निरंजन ज्योत अपारा ॥ १० ॥
 राम ही संतन माँहि विराजे । राम अवध पुरीमाँ गाजे ॥ ११ ॥
 राम ही साहेर मेतु बंधायो । रामे जाकर बंध छोडायो ॥ १२ ॥
 भक्त हेनके कारज कीनो । धनुष बानकर शारंग लीनो ॥ १३ ॥
 रामे पृथ्वीको भार उतायो । अपनो कारज आप समायो ॥ १४ ॥
 दश शिर छेद सीता ले आये । रामचंद्र माधु मन भाये ॥ १५ ॥
 सीता रामकी किरती गावो । सीता रामकुं शिश नमावो ॥ १६ ॥
 सीता रामके दर्शन आये । लंका राज विभीषण पाये ॥ १७ ॥
 रामनाम प्रेमेसु गावे । बहोर योनी संकुष्ट न आवे ॥ १८ ॥
 राम ही सम्बा राम ही साथी । रामनाम लेई ओधायो हाथी ॥ १९ ॥
 रामे जन प्रह्लाद उगायो । रामे तो हरणाकंस मायो ॥ २० ॥
 राम ही दास कबीर ओधायो । रामे द्रौपदिको कारज मायो ॥ २१ ॥
 पीपा नामे साहेर पीनो । परशुरामतो नामे जीव्यो ॥ २२ ॥
 नामदेवे नाम ही गायो । त्रिलोचन घेर नामे आयो ॥ २३ ॥
 रांका वांका रामानंद । पायो पूरण परमानंद ॥ २४ ॥
 धना मेनी रोहिदाम बिचारा । रामही जीवन राम आधार ॥ २५ ॥

जयदेव प्रेमानन्द सुरदासा । अनंत कोटि रामजीके दासा ॥२६॥
 आद अंत मध्य गम ज होई । गमनाम चिन गधो प्रोई ॥२७॥
 राम मंजरी रामजीकी माला । गमकृपालो दीन दयाला ॥२८॥
 गधो चेतन जीवन राम । मंत जनोके पूरण काम ॥२९॥

॥ साखी ॥

रामनामधनसाचलीयो । प्रह्लाद कीनो सहाय ।
 गधो चेतन यूं कहे । मंत भवमागर तरी जाय ॥ १ ॥
 कथा कीगनन राम धन । मंतन मांही करे प्रवेश ।
 गधो चेतन यूं कहे । मोही उत्तम देश ॥ २ ॥
 राम मंजरी निन पढे । मंजन होत शरीर ।
 गधो चेतन यूं कहे । मंत हिंदे बमो घुवीर ॥ ३ ॥

॥ इति श्री राम मंजरी मंपूर्ण ॥

॥ अथ श्री कुबाभगतनी चेनावनी ॥

मनगुरु कहे सुनो एकगाथा । काहे न सुमर्यो हरि मैंदाना ।
 जनन जनन करी एरम पाया । मो मूरख तें क्यूं बिसगाया ॥ १ ॥
 गर्भ कोखमें तोही राख्यो । मो रमना तें कबहु न भाख्यो ।
 नयन नाशिका शिश बनाया । हेत करे हस्तिगुण कबहु न गाया ॥ २ ॥
 नर्क बिदंता बिनती करता । दशो आंगली मुखमें धरता ।
 अब तो लागी कुलकी माया । मंत मंगतमें कबहु न आया ॥ ३ ॥
 ए माया दिन दशमें जामी । अंतकी बेर महादुःख पासी ।
 चिना छांड पितांवर भज ले । माया रंग कसुंधो तजले ॥ ४ ॥

तीन लोकका पूरण हाग । मोमुरख तें क्यों बीमराया ।
 मुख और मंपत्ति जाकी स्थापी । नाका चरण मेव नरपापी ॥५॥
 जबतुं भयो वर्ष आउ नवदशको । मन मंगनमें हरि नहि धसतो ।
 में मरीमें अंधा भईया । निश दिन जनम अवरथा गईया ॥६॥
 टेढ़ी पाघ छांया नरखे । आपा आगे कछु न देखे ।
 तन मन मायाके वस कीनो । श्रीराम नाम तो कबहु न लीनो ॥७॥
 काम क्रांध भूल्यो अहंकारा । मनमें गम्भन फिरे गुमारा ।
 भई बंधव कुटुंब चित दीनो । सुतपर हेन धनेरो कीनो ॥८॥
 सीमल फुल देखी मन मान्या । देह चाँच नव रई उडाना ।
 मारग छोड कुमाग धाया । अंत ममे सोही फल पाया ॥९॥
 दुतन मंग फिरत अलबेलो । भई मंपत्ति नव भयो है बेलो ।
 भांग खाय और दारु पीवे । मांम विनापल एक न जीवे ॥१०॥
 दुष्ट पापी कायर काचो पशु और पंखी एकु न बंच्यो ।
 चाकर चुकर मंग चलावे । हेमर हस्ती लख रहावे ॥११॥
 मोने रुपेका महेल ज चूणीया । ता उपर लेनाला जडीया ।
 खाई खोदावे महेल चूनावे । ता उपर कोई जान न पावे ॥१२॥
 जहां तहां चोकी बेसे नीचे । हुकुम विना कोई चढे न उंचे ।
 एकनकुं लई पकड मगावे । दुजकुं ले मूली देवगवे ॥१३॥
 न्याय अन्याय को जोवे नाहि । ऐसे ही दिन बिने जाई ।
 भया प्रगटने हुवा अवाजा । कोप चढे है नव धर्मपनि गजा ॥१४॥
 दीया हुकुम जम चार पठाये । मारन ही मागमें लाये ।
 जोवो गेवो और पोकारे । राजा राम बिन कौन छोडावे ॥१५॥

मारग देखे आगे पीछे । कोन छोड़ावे बिन जगदीशे ।
 नगर लोक सब देखन आया । अब ही मरे सबके मन भाया ॥१६॥
 ए जीवका हवाल ज कीना । ले जपगये आगे दीना ।
 धर्मराये जब मार्ग्यां लेखां । चित्र विचित्रे कागज देखा ॥१७॥
 कागजमें बहु पाप कमाया । सुक्रित तो एकु नही आया ।
 ए जीवका लेखां लीजे । बहारं लेई चोरासी दीजे ॥१८॥
 सुकर कुकर कीया अवताग । हरि विना भटकत फिरे गुमारा ।
 घर घर डोले हाँडा फोडे । कसुर पडे तो माथा तोडे ॥१९॥
 माथामें तो पड़ीया कोडा । कान फडाफड योही मरीया ।
 बहोर भयो ओडनको गद्दो । आन ही तोल्यो भार ही लाद्यो ॥२०॥
 बहोर जोनी मरपकी आई । सहस्र वर्षकी आईष लखाई ।
 ताथे राम जपोरे प्राणी । जब लगी घटमां श्वाम रहाणी ॥२१॥
 श्वाम गये ते कछु न होई । नाथे राम जपो सब कोई ।
 भक्ति प्रताप कछु नही छाना । शिव मनकादिक ब्रता ए जाना ॥२२॥
 निलक तुलसी देवे छापा । निश्चल करीने ध्रुवजी स्थाप्या ।
 सुनके हेते नाम ज लीनो । अजामेलकुं वैकुंठ दीनो ॥२३॥
 जनम जनम हारिको वृत मेरे । गढो रहु में पोले तेरे ।
 ए जश केवल कुबो गावे । सब संननको शिश नपावे ॥२४॥

* ॥ माखी ॥ *

श्री गोकुल मथुरं द्वारका । जहां कुबे मांड्यो हाट ।
 जहां जहां करे बिछावणा । जुवे हरि भक्तनकी वाट ॥१॥
 ॥ इनि श्री कुबा भगतनी चेनावनी संपूर्ण ॥

४. ॥ अथ श्री मलुकदासनी परचरी ॥ ५

भक्त वत्सल मंतन सुखदाई । जनके दुख निवारे भाई ।
 जनके दुःख हरि आपदुःख पावे । बंधा होय सो जाई छोडावे ॥
 बंदीछोड श्रीकृष्णको बानो । सो तो नीन लोकमें जानो ॥१॥
 उयूं बालक पोषे महतारी । ऐसी गक्षा करे मुगरी ।
 जीनके प्राण बसे हरि मांही । गरुड बिमार छोडावन जाही ॥२॥
 जहाँ जहाँ पडे भक्तकुं भीडा । मानु राम कालका ठडा ।
 गम गम प्रह्लाद पोकारे । पिता बांध गिरिघरमें ढारे ॥३॥
 ताथे बेर न लागन पाई । अधर गख लीये रघुगई ।
 झिर ले असुर खंभमें बांधे । काढी खडग फुलावे खांधे ॥४॥
 नगसिंह रूप धर्यो मोगरी । मार्यो असुर मिट्ठो दुःख भारी ।
 पितामें रुठ तप्तमा कीनी । अबल पदवी ध्रुकुं दीनी॥५॥
 पांच पांडव जलने उगारे । बाल न बांको हरि खवाले ।
 कर्म दरन बोले दो भाई । काढेकुं गज करे बलगई ॥६॥
 अलख बेसे गज कुमारी । अगम सेवा करे तुमारी ।
 दुर्योधन जब कह्यो न मान्यो । दुःशासनको आगया दीनो ॥७॥
 दुःशासन चीर मेंचन लाग्यो । नव हुपदिये प्रभुमे चित लगायो ।
 अंबके अंबार लगाये । भक्त हेत प्रभु दोडे आये ॥८॥
 भीष्म द्रोण बहोत पिछनाना । हरि लजातें भया खिसाना ।
 नारद व्यास और शुक देवा । नीन हुं कीनी हरिकी सेवा ॥९॥
 सुमरन भजन हरिदीन रहगई । ताथे बहोत बडाई पर्द ।
 दत्तात्रय और शंकर जोगी । ओ तो हरिके बडे है भोगी ॥१०॥

विघ्न अनेक उन्होंके टारे । कर छल बहोत अमुग मंहारे ।
 मोरुधज ताम्रधज गजा । सुफल कीये हरि उनके काजा ॥११॥
 धर बेठां हरि दरशन दीनो । अस्थो अंग प्रभु माग जब लोनो ।
 तब करवत गोपाल मंगायो । लई गजके मुस्तक चढायो ॥१२॥
 मुस्तक लई गजा मत गर्व्यो । मत्य मत्य नागयण भास्यो ।
 वामन होके बलके द्वारे । दीन बचन हरि जाई पोकारे ॥१३॥
 प्रभु हाथ जोड दो कंठलगाये । करी आदर गजा बैठाये ।
 प्रभु माग माग गजा फिर बोले । मने कह्यो गुरु बचन न डोले ॥१४॥
 माडे तीन पाँड मोम ज मागी । गजा कह्यो अल्प बुध भासी ।
 प्रभु तें दक्षिणा मागी न जानी । आज देउं तोहे गजध्यानी ॥१५॥
 मैं क्या करुं कर्मका हीना । तीन लोक तीन पग ही कीना ।
 आधा पगका ठौर ज नांहि । तब हरि बोले आप बलगई ॥१६॥
 बलकुं छल इन्द्रकुं दीना । आधा पग पीठ पर लोना ।
 तब आये प्रह्लाद बडाऊ । क्षमा करो हो त्रिभोवन गऊ ॥१७॥
 तब बल कहे कृपा मोहे कीजे । मदा गम मोही दरशन दीजे ।
 ऐसे गम बचनके घाडे । हजु लगी बलके द्वारे ठाडे ॥१८॥
 गौरि ठाकोर जनक बिदेही । उनके फल हरि करे मनेही ।
 शवरीके फल हरि हेत करी पायो । भक्त सुदामा कंठ लगायो ॥१९॥
 मखा गोप सब घटमें जाना । चोथा पदका कीया पयाना ।
 सदा गोपाल मांकडे साथी । ग्राहसें जाई छोडाव्यो हाथी ॥२०॥
 अंबारिष गजा एकादशी पाले । नित उठी कथा गमकी चाले ।
 जनके विधि कथा नहीं आवे । करी आदर गजा बैठावे ॥२१॥

तव ऋषि कहे स्नान करी आवुं । तव तेरे वेर मोजन पावुं ।
 तरपुन करतां वेर लगाई । समेही वेरन पहोचे आई ॥२२॥

गजाए एक मंत्रज कीनो । श्रीठाकोस्को चरणमृत लीनो ।
 तव ऋषि भाई उब्बो गीमाई । करी कृत्या गजाकुं लगाई ॥२३॥

चक सुदर्शन जारन लाग्यो । तव ऋषि अपनो जीव लई भाग्यो ।
 तीन लोक ऋषि फिर फिर आयो । कोई न गम्यो पल शरणायो ॥२४॥

तव ऋषि गया श्रीकृष्णके पासा । गम्यो चमन बोले दुर्वासा ।
 तव हरि जगव एही दीनो । भक्त द्रोह तुम काहे कीनो ॥२५॥

उलट जाव नरपति के द्वारे । मोही गुन्हा बक्सेरे नुमारे ।
 बचन माग नरपति पें आयो । निपट जीव दानी पुनी पायो ॥२६॥

चक सुदर्शन शीतल कीनो । हमखो ऋषि आशिष तव दीनो ।
 दाम कबीर डुब न पावे । तोड जंजीर तेढे आवे ॥२७॥

नामदेवकी छान छवाई । मंदीर केयो गौ जीवाई ।
 पीपाजीकी रहेनी अपाग । भक्ति करे खांडेकी धाग ॥२८॥

शालिंगगम गेहिदाम बोलावे । विलंब न करे हरि दोडे आवे ।
 मेनी रूप होई दरशन दीनो । गजा गीझ्यो बहुन मुख दीनो ॥२९॥

जहर अचब्यो रे मीरंबाई । प्रेम रम हरि पीजो भाई ।
 बीज हतो ते माधुने पायो । धना भगतको खेन निपायो ॥३०॥

माधोदाम जडाणे भाई । श्री जगन्नाथ सुभ शाल ओढाई ।
 तुलसीदाम नाम ले आये । चित्रकोटमें दरशन पाये ॥३१॥

सूरदामने लिला कीनी । धर वैदं हरि दरशन दीनी ।
 केवल कुबा नानकदामा । उनकी हरिये पुरे आशा ॥३२॥

रंका वंका सदन कमाई । वाकी हरिये भली नभाई ।
 जान भान बूझे ना कोई । हरिकुं भजे मो हरिका होइ ॥३३॥
 परमेश्वरकुं भक्ति प्यारी । जेही कुल भजे सोही अधिकारी ।
 इतनी कथा रामकी चाले । दास मल्क वहोन मुख पावे ॥४३॥

॥ इनि श्री मल्कदासनी परवरी मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग कल्याणना कीरतन ॥ *

* ॥ सासी ॥ *

“ गोडी वेग वही गई । अस्त भयो स्वी भाण ।
 ता पीछे घडी दो गई । जब प्रगत्यो गग कल्याण ॥ १ ॥
 कल्याण कल्याण मवको कहे । अकल्याण कहे न कोई ।
 जा घर भक्ति गोपालकी । ता घर मदा कल्याण ॥ २ ॥

* ॥ कल्याण ॥ १ ॥ *

संत समागम कीजेरे भाई । संत समागम कीजेरे भाई ।
 जान अजान छुवे पारसको । पलट लोहा कंचन हो जाई ॥टेक॥
 भान भात बनरायल कहीये । भिन भिन वाको नाम धराई ।
 चंदनकी वाकुं वाम लगत है । चंदन होत बेर ना लाई॥संत॥ १ ॥
 नौका रूप कहीये सत संगत । तामें जे कोई बैठे आई ।
 आन उपाय नहीं तरक्को । सुंदर काढी गम दुहाई ॥संत॥ २ ॥

* ॥ कल्याण ॥ २ ॥ *

हरिके जन सब तें अधिकारी । प्रभुके जन सब तें अधिकारी ।
 शिव विरंचिने कौन बड़ो है । ताके सेवक फिरत भिखारी ॥टेक॥
 जाचक पै जाचक कहा जाचे । जो जाचे नौ स्मना हारे ।
 दामीको सुत सोभा कैसे पावे । पुत्र कौनकुं कहत पितारे॥हरि॥१॥
 ताकी माथ देवुं हरणाकंस । रावण कुटुंब महित संहारे ।
 जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली । अजहु विभीषण राज करत है॥हरि॥२॥
 जिनकुं किरपा भई स्युवर्स्की । ताकी मकल आपदा याली ।
 सूरदास भगवंत भजन विना । जनुनी बोज भार कित मारी ॥३॥

* ॥ कल्याण ॥ ३ ॥ *

हरि नाम जाकुं हेत न आयो । प्रभु नाम जाकुं हेत न आयो ।
 काहेकुं गरभ मास दश शर्ष्यो । काहेकुं पालण घाल झुलायो ॥टेक॥
 जनुनी बांझ भई क्यूं ना तेरे । माकुन सुत काहेकुं जायो ।
 भटकत फिरत मकल देवनमें । हरिके भजन बिनु ठौर न पायो॥१॥
 जैसे सुत गुणकाको दैरे । बिन ही पिता पुत कौन कहायो ।
 सूरदास भगवंत भजन विना । जनमो जनम बहोत छेहेकायो ॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ ४ ॥ *

कहा कमी जाके राम धर्णी है । कहा कमी जाके राम धर्णी है ।
 मनमा नाथ मनोरथ पुरवे । सुख निधानकी बान धनी है ॥टेक॥
 कौन काम कृपणकी माया । करत फिरत अपनी अपनी है ।
 खाई न सकयो खरची नव जान्यो । ज्यौं रे भोरींग शिर रहत मणि है॥१॥

शिव विरंचि जाको पार न पावे । मोहे बप रेकी कहा पढ़ी है ।
जाकी प्रित निरंतर हरिसुं । कहे रोहिदाम वाकी सदारे बनी है ॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ ५ ॥ *

हरिको भजन कर हो मन प्यारे । प्रभुको भजन कर हो मन प्यारे ।
एक रसना तुं क्यूँ अलमानो । सेष सहस्र समरत नहीं हारे ॥टेक॥
जाके शरण पतित गत पावे । गुनका कुबजा व्याध ओधारे ।
अधम तरे अधिकार भजनते । हरि सुमरन सघले अघ जारे ॥३॥
अजामेल सुन नाम ओधारे । जल हुबत गज ग्राह उगारे ।
परशराम एमो समरथ थाकोर । बनचर भील पूतना तारे ॥हरि॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ ६ ॥ *

हरि ना भजे सोही हत्यारे । प्रभु ना भजे सोही हत्यारे ।
विषयनको रस पीवत प्रेमसे । राम सुधा रम लागत खारो ॥टेक॥
परमारथकुं कौडी न खरचे । उप मारगकुं खरो उदारो ।
चारों चख फुटी पशुब्रां ज्यों । निशवासुर निनहीं अंधीयारे ॥१॥
राम नामकी बान ना जाने । संत समागमसे रहे न्यारो ।
कृष्णदाम वाको दरशपरश नहीं । मीनाराम न लागन प्यारे ॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ ७ ॥ *

भक्ति लजावन शरण पढ़यो है । भक्ति लजावन शरण पढ़यो है ।
कह्यो कछु और चल्यो कछु और । यों तेरे दिलमें उत्तयों है ॥टेक॥
ए मारग उंचो संतनको । ना मारगमें पाव न धयों है ।
श्रवण नयन नाशिका जिह्वा । इन्द्रीके बस खीसल पढ़यो है ॥१॥

सतगुरु संत खरा नहो सेव्या । ताथे एकु नाहि सर्यो है ।
 महें कपटी तुम अंतरजामी । चतुराई लेके कौन तर्यो है ॥२॥
 है अपराधि और बनेरे । वाकी ओलनको में जु धरो है ।
 केवल दास कहें जन कुबो । विरदकी लाज करो तो करो रे ॥३॥

* ॥ कल्याण ॥ ८ ॥ *

गही टेक गोपाल ही गावे । गही टेक गोपाल ही गावे ।
 सो ही अनीन दास हरि तेरो । देखी दुनी सुख मन न ढोलावे ॥
 जदपि सरोवर भरे हैं सुभरभर । जहाँ जहाँ जल ही दरशावे ।
 तदपि चानक पीवे बुंद धन । धोखेही अपनो मन न ढोलावे ॥१॥
 देखो एक और पनिवना । मदा सिंधुके मध्य रहावे ।
 रति एक जल अचवे नहीं खारो । स्वांन बुंदकी आश धरावे ॥२॥
 या पण पकड भजे पीयु अपनो । आन देवके निकट न जावे ।
 तो तुलसी कहीये हरि चेरो । बहोरन भवजल नेरो आवे ॥गही॥

* ॥ कल्याण ॥ ९ ॥ *

हरि बिन कौन सहाय करेगो । प्रभु बिन कौन सहाय करेगो ।
 ऐमो अवसर बहोर न आवे । मरकटको अवतार धरेगो ॥टेक॥
 ज्यों कपि डोर बांध्यो चाजीगर । कन कनकुं चहुटेही फिरेगो ।
 त्रास देखाये लकुटीयां कर गहे । यों जन जनके तुं पाय परेगो ॥१॥
 ज्यों हमाल शिर बोज बहोत है । स्वारथके संग लाग मरेगो ।
 ज्यों ही कुलाल चकरी फेरे । ऐसे ही जुग मांहे फिरेगो ॥हरि॥
 भज भगवंत मुक्ति के दाना । यामें तेरो कछु ना बिगरेगो ।
 ऐसे स्वामी अंतरजामी । नामदेव शरणे उबरेगो ॥हरि॥३॥

* ॥ कल्याण ॥ १० ॥ *

रामचंद्र पद भजवे लायक । रामचंद्र पद भजवे लायक ।
 अभय करन भव तरन पोत द्रह । जुग जुग साख वेदके वायक ॥टेक॥
 चितवत चरण मकल फल करतल । व्यापान नहि सूलके वायक ।
 संतनकी रक्षाके कामन । निशदिन रहन लीये कर मायक ॥१॥
 गौतम घरणी ग्राह गज नार्यो । लंक विभीषण कपि जो महायक ।
 सेवा अलय मेरु सम माने । कहणा मिंधु अयोध्या नायक ॥२॥
 शिव विरंचि मनकादिक चिनधर । शारद शेष विमल जश गायक ।
 जानकी रमन अंध्री शिर सहागे । अग्रदाम उर आनंद दायक ॥३॥

* ॥ कल्याण ॥ ११ ॥ *

खुनंदन जदुनंदन गाउं । खुनंदन जदुनंदन गाउं ।
 परम कृपाल कौशल्या नंदन । जशोदा नंदन देखी सुख पाउं ॥टेक॥
 निरखत रहुं रैन दिन दोउं । अपने जीयाके आनंद बढाउं ।
 इनही अवधपुरी उनही मधुपुरी । किंकर हो बिच बास बमाउं ॥खु॥
 एही प्रतिन दृढजीया मेरे । उनहुं छोड अनीन न जाउं ।
 नंदानंदन बसो उर मेरे । तुलसी खुबीर दास कहाउं ॥गधु॥

* ॥ कल्याण ॥ १२ ॥ *

कब मिली है खुनाथ हमारे । कब मिली है खुनाथ हमारे ।
 जैसे मिले प्रभु बलि गजाको । चागी मास हरि द्वारे गढे ॥टेक॥
 जैसे मिले प्रहाद भक्तको । खंभ फोरि हिरण्यकंस मारे ।
 जैसे मिले प्रभु द्रुपदसुनाको । खेंचत चीर दुशासन हारे ॥कब॥

जैसे मिले प्रभु जनक सुताको । तोर्ये धनुष भूप सब हारे ।
तुलसीदाम आश पतितनको । मोसे पनिन अनेक उवारे ॥कवा॥

* ॥ कल्याण ॥ १३ ॥ *

जा कुल भक्त भगवंतज होई । जा कुल भक्त भगवंतज होई ।
गणीयन वरण अवरण रंकधन । विमल जश मानी अनि सोई ॥
गाम सुडाम सुदेश सो पवन । संग पुनीत मनायत सोई ।
मूर पंडित और नृपनि बादशा । हरिके दाम सम और न कोई ॥
ब्राह्मण क्षत्रिवंश शुद्र नारी । चंडाल म्लेच्छ जे जन होई ।
होई पुनीत भजे भगवंतही । आपतरेतारेकुलदोई ॥जा कुल॥
करत भक्ति और लेत परम रम । नजत संमार जानके छोई ।
पुन्य रु पाप समान रहत है । कहेत कबीर जगमें जन सोई ॥

* ॥ कल्याण ॥ १४ ॥ *

जारु आ जुगकी चतुर्गई । जारु आ जुगकी चतुर्गई ।
वाहिको नाम काहे नहीं सुमरो । जीने आ जलथें जुगन बनाई ॥
सींचन दाम काम अपनेकुं । हम खावे और लखा सराई ।
सो धन चोर हाकेम लूटे । र्ह्यो पडो ले गयो जमाई ॥जारु॥
ए माया है ऐसी कुलालन । मद पायो और लीयो उगाई ।
एक ही परो धुम्में लोटे । एक बेठे एक देखन जाई ॥जारु॥
ए माया सुर मुनिजन डेहेके । देवी देवता बैठे खाई ।
एकही भाग चलन शरणांगत । वाहीको मन फौर पीछताई ॥जारु॥
कहेत कबीर सुनो भाई संतो । फांसी ले कर मोपे आई ।
युरु परताप संतकी संगत । नाम निशान र्ह्यो रे बजाई ॥जारु॥

* ॥ कल्याण ॥ १५ ॥ *

राम नाम जब लीयो मनतें । राम नाम जब लीयो मनतें ।
 योग यज्ञ जप तप व्रत तीरथ । मकल मर्मरण कीयो मन तें ॥
 जीवन जन्म सुफल ताहीको । जीन या हरिव्रत लीयो मनतें ।
 निर्भय भयो परमपद पायो । अमीय महा रस पीयो मनतें ॥राम॥
 पिवत अमर भये शुक सनकादि । शंकर पीवत जीयो है मनतें ।
 कहेत कवीर कृष्ण करी मोकुं । दीनानाथ दीयो है मनतें ॥राम॥

* ॥ कल्याण ॥ १६ ॥ *

अपनो जन प्रह्लाद उवायो । अपनो जन प्रह्लाद उवायो ।
 जलहुंमे गखि अगनहुंमे राखि । गखि लीयो गीरिवरसें ढायो ॥टेक॥
 लेई प्रह्लाद खंभसें बाध्यो । अब को है तेरो गखन हारे ।
 खंभ फोरी प्रगटे नगहरिया । हिरण्याकंस नख उदर विदायो ॥१॥
 लक्ष्मीजी प्रभुकेनिकट न आवे । ऐसो रूप प्रभु कवहु न धायो ।
 अपने भक्तको राज तिलक दियो । हस्त कमल मस्तक पर धायो ॥२॥
 कौतुक देखि देव मुनि हरखे । गन गांधर्व गुन वेद उचारो ।
 श्री भटके प्रभु दीयो है अमेपद । भक्त हेतु दानव कुल तायो ॥३॥

* ॥ कल्याण ॥ १७ ॥ *

प्रीनि तो मैं श्याममें कीनी । प्रीनि तो मैं श्याममें कीनी ।
 कुल कुदुंबीको डर नांहि । लोक लाज सब ढारही दीनी ॥टेक॥
 होनी होय सो हो क्यूंन अबही । निशदिन श्याम सुंदर रंगलीनी ।
 मीरांके प्रभु गिरिधर नागर । नंदनंदन बिनु मोलही लीनी ॥१॥

* ॥ कल्याण ॥ १८ ॥ *

में अपनो मन हरिसे जोयो । हरिसे जोयो अवरसे नोयो ॥टेक॥
 नाव नच्यो तब धुंघट कैमो । लोक लाज धर पकर पीछायो ।
 आगे पीछे सोच मिथ्यो है । महिज माँहि ज्यों मटकी फोयो ॥४॥
 कहेना होय सो कहो मेरी मजनी । काजु भयो काहु सुख मोयो ।
 मीरां गिरधरलाल प्रतापे । लोक लाज ननवाजौ नोयो ॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ १९ ॥ *

नंद भोवनको भूखन माई । नंद भोवनको भूखन माई ।
 जशोदाको लाल वीर हलधरको । गधेको समन परम सुखदाई ॥टेक॥
 इन्द्रको इन्द्र देव देवनको । ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ।
 कालको काल ईश ईशनको । अबलनको बल महाबलदाई ॥१॥
 शिवको ध्यान संतनको मरवम । महिमा वेद पुराणे गाई ।
 नंदासको जीवन गिरधर । गोकुल नायक कुंवर कन्हाई ॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ २० ॥ *

श्रीपत दुखित भगत अपराधे । श्रीपत दुखित भगत अपराधे ।
 संतमें द्रोह द्रोहना करके । मकल सिद्धि मोहे आगधे ॥टेक॥
 सब ही सुनो वैकुंठ निवासी । संतके हेत माने नही भेदे ।
 ता पर कृपा करुं में केहो विध । पावकुं पूजे कंठकुं छेदे ॥श्रीपत॥
 संतसुंद्रोह भाव मम निशदिन । मेरो नाम निरंतर लै हे ।
 अग्रदास भगवंत बदत है । मोहे भजे पण जमपुर जैहे ॥श्रीपत॥

* ॥ कल्याण ॥ २१ ॥ *

दास अनीन मेरो निज रूपा । दास अनीन मेरो निज रूपा ।
 दरश निमेष ताप त्रय मोचन । परसेंओढावे गही अंध कृपा ॥टेका॥
 मेरे बांध्यो मेरो दास छोडावे । बांधे दास ना छुटे मोही ।
 एक समे ले मोही बांधे । ताको मोपे जवाब ना होई ॥दास॥
 मैं सुखदाई सकलको जीवन । मेरो जीवन मेरो दासा ।
 परमानंद प्रभु सुखके सागर । जाके हिरदे प्रेम प्रकाशा ॥दास॥

* ॥ कल्याण ॥ २२ ॥ *

तब लगी मैं वैकुंठ ना जैहुं । तब लगी मैं वैकुंठ ना जैहुं ।
 सुन प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी । जब लग छत्र तोहे नहि दैहुं ॥टेका॥
 निरगुण मिरगुण मबमैं देख्यो । तो मौं भक्त बहोर न पैहुं ।
 चार पदारथ धरुं हुं चरणपर । रमा सहित तोहे शिर दैहुं ॥१॥
 कठन कठोर हृदय भयो मेरे । अब कैमे दीनोनाथ कहै हुं ।
 मोही देवत मेरे दास दुखित भयो । ए जो कलंक मैं कहां गमैहुं ॥२॥
 कमला कमल आदि ब्रह्मादिक । या लिला बहोरुं न विस्मर हुं ।
 श्री भटके प्रभु दीयो है अभय पद । भगत हेत आपै चलीऐ हुं ॥३॥

* ॥ कल्याण ॥ २३ ॥ *

मैं जनकी निधि जन निधि मेरी । मैं जनकी निधि जन निधि मेरी ।
 मैं सो ममजन ममजन सो मैं । सुन कमला माची मौ नेगी ॥टेका॥
 सिंधु सुता बिलग जीन मानो । तुं जन तें कछु नांही घनेगी ।
 अष्ट सिद्धि नव निधि चतुर मुगत । सो मेरे भगतनकी चेरी ॥१॥

में साकार भयो जनके हित । ब्रह्मा पार न पावे हेगी ।
में एक पाव ढाड़ो करजोगी । भक्त आधिन दीन ब्रत लेगी ॥२॥
तीन लोक और भुवन चतुरदम । भक्त वस्त्रल मेगे बिरद अहेगी ।
सुख सागर मेनीके माँईयां । भगवनके वश वेद कहेगी ॥३॥

* ॥ कल्याण ॥ २४ ॥ *

ठड़े है स्थ चटके द्वारे । ठड़े है स्थ चटके द्वारे ।
तुम दारुक आगे होई बृक्षो । भगवन भोवनके अनन्त मधारे ॥टेक॥
सो सुनके त्रिया उत्तर दोनो । पांडु सुनके गृहे मधारे ।
उहाँ सुन्यो जादवपनि आये । कमल नयन हरि हनुमारे ॥ठड़े॥१॥
जा कारण नेरो कंथ मधारे । सो प्रभु आये द्वार तुम्हारे ।
सूर मो सुन त्रिया उठाई । प्रेम मगन तन बमन विमारे ॥ठड़े॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ २५ ॥ *

दौड निरंजन गयंद उगारे । दौड निरंजन गयंद उगारे ।
फगन फगन फनगज पीठपर । चरण गवन करी गरुड विमारे ॥टेक॥
ओंचिंतो ग्राह ग्रथो जल भीतर । जल दुबन हाँगनाम उचारे ।
नाशिका नेक रही जल बहेर । कमल चढाय रेरकार पोकारे ॥१॥
काव्यो ग्राह चक धारासुं । गज मोचनको श्राप निवारे ।
सूरदाम भगवंत भजनसे । इन्द्र देवन बैकुंठ मधारे ॥दौड॥२॥

* ॥ कल्याण ॥ २६ ॥ *

गिरधर लाल शरण तेरे आयो । गिरधर लाल शरण तेरे आयो ।
चरण कमल की सेवा दीजे । चेरो कर गखो घर जायो ॥टेक॥

धन धन मात पिना सुत बंधु । धन जनुनी जीणे गोद खेलायो ।
 धन रसना जेणे हारि गुण गायो । धन गुरुदेव जीणे नाम सुनायो ॥१॥
 जे नर विमुख भयोरे गोविंदथें । जनम जनम बहोत दुःख गायो ।
 श्री भटके प्रभु दीयो है अभेपद । जम डग्यो जब दास कहायो ॥२॥

॥ इति श्री गग कल्याणना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग गोटना कीरतन ॥ *

* ॥ गोड ॥ १ ॥ *

धन धन गुरुदेव हमारा । हो धन धन गुरुदेव हमारा ।
 कृपा करी जीने काहलीयो है । इबत भव संमारा ॥टेक॥
 हाँरे संतो जनमो जनमकी उलझ निवारी । शब्द दीया नत्त्व मारा ।
 नाम ही जहाझ चढ़ायो जुगतमें । खेव उनारे पारा ॥धन॥१॥
 हाँरे संतो अमर पुरुषकी बाँह गहाई । दे दे बहो विधि भारा ।
 गुप वस्तु जीने प्रगट देखाढी । दूर कीया पडवारा ॥धन॥२॥
 अब मन उलट भयो पुनी पावन । दश पास पीयु खारा ।
 दाम कबीर पूरण सुख पायो । सत गुरुके उज्ज्ञारा ॥धन॥३॥

* ॥ गोड ॥ २ ॥ *

भजीले रामजी मंगाती । हो मन-भजीते रामजी मंगाती ।
 आज काल दीन पांच सातमें । आवेगो काल बराती ॥टेक॥

हाँरे संतो कहा भयो रे वेर नोवन चाजे । द्वारे झुलावन हाथी ।
 धन रे जोवनको गर्व न कीजे । जुठे कुदुंब कुल नाती ॥मन॥१॥
 हाँरे संतो जुटीरे मायाये जग भस्माया । तेल कढा भर नाती ।
 ए संमार चित्रकी बाजी । जैसो सुपन मध गती ॥मन॥२॥
 हाँरे संतो ए संमार अलपसे जीवना । ओछे जल ज्यें मच्छी ।
 जबही सरोवर सुकन लागयो । नलफ नलफ जीव जासी ॥मन॥३॥
 हाँरे संतो राम भजनकुं विलंबन करीये । हरि अनंत देशके वासी ।
 कहेत कबीर संतनके सेवक । सेवकके सुख गमी ॥मन॥४॥

* ॥ गोड ॥ ३ ॥ *

भुल्यो मन ममझावे । हो कोई-भुल्यो मन ममझावे ।
 चंचल चपल दहोदश ढोले । कीम विधि हाथ न आवे ॥टेक॥
 हाँरे संतो खोटा खोटा दमडा गाठे वांधे । मोघी मोघी वस्तु मूलावे ।
 बोवे बबुल आंच फल चाहे । मो फल कहांसे पावे ॥कोई॥१॥
 हाँरे संतो जोड जोड धन उंडा गाडे । खाण खरची न पावे ।
 आय अचानक गह्यो जब कंठे । साने सान बतलावे ॥कोई॥२॥
 हाँरे संतो गुरु परताप संतकी संगत । मन वांच्छिन फल पावे ।
 जान जुलाहा नाम कबीर । हरखी हरखी हरि गुण गावे ॥कोई॥३॥

* ॥ गोड ॥ ४ ॥ *

अजगयल गमजी हमार । हो अजगयल गमजी हमार ।
 नेति नेति जाकु निगम पोकारे । अनहद शब्द नगार ॥टेक॥
 हाँरे संतो भेघ भूत शीतला धावे । जीवका करत संहार ।
 वांहे पकड जम हाल चलावे । तब कोन छोडावन हार ॥१॥

हांरे संतो गवनके दश मस्तक छेदे । लंक विभीषण थाप्या ।
 हिणाकंस नख उदर विदायो । जन प्रह्लाद उबाग ॥२॥
 हांरे संतो मथुरांको महेमंतज मायो । जीत्या मळ अखाडा ।
 कहेत कबीर मंतन सुख कारण । चक फिरत रखवाग ॥३॥

* ॥ गोड ॥ ५ ॥ *

बानेका चिरद दोहेला । हो बानेका चिरद दोहेला ।
 ग्रही टेक छांडे नहि कबहु । भक्तिना हांसी खेला ॥टेक॥
 हांरे संतो आगे होई पांचोकुं मारे । सो सूरका गेला ।
 तरिया ले गज गाहो बनावे । ढाका पडे मब पहेला ॥बानेका॥१॥
 हांरे संतो निगमल नाम नारायण समगे । तीरथ बृन मब मेला ।
 कहेत कबीर पण लेई निभवे । ना सतगुरु में चेला ॥बानेका॥२॥

* ॥ गोड ॥ ६ ॥ *

सबथे संत मीपाई गाढा । हो सबथे संत मीपाई गाढा ।
 निशदिन जीन उनासन नाहि । रहेत रणमें गढा ॥टेक॥
 हांरे संतो आओ पहोर करत असवाई । चरन ना पावे घोडा ।
 वण मिर लडे धर्णीके आगे । मार मेवाया तोडा ॥सबथे॥१॥
 हांरे संतो काया गढमें फिरत दुहाई । द्रुंदल रहेण ना पावे ।
 कहेत कबीर वे नाहीकुं मारे । जे कोई मुंड उठावे ॥सबथे॥२॥

* ॥ गोड ॥ ७ ॥ *

सुलतानि बलव बुखारेका । सुलतानि बलव बुखारेका ।
 जाको पार हसमको नाहिं । कहा कहुं खिल खानेका ॥टेक॥

हांरे संतो रूप कला गुण चतुर शिगेमण । चोला यंक तन मारेका ।
 मो तन बोज उठावन लाग्या । गोदड दो मन भारेका ॥सुल॥१॥
 हांरे संतो जा मुख पावत चीज निवाला । गुंदे अमृत गम प्यालेका ।
 सो मुख टुका पावन लाग्या । बासी सांज सुबेरेका ॥सुल॥२॥
 हांरे संतो जा संग चढत कटक दलवादल । नवलख ऊँट नगरेका ।
 सो मब छोडके भया फकीग । एक आकीन विचारेका ।
 कहेत कबीर दाम निरगुणीया । प्याग गमदुवारेका ॥सुल॥३॥

* ॥ गोड ॥ ८ ॥ *

अविगतमें चली आया । संतो में-अविगतमें चली आया ।
 मेग मग्ग काहु नहीं पाया । संतो में ॥ टेक ॥
 हांरे संतो नहीं मेग जन्म न गरभ वमेग । बालक होई दिखलाया ।
 काशी शहर जंगल बीच डहेग । तहां जुलाहे पाया ॥संतोमें॥४॥
 हांरे संतो पूर्ख जनसमें कोल कीया था । तब नूरं बेर आया ।
 मात दिनाकी बछीयां दुहाई । ताका दुधमें पाया ॥संतोमें॥५॥
 हुंतो विदेह देह घरी आया । काया कबीर कहाया ।
 जुगन जुगनका बिछुडारे हंमा । गमानंद समझाया ॥संतोमें॥६॥
 जहां नहीं धगन गगन मून नाहि । दिसत अगम अपारा ।
 जोन स्वरूपी देव निरंजन । मो है गमजी हमारा ॥संतोमें॥७॥
 नहि मेरे हाड ल्येहु नहीं चामा । मैं हरि नाम उपासी ।
 अपरमपार पूरण पुरुषोत्तम । कहेत कबीर अविनासी॥संतोमें॥८॥

॥ इनि श्री गग गोडना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग मारुना कीरतन ॥ *

॥ मारु ॥

मारु राग ना गाइओ । विश्र ना दीनो दान ।
अनेनो जनमारे ओळे गयो । जेनेगंगा ना कीनो भ्नात ॥ १ ॥

* ॥ मारु ॥ १ ॥ *

एक वर्यो गिरधारी । बाई में तो एक वर्यो गिरधारी ।
आनदेवने जो शिर नामु । तो करी मरु कंठ कटारी ॥टेक॥
महारे तो एक छेल छवीलो । लोकने शिव भवानी ।
कर्म धर्मनो मारग मुकी । जाउ प्रगट नही छानी ॥बाई॥१॥
चंडी भवानी भेरव कालीका । एवा कोटि हरि पर वारी ।
एहनी संगत भमीरे भमोने । लख चोरासी हारी ॥बाई॥२॥
योगी जंगम सेवडारे । मन्यासी कइ नव जाने ।
भक्ति मारग मिधो मुकीने । पत अनेरी घने ॥बाई॥३॥
सूरगपान और भाँग धतूरा । एहना बहु ए आहारी ।
परम पदवी ए नव पामे । अंते होयरे खवारी ॥बाई॥४॥
गोपी चंदन तुलसीनी माला । वैष्णव जन होय प्यारा ।
दासमीरां तेहने शिरनामे । जे चार वर्णथी न्यारा ॥बाई॥५॥

* ॥ मारु ॥ २ ॥ *

आग्न तोरी हो । पीया मोहे आग्न तोरी हो ।
आग्न गजा रामकी । पल पल घनेरी हो ॥टेक॥

आ तनका दीवड़ा करु । मनमा करु बानी हो ।
 तेल चुगावु प्रेमका । जारु दिन रानी हो ॥पीया॥१॥

पाटी पाडु ज्ञानकीरे । गुण मांग समारु हो ।
 साँईया तेरे कारणे । नन जोवन गारु हो ॥पीया॥२॥

सेजडीयाँ बहु भानीकीरे । चुन चुन फुल विछाये हो ।
 विरहन उभी पंथमुरे । पीया अजहु नआये हो ॥पीया॥३॥

माय बाप तुमकु दईरे । तुमही भल जानी हो ।
 साँईया मेरे एक धनीरे । दूजी रज न आनी हो ॥पीया॥४॥

श्रावण भादो आईयोरे । बरषा रन आई हो ।
 मेघ घटा घन हो ग्ह्यो रे । नयना झड लाई हो ॥पीया॥५॥

तुमहो पूर्ण पूर्णारे । पूरा सुख दीजो हो ।
 दासमीराँ रहो हरि ब्रह्मणी । अपनी करी लीजो हो ॥पीया॥६॥

* ॥ मारु ॥ ३ ॥ *

नाम लोभानी हो । पीया तेरे-नाम लोभानी हो ।
 नाम लीया नग्ते सुनेरे । मैं तो पहाण पाणी हो ॥टेक॥

सुकिन तो कछु न कीयो । वहु कर्म कमाणी हो ।
 सुवा पदावत गुणकार । वैकुंठ वसाणी हो ॥पीया॥२॥

गीध अजामेल तारीया । जम त्राम मियाणी हो ।
 सुत हेत पदवी दई । मध काहुने जाणी हो ॥पीया॥३॥

नाम महाल्प्य गुरु कद्दो । प्रतीत बंधाणी हो ।
 मीराँ प्रभु गिरधर मिले । महारी वेदना जाणी हो ॥पीया॥४॥

* ॥ मारु ॥ ४ ॥ *

निंद नशानीरे । पीया मोगी-निंद नशानीरे ।
 तुजविना क्षण कलना पढे । मानु कल्प विहाणी हो ॥टेक॥
 सब सखियन मिली शिवदई । मैं तो एकु न मानी हो ।
 पीयको पंथ निहालतां । सब रैनी विहाणी हो ॥पीया॥१॥
 अंग विग्ह व्याकुली । मुख मधुगी वाणी हो ।
 अंतर गतके ब्रह्मकी । पीये पीड न जाणी हो ॥पीया॥२॥
 मार शब्द मेरे गुरुये कह्योरे । प्रीत नव बंधाणी हो ।
 मीरं विग्हनी व्याकुलीरे । हगि हाथ बेकानी हो ॥पीया॥३॥

* ॥ मारु ॥ ५ ॥ *

निंदना कर्ना हो । गाफल होई-निंदना कर्ना हो ।
 जीवन छुठ मरण शिर उपर । ना मरनेसे डर्ना हो ॥टेक॥
 रजनी मांहे निंद भर सुनो । परम तत्त्व नही पाया ।
 अति अभिमानी बदत नही काहुं । मिथ्या जनम गमायो हो ॥गाफल॥१॥
 चेत चेत जाग निशा विनी । पेढे बलना तोही हो ।
 तस्कर बहोत दुर घर तेग । साथ मंगी न कोई हो ॥गाफल॥२॥
 गुरु ग्रही ज्ञान जाग नर अंधे । झुठे भग्म भूलाना हो ।
 हरि दरबार नाच नहाना विघ । छांड चले सुलताना हो ॥गाफल॥३॥
 आया था तुं साचे सोदे । झुठे लाग्या भाई हो ।
 ए हटवाडा बिछुडन लाग्या । जागो गम लो लाई हो ॥गाफल॥४॥
 कहेत कवीर गम भज भाई । निरख निरख पांव धरना हो ।
 हरि दरबार छुठ नही खटवे । पल पल लेस्वां भरना हो ॥गाफल॥५॥

* ॥ मारु ॥ ६ ॥ *

मोहनसुं अटकी । माई में तो मोहनसु अटकी ।
थकीत थयां हुग दोउ मेरे । देखी सोभा नटकी ॥टेक॥
में तो भई नंदलालके वश । लोक कहे भटकी ।
बिन गोपाल लाल सुन सजनी । को जाने घटकी ॥माई ॥ १ ॥
तजी कुटुंब लोक लाज मब । रही न घट अटकी ।
मीरं गिरधर संगे फिरनी । कुंज कुंज लटकी ॥माई ॥ २ ॥

* ॥ मारु ॥ ७ ॥ *

मोहने मन हर्यो । बाई मेरो—मोहने मन हर्यो ।
कहा करुं कित जाउमें मजनी । प्राण परवश पर्यो ॥टेक॥
में गई जमुना जल भरने । शिर पर कलश धर्यो ।
कमल नयन कीशोर मूरन । मोरली में कलुक कर्यो ॥बाई॥ १ ॥
लोक कुटुंब मब कही कही हार्यो । ध्यान धरत न टर्यो ।
दास मीरं लाल गिरधर । जाणे ए वर वर्यो ॥बाई॥ २ ॥

* ॥ मारु ॥ ८ ॥ *

रुडुरे समतां वृदावन रुडुरे समतां ।
खीर खाँड धृत साकर भेली । केवुं लागे जमतां ॥टेक॥
आलिंगन अविलोकन चुंबन । वहालासुं हसतां ।
मुगतथे अवनार भलेगे । हैडां होय हसतां ॥वृदावन॥ १ ॥
मोया योगे शरने स्वप्ने ना आवे । वहु काल देही दमतां ।
नरसैंयाचा स्वामीनी संगे समतां । हवे गख्या भमतां ॥वृदावन॥ २ ॥

* ॥ मारु ॥ ९ ॥ *

आव्यांरे आश भयाँ । वालाजी अमो आव्यांरे आश भयाँ ।
 विंधायुं मन ना बले पाढ़ुं । नहारी मोरलीये मन हयाँ ॥टेक॥
 सुननेरे महेली अमो पनिनेरे महेली । महेली कुल मर्जादारे ।
 मातने तात विसार्याँ मोहनजी । तेरे तमारे काज ॥वालाजी॥
 एवाँ एवाँ बचन सुणी हरि हसीया । आपण गमीये गस ।
 मोय कुलनाँ तमोरे मानुनी । पूगे अमारी आश ॥वालाजी॥
 सुंदर गत शरद पुनमनी । सुंदर आशो माम ।
 नरसैंयाचा स्वामी संग रमताँ । रजनी थई षट् माम ॥वालाजी॥

* ॥ मारु ॥ १० ॥ *

उभीरे आळम मोडे । आ जोने कोई उभीरे आळम मोडे ।
 वाँहे बाजुबंध बेरखाने पांची । मनडुं मोह्यं छे एने चुडे ॥टेक॥
 कल्घने कांची अनवट विछीया । हँडेछे वाँके अंबोडे ॥ १ ॥
 सोना झारीने अति अजवाली । महीं जमुना जल तोले ॥ २ ॥
 नरसैंमहेनाने पाणीढाँरे पावा । हरजी पधार्या छे होडे ॥ ३ ॥

* ॥ मारु देशी केर ॥ ११ ॥ *

अनीहाँरे-रंग भीनी गोवालन आवे ।
 रुमझुम रुमझुम नेपुर वागे । अनीहारे गोपी हंसनी चाल चलावे ॥
 जुमनाकेनीरतीर धेनु चरावे । अनीहाँरे कांनो मधुरीसी मोरली बजावे ।
 शिरपर कलम कलमपर झारी । अनीहाँरे गोपो जमुनाना जल भरी आवे ।
 कानेरे कुँडल झाल झबुके । अनीहाँरे गोपी दरपन लेई मुख जोवे ।
 बाई मीरां कहे प्रभु गिरधरना गुण । अनीहाँरे गोपी चरणकमल चितलावे ।

* ॥ मारु ॥ १२ ॥ *

सरोवरगंये रे सगेवरीये पाणीडां हुंरे मईती वाल्या ।
भरु पण भग्वाना देरे गोपीनो वालो ।
जातासुं गर्दे उतावरी रे । वरु पण वग्वा ना दे रे ॥गोपीनो॥टेक॥
सामु कहे सुन वहु मोगी । अधर डंख कहां वाख्यो रे ।
मस्तक कुंभ चढावतां रे । मागी महीयरनो नख वाख्यो रे ॥गोपी॥
वृद्धावनने मागग जातां । मुने मलीया छे कृष्णजी कामी रे ।
भले मल्या महेता नरसेना स्वामी । महु गोपीयो आनंद पामी रे ॥२॥

* ॥ मारु ॥ १३ ॥ *

कहान कारो रे कहान कारो । मलीयो मारगडामां ।
जबु पण जवा न दे रे । दधीनो दाणी ॥
दूर थकी मुने आवतां देखी । चेरी रे दाणने काज॥दधीनो॥टेक॥
निर्लज कुंवर ये नंदनो छैयो । मटकीये मोरी ए वाज्यो रे ।
मां मां करनां चुंबन दीधुं । एना मुखडांनो दंत मुने वाख्यो रे ॥दधी॥
घेला थया गोविंद गिरधागी । ने आ मो कीधो अन्याई रे ।
मग्वी समाणी देखमेरे । घेर गारी देवे मोगी माई रे ॥दधीनो॥२॥
कागे मो कामननो कडको । कहानुडो छे एनु नाम रे ।
नरसेना स्वामी अघटनुं सुं बोलो । नही वसीये गोकुल गाम रे॥द.

* ॥ मारु राग फेर ॥ १४ ॥ *

मन बमे तो वृद्धावन बमरे । मन बमे तो वृद्धावन बसरे ॥टेक॥
तीरथ वत काहेकुं तु भटके । वृद्धावनको जपकरके ॥ मन ॥
वृद्धावनकी कुंज गल्ज में । संतन को दरशन कररे ॥ मन ॥

प्रान होत जुमनाको नहानो । चंदन घम निलक करे ॥ मन ॥
 सुरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । हरि वरणे तुं चित धरे ॥ मन ॥
 ॥ इति श्री राग सोरठना कीरतन ॥

* ॥ अथ श्री राग सोरठना कीरतन ॥ *

॥ साथी ॥

सोरठ सुरो ना सरजीयो ना चब्बो गढ गीरनार ।
 ना नाह्यो गंगा गोमनी एनो एबे गयो आवनार ॥ १ ॥
 सोरठ देश सोहामणो मुजने जोयाना कोड ।
 रननागर सागर बुधवे त्यां राज करे रणछोड ॥ २ ॥
 सोरठ वासी द्वारकां जादव छपन क्रोड ।
 मथुरामां हरि जनमीया बहाले वास्यो सोरठदेश ॥ ३ ॥

॥ सोरठ ॥ १ ॥ *

होरे सोरठीया शामरा । वासो सोरठ देश ।
 अमने तज्यां अलबेलडा । मीठ कहारे मलेस ॥ होरे ॥ टेक ॥
 बहाला नहानी ते वयमां नाथजी । वास्यु गोकुल गाम ।
 वृद्धावे वन रलीयामणुं । बंसी बट्ठो ठाम ॥ होरे ॥ १ ॥
 बहाला ओच्छव कीधो मावजी । धर्यो गोवर्धन कर ।
 ईन्द्रनु मान उतारवा । गरुद्यां गोषीजन ॥ होरे ॥ २ ॥
 बहाला जमुनानी तीरे जादवो । महाया हमारां चीर ।
 दाणी थया दामोदरा । रोक्यां श्याम शरीर ॥ होरे ॥ ३ ॥

वहाला मुम्तक मुगट मोहामणो । कुंडल वनमाल ।
 पीतांवर पट पहेझे । मोरली अधर रसाल ॥ होरे ॥ ४ ॥
 वहाला कंसने हनवा कारणे । गया मथुरा मांहि ।
 कुबजाये कामन कर्या । फरि न आव्या यांहि ॥ होरे ॥ ५ ॥
 वहाला गोकुल कहारे पधारमो । माचु कहोने रे श्याम ।
 नगमैना स्वामीने जई कहेजो । प्रीतेसु परणाम ॥ होरे ॥ ६ ॥

* ॥ देशी केर मोरठ ॥ २ ॥ *

आणी वाटे गया वनमाली रे । वाई महारी बेनडीयो ।
 कोये दीठडा होय तो देखाडो रे । सरखी साहेलडीयो ॥ टेक ॥
 एहेने वण दीठडे जाय प्राण । वाई महारी बेनडीयो ।
 एणे पगले पद्मनु एधाण । सगवी साहेलडीयो ॥ आणी ॥ १ ॥
 वृंदावनमां रास ज रमनां । चतुभुज आंख मीचावी रे ।
 अंतरध्यान थया धरणी धर । विठ्ठल गया मुने वाही रे ॥ २ ॥
 गोपी कहे गिरि नस्वर जोईसुं । मज थावो महु नारी रे ।
 गुण निधान गिरधरने जोईसुं । महिस्थल हसे मोगरि रे ॥ ३ ॥
 सोल शणगार सजीने श्यामा । नेने नाके निरमल मोती रे ।
 कनक दिवडो कर माहीने ए । हींदू वन वन जोती रे ॥ ४ ॥
 पुछती हींदू कमल द्रुमवेली । पुछुं तस्य तमाल रे ।
 हरि हरि करती नयने नीर भगती । कोइये दीठडो श्रीनंदजीनो लाल रे ॥
 वल वलती वनिता देवीने । आवेला अंतरजामी रे ।
 भले मल्यो महेना नगमैनो स्वामी । महु गोपीयो आनंप पामी रे ॥ ६ ॥

* ॥ सोरठ ॥ ३ ॥ *

हरि आव्या नारीने वेषे रे एहने कोई जुबो रे ।
 शिव ब्रह्मारे जेनुं ध्यान धरे छे ।—
 तेने जोई जोई दुःखदां खुबोरे ॥ एहने ॥ टेक ॥
 प्रेम तणे वश पुरुषोत्तम छे । और न बीजु जाणे रे ।
 प्रेम होय तहाँ हरि प्रगटे । एहनु मनहु माने तहाँ माणे रे ॥ १ ॥
 मात पिनाये मनमां विमास्यु । केम करी अहींया आवी रे ।
 अचरज महुने एणी पेर भास्यु । जल लोटो केम लावी रे ॥ २ ॥
 बंधव तेनो ततक्षण उछ्यो । आव्यो मंदीभणी रे ।
 रनन बाई त्यां व्याकुल फरे छे । तमो ल्यो महेनाजा पाणी रे ॥ ३ ॥
 पुत्रीने पग्येथर करी मानी । सभामध्ये आणी रे ।
 अंतर ध्यान थया अळबेलो । तेहेनी बात जगतमें जाणीरे ॥ ४ ॥
 जय जय कार कर्यो जगजीवन । हेत वधार्यु हस्ति रे ।
 नरसैयाना स्वामी चतुर शिरोमण । तहारा चरण कमल मुख लहीयेरे ॥

* ॥ सोरठ ॥ ४ ॥ *

माईंहु माईंहु केही पेर लीजे रे । महागे नावलीयो छे नहानो रे ।
 बेठा बोलके बोलदा बाले । हुन्तो केहीपेर राखु छानो रे ॥ टेक ॥
 हुं छुं नासि बालकुंवारी । महाग पीयुडामां बत थोडुं रे ।
 वेरण विधाना आसुं लस्तीयुं । महाग कर्म तणु कजोडुं रे ॥ १ ॥
 आ भवनु उधारे पडीयुं । एनु लेखुं लक्ष्मीवर जाणेरे ।
 नरसैयाना स्वामीनी संगे । पेली गोपी वृदावन माणे रे ॥ २ ॥

* ॥ सोरठ ॥ ५ ॥ *

सखी वृदावन मोद्दाम । वालो वाही वांमलडी ।
एनो शब्द गयो त्रण लोक । गगनमां मंचरी ॥टेक॥
एनो शब्द गयो त्रण लोकमारे । एहेवो दीनोनाथ ।
शेष महेश्वर मोही रह्यारे । एहेवो मुनीने सरवो माद॥वा.॥१॥
नश्लव ताग थंभीया रे । थंभ्या रवि चंद्र सुर ।
नवमे नवाणु नदी थंभीयो रे । एहेवा थंभ्या ते मान मायेर॥वा.॥
अष्ट कुल पर्वत ढोलीया रे । ढोल्या वनना वृक्ष ।
नर्सेना स्वामी तहाँ मल्या रे । सखी पूर्या छे मनना कोड॥वाले॥२॥

* ॥ सोरठ ॥ ६ ॥ *

महारा मन गमना महागज । मारे घेर आवोने ।
हुंतो तङ्खुं तमारे काज । मारे घेर आवोने ॥ हमार ॥टेक॥
विलंबना करीये विछला रे । आवो मारे घेर ।
भान भानना भोजन करावुं । ते तो त्रिकम नमारे काज ॥१॥
जटुवस्ने तो जोया बिनारे । कहो सखी केम रहेवाय रे ।
त्रिज बनिता व्याकुल थयारे । मारे उलट अंग न माय रे ॥२॥
मनमां हतुं जे महावजी रे । मुखथी केम कहेवाय रे ।
आवी मको तो आवजो रे । मारु जोनामां जोबन जाय रे ॥३॥
आंगणीये उभा रह्या रे । रंगीलो रणछोड ।
नर्सेना स्वामी तहाँ मल्यारे । वाले पुर्या छे मनना कोड ॥४॥

* ॥ सोरठ ॥ ७ ॥ *

तहारी मोरलीये महागज । मन हरि लीधां रे ।

मागी गई छे सुधने सान । कामन कीधां रे ॥तहागी॥टेक॥
 सांभलनामां सुध बुध विसरी । नन मन व्याकुल थाय ।
 पुत्र पति परिवार सहुको । मने मंदीर खावा धाय ॥मन ॥१॥
 अंतर्मां व्याकुल थया रे । विसरी भोजन पान ।
 अबलां आभृषण पहेरीयां रे । महेनो नेपूर घाल्यां कान ॥फन॥२॥
 मेथे काजल मारीयां रे । नयने मिंधुः रेख ।
 एक एकथी उतावलीरे । आवी निमरी देखा देख॥मन॥३॥
 सनमुख आवी उभी रहीरे । नयने निम्ब्या नाथ ।
 नरमैयाना स्वामी संग रमतां । में तो हरखे जोख्या हाथ ॥ ४ ॥

* ॥ मोर्घ ॥ ८ ॥ *

जेनो पीयुडो ते परखेर जाय । मखी सुं करीये रे ।
 अमथी एकलडां ना रहेवाय । विजोगे मरीये रे ॥टेक॥
 रूप जोनामां रमीयो रुडो । पगणे करे छे प्रीत ।
 अन तेढ्यो आंगणीयेरे आवे । एवी ते एहेनी गैन ॥ मखीसुं ॥
 बोलाव्यो बोले नही रे । कोने कहीये पेर ।
 शेरडीये सामो मले रे । वहालो निचांते ढाले नेन ॥म.॥
 छल भेदमा छानो रमे रे । अमने वायदे वाय ।
 नरमैना स्वामी अंतर्जामी । वहालो अर्थ पडे ओछलाय ॥३॥

* ॥ मोर्घ ॥ ९ ॥ *

रंग भीनी रे जादव जावादे जादव जावादे ।

तहारु दाण घटेते मोहोडे मागीले ॥ जादव ॥ टेक ॥
 माहारे मस्नक महीनु मांट । मारे उतर बो जमुनानो घाट ॥ जादव ॥

झरमर झरमर मेहुलो वग्मे । भींजी चुंडीने वाघो मनेहा॥जा॥
अमोरे आहीरडांमां अंतर केसो । स्थामी नरमैनो रुदीये वसो ॥जा॥

* ॥ सोरठ ॥ १० ॥ *

कहाना एकवार रे—गोकुल आवो रे । मथुरानारे वासी ।
तागे वाटो—जुवे त्रिज नारी रे । मथुरानारे वासी ॥ टेक ॥
वालो वगवीने हुं वरी रे । उभारे वडलाने हेठ ।
आंशुडे भीजे मारे कंचवो । मने मेली—गया परदेशरे—मथुरां ॥
जोशी ते मुजने जो मले रे । जोवडावु रुडा जोश ।
मागडे मुजने मले रे । तो तो मुने—ना देशो दोश रे—म ॥
त्रिज वासीनी विनती रे । जे कोई मथुरां जाय ।
कागललखोये श्री कृष्णने रे । मारे हैये धारण थाय रे ॥—मथुरां ॥
बालपणानी प्रीतडी रे । अधूरो घरवास ।
ए वर मागु विष्टलो रे । गुण गाय मोगंवाई दास रे—मथुरां ॥

* ॥ सोरठ ॥ ११ ॥ *

सोकलडीनु साल मारे मोटुं । ओ बई रे घरमा ।
हावे जीववनु मारे खोटुं । ओ बई रे ॥ टेक॥
जल जमुनानां जल भरवाने जईसु वहाला । जईने जमुनामां पडीसुं ॥
सामु धूनारी मारी ननदी ठगारे वहाला । दीयेने महेणे मरीसुं ॥
कुवे पाणी जईसु हमे गळे कांमो लईसुं । जईने कुवामां पडीसुं ॥
बखडां घोरसुं अमो झेरज पीसुं वहाला । पेट कटागी लेई मगीसुं ॥
अमने अमारे महियर वगवो वहाला । भोजईना महेणां सहीसुं ॥
वाईमींगं कहे प्रभु गिरधरना गुण । चरण कमल चित रहीसुं ॥

॥ इति श्री राग सोरठना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग केदाराना कीरतन ॥ *

(पोढणां)

* ॥ केदारे ॥ १ ॥ *

मेज मौना गम । पोढे सुख—मेज मौना गम ।
आनंद कंद अयोध्या नायक । जानकी भुज वाम ॥ टेक ॥
कनक मंदीर पहोप सज्या । कोटि एक उदयो मान ।
देवना सब चोकी आये । मनमुख श्री हनुमान ॥ पोढे ॥ १ ॥
शेष शंकर कर्त कीरतन । रुत निशदिन नाम ।
गख गंजन गम गधो । मकल पूर्ण काम ॥ पोढे ॥ २ ॥
सर्जु तीर अयोध्या नगरी । तहां बीमजे गम ।
कौशल्या नंदन जगत वंदन । गम सुंदर श्याम ॥ पोढे ॥ ३ ॥
चौवा चंदन अगर कुम कुम । कनक डचो भरी पान ।
दाम तुलसी लीये ठाडे । खानाजाद गुलाम ॥ पोढे ॥ ४ ॥

* ॥ केदारे ॥ २ ॥ *

रंग महेल गोविंद । पोढे हरि—रंग महेल गोविंद ।
राधिका मंग शरद रहेणी । उदिन पूनम चंद ॥ पोढे ॥ टेक ॥
विविधि चित्र विचित्र चित्रीत । कोक कोटिक फंद ।
निरखी निरखी विलास विलमन । देवना रम कंद ॥ पोढे ॥ १ ॥
मलय चंदन अंग लेपन । परमपर आनंद ।
कुसुम वीक्षणे वायु ढोले । सजनी परमानंद ॥ पोढे ॥ २ ॥

* ॥ केदारो ॥ ३ ॥ *

सेजड़ी संभाल । सखी रे तुं—मेजड़ी संभाल ।
 जाई जुई चंपा मालनी रे । पाढ़र वेल गुलाब ॥ सखी रे ॥ टेक ॥
 वदनबाली केतकी रे । करले किंकर ढार ।
 कमल नयन किशोर मूरत । आये जदुपनि राय ॥ सखी रे ॥ १ ॥
 कुसुम मज्या गेंदुवारे । पोहे जदुपनि राय ।
 दास मीरां लाल गिरधर । चरण कमल बलीहार ॥ सखी रे ॥ २ ॥

* ॥ केदारो ॥ ४ ॥ *

मानजो महाराज । मजगे—मानजो महाराज ।
 बृंदावनमां धेन चारी । ब्रिज कीयो है निहाल ॥ मजरो ॥ टेक ॥
 दुष्पद सुताको चीर वधायो । उगायो गजराज ।
 विभीषणकुं लंका दीनी । ध्रुवने अविचल राज ॥ मजरो ॥ १ ॥
 प्रह्लादनी तमें प्रनिज्ञा पाली । खंभमें पुर्यो वास ।
 सूरके प्रभु पोदिया रे । तुम कीजो लीला विलास ॥ मजरो ॥ २ ॥

* ॥ केदारो ॥ ५ ॥ *

सुनो ब्रिजको प्रेम । माधो—सुनो ब्रिजको प्रेम ।
 बूँशि मैं खट मास देख्यो । गोपियनको नेम ॥ माधो ॥ टेक ॥
 हृदयतें तुम ठरन नाहिं । श्याम राम समेत ।
 आंसु मलिल प्रवाह मानुं । अरथ नैननी देन ॥ माधो ॥ १ ॥
 (चमर) अंचरा कुच कलममानुं । पाय पाणि चढाय ।
 प्रकट लिला देखी तुम्हरी । करम उठनी गाय ॥ माधो ॥ २ ॥

देह गेह सनेह अर्पण । कमल लोचन ध्यान ।
सूर उनको भजन देखत । फिको लागत ग्यान ॥ माधो ॥३॥

* ॥ केदारो ॥ ६ ॥ *

नाथ मोहिं उवार । अबतो—नाथ मोहिं उवार ।
झवतहुं भव अंबुनिधिमे । कुपामिंधु मोहर ॥ अबतो ॥ टेक॥
नीर अनि गंभीर माया । लोभ लहर तो रंग ।
लीये जान अगाध जलमें । ग्रमन ग्रांह अनंग ॥ अबतो ॥१॥
मीन इन्द्रि अनि काट । मोट अव शीर भार ।
पग न इन उत धमन पात्रत । उग्ज्ञि मोह मिवार ॥ अबतो ॥२॥
काम क्रोध अनेक तृष्णा । पवन अनि झक झोर ।
नाहिं चितवन देत निय सुन । नाम नौका और ॥ अबतो ॥३॥
बह्यो जान बिहाल बिन बल । सुनो करुणामूल ।
श्याम भुज गहि काहि लीजै । सूर ब्रिजनके कूल ॥ अबतो ॥४॥

* ॥ केदारो ॥ ७ ॥ *

लेरे गोविंद गाई । दिन दश—लेरे गोविंद गाई ।
काम क्रोध मद लोभ वाह्यो । काल चेयो आय ॥ टेक ॥
पाणीमेंमे उठन बुदगा । पाणी मांहि समाय ।
जनम शुठो देह गंदी । कागा मांस न खाय ॥ दिन दश ॥१॥
करम कागद बंची देखो । जो न मन पति आय ।
कोटि ब्रह्मांड खोज देखो । लिख्यो मिटे नही जाय ॥ दिन ॥२॥
देहके दश द्वार रुधे । अवध पहोनि आय ।
सूर हरि को भजन करीले । जनमको दुःख जाय ॥ दिन दश ॥३॥

* ॥ केदारो ॥ ८ ॥ *

एही चरण सोहाय । प्रभु मेरे-एही चरण सोहाय ।
 एही चरणमें धेन चारी । खाल भेष बनाय ॥ प्रभु ॥ टेक ॥
 एही चरणमें बल छलीयो । दीयो पताल पठाय ।
 एही चरणमें भोपी मापो । दिव्य देही बधाय ॥ प्रभु ॥ १ ॥
 एही चरणमें नाग नाथ्यो । फण पर नरन कगय ।
 एही चरणमें त्रेगे धायो । ग्राहसें गयंद छोड़ाय ॥ प्रभु ॥ २ ॥
 एही चरणमें गोकुल गख्यो । इन्द्र गर्भ मिदाय ।
 एही चरण है सूर प्रभुके । मनन मदा सहाय ॥ प्रभु ॥ ३ ॥

* ॥ केदारो ॥ ९ ॥ *

गमसुं कर हेत । मन रे तुं-गमसुं कर हेत ।
 गम नामकी बाड कर ले । बच्चे तेरो खेन ॥ मन रे तुं ॥ टेक ॥
 मन सुआ तंन पिंजा । ताही सुं बाढो हेत ।
 पंजा रुगी काल ढोले । अग घडी तोहे लेन ॥ मन रे तुं ॥ १ ॥
 पंच हरण पचीम हरणी । खोद खायो खेन ।
 गरे म मो सुमगे दोउ । धन धन कई चेन ॥ मन रे तुं ॥ २ ॥
 विष्विकाग मन नजत नांहि । क्यों नरे माहेर सेन ।
 सूर हरि को भजन करी ले । गुरु बनाई देन ॥ मन रे तुं ॥ ३ ॥

* ॥ केदारो ॥ १० ॥ *

गम नाम ही जान । मन रे तुं-गम नाम ही जान ।
 थरहर थुनी पञ्चो मंदीर । सुनो खुंगी तांन ॥ मन रे तुं ॥ टेक ॥
 पांच गजकी धोनी मागे । चुन मागे सान ।

सान तागी कोई न ममजे । जीभ्या अटपटी बान ॥ मन रे तुं ॥ १ ॥
 विश्वानल और खोखरी हाँडी । चल्यो लाद पलान ।
 मोउ तोगी संग नाहि । वेमी रही रे ममान ॥ मन रे तुं ॥ २ ॥
 कहेन कबीर सब झुड़ी माया । छांड जीव कवाण ।
 रामनाम निसंक भजी ले । ना कर कुलकी काण ॥ मन रे तुं ॥ ३ ॥
 * ॥ केदारो ॥ ११ ॥ *

प्रेमके बम पढे । जन कोई-प्रेमके बम पढे ।
 धाट ओघट बाट बममी । कोटिकमें कोई नरे ॥ जन कोई ॥ टेक ॥
 शांनि कारण रटन पपीहा । निशदिन पियु पियु करे ।
 जैसे हरि यल गही लकडी । भोमी पावु ना धरे ॥ जन कोई ॥ १ ॥
 जैसी चकोरकी जरण रसना । अगनि नही परहरे ।
 जैसे मृगा नाद सुनके । तरण नाहिं चरे ॥ जन कोई ॥ २ ॥
 दिपक जोत पतंग हुलसे । प्राण देत न डरे ।
 मकल फुलनमें फिरत भमरा । बास कमलमें करे ॥ जन कोई ॥ ३ ॥
 मती जो कहीए मतकी बांधी । बिना अगनि जरे ।
 बांध मत्त धसे गणमें । सूर नाहि ढरे ॥ जन कोई ॥ ४ ॥
 नाम कारण रटन निशदिन । नामसें दुःख हरे ।
 कहें कबीर गुरुज्ञानमें । जीवत ही नर तरे ॥ जन कोई ॥ ५ ॥
 * ॥ केदारो ॥ १२ ॥ *

भजनको परताप । एमो हरि-भजनको परताप ।
 नीच पावे उंच पदबी । बाजते निशान ॥ एमो हरि ॥ टेक ॥
 नामको प्रताप एमो जल तरे पाषाण ।

अधम भीलडी अजान गुणका । चट्ठी जान विमान ॥ एसो ॥ १ ॥
 चलत नाग चलत मंडल । चलन शशी अरु भान ।
 दाम धुवकुं अचल पदवी । गमके दिवान ॥ एसो हरि ॥ २ ॥
 शवणके दश शिश छेदे । कर गही सारंगपान ।
 विभीषणकुं लंका दीनी । भक्त अपनो जान ॥ एसो हरि ॥ ३ ॥
 निगम जाकी माख बोले । मुनो संत सुजाना ।
 दाम तुलसी शरण आयो । गवी ल्यो मगवान ॥ एसो हरि ॥ ४ ॥

* ॥ केदारो ॥ १३ ॥ *

हाल मुनो दुःख हरण । हरि मेरे हाल मुनो दुःख हरण ।
 गयो जोवन जग पहोनी । दीयो ददासो मरन ॥ हरि मेरो ॥ टेका ॥
 काम क्रोध मद लोभ लागयो । आयो न तोरी शरण ।
 मोह माया काम कारण । भम्यो नव खंड धरन ॥ हरि मेरो ॥ १ ॥
 आशा नृष्णा अगन अनिमे । जायो नानी जरन ।
 आवागवन अथाह शीघ्र । काल भव भे भरन ॥ हरि मेरो ॥ २ ॥
 अंध धुंध संमार मागर । यायो न एकु ठरन ।
 जममें दाणी लूटन दहोदश । लख चोगशी फरन ॥ हरि मेरे ॥ ३ ॥
 एसो जान अलाज आछो । कीजे करुणा करन ।
 तुम हो दीन दयाल स्वामी । आंख अम्रित झारन ॥ हरि मेरो ॥ ४ ॥
 नाम निहारो पतितपावन । बिद अशर्न शरन ।
 नहानो निरभे करी लीजो । चेरे अपनो चरन ॥ हरि मेरो ॥ ५ ॥

॥ इति श्री गग केदारना कीरतन संपूर्ण ॥

* ॥ प्रकीर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री मजनी मोटी ॥ *

आज मखी रे हुंतो तुझने रे कहुं छुं। एक महाग मननी बानरे मजनी।
 सजनी मांहि मुने रंग भगी मलोया। चौद भुवननो नाथरे सजनी ॥
 अहन पणामाँ हुं सुती रे हुनी। निंद्रावस मोगी देह रे मजनी।
 जागनां सुंदर वर सैजे। निस्वंतां थयो नेह रे मजनी ॥२॥
 बान करंता महाग वहालारेजीसुं। चमकी चितमाँ उठीरे मजनी।
 मांहो मांहे अमो अंग भीड़ताँ। कपमखानी कोम तुटी रे मजनी ॥
 हब्बे सुं आवताँ महागी। धमीने ग्रही मोगी बांह रे मजनी।
 मेंहज कल्युं महाग वहालारेजीसुं। हब्बे मुने दीजो माँईरे मजनी ॥
 जे दहाडानुं मुने शामलीये रे। साँईदु रंग भगी दीधुंरे मजनी।
 ते दहाडानुं मुने चेन नही रे। महारुमन हगीने लीधुंरे मजनी ॥
 घर आंगणे मुने कर्द्द न सोहाये। ना गमे कोईनो संगरे सजनी।
 नेह जणाव्यो ए नावलीये रे। त्यार पुठे लाघ्यो रंग रे सजनी ॥
 माने बाप महागी केडे रे पड़ीयाँ। मामु ननदी नुसालरे सजनी।
 भुंडा लोकते भुंडुरे बोले। महीसुं तेहनी गालरे मजनी ॥७॥
 मखी रे ममोवड मलीने बेमनां। करनां मननी बानरे सजनी।
 हैडां मांहे तो हग्ग सामी। त्यारे पुठे लाघ्यो तान रे मजनी ॥८॥
 महारे तो सुंदरवर साथे। मन घनेरुं लाघ्युं रे मजनी।
 सामाटे एतो सोर करे छे। काँई अंतर मारुं जाग्युं रे सजनी ॥९॥

महागपिताने कहोरे जई कोई । मासर पीयर जाणे रे सजनी ।
 प्रीत करी पुरुषोत्तम माथे । ए दुःख साने आनेरे सजनी ॥१०॥
 थनार होय ने थाय महारी बहेनी । दुःख इकुना आवे रे सजनी ।
 पीयुजीनी माथे अमो प्रेमे रे हमनां । घणा घणेरु भावे रे सजनी ॥११
 लोक नणु दोहेलहु रे देखी । पीयुजीनो जोतां कंथे रे सजनी ।
 महि सकीएतो मनमुख आवे । राधाजीनो कंथे रे सजनी ॥१२॥
 सखी रे समोबड सहुको मरीने । करनी हरिनी वत रे सजना ॥
 महारानो मन मांहे रे न होनु । महेने मलीया नाथ रे सजनी ॥१३॥
 सा सा अंगे उलट ज करीये । सा धरीये शणगार रे सजनी ।
 ओचीना सुंदर वर आव्या । कर्यो मोर्लीनो झणकार रे सजनी ॥१४॥
 महाग पुन्यनो तार नही रे । हवडां काई नव कीधुं रे सजनी ।
 सनेह धरीने ए शामलीये रे । महारु मन हरिने लीधुं रे सजनी ॥
 मोर मुगट मोर्लीधर मोहन । निरखनां केम रहीये रे सजनी ।
 सुंजाणे एनो मुखनी रे वातो । दुरीजन दुःखडां महीये रे सजनी ॥
 मोर्ली मांहे मारु न हरिने । मोहनजी मुख गाय रे सजनी ।
 जहां जोखुं तहां शामलीयो रे । ते कम अलगो थाय रे सजनी ॥
 निरखनां सखी नावलीयाने । नयने आव्यां नीर रे सजनी ।
 भेट्टां भूदर वरजीने । खसीयां महारं चीर रे सजनी ॥१८॥
 कंदर्य कोट कलेवर सुंदर । एहेवो हलदर वीर रे सजनी ।
 हलवेसुं आलिंगन देनां । चंचल थाय महारु धीर रे सजनी ॥१९॥
 साल घणु छे पेली मॉक नणुरे । ए दुःख क्यारे टलसेरे सजनी ।
 दुरीजन लोक ते दोहेलां बोले । हैदां तेंना बलसे रे सजनी ॥२०॥

सहेज तणुं सुख सुंरे कहीये । किंड हम्बे ना कहेवाय रे मजनी ।
 बान करनां महाग बहालो रे जीसुं । हैडां टां थाय रे मजनी ॥२१॥
 बंसीबट बृदावन मांहे । रमवानी पेर लाधी रे मजनी ।
 कुंज सदन मांहे किरडा रे करना । श्रीत निरंतर बांधी रे मजनी ॥२२॥
 अमो अबलानुं कोण गजुं रे । जेहने वेद निरंतर गाय रे मजनी ।
 मुनिजन मोटा कोई मग्म न जाणे । अहर्निश जे ने धाय रे मजनी ॥
 गोकुल मांहे ए गायो चारना । सुध हरि ने लीधो रे सजनी ।
 बंछ तणा वर मे'जे रे पामी । महारी बुद्धि सनाथज कीधी रे मजनी ॥
 मारग मांहे मोहनजीरे मुजने । मलोया अलगे डाम रे सजनो ।
 उर वर महारे वसीने ग्यारे । नरसेया केरा स्वामी रे मजनी ॥२५॥

* ॥ इति श्री मजनी मोटी संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री नानी सजनी ॥ *

— — — — —

* ॥ मजनी ॥ ३ ॥ *

मजनी ने स्वपनांत मुने लाध्यु रे । महारु मन नंदकुंवासुं बांध्यु रे ।
 जाणे हुंतो पानलीयो वर परणी रे । एतो महाग पूर्व जनमनी करणी रे ।
 आला लीला वांमलीया बढावो रे । तेहनी रुडी नवरंग चॉगी रचावो रे ॥
 आवे रुडी जादव कुलनी जान रे । भ्रखुभानजी देले कन्या दान रे ।
 हरजीते हाथे बहालो माहे रे । कंठ मांही आरोपी वर माल रे ॥
 एकठा ते आगेयो कंसार रे । मानुनीयो गाय छे मंगल चार रे ॥

कुमकु केमर वरणी आड रे । निलकन्ती धर्यां छे लेलाट रे ॥७॥
जाणे हुं तो यशोदाजीने पाये लागी रे । एट्ले तो झबक लेईने जागी रे ।
पूरण पुन्येने ए वर पामी रे । भले मल्यो नरसैयानो स्वामी रे ॥

* ॥ मजनी ॥ २ ॥ *

मजनी तुं सुं बेठी छे जमवारे । चालने तुं हरजीनो माथे गमवा रे ॥
वहाले मारे वाही मधुरी बेण वनमारे । गोपीजन आनंद पाम्यां छे मनमारे ॥
एकवार आवीने अंतभ्यामी रे । अमारे तो छेल छबीलो स्वामी रे ॥
गोपीजन चाल्यां प्रभुजीनी संगे रे । पल पल मल्यां छे एकज रंगे रे ॥
अमारे तो विरहनी वेदना वामी रे । भले मल्यो नरसैयानो स्वामी रे ॥

* ॥ मजनी ॥ ३ ॥ *

मजनी तुं मांभलने कहुं वान रे । वहालो महारो उभा छे यमूनाने घाट रे ॥
वाहले मारे कीधु मधुरुगान रे । तीणे महारी गई छे सुधने मान रे ॥
मुजने तो मोटुं चेटक लाग्युं रे । रुदोयामां काम बान आवी लाग्युं रे ॥
मुजने तो बेली कहे महु लोक रे । तीणे महारो ठ्ल्यो हैयानो शोक रे ॥
मैंतो महाग वहालाने उर पर लीधा रे । तेणे महाग मकल मनोरथ सीध्या रे ॥
आज हुं तो मकल पुन्यनणाफल पामी रे । भले मल्यो नरसैयाना स्वामी रे ॥

* ॥ मजनी ॥ ४ ॥ *

सजनी तुं सांभलने मोरी वानरे । रमनां ते रमनां थयो परभान रे ॥
रजनी तो रंग भरी विहाणी रे । बहेनी में तो जानां ते नव जाणी रे ॥
नंदजीना नंदन मारे वेर आव्या रे । बहेनी में तो मोतीडे वधाव्या रे ॥
पहेयां पहेयां पिनांचर अनिसार रे । कंठडे तो सोहे मुक्काफल हार रे ॥
आज हुं तो आनंद अति धणो पामी रे । भले मल्यो नरसैयानो स्वामी रे ॥

* ॥ मजनी ॥ ५ ॥ *

मजनी रे हैडे हरण अपार रे । मंदी रे आव्या क्ले नंदकुमार रे ॥
 दीठु मेंतो दामोदरजीनु मुख रे । तेणे मारग सख्वम भाग्यां दुःख रे ॥
 आजनो तो दिवम कहीय धन रे । दुग्लभ नाथ तणां दरशन रे ॥
 बहेनी मारे उलट नामाये अंगरे । आज मारे आलमुदां घेर गंग रे ॥
 बहेनी मारे स्वप्नांतर थयुं साचु रे । हुंनो हावे अवर कई नव जाचु रे ॥
 ब्रवादिक जेहनो पार न पीछे रे । मुनिजन मोटेग दरशन इच्छे रे ॥
 आहीरडां उपर करुणा कीधी रे । बहाले महारे वेचानी करी लीधी रे ॥
 बहालो महागे गीज्ञा क्ले घणु माच रे । गुण गाई नरसेयो निननित नाचे रे ॥

* ॥ मजनी ॥ ६ ॥ *

मजनी ते बीजां कारज छांडो रे । बहालाजीने वेमण आसन मांडो रे ॥
 बहेनी तहाग पुन्य तणो नही पार रे । मंदीर आवेला जगदाधार रे ॥
 बहेनी आज वग्नीया मंगल चार रे । छबिपर तनमन करु बलीहार रे ॥
 उत्तम गादी ते तकीया टालो रे । निरखतां पलक पाढी ना वागे रे ॥
 बहालीजीने चंदन चस्तो आज रे । मानुनीयो मुकोने मघलो लाजरे ॥
 तजीये ते अंतगतनो आंटो रे । बहालाजीने केमर करनुगी छांटो रे ॥
 सुखडी तो सुंदर वग्जीने अग्पो रे । बहालाजीने हेत करीने तरपो रे ॥
 आरती ते आनंदनी आज थाय रे । गुण जश नरसेयो नितनित गाय रे ॥

* ॥ मजनी ॥ ७ ॥ *

बहालो महागे नववन श्याम विगजे रे । श्यामाजीने विद्युत वस्त्री गजे रे ॥
 बहालाजीने पीतांबर तन मोहीये रे । श्यामाजीने लीलांबरे मोहीये रे ॥
 बहालाजीने पाये नेपूरीयां सार रे । श्यामाजीने झाँझनो झमकार रे ॥

वहालाजीने बाजुबंध विशाल रे । श्यामाजीने कर कंकण रणकार रे ॥
 वहालाजीने उरे सोहीये बनमाला रे । श्यामाजीने मणिमाणेक परवाला रे
 वहालाजीना हस्तीन बदन आनंद रे । श्यामाजीनु मुखडु पूनमचंद रे ॥
 वहालाजीना अंबुज लोचन गतांरे । श्यामाजीना मृग नयना पदमाना रे
 वहालाजीने काने ते कुंडल ललके रे । श्यामाजीने झाल अनोपम झळके रे
 वहालाजीने मोमचंद कला माथे रे । श्यामाजीने शेषफेग वेण गुंथो रे ॥
 नव शिव मोभा भिंधु अपार रे । संक्षेपे कीधो छे विस्तार रे ॥
 अंगो अंग सोभे छे कुंजविहारी रे । छविपर नर्मयो वलीहारी रे ॥

* ॥ मज्जनी ॥ ८ ॥ *

सजनीयो सुंदर हरजीने देखो रे । आपणा तो जन्म मफल करी देखो रे ॥
 मंजन करी तन पहेरो चीरे । शृंगार धरीने भगे रे शरीर रे ॥
 कंठे धरी रे तुलमीकरी माल रे । गोपीचंदन आपानिलक विशाल रे ॥
 चौंवा ते चंदन चम्चो रंगे रे । ग्रेम धरी जई मलो शाम अंग रे ॥
 धुप दीप आरनी करो ने माजरे । शिशपर मुगट ग्रेम बिंजे रे ॥
 तन मन प्राण समरण कीजे रे । कहन कबीर परमपद लीजे रे ॥

* ॥ मज्जनी ॥ राग फो ॥ ९ ॥ *

सखी मांमल मारी मज्जनी रे । एक बात अनोपम आजनी रे ॥
 वहालाजीने लाजे हुंतो लाजीरे । एहरी अकललीला माग नाथनीरे ॥
 हुं तो मारे मंदी रे रहीनी रे । बालाजीये मोकली दुनी रे ॥
 दुनी सामु जोई पाल्ही बली रे । ते तो श्याम सुंदरजीने मली रे ॥
 हुं तो अगना आभरण मज्जनी रे । हुं तो दर्घणमां मुख जोनी रे ॥
 हुं तो मांग सर्दु रे भरती रे । हुं तो ध्यान गोपालजीनु धरनीरे ॥

एटले आव्या ते अंतर्यामी रे । हुं तो तेने जोई लज्जा पामी रे ॥
 सखी निशा हत्ती अंधीयारी रे । आव्या श्याम सुंदर गिरधारी रे ॥
 आवतडो में नव जाण्यो रे । मारो कपट करी पालब्र नाण्यो रे ॥
 में तो लेई दीपक कर मर्यारि । वहाले मणि लई कर धर्यो रे ॥
 में तो लेईने मुखमां मेत्यो रे । अंधकार मंदीरे फेलायो रे ॥
 मर्म मोहनजीनो नव जाण्यो रे । शेषनाग जगाडीने आंण्यो रे ॥
 सहस्र फणे मणि जलहले रे । तेणे तेजे तो निमीर टलेरे ॥
 बीहीने बालाजीने उरलागी रे । मागी काम वासना त्यां भागी रे ॥
 एवी लीला करे अविनाशरे । गुण गाय नगमेयो दासरे ॥

* ॥ इति श्री नानी मजनी संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री जानकी मंगल ॥ *

प्रथम सुमरु गुरुदेव राम शिखनाईये ।
 विदेहीकुं शिश नमाय राम गुण गाईये ॥ १ ॥
 प्रभु गुन सिंधु समान कौन वरणन करे ।
 जाकी जैसी बुधि तैसी हिरदे धरे ॥ २ ॥
 मुनिए कीन्हो विचार अवधपुर चालीये ।
 श्री राम भये अवतार जगन हित लाईले ॥ ३ ॥
 करी सगजू अस्थान नृप मंदिर गये ।
 कीन्हे बहोत परणाम विदीत आसन दीये ॥ ४ ॥

बोले दशरथ सय आये केही कारणे ।
 धन्य हमारो भाग्य नाथ निस्तामणे ॥ ५ ॥
 तब बोले तपध्यान कुंवर दोउ दीजीये ।
 यज्ञ हमारो पूरण ह्योय विप्रको यश लीजीये ॥ ६ ॥
 तब बोले नृप राय सोच कीने घनो ।
 कीजीए कौन उपाय वान घाडी बने ॥ ७ ॥
 तब बोले गुरु वशिष्ठ नृप सोच न कीजीये ।
 ए पूरण अवनार जगन हित दीजीये ॥ ८ ॥
 प्रेमके उदगार सुन नृप गोद लीये ।
 महा मुनिनकुं भेट राम लक्ष्मण दीये ॥ ९ ॥
 रनन जडीत कटि बंध धनुष लीयो हाथमें ।
 कीने बहोत परणाम मान और तातने ॥ १० ॥
 नयन रहे जल छाय पिता और मानके ।
 इनके गखो ऋषिजी कुंवर दो अनाथ के ॥ ११ ॥
 आगे विश्वामित्र महा मुनि पीछे लक्ष्मण रामजी ।
 सजल रनन धनश्याम मकल पूरण कामजी ॥ १२ ॥
 राजीत बदन निहार बक हग मोहेलां ।
 नाशा परम उदार मुनिन मन मोहेलां ॥ १३ ॥
 उठी राक्षसी महा धोर प्रभु एक सर हनी ।
 विप्र जगन पूरण कीयो कृपा कर कौशल धनी ॥ १४ ॥
 गालो गर्व गुमान ध्यान हरि सें धरे ।
 चुक पडी जीया मांही राम रंगे ना भरो ॥ १५ ॥

ब्रह्म अम्नुनि करी बार्ण मारीच पे ढ़ग्गीयो ।
 सो योजन पञ्चो तंत्र के मूरग संभारीयो ॥ १६ ॥
 मारीच मारे सुबाहु मारे मुनिजनके मंगल भये ।
 सुरके मन हरण पुष्ट बर्षे घणे ॥ १७ ॥
 रच्यो है स्वर्द्धर जनके राम चलो देवीये ।
 आये है बहु भूप रूप रस पेखीये ॥ १८ ॥
 भली कही क्रष्णिय जनकपुर चालिये ।
 शिव धनुष कठीन कठोर सो दश देखाईये ॥ १९ ॥
 हरधी चले श्री राम मुनिनके मंगमें ।
 आगे खी आय शीला पड़ी मगमें ॥ २० ॥
 लागी चरणकी रज अहत्या तुर्ने छवि भई ।
 करजोड़ी अंजली बाहेर ठाड़ी श्रीरामकी स्नुति करी ॥ २१ ॥
 में त्रिया मति मंद कहा जानु नगहरि ।
 तुमसे दीन दयाल शीला भई सुंदरी ॥ २२ ॥
 लागी चरणकी धुगी अहत्या पतिपुर गई ।
 ऐसो कौतक देख कीर नौका लई ॥ २३ ॥
 टेस्त है रघुनाथ के नौका लाव रे ।
 वेगे उतारे पार ढरो जीन बहाव रे ॥ २४ ॥
 कर जोड़ी खेवट यों कहे नही पार उतारहु ।
 जो नौका उड़ी जाय कुटुंब कैसे पालहु ॥ २५ ॥
 जो नौका उड़ी जाय धुगी लगे पावकी ।
 ताथे दुनी देउ घडाई नावकी ॥ २६ ॥

खेवट चरण पत्ताल गम बैठाइये ।
 छीनमें नौका चलाय के पार लगाइये ॥ २७ ॥
 करुणा मिथु दयाल खेवट अपनो कीयो ।
 जा पद जोगी जनकु दुर्लभ मो रिझी खेवट दीयो ॥ २८ ॥
 नौका उनगी पार गम जनकपुर चले ।
 तांडेंगे शिव धनुष सुकन भेटे भले ॥ २९ ॥
 बन उपबन और बाग विविध बैक क बनी ।
 कंवन मणिमे खचीन रुचीर उपमा बनी ॥ ३० ॥
 ठोर ठोर बहु भूप जनकपुर मोहेला ।
 बेठे बजाजी लोक मदन मन मोहेला ॥ ३१ ॥
 आये जनक सभा श्रीगम भूप सब थकी रहे ।
 दिगके लाडु खाय मनहु सब छकी रहे ॥ ३२ ॥
 बृजन है मिथीलेश कुंवर ऋषि कौन के ।
 पुरण जीनको भाग्य दोउ सुन उनके ॥ ३३ ॥
 महा सुभट रणधीर दोउ गुण लायके ।
 श्री रघुवंशी महाराज के दशरथ गयके ॥ ३४ ॥
 नरनारी सब यों कहे एतो वंश कीशोर है ।
 शिव धनु कठिन कठोर कैमे करनोर है ॥ ३५ ॥
 ए छवि दृग्वर श्याम देख जीया जीये ।
 वारु कोटिक काम नयन भर पीजीये ॥ ३६ ॥
 कष्ट करी सहु इष्ट धनुष सभा आनीयो ।
 बडे बडे भूपनि आये कीनहु नही तानीयो ॥ ३७ ॥

कहे मीयाजी सुनहो पिताजी धनुषको पन छीन करो ।
 कहे तजी देउ प्राणके वर एही वर ॥ ३८ ॥
 करुणा मिथु दयाल जीयाकी जानीये ।
 पीतांबर कमी बांध धनुषकु भागीये ॥ ३९ ॥
 भयो तहां जय जयकार भूप सब खीमीयाये ।
 बाल्कसे श्री गम जानकी वर पाइये ॥ ४० ॥
 लखि लगन पत्री अवधके नाथकु ।
 जीने है मकल नरेश ले आवो बरानकु ॥ ४१ ॥
 दशारथे गुरु पधगय पत्री बंचाइये ।
 रच्यो मिथीलेश विनान गम ब्याहे चालीय ॥ ४२ ॥
 तब बोले गुरु वर्षीष मुनिकु नोहोता दीजीये ।
 मकल माज तजो जाय बेर नही कीजीये ॥ ४३ ॥
 दशरथ अनि आनंद द्रव्य लृटाईयो ।
 भरत महा सुख पाय बगत सजाईयो ॥ ४४ ॥
 गज रथ माज बहोत और गीनती नही ।
 नालखी पालखी ढोल बहुत सोभालही ॥ ४५ ॥
 दशरथ चढे गज माज वर्षीष बैठे नालखी ।
 शत्रुहन चढे है तुंग भरत बैठे पालखी ॥ ४६ ॥
 देव आये विमान मुनि सब रथमें ।
 पच रंग धजा फहगत बगतके विचमें ॥ ४७ ॥
 निकमी मकल बगत नगर बाहेर खडी ।
 सोभा बरणी न जाय धन्य एही घडी ॥ ४८ ॥

सुमगी चले श्री गम जनकपुर देशकुं ।
 पहोंचे जनकपुर जाय सब भई नरेशकुं ॥ ४९ ॥
 उठे लक्षण गम मिले जाय तानसु ।
 भेटे परमपर ब्रान मिले सब साथसु ॥ ५० ॥
 विछाये रेसम पाट फुवारे छुउ रहे ।
 तहां उतरे अवध नरेश तहां सुख निन नये ॥ ५१ ॥
 जनक सभा भई भोग जनक गनीयों कहे ।
 होवे सीयाको व्याह लज्जा तबेही रहे ॥ ५२ ॥
 अंतर यामी गम जानी है जीयाको ।
 भरेहे अखुट भंडार स्तुति सुनी सीयाकी ॥ ५३ ॥
 मोभीत सीता राम कनक मंडप तले ।
 शिर मोनेका मोड उर मुक्ता हले ॥ ५४ ॥
 वग्धन अपर अनोपके मुक्ता मोलके ।
 सुंदर लोचन लोल कमल मानु भोगके ॥ ५५ ॥
 सुरंग चुनडीके नीकट पीत पट छा ख्यो ।
 अरुण वरण घन श्याम चपलता हो ख्यो ॥ ५६ ॥
 श्रीगम भुजाके निकट सीया भुज यों लसे ।
 मरक मणिके खंभ मनु कंचन कमे ॥ ५७ ॥
 सीया भूषण प्रतिविंश गम छबि उर धरे ।
 मनु जमुना जल मध्य दिपक बरे ॥ ५८ ॥
 जनक ललीको ध्यान शंकर हिरदे धरे ।
 ब्रह्मा रूप निहाल इन्द्र पूजा करे ॥ ५९ ॥

देवन वरसे पुष्प मेदनी सब थरहरे ।
 होत जनकपुर ब्याह राम भमरी फरे ॥ ६० ॥
 राम भये घन श्याम मीया भई दामिनी ।
 मुनि भये चंद चकार चकवी भइ भामिनी ॥ ६१ ॥
 राम भये तन गौँ सीया भई शामनी ।
 शासदसें बुद्धिवंत विविध भई भामिनी ॥ ६२ ॥
 सुखनर मुनि आनंद सुमन वरसा करे ।
 ब्रह्मादिक मुनि देव मबे जय जय करे ॥ ६३ ॥
 ए छवि जुगल कीशोरकी मुनिजन ध्यावही ।
 तुलभी मीनागम स्वरूप उर आनही ॥ ६४ ॥
 लखि लखि विविध विनोद वेद जश गावही ।
 मीयागम भजन चिना जनम प्रिथ्या करी जानही ॥ ६५ ॥

* ॥ इति श्री जानकी मंगल संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री कबीरजीना मंगल ॥ *

* ॥ मंगल ॥ १ ॥ *

चल मनगुरुके हाट, ज्ञान बुध लाईए ।
 लीजे साहेबको नाम, परम पद पाईए ॥ १ ॥
 साहेब सब कछु दीन, देवनकुं कछु ना रह्या ।
 तुमही अभागन नार, अमृत नजी विष पीया ॥ २ ॥

गईती पीयाजीके महेल, पीया संग ना रखी ।
 तेरे हरदे कपट ग्योछाय, कुपत लज्जावसी ॥ ३ ॥

जो गुरु रठे होय, तो तुम मनाईए ।
 हो रहीये दीन आधिन, चूक बक्साईए ॥ ४ ॥

मतगुरु दीन दयाल, दया दील है रहे ।
 तेरे कोटि करम कर जाय, पलक चिन फेर हे ॥ ५ ॥

भलो बन्धो है संयोग, प्रेमका बोलना ।
 तन मन अग्नो शिश, साहेब हमी बोलना ॥ ६ ॥

कहेत कबीर समझाय, समझ हिंदे धरा ।
 जुगन जुगन करे राज, के दुमति परहरो ॥ ७ ॥

* ॥ मंगल ॥ २ ॥ *

मतगुरु दीनदयाल, काल भय मेटीया ।
 पायो दिपक ज्ञान, अमर वर मेटीया ॥ १ ॥

जो कलु देख्या चाहो, चलो सत संगमें ।
 उनसें करो हो सनेह, मिलो उम रंगमें ॥ २ ॥

अविगत अगम अभेव, अखंडीन पूर है ।
 ज्ञिलमिलज्ञिलमिल होय, सदा बहु नूर है ॥ ३ ॥

इंगला पींगला माघ, एही एक स्व्याल है ।
 चंद्र भान गम नाहि, नहाँ मेरे लाल है ॥ ४ ॥

कहें कबीर समझाय, समझ नर बावग ।
 हंस गये सत लोक, उतर भव सागरा ॥ ५ ॥

* ॥ मंगल ॥ ३ ॥ *

उठहो सोहागन नार, प्यार पीयामें करो ।
 झुठो एह संमार, ताहि तुम परहरो ॥ १ ॥
 दिवस चारको रंग, संग नहि लागही ।
 एतो रंग पतंग, नहीं ठहेगव ही ॥ २ ॥
 पांच चोर बड जोर, कुसंगी अनि घना ।
 इन ठगवनके संग, भूमत घर निशदिना ॥ ३ ॥
 जाग्रन मोघत रैन, दिवस घर भुम ही ।
 आप खडे कोतवाल, भली विध लूटही ॥ ४ ॥
 इन ठगवनको गव, पकड क्यों न लीजीए ।
 जो कबहु आवे दाथ, छोड नहीं दीजीए ॥ ५ ॥
 चार कोस पर गांव, बाप पीयाको बसे ।
 द्वादश केरे मध्य, पुरुष एक तहाँ बसे ॥ ६ ॥
 द्वादश नगर मोझार, पुरुष एक देखीया ।
 बाकी सोभा अगम अपार, सुखनी विषेखीया ॥ ७ ॥
 उठन शब्द घन धोर, शंख धुन अनि घणा ।
 तत्त्व चिन्हो तत्वमार, के बाजन रुणज्ञुणा ॥ ८ ॥
 महरम होय कोई संन, सोही भल जान ही ।
 सतगुरु माहेव कवीर, शब्द सन मान ही ॥ ९ ॥

* ॥ मंगल ॥ ४ ॥ *

पीहेर रही रे भूलाय, घना दीन बापके ।
 कर सतगुरुको संग, चली घर आपके ॥ १ ॥

मामा मल्या रे मोमाल, फुआ दश बेनडी ।
 तज मन्वियनको मंग, के मनमुख हो खडी ॥ २ ॥
 मान पिता सुन बीर, तजे परि वारकुं ।
 उभा महेश्या लोक, चली भव पारकुं ॥ ३ ॥
 बहो न मिलना होय, पीहेरके लोकमें ।
 चली है अपने देश, पूर्वले जोगसें ॥ ४ ॥
 लाध्या अवघट घाट, कमल दल छेदीया ।
 भंशगुफाके घाट, निरंजन भेटीया ॥ ५ ॥
 चढ़ी है कलसपर जाय, अगम घर गमकीया ।
 निगधार निरलेप, पयाना वहाँ कीया ॥ ६ ॥
 अगम महेल में जाय, मिली है पीवकुं ।
 होरही ब्रह्म स्वरूपके, परहर जीवकुं ॥ ७ ॥
 अधर दिप अस्थान, पुरुष एक सार है ।
 साची कहें कबीर, सोही भरथार है ॥ ८ ॥

* ॥ मंगल ॥ ५ ॥ *

अखंड साहेबको नाम, और सब खंड है ।
 खंडित मेरु सुमेर, के खंड ब्रह्मांड है ॥ १ ॥
 तीर्थ बन धन धाम, माया सब द्रुंद है ।
 लख चोरासी जीव, पड़े जम फंद है ॥ २ ॥
 जीनको साहेबसें हेत, सोई निर्वंध है ।
 उन संतनके संग, सदा आनंद है ॥ ३ ॥

चंचल मन थीर गख, वाही भल रंग है।
 उलट नीकट भर पीव, तो अमृत गंग है॥ ४ ॥
 दया भाव घट गख, भक्तिको अंग है।
 कहें कबीर चित चेत, ए जगत पतंग है॥ ५ ॥

* ॥ मंगल ॥ ६ ॥ *

पियाको मिलन कैसे होय, गह बांकी धनी।
 आडा ओघट धाट, मिले कैसे पीवारी॥ १ ॥
 चहुंतो चब्बो नव जाय, चहुंतो गिरगिर पहुं।
 फिर फिर उदुरे संभार, चरण आगे धरु॥ २ ॥
 निकट बारीक बाट, तो जीणी गेलरी।
 अटपटी तेरी चाल, मिले कैसे सेलरी॥ ३ ॥
 नज मन कुमत विकार, सुमन संग लीजीए।
 सतगुरु शब्द विचार, चरण चित दीजीए॥ ४ ॥
 बुंधटको पट खोल, कंथ उर लावरी।
 तेरे शिरपर माहेब कबीर, मीले क्युं न बावरी॥ ५ ॥

* ॥ मंगल ॥ ७ ॥ *

ममझ सुमर सतनाम, जीव गत पाईए।
 नहीं अन्य उपाय, चरण चित लाईए॥ १ ॥
 जहाँ गुरुको अस्थान, तहाँ चली जाईए।
 खुले हैं ज्ञानके नेन, ध्यान धर धाईए॥ २ ॥
 तन मन होय आनंद, हरख गुण गाईए।
 खुले हैं ज्ञानके नेन, नाम लो लाईए॥ ३ ॥

कहें कबीर मननाम. जीव गत पाईए ।
अविगत अलख लखाय, निरख शिर नाईए ॥ ४ ॥

* ॥ मंगल ॥ ८ ॥ *

देख मायाको रूप, निमर आगे किरे ।
भगनि गई बड दूर, चिन नाही परे ॥ १ ॥
माया मोह जंजाल, जीव हिरदे धरे ।
भक्ति विना पिछनाय, जीव कैमे तरे ॥ २ ॥
आशा त्रशा लोभ, कुमत हिरदे धरे ।
बिनगुरु भगत बिहुन, काज कैमे मरे ॥ ३ ॥
जनहरी ढार सस होय, तो गुड ना परे ।
कोटिक कग्म कग्य, अधम जीव ना तरे ॥ ४ ॥
ऊखहीमे गुड होय, भक्तिमे कग्म कटे ।
जम घर बंधन होय, काल कागद फटे ॥ ५ ॥
माया मोह निवार, सुमत हिरदे धरो ।
तज पाखंड अभिमान, तो दुगमत परहरो ॥ ६ ॥
कहें कबीर टंकमार, राम पद मार है ।
हंस गये मन लोक, तो नाम अधार है ॥ ७ ॥

* ॥ मंगल ॥ ९ ॥ *

काया नगर अनुप, देख मा भावही ।
मखीयां बमत नहां पांच, कोई लख पावही ॥ १ ॥
पांचन मंग पचीम, तीन और देखही ।
गुण तीनो परचंड, सोही नीज लेखही ॥ २ ॥

तेनीसो बड जोर, तो धुम मचावही ।
 इन संग मनवो लाग, रैन दीन घाव ही ॥ ३ ॥
 काम क्रोध अहंकार, लोभ मन भाव ही ।
 एह मनुवा बड जोर, हाथ नही आव ही ॥ ४ ॥
 मन जीने बिन मुक्त, कबहु नही पाव ही ।
 जे नर भक्ति बिहुन, सदा दुःख पाव ही ॥ ५ ॥
 क्षमा शील मंतोष, सुमन हिये रख ही ।
 कुमन कुसंग निवार, सन मुख भाख ही ॥ ६ ॥
 गुरु चणे चिन लाय, नाम रस पीव ही ।
 सो पहुंचे मन लोक, जुगो जुग जीव ही ॥ ७ ॥
 ओ घर अगम अपार, तो आप विराज ही ।
 वहु सोभा परकास, रुप अति छाज ही ॥ ८ ॥
 कहें कबीर विचार, तो मान निहारो हो ।
 मपन्नके उतरो पार, शब्द गहो मोग हो ॥ ९ ॥

* ॥ मंगल ॥ १० ॥ *

मनवो लग्यो नज नाम, और नही भाव ही ।
 सुख सागर में वाम, बहोर नही आव ही ॥ १ ॥
 मायाकी जाल पछ्यो, पढ्यो दुःख पावही ।
 काम क्रोध मद लोभ, रैन दिन घाव ही ॥ २ ॥
 काल अपर बल वीर, तो बांध मंगाव ही ।
 तेरे सजन कुटुंब परिवार, काम नही आव ही ॥ ३ ॥
 मोहको मिंधु अथाह, थाह कोई न पाव ही ।

जोरे भये गुलनान, वहोर नहीं आव ही ॥ ४ ॥
सत गुरुके उपदेश, सत मासा सुज ही ।
कहें कबीर विचार, अगम गम बूझही ॥ ५ ॥

* ॥ इति श्री कबीरजीना मंगल संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री राग कहेगना कीरतन ॥ *

* ॥ कहेग ॥ १ ॥ *

हजुरे ममझ मन हजुरे समझ मन । हजुरे ममझ मन भमरा हो ॥
काया रे बाड़ी-कुशल मन जानो (२) । दो दिन फुलनका गजरा हो ।
जल विच मीन-कर्म सुख चेना (२) । दिमर खेंचे जैगा जमरा हो ॥
हस्ती भक्ति विना-भयो नरगद्वो (२) । शिरपर माया केरा लगडा हो ।
आज कालकी तो-खबरज नाहि (२) । शिरपर काल केरा पगडा हो ॥
ज्ञान वैगग विना-भयो नर जोगी (२) । एम कहावन सुधरा हो ।
कहें कबीर-सुनो माई संतो (२) । शब्द न माने मोहि नुगरा हो ॥

* ॥ केहग ॥ २ ॥ *

एक घडीके-सुखके कारण (२) । विवाह करो भला गुणा हो ।
मनषा जनम-सुधागीलो संतो (२) । घोखा क्युं न बिडारो हो ॥
घोडा घोडीका तो-ख्याल छोडदो (२) । सत्य शब्द ल्योने खोली हो ।
माई कहे ए-पुत्र हमारो (२) । बाप कहे छेयो मेरो हो ॥
बे'नी कहे एतो-बीर हमारो (२) । बैयर कहे वर मेरो हो ।

काल कहे सब दूर खडे हो (२)। एतो चागे हमारो हो ॥
आई तलव-गोपाल लालकी (२)। छोडोने स्थाल मनुणा हो ।
कहें कबीर-सुनो भाई मंतो (२)। छोडोनी घरका खुना हो ॥

* ॥ कहेग ॥ ३ ॥ *

तन धर सुखीया-कोई नव देख्या (२)। जो देखा सो दुखीया हो ॥
राजा रे दुःखीया-परजा रे दुःखीया (२)। दुःखीया मकल मंसाग हो ।
चांदा रे दुःखीया-ने सूरज दुःखीया (२)। दुःखीया नवलब तार हो ॥
पाणी रे दुःखीया-पवन दुःखीया (२)। दुःखीया धनी आकाशा हो ।
स्वामी रे दुःखीयाने-सेवक दुःखीया (२)। दुःखीया गोरख जोगी हो ॥
जोगी रे दुःखीयाने जंगम दुःखीया (२)। नपमीकुं दुःख दुना हो ।
कहें कबीर कोई संत जन सुखीया । जेणे आ मन गद जीत्या हो ॥

* ॥ कहेग ॥ ४ ॥ *

अबमें भजु तो नजु कहो कहा को । कहो कहा तुम नाहिं हो ।
एक जोन मकल उजियाग । ज्यों तरुवर फल माँहि हो ॥ १ ॥
माया ब्रह्मभिन मन जानो । बिना ब्रह्म नहीं माया हो ।
जैसे शब्द देहमें बरते । वृक्ष तले ज्यों छाया हो ॥ २ ॥
माटी एक घडे बहु भाँडा । सबमें आप समाना हो ।
लघु दीर्घ अबकहासु रे कहिये । कौन रंक कौन राना हो ॥ ३ ॥
कंचन एक अनेक आभूषण । सबमें एक समाना हो ।
ऐसे ब्रह्म मकल घट भीतर । वा बिन अवर न कोई हो ॥ ४ ॥
लीला अगम अपार बहु विध । सबमें ब्रह्म समाई हो ।
कहें कबीर एक जब दरमे । दिलकी दुर्मनि जाई हो ॥ ५ ॥

* ॥ कहेग ॥ ५ ॥ *

मन गुरु मिलही नो धंवारे छूटे । नहीं तो पचि पचि मरना हो ।
 विन गुरु ज्ञान मूल बिन माया । किस विधि पार उत्तर्ना हो ॥ १ ॥
 पुरुष नाम सकल सुख सागर । जन कोई अवसर चूके हो ।
 नरदेही नर छोड़ पदार्थ । आवत जान विगूचे हो ॥ २ ॥
 माया मोह अपर बल जगमें । सुध बुध सब विमर्गई हो ।
 या संसार सकल जग बूढ़ा । करम धरम देह मांहिं हो ॥ ३ ॥
 बिना विवेक पार न पावे । बहा जाय मझ धारा हो ।
 आशारे कर कर दाना बूढ़े । करम भर्म बहेवारा हो ॥ ४ ॥
 ए संसार सकल जग फंदा । ज्यों मकरीका जाग हो ।
 आप जो बनही आगही उलझे । किनहु न किया निखारा हो ॥ ५ ॥
 खेवण हारमें परचे नाहिं । किस विधि पार ऊतर्ना हो ।
 जब लग गुरु गम शब्दन पावे । तब लग जनम ने मरना हो ॥ ६ ॥
 तब लाए पार न पावे कबहु । गुरु न मिले कनिहारा हो ।
 कहें कबीर राम भज प्राणी । जा सग उतरो पाग हो ॥ ७ ॥

* ॥ कहेग ॥ ६ ॥ *

विज्ञान भेद अब कासे कहीये । जो विनी सो जाने हो ॥
 अस्तुनि निंदा तहाँ कछु नाहिं । लघु दिघ नहीं माने हो ।
 उंच नीचको भेद नहीं कछु । अबमें आतम जान्या हो ॥ १ ॥
 अविगत गत कछु अंतर नाहिं । खीमें धृत समाना हो ।
 लहर तरंग उठे सागरमें । सागरमांझ बिलाना हो ॥ २ ॥
 तूत्ता भूषण कंचन हो गया । नंगको नाम हेगना हो ।

सोवतथे जब जाग उठे तब । सुपनो मग्म विसरानो हो ॥ ३ ॥
जैसे कुंभ धयों सागरमें । बाहर भीतर पानी हो ।
फुटा कुंभ जल सागर मिलीया । या कल्पु अकथ कहानी हो ॥ ४ ॥
जाग्रत स्वप्न शुषुप्ति कहीये । तुरीया माँहि हेरना हो ।
चार अवस्थामें होई वरते । चैतन नाम उहगना हो ॥ ५ ॥
चैतन एक सकलमें वरते । वा बिन अवग न आना हो ।
कहेन कबीर सुनो भाई संतो । ज्योंका त्यों उहगना हो ॥ ६ ॥

* ॥ कहेग ॥ ७ ॥ *

संतो आगती कोउ न घूँझे हो ।

के प्रभु गुपतके अगम अगोचर । इत उन कल्पु ए न सुझे हो ॥
जो वा प्रभुके आद न होती । तो आद कहांते आई हो ।
आद अनाद खोज कर देखो । दोषमें कहा उहेराई हो ॥ १ ॥
जो वा प्रभुके इन्द्री न होती । तो इन्द्री स्वाद को करता हो ।
इन्द्री बिना निष्ट कहे ज्ञानी । बिन ईन्द्री पथ्यर था हो ॥ २ ॥
जो वा प्रभु के बीज न होता । तो कहा करता विस्तार हो ।
बीजही बिन स्वेत नहीं निपजत । ताको कर हो विचार हो ॥ ३ ॥
जोवा प्रभुकुं रूप न होता । तो बिना रूप कहा देखा हो ।
रूप अरूप खोजकर देखो । ताको करहो विवेका हो ॥ ४ ॥
प्रगट योग है गोरव गोमाई । गुपत योग है चोरी हो ।
याही योगते परम पद पावे । कहें कबीर मत मोरी हो ॥ ५ ॥

* ॥ कहेग ॥ ८ ॥ *

ना म्हें धरमी नाहिं अधरमी । ना मैं जनीने कामी हो ।

ना म्हें कहेना ना मैं सुनना । ना मैं सेवक हुं स्वामी हो ॥१॥
 ना म्हें गुपना ना मैं प्रगट । निखंधी सरवंधी हो ।
 ना काहुसे न्यारा रहेना । ना काहुसे संगी हो ॥२॥
 ना म्हें नरक लोककुं जाना । ना मैं सरग सीधारुं हो ।
 सबही करम हमारे कोने । हम करमनसें न्यारा हो ॥३॥
 एही विवेक कोइ विरला बूझें । जो सत गुरुकुं बूझे हो ।
 मन कबीर काहुकी थाये । मन काहुकुं मेये हो ॥४॥

* ॥ कहेग ॥ ९ ॥ *

बनी हमारा प्रेम पियाग । सबमें सबमें न्यारा हो ।
 नहीं बोली भाषामें आवे । नहीं लेखन लेख धारा हो ॥१॥
 सकल मांड जीने प्रगट कीना । राईके अध फ़ाग हो ।
 राइसे पखन करी ढारे । पखन गईमें गारा हो ॥२॥
 गुरु जौहरी भेद बनावे । बिन गुरु अचरज भारी हो ।
 सुखको सागर रूप महानिधि । सोभा सुंदर साग हो ॥३॥
 एकही माहेब सृष्टिका करता । एक कीया परसारा हो ।
 कहें कबीर सुनो भाई मंतो । जिनका सकल विस्तारा हो ॥४॥

* ॥ कहेग ॥ १० ॥ *

मंतो अगम अगोचर ऐसा हो । मैं कही बनलावुं कैसा हो ।
 जो जो कहीए सो सो नाहि । है सो कह्या नहीं जाई हो ॥१॥
 हृष न दरशे मुख नहीं आवे । बिनसे होय न न्यारा हो ।
 एसा ज्ञान कथो जन गुह्यता । पंडित कहो विचारा हो ॥२॥
 बिन देखे परतीन न आवे । कहुंतो को पतीआई हो ।

समझा होय मो अस्थ विचारे । सतगुरु मेन लखाई हो ॥ ३ ॥
 काजी पढे कतेव कुगना । पंडित बदे पुगणा हो ।
 वे अक्षर तो लख्या नहीं जाई । मात्रा लगे नहीं काना हो ॥ ४ ॥
 कोउ धावन है निगकारको । कोउ धावे आकाग हो ।
 वे तो पद दोनुमे न्याग । जाको जानन जानन हाग हो ॥ ५ ॥
 मेना बेना काहामो कहीये । गूँगेका गुड लेना हो ।
 जानी होय मो शब्द विचारे । समझेमे कहा कहेना हो ॥ ६ ॥
 पढनी गुणनी नादी वादी । कहु चतुर्गई भीना हो ।
 कहेन कबीर वे कबहुं न पाले । मो नत्व विरला चीना हो ॥ ७ ॥

* ॥ कहेरा ॥ ११ ॥ *

है कोई मंत मिले आ अवमर । अपने नगर बमाऊं हो ।
 छिन एकमें देउं अभेपद । मंशय मकल मियाऊं हो ॥ १ ॥
 अमरत फलका भोजन देऊं । हँसकी चाल चलाऊं हो ।
 अस्थिर होई डगे नहीं कबहुं । साचा शब्द दटाऊं हो ॥ २ ॥
 कहें कबीर सुनो भाई संतो । सुख मागर बिलमाऊं हो ।
 वेगमपुरको राजा करहुं । अभर पटा लखाऊं हो ॥ ३ ॥

* ॥ कहेरा ॥ १२ ॥ *

मंतो दिलका धोखा भाग्या हो ।

बहोत दिनोका भरमत हुता । सौवन जैसे जाग्या हो ॥ १ ॥
 लोक कहे ए काल बली है । सब काहुकुं खावे हो ।
 हमने जान्यो ए अलख पुरुष है । आपे आप समावे हो ॥ २ ॥
 जैसे लोन पानी तें होई । सब कोई कहन है खारा हो ।

जब वे आनी पानीमें मिली गया । मिट गया ढाम हमारा हो ॥३॥
 जैसे बन्धि काष्ठमें होई । करी न सके पस्कशा हो ।
 जबवे काष्ठ बन्धिमे आया । मिट गया कर्मका पासा हो ॥४॥
 भर्म छाँडी निरभे होई रहेवे । निज तत्व पहिचाना हो ।
 कहें कबीर सुनो भाई संतो । मिट गया खैंचाना हो ॥५॥

* ॥ कहेग ॥ १३ ॥ *

संतो दुखधा कहांसे आई हो ।

नाना विधिके विवार करत है । का तेगी मनि बहोरई हो ॥१॥
 एक कहे निरगुण परमेश्वर । अगम अगोचर साई हो ।
 आवे न जाय मरे नही जनमें । रूप रेख कलू नाहिं हो ॥२॥
 एक कहे सग्गुण परमेश्वर । दश अवनार जो आया हो ।
 गोपीनके संग रास रमत है । वेद पुण्यन गाया हो ॥३॥
 एक कहे परपंची दीसे । मत्य पदारथ नाहिं हो ।
 जो उठि जाय बहोर न आवे । मरि मरि कहां समाई हो ॥४॥
 एक कहे ओ ब्रह्म अखंडिन । और न दुजा कोई हो ।
 आप ही आप गमें परमेश्वर । सत्य पदारथ ओ ही हो ॥५॥
 यों परमाण कीयो मव हा मिल । ज्यौं अंघ नरको हाथी हो ।
 जन्म पिताको क्यों करी जाने । पुत्र न होत संघाति हो ॥६॥
 शब्दानीत शब्द संग रमतां । बुझे बिला कोई हो ।
 कहे कबीर सत गुरुकी समसा । आप निष्टा तत्व ओही हो ॥७॥

* ॥ कहेग ॥ १४ ॥ *

जाके अंतर रेख न आवे । सो भक्त मोही भावे हो ।

रेख न भेख मोह नहीं माया । काया नाहिं सूझे हो ॥ १ ॥
 मान अपमान छाँड़ी गुण अवगुण । अभय परम यद बूझे हो ।
 छाँड़हु आश रहो रे निगशा । महेजे ही मन मेला हो ॥ २ ॥
 चारो वरण धरे लिटकाई । आवरणके घर खेला हो ।
 आपा दोष दुःखावे नहीं काहुं । जानी रहा अजना हो ॥ ३ ॥
 भक्ष नहीं भक्षे अभक्ष नहीं भक्षे । सो आपे भगवाना हों ।
 ओट न कोट कलु नहीं वाके । चोडा ही में चोडा हो ॥ ४ ॥
 आगे न पीछे कबहु नहीं दग्मे । जीत रमे तीन बोहोग हो ।
 करना होय सो करले अब ही । बहोर कहां लगी कहेना हो ।
 कहेन कबीर एकहीके घरमें । पुरा होय के रहेना हो ॥ ५ ॥

* ॥ कहेग ॥ १५ ॥ *

मूल सींच मन मूल सींच मन । मूल सींच मन मारी हो ।
 मूलके सींचे फल फुल लागे । एसे फले तेरी वारो हो ॥ १ ॥
 फलके लागे अनहद गाजे । मूल गई भर्म किंशारी हो ।
 पांच पचीसो निकट न आवे । सुरत करे रखवारी हो ॥ २ ॥
 गगन मंडल विच आमन काया । त्रिकुटि लगी है तारी हो ।
 कहें कबीर नामका कहेग । महीरम होय सो बिचारे हो ॥ ३ ॥

* ॥ इति श्री कहेगना कीर्तन संपूर्ण ॥ *

॥ अथ श्री राग धनाश्रीना कीरतन ॥ *

* ॥ धनाश्री ॥ १ ॥ *

झेणी वेग दिनकर नंदन दीमे । तेणी वेग आवे रुडा रामजो उमीके ॥
झेणी वेग दिनकर नंदन दिमे ॥

झेणी वेग सामन आम न वाणी । तेणी वेग आवे रुडा सारंगपाणी ॥
झेणी वेग जीभ्या रे थामेरे टुंकी । नेणी वेग रखे रुडा राम जाव चुकी ॥
झेणी वेग सज्जन कुटुंब महु पीडे । तेणी वेग रखे रुडा रामजो तुं वेडे ॥
झेणी वेग वेरीढातो मुजनेरे पेख्वे । तेणी वेग रखे रुडा रामजी उवेख्वे ॥
भणे नर्सैयो हरि हुं एठ्लुं रे मागुं । टार गर्मचास हस्तिना चरणे रे लागुं ॥

* ॥ धनाश्री ॥ २ ॥ *

आज मारी आंख फरुकेरे ढावी । साँईङ्ग देशे वहालो सहेजेरे आवी ॥
आज मारी आंख फरुकेरे ढावी ॥

मामरीमी चोरीने मामरीमी चुडी । शामलीया श्रीकृष्णजीनी संगत रुडी
एवे एवे सुकने शामलीया ने मलीशुं जेमजेम कहशे वहालो तेमतेमकरी सुं
देहडीना दमीये ने तीरथना भमीये । नर्सैयाचा स्वामो संगे रंगभरीरमीये

* ॥ धनाश्री ॥ ३ ॥ *

अमो रे अजाचक कोईने न जाचुं । का'नजीतुं बोल अमोसुं रे साचुं ॥
अमो रे अजाचक कोईने न जाचुं ॥

अमो पतिवरता नार केहावुं । कोट करे तो कोईने वश नारे थावुं ॥
एवां एवां वचन सुणीने हरि हसीया । नर्सैयाचास्वामी मारे उर वर वसीया

* ॥ धनाश्री ॥ ४ ॥ *

आवोरे आवे'नी कोई अचरज जोवा । जनमो जनम केरां दुःखगिन खोवा
आवो रे आवे'नी कोई अचरज जोवा ॥

नंदजीनो कुंवर नवल नोधडीयो । दामण बांधीने उंचो रे चडीयो ॥
एरे बालूडो किंईये न जाणे । गेडी मारीने गोरस फोडयुं ॥ आ०॥
सीकुं रे हालेने तमो मुख डोले । ए मोभा नही कोई त्रिभोवन तोले ॥
ब्रह्मारे विष्णु महुकोई एमजगाध्या । नगमैयाचास्वामी कोई वीरले रे माध्या

* ॥ धनाश्री ॥ ५ ॥ *

झे जने कृष्ण कथा रे रम चाख्यो । ते जने मंगार कुचो रे करी नाख्यो ॥
झे जने कृष्ण कथारे रम चाख्यो ॥

झे जन केशव कीरतन अलगा । ते जन थड मुकी ढाके रे बलग्या ॥

झे जन केशव कीरतन भोगी । ते जन मिठु कहिये रे जोगी ॥

झे जन केशव कीरतन नाठा । भणे नर्सेंयो ते जन भवोभव गांठा ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ६ ॥ *

भूतल अवतारनु रे फल एह । जेणे मारा बालाजीसुं कीधो रे सनेह ॥

भूतल अवतारनु रे फल एह ॥

मुक्ति मरखी रे जेह घेर दामी । तोसुं कोजे बीजा अवर उपामी ॥

जपतप तीरथ देहडीना दमीये । नगमैयाचा स्वामी मंगे रंगभरी झीये ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ७ ॥ *

वदन सुकोमल जनुनी रे जुवे । कर पालव लेई मुखहुं रे लुवे ॥

वदन सुकोमल जनुनी रे जुवे ॥

जे जैन जोगीयाचा ध्यान छोडवे । सो हरि गोवाला में रमवारे आवे ॥

यगन करे तहां हरि निमेश ना जाये । मो हरि गोवाला में करमओखाये ॥
भणे नरसैयो हरि हुं एटलुं रे मागुं । जनमो जनम तोरी भक्ति रे जाचुं ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ८ ॥ *

वनिता देखीने केम व्याकुल थयो रे । अंध तुं वेरीडांने हाथे गयो रे ॥
वनिता देखीने केम व्याकुल थयो रे ॥

जेशी रे जनेता तेवी रे परनारी । गर्भनी वेदना तें केम रे विसारी ॥
भणे नरसैयो आपण हरि गुण गईसुं । रुपझुम करतां हरिशरणे रे जईशुं ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ९ ॥ *

आज हुंतो मंदीरमें रतनज जीती । पीया संग रमतां रजनी रेवीती ॥

आज हुंतो मंदीरमें रतन ज जीती ॥

सोकलडीनुं मालबाई मारे मधलुं रे टलीयुं । सरितानुं नीरजईमसुं दरभलीयुं
प्रितनालगनबाई मारे जुगो जुगहोजो । नरमेयाचाम्बामीमागरुदीयामें रहेजो

* ॥ धनाश्री ॥ १० ॥ *

झांझर झमक्यांने आंख उघाडी । झलख्या बदनने सुंदर साढी ॥

झांझर झमक्यांने आंख उघाडी ॥ टेक ॥

आवडा शा ध्यानी थयारे बनमाली । जाणे जोगेश्वर लागी छे ताली ॥

देव चक्षु महुकोई एमज कहे छे । सुंदरी विनारे वहाला कोणज निरखे ॥
नाच्यो नरसैयो एह सुख जोई । पूरण ब्रह्म नहां अवर न कोई ॥

* ॥ धनाश्री ॥ ११ ॥ *

जो तु छोडो रामराय में कैसे छोडुं । तुममेरे छोड अवर का मे जोड़ुं ॥

जो तमे छोडो रामराय में कैसे छोडुं ॥

ज्यां ज्यां जोउ रामराय तुमारी रे पूजा । तुमसें देव अवर नहीं दुजा ॥

तीरथ वनका तो मोहे अंदेशा । तुमारे चरणकपलका भरोशा ॥जो०
सब परहरी गपगय तुमारीरे आशा । मन कर्म बचन बदन गोहीदासा

* ॥ इनि श्री राम धनाश्रीना कीरतन संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री रामचंद्रजी वन पधार्या *
ते समाना कीरतन ॥

* ॥ गग विहाग ॥ १ ॥ *

आज रहो मेरे प्यारे । हो खुबीर आज रहो मेरे प्यारे ।
जदपि तात बन दीयो तुमकुं । कीजो गवन मवेरे ॥ टेक ॥
के मनि फिरी रजा दशभकी । के बुध कहां पलटाणी ।
के कैकई कर गही गम्बे । भैया ऐसे चिचारे ॥ हो खुबीर ॥ १ ॥
धजा चमर औरछत्र चिराजे । खुबीर स्थ शणगारे ।
रुदन करन कौशल्या माता । पूरण पाप हमारे ॥ हो खुबीर ॥ २ ॥
माना बचन सुनत हरि बोले । ए व्रत भयोरे हमारे ।
फिर आयोध्यामें कल आवेंगे । करी प्रणाम मिधारे ॥ हो खुबीर ॥ ३ ॥
विदेही भ्रान खुनंदन मेरे । पुरथे भये है न्यारे ।
तुलसीदास प्रभुदुर गवन कीयो । चलन नयन जलधारे ॥ हो० ॥ ४ ॥

* ॥ विहाग ॥ २ ॥ *

पहोर रहो बल जाउ । हो खुबीर पहोर रहो बल जाउ ।

गखु परदेशी नाथ परुणा । अपने हाथ जीमाउ ॥ हो खुबीर॥
 या मंदीर ए महेल तुम्हाग । या मेडी एहो धाम ।
 वृक्ष सघलां चाल्या समुद्रमें । कोण साखा में साउं ॥ हो खुबीर॥
 जो पिता प्राण नजेरे नुम्हाग । ता पीछे में विष खाउं ।
 तुलमीदाम प्रभु बनकुं सधारे । अब मैं कैसो जीवाउं ॥ हो खुबीर॥

* ॥ विहाग ॥ ३ ॥ *

कहां जई पठाए मेरा माना । हो खुबीर कहां जई पठाए मेरी माना ।
 सुनारे भुवन सुना सिंहासन । नाहि न दशरथ ताना ॥ टेक॥
 उन देवत में ऐसे जीवत हुं । जैसे चंद्र चकोर शशी राता ।
 कहां जुगजीवन कहां कुल मंडण । सुंदर लक्ष्मण भ्राता ॥ २ ॥
 कौशल्या रुदन करत अति भासी । गलीन भये सब गाता ।
 कहा करु जनुनी दोष लगत है । नहीं तर करु उपधाता ॥ २ ॥
 धिकतुं जनुनी धिक तेरे जीव्यो । करी है कपट मुख बाना ।
 सेवक राज करे बन गकोर । कब हु न लिखत विधाता ॥ ३ ॥
 दोउ बन भ्रात संग खुबदनी । नहीं कोउ संगीने माथी ।
 तुलमीदाम प्रभु बनकुं सिधारे । अवध वधे खुनाथा ॥ ४ ॥

* ॥ विहाग ॥ ४ ॥ *

तुम्हारी संगे मैं आवुंगा । हो खुबीर तुम्हारी संगे मैं आवुंगा ॥
 धिंक धिक राज काज धिक या सुख । तुम बिल्लुरे दुःख पाउंगा ॥
 क्रीट मुगट पटकके झटकके । शिरमें जटारे बढाउंगा ।
 छपन भोग तजी आरोगत । जुठे बन फल खाउंगा ॥ हो खुबीर॥
 विमल कलम धरुं मेरे शिर पर । शितल जल भरी लाउंगा ।

हेम ग्रीष्म और वर्षा जानके । पर्णकुटी बन लाउंगा ॥ हो रघुवीर॥
 मुख न देखु पापनी कैकड़िको । मुंह अपनो न देखाउंगा ।
 जानकी रघुनाथ मुख पर । पुनि पुनि देही मगउंगा ॥ हो रघुवीर॥
 मैं जो दाम दामको निको । मैं कैमे गजा कहाउंगा ।
 बदन है भ्रान मैं प्राण ममर्थो । जन यशबंत बल जाउंगा ॥ हो० ॥

॥ विहाग ॥ ५ ॥

मोहे संग करी लीजे । हो रघुवीर मोहे संग करी लीजे ।
 बेर बेर पुर जाओ भग्न कहे । कौन पे आईश दीजे ॥ टेक ॥
 जो मेरे जीया दो जानन हो । कहो कबहुं मैं गावी ।
 तो तुम तजो भक्तजन जीवन । युं मैं अंतर हो मावी ॥ १ ॥
 जदपि हुं अपगाधि अधममनि । कुटिल जनुनीको जायो ।
 प्रणत पाल सुभाव कोपल अनि । एहो शग्ण तकी आयो ॥ २ ॥
 दीन बचन तब श्रवणे सुनके । नयन नीर भरी आयो ।
 तुलसीदास प्रभु प्रित जानके । भग्न बांहे उर लायो ॥ ३ ॥

* ॥ विहाग ॥ ६ ॥ *

तुम घर जाओ मेरे बीर । भरतजी तुमघर जाओ मेरे बीर ।
 अयोध्या पुरीमें गज्य करज्यो । नहाज्यो सरजूके तीर ॥ टेक ॥
 भुखेकुं कलु भोजन दीजो । नागेकुं पट चीर ।
 रुदन करन कौशल्या रे माना । जईने बांधावजो धीर ॥ भरतजी ॥
 सीना सती जती संगे लक्ष्मण । चले हैं समुद्रके तीर ।
 तुलसीदास प्रभु दूर गवन कीयो । मिलकर चिलुडे बीर ॥ भरतजी ॥

* ॥ विहाग ॥ ७ ॥ *

अब तो होगयो चैन । बे'नी मोरी अबतो हो गयो चैन ।
 मेरे गम लध्मणकुं देखी । जलने ते तेरे नैन ॥ टेक ॥
 ए बनमें वानर र्गिछ बमन है । बहु बाधनकी संगा ।
 कैमे निंद पड़न मेरे सुनकुं । भोमो करेंगे सेजा ॥ बे'नी ॥ १ ॥
 कौशल्या रुदन करन अनि मारी । कबहु न पड़े दिन रेना ।
 तुलसीदास प्रभु दूर गवन कीयो । बीरा दोनु दूर ॥ बे'नी ॥ २ ॥

॥ विभास ॥

नमो नमस्कार तेरे पावलेकुं देवा । नमो नमस्कार तेरे पावलेकुं देवा ।
 देवा मोमे दूर गये । चरण कपल सेवा ॥ टेक ॥
 धिक राज धिक पाट । धिक अयोध्या तेरी ।
 गम गये मैं राज करुं । धिक पड़े बुध मेरी ॥ नमो ॥ ३ ॥
 धजा चमर और मिंहासन । ले धर सुन आगे ।
 कैकईके कठीन बचन । उग्र वान लागे ॥ नमो ॥ २ ॥
 सुमित्राके सुन संग मिथारे । मैं स्त्रो अभागी ।
 कैकईके कुख आये । बहोत लाज लागी ॥ नमो ॥ ३ ॥
 धर्मी खोदु सेज करुं । निंद भरी न सोउ ।
 जे जे पंथे गम सधार्या । ते ते पंथ जोउ ॥ नमो ॥ ४ ॥
 कहे माना कैकई । तुने बगल मान कीनो ।
 तान मुन बैकुंठ मिथारे । तुन जीव दीनो ॥ नमो ॥ ५ ॥
 जबमे गम बिछरे भये । गृहे बन कीनो ।
 तुलसीदास गम वियोगे । भरत योग लीनो ॥ नमो ॥ ६ ॥

* ॥ विहाग ॥ ८ ॥ *

देखो कपि गज भग्नजी आये । देखो कपिगिज भरतजी आये ।
 मम ही पावरी शिरपर जाके । करो अंगुरी रघुनाथ बनाये ॥ टेक॥
 छीन शरीर भयो बीरके बिछुरे । राजके सुख विसराये ।
 तप अरु लघु धीरना सीमा । सम धर्म सबही शिखाये ॥ देखो ॥ १ ॥
 पुष्प विमान दूरही ठाडे । चितवत प्रभु पधराये ।
 अनि आनंद भेटे कैकई सुन । करत दंडवत उठाये ॥ देखो ॥ २ ॥
 वे देखो आंसु परत पीठ पर । गिरी रहत लोचन जल छाये ।
 ऐसे मिले सुमित्रा सुनकुं । अनल नन ताप नशाये ॥ देखो ॥ ३ ॥
 यथा योग भेटे पुरवासी । शूल गई सुख मिंधु बढाये ।
 सीतारामचंद्र मुख निरखत । नुलमी दासके नयन मराये ॥ देखो ॥ ४ ॥
 ॥ इति श्री गमचंद्रजी वन पश्चार्या ने समाना कीमन संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग विहागना कारतन ॥ *

(आज रहो मेरे प्यारे हो रघुवीर ए राग ।

* ॥ विहाग ॥ १ ॥ *

चलत प्राण संग रोई । काया चलत प्राण संग रोई ।
 तुम तो प्राण गवन गृह कीनो । हमकुं चलेरे बीगोई ॥ टेक ॥
 तुम्हारी संगे में तो बहोत सुख पायो । मल मल बस्तर धोई ।
 ए काया चली जाय पलकमें । नाम ना लेवे कोई ॥ काया ॥ १ ॥

प्राण कहे सुनो बहोरी रे काया । हम तुम संग न होई ।
 तुम सम्बी कोटी एक मोचन छोड़ी । मंगे न चलीया कोई ॥काया॥
 सुरना देखी देखी माना रुवे । बांहि पकड रुवे भाई ।
 लट लट काया त्रियाजन रुवे । हंस अकेलो जाई ॥काया॥ ३ ॥
 काहुकी माना पिना सुन कहाको । कौन पुष्प कौन जोई ।
 निकमत प्राण काहु न देख्यो । काढो काढो होई ॥काया॥ ४ ॥
 शिव मनकादिक ब्रह्मा नारद । शेष महसु मुख सोई ।
 जीने जीने देहो धरी त्रण गुणमें । मो अमर न रहा कोई ॥काया॥५॥
 कहेत कबीर सुनो भाई मंतो । देखो दीलमें जोई ।
 जे आ पदको अर्थ बिचारे । नाकुं आवागवन न होई ॥काया॥६॥

* ॥ विहाग ॥ २ ॥ *

जुगनी माया जुठीरे । जीवडा जुगनी माया जुठाँ ।
 पांच पचीस ने सो लगी सांधो । अंतकाल जावुं उठी ॥ टेक ॥
 काका पितरीयाने भई भत्रीजा । दिन दश कुटेने पिटे ।
 केड तणो कंदोरो रे लीधो । हाथनी लीथी अंगुठी॥जीवडा॥१॥
 शब्द कहे पण सुजे रे नाहिं । हैया केरी फूटी ।
 कहेत कबीर सुनो भाई मंतो । लोमे लीधो रे लूटी ॥जीवडा॥२॥

* ॥ विहाग ॥ ३ ॥ *

परदेशीनो सो पनियारो रे । परदेशीनो मो पनियारो ।
 कुंज भुवननो सेठो रे मीठो । नेनो गाँठे गाँठे समन्यारो रे ॥ टेक ॥
 स्वर्ग गया कोट निकम गई अटीयाँ । माटीमां मिल गयो गारो ।
 खुट गया नेलने बुजगई बतीया । मंदिर भयो अंधीयारो रे॥परदेशी ॥

वणज्ञ करनो वणज्ञारो रे आव्यो । लेई गयो जोवन हमारो ।
कहेत कबीर सुनो भाई मंतो । लादी पोइ चल्यो वणज्ञारो रे ॥ परदेशी ॥

* ॥ विहाग ॥ ४ ॥ *

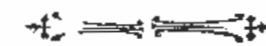
घर कर दगीया माँहिरे । मच्छी घर कर दरीया माहि ।
खीला तोग दोदन वासी । अंतकाल कहां जासी ॥ टेक ॥
जहां नहीं जाल जहां नहीं ढीमग । जहां नहीं वनकी रे छांया ।
अमर लोक जहां मर्म न पावे । उतपत पग्लो न होई ॥ मच्छी ॥ १ ॥
मबसें बढ़ारे शब्दकारे टेका । मब सुख है ता माँहि ।
कहेत कबीर सुनो भाई मंतो । ग्रहो शब्दकी बाँहि ॥ मच्छी ॥ २ ॥

* ॥ विहाग ॥ ५ ॥ *

मारग चलना हैरे भाई । मारग चलना हैरे भाई ।
दश दिन आगे दश दिन पीछे । मन कोई करो रे बड़ाई ॥ टेक ॥
काहुका घर कोश पांच पर । काहुका दश वीशा ।
संतनका घर ब्रह्म पोरमें । जहां गम जगदीशा ॥ मारग ॥ १ ॥
हटवाडे कलू लीया न दीया । कलू हाटका हटकाया ।
ओछा पुग मोई भल जाने । जीने एही वणज्ञ चलाया ॥ मारग ॥ २ ॥
जमकी रे बेडी शिग्गर ठाढ़ी । चेतन हो मेरे भाई ।
कहेत कबीर सोही जन उगरे । जीन सुमर्या रघुगई ॥ मारग ॥ ३ ॥

॥ इनि श्री राग विहागना किरतन मंपूर्ण ॥

॥ अथ श्री धुनना कीरतन ॥



* ॥ धुन ॥ १ ॥ *

भजो सीताराम धनुषधारी । भजो धुबीर राम धनुषधारी ।
धुकुलमां अवतार लीयो है । मंगल गावे पुरनारी ॥ टेक ॥
चार कुंवर राजा दशरथके । तिलक विराजे अनि भारी ॥ भजो ॥ १ ॥
चरणकमल पाये पनीयां सोहे । ध्यान धम है नमनारी ॥ भजो ॥ २ ॥
सीता राम अयोध्यापुरके । जाई जनककी प्रतिपाली ॥ भजो ॥ ३ ॥
एक ही चाण असुर सब मारे । चरण लृवन अहल्या तारी ॥ भजो ॥ ४ ॥
रावणके दश मुम्लक छेदे । वास भुजा न्यारी न्यारी ॥ भजो ॥ ५ ॥
रावण मार्यो विभीषण स्थाप्यो । कोयो है लंकाको अधिकारी ॥ भ. ॥ ६ ॥
कहेन कबीर सुनो भाई संतो । राम भक्ति जुग जुग प्यारी ॥ भ. ॥ ७ ॥

* ॥ धुन ॥ २ ॥ *

भजो दशरथ नंदन जनक लली ।

दोउरे भैया जनकपुर आये । पुष्प विछावे गली रे गली ॥ भजो ॥
कुंवरी चली रे मनावाने गवरण । वर पायो धुनाथ भली ॥ भजो ॥
तोख्यो धनुष राय पत्र हारे । राजा जनककी भली रे बनी ॥ भजो ॥
फुले फिरन आनंद मगनमें । वरमाला पहेनाय चली ॥ भजो ॥
परणे कुंवर राजा दशरथके । मंगल गावे पुगकी अली ॥ भजो ॥
तुलसीदास प्रभु शरणे आये । हिम्दे वसो मेरे एही भली ॥ भजो ॥

* ॥ धुन ॥ ३ ॥ *

भजो धुवर राम जुगल चरणा । भजो सीयावर राम जुगल चरणा ।

इनमें अयोध्या निर्गमल सरजू । उन मथुरां शीतल जमुना ॥ भजो ॥
 इनमें कौशल्या मैया गोद खेलावे । उनमें जशोदा झुलावे पलना ।
 इनमें दशरथ कुंगा कहाये । उनमें कहाये नंदजीके ललना ॥ भजो ॥
 इनमें क्रिट मुगुट शिर गजे । उनमें मोर मुकुट धरना ॥ भजो ॥
 इनमें कर पर धनुष विराजे । उन मोस्ती मुख पर धमना ॥ भजो ॥
 इनमें जानकी वाम विराजे । उन राधे संग कीयो रमना ॥ भजो ॥
 इनमें अहश्या शत्या तारी । उन कुबजा संग कीयो रमना ॥ भजो ॥
 इनमें सायर शत्या नारी । उन गिरिवर नव पर धरना ॥ भजो ॥
 इनमें लंकापनि रावग मार्यो । उन कंम पछाड़ी बहायो जमुना ।
 तुलसीदास बल जाय छवीपर । जुगल चण्ठ पर चिन धरना ॥ भजो ॥

* ॥ धुन ॥ ४ ॥ *

भजो दशरथ नंदन सीयागमा ।

दल बादल निलमणि तन सोहे । मेघ वरण प्रभु घनश्यामा ॥ भजो ॥
 क्रीट मुगुट काने कुंडलकी छो । निरसी लजीत कोटिक कामा ।
 संग सखा सरजू तट बिहरन । धनुष विराजे कर वामा ॥ भजो ॥
 जन हरियानंद रूप निहारे । रमना गावे गुण आमा ॥ भजो ॥

* ॥ धुन ॥ ५ ॥ *

प्रभु नग्हरिया प्रभु गिरधरीया । प्रह्लाद उवारे नग्हरिया ।
 रामकृष्ण दोउ नाम बड़े है । तामन तरन अभय करीया ॥ प्रभु ॥
 वामन रूप छले बलि गजा । तीन पैर वसुधा करीया ॥ प्रभु ॥
 खंभ फोरी हिरण्याकुम मारे । जन प्रह्लाद अभय करीया ॥ प्रभु ॥
 रावणके दश मुस्तक छेदे । वीस भुजा खंडन करीया ॥ प्रभु ॥

जमुनाके नीरेतीरे धेनु चगवे । कर मुस्ली बनवन फिरीया ॥ प्रभु ॥
केमी मारके कंप पछारे । उग्रमेन छनर धरीया ॥ प्रभु ॥
कहेत कवीर सुनो भाई मंतो । अधम उद्घास्न नमहस्ति ॥ प्रभु ॥

* ॥ धुन ॥ ६ ॥ *

भजो गोविंद गोविंद गोपाला । भजो सुख मागर हरि नंदलाला ॥
गोकुलमें हरि मथुरां मिथारे । मंग मखा सहु ब्रिजबाला ॥ भजो ॥
देवकीका छैया बल मदजीका भैया । कंप निकंदन नंदलाला ॥ भजो ॥
बृंदावनमें धेन चगवे । मोरली बजावे कृष्ण काला ॥ भजो ॥
कहेत कवीर सुनो भाई मंतो । तीन भुवनके भूपाला ॥ भजो ॥

* ॥ धुन ब्रिजनी ॥ ७ ॥ *

कनैया बल जाउं अबन बसुं तेरे गोकुल गाम ॥
घर आये गौवाने घर आये खाल ।
अजहु न आये मेरे मदन गोपाल ॥ कनैया ॥ १ ॥
कालीरे कामलीयाने काला हरि कहान ।
जमुनाके तीरे कहान मागे दधि दान ॥ कनैया ॥ २ ॥
मोनेकी बांसरीया सोहे रूपेका झँझीर ।
गावन बजावन कहान तट जमुनाके तार ॥ कनैया ॥ ३ ॥
जमुनाके निर तोर बंगला बनाउ ।
बंगलेकी भिनर लहर लगाउ ॥ कनैया ॥ ४ ॥
मीग कहे प्रभु गोधर लाल ।
मन कोई पडोरे हमारो ख्याल ॥ कनैया ॥ ५ ॥

* ॥ धुन ॥ ८ ॥ *

मोहि भावे हो श्री रामजी लला मोहि भावे हो ।

चागे भैया चतुर सुजान, भैया गोद खेलावे हो—
 खेलावे हो—श्री रामजी लला मोहे भावे हो ॥
 शिर मोहे जम्कमुंबी पाघ ।
 काने कुँडल झनकावे हो झनकावे हो ॥ श्री रामजी ॥ १ ॥
 लाल पनैया मोही ए हग्नि पाय ।
 अयोध्या नगर फिरे आवे हो फिरी आवे हो ॥ श्री रामजी ॥ २ ॥
 बान धनैया सोहे हरिने हाथ ।
 खेलन मखा संग आवे हो मंग आवे हो ॥ श्री रामजी ॥ ३ ॥
 दोनुरे भैया सुंदर श्याम ।
 लक्षण चमर ढोलावे हो ढोलावे हो ॥ श्री रामजी ॥ ४ ॥
 अग्रदासके मीया रघुवीर ।
 नयना माहि समावे हो समावे हो ॥ श्री रामजी ॥ ५ ॥

* ॥ धुन ॥ ९ ॥ *

रघुवंशी लला निहारे बदन पर अनंत कला ॥
 छोटे छोटे धनैगा छोटे छोटे तीर ।
 खेलन चले प्रभु मरजू तीर ॥ रघुवंशी ॥ १ ॥
 मुखमें बीड़ी अरु बेन स्माल ।
 जीत चिनवे नीन भये हे निहाल ॥ रघुवंशी ॥ २ ॥
 जहां जहां पडे भक्तनकुं भीड ।
 लटकन आवे तहां सीया रघुवीर ॥ रघुवंशी ॥ ३ ॥
 अग्रदास प्रभु मरजू तीर ।
 बिचमें मिलीगये मीया रघुवीर ॥ रघुवंशी ॥ ४ ॥
 * ॥ इनि श्री धुनना कीरतन संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री वन लीलानी आंख मिचामणी ॥ *

वृद्धावनमारे, महियर सहु मली चालो ।
 सुखमां महालो रे, भवना दुःखडां द्यालो ॥ १ ॥
 जईने रमीसुं रे, सुंदर वरनी संगे ।
 आध्रण सजीयां रे, मनना गमनां अंगे ॥ २ ॥
 वनमां जईने रे, निष्ठ्या सुंदर वरने ।
 वदन निहाली रे, वलनी लाग्यां चरणे ॥ ३ ॥
 श्री हरि बोल्या रे, सुं छे नमाग मनमें ।
 गधाजी बोल्यां रे, लिला रमासुं वनमें ॥ ४ ॥
 श्री हस्थि मांड्यो रे, रमवा रास विलाम ।
 गोपी सहु मंडल रे, गधा प्रभुजीनी पास ॥ ५ ॥
 अबला आलापे रे, गोविंदना गुण गाये ।
 मोहन मीठडी रे, मध्ये मोरली वाहे ॥ ६ ॥
 गधाजी रंगे रे, जम जम पाडे ताली ।
 नम नम रीझे रे, नटवर श्रीवनमाली ॥ ७ ॥
 एवी एवी लीला रे, श्रीहरि साथे करनां ।
 मुखडुं जोनां रे, मोहनना मन हरनां ॥ ८ ॥
 दुती बोली रे, उपज्यु हमार मनमां ।
 आंख मिचामणी रे, आपण रमीसुं वनमां ॥ ९ ॥

सहियर मधली रे, मध्ये दुनी ढाही ।
 चंद्रावलीनी रे, आँख्यो मिची माही ॥ १० ॥
 भापा बोली रे, चंद्राने चंद्रभाग्या ।
 जईने छुपीयां रे, आड कदमनी छांया ॥ ११ ॥
 शामने सहीने रे, लाव्यां ललीना पासे ।
 त्यारे गधाजी रे, हरि सुं जोईने हसायां ॥ १२ ॥
 दुनी बोली रे, अलबेला अहीं आवो ।
 गधाजी रम्मे रे, जो नमो आँखो मिचाको ॥ १३ ॥
 श्रीहरि बेटा रे, दुनी आँख्यो मिचे ।
 गधाजी चाल्यां रे, वरख वरखनी निचे ॥ १४ ॥
 हरिने ठगवा रे, हलबे हलबे पेडां ।
 चतुर जईने रे, चंपक वनमां बेडां ॥ १५ ॥
 पीली पटोली रे, चंपक वरणी चोली ।
 उबटण कीधां रे, अंगे केमर घोली ॥ १६ ॥
 कनक लतानी रे, वेत्यो विटी अंगे ।
 कोई नव देखे रे, मल्लीयुं एकज रंगे ॥ १७ ॥
 आँख उघाडी रे, चतुर शिरेमण गये ।
 डगले डगले रे, चहादश जोना जाये ॥ १८ ॥
 श्रीहरि सोधे रे, वरख वरख प्रत्ये जोतां ।
 श्रमजल चुवे रे, पीतांवर सुं लोहतां ॥ १९ ॥
 काहुन जडोयां रे, फरी आव्यां ते ठासे ।
 निचुं जोईने रे, मनमेथी शका पाम्या ॥ २० ॥

दुती बोली रे, राधाजी इहां आवे ।
 श्रीहरि बोल्या रे, मुजने सेधी कहाड़ो ॥ २१ ॥
 ललीता पासे रे, राधाजी आंख्यो मिचावे ।
 श्याम मधार्या रे, जहां लगी राधा आवे ॥ २२ ॥
 चतुर चाल्यां रे, ताल तमालक बनमां ।
 कौतक कम्बा रे, घणा मनोग्य मनमां ॥ २३ ॥
 कुंज भुवननी रे, भोमज कहोये काली ।
 लिल कदमनी रे, जोडे जोडे जाली ॥ २४ ॥
 अगर चंदनना रे, कस्तुरीना कादव ।
 तहां जई छुपीया रे, जुगत करीने जादव ॥ २५ ॥
 आंख उघाडी रे, राधाजी लाख्यां जोवा ।
 बनीता विचीक्षण रे, ब्रह्मनी वेदना खोवा ॥ २६ ॥
 सहोयर मधली रे, मली छे एकज टोली ।
 नेपूर उचां रे, लेजो ते नव बोले ॥ २७ ॥
 सहियर मधली रे, बन बन जोईने थाकी ।
 नेहेमां मध्ये रे, दुनीए वाणी भाखी ॥ २८ ॥
 मोहन मलसे रे, पूरण प्रिनज झेने ।
 राधाजी बोल्यां रे, वान मलीछे एने ॥ २९ ॥
 राधाजी बोल्यां रे, हुं एकली नव जाउ ।
 दुती बोली रे, सहु पे आगल थाउ ॥ ३० ॥
 एक जुगत करीने रे, जुवे एक एक अल्पी ।
 तेमां सुंदर रे, राधा माथे कलंगी ॥ ३१ ॥

एवी एवी लीला रे, श्री हरिये कीधी ज्यारे ।
 उडा चाल्यां रे, कुंज भुवनने द्वारे ॥ ३२ ॥
 मधुकर महाले रे, गोविंदना गुण गुंजे ।
 लहेरन उडी रे, श्याम सुंदरजीनी कुंजे ॥ ३३ ॥
 श्री हरि उव्या रे, श्यामा आदर आपे ।
 न्होरा करता रे, रुदीया सरसु चांपे ॥ ३४ ॥
 अबला जीत्यां रे, अमो आहीरडां हार्या ।
 एकने पंथे रे, महुना कारज सार्या ॥ ३५ ॥
 लील कदमनी रे, कोपल सज्या रोपी ।
 सुगन मंग्रामन रे, लाज परम्पर लोपी ॥ ३६ ॥
 अबला बोल्यां रे, आवडा कठण नव थर्डये ।
 दुती बोली रे, श्री हरिने सुं कहीये ॥ ३७ ॥
 आंख मिचांमणी रे, जे कोई हस्ती गासे ।
 नगने नारी रे, महु को पावन थासे ॥ ३८ ॥
 नरसेमहेतो रे, वृदावनमां राचे ।
 एवी एवी लीला रे, जोईने मनडां नाचे ॥ ३९ ॥

* ॥ इनि श्री वन लीलानी आंख मिचामणी संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री दाण लीलाना कीरतन ॥ *

* ॥ दाणलीला ॥ १ ॥ *

ठाड युजरी मेरो दाण दे । माधोजी गोवाला ।
 मागे जटुपनि राय । लगुर कहाँन रे माधोजी गोवाला ॥ टेक ॥
 कहाँकी हो तुम घ्वालनी ॥ माधोजी ॥ कहाँ दधि बेचन जाय ॥ लगुर ॥
 वरसाणे की हम घ्वालनी ॥ माधोजी ॥ मथुरां बेचन जाय ॥ लगुर ॥
 कहाँके हो तुम दाणीया ॥ माधोजी ॥ कहाँके हो कोटवाल ॥ लगुर ॥
 गोकुलके हम दाणीया ॥ माधोजी ॥ मथुरांके कोटवाल ॥ लगुर ॥
 आडोकन्हैयो हो रहो ॥ माधोजी ॥ मागत मही केरां माट ॥ लगुर ॥
 दाण लवींग सोपारीया ॥ माधोजी ॥ गोरस दाण ना होय ॥ लगुर ॥
 छोड कनैया मेरा अंचर ॥ माधोजी ॥ फुटसे मही केरां माट ॥ लगुर ॥
 जाई पोकारु में कंसकुं ॥ माधोजी ॥ पकड मगाबुं में तोही ॥ लगुर ॥
 तेरा कंसकुं हम मार हुं ॥ माधोजी ॥ लेई मथुराको राज ॥ लगुर ॥
 एसो तो हम कब ना सुन्यो ॥ माधोजी ॥ ना माने कंसकी आंण ॥ लगुर ॥
 सूरदास प्रभु घ्वालनी ॥ माधोजी ॥ दाण दई घर जाय ॥ लगुर ॥

* ॥ दाणलीला ॥ २ ॥ *

तुम नंद महेरके लाल रे । तुम काहेकुं बढावत राह—
 —मोहन जान दे ॥ टेक ॥

गढथी गोवालन उतरी । शिर दधिको मांट ।
 आडो कनैयो हो रहो । सो तो मागे दधिको दान ॥ मोहन ॥ २ ॥

कीस गढ़की तुम खालनी । कहा तुम्हारो नाम ।
 सखलकी हम खालनी । प्यारी राधे हमारो नाम ॥मोहन॥२॥
 वृद्धावन अति भलां । बरण बरणके फूल ।
 धेन चरवन जात हो । लाला त्रठ जुमनाके तीर ॥मोहन॥३॥
 तुम्हारे ओढण पामरी । हमारे पहेण चीर ।
 उमटी आई बादली । लाला बरख्या चाहे नीर ॥मोहन॥४॥
 तुम्ही ढोया नंदके । हम भ्रखुभान दुल्हार ।
 तनक दधिके कारणे । काहेकुं बदावत राठ ॥मोहन॥५॥
 ले मटुकी आगे घरी । श्री कृष्णके पास ।
 लेना होय सो लीजीए । लाला बचे सो बेचन जास ॥मोहन॥६॥
 वृद्धावनकी कुंजमें । एकड अंचरा दोर ।
 नाम दधिका लेन हो । लाला चाहन हो कछु और ॥मोहन॥७॥
 सुख भयो आनंद भयो । भले शाम गुण गाय ।
 सुखकी सीमा सी कहुं । तहां सूरदास बल जाय ॥मोहन॥८॥

* ॥ दाणलीला ॥ ३ ॥ *

मेरो गोरस दाण न होय । मोहन लाडीले ॥ टेक ॥
 कबके तुम दाणी भये । कब हम दीनो दाण ।
 गौवां चरवत नंदकी । तुम भयेरे अनोखे कहाँन ॥
 मोहन लाडीले ॥ १ ॥
 हम दाणी निहु लोकके । तुम चागे जुग जुग वार ।
 दाण ना छोडु आपनो । तेरो राखुं गलेको हार ॥
 खालन हठ अंडदे ॥ २ ॥

नयन नचावत चानुरी । बोलत मीठे बोल ।
 मेरो हार करोढको । तेरी सब गौवनको मोल ॥३॥
 ए गौवां तीहु लोक नारन । सब विधि पूरण काम ।
 दुध दही तीहुं लोकमें । तेरो हार लेउं दस दाम ॥ग्वालन॥४॥
 सन जडीत मरी इडुरी । हीरे जडीत मेरो हार ।
 सो तुम राखन चहात हो । कामरीके ओटण हार ॥ मोहन ॥५॥
 ब्रह्मा ताणो पुरीयो । बणीयो बेठो महेश ।
 सो हम ओढी पामरी । नाको पार न पामे शेष ॥ग्वालन॥६॥
 अहो लकुटीयां कर गही । और बांस फुँकनी फेट ।
 मोर पखोवां शिर धरे । तेरे आ शिंगार पर हेठ ॥ मोहन॥७॥
 जीभ्य करत किन ग्वालनी । अबके पाईये गात ।
 दाण दीयो तब जावगी । मैं तो बाबाते नाहिं डरात ॥ग्वालन॥८॥
 यशोदा बांधे दामणे । दामोदेर गोपाल ।
 हा हा कर पाये पढे । तब हमही छोडावन हार ॥मोहन॥९॥
 गरव करन किन ग्वालणी । प्रान ही यमुना नहात ।
 चीर हरे हम नीरमें । काहेकुं करन इनरात ॥ग्वालन ॥१०॥
 हम सुता वृषभाणकी । तुम नंद महरके कहान ।
 प्रेम प्रीत रस मानलो । ढोटा साने करो रे गुमान ॥मोहन॥११॥
 बृंदावन क्रीडा करी । किनो रास विलास ।
 सुरनरमुनि जय जय करे । गुन गावे माधोदास ॥ ग्वालन ॥१२॥

* ॥ दाणलीला ॥ ४ ॥ *

बृंदावन जुमना त्रटे, मोहन बेन बजावे ।

गोपीये मांडयो राम, मोहन बेन बजाये ॥ टेक ॥
 गढथी गोवालन उतरी ॥ मोहन ॥ माथे महीको माट ॥ मोहन ॥
 आडो कनैयो हो रहो ॥ मोहन ॥ मागे महीको दाण ॥ मोहन ॥
 कहांकी हो तुम ग्वालनी ॥ मोहन ॥ कहां दधि बेचन जाय ॥ मोहन ॥
 बरषाणेकी हम ग्वालणी ॥ मोहन ॥ मथुरां बेचन जाय ॥ मोहन ॥
 कहांके हो तुम दाणी रे ॥ मोहन ॥ कहांके हो कोटवाल ॥ मोहन ॥
 गोकुलके हम दाणी रे ॥ मोहन ॥ मथुरां के कोटवाल ॥ मोहन ॥
 सोल वरषकी सुंदरी ॥ मोहन ॥ बार वरषके कहान ॥ मोहन ॥
 सुनो रे लालाजीकी बिनती ॥ मोहन ॥ सुरदास बल जाय ॥ मोहन ॥

* ॥ दाण लीला ॥ ५ ॥ *

पालबहो मेलो मोहनजी । मारगडे मुने जावा धो ।
 आवतां आलीम दाण तमारां । महिमारां बेचावा धो ॥ १ ॥
 तुने मही बेचनां कोण वारे छे । सांभल विनता देही प्यारी ।
 दाण दधिना आलीने तुं । बहेली थारे ब्रिजनारी ॥ २ ॥
 अल्या नारी कहीने ना बोलावीश । छानो रहेने छोगाला ।
 कठन राज छे कंस रायनु । गौ चारी खा गोवाला ॥ ३ ॥
 हुं गोवालीयो तुं गोवालन । फरी गमै तो आवजो ।
 कंस सरीखा सो एक माना । सुखे तेढी लावजो ॥ ४ ॥
 तेढी लाबुं धो मुने जावा । कां रोकी रह्या छो परनारी ।
 गिरधारी तें गोकुल वास्युं । इन्द करनां तुं थयो मोटो ॥ ५ ॥
 मोयो थयो पण मथुरांथी नासी । अडधी गते शुं आब्यो ।
 हवडेने हवडे कहेती रहेने । मेहेणां देनी महीयारी ॥ ६ ॥

होड न करीये वार न करीये । नाग हैडानो हारज नोडुं ।
हार न टुटे माट न फुटे । नबा नगरमां पूछासे ।
नगर्मेनो स्वामी शामलीयो । कहो गोकुल केम रहेवासे ॥७॥

* ॥ दाणलीला ॥ ६ ॥ *

गोपी मही वेचवाने चाली रे । मटुकी में गोरम घाली रे ॥१॥
चाली चाली ते नगर मोझार रे । मामा मलीया छेदेव मोरारी रे ।
हस्थिये प्रेम वासता कीधी रे । हस्मी हरस्मीने ताली दीधी रे ॥२॥
गोपीनुं ध्यान हरिमां ग्युं रे । मही वेचवुं विसरी गयुं रे ।
गोपी शेगीये पाडे मादुं रे । कोई लेजो नंदकुमार रे ॥३॥
कोई मान द्यो मोहनने रे । नौंधडीयो ल्यो नरहनने रे ।
वाई नाम न जाणुं तहारुं रे । ना माने मनडुं मारुं रे ॥४॥
एवी कौतुक वाणी मांभली रे । ब्रिजनारी सहु टोले मली रे ।
अमो वेचुं लु जुगदाधार रे । कोई लो ल्यो कुंजबीहारी रे ॥५॥
ए तो सोल महरनो नाथ रे । गोपीने कां आध्यो हाथ रे ।
एतो चौद भुवननो गय रे । गोपीनो वेच्यो केम जाय रा ॥६॥
ब्रह्मादिकने स्वप्ने ना आवे रे । एने भक्त वेचे तहां वेचाय रे ।
एने भक्त वेचे तहां वेचाय रे । काचे तांतणे वांध्यो जाय रे ॥७॥
गोपीना वचन प्रभु ए थायां रे । मटुकीमां दरशन आयां रे ।
भले मल्यो नरसेयानो स्वामी रे । महु गोपीयो आनंद पामी रे ॥८॥

* ॥ दाणलीला ॥ गग काफी ॥ ७ ॥ *

हो अलबेली रे अलबेली । हो पानली पनीहार ॥

केमर गागर ले चली अलबेली ॥ १ ॥

कहाना उरपर हाथ ना नाखीये हार टूटे ।

हार टूटे रे हार टूटे—हैया केरो हार ॥केसर॥२॥

कहाना मस्तक हाथ ना नाखीये माट फूटे ।

माट फूटे रे माट फूटे—हो मारु मही केरु माट ॥३॥

कहाना वंसीवटना चोकमां से न रोके ।

से न रोके रे से न रोके—साहेलीनो साथ ॥केसर॥४॥

नसैयानो स्वामी मल्यो वाणी मागे ।

वाणी मागे रे वाणी मागे—मागे बैकुंठ वास ॥५॥

* ॥ दाणलीला ॥ राग काफी धुमार ॥ ८ ॥ *

कहो तो केम वसीये रे महारा वहाला ।

गोकुल लूट मंडाणी ॥

नंद तणो नोंबड़ीयो नरवर । थई बैठो छे दाणी ॥टेक॥

कालोने शामलीया सरखो । वालक जोईने पाल्यो ॥

मथुरांमां मही वेचवानो । मारगडो याल्यो रे ॥कहो.॥१॥

एकनु ढोले ने एकनु फोडे । एकनु गौरस खाये ॥

मांहोरे मोहि अटकण बोले । एविपरित केम वेगाये ॥क.॥२॥

एकने वहालो चीर पहेरावे । एकने पहेरावे चोली ॥

एकने वहालो ठीक चढावे । ने एकनु नाखे ढोली ॥क.॥३॥

नार मली सहु भपर भोली । सहियरोनी टोली ॥

नसैयाचा स्वामी वृद्दावनमां । रमे छे होरी रे ॥ कहो ॥४॥

* ॥ दाणलीला ॥ राग काफी धुमार ॥ ९ ॥ *

कहानैयो केडे पञ्चो छे ।

हो मेरे प्यारे-करे छे हमसु वाद ॥ टेक ॥

मथुग में मही बेचन जाऊँ । आई करन अटकाय ॥
 मटकी गही मेरी दधि लूटन है । पीछे कहन तुम जाव ॥ कहाँ ॥ १ ॥
 आज मिले जो नंदजीको छेयो । दान ना देऊँ लगार ॥
 मटकी गहे जो हाथमें तो । नीकासुं मुखमे गार ॥ कहाँ ॥ २ ॥
 पकड ले जाऊँ में कंसपे हो । कराऊँ मन सु भाय भाय ॥
 सब दीनको में वारु साठो । कबहुं ना दाणी ए थाय ॥ ३ ॥
 गोवालनी करन विचारज एमो । जाऊँ अब में नाही ॥
 लई मटकी नीकमी है गधे । मलो है सूरको माई ॥ कहाँ ॥ ४ ॥

* ॥ दाणलीला ॥ राग काफी धुमार ॥ १० ॥ *

छोडो छोडो छवीला छेडलो । हो मेरे प्यारे-

देखे छे दुरीजन लोक ॥ टेक ॥

मारे छेडले जेरे जोईये ते । मागो ते आलु कहान ॥
 लवींग सोयारीने एलची हो । बीडले बामट पान ॥ छोडो ॥ १ ॥
 भोली महीयारी भायग तेरो । मुखमां धयों मुखवाम ॥
 एक बचन मागु अलबेला । तुम यकोर हम दाम ॥ छो ॥ २ ॥
 बलवंत बलीयासु तालो लागो । अरस परम आवे पाम ॥
 सूरदास प्रभु निहारे रे मिलनकु । जनमो जनम तेरो दाम ॥ ३ ॥

* ॥ दाणलीला ॥ राग धुमार ॥ ११ ॥ *

कहाँ नैयो दधी लुटे छे । हो मेरे प्यारे-

लूटे छे नगरी के बीच ॥ टेक ॥

कहे रे ठगोरी में कहा तेरो लुट्यो । कहो मेरे समझाय ॥

मोहे दुहाई नंदबाजाका । छिनमें देउंगी लोडाय ॥ कहाँ ॥ १ ॥
 गतन जडित मोरी ओढणी लुटी । गजमोतन को हार ॥
 कंचन सरखी गवालन लुटी । एमी करन नंदलाल ॥ कहाँ ॥ २ ॥
 पान चावे ने पीचकारी हो ढारे । मधुर मधुर मुसकाय ॥
 सुरदाम प्रभु निहारे मिलन कुं । त्रिजमें बसो नहीं जाय ॥ ३ ॥

* ॥ दाणलीला ॥ गग काफी धुमार ॥ १३ ॥ *

कहाँनैया मोघेर जान दे हो । हो जान दे रे—

अंगो अंग लेउ बलैयाँ ॥ टेक ॥

बहोन दिवस भयो गोकुल बमताँ । कबहु ना दीनो दान ॥
 छोड कहाँनैया मेरो चिर फटेगो । सुन पावेगो भ्रमान ॥ १ ॥
 मेरे बापकी में खरी रे दुलारी । राधे हमारे नाम ॥
 द्रावल देशकी मेंजो आहीरी । बसाणो हे मेरो गाम ॥ २ ॥
 पान चावे ने पीचकारी होडा रे । मधुर मधुर मुसकाय ॥
 स्थाष सुंदर प्रभुकी छवी निग्वत । जन सुरदाम बल जाय ॥ ३ ॥

* ॥ दाणलीला ॥ १३ ॥ *

बलीहारी रे हावे कहाँ जईये रे । जाण अमारु कीधुं ॥
 माग्ग मांहे गोस्स गोपीनुं । वहाले बाहीने पीधुं ॥ टेक ॥
 नामंता नही छुटो नरहर । द्रष्टि थकी नही चुकुं ॥
 धेगीने घर भीतर आंणु । नहाँ बांधीने मुकुं ॥ बली ॥ १ ॥
 ओसीआलो अंगणले उभो । अन्याईयो रे अपार ॥
 नरमेयाचा स्वामी भले मलीया । भगत मुगत दातार ॥ २ ॥

* ॥ दाणलीला ॥ १४ ॥ *

दधि लूटी मेरी दधि लूटी । वृंदावन मोहन दधि लूटी ॥ टेक ॥
तोख्यो हार मेरे चीर मव फायो । धकवा धकवी मटकी फोडी ॥
बरजो जशोदा अपने कुंवरकुं । मोतीयनकी मेरी लर दुटी ॥
मेरो कन्हैयो पालणे झूलत है । फिर जावो ग्वालन जुटी ॥
कहा मेरो हार वहाँ नथ देसर । कुज गलन मेरी लर दुटी ॥
सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । मरवस दे ग्वालन छुटी ॥

* ॥ दानलीला ॥ १५ ॥

को बोले तोमु को बोले । वृंदावन वासी तोसुको बोले ॥ टेक ॥
पांच वग्मको कुंवर कन्हैयो । माथे मुगट भरभर ढोले ॥ वृंदा० ॥
सात वग्मकी कुवरी गधिका । मोतीयन मांग भर ढोले ॥ वृंदा० ॥
एह लीला त्रिज ग्वाल बालकी । नही कोई और हरि तोले ॥ वृंदा० ॥
वृंदावनमाँ दान लेत है । मधुर मधुर मुसकाई बोले ॥ वृंदा० ॥
सूरदाम प्रभु निहारे मिलनकुं । मंद मुसकाई धुधट खोले ॥ वृंदा० ॥

* ॥ आशावरी ॥ १ ॥ *

मथुरगमाँ मही वेचवाने गयांताँ । का'नजीये पालव ज्ञाल्यो रे ॥
मा मा करनाँ आलिगन दीधुं । चुंबन वाली लीधुं रे ॥ टेक ॥
आ जोने अधुर हाँव लाग्यो । आ शो कीधो अन्याई रे ॥
भोजा गुजर नणी हुं बेटी । मारु नाम धनाई रे ॥ १ ॥
माग रे कुलमाँ कावल नहोतुं । रतन सी देहडी वगोई रे ॥
नर्मयाचा वासी संगे रमनाँ । संसार वान जनाई रे ॥ २ ॥

॥ इनि श्री दाणलीलाना किरतन मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री राग आशावरीना कीरतन ॥ *

* ॥ साथी ॥ *

आशावार उर्मी भलो, जो कोई समजे मुजान ॥

आशावरी जब जानिये, तब करीये न आप बखान ॥ १ ॥

* ॥ आशावरी ॥ १ ॥ *

वैष्णव जनतो तेने रे कहिये । जे पीड पगड जाणे रे ।

पर दुःखे उपकार करे तोये । मन अभिमान न आणे रे॥१॥

सकल लोकमां सहुने वंदे । निंदा न करे केनी रे ।

वाच काळ मन निश्चल रखे । धन धन जननी तेनी रे॥२॥

मम हृष्टिने नृष्णात्यागी । परम्परी जेने मात रे ।

जिभ्या थकी असत्य न बोले । परधन नव द्वाले हाथ रे॥३॥

मोह माया व्यापे नहि जेने । दृढवैगम्य जेना मनमां रे ।

गमनाम शुं ताकी रे लागी । सकल निरथ तेना मनमां रे॥४॥

वण लोभीने कपट रहित छे । काम कोव निवार्या रे ।

भणे नामेयो तेनुं दर्शन करतां । कुल एकोनेर तार्या रे॥५॥

* ॥ आशावरी ॥ २ ॥ *

प्राण थकी मुने वैष्णव बहाला । गत दिवम रुदे भालु रे ।

नीरथ नजी वैकुंठ सुख मेली । महारावैष्णव होय नहां जाउं रे॥

अंतर्गम्य मुजने अति रे बलभ छे । दुर्वासा मन भंग कीधा रे ।

में मारु अभिमान तजीने । दसवार अवतार लीधा रे ॥ प्राण ॥

गजने रे मटे हुं तो पक्कीयो । हरिजननी सुध लेवा रे ॥
 उच ने नीच हुं तो काँई नव जाणुं । मुजने भजे ने मुज जेवा रे ॥३॥
 लध्मीजी अधर्मना मारी । ते मार मंतनी दासी रे ॥
 अहमठ तीरथ मार मंतोना चरणे । कोटी गंगाने कोटी कासी रे ॥४॥
 मंत चाले तहां हुं आगल चालु । मंत सुवे तहां हुं जागु रे ॥
 जे मार मंतनी नीदा करे । तेनुं कुछ महीन हुं भांगु रे ॥५॥
 बेडो गाय तहां उभो रे सांझलु । उभो गाय तहां नाचुं रे ।
 वैष्णव जन थकी क्षणु नहीं अलगो । ते मान नर्मया माचुं रे ॥६॥

* ॥ आशावरी ॥ ३ ॥ *

वहाला रे मुने वैष्णव वहाला । हरि ना दाम तनो हुं दाम रे ।
 अनंत कोट ब्रह्मांड तणो पति । तेणे मार रुदीयामां पुर्यो वास ॥टेक॥
 वैष्णव केरं एहज लक्षण । पण पतीज गळे तुलसीनी माल ।
 वैष्णव केरो वेष देखीने । जम किंकर नाशे तनकाल ॥वहाला॥१॥
 उंचा उंचा मंदीर मपन भुवननां । चोक चित्रामण मोहन बेल ।
 वैष्णव जन विश्राम ना पामे । ते घर वहेते पुरे मेल ॥वहाला॥२॥
 वैष्णव केरी एक मढुली । ते आगर सां वैकुंठ कोड ।
 नरमैयाचा स्वामी भले मलीया । जनमो जनमना बंधन छो ॥३॥

* ॥ आशावरी ॥ ४ ॥ *

आबो रे चालो रे हरि जोवा । आबनलारे गोबालनी साथ ।
 मोर पिंछ शिर मुगट विराजे । मोहन मोरली हरिने साथ ॥टेक॥
 गोपी चाल्यां नर हरिने जोवा । श्यामा सोल शणगार मजी ।
 येहले दोहले उभां रहीने । निरखतां नयना भरी रे भरी ॥१॥

मंडली मध्ये मलपतो रे आवे । सुंदर शामलीयो गोपाल ।
नरमैयाचा स्वामी भले मलीया । वैष्णव जन केग प्रतिपाल ॥२॥

* ॥ आशावारी ॥ ५ ॥ *

हरिनी रे भविन विना जे जीवे मजनी । तेनो हिंन अरुल अवतार रे ।
तुलसीनी माला तिलक पण पाखे । बीजा सा जुग शणगार रे॥टेक॥
दश मास उदर दुःख पापो । ते अकाशज घर भार रे ।
देही धगोने इरीतो हास ना कहायो । तेनी जनुनीने धिका रे॥३॥
वैष्णव जा वहाळा नही जेने । तेने किंपा नहिं निघार रे ।
नरमैयाचा स्वामी विना । बीजा अनेक धर्म व्यभीचार रे॥४॥

* ॥ आशावारी ॥ ६ ॥ *

एकवार मासुं जुवो माग वहाला । महाग तनना नाशज जाय रे ।
तमारे रे नयने अमीरम झारे । मारी नव पलव देही थाय रे॥टेक॥
तमारी किया विना कंई मुख नाही । बीजा कीजे कोटि उपाये रे ।
हणि कीमनन विना ताप न जाए । बीजा आनदेव आहागये रे॥५॥
दुरुलभ देही मानवीयां केगी । बली अवनी अवतार रे ।
किया करो तपो नरमैयाने । जे गुण तमाग गाये रे॥६॥

* ॥ आशावारी ॥ ७ ॥ *

मन मान्युं शामलीया माथे । वश कीधां नयनानी माने रे ।
बोल्युं ना गमे मुने बीजा कोईनु । कांपन कीधां कहाने रे॥टेक॥
घंट्यरे वाजेने मन वेंधाये । सृगनाद सांभली काने रे ।
एम वेंधाई रह्युं मन मारु । शामलीयाने गाने रे ॥ मन ॥१॥

जे जे राग जेने अनि वल्लभ । ते रीझे तेने तांने रे ।
नरसैयों रीझेने मनमां भीजे । हरि रम अमृत पाने रे ॥२॥

॥ आशावरी ॥ ८ ॥

आंख आणीयाली महुकोई आंजे । जोयामां छे वेहेरो रे ।
जहां लागी पीयुङ्गे कंड न लागे । आभूषण मर्वे डहेरो रे ॥टेक॥
वहु मचके मोहन नव रीझे । वहाल्ये प्रीत अंतर गत जुवे रे ।
आवर केरां पुष्प अनोपम । शीश ना घाले कोई रे ॥१॥
वहालो माचे गचे ने प्रेमे नाचे । भगन तणे घेर जाचे रे ।
भणे नरसैयो हरि रम रुद्दो । ते ना ठरे घट काचे रे ॥३॥

* ॥ आशावरी ॥ ९ ॥ *

कालो सो छोगालो महागी मजनी । एने मास्गडे कोए दीठो रे ।
नख शिख लगी ए छे राढीयालो । मीठडा पे अनि मीठो रे ॥टेक॥
नयना तणे चाले मारे वहाले । वशीकरण कांई कीधुं रे ।
लागी लगन मगन थयुं मनहुं । चिन हरिने लीधुं रे ॥१॥
चंचल चाल नयन रम कोमल । सुंदर वदन निहालुं रे ।
नरसैयाचा स्वामीनी उपर । तन मन धन मर्वे वारुं रे ॥२॥

* ॥ आशावरी ॥ १० ॥ *

जे कुल हरिनी भगनि ना साधी । ते अपगाधि जीव कमा ।
भूतल भार वही खर मरखा । जीवनडा नरनरकेवसा ॥टेक॥
तेनी रे माता वांशसें ना वरती । पुत्र नपुंसक जनम प्रमाण ।
जीणे हरि जनने शिश ना नाम्युं । तेनो घट धमण समान ॥१॥
तेनी रे माया राख बरोबर । उंचा उंचा मंदीर जान मसाण ।

भणे नरसैयो ते पामर प्राणी । कुंभी नरक पडे निस्वाण ॥२॥
 * ॥ आशावारी ॥ ११ ॥ *

गमे मुने गोपीनो रे वहाल्यो । अवर पुरुषनुं काम कसुं ।
 बाप तणा सम खाईने कहुं छुं । नंदलाल वसे ते गाम वसुं ॥टेक॥
 सुंदर वदन शामलीयाजीनु । तेसुं ते मारु मन वसुं ।
 एने मुकीने बीजाने धासे । तेनुं करमने लाहारे घसुं ॥१॥
 वहाल्यो मले मलीयुं सहुं कोई । गोठडीयालो गुण भंडार ।
 नरसैयाचा स्वामी भले मलीया । वहाले देखाड्यो भूनल रस मार ॥

* ॥ आशावारी ॥ १२ ॥ *

बटल्यो रे नागर नरमैयो रे । जेणे बोटयुं आहीरडांनुं खाधुं रे ।
 अवर रस सहु ढोली ढोली दीधो । प्रेम रमायन लाधु रे ॥टेक॥
 ब्रह्मा उभा वेद वस्त्राणे । लागी जोगेश्वर ताली रे ।
 सुनकादिकने सपने ना आवे । ते गम रमे वनमाली रे ॥१॥
 खांधे कांमगी ने हाथे लाकडी । गौ धेन चरावा जाय रे ।
 नरसैनागरने साथे रे तेडी । मांहे वेसाडीने खाय रे ॥२॥

* ॥ आशावारी ॥ १३ ॥ *

ओधवजी तमो भलेरे पधार्या । मार वहालाजीना वीग रे ।
 कुशल क्षेम छे केशवजीने । कुशल वलभद्र वीग रे ॥टेक॥
 शामलीया ठाकोणा मेवक । शामलीया सा दीमो रे ।
 शामलीयानां सरखां लक्षण । गुण तणा वतरीसा रे ॥ओधव॥
 ओधव हस्तिने एरुं रे कहेजो । एकवार गोकुल में आवो रे ।
 नरसैयाचा स्वामी तमो विना । अमने क्षणुना सोहाये रे ॥ओधव॥

* ॥ आशावरी ॥ १४ ॥ *

अणीयालां लोचन वहालानां । मांहे गतलडी छे रेखा रे ।
 जो मन माने नहीं सखी तारुं । मुज ओङ्गले पेख रे ॥ टेक ॥
 अविलोकथी उनावला रे । सखी जेम छुटे छे तीर रे ।
 एक अवरज कहुं सुन मजनी । तन माजु चित पीडे रे ॥ अणी ॥
 एक उपाय कहुं सुन सजनी । जाय तहाग तननी पीडा रे ।
 नरसैयाचा स्वामीने लेईने । तार रुदीयासाथे भीड रे ॥ अणी ॥

* ॥ आशावरी ॥ १५ ॥ *

शामलीया वहाला सान करुं । नारे नयने नयने नेह धरुं ।
 एकवार धेर आवे महाग वहाला । कहानजी कहानजी कोड करुं ॥
 कोमल अंग कोमल कर राता । हुं लक्ष्मीवर लीधे करुं ।
 नंदनणो सुन नवल नव रंगो । आवनी ओरो भेट धरुं ॥ शाम ॥
 हस्ति जे दिन देखुं सोही दिन लेखुं । बीजुं ते जीव्युं बाल परु ।
 नरसैयाचा स्वामी कहुं तुजने । अंतरजामी आव मलुं ॥ शाम ॥

* ॥ आशावरी ॥ १६ ॥ *

तमारु मुख मेल्युं नव जाये । वाला तमो अमारे मन गमता ।
 ब्रह्मादिकने मोह उपजावे । रूप लक्षण गुण सुंदरता ॥ टेक ॥
 वेण वाहिने मधुर मावो । चंचल चाल तोगी चपलता ।
 मधुरे मधुर स्वरे धेन बोलावो । माननीयोना मन हरता ॥ तमारु ॥
 अगम निगम तमो सर्वे जाणो । तागी लीला ना जाणे वेद वता ।
 नरसैयाचा स्वामी नव जाण्या । ते नर नारी सौ वगुता ॥ तमारु ॥

* ॥ आशावरी ॥ १७ ॥ *

मारु मन तो बहालाजी सुं माचुं । तारा मननी कोण लहे ।
परनारीने माने बोलावो । ते मनीयां नारी केम महे ॥ टेक ॥
सनेह कीजे तो साचो कीजे । साचा पास्वे मनेह कस्यो ।
रात दिवस अलगो नव रहीये । जेम कुंदनमां हीरे वस्यो ॥मारु॥
अनेक नारी नाथ तमारे । अमारे तमो विना कोई नही ।
नर नारीनुं भाग्य ज जोतां । नरमैयाचा स्वामी मामुं जुवे ॥मारु॥

* ॥ आशावरी ॥ १८ ॥ *

कहो ओधवजी आ गोकुलमां । मारग बहाला विना केम रहीये रे ।
तमो मेवक छो जदु नंदनना । आवोनें अमारी कहीये रे ॥टेक॥
माँखण खातोने नामी जातो । पेला गोवालानी माथे रे ।
जनम मरणना बंधन छोडे । ते आपे बंधानो हाथे रे ॥कहो॥
रीम जढ़ी हमे ते दहाडानी । जशोदाये हकलाव्या रे ।
अवध करीने मधुपुरी चाल्या । ते फरी गोकुलमां ना आव्या रे ॥
कपट करी जातो नव जाण्यो । इणे बाह्यो वैकुंठ नाथ रे ।
अमो अमार्ग तन मन सोंप्या । ते आन्मराम मंगाने रे ॥कहो॥३॥
सुख दीधु एणे शामलीये रे । ते विमायां केम जाय रे ।
अदक्षणु अमथी ए नही अलगो । ते क्षणु ना विमरय रे ॥कहो॥४॥
ओधव हस्ति मर्वे जाण्युं । अमारग मननी बात रे ।
नरमैयाचा स्वामी संगे ममतां । मन वग्यो कुशलान रे ॥कहो॥५॥

* ॥ आशावरी ॥ १९ ॥ *

रजनी विती रे अमोधेर आव्या । सुं कीधुं शामलीया रे ।

नहीं बोलुं नहीं बोलुं तम साथे । पिछी प्रीत पातलीया रे ॥टेक॥
 मोलीडुं छुटेने लर लर लटके । हैडे हार वण पहेरे रे ।
 अधुर रेखा काजलनी लागी । नयनां निंद्राये घेर्या रे ॥रजनी॥१॥
 झेने बोल झें बंधज नाहीं । तेने ते सुं अनुमरीये रे ।
 तमकर होय तो छेडो गहीये । जुठडाने सुं कहीये रे ॥रजनी॥२॥
 धणा रे घम्नो जे होय परोणो । तेनुं मन थीर नव होय रे ।
 नग्मेयाचा खासी संग स्मनां । मन वांछित फल होय रे ॥३॥

* ॥ आशावरी ॥ २० ॥ *

अलीरी-आज गई दधि बेचन त्रिजमें । उलटी आप बेकाईरी ।
 बिन ग्रथ मोल लई नंदानंदन । सम्बस देई ग्रहे आईरी ॥टेक॥
 अलीरी-शाम शरीर कमल दल लोचन । पीनांचर कटि केटोरी ।
 मांकरी खोग्में आवत जावत । आई अचानक भेटोरी ॥आज॥१॥
 अलीरी-कोनकी त्रिज वधु कोनकी धरणी । मंद मंद हमी बोलेगी ।
 सकुच रही कछु उत्तर न आवे । मेरो बल करी बुघट खोलोरी ॥२॥
 अलीरी-जवते सुरन ममागम मेगे । ग्रहे आंगन बिख लागेगी ।
 सोवत जागत रैन दिना रे । एही ध्यान मेरी आगेगी ॥आज॥३॥
 अलीरी-मासु नणंद उपचार करन ही । पचहारी को मरम न पायोगी ।
 वैद बोलाय टाढी रही सजनी । तब चिंता रोग वनायोरी ॥४॥
 मन्दीरी श्याम शरीर मुगता फल मोहीये । कोई शामकुं आन मिलावोरी
 माधोदास विश्वकी चिंता । बिन चिंता फल पायोरा ॥आज ॥५॥

* ॥ इति श्री राग आशावरीना किरतन संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री ब्रिजदनिनानु कीरतन ॥ *

ब्रिज विनताते सहु रे टोले मली ।
 आवी उभां छे नंदजीने द्वार रे ॥ १ ॥
 कोई वारोने नंदना कुंवग्ने ॥ टेक ॥
 आवी बेठां छे सहु रे आनंद भयाँ ।
 मध्ये उभा दीवा मुगरि रे ॥ कोई वारोने ॥ २ ॥
 हरिने मुस्तक मुगट सोहामणो ।
 काने कुंडल झालके ई मागां रे ॥ कोई वारोने ॥ ३ ॥
 हरिने हैम कंकन हाथे झालहले ।
 आंगलीये मुद्रिकानी जोड रे ॥ कोई वारोने ॥ ४ ॥
 हरिने हैडे ते भृगुलांछन छे ।
 उपर मुक्तनाफलनो छे हार रे ॥ कोई वारोने ॥ ५ ॥
 हरिने बांहे चाञ्चु बंध बेरखा ।
 आहीर लोके दीवा रणछोड रे ॥ कोई वारोने ॥ ६ ॥
 हरिने पहेण पीनांवर छे ।
 केडे कंदारो कंई सारो रे ॥ कोई वारोने ॥ ७ ॥
 जशोदा रोहीणी सखां हरिने माघडी ।
 गोकुलना छे नंदजी तान रे ॥ कोई वारोने ॥ ८ ॥
 सखी आपण सखां रे हरिने वारतां ।
 बलभद्र सरीखा भ्रात रे ॥ कोई वारोने ॥ ९ ॥

हावे गोकलीयु रे उझड थसे ।
 ज्यारे मधुपुरी जाशे जदुनाथ रे ॥ कोई वारोने ॥ ९ ॥
 सखो असुर तृणावंन आवसे ।
 बगासुर आवी कशे धान रे ॥ कोई वारोने ॥ १० ॥
 बखा बखी असुरो रे आवसे ।
 अगीयर गलसे नानेरां बाल रे ॥ कोई वारोने ॥ ११ ॥
 गोकुल उपर इन्द्र ज्यारे कोपसे ।
 गोवर्धन कोण धरसे एक हाथ रे ॥ कोई वारोने ॥ १२ ॥
 कालुडो नाग दावानल प्रगट थशे ।
 त्यारे आपणा कोण रस्खाल रे ॥ कोई वारोने ॥ १३ ॥
 सखी रुदन करती ए नायका ।
 रुदनां मेहेत्यां जशोदा रोहिणी रे ॥ कोई वारोने ॥ १४ ॥
 नंद उपनंद उतावल करे ।
 ब्रिजवासी आहीर्दांनो माथ रे ॥ कोई वारोने ॥ १५ ॥
 जशोदा रोहिणी मोढेशी बोले नही ।
 से नथी गमतां बाहे झाली रे ॥ कोई वारोने ॥ १६ ॥
 चालो मथुग जातां रे हग्ने वागीये ।
 नगणा नाथने कहिये एक बान रे ॥ कोई वारोने ॥ १७ ॥
 एठले अक्षर स्थ जोडी आवीया ।
 स्थे जाड्या दीडा अथ चार रे ॥ कोई वारोने ॥ १८ ॥
 स्थे धजा पताका जलहले ।
 छत्र झाल्योना तेज अपार रे ॥ कोई वारोने ॥ १९ ॥

कालुडो नाग आडो मे ना उतर्यो ।
 एने गोकुलीये गाम जातां रे ॥ कोई वारोने ॥२०॥
 पापी प्राण लेवाने रे आवीया ।
 अकरु कोणे धर्या एना नाम रे ॥ कोई वारोने ॥२१॥
 अकरु सुंरे करे आपण पापणी ।
 कुलवंती मथुरांनी नार रे ॥ कोई वारोने ॥२२॥
 पुरण प्रीते मथुरगं लेई जावो तहां ।
 कुलवंतीना पुगवा कोड रे ॥ कोई वारोने ॥२३॥
 बलवंताना तेढां पाछां केम वले ।
 जाये थई रहेशे उनपान रे ॥ कोई वारोने ॥२४॥
 नयने नसहरीने रे निहालनां ।
 बलवंते दीधां बहु मान रे ॥ कोई वारोने ॥२५॥
 सहु गोपीकाये जप तप बहु कर्या ।
 माधु जनने दीधां बहु दान रे ॥ कोई वारोने ॥२६॥
 वालाने मथुरगं जावानु महूरन नथी ।
 तेढावो जोषी जोवडावो जोष रे ॥ कोई वारोने ॥२७॥
 महारा सम मथुरां लई जाव तो ।
 तमने नंद जशोदानी आण रे ॥ कोई वारोने ॥२८॥
 रथ हांकनां रथे विर्द्ध वल्यां ।
 रथ हांकयो मथुरांनी वाट रे ॥ कोई वारोने ॥२९॥
 हस्ति हेत करीने रे हेसव्यां ।
 हावे माने जावो तख्छोडी रे ॥ कोई वारोने ॥३०॥

हावे क्षणु एकवार नमो धीर धरो ।
 हावे अमने ना देशो दोष रे ॥ कोई वारोने ॥३१॥
 दिवम बेचार पछी अमो आवीसुं ।
 नाथ नरसेने दीधी अमने धीर रे ॥ कोई वरोने ॥३२॥
 * ॥ इति श्री ब्रिजवनिनानु किरतन संपूर्ण ॥ *

॥ अथ श्री जमुनाजीनी स्तुति ॥

* ॥ राग-गमकली ॥ (केदारो) ॥ *

दरश मोहि भावे । श्री जमुनाजी ।
 श्री गोकुलके निकट बसत है । लहरेनकी छबी आवे ॥ श्री जमुना ॥
 दुःख हरनी सुख करनी श्री जमुना । प्रात ही जे जन नहावे ।
 मदन मोहनजुकी खरी है प्यारी । पटरानी जु कहावे ॥ श्री जमुना ॥
 वृद्धावनमें राम रच्यो है । मोहन मोरली बजावे ।
 सूरदाम प्रभु तिहारे मिलनकुं । वेद विमल जश गावे ॥ श्री जमुना ॥

* ॥ रामकली ॥ २ ॥ *

पतित पावन करन । श्री जमुनाजी ।
 प्रथम ही जाकुं दरशन पायो । कोटिक कलीमल हसन ॥ टेक ॥
 पेठन ही जल तरंग परमन । मिठत जीयको जरन ।
 नाम उचरत सुध बाणी । बुद्धि पोषण भरन ॥ श्री जमुना ॥

उपजन उग्र विगग जाकुं । स्वेच लावन शग्न ।
र हरिकीमू भक्ति दाना । विश्वतारण तग्न ॥ श्री जमुना ॥२॥

* ॥ गमकली ॥ ३ ॥ *

पतिन पावन करन । श्री जमुनाजी ।

प्रथम ही बली दीयो दम्शन । मकल पाप निम्नरन ॥ टेक ॥

जोगी गति जब करी चिननी । पय पानहे मूख भरन ।

नाम सुमिरन सुध ही बाणी । जगमें जश विम्नरन ॥ श्री जमुना ॥

गोप कन्याके एही मंजन । लाल ही गिरधर वरन ।

सुर हरिकी भक्ति दाना । कामिना चित हान ॥ श्री जमुनाजी ॥

* ॥ गमकली ॥ ४ ॥ *

दीन जानी मोहि दीजे । श्री जमुनाजी ।

नंदको लाल मदा वर मागु । दासी गोपनकी कीजे ॥ टेक ॥

तुम हो परम दयाल रूपानिधि । संतजनने सुखदाई ।

तुम्ह रे वाम बमन गधावर । ब्रह्म किडन कुंजविहारी ॥ श्री जमुना ॥

विजनारी मव स्वेलत हरि संग । अदभूत गम स्विलाम ।

तुम्हा रे पुलिन मध निकट कुंज द्रुम । कमल पहोप सुवासा ॥ श्री ॥

श्याम सहित मव नाहावन सुंदरी । जल किडन सुखकरी ।

ताग मध्ये ज्युं चंद्र विगजित । भगी भगी छमकन नारी ॥ श्री जमुना ॥

गनीजीके पाये पहु नित । गृहे काज मव कीजे ।

प्रेमानंद दाम दासी होय के । एह गम नैन भगी पीजे ॥ श्री जमुना ॥

* ॥ गमकली ॥ ५ ॥ *

एह प्रमाद नित पाउ । श्री जमुनाजी ।

तुम्हारे निकट रहु निश्वासुर । गमकृष्ण गुण गाउ ॥ टेक ॥
 मंजन करु जल विमल पावन । चिंता क्लेश नशाउ ।
 तुम्हारी कृपा भानुक तनया । हरिपद प्रित बढाउ ॥ श्री जमुना ॥
 विनती करके एही मागु । अधम स्वांग विमराउ ।
 प्रेमानंद दामको ठाकोर । मदन गोपाल ही पाउ ॥ श्री जमुना ॥ २ ॥

* ॥ गमकली ॥ ६ ॥ *

एही विनतो चिन धरी ए । श्री जमुनाजी ।
 गिरधरलाल मुखारविंद रत्नी । जनम जनम नित करीये ॥ टेक ॥
 संमार मागर विष विषमता । विमुख संग ते ढरीये ।
 काम क्रोध अज्ञान निमिर अति । उर अंतर ते हरीये ॥ श्री जमुना ॥
 तुम्हारे निकट बसु निज जन संग । रूप देखी मन हरीये ।
 गाउ गुण गोपाल लालके । अष्ट व्याधि ते ढरीये ॥ श्री जमुना ॥
 त्रिविधि दोस हर हो कालिंदि । एक कृपा करी थरीये ।
 गोविंददास एही वर मागे । तुम्हारे चरण अनुसरीये ॥ श्री जमुना ॥

* ॥ इति श्री जमुनाजीनी स्तुति संपूर्ण ॥ *

॥ अथ श्री लग्न प्रसंगे गवातां कीरतन ॥



* ॥ राग ॥ धोळ ॥ १ ॥ *

आनंद सागर उलट्यो । सखी आज मोरे मन माँहि रे ।
 अंगो अंग सिल्यां अति घणा । सखी कोने कहाँ नवजाय रे ।

भले प्रगट्या रे (२) श्रीगिरधरलाल (२) द्यो अली हरि ने वधामणी ।
 अमुलब रब हीरे जब्बां । सुवण मोनीनी थाल रे ।
 पालर फसां फुलडां । मंही बेलडीनी जात रे ।
 संघासन रे (२) मेलो ढलके छे हाथ । द्यो अली हरि ने वधामणी ।
 बावन चंवन घंवारी । बच्चे चाँक नवली भात रे ॥
 केमर केरां कचोलडां । माँहि पृष्ठ केरी वरमाल रे ।
 सोवामण रे (२) गावो मंगल चार । द्यो अली हरि ने वधामणी ॥
 ओळंगथी हरी प्रगट्या । सखी वांणीये बहु रंग रे ।
 बाजित्र वागे मोभीतां । भलां ढोलांने भेगी मृदं॥ग रे
 तहां उपज्यो रे (२) सखी अनिमे आनंद । द्यो अली हरिने वधामणी ।
 गोकुलमां हरि प्रगट्या । सखी गोकुल चंद्र महागज रे ।
 हरिदाम कहे मारा मन तना । वाले पूर्या मनोरथ आज रे ॥
 वैष्णवना रे (२) वाले सार्या काज । द्यो अली हरिने वधामणी ॥

* ॥ धोल ॥ २ ॥ *

जीरे वृंदावनथी हरिरे आव्या । हरि आव्या रे (२) आथमते सूर ॥
 वृंदावनथी हरि आव्या ॥

जीरे नंदजीनो कुंवर कोडामणो । जोया मरखो रे (२) श्रीजादवरायावृं ॥
 हरिने सुखभी शिंग ढोलावती । हरि आव्या रे २ आथमते सूर ॥वृंदा॥
 हरिने मोर मुगट मोहामणो । हरिने कुंडल रे (२) झलके कान ॥वृंदा॥
 हरिने निलक मुंदर अनि मोभतां । हरिना नयणांरे २ अनि अमीरमाला
 हरिने बांहे बाजुबंध बहेगवां । हरिने गले रे (२) गुंजानो हार ॥
 हरिना करमांते सुंदर मोरली वहालो वाहे रे २ अनिवेण रसाल ॥वृंदा॥

हरिने पीला पिनांबर पहेरणे । पाये वाजे रे (२) बुधरीनो घमकार ॥
हरिने पाये कंचन केग पावडीयो । हस्ति लाल रे (२) छढी छे हाथ ॥
हरिनी सुंदर सोभा सी कहीये । हस्ति सोभा रे (२) वरणी न जाय ॥
मारु मनगमतुं मोहन कीधुं । गुण गाये रे (२) नरसेयो दास ॥ वृदा ॥

* ॥ धोळ ॥ ३ ॥ *

फुलडेते फगर भगवीया रे । बेमन मांडचा पाट ।
संतो ते भलेरे पधारीया रे । हुं तो जोतीती रे (२) जेती वाट ॥
मंतो भले आवीया ॥ टेक ॥

तांवाने कुंडी जल तानव्यांरे । मोगरेल चलाणां सोहाय ।
नावण कगवुं माग संतने रे । हुं तो आलुं रे (२) पीतांबर हाथ ॥ सं० ॥
बावन चंदन घसावीयां रे । दरपण आल्यां हाथ ।
तिलक बनाउं माग संतने रे । हुं तो करी करुरे (२) परणाम सार ॥ सं० ॥
भोजन निपायां बहु भातनां रे । सेव करी कंसार ।
खाजा जलेबीने लाढवा रे । बीजुं खट रस रे (२) भोजन सार ॥ संतो ॥
आरोगवाने उठडीया रे । पुर्यां पनवारं सोहाग ।
छपन भोजन पीरस्यां रे । तमो ब्रेमे रे (२) ह्यो परसाद ॥ संतो ॥
आचमन लेईने उठीया रे । बीडी दीनी सो हाथ ।
चंदन चरचाउ मारा संतने रे । तहां तो नरसेयो (२) बलजाय ॥ संतो ॥

॥ धोळ ॥ ४ ॥

जीरे सखियोते महु येले मली । मली गाये रे (२) भला मंगल चार ।
लाल लीला भरी ॥ टेक ॥

जीरे अगर चंदननां रे आंगणा । मोतीनारे (२) भला चोक पुराय ॥ १ ॥

जीरै मांड्वो छायो रे मोगरो । फुलडीये रे २० भला फगर भराय ॥२॥
 जीरे कनक मटक केसर भर्याँ । तहाँ उडेरे २० भला अबील गुलाल ॥३॥
 जीरे पीली पटोली रे पेहेरणे । चुंडीयेरे २० भला चोलनो रंग ॥४॥
 जीरे ताल मुंदंग बागे घणा । तहाँ बागेरे २० भला ढोल निशान ॥५॥
 जीरे गोकलीयुं मणगारीयुं । मणगार्यो रे २० मघलो परिवार ॥लाल॥
 जीरे नर्सै महेतो रे एम भणे । बली होजो रे २० गोकुलमें वास ॥लाल॥

* ॥ धोळ ॥ ५ ॥ *

सखी आजनी घडी रलीयामणी । महारो वहालो आव्यानी वधामणी—
 —जीरे । आजनी घडी रलीयामणी ॥ टेक ॥

पुरो पुगे मोहागण साथीयो । मारो वहालो आव्या घेर साथीयोजीरे ॥
 सखी लीलुडा वांस वदावीये । मार वहालाजीना मंडप रचावीयेजीरे ॥
 सखी जुमनानानीरमंगावीये । मार वहालाजीना चरणपखालीयेजीरे ॥
 गंगा गोगमठी रे मंगावीये । मार वहालाजीनी चौरी चिनगवीयेजीरे ॥
 सखीफुलडे तेफगरभगवीये । मार वहालाजीने मोतीडे वधावीयेजीरे ॥
 सखी तोलडे तोण बंधावीये । मार वहालाजीना चोक पुरावीयेजीरे ॥
 सहु ब्रिजनारी टोले मली । मारा वहालाजीना मंगल गवाय छेजीरे ॥
 सखी मीठडा पे अनि मठडो । में तो नरसेना स्वामीने दीठडोजीरे ॥

* ॥ धोळ ॥ ६ ॥ *

आवुं रुहु ने रमालुं रे । आव्या अयोध्यामां रामजी रे ।
 प्रजा ते लई भरत पग्हर्या रे । हरिनां बदन निहालुं रे ॥ आव्या ॥
 मलपना ते मेघ रे मणगारीया रे । साथे पाखरीया पलांण रे ।
 दलवादल दिशे घटाव रे । बागे देवना निशान रे ॥ आव्या ॥

जगजीवने जानकी रे । गम लक्ष्मण जोड रे ।
 सोभीता हनुमंत माथीया रे । हरिना प्रसंन शरीर रे ॥आव्या॥
 अयोध्या ने थई रे मोहामणी रे । हरिना कल्याणना कोड रे ।
 चौदे वर्षे आवी मल्या रे । गम लक्ष्मण जोड रे ॥आव्या॥
 घेर घेर ओच्छव अनि धणा रे । वाजे तालने मृदंग रे ।
 भेगने वाजे भेगनी रे । घोर मृदंगना गाजे रे ॥आव्या॥
 हरिने छत्र चपर वा विंशणा रे । हरिने मोतीडे बधावो रे ।
 एक एक ल्यो वारणा रे । पोरे तोरण बंधावो रे ॥आव्या॥
 हरिनां धजा पनाका फरहरे रे । चौक मोतीडे पुरावो रे ।
 छो छो जुवे सुंदरी रे । हरिना दरशन भाव रे ॥आव्या॥
 हरिजन हरि जश गावना रे । विप्र वेद भणावो रे ।
 मंगल गाय मली मानुनी रे । देव दुंदुभी बजावे रे ॥आव्या॥
 कौशल्याते करे हरिनी आरती रे । हरि मंदिरीये पधारो रे ॥
 अगर चंदनना उलट कर रे । हैडे हर्षव ना माय रे ॥आ॥
 तहाँ सघला सेवक आवी मल्या रे । पहोंची मनढानी आश रे ॥
 राज वेद धुनाथजी रे । गुणगाय भाण दास रे ॥आव्या॥

॥ अथ श्री कन्हैयाजीनी आरति ॥

मंडप खंभ मोना तणां रे । वर वर्या जगदीश -
 गणी रुमणी कृष्ण पधार से । हरिनी जान जोवा जगदीश ॥
 कन्हैयाजीनी आरति ॥ टक ॥
 सुंदर करोने दीपक अजवालां । कन्हैयाजीनी आरती ॥ १ ॥

त्रिंशालु नीशान वागे । भेर भुंगल अति मार ।
 मृदंग शब्द सोहामणो । जीरे नगर ओच्छव जे जे कार ॥कन्हैया॥
 सुंदर करोने दीपक अजवालां । कन्हैयाजीनी आरती ॥ ३ ॥
 सजवारे रथ मजकर्या रे । हाथनी संगमार ।
 अश्व अनेक मणगारीया । सुंदर चाले छे हरजीनी जांन ॥कन्हैया॥
 मकरा कुँडल काने सोहिये । मुगट बन्यो अनिमार ।
 हरिनी बांहे बाजुबंध बे'ख्वां । हरिने मोतीढां तपेरे ललाट ॥क॥
 चौवा चंद्रन कस्तुरीनो । रंग बन्यो अनिमार ।
 केसरी गुलालना छांटणा । जीरे उडे छे अबील गुलाल ॥कन्हैया॥
 जाय जुई चंपो मोगरो रे । चोमर गुंथीने लाय ।
 चोमर हरजीने शिर चढे । कंठे सोहीये कौस्तभ मणिहार ॥कन्हैया॥
 साथी चोखा केमर वरणा । बनरीस भमरीनो मोड ।
 सामुये हरि वर वधारीया । जीरे तोरण रह्या रणछोड ॥ कन्हैया॥
 चौंगी चीतारे चितरी रे । रंग नोध्यो चहोदश ।
 विश्वकर्माये चौंगी चीतरी । जीरे परणे छे रुक्मणी कृष्ण ॥कन्हैया॥
 कोरं कांकण वजर धारन । आध्रण सोहीये अंग ।
 भीमक कन्या दान दे । जीरे उमट्यां जमुना जल नीर ॥कन्हैया॥
 कोरं पीतांबर कोरी जनोईयो । सोहीये श्याम शरीर ।
 राणी रुक्मणी मणगार मजे । राणी रुक्मणी धन्यो धन्य ॥कन्हैया॥
 सोना बाजटीयां मगावीयां रे । उपर रूपा थाल ।
 कंसार पीगमवा कामनी । जीरे नहाना विधि परकार ॥कन्यैया॥
 चार खसीया वदन हसीया । आव्यो वदन विचार ।

हरि ना मुखमां अदबद रूप छे । जीरे आकाशने पानाल ॥कन्हैया॥
 घेर घेर ओच्छव अनि घणा रे । तरीया तोरण द्वार ।
 गणी रुक्षणी कृष्ण परणीया । गुण गाये नरसेंयोदाम ॥कन्हैया॥
 सुंदर करोने दीपक अजवालां । कहानैयाजीनी आरती ॥ १३ ॥

॥ इति श्री कन्हैयाजीनी आरती संपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री रघुनाथजीनी घोडली ॥ *

प्रथम श्रीगुरुने वरणबुं रे । संनोने लागु पाय ।
 रघुनाथ वे'वा गाईसुं । जानकीने रे-जानकीने परण्या भगवांन
 रघुनाथजीनी घोडली ॥ १ ॥
 विश्वामित्रनी संगे आवीया रे । जनक मंडप माँझ ।
 नवखंडना नरपति मल्या । कोई त्रंबक रे-कोई त्रंबक धरीयाना जाय ॥
 रघुनाथजीनी घोडली ॥ २ ॥

अति बली रे अहंकारी राजा । उठोया बलगय ॥
 राजा रावणना हाथ चंपाईया । देशदेशनारे(२)आव्या छे राय ॥खु.॥
 जानकीजीये निरखीया । दशरथ नंदन राय ॥
 एना रूप मनोहर जलहले । बलीहारी रे बलीहारीनी पहोचीछे आश ॥
 खुनाथजीनी धोडली ॥ ४ ॥
 जानकीजीये अस्तुति करी रे । उमा धावोने बलवंत राय ॥

प्रभु पूरण प्रीत मंभारीने । हुन्तो निशदिन रे (२) धरती ध्यान ॥१०॥
 आज्ञा मागी गुरु तणी रे । मुस्तक धरीया हाथ ॥
 कटि भाथा बांधो परहर्या । मंडगमाँ रे (२) आव्या भगवान ॥१०॥
 त्रिवक लेईने कर धर्यु रे । टंकारी रव रव थाय ॥
 प्रभुत्रण भुवन गाजी रहाँ । त्यारे झबक्यारे-त्यारे झबक्या छे परशुराम
 स्वुनाथजीनी घोडली ॥

त्रिवक कडका त्रण कर्या रे । भूपति नविया पाय ॥
 रुमझुम करनाँ जानकी । कंठे आरोपी रे (२) वामाल ॥स्वुनाथ॥
 कंकोनगीयो लखावीयो रे । दशरथ कौशल्य गय ॥
 नग्नारी महु हाथीयाँ । वधामणीयाने रे (२) आव्यां दान ॥स्वु०॥
 कैक्यी गणीने सुमित्रा रे । भूपति पे जाय ॥
 मिथीला पूरीमें आवियाँ । गजा जनकनोरे-गजा जनकनो हरव ना माय.
 स्वुनाथजीनी घोडली ॥ १० ॥

नगर पडो वगडावीयो रे । जान मज्जज थाय ॥
 अनेकगजस्थ मणगारीया । दशरथ जान रे (२) लेईने जाय ॥स्वुनाथ॥
 भूपति सामा आवीया रे । दुङ्कडी वर्जान ॥
 स्वुभर दशरथने नम्याँ । नहाँतो अप्सरा रे (२) नाचे छे तान ॥स्वु०॥
 लक्ष्मणजीने उरमीला रे, भरथने कन्याय ॥
 शिरोमणि शत्रुघ्नने रे । चारे कुंवरनो रे (२) हरपना माय ॥स्वु॥
 घोडीने पाये बुघग रे । घोडी चाले ठपक्ती चाल ॥
 एने मोहेडे मोनी जड्याँ । मृत्ति सोभीताँ छे (२) पत्तण ॥ स्वुनाथ ॥
 धाढीये बेसीने संचर्या रे । स्वुभर झाकम झोल ॥

कौशल्या ले हस्तिवारणा । वधावे छे रे (२) कैकयी मात ॥ रघुनाथ ॥
 गाजंना वाजनां आवो र, रघुवर तोषण द्वार ॥
 सासु ते आव्यां पोकवारे । मुख जोईने रे (२) हस्पना माय ॥ २० ॥
 पोंकोने पवगवीया रे । रघुवर मंडप महि ॥
 आडा अंतर पट तांणीया । तहां तो ममेवरते रे (२) होय सावधान ॥ २० ॥
 विश्वामित्र तहां आवीयारे । सुंदर चारी रचाय ॥
 कनक कल्स चिद्रावीयां । तहां तो सुंदर रे (२) चारी बंधाय ॥ २० ॥
 कन्याये कांकण पहेगीयारे । पही पानेतर गांठ ॥
 आडा अंतर पट अलगा कर्या । तहांतो होय रे (२) तंबोलानी छांट ॥ २० ॥
 जगततो पुरो थयोरे । लज्जाने होय भलीवार ॥
 आशिष दे सहु सुंदरी । वर मधुरो रे (२) आरोगे कंसार ॥ २० ॥
 रघुवर परणीने संतर्या रे । वरत्याते मंगल चार ॥
 रघुवर जानकीनां जोडलां । वधावे मत्ती रे सोहागण चार ॥ २० ॥
 रघुवर परणीने उठीयारे । वरत्यो ते जय जयकार ॥
 रघुवर जानकीनां जोडलां । गाये मत्तीरे सोहागण नार ॥ २० ॥
 जनके करी पहेगमणां रे । लज्या ते होये भलीवार ॥
 सर्वे आवी चरणे नम्या । मेवक थई रह्या रे (२) मैथल राय ॥ २० ॥
 वर मधुरे स्थवेसाडीयारे । जान सजक थाय ॥
 मारग मांहे चालनां । मोङ्या परशुराम केरा मान ॥ २० ॥
 नगर अयोध्यामां आवीया । जोवाते मलीया लोक ॥
 रघुवर जानकिने निरखनां । तेना तनना रे (२) एलीया शोक ॥ २० ॥
 कौशल्या मनमां हरखोयांरे । जानकी रूप अधाह ।

बेहुने ओळंग बेसाढीयां । आल्यां चूडामणी जय जयकार ॥ १ ॥
 चार पदारथ पामीयां । पहोचीते मननी आश ॥
 सेवा करी पधरवीया । गुण गाये रे (२) तुलसीदाम ॥ रघुनाथ ॥
 ॥ इनि श्री रघुनाथजीनी घोडली संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सीताजीनो सोहेलो ॥

गावो मानुनी रघुकुल ध्यान, ल्यो गमनु नाम ।
 तजो अभिमान—सीताजीनो सोहेलो ॥ टेक ॥
 त्रेवक तोरण बांधीयां रे, कंकोतरी लखाय रे ।
 गजा जनके महा जग मांडीयो, चोपामे रे—चोपामे वधामणी जाय ।
 सीताजीनो सोहेला ॥ १ ॥

मंडप रचीयो मोक्लो, तहां कनक खंभ विशाल रे ।
 जाली जस्त्वे गोख बागी, तहां जडीयारे—तहां जडीया छे गनन परवाल ।
 सीताजीनो सोहेलो ॥ २ ॥

मंडप छायो मोगरो, तहां बेसन सोत्रण पाठ रे ।
 चोपामे फरनी पुनर्ली, तहां मलीयारे—तहां मलीया छे चारण भाट ।
 सीताजीनो सोहेलो ॥ ३ ॥

गंगट माथे मांडवो, तहां भेटे भलेग गय रे ।
 आजना आमन छत्र चंमर, गजा जनकनोरे (२) हरखना माय—सी०
 मध्ये ते मानी मालणी, चोरसा चंपे जाय रे ।
 मांध्रव बोले छाजनां, ता थई रे—ता थई नाटा रंग थाय—सीताजी ॥

मोगरेल तेलने चौवा रे चंदन, अरगजा अबील रे ।
 केसरी गुलालनां छांटणा, मंतोष्यारे(२)बावन वीर-सीताजी ॥६॥
 सांतक माध्याने वस्त वांध्यां, कांकण पहेयाँ हाथ रे ।
 पीटी चोले महू पझनी, गुजरीयेरे(२)गोरी गुण गाय-सीताजी ॥७॥
 छोटी कल्पोत्रीने शिश चोटी, कोमल कोमल अंग रे ।
 केसरी वंके लटकंता रे, रघुनाथरे रघुनाथजी भीने वान-सीताजी ०
 महिपति उख्या मूछ मरडी, धीर वीर सुजान रे ।
 त्रंबक धनुष ना रती चत्यु, महु हार्या रे(२)उतरी गयां मान-मी०
 दश वदन गवण रीस भरणा, धसीने झाल्यु हाथ रे ।
 कर चंपाणा नव नीमर्या, बलवंतारे(२)प्राणा सार-सीताजी ॥१०॥
 तालीते ले सहु तारुणी, पुरलोक जोवा जाय रे ।
 केसरी वंके वदन लाध्यां, तेणे हमीया छेरे(२)सुरनर गय-सीता०
 चहोदश जुवे जानकी, तहां कथं श्री रघुराय रे ।
 ना गणे गणा राजीया, आभ्रण अंगे ना मोहाय-सीताजी ॥१२॥
 क्रुषि सभामें रघुगम लक्ष्मण, बंधव साथे जोड रे ।
 गुरुजी द्यो अमने आज्ञा, छे धनुष रे(२)भांग्याना कोड-सीताजी ॥
 क्रुषि कहे बालक बोल मा, सुं थयो बुद्धि अजान रे ।
 हार्या ते सुरनर सुभट सूरा, आपण खोईसुं रे(२)सभामें मान ॥
 मेरु आगल वे मान सखसव, हस्ती आगल मृग बाल रे ।
 नथी केल साथे वाय भीडवी, छे कठन रे(२)कंथागनी जाल ॥
 मुख हमी कर जोडी कहुँ, गुरु दोने मुजने आशिष ।
 तमो परतापे वह जानकी, जो सख्यो रे(२) हसे जगदीश ॥

सीता ते मन सोचना करे, कमाय कोपल अंग रे ।
खुनाथ विना नहो बरु, मढाग प्राण रे(२)नजु प्रभात-सीताजी ॥

* ॥ बलण ॥ *

सीता ते मन सोचना करे । भक्ति भावे केशवा ।
अवतार वारो वार धर्या । दुःख सर्वनु यालवा ॥ १ ॥
कमठ रूपे कृष्ण कटण । मेरुसें सागर मथी ।
पहेला वर्या कमला नासने । तेज सुं हवडे नथी ॥
मन धर्युं सीता तणुं । पछी धनुष धर्युं हस्त रे॥२॥

* ॥ चाल ॥ *

लीला करी लटकावीया, पछी कटका रे(२) कीधा दश बीस ॥
देव दानव जाचक गांध्रव, गग करे छत्रीम रे ।
देव वरदि देशपनि, हरिनी जान रे २ जोवा जुगदीश ॥

* ॥ सोनानु पत्र ॥ आद ॥ १ ॥ *

सोनानुं पनर ने स्पानी लेखन । ने अक्षर ते लखज्यो कस्तुरीतणा ॥
हरि हरि-अक्षर ते लखज्यो कस्तुरी तणा ॥ १ ॥
मांहे ते लखज्यो सीता ने गम । तमारे पुत्रे धनुष भांगीयुं ॥हरि॥
सभाने तेढीने दशरथ बेठ ने । विप्र ते लाव्या वधामणी ॥हरि॥

* ॥ बलण ॥ *

विप्र ते लाव्या वधामणी । सुख पाम्यां नर ने नार ।

सोना थाल भरी करी । वधावे वरनी माय ॥ १ ॥

* ॥ दाल ॥ *

वधावे वरनी माय स्वामी । ओच्छव होय अति घणा ।

जनक केरे मांडवे होय । सीतानो वहेवा ॥

* ॥ आद ॥ *

कैकयी कौशल्या बाई सुमित्रा रे । चाल्यां छे गमने नोतरे ॥हरि॥
गमनो वहेवा छे वेलेरा पधारजो । महियर सखी सहु जांदणी ॥हरि॥

* ॥ वलण ॥ *

सहियर सखी जांदणी । घोडेते बुधर माल ॥

सजवारे सजवागी । सांदणीयो संचार ॥ १ ॥

बैल वारो गादी ढालो । बेसाडो परिवार ॥

काको मामी महा सखी । कोईने बे'नी परिवार ॥ २ ॥

सोना पालवडो मंगावीने । बेसाडयां वरनी माय ॥

छत्र चमर शिर ढले । हरखीया दशरथ राय ॥ ३ ॥

दशरथरायनी जान चाली । जोजन दशमें लहार ॥

शत्रुहन अगाउ चाल्या । घोडे ते राणा राय ॥ ४ ॥

जान आत्री मांभली । मांभली जनक राय ॥

आत्री अंग देई भेटोया । पायेलागी दीधां मान ॥ ५ ॥

भला उताग आपीया । आप्यां ते अन्नने पान ॥

॥ वलण ॥

आप्या ते अन्नने पान स्वामी । ओच्छव होय अनि घणा ।

जनक केरे मांडवे । होय सीतानो वहेवा ॥

* ॥ सोनानुं पत्र मंपूर्ण ॥ चाल ॥ *

दधि मथन देवे कयाँ, मानुनी मंगल गाय रे ।

गम पधार्या माहे रे, तहां तो उलट रे(२) अंगेना माय—सीताजी ॥

दुंदुभी बाजां देवना, फुलनी वरणा थाय रे ॥
 बर माला आरोपे जानकी, तहां थईने रे (२) बेडावग्गय—सीताजी॥
 कंमार आरोगे सीता रामजी रे, महु मखीयोने हस्प ना माय रे॥
 देवना महु आनंद पाम्यां, तहां दैतोने रे (२) मन दुःख—सीताजी॥
 जनक नारी हाथ झारी, माथे कंचन मोड रे ॥
 आचमन लेवडावे सीतारामने, नहां पहोच्यारे (२) मनना कोड—सी.
 पहेगमणी तो भली करी, पैठणनो नहीं पार रे ॥
 गज स्थ तोरंग आपीया । गय जनके आप्यां बहु दान—सी०॥
 माफे मनोहर जोतगं रे रजीये भगणा सुर रे ॥
 महादेव धनुष खंडीने । जान चाली रे (२) माकेनपुर—सीताजी ॥
 राम सीता परणी सधायाँ । आव्या अयोध्या माहे रे ॥
 कौशल्या करे हरिनी आरनी । तहां तो तुलसी रे तहां तो तुलसीदाम
 बलजाय ॥ सीताजीनो सोहेलो ॥ २६ ॥

* ॥ इति श्री सीताजीनो सोहेलो संपूर्ण ॥ *

* ॥ अथ श्री ब्रीजनी सोभानु कीरतन ॥ *



नंद घेर आनंद उपज्यो । प्रगट्या श्री गिरधर लाल (२) ।
 ब्रीजनी सोभा रे सी कहीये ॥ टेक ॥
 नोबन बाजे रे नव रंगी । बागे नंद दरबार (२) ॥ ब्रीजनीसोभा रे ॥ १ ॥
 गोलडे तोरण बांधीयाँ । झुमक झालके दरबार (२) ॥ ब्रीजनी सोभा रे

आछां ओपां रे आंगणा । रमे रुडा नंदजीनो लाल(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे
लीयां लाख्यां रे चारणा । एवा मारा हरजीना हेन(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे
बावन चंदन घोगीयां । मोतीयाना पूर्या छे चोक(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे
दीपक जोन रे जलहले । मेल्या झरखेला गोष्व(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे॥
तमों ओ रे दयालजी । पूरण पुरुषोनम गय(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे॥
रंगे चंगे रे निमयां । महुने मरखो शणगार(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे॥
नगरीने जोनां रे निमयां । ए छे कारण रूप(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे॥
नानु मरखुं रे गोकलीयुं । तहां रुडा नंदजीनु राज(२)॥ ब्रिजनी०॥
मोटी मख्वां रे मथुर्गंजी । विश्राम जमुनानो घाट(२)॥ ब्रिजनी०॥
कालिन्दीने रे कांडे । वाह्यो वेण रमाल(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे॥
गिरधर गायो रे चारंता । माथे बलभद्र वीर(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे॥
माधवदामनी विनती । हिरदामा गखो विश्राम(२)॥ ब्रिजनी सोभा रे॥

॥ इनि श्री ब्रिजनी सोभानुं कीरतन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री कंकोवीनुं कीरतन ॥

केसर छांटी कंकोवी मोकली । कोडे कहावे सुभद्रा बहेन ॥
बीरा वहेला आवजो ॥ टेक ॥

जीरे कृष्ण बलभद्र बे बंधवा । नपो आवे थशे सुख चेन ॥ बीरा ॥
जीरे भत्रीजा मन भावंता । पवित्र पिता वसुदेव ॥ बीरा वहेला ॥
जोगे जन्मीने देवको रोहीणी । हरखे निरखसे माहेगी मान ॥ बीरा ॥
भावे बंधव माहेगी भाषीयो । सोल सहस्र एकमोने आठ ॥ बीरा ॥

ओधव अकुर पनोना पीयेसुं । उग्र समजी आवो अवमर एहा ॥ वीरा ॥
 दुःख जासेते देखना देहनां । देश विदेश वाधी छे वान ॥ वीरा ॥
 मैं तो प्रेमे पगरण मांडीयां । रुडो जगन गच्यो गज सोय ॥ वीरा ॥
 राणी रुखमाणी गणीने रेखनी । ठकगणाना जोउ ठाठ ॥ वीरा ॥
 अमने तम सखुं वहालुं कोई नथी । द्वारामनि छे गुणवंत धाम ॥
 संगे जादव कुल मर्वे तेढजो । भाई जीवन ताखन तगण ॥ वीरा ॥
 कंथ जेठ दीयन्ने कोड छे । नित जपे तमांग नाम ॥ वीरा ॥
 वेद बदना विप्रने लावजो । बीजी उत्तम अनेक वम्न ॥ वीरा ॥
 पांच पांडव छेरे तमो नणा । जेनुं जेह कल्याण ज होय ॥ वीरा ॥
 एक जीभे ते मा जश वरणबुं । शेषनाग ना पामे पार ॥ वीरा ॥
 थोडुं लख्युं ते घणुं करी मानजो । भाई नोधागना आधार ॥ वीरा ॥
 पत्री देखना बहेला पधार्जो । मजन कुटुंब पस्तिर ॥ वीरा ॥
 पत्री आपीने कासद मोकल्यो । गुण गाये नरसेयो दास ॥ वीरा ॥

* ॥ इनि श्री कंकोत्री संपूर्ण ॥ *

॥ धोळ ॥

महारे अंगणे वायस बोली गया । महारु अंगरे (२) फरुके आज ॥
 हरि धेर आवीया ॥ टेक ॥

हुंतो जबकीने जोवा रे निमरी । मैं तो मजीया रे (२) सोलशणगार ॥
 मैंतो शेरी वरावीने मजकरी । आणी वाटे रे (२) वेरावु फुला ॥ हरि ॥
 मारा वैरी हता ते वस थया । महारा प्रभुने रे (२) पस्ताप ॥ हरि ॥
 महागं वम्बडां हतां ते अमृत थयां । अमृतनी रे (२) उलटी लहेर ॥
 महेता नरसेना स्वामी भले मल्या । मारे उलट रे (२) अंगे ना माय ॥

* ॥ धोळ ॥ *

महाग प्रभुजीते आव्यारे मीमाडे । हुं सा मोसे जोवा जउ महाराज ॥
दधिनो दाणी कहानुडो ॥ टेक ॥
मारे माथे ने लेउ भाथ टोपलो । भठ्यारी हो कर जउ महाराज ॥
दधिनो दाणी काहानुडो ॥
मारा प्रभुजीते आव्या रे वाडीये । हुं सा मोसे जोवा जउ महाराज ॥
मारा हाथमें ते लेउ फुल छाबडो । हुं मालण हो कर जउ महागज ॥
माग प्रभुजी ते आव्या रे गांदरे । हुं सा मोसे जोवा जउ महाराज ॥
माग हाथमें ते लेउ लाल लाकडो । गोवालण हो कर जउ महागज ॥
माग प्रभुजी ते आव्यारे सरोवरी ये । हुं सा मोसे जोवा जउ महाराज ॥
माग हाथमें ते लेउ सोना बेडलुं । पणीहारी हो कर जउ महागज ॥
मारा प्रभुजी ते आव्यारे शेगीये । हुं सा मोसे जोवा जउ महाराज ॥
मारा हाथमें ते लेउ सोना थालीयो । हुं मोतीडे वधाउं महाराज ॥
महेना नरसेना स्वामी भले मत्या । वा'लेपूर्यमनना कोड महाराज ॥

* ॥ धोळ ॥ १ ॥ *

धन्यघडीधन्यदहाडो रे आजनो भाई । आन पुने हरी प्रकट्यारे माथे सगाई
कुलना लोक महु मलीया रे महुने मन भावे—

—जान आवे जादव कुलनी रे मंडपमां महाले ॥१॥
मामा छे बहुरूपी रे मोसालां लावे । चतुर वर चालीने रे चौरीयोमें आवे
ए कन्या छे नहाना रे हस्तिर छे मोंथा ।—

—वहाले नाखी वरमाला रे दुःख नाख्यां कापी ॥२॥
कंसार पीरमवाने आवे रे, कन्यानी माडी ।—

—हस्तिर कंमार आरोगे रे कोरीया वारी वारी ॥४॥
मेंतो मार करमे रे लीधो कंमार । मंगल वरख्या चार रे माननीयो गाय
फुलतणी पीछोडीरे ओढाडी निरम्बी । गुण गाये नरसैयो रे हैडामां हरख्यी

* ॥ धोळ ॥ २ ॥ *

अनवरीयामलीजागोरेजागीनेजुबो । मनषादेहीछेदुर्लभ रेहावेसीदखुबो
घोलमंगलगवडावोरेचेनीनेचालो । मोनाकेगकलमरेतेनी चांगी बंधावो
भ्रखुभाननी बेटी रे तेना जश गावो । वर कन्या बेउ बेठारे पुछेछे माडी
फुलमंडपमामालेरे अनगमतीलडी । लाडणवरनेकाजेरेशणगागीछेलाडी
वरकन्याबेउपरण्यांरे सूरजनीमाघ्ये । गीतमधुरांगायेरेगोपीनौतमनौतम
नटवर छे नोघडीयोरे जशोदानो जायो ।—

—आज अनोपम दिवस रे परणे छे वहालो ॥५॥
प्रेमतणी पीछोडीरे ओढाडी निरम्बी । गुणगाये नरसैयो रे हैडामां हरख्यो

* ॥ धोळ ॥ ३ ॥ *

त्रिभुवनपावन तुलसीजीनोवहेवारे । शिववनुराननेधार्यांलगनविचारीरे
प्रेमी जनेतो प्रेमतणोरम पीधोरे । कारतक सुदीएकादसी उत्तममाध्यांरे
वरतो छेल छवीलो महासुख गम रे ।

कन्या कहीये तुलसी निरपल नाम रे ॥
जानैया तो जाने हरिना जनरे । जाँदैणी तो लक्ष्मीजी छे माथे रे ॥
सखीमोहनीमंगलगावाने आवेरे । मंगल गाईने मांनीडे बधावे रे ॥
अखिललोकमांउपजाव्यो आनंद रे । नरसैयाना स्वामी करुणानंद रे ॥

॥ इति श्री लम प्रसंगे गवानां कीरतन मंपूर्ण ॥

* ॥ अथ श्री गरबाना कीरतन ॥ *

* ॥ गरबो ॥ १ ॥ *

कांमण कीधाँ नंदने गोवालीये हो जीरे ।

माडीरे मारे वैदां साने तेडो । माडीरे मारी सीदने पञ्चां छो केडे ॥

माडीरे मारे नरहरि रे नगहरि । आणी मेलो नयने रे ॥ कांमण ॥ १ ॥

माडीरे मारग ओषडीयां नव कीजे । माडीरे मारु कसे रे दीलना पतीजे ॥

माडीरे मारे आंसुडे रे आंसुडे अंबर भीजे रे ॥ कांमण ॥ २ ॥

माडीरे मारे मासु नणदल झुआं । माडीरे मुज उपर रहे छे रुच्यां ॥

माडीरे मारे दुरिजन रे दुरिजन महेणां मोटां रे ॥ कांमण ॥ ३ ॥

माडीरे एतो वनमें मोरली वाहे ।

माडीरे मारा मनमां रे मनमां कई कई थाय रे । कामण कीधाँ ॥ ४ ॥

माडीरे हुंतो अंगो अंग थई लुली । माडीरे हुंतो घम्नो घंधो भूली ॥

माडीरे हुंतो हरिमुख रे हरिमुख जोई जोई फुली रे ॥ कांमण ॥ ५ ॥

माडीरे एणे मोह भरीने बाण मायाँ ।

माडीरे मारां हेतेरे हेतेसुं हैडां ठार्यां रे । कांमण कीधाँ ॥ ६ ॥

माडीरे एनां कामणगारां नैणा ।

माडीरे मारां वांकाने रे वांका वममां वेणारे ॥ कांमण ॥ ७ ॥

माडीरे मूने मलीया अंतर्जामी । माडीरे हुंतो प्रेमे महा सुख पामी ॥

माडीरे मने मलीयोरे मल्यो नरसैयानो स्वामी रे ॥ कांमण ॥ ८ ॥

* ॥ गर्बो ॥ गग वर्ज ॥ २ ॥ *

श्री मा उगते वहाणे गधानी माडी जागी ।—

—एना चिनमां चटकी लागीरे ॥ आसुरे कीधुं ॥ टेक ॥
कुंवरीरे मारे दुःखना दस्या आज रेत्या । नें कुलना मारग मेल्यारे ॥
आ सुरे कीधुं ॥ १ ॥

कुंवरी रे नाग कीया वेरीये वेर माध्या । नें मींढल कोना वांध्यारे ॥
कुंवरी रे नागे केई नगरीमा दंत वहेयो । तें चुलडो कहोनो पहेयोरे ॥
कुंवरी रे तेंतो जीवडो लीधो मारे ज्ञाली । वस्माला कोनी घाली रे ॥
कुंवरी रे तेंतो उपर्णी कोनी ओटी । तारे कीया वसनी जोडी रे ॥
कुंवरी रे नागे मांडवडो क्यां रेष्यो । नाग वसने कोणे पोंक्योरे ॥
कुंवरी रे नहां तो कीया गुरुदेव आव्या । तने कोणे वेद भणाव्या रे ॥
कुंवरी रे तमने कोणे ते रंग रमाड्या । कंसार कोणे जमाड्या रे ॥
कुंवरी रे नें तो कुलमां लगाडी छे खांमी । नने मत्यो नरसेनो स्वामी रे ॥

* ॥ गर्बो ॥ *

एरले त्यांतो गधा बोल्यां छे रे वात । तुं सांभल मोरी मात रे ॥
में बहुं सारुं कीधुं ॥ टेक ॥

माता मारी दुःखनादरीयानथी रेत्या । नथी कुलना मारग मेल्यारे ॥
में बहुं सारुं कीधुं ॥

मातारे मारी शिश नमार्ग नथी वहेयाँ । पानेतर प्रभुना पहेयारे ॥
मातारे मारी नथी वेरीये वेर माध्याँ । मींढल मोहनना वांध्या रे ॥
मातारे मारे मथुर्ग नगरीमां दंतवहेयो । में चुलडो अविचल पहेयो ॥
माता रे नारो जीवडो लीधो नथी ज्ञाली । वस्माला विडलनी घाली रे ॥

माता रे मेतो हरम्बे उपरणी ओढो । मारे अवंड वग्नी जोडो रे ॥
 माता रे तहांतो तेत्रीमु क्रोड देव आच्या । ब्रह्माए वेद भणाव्या रे ॥
 माता रे मारी कृष्ण चणामृत पीधां । शिवे कन्यादान तहां दीधां रे ॥
 माता रे मारी ब्रह्माये वेद भणाव्या । कंसार उमाये जमाइया रे ॥
 माता रे में तो हरि ने चढाव्या फुल गजग । वसुदेव सरीखा समग रे
 माता रे में तो हरिने चढाव्या फुल जायु । देवकीजी सखां मासु रे ॥
 माता में तो शिवने चढावी छे हरदी । सुभद्रा सखी नणदी रे ॥
 माता रे में तो शिवने चढावेला हार । मने मल्या कृष्ण भरथार रे ॥
 माता रे में तो कुलमां लगाडी नथी खामी । मने मल्यो नर्मानो म्वामी रे ॥

* ॥ गवो ॥ ४ ॥ *

एटले बलनी माता बोल्यां छे वाणी । तुं सांमळ पुत्री माणी रे ॥
 आसुं रे कीधुं ॥ टेक ॥
 कुंवरी रे एनो कृष्ण कहेवायो काळो । तें क्यां सोऽयो गोवायो रे ॥
 आसुं रे कीधुं ।

कुंवरी रे एनो कहांनुडो कामणगासे । ए धींगडमल धूतारे रे ॥
 कुंवरी रे एने चंद्र सुर्जनी साख्यो । एने जशोदाजीये गस्या रे ॥
 कुंवरी रे एतो गायो चारी ने पेटभस्तो । परनामी पाछल फरनो रे ॥
 कुंवरी रे तारो नान आ वान जो जाणे । नो प्राण कंठे आणे रे ॥
 कुंवरी रे नेतो नव कर्वाना कांम कीधां । अमने दुःखदां बहुदीधां रे ॥
 कुंवरी रे तुं तोकपटी वर क्यांथी पामी । नर्मायो कहे शिरनामी रे ॥

* ॥ गरबो ॥ ५ ॥ *

माता रे मारी कृष्णने एम नव कहीये । एने चरणे जईने रहीये रे ॥
तुं सांभल मारी माडी ॥ टेक ॥

मातारे एतो चौद भुवननो छे वासी । एने चरणे कोटिक काशीरे ॥
मातारे हावे परण्यां ते फोक केम थाशे । जो मूरज पश्चिम जासेरे ॥
माता रे नारे कखुं होय तेम करजे । नारे मखुं होय तो मरजेरे ॥
माता रे हुंतो पूरण पदने पापी । मने मल्यो नरसैनो म्वामो रे ॥

* ॥ गरबो ॥ ६ ॥ *

हाँरे गोकुळ गढथी गोवालण उतरीजो ।
मथुगंथी ते आव्या कहांन जो ॥
मारग वच्चे थयो मेलावडो जो ॥ ०
हाँरे गोपी दहाडी दहाडी दाण चोरी जनी जो ।
घणे दहाडे आवी छे महारे हाथ जो ।
ओछी तुं जात आहीरनी जो ॥ १ ॥
हाँरे अल्या कहानजी तुं कहांरे वेलो थयो जो ।
तुं तो सांनु मागे छे दाण जो ॥
मारग मेलीने रहेने वेगव्यो जो ।
महार गोरसनी थासे हाण जो ॥
वेलु ना बोल गोवालीया जो ॥ २ ॥

हाँरे ओली जाने तुं जोर जोग करी जो । घणी दीमेवांका बोली नारजो
दाण हमार अमो लेईसुं जो । हुं तो राखु लुं ताहेगे भार जो ॥
॥ ओछी तुं जात आहिसनी जो ॥ ३ ॥

हांरे ओल्या ना जाणेस नार कोई वापडी जो ।

कोई मलसे माथाकेरी नार जो ॥

महीनी मटकी महारी फुटसे जो । महारी ब्रिजमें थामे जांण जो ॥

बेलु ना बोल गोवालीया जो ॥४॥

हांरे ओलीमानुनी तुं थाने उनावलीजो । महारी साथे छे सघलो साथजो
दहाडी दहाडी दाण चोरीजनी जो । घणे दहाडे आवी छे महा रे हाथ जो

ओछी तुं जात आहिरनी जो ॥५॥

हांरे ओल्या हाथनी ते होंम रखे गवनोजो । रखे गवनोहैयामें हामजो
पालव मेलीने रहोनी पातलाजो । महारा कंसने थासे जाण जो ॥

बेलु ना बोल गोवालीया जो ॥६॥

हांरे ओली कंस कबुद्धि नग सुंकरे जो । नहारा कंसना फेड ठामजो
नंदजीना नाम पग्नापथी जो । धर्यां नंदकुंवर वेर नाम जो ॥

ओछी तुं जात आहिरनी जो ॥७॥

हांरे ओल्या कंसना कर्यां ने केम विसरे जो । सात हण्या पोताकेश भ्रातजो
नाशी छूटवा कुंवर लाडकाजो । आवी उगर्या छो ब्रिज मांहे जो

बेलु ना बोल गोवालीया जो ॥८॥

हांरे ओली ब्रिजमें रहीने वेर वासुंजो । तुं तो जोनी हमारां कामजो ॥
अहनीनो भार उनाखा जो । धर्यां नंदकुंवर वेर नाम जो ॥

ओछी तुं जान आहिरनी जो ॥९॥

हांरे ओल्या माचुं कहुंतो दुःख लागसे जो । पेट माटे चरावतो गायजो ॥
आवडो मोयेते अमथो थयो जो । तने कोईए ना दीधी कन्यायजो ॥

बेलु ना बोल गोवालीया जो ॥१०॥

हांरे ओली आही रांनी कन्या अमो सुंकर्जो। अमो माचा कहेवाये ब्रह्म वारी जो
खे पढऱ्यायो उपर पाढती जो। धोरी धावडी नी ओढनार्जो ॥

ओछी तुं जान आहिरनी जो ॥११॥

हांरे ओल्यालाखटकानी मारी लोबडी जो। हीरास्तनजव्यांछे श्रपास्जो॥
आछो पीछोडो मारे ओढणे जो। कागी कामरी ना अेढ पर्यं जो ॥

घेलु ना बोल गोवालीया जो ॥१२॥

हांरे ओली ब्रह्माये ताणो ताण्यो जो। जेना शंकर सरीखा वणनार्जो॥
तेरे ओढण मारे कामरी जो। तेनो शेष ना पामे पर जा ॥

ओछी तुं जान आहिरनी जो ॥१३॥

हांरे ओल्या शेषना सरीखु तन ताहेर्जो। अमो चंपक वणी नार जो
काच कनक वैरी घण्यो जो। तुं तो पशु तणो पीडार जो ॥

घेलु ना बोल गोवालीया जो ॥१४॥

हांरे ओली सीदने आवीती महीवेचवाजो। तुं नो बेसीरहेने घर मांहेजो॥
दोलत घणीछे नाग वापने जो। तुंनो सीदने आवती वन मांहे जो ॥

ओछी तुं जान आहिरनी जो ॥१५॥

हांरे ओल्या महीरे वेचवा गांव्यां घण्यां जो। जई पुळो जशोदा मातजो॥
बांधी मुठी सवा लाखनी जो। उघेडीये तो पत जाय जो ॥

घेलु ना बोल गोवालीया जो ॥१६॥

हांरे ओली दधि रे खावानी ईच्छा घणी जो। मीठी मेरावणी मत्तादजो॥
फीकां हसे तो पाळां आपसुं जो। तुं नो सीदने करेछे वाद जो ॥

ओछी तुं जान आहिरनी जो ॥१७॥

हांरे ओल्या गोरस केरुंसुं गजु जो। तुं तो पीये छे एटलो पाकजो ॥

वचनेथ वेर वाध्यां घणां जो । नित नितनो मेलावो थाय जो ॥
घेलु ना बोल गोवालीया जो ॥१८॥

हाँर ओळी कठन वचन तोकह्यां नथो जो । तुं तो घणीदीमे छे गीसालजो
दाणना गजामें सु दुभवे जो । नने आलु एकावल हार जो ॥

ओळी तुं जान आहिरनी जो ॥१९॥

हाँर ओल्या गड भागीने भम वाधीयो जो । गोवालणी लागे पाय जो ॥
दाण लिला ते दीनानाथनी जो । गुण गाये नग्सेंयो दास जो ॥

घेलु ना बोल गोवालीया जो ॥२०॥

* ॥ गरबो ॥ ७ ॥ *

सहु गोकुलनी ब्रिजनारी रे । भ्रमुभान तणी दुल्हारी रे ।
पहेरी चणीयोने चो श्री चीर । आधी उभां छे जमुनां तीर ॥

हो सजनी चालोने नहाए ॥ टेक ॥

आभरण तणो नहीं पार रे । मांहि पहेयो एकावल हार रे ।

सखी जल जमुनामें नहाये । हैये उलट अंगे न माये ॥ सजनी ॥

प्रभु आव्या ते जमुना घाटे रे । नारी नहानां देखी जदुनाथे रे ।

हरिये पोपटनो वेष लीधो । पछी हार राधाजीनो लीधो ॥ सजनी ॥

हार भग्वयो आंबलीया ढाके रे । पाळे उभा ते श्री गोपाल रे ।

ज्यारे स्नीन करी नीकलीयां । पछी आभ्रण अंगे धरीयां ॥ सजनी ॥

राधा पूछे ते सहु सखीयोने रे । हार गयो ते कारण शुं छे रे ।

सहु सखीयो मली सम खाय । पछी राधाने चिंता थाय ॥ सजनी ॥

राधा कहेतां ते आवे हाँसी रे । आभ्रण जुबोने तपासी रे ।

तपास्यां ते सोल शणगार । पछी ना दीदो पोतानो हार ॥ सजनी ॥

राधा पूछे ते सखियो प्रत्ये रे । हार लीधो ते एको सरते रे ।
नारी चाल्यां प्रभुजी पासे । गुण गोविंद हरिना गासे ॥मजनी॥

* ॥ गरबो ॥ ८ ॥ *

अमने आवे भरेसो तमारे । छबीलाजी आलोने हार हमारेरे ॥
त्यारे बोल्या ते दीन दयालरे । तारे कोणे लीधो छे हार रे ।
एवुं कहीने भुदरजी स्वीज्या । चोरी करे एतो नर बीजा ॥ छबी०॥
राधा कहे छे जे आप विचारोरे । चोरी कस्तां ते गयो जनमारो रे ।
तुं तो मही रे माखणनो चोर । वृदावन चार्या ढोर ॥ छबीलाजी ॥
गोकुलमां ते चोरी करेछो रे । विजनारीनो पुंडे फरेछो रे ।
तमने लंपटने कोण धीरे । नारी नहीं आवे जमुनां नीरे॥छ०॥
गोकुलमां ते चारी गाय रे । तहारुं गोवाल्पणुं नव जाय रे ।
तुं तो छे रे सदानोए जुडो । हार आल्या बिना नव छुट्यो॥छबी०॥
राधा बोल्यां ते मर्म वचन रे । सुनी बोल्या ते जुगजीवन रे ।
नथी बींतो गोविंदनो स्वामी । एम बोल्या अंवरजामी ॥छबाला०॥

* ॥ गरबो ॥ ९ ॥ *

बुतवाने आवी नारी । हो राधा जुडी नार ठारी रे॥टेक ॥
प्रभु आव्यां ते जमुना घाटे रे । मारे जावुं छे पाधगी वाटे रे ।
अमने गली ते चोरी चढावे । अमने धीज पतिन करावे ॥हो राधा॥
राधा कोरा ते कुंभ मंगावो रे । माहि मोटा मणीगर मुक्कावो रे ।
सहु देखे माहेलीनो साथ । तेने ज्ञालुं हुं जमणे हाथ ॥हो राधा॥
नारी नदीयोना नीर मंगावो रे । सहुदेखन मुजने पावो रे ।
अमने पूछे तिथनां पाणी । हार आलुं नत्खेव आणी ॥हो राधा॥

चार गजनी ते चोरी स्वोदावो रे। मांहे मध्ये ते अभि विकावो रे॥
 पग पलटीने निसरुं बहार। तेथी चुकुनो आलुं हार॥ हो राधा॥
 धीज पतीज करनां चुकुं रे। हार आणी हैया पर मूळुं रे।
 नथी वी'तो गोविंदनो स्वामी। राधा वदि वचन शिश नामी॥ हो॥

* ॥ गरबो ॥ १० ॥ *

हार मुक्यो होय त्यांथी आलो। भूधरजी भूल्या माने भमावो रे॥
 प्रभु दावानल तमो पीधो रे। सहु देखत पोसमां लीधो रे।
 नाग प्राक्म वेद वसाणे। तने चौदलोकमें जाणे॥ भूदरजी॥ १॥
 मधगते खैयो लीधो रे। स्तनागर मंथन कीधो रे।
 वासुकी नागना नेतरां ताण्यां। वत्व काढ्यां मोडे न आण्यां॥ भूदर॥
 काली नागने नाथ्यो नाल रे। जल नाणीने लागी झाल रे।
 तहारां प्राक्म केही पेर वरसे। हार आल्या विना नव टळमे॥ भूदर॥
 सहु भरथ तमारी काया रे। कोने धुतवा जशोदाना जाया रे।
 हुंतो पूळुं तमारी धानो। विड्ल मायानी सो वानो॥ भूदर॥
 साने काजे ते शद वधारो रे। प्रभु आलोने हार हमारो रे।
 हठ महेलोने हरजी हठीला। गोविंदना स्वामी रसीला॥ भूदर॥

* ॥ गरबो ॥ ११ ॥ *

स स रंग तणी सेर उडी। रसीलाजी रसमां रह्या छो बूडी रे॥ टेक॥
 से रीझ्याते वैकुंठ नाथ रे। हरिये झाल्यो राधाजीनो हाथ रे॥
 रास रमवाने आरंभ थाप्यो। पछी हार राधाजीनो आप्यो॥ रसीला॥
 सहु गोकुलनी विजनारी रे। हरि रमामने राधा गोरी रे।
 हरि साथे ते लेसे ताळी। तेमां तारे श्री वनमाली॥ रसीला॥ २॥

घणी रंगे ते राधा रुड़ी रे । हाथे खल्के छे कांकण चूड़ी रे ।
 घणुं रीझे छे राधे राणी । धन दग्धन पुरुष पुराणी ॥रसिला॥३॥
 हार गायते गोविंददास रे । वहालो प्रेम तणो स्म पास रे ।
 हार गाय जे नर ने नारी । तेने तारे ते श्रीवनमाली ॥रसिला॥४॥

* ॥ ॥ गरबो ॥ १२ ॥ *

वृदावन बागे रे मीठी मोख्ली रे लोल ॥ टेक ॥
 ए मोख्लीये मोहां गोकुल गाम जो ।
 गोकुलनी गोषी रे जोवा निसर्यां रे लोल ॥ वृदावन ॥ १ ॥
 अमे गयांतां जल जमुनाने तीर जो ।
 कांठडेने उभो रे काहानजी गोवालीयो रे लोल ॥वृदावन॥२॥
 छोग भोग कांकरडी मत मार जो ।
 बेलडीया नंदमे सवालाखना रे लोल ॥ वृदावन ॥ ३ ॥
 छोग भोग पालखडो मत झाल जो ।
 पीतांवर फाटे रे मोधां मूलना रे लोल ॥ वृदावन ॥४॥
 श्याम मलुणा कृष्णजी भगवान जो
 कृष्ण कालाने राधेनी खेदे पञ्चा रे लोल ॥ वृदावन ॥५॥
 भले मल्या महेता नस्मैयाना स्वामी जो ।
 बुदनाने गहीरे हरिये दामणी रे लोल ॥ वृदावन ॥६॥

* गरबो ॥ १३ ॥ *

वृदावननी वाटडली रलीयामणी रे लोल ॥ टेक ॥
 जहां जोउं तहां शामलीयानां चेन जो
 गोवर्धन गंभीर तहां गाजी रहो रे लोल ॥ वृदावन ॥ ६ ॥

तहां करे छे कोकीला कलोल जो ।

बसवाने सरखां रे गोकुल गामडां रे लोल ॥ वृदावन ॥२॥

तहां छे महारा बहालजोनो वाम जो ।

ए मुख मौंघां कीधां सुंदर शामले रे लोल ॥ वृदावन ॥३॥

नरसेयो तो गाय तमारे दास जो ।

बृदावन वागे रे मीठी मोरला रे लोल ॥ वृदावन ॥४॥

* ॥ गरबा ॥ १४ ॥ *

बहालो मारो बंसीवटने चौक के । रमवा आवजो रे लोल ॥

रमसे गोपीने गोवाल के । बहेला पधारजो रे लोल ॥

रुडी गोकुलनी त्रिजनार के । बेगे बोलावजो रे लोल ॥

रुडी शरद पुनमनी रात के । चंद्र सोहामणो रे लोल ॥

रुडां जल जमुनानां नीर के । त्रठ रुलीयामणा रे लोल ॥

एवां मुखडांना तंबो के । मली तहां तेबडी रे लोल ॥

अमने राम रम्याना कोड के । नाथ संग बेलडो रे लोल ॥

फरती गान कथे त्रिजनार के । बचमां बालपो रे लोल ॥

बचमां नाचे श्री जदुनाथ के । मनमें मोद घणो रे लोल ॥

नाच्यो नरसेयो सुख जोई के । बाच्यो घणो रे लोल ॥

* ॥ गरबो ॥ १५ ॥ *

बहालो मारो मथुरां मेली ने के । गोकुल आवाया रे लोल ॥

बहालो मारो नंद तणा नंदलाल के । दाणी थई रह्या रे लोल ॥

मारे मही बेचवाने काज के । मारग रोकी रह्या रे लोल ॥

मारां फोड्यां महीनां माट के । गोरस ढोलीयां रे लोल ॥

हुं तो नहीं सांखु लगार के । वारजो कहानने रे लोल ॥
 हुं तो गखुं छु बली लाज । जशोदा नंदनी रे लोल ॥
 जशोदाये तेढाव्या तेणी वार के । वानडी पूछवा रे लोल ॥
 वहालो मारो हसता समना आव्या के । मंदीरमां थकी रे लोल ॥
 ओशियाली कीधी छे ब्रिजनार के । जुठडी तहां पडी रे लोल ॥
 मलीया नरसेंयाना नाथ के । गस समाडीयाँरे लोल ॥

* ॥ गङ्गो ॥ १६ ॥ *

सजनी सांभलने कहुं वात । अनोपम आजनी रे लोल ॥
 जई महारी केटले दहाडे कहांन । आव्या मारे बारणे रे लोल ॥
 वहाले मारे बाल्यां हमारां वेण के । लेउ एना भामणां रे लोल ॥
 वहाले मारे छेल छबीले कहान के । नाखी कांकरी रे लोल ॥
 आवी वागी मारे अंग के । हुं फरती फगीरे लोल ॥
 जाणे जई शालु पालव के । त्रिकमजी तणारे लोल ॥
 आज मारी जईने कहेजो एम के । हरि सुं विनती रे लोल ॥
 जेवा छे जुगना जादव राय के । तेवी हुं नथी रे लोल ॥
 बनमां चाली ब्रिजनी नार के । जे जेवी निसरी रे लोल ॥
 धरमां रोनां मेल्यां बाल के । सुध बुध विसरी रे लोल ॥
 पावले नेपूर्स्नो शमकार के । वाजु बंध बीछीया रे लोल ॥
 तहां तो थई रह्यो थईकार के । वाजे धुघरा रे लोल ॥
 तहां तो रास समे रंगीलो के । रस जाम्यो धणी रे लोल ॥
 भावे भोला छो बली आज के । सुखमें समी रह्या रे लोल ॥
 गावे नरसेंयो तहां दाम के । महिमा हरि तणो रे लोल ॥

* ॥ गत्वो ॥ १७ ॥ *

आनंदा रुडा आमो मामके । सरद मोहामणी रे लोल ॥
 बालाजीने कुँडल झलके कांन के । मुगट हीरे जड्यो रे लोल ॥
 प्रभुजीने पीनांबर पट्कुल के । पावडीये चब्बा रे लोल ॥
 अबला नहानी मोटी नार के । महु टोले मली रे लोल ॥
 पहेर्या चरणा चोली चीर के । कंचवो कसमसे रे लोल ॥
 पहेर्या भोतीना शणगार के । मारा मन हर्यां रे लोल ॥
 अबली बेणे रें चंचल नेन के । चनुरा चालनी रे लोल ॥
 अबलाये धर्या शोल शणगार के । हरिनी आगनी रे लोल ॥
 नहांतो रास रमें रंगीये के । राधा रंग भर्यां रे लोल ॥
 रंगमां बोली छे विजनार के । सम जाम्यो घणो रे लोल ॥
 गावे नरसैयो तहां दाम के । महिमा हरि तणो रे लोल ॥

* ॥ गत्वो ॥ १८ ॥ *

वहालो पहारो रामज रमे रे । भुल भूलामणी रे ॥
 कोई मने कहांन देखाडो रे । आलु हुं बधामणी रे ॥
 हैया केरो हार ज आलुं रे । पगां केरां बीचुवा रे ॥
 बाजुबंध बेरखां आलु रे । माथा केरी गोफणी रे ॥
 कान केरी झाल ज आलु रे । माथा केरी दामणी रे ॥
 वहालो मारे हमणा हुता रे । गया मुने वाहीने रे ॥
 पिनांबर पगलां हुतां रे । वहालो गया नाशीने रे ॥
 वेर घेर दुंदती हीहुं रे । दीवलडो साहीने रे ॥
 नैना केरा नीर सुकायां रे । रात दीन रोईने रे ॥

पांपणो तो पाकीने गईयो रे । आंसुडाँ लोहीने रे ॥
 वहाले मारे वेशगी कीधां रे । ज्ञलावी ज्ञोलीयो रे ॥
 वहालो मारे जईने परण्या रे । कुबजा नारीने रे ॥
 कुबजा तो बखडाँना ज्ञाडाँ रे । म्याँ थड रोपीने रे ॥
 वहालाने तो फरी परणाबुं रे । गोकुलीयुं जमाडीने रे ॥
 वहालाने तो हुं संभालुं रे । गावलडी दोहताँ रे ॥
 वहालो मारे मांखण खासे रे । बुमणलाँ धमीने रे ॥
 वहालो मारे ओडवे उभा रे । जमुनाँ जल नाहीने रे ॥
 भले मल्या नरसेना स्वामी रे । पीबुं पग धोईने रे ॥

* ॥ गरबो ॥ १९ ॥ *

गोपी एक वारने समे रे । कहानो पारणा में स्ये रे ॥
 एने कोई जोवाने जावो रे । पञ्चो अंगुठो धावे रे ॥
 सुथारीढा माहेग बीरा रे । कुंवर सारु पारणु लाव रे ॥
 पारणे छे हीरनी दोरी रे । हुलावे जशोदा मा गोगी रे ॥
 ज्ञगमग मोतीनी योगी रे । हिंदोले छे ब्रजनी गोपी रे ॥
 कहाना तारे केवी छे माडी रे । जईने जशोदा देखाडी रे ॥
 अन्यो अन्य पूछे छे सहुरे । कहाना तारी केवी छे वहु रे ॥
 कहाना तारे केवी छे वहु रे । जोवा मली ब्रजनी सहु रे ॥
 ओलंगीने रह्यो छे अलगो रे । पालवडे राधाजीने वलग्यो रे ॥
 भले मल्यो नरसेयानो स्वामी रे । गोपीयो सहु आनंद पामी रे ॥

* ॥ गरबो ॥ २० ॥ *

हस्ति मंदीर छे अनि सारां रे । मोती तोरण बांध्या छे ढार रे ।

गालिचाने तकिया साग रे । नहांतो पोद्या छे नंदजौना बाला रे ॥
हुं तो जोई जोई निहालुं रे । मारा पलक ना पाढ़ी वारुं रे ॥
मारी आंखडी रही छे भालीरे । केसर चंदन भयां छे कचोलां रे ॥
पाकां तेल कपुररस घोयां रे । हरिने चरचे जशोदाजी भोलां रे ॥
दिकरदानी सेवा कीजे रे । खोक्ले लेईने सांझ दीजे रे ॥
वारे वार ओवारणा लीजे रे । मारु, मनहुं ते जोईने रीझे रे ॥
नंद बावाये माँ नप काधारे । पुत्र जनमीने महासुखलीधां रे ॥
बंदीजन ते बोलज गाय रे । दान आपीने विदाय कीधा रे ॥
धन धन रे जशोदा माडी रे । हरिने निरसनां हमे दहाडी रे ॥
पुरी प्रीत हसे जो जाडी रे । नाख्यां दुखडां ते सघलां टाली रे ॥
धन धन जमुनाना रेती रे । हरिनां चरण कमल रज लेती रे ॥
धन धन जमुनानां नीर रे । वहालों मारो ते श्याम शरीर रे ॥
धन धन जुमनानां तीर रे । वहालो मारो पखाले शरीर रे ॥
धन धन रे गोकलीयुं गाम रे । वहाले मारे कीधो छे विश्राम रे ॥
धन धन ब्रिजनो वास रे । वहालो मारे रमशे ते हुलास रे ॥
धन धन ए गोपीनी जान रे । वहालो रमे ते नवी नवी भान रे ॥
धन धन नरसंयो दास रे । वहाले रन्धो छे अखंड रास रे ॥

* ॥ गरबो ॥ २१ ॥ *

सखी आज शामलीयो सारो रे । क्रिपा करी गोकुलमां पधायो रे ॥
चालो सखी जोवाने जईये रे । तेने जोई सांचैरां थईये रे ॥
नंद घेर आवी छे दिवाली रे । तेने वधावे ब्रिजनी बाली रे ॥
सहियर थोले मली सहु चाली । मधुरां गीत गाये रसाली रे ॥

मुस्तक मुक्यां छे महीना माट रे । दधि कादव थई छे वाट रे ॥
तहां तो घेर घेर ओच्छव थार रे । नहां तो नरसैयो बल बल जाय रे ॥

* ॥ गरबो ॥ २२ ॥ *

शामा कहे शामलीयाजी उठो रे । मारी वेण संभारीने गुंथो रे ॥
वेणी गुंथीने वाळो चोटी रे । मारे वहालो परोवे मोती रे ॥
सघली गोपीमां राधाजी मोटां रे । राधा डाल कदमने बलग्यां रे ॥
डाल भांगीने पांखडी दुटी रे । राधा नयनेथी धार बछुटी रे ॥
राधा पांपणीये बख धोर्यां रे । बख धोरी धोरीने पीर्धां रे ॥
शामलीयो ते मोहन बेली रे । शामलीया विना गोपी बेली रे ॥
गोपी हींडे वृंदावन जोनी रे । गोकुळ मेली मथुरां लीढी रे ॥
भले मल्या नरसैयाना स्वामी रे । सहु गोपी ते आनंद पामी रे ॥

* ॥ गरबो ॥ २३ ॥ *

गोपीकाने गयाँतां पाणी रे । जातां कहानुडे जाणी रे ॥
तेना धरमां धर्मीने पेत्रो रे । पेमतां पाढोमणे दीठो रे ॥
गोपीजल भरी गागेर लाव्यां रे । पाढोमणे वान सुणाव्या रे ॥
बाई महीडां तारां ढोल्यां रे । माखणीयां एणे चोर्यां रे ॥
बाई चालोने रावे जईये रे । जई माना जशोदाने कहीये रे ॥
जशोदाजी कहानने वालो रे । कहानुडे ते आली गाव्ये रे ॥
सहु गोपी ते वाजे आणी रे । तमो वालोनी नंदनी गणी रे ॥
बाई जावोने जोवन जाणुं रे । घेर आवे तो नाद उतार रे ॥
मा आ गोपी खेदे मारे पडी रे । निन पढखे आवे मारे चढी रे ॥
मा गोपी सदानी जुकी रे । निन राढ लेईने उठी रे ॥

मा हुं नोधडीयो जाणी रे । मारी चोटली माहीने नाणी रे ॥
 माकहो तो आ वनमें रहीये रे । कहो तो वनदां मेलीने जई रे ॥
 माग कहान थो तमे काला रे । माग प्राण थकी तमे वहाला रे ॥
 हुं तो दुधपहुंचा लेवा आलुं रे । लाडवा गजवे घालुं रे ॥
 हुं तो आलुं मोनानी माला रे । कंदोग बुधरीयाला रे ॥
 एवी गोकुल लीला जाणी रे । भले मल्या नरसैयाना स्वामी रे ॥

* ॥ २४ ॥ *

गोकुल वधाववाने आवीया रे । देवकीये जनम्या छे वली कहान ॥
 लटके मोहा रे सुंदर शामलीया रे ॥

वहालोंमागे मथुरांथी गोकुल आवीयारे । गोकुल आवीने चारी गाय ।
 आ'वी रुडी आदकदमनी छांयाजी रे । नहां पोद्वा छे श्रीरणछोड़ ॥
 वहालोंमारो दधि मावणना भोगीया रे । भीलडीना एडां आरोग्यां बोर
 अपाड आव्योने कोयल टहकी रे । वनमां बोले घहेग मोर ॥लटके॥
 चहोदश चमके वनिना विजली रे । झरभर वरसे झीणा मेह ॥लटके॥
 नरसेंनो स्वामी छे अनि उत्त्रव्योरे । हावे एनुं जोईशुं मलगतुं मुवा ॥ल०

* ॥ २५ ॥ *

मथुरांनी वाटे हरि रथ वही गया रे ॥
 ओजाय ओजाय रथ माग नाथ । मथुरांनी वाटे हरि रथ वही गया रे ॥

उभी रहीने निरखुं माग नाथ ॥मथुरां॥

सुरज उगेरे अनि धोंमग रे । झरभर उडे झीणी स्वेह ॥ मथुरां ॥
 जमुनानी तीरे कदम केरं झाडवां रे । दोके चढीने निरखुं माग नाथ ॥
 जोउ रे जशोमति नंदजी नातने रे । जोउ रे गायोना गोवाल ॥म०

जोउ रे गोकुलकेरी गोवालणी रे । जोउ रे वृंदावननां झाड ॥ मथुरां ॥
 कर्मना कोडे अकरुडजी आबोयारे । गोपीयोना लेईने जाशे प्राण ॥
 स्वना मरीचां सुखडां वही गयां रे । हवे हरि आव्यांरे जुल्म दुःख ॥
 गिरधर गोकुल गामनो गरसीयो रे । गोपीयोने मांया मोहनां बाण ॥
 नरसेनो स्वामी छे अनि श्यामलो रे । हवे एनुं केम करी जोईए मुख ॥

* ॥ गर्वो ॥ २६ ॥ *

आबो आबो जशोदाना कहांन । गोउरुडी करीये रे ।
 सुडी वृंदावननी कुंज—गलनमर्मे स्माएँ रे ॥ टेक ॥
 हठ लीधी हरिनी साथे । रिमायां राधा रे ।
 मुखे लीधां छे मुनिव्रत । बोल्यानी बाधा रे ॥ १ ॥
 तहांनो मनावाने काज । आव्या छे मोरारी रे ।
 तहांनो नोहोग करे दीनोनाथ । ना बोले राधा रे ॥ २ ॥
 जावो जुठडा बोल्या नाथ । अहीयां सीद आव्या रे ।
 तमारां हेन होय तहां जाव । घणाना संगी रे ॥ ३ ॥
 तमे को'नां राख्यां मांन । नाथ बहु रंगी रे ।
 शामलीयाजी साने काज । आबो छो बलग्या रे ॥ ४ ॥
 मारा मनना मानेला लाल । रहोने अलगा रे ।
 वहाले आछी पीछोडी ओढाडी । वहाले मारे अमने रे ॥ ५ ॥
 हावे ताणी ताणी सुंत्यो छो । घटे नहि तमने रे ।
 वहाले असृत पाईने उछेयाँ । वहाले मारे अमने रे ॥ ६ ॥
 हावे बखडां धोरी सीद पावो । घटे नहि तमने रे ।
 अंध कुवामें उतायाँ । वहाले मारे अमने रे ॥ ७ ॥

हवे वरतो बाढ़ी सुं ल्यो छो । घटे नही तमने रे ।
 रास रमे राधाजीनी बेनी । कमुंबा पहेरी रे ॥ ८ ॥
 कसुंबे कमची कोर । रमे अलबेली रे ।
 भले मत्या नरमैयाना नाथ । राधाजी मनाव्यां रे ॥ ९ ॥

* ॥ गरबो ॥ २७ ॥ *

एक सखी कहे बीजीने । माभळ बेनी वान ॥ वेण वागे छे रे ॥
 सजनी मोरी सीरे कहुं । एनी सोभानो नहि पार—वेण वागे छे रे ॥
 कोट कंदर्प कहानजी । एनो मोरली उपर हाथ—वेण वागे छेरे ॥
 पदन तो चाले नहीं । रह्यो छे एक ज ठांम—वेण वागे छे रे ॥
 बाछरुं दुध पीये नही । धेन न चरे चार—वेण वागे छे रे ॥
 जगुना जल उमगे नही । रह्यां एक ज ठांम—वेण वागे छे रे ॥
 व्याकुल थई सब म्वालणी । गोकुलनी ब्रिजनार—वेण वागे छे रे ॥
 नादे वाही मोरली । मोही छे ब्रिजनी नार—वेण वागे छे रे ॥
 अबला सणगट पहेरीया । कंई विपरित लीधावेष—वेण वागे छे ॥
 नयने सिंदुर सारीयां । कंई सेंथे काजल रेख—वेण वागे छे ॥
 कांकण पावले पहेरीयां । कंई पावना पहेर्यां कांन—वेण वागे छे ॥
 घरना कारज फेडीयां । कांई रोनां मेल्यां बाल—वेण वागे छे ॥
 नादे वाही वांसली । गोपि चाल्यां लहारो लहार—वेण वागे छे ॥
 गायो चारंता गोवालीया । कंई गोविंदनी छे भाल—वेण वागे छे ॥
 केसा तेरा गोविंदजी । केसा हे एधांण—वेण वागे छे रे ॥
 शामला मरा गोविंदजी । मोरलीनी एधांण—वेण वागे छे रे ॥
 पीछां पीतांचर पहेरीयां । केसरनी छे आड—वेण वागे छे रे ॥

लीलां अंबरं ओढियां । कुँडल झलके कांन—वेण वागे छे रे ॥
 मोर मुगट सोहामणो । लाल गेडी छे हाथ—वेण वागे छे रे ॥
 कंठे उतरी सांकली । पोंचीनो शणगार—वेण वागे छे रे ॥
 पगे पीतल केरी पावडीयो । कंई बाल्या चतुभुज जाय—वेण वागे ॥
 जोनां जोनां वन गयां । कंई शोधी काढया श्याम—वेण वागे ॥
 नरसेना स्वामी मल्या । कंई उतार्यां भव पार—वेण वागे छे रे ॥

* गरबो ॥ २८ ॥ *

सखी अकरुडजी तो रथ जोडीने आव्या रे—साहेली ॥
 सखी बाल्यने तेड्यानी वातो लाव्या—मारी साहेली ॥ १ ॥
 रथ छूट्या छे नंद तणे दरबार रे—साहेली ॥
 सखी ब्रिज विनताना बृंद उमां छे द्वार—मारी साहेली ॥ २ ॥
 छाना छानी गुंज करे छे घरमें रे—साहेली ॥
 सखी मन मारुं विंधायुं विहुल वरमें—मारी साहेली ॥ ३ ॥
 अकरुडजीने आवडो सो हु तो खार रे—साहेली ॥
 सखी हरिने लेवा आव्या छे निरधार रे—मारी साहेली ॥ ४ ॥
 हरि लई जानां सखम मारुं जाशे रे—साहेली ॥
 सखी ब्रिज विनता गोकुल केम रहेवासे—मारी साहेली ॥ ५ ॥
 ॥ गोकुलनि सोभा गोविंद बडे जाण रे—साहेली ॥
 ॥ सखी गोविंदजी गये उजड परमाण—मारी साहेली ॥ ६ ॥
 ॥ सत सन कहुं छुं हरि हलधर बेउ उब्या रे—साहेली ॥
 ॥ सखी ब्रिज विनता उपर बालमजी रुद्या—मारी साहेली ॥ ७ ॥
 ॥ अमारे तो आवडां शां हुनां वेर रे—साहेली ॥

सखी अमरीत आलीने पायां ज्ञेन-मारी साहेली ॥ ८ ॥
 ज्ञेन थोड़ीने ब्रिजकिननाने पासे रे-साहेली ॥
 मारु प्राणजीवनने तेढ़ी मथुरां जासे-मारी साहेली ॥ ९ ॥
 अणधरतुं छे अकरुजीनुं नाम रे-साहेली ॥
 सखी साधु जन तो ना करे एवां काम-मारी साहेली ॥ १० ॥
 अमो उपरथी वहाले उनारी महेर रे-साहेली ॥
 सखी अबलानी उपर तो मांडी केर-मारी साहेली ॥ ११ ॥
 धणी विनानु निरधणीआलुं थामे रे-साहेली ॥
 सखी गोकुल जईने कोनी ओथे रहीसुं-मारी साहेली ॥ १२ ॥
 अमारो तो आवडो सो हु तो वांक रे-साहेली ॥
 सखी खूणेथी काढीने डंडया गंक-मारी साहेली ॥ १३ ॥
 आवुं न घटे तमने सुंदर श्याम रे-साहेली ॥
 मत प्रितलडी छोडी चाल्या गाम-मारी साहेली ॥ १४ ॥
 पूर्वे एणे बहुं कर्या दुकृत रे-साहेली ॥
 सखी कूवामां महेलीने बाढी वगन-मारी साहेली ॥ १५ ॥
 बृंदा तारी पनिवता विवेकी रे-साहेली ॥
 तेनु मत मुकावी दीदुं एका एकी-मारी साहेली ॥ १६ ॥
 ज्ञान वसनी ए बोली वनिता एक रे-साहेली ॥
 सखी सांभळमो तो कहुं एक विवेक-मारी साहेली ॥ १७ ॥
 पूर्वे ए'ने हुती सीता नारी रे-साहेली ॥
 सखी लोकोनी बोलडीए काढी बहार-मारी साहेली ॥ १८ ॥
 पंचवटीमां मली सुर्पनखा नार रे-साहेली ॥

तेनां कान नाशिका काष्ठां छे निरधार—मारी साहेली ॥ १९ ॥
 सदा अधटतुं कालुडानुं काम रे— साहेली ॥
 सखि मथुरां माटे मेल्युं गोकुल गाम—मारी साहेली ॥ २० ॥
 भणे नसैयो मेले सखी निश्चास रे— साहेली ॥
 सखी गद गद कंठे अधर मुखे बोले—मारी साहेली ॥ २१ ॥

* गरबो ॥ २९ ॥ *

केम रहीये गोकुलीयामां केम रहीये—मारा हरि विना लागे वेगन ।
 गोकुलीयामा केम रहीये ॥

सोमवारे शामलीयो मिधार्या रे । गोकुल मेली मथुरां आव्यारे ॥
 सहु गोपीयोने मन भाव्या । गोकुलीयामां केम रहीये ॥ १ ॥
 मंगल मेर करो मोगरी रे । हुं तो जन्मनी दासी तमारी रे ॥
 प्रभु लज्या राखोने हमारी । गोकुलीयामां केम रहीये ॥ २ ॥
 बुधवारे बेमी शुं रख्या रे । वहालो गरुड चढ़ीने गया रे ॥
 दीनोनाथ नमेरा शुं धया । गोकुलीयामां केम रहीये ॥ ३ ॥
 बृहस्पतवारे ते भरजो बनमें रे । महारो वा'लो मेहेली गया बनमें रे ॥
 हुं तो दाढ़ी घणु मारा दिलमें रे । गोकुलीयामां केम रहीये ॥ ४ ॥
 सुकवारे ते सहु सणगारी रे । मने मेणा दे छे बहु नारी रे ॥
 मने बलता उपर दे छे बारी । गोकुलीयामां केम रहीये ॥ ५ ॥
 शनीवारे ते सांन करीने । वा'ला आवो तो हरिने तेढ़ीने रे ॥
 हुं तो नहीं रे जावा देउ फरीने । गोकुलीयामां केम रहीये ॥ ६ ॥
 आतवारे हरि खेर आव्या रे । वा'लो जल जुमनामें नहाया रे ॥
 महेता नसैयाने मन भाव्या । गोकुलीयामां केम रहीये ॥ ७ ॥

* ॥ गखो ॥ ३० ॥ *

सुनो ओधवजी—हरि विना केम बसीए गोकुल गाममा ॥
 मध गते पथुगं ताज कर्या । गोकुल जावा इच्छा धर्या ।
 एनु र्ष्य देखी जुमना वर्या । सुनो ओधवजी० ॥टेक॥
 हरि आवंता ने हरि जावंता । महु गोपीयोने मन भावंता ।
 वहालो प्रेम करी बोलावंता । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥१॥
 हरि आडे रहेता ने अमो गायो दोंतां । दुःख सुखनी वानो त्यां कहेतां
 वहालो प्रेम करी नाली लेनां । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥२॥
 माग हरिने जमवा तेहंतां । दधिमां साकर मेलंतां ।
 वहाल्ये जमता ने वा द्वेशंतां । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥३॥
 तमो चनुर गया छो चूकीने । रधानी मंगत मूकीने ।
 तमो माव गया छो सूकाइने । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥४॥
 वृद्धावन धेन चरवे छे । महु गोपीयोना कारज सारे छे ।
 नहां कहानैयो दल मधे छे । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥५॥
 वृद्धावन मोरली वाजे छे । एनो शब्द गगनमां गाजे छे ।
 गोपी उभी रही गुण गाये छे । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥६॥
 वृद्धावन चंसी वाजे छे । एनो शब्द गगनमां गाजे छे ।
 गोपी उभी रही वेण वादे छे । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥७॥
 मारे हरि विना पल जाये छे । मने घगी विमासण थाये छे ॥
 गोपी रहीने गोविंद गाये छे । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥८॥
 गोकुलमां गोपो छे प्यारी । कर धर्यो गोवर्धन गिरधारी ।
 त्यां नरमैयो छे बलिहारी । सुनो ओधवजी हरि विना० ॥९॥

* ॥ गरबो ॥ ३१ ॥ *

आ शरद पुनमनी गत, मुजने बाली रे ।
 सहु गोकुलनी विजनार, समवा चाली रे ॥ १ ॥
 सखी पहेयाँ ते चरणा चीर, पीतांबर पीलाँ रे ।
 मारे हरि सुं समवा गम, करवी लीला रे ॥ २ ॥
 सखी बांहे बाजुबंध जोड, काजल मायाँ रे ।
 सहु सुंदरी करे शणगार, मांग समायाँ रे ॥ ३ ॥
 सखी काने कुँडल नाक, निखल मोती रे ।
 गोपी दस्पण लेनी हाथ, मुख्हुं जोता रे ॥ ४ ॥
 सखी नरसैना म्बामी, मल्या मन मान्या रे ।
 वहाले तेढी स्पाडयाँ गम, आनंद पायाँ रे ॥ ५ ॥

* ॥ गरबो ॥ ३२ ॥ *

तमे गोकुलना गिरधारी रे । मीठडाँ गोरम ल्यो गोरस ल्यो ॥
 मारुं गोरस लागे छे मीढुं जो । कहान कीए जनमारे दीढुं रे ॥ १ ॥
 मने पगनी दीधी आंटी जो । मने मुखने तंबोले छांटी रे ॥ २ ॥
 मने पगनी दीधी एडी जो । मने वृद्धावनमां तेढी रे ॥ मीठडाँ ॥ ३ ॥
 गोरम पीयो गोरमनी गीते जो । दास नरसेंयानो गीइयो प्रीते ॥ ४ ॥

* ॥ गरबो ॥ ३३ ॥ *

एक मने तमे सहुरे मांभलजो । बाल लीला संभलावुं रे ।
 गोकुल केरी लीला बखाणुं । हस्ये हरि गुण गाय रे ॥
 एक समे गोपी जल जमुना में । जल भरवाने जाय रे ।
 सुतेलाँ बाल धीधोरी जगडयाँ । ने बालडाँ धवडाव्याँ रे ॥

पाढ़ पडोशी कोई नव जाणे । हण खण मांडी उनार्धा रे ।
 संकिलदेथी महीढाँ उनार्धा । भाव करी आगेगया रे ॥
 दूर थकी गोपी आवंता दीठा । हरि नाश एणी वाटे रे ।
 बेहुं उनारी गोपी रोम भगया । महावा दोखां मोगणी रे ॥
 साम भयां गोपी रीस भर्णां । नंदगजाने घेर जाय रे ॥
 सांभळो ओ माना जशोदा । कहो गोकुल केम ग्हीए रे ॥
 सुनां मंदीर तारे कहाँनुडे जाणी । मही मांखन चोरी खाधां रे ॥
 नवलख धेनो मंदीर दुझे । तारे मंदीर मीद आवे रे ॥
 मारा कहानने सोधीने लावो । हुं मारुं एक सोटी रे ॥
 एटलो शब्द गोपी हृदयमां रखी । चाल्यां पोताने धेर रे ॥
 नंदजी बेडा जशोदाजी बेडां । बेडी मकल विजनारी रे ॥
 नंदजी हम्या जशोदाजी हम्यां । हमी मकल विजनारी रे ॥
 चीरनो छेडो गोपी हरिने ओढाडयो । केडे बेसाडीने जाय रे ॥
 चीरनो छेडो गोपीए तांमरो कीधो । केडे पोतानुं बाल रे ॥
 झाङ्गां सुह मांखणीए खैडां । ताणी बांध्या बेहु हाथ रे ॥
 महामा मंदीरीएथी हरि निमरीया । गोपीका लावी गव रे ॥
 माकर शेषडी ल्यो मारा प्रभुजी । कहो तो छोली आलुं रे ॥
 मांखण रोटली ल्यो मारा प्रभुजी । कहो तो चोपडी आलुं रे ॥
 दाढ़म द्राक्ष अनिरे मीठेगं रे । कहो तो फोलीने आलुं रे ।
 भले मल्या महेना नस्मैना स्वामी । गोपीयो लीला लहेर रे ॥

* ॥ गरबो ॥ ३४ ॥ *

कहो रे मखी कारतक केम जासे । वनमां मोरली कोण वहासे ।
 दधिनो दाणी कोण थासे ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥टेक॥

मागमरे तो मन मार्ग मोश्चाँ । हसिर पोतीका खोया ।
 सामीकर शामलीयो न जोया ॥ ओधवजी नव रे घटे एवां ॥१॥
 पोषे तो सहुको सूक्ष्यां । मोहनजी तो मेली गया माया ।
 दशन तो दोनी दयला ॥ ओववजी नवरे घटे एवां ॥२॥
 महाए तो मन न लखे माहारुं । कहाना यिना काजल करन सरुं ।
 जोवनीयुं जाय छे माहारुं ॥ ओववजी नवरे घटे एवां ॥३॥
 कागणे रंग रमीए होशी । पेहरग मारे चरणां ने चोली ।
 चुंदडी मारी केमरमां गेशी ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥४॥
 चैररे तो चंपे गयां चुक्की । बहाले मारे भर जोवन मूकी ।
 हुं तो नाग दशननी भूखी ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥५॥
 वैशाखे तो वावलीया वाया । स्वामी धेर आवो नावलीया ।
 दुधडे धोउं ताग पावलीया ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥६॥
 जडे तो जादने जोया । मारा तो नाग मरवे खोया ।
 भावे भूदरजीने जोया ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥७॥
 आषाडे तो मेघ भलो वरमो । नदीए नीर घणां भरसो ।
 पीयुजी केम करी उतरमो ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥८॥
 श्रावण तो मखगीए वरस्यो । नदीए नीर घणा बलजो ।
 पियु माग परदेशी मलजो ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥९॥
 भाद्रवो तो भली पेरे गाज्यो । सहु कोईनी पूरी छे आशो ।
 अमोने मेहेल्यां नीगसो ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥१०॥
 आमो मासे दीवाली आवी । भले मल्या नरसेना स्वामी ।
 गोपी महु आनंद पामी ॥ ओधवजी नवरे घटे एवां ॥११॥

* ॥ गरबो ॥ ३५ ॥ *

सखी गोकुल गामने गांदरे रे लोल । तहाँ सखा मल्या बलवीरजो ॥

कृष्ण चाल्या वृंदावन भणी रे लोल ॥

तहाँ गोपीजन गावडी लेईने आवीयां रे लोल ।

आवी उभा छे गोकुल चौकजो । कृष्ण चाल्या वृंदावन भणी० ॥

सघली धेन संभाक्ष माग सामजीरे लोल । नाहारी धेनोने पाजो नीरजो

त्यारे वसंत रत रलीयामणी रे लोल । तहाँ दडे रमे दयालजो ॥

करे गेडी दलुलो उलारीयो रे लोल । जई पडबो कालिन्दी मांहि जो ॥

त्यारे सघला सखा विमासीया रे लोल । हवे दडा विना सी परंजो ॥

त्यारे दडो लेवाने दयालजी रे लोल । फाळ नांखी कालिन्दी मांहि जो ॥

जई नाग दखारे उभारहा रे लोल । सघली नागण निमरी वहारजो ॥

बाई बालक जाने कोईनुं पुतलु रे लोल । जाणे सूरज कोटि समान जो

भाई वापनुं ते घर केम विर्यो रे लोल । तारे नागने धेरसुं कामजो ॥

त्यारे कृष्णजी कहे भोली नागणी रे लोल । ताग नाग साथे मारे कामजो ॥

उभो वेण वगाडे विठ्ठलो रे लोल । ब्रह्म लोक जई पहोंच्यो साद जो ॥

त्यारे जबकीने कालीनाग जागीयो रे लोल ।

आवी भीड़ी भगवान साथे बाथ जो ॥ कृष्ण चाल्या वृंदावन भणी० ॥

त्यारे ढींगां पाटने गरदा कोणीयो रे लोल ॥

एना थयां शोभीतां शरीर जो ॥ कृष्ण चाल्या वृंदावन भणी रे लोल ॥

त्यारे कमलने ढाँडे नाग नाथीयो रे लोल । अलबलो थयो असवारजो ॥

त्यारे नाग पत्नी कहे भोला नाथजी रे लोल ।

महारा नागने मे'लो महाराज जो ॥

अमो आव्यां तपारे आम रे रे योऽ। पेला गरुड तणा बेमनार जो ॥
त्यारे दया कर्गिने दयालजीरे लोला आप्या मंबचक गदा पञ्च ध्यान जो
महेता नगमैना स्वामी विठ्ठल रे लोल । वहाले वाढी स्माइचां मार जो ॥

* ॥ गरबो ॥ ३६ ॥ *

बाई ब्रिजमें वातो एवी थाय छे रे । वहालो कृष्ण मथुरांमें जाय छे रे ॥
बाई ब्रिजमें वातो एवी थाय छे रे ॥

रथ जोडीने अकरुड आवीया रे । एनो मामा शंदेशा लावीया रे ॥
कोई दहाडो हस्ति नथी दुभव्या रे । एनो माने उदासीन थाय छे रे ॥
सहु गोपीका मली अरजदाखीये रे । हाथ जोडी हस्ति अंहीयांगखीएरे
सहु ब्रिज विनता टोले मली रे । महेतानगमैना नाथने बेरी बर्मे रे ॥

* ॥ गरबो ॥ ३७ ॥ *

मथुरांमा हस्ति जाया नहीं देउं रे । अबलानुं मोहनजी मानो कहुंरे
तमो कहेमो ने स्थिर करी स्थापसुं रे । कुबजाथी अधिक सुख—
—आपसुं रे ॥ मथुरामां ॥ ३ ॥

एम कहेनां हमारां कहां नहीं करो रे । अमने मारी पछी डगलां भरोरे ॥
मर्वे गोपी तहां टोले मली रे । दाम नगमैना नाथने रोकी रही रे ॥

* ॥ गरबो ॥ ३८ ॥ *

वनमें वागे रे वांसली । ते तो मारे मंदीरीये संभलाय हो लाल ॥
वनमें वागे रे वांसली ॥ टेक ॥

इवे मने घम्मां तो गमतुं नथी । सुना मंदीर खावा धाय हो लाल ॥
भुखे भोजन तो भावे नहीं । नयणे निंदा तो ना आवे लाल ॥ वनमें ॥
नानी नंदल कहे में जाणीयुं । गोरीने गिरधर साथे गोठडी लाल ॥

सामुए समग्ने समजावीयुं । बहुने बल्लर्यां छे कई वंत हो लाल ॥
महेना नरसेना स्वामी मत्या । वाले मारे शाढ़ी रमाड्यां गस हो लाल ॥

* ॥ गरबो ॥ ३९ ॥ *

गोकुल वहेला पधारजो । पियुजो पाछा वाळजो रथडा लाल ॥

गोकुल वहेला पधारजो ॥ टेक ॥

वहाणामां जोउ छुरे वाटडी । घणु कहीने शुंकरीए हो लाल ॥ गोकुल ॥

मथुरां मामाने मली आवजो । वालाजी क्यम करी राखुं वाळी लाल

अकरुर आणी अमने सोंपजो । हरि हलधरनी जुगना जोडी लाल ॥

जुगना जीवन मारी जीभडी । जाव कहुं तो नाखुं तोडी लाल ॥

आणी आणीने सेरीए । मोहन जाव छो अमने मारी लाल ॥

आंखे आंसुडां उभर्यां । बलावीने व्याकुल थईए लाल ॥ गोकुल ॥

गोकुल मथुरां बेहु कांठडे । वच्चे वहे छे जुमना पुर हो लाल ॥ गों० ॥

महेना नरसेना स्वामी मत्या । वाले मारे उतार्यां भवपार हो लाल ॥

* ॥ गरबो ॥ ४० ॥ *

तमो अजाण्यां अमे जाणीना रे । मारो पालवडो नव ताणीता रे ।

तमो समजी रहो मन मांहिरे । शामलीया वहाला रहो वेगळा रे ॥

नारी शुं समझावे मुजने रे । हुं तो नही रे जावा दउ तुजने रे ।

तारी मरडीने राखीम बांब्य रे । महियागी राधा आलो दाणसुं रे ॥

अल्या बांब्य सु मरडे विडला रे । मेंतो तुजसरखा बहु दिला रे ।

कपर्लं छे कंमनु राज रे । शामलीया वहाला रहो वेगळा रे ॥ २ ॥

नारी कंसथकी सुंथाय छे रे । एवा कई आवेने कई जाय छे रे ।

तारा उरना उतारीस हार रे । महियारी राधा आलो दाणसुं रे ॥ ३ ॥

अल्या हार हैयानो तुझमे रे । मारी महिनी मटकी फुटमे रे ।
 धेर सासुडी देसे गार रे । शामलीया वहाला रहो बेगवा रे ॥४॥
 नारी गारने हार नहीं चढेरे । झेनु लेहेणु होय ते लहे रे ।
 एमदाण महेल्यां केम जाय रे । महियारी राधा आलो दाणसुं रे ॥५॥
 अल्या दाणीते क्यांथी आवीयो रे । मथुरांथी गोकुल आवीया रे ।
 चारी नंद नणे धेर गाय रे । शामलीया वहाला रहो बेगवा रे ॥६॥
 नारी गायो चार्यामें सी लाज छे रे । एतो पोत पोताना काज छे रे
 एना महेणडीया नव होय रे । महियारी राधा आलो दाणसुं रे ॥७॥
 अल्या मेणा माणसने लागे धणां रे । सुने वहनां होय ज्यां बे जनारे ।
 तने नीरलजने नहि लाज रे । शामलीया वहाला रहो बेगवा रे ॥८॥
 नारी हाथ ना मेलुं ताहेरो रे । अंहियां अमल थाय छे माहेरो रे ।
 पाटे दाणनो दोकडो मेल रे । महियारी राधा आलो दाण सुरे ॥९॥
 अल्या नंदबाबानो तुं छोकरो रे । तारी पामे नथी पैसो रोकडो रे ।
 तने आवडो गुभान केम होय रे । शामलीया वहाला रहोने बेगवा रे ॥
 तुं तो भ्रखुभाननी छोकरी रे । तारी पामे नथी पै रोकडी रे ।
 तने आवडो मत्सर केम होय रे । महियारी राधा आलो दाण सुरे ॥१०॥
 हुं तो बिननी करुं छुं ताहेरी रे । स्वामी रुघनाथना हरितमो थकी रे ।
 पाटे महिना दाणना होय रे । शामलीया वहाला रहो बेगलारे ॥१२॥

* ॥ गङ्गो ॥४३॥ *

कंस रायने कहेवा द्यो कहाना । मारा घरमां पेसो छो छोना ।
 छाना माना घरमें पेसो जावा छो । माखन मारुं चोरीने खावो छो ॥
 दहीं दुध गोवालने पावो छो । कंस रायने कहेवा द्यो ॥ १॥

गोकुलीयाना लोक भेगा थईशुं । मथुरांमाँ फरीयादी जईशुं ।
महिनु मूल गणी गणी लईसुं । कंस रायने कहेवा धो० ॥ २ ॥
धेर धेर माखन मागी खाने । वहालो होय तुं तारी माने ।
भले मत्या नरसैना स्वामी । कंस रायने कहेवा धो० ॥ ३ ॥

* ॥ गग्बो ॥ ४२ ॥ *

वरसाणा गामनी गोवालणी रे । मारे मही वेचवाने काज ।
मारग रोक्यो गोवालीए रे ॥टेक॥

महि मारे मथुरांमाँ वेचवुं रे । दाण मागे छे नंद कुमार ॥मारग॥
टोळे मली छे सहु तरुणी रे । मारां नथी महीनां दाण ॥मारग॥
ओछी तुं जान आहिसनी रे । तारां लईशुं महीनां दाण ॥मारग॥
दाण लवींग सोषारीने एलची रे । दाण होय ते खांड खजुर ॥मारग॥
काली ते कामल नारे ओढने रे । नारो भरवाडनो अवतार ॥मारग॥
आहिसडां घेरतुं अवतर्यो रे । तें तो मागीने पीधी छाश ॥मारग॥
नरसैनो स्वामी छे श्यामलो रे । भले मत्या रे भालणना राय ॥मा०॥

* गग्बो ॥ ४३ ॥ *

मारे धेर आवजो रे वा'ला । तमो माता जशोदाजीना काला ॥
मारे धेर आवजो रे समीया । तमो मारा रुदीयाकमलमाँ वसीया ॥
मारे धेर आवजो रे दा'डी दा'डी । तमो दीठडे मारी आंखडी टाढी ॥
मारे धेर आवजो रे हरि हेलाँ । हुं नमने पीख्सुं खांड धीने केलाँ ॥
ते क्यम विसरे रे सुखडाँ । वा'लाजीना जोयां सखां मुखडाँ ॥
मुखडुं पुनम रे चंद । वहालाजीनी मोरलीये आनंद ॥
झीणि झीणि मोरली रे वाजे । ते तो मारा छेल छबीलाने छाजे ॥

पावले धुधरी रे घमके । वा'लो मारो चाले ठमके ठमके ॥
पूरण पून्ये रे पामी । भले मल्या नग्सेंयाना स्वामी ॥

* ॥ गरबो ॥ ४४ ॥ *

महीयारी महो बेचवाने गई । मोरलीने नादे उभी रही ।
झाँझार झमके नेपुर वाह्य । कहानजी आवे मारो पाल्क साह्य ॥
महेलो महेलो कहानजी अमारा चीर । हम तेगी बेनीया तुम मेरा वीर
कीसकी बेनीया कीसका वीर । हम परदेशी तुम आहीर ॥ २ ॥
एटलुं सुनीने महीयारी गई । जशोदाने मंदीर उभी रही ।
माना जशोदा तमारे कहान । नित उठी मागे महीनु दान ॥ ३ ॥
दाण मोसे मही चोरी खाय । कहो गोकुलमा केम रहेवाय ।
जाओ रे गोवालणी हमणां घेर । कहानजी आवशे त्यारे करीशुं पेर ॥
गौधेन चारी कृष्ण आव्या घेर । अरे कहाना तारी आशा पेर ॥
माना जशोदा तमारी आण । ए जुठडी ए चतुर सुजाण ॥ ५ ॥
बुंदावनमां चारु गाय । त्यां आवे ए जनी बे चार ।
एक आवे ते मारी मोरली साह्य । बीजी आवे ते मारे मुगट भराय ॥
ब्रीजी आवे ते मारी सुसना जुवे । चोथी आवे ते मारे चरणे नगे ।
नग्सैं मढेता क्यां लगी गाय । कहानजी उभा मोरली वाह्य ॥ ७ ॥

गरबो (गगफेर) ४५

जसोदा तमाग काहांन कुंवरने । साद करीने बोलावो रे ।
ब्रीजमां आती धुम करे छे । नहीं कोई पुछणहार रे ॥
सौकु तोड्यु गोग्स फोड्युं । उघाडीने ढार रे ।
मांखण खाधु वेरी नाख्युं । सखे कीधुं खुवार रे ॥ ज० ॥

खां खां खोला करनो । हीडे बीहे नहीं लगार रे ।
 मही मथवानी गोळी फोडी । आशां कहीए लाडरे ॥
 वारे वारे वारु मोहन । हवे नहीं राखुं भार रे ।
 नीन उठीने कहो केम सहाए । रहेवुं नगरमां ज्ञार रे ॥ ज० ॥
 महारो कांहांनजी घरमां छे । बाई क्यारे दीठो बहार रे ।
 दही दुधना माटज भरीयां । बाई चाखे नहीं लगार रे ॥
 शाने काजे सहु आव्यां छे । आवी छो दश वार रे ।
 नरसैयाना स्वामी साचा । जुठडी सहु ब्रीजनार रे ॥ ज० ॥

* ॥ गरबो रागफेर ४६ ॥ *

में नहि माखण खायो । मैया मोरी में नहि माखण खायो ॥
 भहोर भये गौवनकी पीछे । मधुवन मोही पठायो ॥
 चार प्रहर वृदावन भट्के । सांज परे घर आयो ॥ मैया ॥
 में बालक भैयन के छोटे । छींको केही बीधी पायो ॥
 ज्वाल बाल सब बेर परे हैं । बर बस मुख लपटायो ॥ मैया ॥
 तु जननी मनकी अती भोगी । इनके कहै पति आयो ॥
 तेरे जीय कच्छुभेद उपजत है । जानी पगयो जायो ॥ मैया ॥
 ले ले तेरी लकुटी कामरीयां । बहुतेक नाच नचायो ॥
 सुरदाम नब हसी जसोदा । ले उर कंठ लगायो ॥ मैया ॥

* ॥ गरबो ॥ ४७ ॥ *

कास्तक कमला कहांनजी—हरे कई अलुणो सणगार (२)—
 गोविंद धेरना आव्या रे ॥ १ ॥

मागमर महिने मन हयाँ-एनुं रूप चतुभुज पास (२)-
गोविंद घेर ना आव्या रे ॥ २ ॥

पोष मासनी पुनमढी-कर्द्द आकाश भोजन थाय (२) गोविंद० ॥
महा महिनानी टाढ घणी-गोपी पहेयाँ चणा चीर (२) गोविंद० ॥
फागण फुल्यो फुलडे-कर्द्द घेर घेर फाग गवाय (२) गोविंद० ॥
चैत्र चंपो मोरीयो-मारा हरि विना कोन ले सोडम (२) गोविंद० ॥
वैशाखे वन वेडीयाँ-कर्द्द वेडी दाढम द्राक्ष (२) गोविंद घेर० ॥
जेठ मासे जगवीया-कर्द्द जगव्या जे जेकार (२) गोविंद घेर० ॥
अशाढ मासे उमग्यो-कर्द्द वस्यो घोर अंशार (२) गोविंद घेर० ॥
श्रावण वस्यो मग्वरे-कर्द्द नदी जमुना भग्पुर (२) गोविंद० ॥
भाद्रवो भेर गाजीयो-कर्द्द मधुमी बोल्या मोर (२) गोविंद० ॥
आसो मास अजवारीयाँ-हरे गोपी गरबे रमवा जाप २)
गोविंद घेर आवीया ॥

थार भरुं छग मोतीए-माग हरिने वधावा जास (२)
गोविंद घेर आवीया ॥

नरसेना स्वामी मल्या-वाले वाही स्माळ्याँ रास-वाले तेडी
स्माळ्याँ गस गोविंद घेर आव्या ॥

॥ इनि श्री गग गरबाना कीस्तन मंपूर्ण ॥

॥ समाप्त ॥

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

* ॥ श्री राम कवीर ॥ *

॥ उदाधर्मपंचरत्नमाला ॥

लोक लाज कुल कान तोड़के भक्ति निशान वजाय (कवीर)
जे जने कृष्ण कथा रस चारूयो ।
ते जने संसार कुचो करी नास्यो (नरसिंह महेतो)

प्रथम आवृत्तिना प्रसिद्ध कर्ता,
स्वामी श्री जगन्नाथ रुदनाथदास.

धाम-पुनीयाद्

८५५

द्वितीय आर्द्धना प्रसिद्ध कर्ता,

स्वामी यदुनाथ जगन्नाथ.

धाम-पुनीयाद्

जन्म संवत् १९६१ आ. सु. १५
बुधवार

स्वधाम संवत् २०२२ आ. सु. १५
सोमवार ता. ७-३-६६

द्वितीय आवृत्तिना प्रसिद्ध कर्ता.
स्वामी जगदीशचंद्र यदुनाथ.

धाम-पुनीयाद्

वि. संवत् २०२४.

ई-घन. १९६८.

प्रथम आवृत्ति प्रमाणे सर्वे हक्क स्वाधीन राखया हे.

प्रकाशक :—

स्वामी जगद्दीशचन्द्र यदुनाथ
मु० पुस्तीवाला प० मणिपत्तपुरा
ला० हमाई, जि० बडोदरा.
(गुजरात)



आ पुस्तकना पुनर्मुद्रणना सर्वभक्तार प्रकाशकने स्वाधीन छे.
जेथी रजा लिवाय बोजा काईए छापनु के छापावबु नहि.



मुद्रक :—

बन्द्रकाण्ठ दूषणदासजी साधु
चेतन प्रकाशन मंदिर (पि. प्रेस)
सोयावांग, बडोदरा.

* ॥ प्रस्तावना ॥. *

—————
 “ नग्दूवसांमि वैकुण्ठे योगीना हृदये नच ।
 मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र लिष्टमि नारद ॥ ”

भगवान कहै छेहे नारद, हुं वैकुण्ठमि के योगीयोना हृदयमि बसतो नथो ।
 किन्तु मारा भनो ज्या माह ‘ प्रेमधी ’ गान करे छे त्वा हुं बसुं लुं ॥

आनंदकंद परमकृपालु परमसत्त्वानी कृपाथी—“ उद्धारधर्मपंचरक्षमालानी ” आ
 द्वितीय आवृति प्रकाशित थई छे । प्रथम आवृत्तिमा जणाव्या ग्रमाणे प्रस्तुत पुस्तक धणा प्राचीन
 पुस्तकेना आध रं ग्रकाशित करवामां आव्युं छे । आ श्रंथमा आवेला कीरतनोनु भाव
 दर्शन बरबूं अवे आस्थाने नही गणाय । अध्याद्यजीना कीरतनोनुं निचे ग्रमाणे भाव
 दर्शन छे । “ हरि सेवे सुख निश्चल जाणो ”-खरेखर संसारमा हरेक प्राणीने अगर
 ते जानी, अहानी या नास्तिक हो, पण ए सिवाय सुख ग्रामिनो बीजो रस्तो न ज होइ शके ।
 अगल्नुं संघान करतां अर्थात् इतर उपायथी सुख ग्राम करवानो प्रयत्न करता आत्मानी
 दशा वर्णन करतां कहे छे के—“ क्षुधा तृष्णाद्विक आकलो ॥ रूपामी ॥ ” कहे
 सुख नयी आश ॥ तेणे बली बली भोगके । अधो सुख दश मास ॥ ” भक्तियी
 इश्वरनी स्तुति करता कहे छे के “ हवे गमतुं कर ताद्यह । ओघर पह अचूक्ष ॥ ”
 आ सीटीमां भगवाने कहेलुं “ योग द्वेष बहास्य हृष्ट ॥ ए वाक्य याद करी भक्ति
 रसनुं झारणुं बहाव्युं छे । भक्त आधीन हरजी सदा ए वाक्यने सिद्ध करता कहे छे के—
 “ भक्त उथां जेबु मन धरे । तहाँ तेवे पिंड । ” तेज ग्रमाणे कठवामा—
 “ अवतरि सुख कैसे आगेरे । आगे तुं बेटिने हाथ । विषय न मुकेरे अध क्षणु ।
 गरण एले नित साथ ॥ अणसता सुख मध्ये अंधुरे । बांधु पहु छे चिलाण ॥
 मृदृ पणे नथी चेततुं । दुःख सहस्री निरवाण ॥ ” हरख भोवनमा भक्ति मार्ग
 चतुर्वारा—“ भक्ति बिना नथ पासीये । अने भक्ति ए भोक्तो राय ॥ बली
 बली मा द्वोषस्तो । अघर नयीरे जपाय ॥ ” ब्रह्मालीमी “ पय द्विष घृत दे
 तृण चरे । निमित्त चहावे धेन । विग्रेमां इश्वरनी महान कृतियोनुं मान करावे छे—
 अर्थात् अध्याद्यजीना (२८) कीरतन जान वैराग्य भक्ति-लोकायो युक्त होइ पठन पाठन
 करवा योग्य छे ॥ आगल बार मासना समाना कीरतनोमां जन्म समानो उपर गवर्ता
 कीरतन अपेला छे ते पण भक्ति युक्त छे । त्यारबाद नित्य समाना कीरतनमी उमय सभयपर
 गवाता कीरतन छे । नरतिह महेताना कीरतनो साधारण बुद्धियी विषयी पुष्पनी रचना
 जेवा लागे छे । किन्तु ए महान भक्तना कीरतन विचारनीय छे । द३० ” एक एक

गोपीरे बचमें बालमे रे । हमचो खुदेने बछी गाय ” उत्तरी लौटीयी परखी
संग जेवो आलेप थाय छे । परंतु एमा इश्वरतु सबै शान्तमान तथा व्यापक पाणी गूढ
भाव समावेलो छे । परखी मोह निवारणने माटे एमनो भाव घणो मुंदर छे दा ।
“ जेवीरे जमेहा तेहीरे परनारी । गर्भनी वेदना ते कम विसारी । ” नरसिंह
महेनानी दृष्टि कृष्णवद्र-निमैल निर्गुण नारायण निरंजन । कामियावृद्धि तुने
कामामि ऐखे । अने निर्भल पुरुषोनो पवित्र दृष्टि नरसिंह महेवा केवा छे ते निचेना
चरण उपरथी जणासे ।

निर्भय अग्नि हेय जेम, नरसिंह निर्विकारी तेम ।
जेस अग्निमां ठाहुक नहि लेश, तेम विषय बुद्धि नहि प्रवेश ॥

(विश्वनाथ जानी)

“ दिनमधि रजनी सार्य आत; शिशिरवसन्ती पुनरायात; ।
कालः कीडुति गच्छन्त्यायुस्तदपि न मुखन्याशायायुः ॥ ”
“ भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते । ”

“ दिवस अने रात, सौज अने सकार, शिशिर श्रृंतु, अने वसंत रुतु आवे छे अने
आय छे, आ प्रसाणो काल पोतानी रमत रम्यो जाय छे, आयुष्य चाल्नु जाय छे, दूर्न पण
आशास्त्री वायु भूष्यने छोडतो नयो ” माटे “ गोविन्दने भज ” । उपर प्रसाणो शक्राचार्य
ना वाक्य मुजब आ ग्रंथमां गोविन्दना गुणोनो उल्लेख होइ, सबै भक्तजन तेनो
निर्भक थई लाम लेशे एवी आशा राखु छु । कारण शक्राचार्यै निश्चय पूर्वक दृढतायी
कल्य छे के मोक्ष साधन सामग्रयां भक्तिरेत गरीयसी ” अर्थात् सोक्तना (मुक्ति)
साधनोमा भक्ति एज सौथी मोहु साधन छे । अब्रे जे जे भक्तोए धन, जनथी तथा पुस्तकायी
सहायता करी छे, तेमने धन्यवाद घटे छे, तेमा धौंदराना—भगत—जीवणमाई—माई
उल्लेखनीय छे, तथा, भगत रामज्ञोभाई वृदाधनमाईए प्रफो तपासवामी तथा, कीरतनोना
राम वेलाहवामां घणो सारो प्रवृत्त करो धन्यवादने योग काम करु छे ।

बहुदरा,
सं. १९८८ फाग्न व. ५
रंगवंचमी—गुरुवार ।

सुभेद्र,
स्वामी—यदुनाथ जगन्नाथ
धाम—पुनीयाद,

राम कवीर

बे बोल



आ पंचरत्नमां गोदी हे सुग्रीव रामने पुछे हे. हे राम-रावण आख्या हे. चिरीषण शरणे आव्या पछी आपे लंकेश कही संबोध्यो, एण रावण शरणे आये तो नमासी बृद्धि शुं करशे. त्यारे रामे जवाब आप्यो चौद वर्ष पछी अयोध्यानु राज मारु छे माटे रावण शरणे आवे तो अयोध्यानु राज रावणने राम आपसे, तेनी फीकर तमे ना करसो, आ प्रमाणे रामनो खुलासो हे. आवा सुंदर पदो ना पंचरत्नमां संग्रह कर्यो हे. माटे भगतोए पुस्तक जाळववुं जहरी हे तेज प्रसाणे मीरांबाई तुच्छीदासनी सलाह मार्गे हे. ने तुळसीदास गोदी रागमां सलाह आपे हे. आवा सुंदर पदोनो संग्रह आ पुस्तकमां प्रयत्नाथी करवामां आव्या हे. आ संग्रह माटे घणी मुसाफरी यदुनाथने करवी पढी हे. माटे ददा भगतोए साचववा.

पंचम रागमां भेदोदरी रावणने कहे हे “ पाढी ने वळासो रे राजा रावण जानकी रे जानको हे गह लंकानो काल ” आ प्रमाणे रुटी एति प्रत्ये पोतानी फरज बजावे हे, आ एद माटे यदुनाथने वडोदरा बहार नाना गासोमां जवु पडेलु आवा यंग्रह माट बगत रामजीभाई वृंदावनभाई साथे गासोगामनी मुसाफरी करेली से आभार आ आवृत्तिमां आणु शुं.

वडोदरा.
सं. ४०८४ चैत्र सुद ९
रामनवमी रवीवार
ता. ७-४-६८

शुभेच्छा
स्वामी यदुनाथ जगनाथ
धाम पुनीयाद
प्रकाशक :-
जगदीशचंद्र,



गाई गवरावे जीवणा । कही ममझावे अप ॥
चिंडी चुण ज्यं देत है । ऐसे सतगुरु आप ॥
सतगुरु मंदेसो मोकले । कचा बदां सब आव ॥
नाम चितामणिजीवणा । जे भावे मो पाव ॥

॥ श्री रामकवीर ॥

मदगुरु हठीलो जीवणा । खेले अपनी दाव ॥
जहां जहां आपा जीवका । तहां तहां देवे पाव ॥
सार लिये मदगुरु खडा । नाम निशान बजाय ॥
आपा थरहर कांपीया । सो जीवण तहां जाय ॥

पुस्तकमा आवेला कठिन शब्दोना अर्थ.

आंजलि—पैंत, सोबो

आंगीठडी—सगडी

आबु—बल

आदेशडी—रँका, सक

आकल—जाणां सकाय नहो एवं

आध—पाप

आधाय—तुम, दरावुं

आनल—आगि

आनंग—कामदेव

आनित—नाशवान, बोजुं

आपनाववुं—पोतातुं करवुं

आपवर्ग—मोक्ष

आपुत्रीयु—वांशीयापणु

आबूझ—भूर्व, अजान

आमक—हरि विसुख

आभिषेक—२१ज्यारोहणनी श्रीया, जलाषारौ

आभुक नहो भोगवेलुं

आमेद—मेद वगर

आवगाहुं—पकडवुं

आवनि—पृथ्वी

आवियत—नही जानवार्मा आपेलुं

आसो—लालबाट

आहानश—रात दिवस

आहनपणु—अत्यंत मिद्रा

आहेडी—पारची

आत्यारासी—चहि जेवुं, उपलक

आदि—पहेलो,

आन—सोगन, तुशाई

आपा—ममत्व आहंकार

आरत—होस, आतुरता

इन्द्रि गमतुं—ईन्द्रियोनु इच्छेतुं, विषय

उदग(घ)न—तारा

उदक—जल

उफरो—उपर

उलक—गांठ, फसाय

उवट—भटकतो, रस्तो भूलतो

उवेखी—द्वेषवं

एकलमल—एकलो

परंडके धोर—दिवेलातुं फल

ओच्छाववुं—ढोकवुं

ओटवला—मार्ग, रस्ता

ओस—शाकर

कंदप—कामदेव

कनल—प से

कपोल—कवुतर, होलो

क्षाढे—कठिवारो

करतल—इयेली

करसन—कुमलो छोड

कलव—झो, पत्ती

कलापो—ओक्लसवुं

कुक—वृथ, मददनो पोकार

कुकर—कुतरो

कुच—स्तन (मुकाम उठावथो)

कुलिश—वश

कुसुम—कूल

कोरण—सताववुं, तुळ

कौशिक—विश्वामित्र

कृत्या—एक रादसीतुं नाम

द्विति—पृथ्वी

द्वेष—सिचवुं

खंजन-दिवाळीनी खोड़ी, पह्नी	जार सुत-ब्यूमीवारथो थएलो बालक
खाट-लाभ	जीन-जेगे ना, नहि
खिलत-सरथुं, लपसी जबुं	जुन्हारे-जुवार
खोरि (री)-गली, सौकड़ो रस्तो	लड वरसांद
गंजन-नाश करबो, अनादर करबो	शिगुलीयो-बालकने पहेरवानुं बछ
गुंजाफल-चणोठी	झूक्कुं-जडवुं
गतराँडा-हिक्कडा, व्यटल	डस मरो-प्रेमथो
गयंद-हाथी	डाका-धाड, लूट
गहर-गुफा	डाहाके-तरे तरवुं
गास्फी-बाजीगर, होर उतारनार	दाढी भागन
गुलाई-प्रसु	तस्कर-बार
गेल (गैल)-रस्तो	ताती-गरम
गेंद-ददो	तीडव-गृथ्य
गोपवुं-रहण करवुं	तेज पुज-तेजनो समुद
गोदर-विष्ट	तोय-जल
गोहारे-सहाये, बूम	चिगुणापिन-चणे गुणथी रहित
गोहाडे-दोर बाविवानी जरया, गमान	त्रिपुर-महादेव
गौरिपति-महादेव	थुनो-स्तंभ, थापिलो
घुंघरवाले-बाका कुंचित बाल, बांकड़ीया बाल	दाद-फरिवाद
घुंघर-सुमटो, लाज	दामिनो बीज़ी
घुंघरी-चणोठी	दारक-कुण्णा भगवाननो सारथी
घुंगणो-हिदेल	दावानल जगलनो आमि
घायों-घेयों	दिदर-दर्शन
घोडीयो-पांगलीक निशान	दुदुमी-नगायां
घोष-ग्रवाज	दुलहो-वर, स्वामी
घृत-घी	दुस्कृत-यराय ब्रह्म
चातक-एक जातनुं पढ़ी	दूब-दरो, एक प्रकारनुं धास
चिन्हे-ओलखे	दोहेलो-कठण, मुस्केल
चूचे-स्तननो अग्र भाग	घोम्दो-भूल, कपट
छान-छाज, घासथी ढाकेलो शुपडानो उपरनो	नम-आकाश
छुवेस-अटवुं (अडेस)	नाई-हजाम, (बि,) माफक, बेलुं
जबुक-सीयाल	नावट-खेवट पण्
जबते-भजनी	नाह स्वामी, नाथ
जम किकर-यमना नोकर	निकर-समुद
जलधर-मेघ	निकी-सामी, सुंदर
जाडो-टाढ	निगम-बेद

॥ पुस्तकमा आवेला कठिन शब्दोना अर्थ ॥

३

निधि—खजानो (जलनिधि-समुद्र)	बन राथल बननुँ बह
निमाला—वाल, केश	बरात—जान
निरदल्या—मार्या, सहार्या	बहार—फरीथी
निरोद—स्थापे, स्थापय	बाहे—पन त्रुँ पकड्वुँ
नूर—तेज	बाहेरा विसुख
नेग—लग्न, अथवा, जन्म प्रसरो, संवधि	विरानी—पारकी
हजाम विगेरेवे अपानुँ द्रव्य	चिंहाय—जव', नाश थवुँ, छोड्वुँ
नेजो—भालो	चिरद—कीरि, यश
नेढ—पासे	बुद्भुदा—जलनो परणोटो
नेपूर (नुपर)—परानुँ घरेणुँ, सांझर	वे'रख—हाथनुँ घरेनुँ
नेरो—पासे, ढुँके, नजीक	भरदो—ब्राह्मण
पंकज—कमल	भाय—मन मुजब, हैच्छा
पदोदक—चरणामृत	भूखन घरेणुँ, भूषण
पनही—जोडा, पगरखाँ	भोरेग (मुजङ्ग)—साप
पञ्चन—सर्प, साप	मनवाल—लन्मत्त, मदमाता
पपैया (पपीह)—चातक पक्षी	मदन—कामदेव
परचडो—कुचामाँ पडेली कोई पण वस्तुने काढवानुँ साबन	मदन श्रिं—महादेव
परिज्ञा—उत्पन्न करनारी	मदरागरि—यद्दराचल पर्वत
पसह—साप	मजरो—मुजरो, ग्रणाम
पसावो—कृपा करवी	मनुहार—आग्नदर, सकार
पाले विना	मरकलडे—मंद हस्तां
परवक—अग्नि	मसकत—उदेश
पावस—वरसाद	मरहट (मरघट)—शमसान
पिक—कोयल	महतारी—माना
पिनाक—शिव चन्द्र	महिषी—मैत
पिपील—कीढो	मही—दही, पुथी
पुनरपि—फरिथी	महेसन—महस
पुनरागम—फरीथी अवतरणुँ फरिथी आवदुँ	माधव (मास) कुला, वैशाख
पुनरीत—पवित्र, निर्मल	मीट—नजर, हप्ति
पुंश्ली—वेश्या	मीडे—पासे
पैंडा—रसनो	मैमल—इयो
पैंजनी—पगनु घरेणुँ हर्षकर	मोदक—लाडु
फगवो—होटीनी चक्किस	यमल (जमल)—चरावर
फीट—मटवुँ, नाश थवुँ	यचन—आसुर
बजाजी—वेपारी कपडा चि० सो	रजनीचर—आसुर राजस
	शवि सुत—यम

रलो (ल्यो)	रसहती, रसज्यो	सदगी-जल्दी
रीकंता-मुट्ठीए	चालतां, खसतां	सदन-धर, भकान
रीता-खाली		सफरी रुर-माल्हीतु रूप, भक्षावतार
रोल-छापो, रड हाक		समवार-जल्दी
रेन (रैन)	रात्री	सरखुं-साथे
रेणु-रज भूल		सरीसी-सरलो
लघन-उपवास, भूल		श्रंजन सलाका-श्रंजननी सली
झड़ीयो-भम्पो		सलिल-बल
लकुटी-लाकडी, जेहिका		स्तुणो सुंदर-रसीक
लीला-रमन		सहोदर-माई
लूंडीयुं-कुतरुं		स्त्रवन (लवीये)-स्तुति करवी, प्रार्थना
लोहा-नफो, लोडुं		सलकीयो-डोल्यो, खन्यो
वातो-बेगलो		साँइडुं-मेट
बणक-बेपार		सातरो-बेटक, साथरो
बरासोयुं-भुलवुं		सारण-तरषार मंत्र
बसीवर-साप		साही-पकडी
बसुधा-पुष्को		सीकोतर-भूल, प्रेत
बाडव-ब्राह्मण		सीचे-छाटी
बिजे पिजर-अभयपद (पांजरुं)		सीदण्य-दुमायो
बिदितो-प्रसिद्ध, जाणीतो		सीयल-सब
बिनय-नम		मुकुत-सारुं कर्म,
बिडंबीयो-दुःखी थथो		मुरली-टोपला
बिद्रुत-बिजली		मुवा-पोपट
बिरंचि-बझा		मुर-देव
बिलसे-रमे		मूर-बीर
बिशानल-ब्रिमि		सेन-सकरोबाज, ल्येन
बीचे-फलाय		सेषान-निशान
ब्याज-बहानुं		सोज-फिकर
शकट-गङ्गुं		हटवाडा-बजार
शत्र्चिंदैनद्राशी		हृमची-रमन बखते बोलातो शब्द
शायक-तीर, बान		हाटक-ठोंडुं
शादुल-तिंह		हिमसुता-पार्वती
शासन-उपदेश		हृमाल-मनुर
संग्राम-युद्ध		हरियल-येक जातनुं एकी विशेष
सचराचर-नड बेतन		हेला-सेज, रमतार

॥ राम कबीर ॥

* ॥ श्री विषयानुक्रमणिका ॥ *

॥ अथ श्री अच्यारुजीना कीरतन ॥

अ. अंक	विषय	पृष्ठ	अ. अंक	विषय	पृष्ठ
१	गुरुवा गणपतिनो रास...	१	१६	सोरंगी	...
२	विनती	...	६	१७	पृथ्वीधोळ
३	ब्रह्मरुली	...	९	(विष्वनाहरण) (सलुणी)	
४	हेली	...	११	(परसाद लेखानी आद)	
५	साहेली	...	१२	१८	वहु धोळ
६	घोडली	...	१३	१९	पदम धोळ
७	वाणी	...	१५	२०	वाढीनो रास
८	आरति	...	१७	२१	लघुरास
९	बीड़	...	१८	२२	चतुर वदननो रास
१०	कडवुँ (१/१९ २/१२ ३/२६ ४/३०)	१९	२३	अहर्निंसनो रास	...
११	वडीकारज	...	२४	२४	संत सोहागो
१२	लोटीकारज	...	२७	२५	पसावलो
१३	हर्ष भोवन	...	२७	२६	उमावलो
१४	शोक भोवन	...	४२	२७	खांडणा
१५	वेद पुराण	...	४५	२८	हिंदोला

॥ अथ श्री कृष्णदासजीनी माला ॥

अ. अंक	विषय	साल्की पृष्ठ	अ. अंक	विषय	साल्की पृष्ठ
१	शुरुदेवको अंग	... १६४	९३	१२ अम विघ्नमको अंग	३० १४८
२	संतको अंग	... ६३	१०९	१३ मायाज्ञो अंग	४३ १५१
३	दासको अंग	... ११४	११५	१४ साकुतको अंग	३८ १५५
४	विरहको अंग	... १५	१२५	१५ सलीलको अंग	... १७ १५८
५	कालको अंग	... ५६	१२७	१६ व्यभीचारीको अंग	... १० १५९
६	सुराको अंग	... २६	१३३	१७ कामीको अंग	... १० १६०
७	प्रेमको अंग	... ६४	१३५	१७ कामीको अंग	... १० १६०
८	पतिवृत्ताको अंग	... १०	१४१	१८ ब्रह्मज्ञानीको अंग	... २१ १६१
९	उनदेशको अंग	... १०	१४२	१९ गम्भीरलीको अंग	... ३० १६३
१०	भेदको अंग	... ३१	१४३	२० प्रमोदको अंग	... १५६ १६६
११	आनदेवकी अंग	... २७	१४६	२१ अधावको अंग	... ६६ १८०

॥ अथ श्री कृष्णदासजीनी परचरी ॥

१	कृष्णदासनी परचरी	१९०	२ ज्ञानमहिमा	...	२२३
२	२२४

॥ अथ श्री रामचंद्रजीना जन्म समाना कीरतन ॥१॥

अ. अं.	विषय	पद	पृष्ठ	अ. अं.	विषय	पद	पृष्ठ
१	राग सारंग	...	११	२४६	८ ढाढ़ी राग धन्याश्री	१	२६०
२	राग काफी	...	२	२५०	९ राग भुपाल	...	१ २६१
३	राग काफी धुमार	...	१	२५२	१० राग प्रभात	...	५ २६१
४	जन्म वधाई आशावरी	४	२५३	११ राग वेळाचल	...	३	२६३
५	ढाढ़ी आसावरी	१	२५६	१२ राग टोड़ी	...	२	२६४
६	ढाढ़ी धुमार	१	२५७	१३ राग प्रभात	...	१	२६६
७	ढाढ़ी मारु	...	२	२५८			

॥ अथ श्री जानकीजीना जन्म समाना कीरतन ॥२॥

१	राग भुपाल	...	१	२६७	६ राग कल्याण	...	१०	२७४
२	राग प्रभात	...	२	२६७	७ राग मारु	...	१	२७५
३	राग सारंग	...	७	२६८	८ राग सारंग	...	१	२७५
४	राग प्रभात सर्वरामंडप	४	२७२	९ मनहर छंद	...	३	२७५	
५	राग भुपाल	...	१	२७४	१० हिंदोला राग केदारी	२	२७६	

॥ अथ श्री कृष्णजीना जन्म समाना कीरतन ॥३॥

१	राग केदारी	...	२	२७८	८ राग धन्याश्री	...	३	२९७
२	राग आसावरी	...	७	२८०	९ राग मारु	...	२	२९९
३	ब्रिजमंगल	...	२	२८३	१० राग टोड़ी	...	२	३०१
४	राग सामेरी	...	४	२८६	११ राग सारंग	...	१२	३०२
५	राग भुपाल	...	४	२९२	१२ राग धोळ	...	१	३०६
६	राग प्रभात	...	४	२९४	१३ राग काफी	...	१	३०७
७	ढाढ़ी नंदजीना दर्शारे	१	२९६					

जीवणजी महाराजनी

जन्म समानी साखी

॥ अथ श्री राधाजीना जन्म समाना कीरतन ॥४॥

अ. अं.	विषय	षट् पृष्ठांक	अ. अं.	विषय	षट् पृष्ठांक
१	साखी	... ३ ३०९	३	राग आमावदी	... १ ३०९
२	राग सारंग	... १९ ३०९			.

॥ अथ श्री वामनजीना जन्म समाना कीरतन ॥५॥

१	साखी	... ५ ३१७	२	राग देवगंधोर (सारंग)	२ ३१७
---	------	-----------	---	----------------------	-------

॥ अथ श्री दशोरा समाना कीरतन ॥६॥

१	राग सारंग	... ४ ३१९
---	-----------	-----------

॥ अथ श्री दीपमाल समाना कीरतन ॥७॥

१	राग सारंग	... ३ ३२०
---	-----------	-----------

॥ अथ श्री गोवर्धन समाना कीरतन ॥८॥

१	साखी ४	... १ ३२१	२	राग सारंग	... १० ३२२
---	--------	-----------	---	-----------	------------

॥ अथ श्री स्वधाम पघार्या ते समो ॥९॥

१	स्वधामसमो	... १ ३२६
---	-----------	-----------

॥ अथ श्री वसंत क्रतुना कीरतन ॥

अ. श्रं.	विषय	पद	पृष्ठ	अ. श्रं.	विषय	पद	पृष्ठ		
१	राग वसंत	...	१४	३३४	८	राग फेर होरी	...	७	३७२
२	वसंत साखी (६)	...	१	३४०	९	राग फेर होरी	...	३	३७८
३	राग वसंत	...	२६	३४१	१०	ग्यालन होरी	...	२	३८०
४	राग धन्याश्री धुमार	४	३५२	११	राग फेर होरी	...	१	३८१	
५	राग काकी धुमार	१७	३५३	१२	राग फेर काकी होरी	८	३८१		
६	राग धुमार	...	४	३६५	१३	दोहा होरी (६)	१	३८८	
७	राग होरी	...	५	३७१	१४	रंग रसीयो	...	१	३८९

॥ अथ श्री हिंदोलाना कीरतन ॥

१	हिंदोलाना दोहा (६)	१	३९५	६	प्रीयाजी वचन	...	१	४०१	
२	राग सामेरी	...	५	३९५	७	राग मलार	...	२	४०१
३	राग कालेश	...	४	३९९	८	राग मलार हिंदोला	६	४०२	
४	साखी दोहा	...	१	४०१	९	राग पंचम हिंदोला	१	४०५	
५	वर्षाख्तु वर्णन	...	१	४०१					

॥ अथ श्री शरद निशा समाना कीरतन ॥

१	सरदनी साखी १४	१	४०६	७	राग धन्याश्री	...	१	४२०	
२	राग कालेश	...	१६	४०७	८	राग केदारो	...	१	४२०
३	राग फेर	...	२	४१५	९	राग सामेरी	...	२	४२१
४	राग केदारो	...	५	४१५	१०	(राग) भानसमो	...	१	४२८
५	राग मिहुडो	...	७	४१७	११	तुलसीदासनो रास	...	१	४३०
६	राग विहाग	...	२	४१९					

॥ अथ श्री नित्य समाना कीरतन ॥

(कीरतने गवाता समय)

मध्यरात्री पछीयी प्रातःकाल सुधी गवाता कीरतन—

अ. अंक	विषय	साखी पृष्ठ	अ. अंक	विषय	साखी पृष्ठ
१	सामरी केदारो	... ७ ४४०	८	राग भूषाल	... १६ ५०२
२	विहाग	... १२ ४४४	९	राग विभास	... ३ ५०७
३	रामग्री	... १४ ४४९	१०	राग प्रभात	... १ ५०९
४	पंचम	... २५ ४५५	११	आरति	... ३ ५०९
५	मिथुडो	... ३० ४७०	१२	प्रभात	... २ ५११
६	प्रभात	... १२ ४८४	१३	प्रभात (कृष्णजी)	... १५ ५१२
७	राग मेघ	... ३० ४९०			

॥ अथ श्री वेलावलना कीरतन ॥

प्रातःकालयी क. १० वाम्या सुधी

१	वेलावल	... ३९ ५१९	३	टोकी	... १४ ५४७
२	धन्याश्री	... २५ ५३७			

॥ अथ श्री सारंगना कीरतन ॥

बपोरेखारथी सांजे चार वाम्यता सुधी गवाता कीरतन

१	साखी	... १ ५५३	२	राग सारंग	... ४५ ५५४
---	------	-----------	---	-----------	------------

॥ सांजे चार वाम्याथी आठ वाम्यता सुधी गवाता कीरतन ॥

१	माल गोडी	... ५ ५७०	५	परचरी सोलपदी	... १ ५९७
२	संज्ञा गोडी	... ४५ ५७३	६	राम मंजरी	... १ ६००
३	गोडी ३४ माँ भीरानो—	५८९	७	कुवामगतनी चेतावनी	१ ६०२
	तुलसीदामजी उपर्यो पत्र		८	मलुकदासनी परचरी	१ ६०५
४	आरति	... ५ ५९५	९	२	...

॥ अथ श्री नित्य समाना कीरतन ॥

॥ रात्रे आठ वाग्याथी रात्रे बार वाग्या सुधी गवातां कीरतन ॥

अ. अं.	विषय	पद	पृष्ठ	अ. अं.	विषय	पद	पृष्ठ	
१	राग कल्याण	...	२६	६०८	४ राग सोरठ	...	११	६२८
२	राग गोड	...	८	६१८	५ राग केदारो (पांडणी)	१३	६२४	
३	राग मारु	...	१४	६२२				

॥ अथ श्री प्रकीर्ण कीरतन ॥

१	सजनी पोटी	...	१	६४०	९ राग विहाग	५	६७४
२	सजनी नानी	...	९	६४२	(चलन प्राणसंग)			
३	जानकीजाना मंगल	...	१	६४६	१० धुन	...	९	६७७
४	कर्वीरजीना मंगल	...	१०	६५२	११ बनलीलानी आंख मीचामणी	१	६८१	
५	कहेरा	...	१५	६५९	१२ दाणलीला	...	१५	६८५
६	घन्याश्री (शेणीबेला)	११	६६७	१३ आशावरी (मथुरामां मही)	१	६९३		
७	राग विहाग	...	८	६७०	१४ राग आशावरी (रामचंद्रजी बन पधार्या)	...	२०	६९४
८	राग विभास	...	१	६७३	१५ ब्रिजविनता	...	१	७०२
					१६ जुमनाजीनी स्तुति	...	६	७०५

॥ अथ श्री लभ प्रसंगे गवाता कीरतन ॥

१	धोळ	...	६	७०७	५ ब्रिजनी सोभा	...	१	७२०
२	कहैयाजीनी आरति	...	१	७११	६ कंकाक्री	...	१	७२१
३	रघुनाथजीनी बोडली	१	७१३	७ धोळ	...	५	७२२	
४	सीताजीनो सोहेलो	१	७१६				

॥ अथ श्री गरबाना कीरतन ॥

अ. अं.	विषय	पद पृष्ठांक	अ. अं.	विषय	पद पृष्ठांक
१	राधाजीनु स्वप्न	...	७२६	७ गोकुल गामने गांदरे ...	७४६
२	दाण लीला	...	७२८	८ ओधवजी ...	७४७
३	हारनी चोरी	...	७३१	९ गोकुल वहेलों पधारजो	७५३
४	सरद	...	७३४	१० गोरम चोरी	७५६
५	गोकुलथी मथुरां	...	७४१	११ बारमासनो	७५७
६	अकरुरजीनो रथ	...	७४४		
गरबाना कीरतन कुल पृष्ठ					

आ ग्रंथमां अध्यारुजीना कीरतन २८ अने
जीवणजी महाराजना (मास्ती) अंग २१ नेमज
बीजा समैया माथेना पदो— ९९३ मठीने

कुल पदोनो संग्रह करेलो छे. १०४२

॥ गमकबीर सत्य छे ॥

॥ श्री १०८ जीवणजी महाराजनी कृपाथी ॥

॥ श्री पद्मनाभजीना

अध्यारुजीना कीरतन ॥

वि. संवत् २०२४]

प्रत २२००

[ई. सन् १९६८

[मुधारा वधारा साथे]

(सर्वे हक्क प्रकाशकने स्वाधीन)

। स्वाध्यायनो प्रमाद करो नही ।

तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः ।
 सेवनाच्छूच्छणात् पाठात् दर्शनात् पापनाशिनी ॥
 तावत् संमारचकेऽस्मिन् ऋमतेऽज्ञानतः पुमार्ण ।
 यावत् कर्णगता नाम्नि, अध्यारुकीर्तन-क्षणम् ॥

बचन ए परमान्मा छे. तद इमार अध्यारुजी गी वाणी सर्वोच्च मर्वेश्वरनी वाङ्मयी मूर्ति छे. माटे अध्यारुजीनी वाणीनु श्रवण, मनन, निदिध्यामन करवाथी, एनो पाठ करवाथी, एना दर्शन करवाथी तथा एनी सेवा करवाथी, समस्त पापोनो नाश थई जाय छे. कारण ए माक्षात् श्रीहरिनी वाङ्मयी मूर्ति छे.

नारायणेति शब्दोऽस्मि वाग्म्नि वशवर्तिनी ।
 तथापि नरके घोरे पतन्तीनि किमद्भुतम् ॥

(व्यास)

॥ राम कबीर ॥

॥ अनंतश्री विभूषित श्री जीवणजी महागजनी कृपाथी ॥

॥ श्री पद्मनाभजीना अध्यारुजीना कीरतन ॥

“ देवहुनीकुं जौवणा । भये कपिल मुनि अवनार ।
दत्तात्रय यदुकुं भये । पद्मनाभ धनराज ॥ ”
“ आप आपणा लिया ओलखी । पद्मनाभ धनराज ।
स्वामी सेवक मली जीवणा । कियो भक्तको काज ॥
अध्यारु पाटण भये । सिद्धराजके दीवान ।
पद्मनाभकी प्रीतमां । छोड दिया सब मान ॥
कलजुग बहोत क्रिपा करी । सुरन धरी मेरे शाम ।
पाटणमां पथारीआ । पद्मनाभजी नाम ॥
धन्य धन्य पद्मनाभने । जंगलता छोरसोया ।
आगल पाल्छ ज्ञान झुँडने । वचमां पोते वसीया ॥

॥ श्री रामकृष्ण ॥